निर्देशन परिचय

[An Introduction to Guidance]

आधारभूत सिद्धान्त और प्रयोग

लेखक

लेस्टर डी० क्रो

शिक्षा विभाग, ब्रुकलिन कालेज

तथा

एलाइस क्रो

भूतपूर्व अधिकारी, शिक्षा विभाग, ब्रुकलिन कालेज

१९६४

यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस (प्राइवेट) लिमिटेड

राम नगर, नई दिल्ली-१

© Hindi Edition 1964 by Eurasia Publishing House
(Private) Ltd. Ram Nagar, New Delhi-1

Published by arrangement with American Book Co., New York

© American Book Co.

मुख्य वितरक

एस० चन्द एण्ड कम्पनी

फव्वारा	दिल्ली
राम नगर	नई दिल्ली
माई हीरां गेट	जालन्धर
हज़रतगंज	लखनऊ
लैमिंगटन रोड	बम्बई

'An Introduction to Guidance' के द्वितीय संस्करण का हिन्दी अनुवाद

सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन

मूल्य : १० रुपए

मुद्रक
एवरेस्ट प्रेस, ८, चेम्बरलिन रोड, दिल्ली-६

प्रस्तावना

'निर्देशन परिचय' द्वितीय संस्करण, एक मूल पाठ्य-पुस्तक है जो नवयुवकों और वयस्क दोनों के घर और स्कूल में और व्यावसायिक, सामाजिक तथा नागरिक गतिविधियों में निर्देशन और समन्वय के अनुभवों का सर्वेक्षण करती है। विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के सम्मुख आने वाली तालमेल की कठिनाइयों से विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए विविध प्रकार की समस्यामूलक स्थितियों और व्यवहार का वर्णन किया गया है।

इस पुस्तक में निर्देशन उत्तरदायित्वों का वितरण, पाठ्यक्रमों के निर्माण और परिवर्तन-परिवर्द्धन में निर्देशन के दृष्टिकोण का महत्त्व, निर्देशन सेवाओं का संगठन और क्रियान्वयन, सामूहिक और व्यक्तिगत स्थितियों में निर्देशन, परामर्शपात्र के सम्बन्ध में तथ्य एकत्रित करने और उसे सूचना देने की कार्य-विधि और स्कूल, घर तथा समुदाय का सहयोग, विषयों का वर्णन किया गया है।

लेखकों का विश्वास है कि निर्देशन को निरन्तर चलने वाली सेवा समझना चाहिए जो प्रत्येक इच्छुक व्यक्ति को उपलब्ध हो सके। अतएव आयु और श्रेणी के स्तर पर संगठित अध्यायों की शृंखला में शैशव से लेकर वयस्क होने तक व्यक्ति की निरन्तर उत्पन्न होने वाली आवश्यकताओं का विश्लेषण किया गया है और उपयुक्त परामर्श-प्रविधियाँ सुझाई गई हैं। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से भ्रष्ट व्यक्तियों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान दिया गया है।

मनुष्य के जीवन का प्रत्येक रूप—घरेलू तालमेल, नौकरी में संतोष, नागरिक दायित्व और सामाजिक सम्बन्ध—महत्त्वपूर्ण होता है। चूँकि घर और नौकरी में मनुष्य के अनुभव उसके तालमेल में अत्यन्त महत्त्व रखते हैं, अतएव पारिवारिक जीवन और व्यावसायिक उपलब्धि तथा अन्य सम्भावित समाधान से सम्बन्धित समस्याओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

निर्देशन की नीतियाँ और उनके प्रयोग स्थिर नहीं होते। अन्तिम अध्याय में वर्तमान निर्देशन कार्यक्रमों का मूल्यांकन करने के लिए प्रयुक्त होने वाली विविध

रीतियों का वर्णन किया गया है और संभावित भावी प्रवृत्तियों की दिशा में संकेत किया गया है। परामर्शदाताओं के लिए विभिन्न राज्यों द्वारा अपेक्षित तैयारी, विविध राज्यों की प्रमाणीकरण सम्बन्धी अपेक्षाओं और व्यावहारिक निर्देशन के विविध साधनों की तुलनात्मक सूची परिशिष्ट में दी गई है।

निर्देशन परिचय, द्वितीय संस्करण, मुख्यतः पाठ्य-पुस्तक के रूप में लिखी गई है, परन्तु दूसरे व्यक्तियों को सहायता देने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए भी यह सर्वेक्षण पुस्तक के रूप में उपयोगी होगी। जो स्त्री-पुरुष निर्देशन सेवा या कर्मचारी सेवा को अपनाने की योजना बना रहे हैं, उन्हें विशिष्ट क्षेत्र में अपना अध्ययन जारी रखने की आवश्यकता है। यह पुस्तक परामर्श कार्य की तैयारी करने वाले छात्रों और उन परामर्शदाताओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगी जो किसी भी आयु के व्यक्ति को जीवन के तालमेल में सहायता देने के लिए तात्कालिक सूचना प्राप्त करने के इच्छुक हों।

लेखक उन प्रकाशकों के प्रति आभार प्रदर्शित करना चाहते हैं जिन्होंने प्रथम और द्वितीय दोनों संस्करणों में अपने प्रकाशनों से उद्धरण लेने की अनुमति प्रदान की है। वे उन स्कूल कर्मचारियों को भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने निर्देशन सामग्री प्रदान की और इस पुस्तक में उसके उपयोग की स्वीकृति दी।

लेस्टर डी० क्रो
एलाइस क्रो

विषय सूची

परिशिष्ट

चित्र सूची

१ ऐतिहासिक निरूपण

ऐसे व्यक्ति सदा से होते रहे हैं और होते रहेंगे जिन्हें अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए समय-समय पर गुरुजनों अथवा अधिक अनुभवी साथियों की सहायता की आवश्यकता होती है; और न ऐसे व्यक्ति को खोजना कठिन है जो ऐसी सहायता की प्रार्थना पर तत्काल सहायता देने को प्रस्तुत हो। वास्तव में प्रत्येक परिवार या सामाजिक समूह में संभवतया कम से कम एक व्यक्ति ऐसा अवश्य होता है जिसे अपने साथियों को स्वतः परामर्श देने में आनन्द आता है। यह संभव हो सकता है कि परामर्शदाता अपनी निजी समस्याओं और तालमेल को न सुलझा सके, किन्तु दूसरों के व्यवहार को निर्देशन देने और उनके दैनिक मामलों को चलाने में विश्वसनीय सलाहकार या प्रदर्शक बनने के लिए वह स्वयं को पूर्णतया योग्य समझता है।

शैक्षिक विचार के रूप में निर्देशन

सम्बन्धित समस्या को भली-भाँति समझे बिना दिया जाने वाला अनौपचारिक परामर्श बहुधा प्रभावहीन ही नहीं होता अपितु हानिकारक और भ्रामक भी हो सकता है। पिछली दशाब्दि में निर्देशन शब्द सर्वसाधारण और स्कूल के लोगों में अधिकाधिक लोकप्रिय हुआ है। यह एक अत्यन्त आधुनिक आकर्षक शब्द है जिसने उन स्त्री-पुरुषों की कल्पना को आन्दोलित किया है जो मानव-कल्याण में सुधार करने के लिए उत्सुक हैं।

शैक्षिक नारों की लोकप्रियता निर्देशन में आज की सार्वजनिक रुचि बिल्कुल नई बात नहीं है। वर्तमान शताब्दी का प्रथम अर्द्धांश मानवीय विकास और सफल अध्ययन के विस्तृत और गहन अनुसंधान के लिए उल्लेखनीय रहा है। जब शिक्षकों ने अनुसंधान के निष्कर्षों का स्कूल की स्थितियों पर प्रयोग करने का प्रयत्न किया तो कुछ मूल विचार इन आकर्षक शब्दों या वाक्यांशों में अभिव्यक्त हुए : "सम्पूर्ण शिशु की शिक्षा," "समूहीकरण की एकरूपता," "सामुदायिक विद्यालय," "क्रियात्मक

अध्ययन," "परियोजना पद्धति," "केन्द्रित पाठ्यक्रम," "सामाजिक पदोन्नति," "जीवन क्षेत्र," "विस्तृत क्षेत्र," आदि। ऐसा प्रतीत होता है कि आजकल विशेषतया "विश्व सहकारिता के लिए शिक्षा" और "निर्देशन तथा कर्मचारी सेवा" पर बल दिया जाता है।

अच्छे व्यक्तिगत और सामूहिक समन्वय की प्राप्ति के लिए "सर्वश्रेष्ठ" कार्य-विधि के रूप में इनमें से प्रत्येक नारा बारी-बारी से अपरिचित जनता और कुछ ऐसे व्यावसायिक नेताओं द्वारा उत्साहपूर्वक स्वीकार किया गया है जो छिछले विचारक हैं। दुर्भाग्य से, ये आकर्षक वाक्यांश ऐसे व्यक्तियों द्वारा दिखावटी रूप में दुहराये जाते हैं जो इनका अर्थ भली-भाँति नहीं जानते, और न अधूरी जानकारी रखने वाले व्यक्ति यह समझते हैं कि मानव स्वभाव की गहनता और संसार के मामलों की अव्यवस्थित स्थितियों ने यह आवश्यक कर दिया है कि शिक्षा अपने आप में अनेकांगी और बहुमुखी प्रक्रिया हो। समस्त सफल अध्ययन के मूल में उन सब या अधिकांश विचारों का—संभवतः संशोधित रूप में—प्रयोग है जो अकस्मात् और एक-एक करके खोज निकाले गये प्रतीत होते हैं।

परिवर्तनशील समाज में निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताएँ जीवन की हमारी पद्धति के जो नये-नये अर्थ लगाये गये हैं, उनके फलस्वरूप अनेक परिवर्तन हुए हैं। यह विचार कि समाज स्वार्थों और कार्यों की समानता से एक साथ बँधे हुए व्यक्तियों का संगठित समूह है, अब भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं विचारधाराओं की दृष्टि से भी विस्तार पा रहा है। पारम्परिक बंधन और रीति-रिवाज छिन्न-भिन्न हो रहे हैं।

तो भी मानव के पारस्परिक सम्बन्धों की नवीनतर कल्पनाएँ अब भी अव्यवस्थित हैं। आज पहले से भी अधिक प्रत्येक पुरुष, नारी और बच्चे से यह आशा की जाती है कि वह अपनी योग्यताओं और अनुभवों का उपयोग दूसरों के लाभ के साथ-साथ अपनी निजी उन्नति के लिए भी करे। जीवन का ऐसा दर्शन जो व्यक्ति को समूह के विरुद्ध खड़ा करता है अथवा जो उसे अपने साथियों के कल्याण की उपेक्षा करने की अनुमति देता है, अधिकाधिक अस्वीकार्य होता जा रहा है। समाज की नवीनतर कल्पना ऐसे समूह के रूप में है जिसमें किसी भी व्यक्ति को वे अधिकार और सुविधाएँ प्राप्त नहीं होनी चाहिएँ जिन्हें उसने स्वयं अर्जित न किया हो अथवा विश्व के किसी भी अन्य योग्य सदस्य के लिए जिनका निषेध हो।

विश्व लोकसत्ता का ऐसा विराट् लक्ष्य केवल संसार के नेताओं के प्रयत्नों द्वारा ही पूर्णतया प्राप्त नहीं किया जा सकता। अधिक से अधिक संख्या में लोग—चाहे उनके अनुभव का क्षेत्र कितना ही संकुचित और सीमित क्यों न हो—वांछनीय सामाजिक परिवर्तनों को लाने के लिए अपना व्यक्तिगत उत्तरदायित्व समझने लगे हैं। किन्तु दुर्भाग्य से, कुछ व्यक्ति अब भी इस उत्तरदायित्व को स्वीकार करने में असमर्थ अथवा अनिच्छुक प्रतीत होते हैं।

विश्व की अशांति से उत्पन्न होने वाली संकटपूर्ण स्थितियाँ मानव समुदाय के प्रत्येक चरण को व्यावहारिक रूप से प्रभावित करती हैं। बहुत-सी आधुनिक विषम

स्थितियों से तालमेल अथवा उनमें सुधार करने का आंशिक रूप में मनुष्य का व्यक्तिगत दायित्व है जिसे कुछ व्यक्ति न्यूनतम बाहरी सहायता लेकर पूरा कर सकते हैं। दूसरों के लिए प्रभावशाली परामर्शदात्री सेवाएँ होनी चाहिएँ जिससे वे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तनों के शिकार होने से बच सकें।

बच्चों के प्रति परिवर्तनशील रुख

आदिकाल में बच्चों की शिक्षा की इतिश्री घर में माता-पिता द्वारा और समाज में जाति के नेताओं द्वारा "निर्देशन" का सरल व्यावहारिक उपयोग बता कर ही हो जाती थी। कल्पना और उदाहरण के माध्यम से बच्चा धीरे-धीरे अपनी स्थिति समझता और अपने अपेक्षाकृत छोटे और घनिष्ठता से बँधे समुदाय के कल्याण का उत्तरदायित्व सँभालना सीखता था। सामुदायिक समूहों के आकार में वृद्धि और राष्ट्रीयता के जाग्रत होने से बच्चे की स्थिति में परिवर्तन हुआ। फिर भी कुछ चुने हुए बच्चों को छोड़कर, शेष को स्कूल की शिक्षा नहीं मिलती थी। घर पर या तो उन पर कठोर अनुशासन रखा जाता था या उनकी शैशकवालीन रुचियों की उपेक्षा कर दी जाती थी।

औपचारिक स्कूली शिक्षा का प्रारंभ जब प्रारम्भिक शिक्षा चर्च का और उसके पश्चात् राज्य का दायित्व स्वीकार कर लिया गया तब भी "स्कूली शिक्षा" का अर्थ उन पाठों को सुन लेने मात्र से कुछ ही अधिक होता था, जो कि विद्यार्थी रट कर आया करते थे। बच्चों के विकास की आवश्यकताओं और उनके अध्ययन की क्षमताओं की विभिन्नताओं को स्वीकार नहीं किया गया था। यूरोप में "पुनर्जागरण" और "सुधार" के युगों में "प्रारम्भिक" और "माध्यमिक" के रूप में विद्यालयों को गठित करने की दिशा में कुछ प्रगति हुई, और बच्चों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति पर ध्यान दिये बिना उन्हें कुछ शिक्षा प्रदान करने के इधर-उधर प्रयत्न किये गये। किन्तु साधारण रूप से प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा नीरस, फीकी और प्रभावहीन थी।

शिशुकल्याण में रुचि का विकास आज के अधिकांश शैक्षिक सिद्धान्तों और व्यवहारों की जड़ सोलहवीं शताब्दी के अनुभववाद (यह सिद्धान्त कि सब ज्ञान चेतना के द्वारा होने वाले अनुभव से प्राप्त होता है) और सत्रहवीं शताब्दी के यथार्थवाद (यह सिद्धान्त कि सार्वदेशिक और ठोस विचारों की बाह्य-रूपात्मक स्थिति होती है) की प्रारम्भिक अवस्थाओं में निहित है। इन सिद्धान्तों के शिक्षा सम्बन्धी अभिप्रायों ने मानवीय अधिग्रहण और पश्चात्कालीन शिक्षाविद् दार्शनिकों के शिक्षा सिद्धान्तों के लिए पृष्ठभूमि का कार्य किया है। जिन व्यक्तियों के योग से महत्त्वपूर्ण शैक्षिक और पथ-प्रदर्शन की धाराओं का उद्भव हुआ है, उनमें प्रमुख रूसो, पैस्टालोज़ी, फ्रोबेल और डेवी हैं।

जीन जैकस रूसो (१७१२-१७७८) रूसो ने जान लॉक (१६३२-१७०४) के इस सिद्धान्त को एक कदम और आगे बढ़ाया कि मानव प्रकृति वातावरण सम्बन्धी उन प्रगतिशील प्रभावों का प्रतिनिधित्व करती है जो उन अंगों पर पड़ते हैं जो जन्म

के समय अनिर्मित और अस्थिर होते हैं। इस विश्वास के साथ कि जन्म के समय बच्चा पैतृक रूप से भला होता है, रूसो ने यह माना है कि यदि व्यक्ति को उसके प्राकृतिक स्वभाव के अनुसार विकास करने की स्वाधीनता दी जाय तो वह सर्वश्रेष्ठ बातें सीख सकता है। उसके सिद्धान्त ने विकास, स्वाधीनता, रुचि और गतिविधि के शैक्षिक अभिप्रायों पर बल दिया। रूसो के लेखों में अध्ययन की स्वाधीनता, अध्ययन के प्रेरक के रूप में रुचि और "सक्रिय अध्ययन" जैसी बीसवीं शताब्दी की कुछ कल्पनाओं का प्रारम्भिक रूप मिलता है। अपनी पुस्तक एमिली में रूसो ने उन रीतियों का विस्तार से वर्णन किया है जिनके द्वारा बच्चे के दैनिक अध्ययन का निर्देशन करना चाहिए।

जोहन पैस्टालोजी (१७४६-१८२७) पैस्टालोजी का मत था कि समाज का उसी सीमा तक सुधार किया जा सकता है जिस सीमा तक किसी व्यक्ति की (चाहे वह ऐसे समूह का क्यों न हो जिसे सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं) सहायता उसके अपने नैतिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास के कार्य में की जा सकती है। निर्धन बच्चों के लिए उसने जो स्कूल स्विटजरलैण्ड में स्थापित किये थे वे नम्रता और सहानुभूति के साथ चलाये जाते थे। पैस्टालोजी ने बच्चे के गम्भीर पारिवारिक जीवन और विनम्र अनुशासन की आवश्यकता पर बल दिया है। उसने इस बात पर आग्रह किया है कि बच्चे की शिक्षा को प्रभावशाली मार्गदर्शन देने के लिए अध्यापक को उसकी प्रकृति का अध्ययन करना चाहिए।

फ्रेडरिक फ्रोबेल (१७०२-१८५२) फ्रोबेल उन प्रारम्भिक व्यक्तियों में से एक था जिसने छोटे बच्चे के पालन-पोषण पर निर्देशन के विचार के (उसके विशालतम रूप में) प्रयोग का समर्थन किया। प्रारम्भ में वह पैस्टालोजी का अध्यापन कार्य में सहयोगी था, इसके पश्चात् उसने स्विटजरलैण्ड और जर्मनी में अपने निजी विद्यालय स्थापित किये। फ्रोबेल ने इस विचार पर बल दिया कि भावना और प्रकृति अथवा व्यक्ति और समाज के मध्य कोई विभाग नही हैं। उसकी मान्यता थी कि मानव स्वभाव में ईश्वर की इच्छा की पूर्ति छोटे बच्चे की शिक्षा के द्वारा हो सकती है, जो स्वतन्त्र, क्रीड़ापूर्ण कार्य के रूप में किंडरगार्टन (ऐसा उपवन जहाँ बच्चे बढ़ते हैं) में तीन या चार वर्ष की आयु में प्रारम्भ हो जानी चाहिए।

छोटे बच्चों के साथ किये गये फ्रोबेल के कार्य ने अमेरिकी शिक्षा पर बहुत अधिक प्रभाव डाला है। व्यक्ति के प्रारम्भिक शैशवकालीन वर्षों के महत्त्व और छोटे बच्चे के कार्यों की शक्तिशाली प्रकृति को उन्नीसवीं शताब्दी के अधिकाधिक शिक्षकों और अभिभावकों ने स्वीकार किया था। फ्रोबेल ने वस्तु-निर्माण, कार्य की स्वतन्त्रता, अनुसंधान, आत्म-अभिव्यक्ति और शिशु-समूह के पारस्परिक कार्य का बच्चे के लिए जो मूल्य है, उस पर बल दिया है। फ्रोबेल की इस मान्यता पर भी कुछ ध्यान दिया गया। किन्तु स्कूल की कार्यविधियाँ अपेक्षाकृत कठोर और औपचारिक बनी रहीं। वर्तमान शताब्दी में आकर "पुस्तक-केन्द्रित" स्कूल के विचार का स्थान "शिशु-केन्द्रित" अध्ययन के विचार ने लिया जिसका सूत्रपात फ्रोबेल ने किया था।

जान डेवी (१८५६-१९५२) मानवीय कार्यों के अन्य क्षेत्रों की भाँति शिक्षा के क्षेत्र में भी विचारधारा में परिवर्तन शनैः शनैः होता है। जब जान डेवी ने अपनी कृतियों में रूसो, पैस्टालोजी और फ्रोबेल जैसे व्यक्तियों की शैक्षिक विचारधारा का निरूपण किया तो स्कूल के नेता शैक्षिक सिद्धान्त और व्यवहार का निश्चित मूल्यांकन-करने लगे। डेवी के दर्शन ने, जो सन् १८९६ में शिकागो विश्वविद्यालय के एक प्रयोगात्मक प्रारम्भिक स्कूल में उदाहरण के रूप में प्रारम्भ किया गया था, शिक्षकों को उन्नीसवीं शताब्दी के धार्मिक, अनुशासनात्मक और सूचनात्मक उद्देश्यों से हटने के लिए प्रेरित किया।

अमेरिकी शिक्षा में महत्त्वपूर्ण सुधारों को उन महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक और समाज-विज्ञान सम्बन्धी विचारधाराओं से प्रोत्साहन मिला है जिनका प्रारम्भ उन्नीसवीं शताब्दी की अन्तिम दशाब्दी में हो चुका था। मनोवैज्ञानिक जी० स्टैनले हाल (१८४४-१९२४) ने मानव स्वभाव, विशेषतः किशोरावस्था के वर्षों में, के सम्बन्ध में गहन अनुसंधान जारी रखा। हाल के कार्य ने बीसवीं शताब्दी के मनोवैज्ञानिकों को बाल-विकास और अध्ययन प्रक्रिया पर विचार करने के लिए प्रेरित किया।

इसी समय डेवी ने यह जानकर कि उन्नीसवीं शताब्दी के अमेरिकी समाज में अनेक सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, "स्कूल और समाज" पुस्तक (१८९९) में यह सिफारिश की कि अध्यापक शिशु के स्वभाव को ही समझने का यत्न न करें अपितु व्यक्ति और अन्य मनुष्यों के बीच के सामाजिक सम्बन्धों पर भी विचार करें।

निर्देशन का आधुनिक अर्थ बीसवीं शताब्दी से पूर्व के शैक्षिक साहित्य में नहीं मिल सकता। यह सत्य है कि इस विचारधारा का उस बल से घनिष्ठ सम्बन्ध है जो प्रारम्भिक दार्शनिकों द्वारा बच्चे को समझने की आवश्यकता पर दिया गया है ताकि उसे सचाई के मार्गों पर ले जाया जा सके और श्रेष्ठ व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास प्राप्त करने के कार्य में उसकी सहायता की जा सके। निर्देशन का अर्थ है शिक्षा में बीसवीं शताब्दी का योग।

वर्तमान निर्देशन विधियों के आधार

व्यक्तियों को अपनी क्षमताएँ खोज निकालने, उनके अपने व्यक्तित्वों का विश्लेषण करने अथवा उनके भावी जीवन के अनुभवों की भविष्यवाणी करने में सहायता देने के बहुत से प्रारम्भिक प्रयत्न भद्दे और अन्धविश्वासों पर आधारित थे। आधुनिकतर कार्यक्रम के व्यवहार प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों में किये गये अनुसन्धान पर आधारित हैं।

छद्म वैज्ञानिक पथ-प्रदर्शन विधियाँ अवैज्ञानिक "भविष्यवाणी" ने बहुत से भिन्न-भिन्न रूप ग्रहण किये : अंकशास्त्र, ज्योतिष, लेखचित्रण कला, सामुद्रिक शास्त्र, मुखविज्ञान, तान्त्रिक विद्या, भाल अध्ययन विद्या, अध्यात्मवाद, स्वप्न-मीमांसा, चाय के पत्तों, काफी के चूरे और ताश के पत्ते से "भविष्य बताना" और सम्बन्धित जाति के लोगों की परम्परा के अनुसार किसी न किसी अन्ध-विश्वास का प्रयोग।

इनमें से कुछ प्रविधियाँ अब भी बहुत से बच्चों और वयस्कों के व्यवहार पर प्रभाव डालती हैं। अज्ञात और अदृष्ट का आकर्षण हज़ारों व्यक्तियों को विकसित आत्म-ज्ञान अथवा समस्या सुलझाने का लाभ प्रदान किये बिना समय और धन व्यय करने के लिए आकर्षित करता है।

स्वप्न-विश्लेषण पर समस्त क्षेत्रों के लोगों ने पर्याप्त ध्यान दिया है। अधिक श्रद्धालु व्यक्ति अब भी "स्वप्न सम्बन्धी पुस्तकों" का अध्ययन करते हैं जो स्वप्नों के विशिष्ट अर्थ बताती हैं। अन्य व्यक्तियों के लिए ब्रिल और उनके साथियों की कृतियाँ स्वप्न-विश्लेषण के द्वारा उपचेतन की निम्नतम गहराइयों में झाँकने में और उनमें छिपी हुई वासनाओं व इच्छाओं को प्रगट करने का उपयोगी अवसर देती हैं, सामान्यतः जिनका सम्बन्ध नैतिक जीवन से है जिसे जाग्रत अवस्था में दबाये रखने की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से इन उत्साही व्यक्तियों के लिए स्वप्न का कारण बहुधा बिना पचा हुआ रात्रि का भोजन और शैया के अस्त-व्यस्त वस्त्र होते हैं।

यह तथ्य कि बहुत से व्यक्ति अब भी इन अवैज्ञानिक व्यवहारों पर विश्वास करते हैं, इस बात का द्योतक है कि उन्हें सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे व्यक्ति बिना सोचे समझे व्यक्तिगत मनोबल का निर्माण करने अथवा आत्म-ज्ञान प्राप्त करने के लिए समूहबद्ध हो रहे हैं।

बदलते हुए मनोवैज्ञानिक विचार निर्देशन मानव-जीवन के रूपों से सम्बन्धित विविध आन्दोलनों का परिणाम है। दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रारम्भिक मनोवैज्ञानिक जीवन का कोई न कोई दर्शन स्वीकार करने को उत्सुक थे, जिसे उन्होंने जीवन के अनुभवों पर प्रयोग करने का प्रयत्न किया। उन्हें ज्ञात हुआ कि मानव-व्यवहार सदैव दार्शनिक दृष्टि से निश्चित नमूनों के अनुकूल नहीं चला करता। अतएव दार्शनिकों ने यह जानने के लिए कि वह क्या सोचता और क्या कार्य करता है, अनुसन्धान सम्बन्धी अनेक अध्ययन, खोज और प्रयोग किये।

जिन मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का विकास हुआ है, उनमें निर्देशन के कार्यों को समझने के लिए निम्नलिखित प्रमुख हैं:

१. शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से एक व्यक्ति विभिन्न गतियों से विकास करता है, अपने विकास में विभिन्न कदमों से, विभिन्न समयों पर और विभिन्न मात्राओं में वह परिपक्व स्थिति प्राप्त करता है।

२. मानव परिवार के सदस्य अपने विकास के व्यापक रूप में समान तत्त्वों से युक्त होते हैं, किन्तु जीव विज्ञान सम्बन्धी पैतृक स्थिति और सामाजिक परम्परा मिलकर व्यक्तिगत भेदों को जन्म देते हैं; जब हम व्यक्तियों के किसी समूह पर विचार करते हैं, तो इन बातों को हमें ध्यान में रखना चाहिए।

३. गम्भीर अध्ययन और प्रयोग के पश्चात् अध्ययन के जिन सिद्धान्तों का इस क्षेत्र में विकास हुआ है, वे इन बातों को समझने में सहायता देते

हैं : अध्ययन में व्यवहार का मूल्य, रुचि जाग्रत करने में प्रेरणा का स्थान और यह कि किस सीमा तक अध्ययन प्रक्रिया से होने वाला संतोष अथवा असंतोष अध्ययन सम्बन्धी सफलता को प्रभावित करता है ।

४. मनोवैज्ञानिकों और शिक्षकों के संयुक्त प्रयत्नों से बीसवीं शताब्दी में व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए प्रविधियों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है । अतएव, निर्देशन का एक महत्त्वपूर्ण रूप शारीरिक स्थिति, मानसिक योग्यता और विशिष्ट रुझान, रुचि सम्बन्धी सूचियों, सफलता की तुलाओं, इन्द्रिय सम्बन्धी और लचीली प्रविधियों, व्यवहार तुलाओं तथा भावनात्मक और सामाजिक स्थिति का मूल्यांकन करने के अन्य साधनों की स्तरीकृत जाँचों का उपयोग हो गया है ।

औद्योगिक और वैज्ञानिक प्रगति मशीनों के आविष्कार और उद्योगों की तेजी से होने वाली वृद्धि ने एक सीमा तक ऐसी व्यावसायिक विशेषज्ञता को जन्म दिया है, जिसका भूतकाल में नाम भी नहीं सुना गया था । माल के बढ़े हुए उत्पादन, वितरण और उपभोग ने किये जाने वाले विशेष कार्यों की संख्या में वृद्धि की है; उन्होंने नागरिक जीवन की जटिलताओं को पूरा करने और श्रमिकों की अवकाशकालीन गतिविधियों की व्यवस्था करने के लिए सेवा व्यवसाय के अन्य अनेक रूपों को भी विकसित किया है ।

अनुसन्धानकर्त्ताओं द्वारा विज्ञान के विविध क्षेत्रों में की गई तीव्र प्रगति ने आधुनिक जीवन में पूर्ण क्रान्ति कर दी है । आणविक शक्ति की खोज, युद्ध में उसके प्रयोग और शान्तिकालीन कार्यों में उसके उपयोग के लिए सावधानी से चुने गये और पूर्णतः प्रशिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता है । इसके अतिरिक्त एक अमेरिकी नवयुवक से अब यह आशा नहीं की जा सकती कि वह अपनी रुचियों और गतिविधियों को केवल उसी समाज तक सीमित रखेगा जिसमें वह उत्पन्न हुआ है और जिसमें उसका पालन-पोषण किया गया है क्योंकि अन्य देशों में उसे बहुत से अवसर उपलब्ध हो रहे हैं । ये उसकी साहस की भावना को प्रेरित कर सकते हैं, इसलिए उसे जीवन के प्रभावशाली लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन की आवश्यकता है ।

शिक्षा के बदलते हुए बाह्य रूप बीसवीं शताब्दी में अध्ययन की जाने वाली सामग्रियों की अपेक्षा विद्यार्थी पर जो शैक्षिक बल दिया जाता है उसने निर्देशन में रुचि को बहुत आगे बढ़ा दिया है । स्कूल प्रत्येक स्तर पर व्यक्ति के विकास के प्रत्येक चरण में रुचि प्रदर्शित करते हैं । शिक्षा में प्रयुक्त बाह्य रूप इस विचारधारा के उदाहरण हैं ।

सन् १९१८ में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय शिक्षा संघ के माध्यमिक शिक्षा आयोग (एन० ई० ए०) ने सिफारिश की थी कि शैक्षिक सिद्धान्त और व्यवहार का उद्देश्य ऐसा होना चाहिए जिससे नवयुवकों को निम्नलिखित क्षेत्रों में जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता देने के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध हो सकें :

१. स्वास्थ्य
२. मौलिक प्रक्रियाओं पर अधिकार
३. सुयोग्य घरेलू सदस्यता
४. व्यवसाय
५. नागरिक शिक्षा
६. अवकाश का सदुपयोग
७. नैतिक चरित्र

शिक्षा के इन सात महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों ने समस्त स्तरों पर अध्यापन और अध्ययन को प्रभावित किया है। पाठ्यक्रम में क्या सम्मिलित किया जाय, अध्यापन-पद्धतियों को कैसे अपनाया जाय और इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किस प्रकार का और कितना निर्देशन अपेक्षित है, ये बातें इन सातों क्षेत्रों में से प्रत्येक में रवैये और व्यवहार के स्वरों के तत्त्वों के अनुसार बदलते हुए अभिप्रायों के साथ भिन्न-भिन्न रही हैं।

शैक्षिक बाह्य रूपों के परवर्ती उपयोगों में महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त प्रमुख रहे हैं। उदाहरण के लिए, सन् १९३८ में एन० ई० ए० के शैक्षिक नीति आयोग ने निम्न-लिखित चार व्यापक लक्ष्य प्रस्तुत किये थे :

१. आत्मानुभूति का लक्ष्य
२. मानव सम्बन्ध का लक्ष्य
३. आर्थिक कुशलता का लक्ष्य
४. नागरिक दायित्व का लक्ष्य

शैक्षिक उद्देश्यों अथवा लक्ष्यों के अन्य प्रयुक्त वक्तव्य, जो उपरोक्त के सदृश थे, समन्वय के अनुभव के रूप में शिक्षा के व्यावहारिक कार्य पर बल देते हैं। ज्यों-ज्यों हमारी सभ्यता निरन्तर जटिल होती जा रही है और ज्यों-ज्यों नई व्यक्तिगत तथा सामाजिक समन्वय सम्बन्धी आवश्यकताएँ उत्पन्न हो रही हैं, त्यों-त्यों वर्तमान शैक्षिक लक्ष्यों में परिवर्द्धन और संशोधन हो रहे हैं।

संचार और यात्रा की विकसित प्रणालियों और संसार के लोगों की निरन्तर बढ़ती हुई पारस्परिक निर्भरता ने दूसरे शैक्षिक लक्ष्य को और भी प्रयुक्त और क्रियान्वित करना आवश्यक कर दिया है। शिक्षकों ने यूरोप, मध्यपूर्व, एशिया और अफ्रीका के लोगों के जीवन की स्थितियों, अर्थतंत्रों, विश्वासों, प्रथाओं और रवैयों का गहराई से तथा निकट से अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया है। अपनी खोजों के परिणामस्वरूप ये व्यक्ति यह मानने लगे हैं कि अमेरिकी शिक्षा को—गणित, विज्ञान तथा पाठ्यक्रम के अन्य मौलिक क्षेत्रों की उपेक्षा किये बिना—(१) संसार-भर की जीवन समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए, (२) दूसरे लोगों से उनकी अपनी भाषा में व्यवहार करने की योग्यता का विकास करना चाहिये, (३) इन लोगों के साथ मिल कर कार्य करने की कुशलता प्राप्त करनी चाहिए और (४) उनको जीवन की जनतांत्रिक पद्धति बतानी चाहिए।

स्कूल की जनसंख्या में वृद्धि माध्यमिक स्तर के द्वारा जनता द्वारा समर्थित स्कूली शिक्षा राज्य का उत्तरदायित्व है, यह स्वीकार कर लिया गया है। कुछ राज्यों में जनता की सहायता उच्चतर शिक्षा के कम से कम चार वर्षों में प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक बच्चे के शैक्षिक अधिकार निश्चित करने के लिए प्रत्येक राज्य में बाधित उपस्थिति अधिनियम बना दिये गये हैं, जिन्होंने स्कूल छोड़ने की न्यूनतम आयु निर्धारित कर दी है। आयु सम्बन्धी अपेक्षाओं की निम्न सीमा १४ और उच्च सीमा १८ है।

उन बच्चों और नवयुवकों की बढती हुई संख्या ने—जिसके औपचारिक स्कूल प्रशिक्षण प्राप्त करने की आशा की जाती है—प्रशासन, संगठन और निर्देशन की समस्याओं पर गंभीरता से विचार करने को विवश कर दिया है। विद्यार्थियों की ऐसी भारी संख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त भवनों और स्कूल कर्मचारियों की व्यवस्था करने में बजट सम्बन्धी कठिनाइयाँ आती हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारम्भ से जनसंख्या में जो निरन्तर वृद्धि हो रही है, उसके फलस्वरूप हमारे स्कूलों की भावी जनसंख्या शैक्षिक प्रयत्नों और बजट को इतना प्रभावित करेगी जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। सामूहिक शिक्षा की लगभग अपरिहार्य परिस्थिति ने कक्षा के अधिकतम आकार, व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एकरस समूहीकरण, पाठ्यक्रम और अध्यापन के वांछनीय समन्वय और निर्देशन की सुविधाओं के सम्बन्ध में अनेक समस्याओं को जन्म दिया है और भविष्य में अनेक वर्षों तक इन समस्याओं को और गंभीर बनाती रहेगी। इसी में निर्देशन सेवा के विस्तार का अनिवार्य कारण निहित है।

निर्देशन आन्दोलन में आधुनिक धाराएँ

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक युग से निर्देशन आन्दोलन का इतिहास पूर्णतया संतोषजनक तो नहीं किन्तु मनोरंजक अवश्य रहा है। अनेक बातों ने उन सेवाओं की पहल को प्रोत्साहन दिया है जो हमारे आधुनिक जटिल समाज के युवा और प्रौढ़ सदस्यों की बढ़ती हुई व्यावसायिक, शैक्षिक और व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान कर सकती थीं।

व्यावसायिक निर्देशन बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में बहुत से नवयुवकों, विशेषतः लड़कों के सम्मुख ऐसी समस्याएँ आ खड़ी हुईं जब कि उन्हें यह निर्णय करना आवश्यक हो गया कि किस प्रकार के कार्य में उनकी रुचि है जिसमें उन्हें निपुणता प्राप्त करनी चाहिए। नवयुवकों को व्यावसायिक सहायता देने वाले सर्वप्रथम प्रयत्न का उल्लेख बोस्टन में ब्रेड विनर्स इंस्टीच्यूट के डाइरेक्टर फ्रैंक पार्सन्स द्वारा आरम्भ किये गये निर्देशन आन्दोलन के रूप में मिलता है। यह इंस्टीच्यूट सिविल सर्विस हाउस की शाखा थी। मेयर ब्लूमफील्ड इसके निर्देशक थे। पार्सन्स के कार्य के फलस्वरूप सन् १९०८ में बोस्टन वोकेशनल ब्यूरो का संगठन किया गया। इसी अवधि में ग्रांड्‌ रैपिड्स, मिशीगन में उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों

को जेस्से डेविस के नेतृत्व में सामूहिक और व्यक्तिगत व्यावसायिक निर्देशन प्रदान किया गया। न्यूयार्क नगर विद्यालय प्रणाली द्वारा, नौकरी दिलाने के लिए, कुछ व्यावसायिक परामर्श कार्य भी किया गया।

व्यावसायिक निर्देशन आन्दोलन शीघ्रता से देश-भर में फैल गया, किन्तु बहुत से "कार्यक्रम" अपेक्षाकृत अनौपचारिक थे जिनमें उपलब्ध नौकरियों के सम्बन्ध में मुख्यतः जानकारी देने का कार्य होता था। इस जानकारी को संगठित करने के प्रथम प्रयत्न का श्रेय कनेक्टीकट को जाता है। वोकेशनल गाइडेंस बुलेटिन, (जिसे अब पार्सोनेल एण्ड गाइडेंस जनरल कहते हैं) सन् १९१५ में चार पृष्ठ की पुस्तिका के रूप में प्रारम्भ किया गया था। सन् १९२३ में जेस्से डेविस—जो उस समय राज्य विभाग के राज्य निरीक्षक थे—ने निर्देशन पर एक बुलेटिन तैयार करके जारी किया था जिसका नाम था माध्यमिक स्कूलों के लिए शैक्षिक निर्देशन में कार्यक्रम के लिए सुझाव (Suggestions for a Program in Educational Guidance for Secondary Schools)।

व्यावसायिक निर्देशन पर बोस्टन (१९१०), न्यूयार्क (१९१२) और ग्रांड रैपिड्स (१९१३) में राष्ट्रीय सम्मेलन हुए। अंतिम सम्मेलन में, निर्देशन के तीन क्षेत्रों पर बल दिया गया: व्यावसायिक (आर्थिक), शैक्षिक और सामाजिक। इन प्रारम्भिक स्थितियों से अमेरिकन पर्सोनेल एण्ड गाइडेन्स एसोसियेशन (APGA) का जन्म हुआ। इस राष्ट्रीय संघ में छः सहायक संगठन हैं। अमेरिकन कालेज पर्सोनेल एसोसियेशन, नेशनल एसोसियेशन ऑफ गाइडेंस सुपरवाइजर्स एण्ड कौंसलर ट्रेनर्स; नेशनल वोकेशनल गाइडेंस एसोसियेशन; स्टुडेंट पर्सोनेल एसोसियेशन फॉर टीचर एजुकेशन; अमेरिकन स्कूल कौंसलर एसोसियेशन; डिवीजन ऑफ रिहैबिलि-टेशन कौंसलिंग। ए० पी० जी० ए० के सदस्यों में प्रारम्भिक और माध्यमिक स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों, सामुदायिक अभिकरणों, उद्योग तथा सरकार के निर्देशन कर्मचारी भी होते थे।

संकटपूर्ण अवधियों में व्यवसाय अथवा नौकरी सम्बन्धी महत्त्व रखने वाली विविध परियोजनाएँ प्रारम्भ की गई हैं। १९३०-३९ के संकटकालीन वर्षों में नौकरी के अवसरों, व्यावसायिक प्रशिक्षण और नौकरी दिलाने वाले अभिकरणों को वित्तीय सहायता से सम्बन्धित सामग्री के वितरण के लिए नेशनल यूथ एडमिनिस्ट्रेशन (NYA) की स्थापना की गई थी। इसी समय वन की सफाई, सड़क निर्माण और बाँध निर्माण जैसी देशव्यापी परियोजनाओं पर बेकार किशोरों और युवकों को सिविलियन कंजर्वेशन कोर (CCC) ने काम दिया।

शैक्षिक निर्देशन स्कूल से बाहर के युवकों के लिए नौकरियों की खोज करने के प्रयत्न के साथ-साथ व्यावसायिक निर्देशन प्रारम्भ से ही नवयुवकों की शनैः शनैः नौकरी के चुनाव और नौकरी के लिए तैयारी के कार्य में सहायता करने लगा था। व्यवसायों पर जो प्रारम्भ में बल दिया जाता था उसके कारण अब भी कुछ लोग सब प्रकार के निर्देशन को व्यावसायिक निर्देशन ही समझते हैं।

अपने बच्चों को निरन्तर दी जाने वाली शिक्षा के महत्त्व को अभिभावक अधिकाधिक समझने लगे हैं। उसके परिणामस्वरूप माध्यमिक स्कूल की जनसंख्या में ही वृद्धि नहीं हुई अपितु पाठ्यक्रम के विषयों में भी विविधता आई है। विस्तृत पाठ्यक्रम का अर्थ यह था कि हाई स्कूल में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों को अपनी रुचियों और/या अपने माता-पिताओं की इच्छाओं के अनुकूल पाठ्यक्रम का चुनाव करने के लिए सहायता की आवश्यकता थी। अतएव कुछ बड़े माध्यमिक स्कूलों में पाठ्यक्रम के परामर्शदाता के रूप में शैक्षिक निर्देशन प्रारम्भ किया गया।

परामर्शदाता अधिकतर ऐसे अध्यापक होते थे—और कुछ स्कूलों में अब भी होते हैं—जिन्हें निर्देशन में न तो कोई विशेष रुचि होती थी और न जिन्होंने प्रशिक्षण ही प्राप्त किया होता था। इसके अतिरिक्त इस निर्देशन कार्य के लिए बजट में कोई व्यवस्था नहीं होती थी—और यदि होती भी थी तो नगण्य—अतएव कक्षा के ये तथाकथित परामर्शदाता अध्यापन कार्य से बचे हुए न्यूनतम समय में छात्र का भारी भार वहन किया करते थे। इन स्थितियों के फलस्वरूप परामर्श देने का कार्य बहुधा रस्म अदायी, अपेक्षाकृत अवैयक्तिक और अध्यापन के पश्चात् का अतिरिक्त कार्य भार बन कर रह गया।

अभी पिछले दिनों तक, यदि निर्देशन विद्यालय सम्बन्धी कार्यक्रम अथवा परामर्श कार्य कहीं चलते भी थे तो अत्यन्त शिथिल रीति से और वे माध्यमिक स्कूल के स्तर पर शिक्षा से सम्बद्ध होते थे। अधिकतर कालेजों में, निकाय का सदस्य अध्यक्ष (Dean) होता था। अध्यक्ष (जो साधारणतया विशेष प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होता था) का कार्य मुख्यतः अनुशासन और प्रशासन का ब्यौरा देखना होता था। निम्न स्कूल के स्तर पर प्रशासकीय अधिकारी और अध्यापक विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति का भार उठाते थे; ये आवश्यकताएँ शैक्षिक मूल बातों में निपुणता प्राप्त करने और आचार तक सीमित समझी जाती थीं। अध्ययन में पर्याप्त सफलता प्राप्त न करने अथवा दुर्व्यवहार करने का अर्थ विद्यार्थी का असहयोग समझा जाता था। जिन विद्यार्थियों को अनुशासित करने की आवश्यकता होती थी; वे आचार्य द्वारा सम्भाले जाते थे, आचार्य सम्भवतः दण्ड प्रणाली का अवलम्बन करता था। निर्देशन का निरोधात्मक रूप अभी तक प्रारम्भिक स्कूलों के बहुत से अध्यापकों अथवा स्कूल प्रणाली के प्रशासकों ने स्वीकार नहीं किया था।

व्यक्तिगत निर्देशन बीसवीं शताब्दी के जीवन में परम्परा से प्राप्त विविध परिस्थितियाँ एसे तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनका समुचित समन्वय नहीं हुआ है। इसके फलस्वरूप सामाजिक नेता बच्चों और वयस्कों के व्यक्तिगत कल्याण के विषय में चिन्तित हो उठे हैं। मानसिक स्वास्थ्य आन्दोलन और कुछ शिशु पथ-प्रदर्शन क्लिनिक इसीलिए प्रादुर्भूत हुए हैं।

मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य आन्दोलन को प्रथम विश्व-युद्ध में सैनिकों के भावनात्मक अस्त-व्यस्त अनुभवों और मानसिक रोगों के चिकित्सालय में क्लिफर्ड बियर्स द्वारा प्राप्त अनुभवों से प्रेरणा प्राप्त हुई है। गम्भीर भावनात्मक

हलचलों के निरोध और भावनात्मक स्थायित्व को बनाये रखने पर दिये जाने वाले नवीन बल तथा मानसिक रोग के विस्तृत ज्ञान ने निर्देशन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला है। यद्यपि असंतुलित व्यक्ति की शोचनीय दशा पर विशेषज्ञ पर्याप्त ध्यान देते हैं, तो भी निर्देशन कार्यक्रमों का लक्ष्य भावनात्मक संतुलन तथा व्यवहार के समन्वय को प्राप्त करने और उसे बनाये रखने में सहायता देने के लिए परामर्शदात्री सेवाओं की व्यवस्था करना है।

शिशु निर्देशन क्लिनिक गम्भीर असन्तुलन का परिचय देने वाले नवयुवकों का अध्ययन करने और उनकी चिकित्सा करने के उद्देश्य से शिकागो में एक छोटे से क्लिनिक की स्थापना हुई थी जो अब विकसित होकर इलीनाइस इन्स्टीच्यूट ऑफ जुवेनाइल रिसर्च बन गया। आजकल देश के लगभग प्रत्येक बड़े नगर में और कुछ छोटे समुदायों में शिशु पथ-प्रदर्शन तथा मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक क्लिनिक बच्चों, किशोरों और वयस्कों की सेवा कर रहे हैं। दुर्भाग्य से, हमारे आधुनिक जटिल समाज में भावनात्मक असन्तुलन और मानसिक रोग की इतनी अधिक घटनाएँ होती हैं कि उनकी सेवाओं की माँग को पूरा करने के लिए उपलब्ध क्लिनिक सुविधाएँ खेदजनक रूप से अपर्याप्त हैं।

निर्देशन के विशिष्ट क्षेत्रों पर बल निर्देशन आन्दोलन के प्रारम्भिक विकास में इस क्षेत्र के लेखकों ने निर्देशन के कार्यों को तीन पृथक्-पृथक श्रेणियों में विभाजित करने के लिए लम्बी और विस्तृत रीतियाँ प्रस्तुत की थीं। ये श्रेणियाँ थीं: शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत। ऐसा विभाजन व्यावहारिक नहीं, इन तीनों क्षेत्रों को पृथक् करना लगभग असंभव है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक श्रेणी जटिल है। जिस निर्देशन की व्यक्ति को खोज है, यदि उससे उसे लाभ उठाना है तो बहुत सी उपलब्ध क्षमताओं और अनुभवजन्य प्रभावों का सावधानी से विश्लेषण तथा एकीकरण करना होगा।

वादविवाद के लिए प्रश्न तथा विषय

१. ऐसे पाँच असन्तुलनकारी तत्त्वों के नाम बताइये जो वर्तमान आर्थिक जीवन में निहित हैं। वर्तमान सामाजिक स्थितियों के लिए भी ऐसा ही कीजिए।
२. विश्व की बाधाओं से आप कहाँ तक प्रभावित हुए हैं?
३. पिछले पच्चीस वर्षों में व्यक्ति के अधिकारों और उत्तरदायित्वों के सम्बन्ध में सार्वजनिक रवैयों में किस सीमा तक परिवर्तन हुआ है, इस पर विचार कीजिए।
४. व्यवहार की पराधीनता अथवा स्वाधीनता की दृष्टि से आप अपने आठ वर्ष की आयु के व्यक्तित्व की सोलह वर्ष की आयु के व्यक्तित्व से तुलना कीजिए। आप क्या परिवर्तन पाते हैं?
५. अपनी किशोरावस्था में आपने किससे सहायता ली थी? क्यों?
६. 'आकर्षक शब्द'' के रूप में निर्देशन का उल्लेख करने से क्या तात्पर्य है? व्याख्या कीजिए।

७. शिशु-कल्याण में रुचि के ऐतिहासिक विकास का निरूपण कीजिए।
८. स्पष्ट रूप से बताइये कि शिक्षा और निर्देशन किस प्रकार समान उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं और किस प्रकार उनके उद्देश्य में विषमता है।
९. आप अपने आपको कितना समझते हैं ? अपना एक संक्षिप्त व्यक्तित्व रेखा-चित्र खींचिये जिसमें अपने स्वाभाविक रुझानों और व्यवहार के नमूनों का दिग्दर्शन कीजिए।
१०. यदि आपको व्यक्तिगत समस्या सुलझाने के लिए सहायता की आवश्यकता आ पड़े तो आप किसके पास जायेंगे ? क्यों ?
११. उन बातों की सूची बनाइये जिन्होंने आपके उस स्कूल में प्रवेश लेने के निर्णय को प्रभावित किया जिसमें कि आजकल आप हैं। इस निर्णय पर पहुँचने में किस सीमा तक दूसरे लोगों ने आपकी सहायता की ?
१२. अनौपचारिक निर्देशन के क्या हानि-लाभ हैं ?
१३. निर्देशन की तीनों सम्बन्धित श्रेणियों—शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत—में से प्रत्येक से सम्बन्धित एक समस्या लीजिए। स्पष्ट रूप से बताइये कि एक क्षेत्र की समस्या किस सीमा तक शेष दो क्षेत्रों में भी पहुंच जाती है।

२ निर्देशन की कल्पना

निःसंदेह निर्देशन का मूल कार्य उन व्यक्तियों की सहायता करना है जिन्हें अपनी समस्या के समाधान के लिए सहायता की आवश्यकता है और जो सहायता चाहते हैं। व्यक्ति और समूह किस प्रकार और कितनी सहायता प्रदान करें, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे निर्देशन के विचार को कितना समझते हैं।

निर्देशन की कल्पना का विस्तार और गहराई

निर्देशन शब्द ऐसी कल्पना का प्रतिनिधित्व करता है जो न तो सरल है और न सरलता से समझी जाती है। मानव स्वभाव की जटिलता, एक ही माता-पिता के बच्चों में भी होने वाला विकास सम्बन्धी अन्तर, परिवर्तनशील परिस्थितियों तथा सांस्कृतिक संहिता से सम्बद्ध समस्याएँ—ये सब चाहती हैं कि बहुत-सी और विविध निर्देशन पद्धतियों का प्रयोग किया जाय।

निर्देशन एक प्रक्रिया है। अतएव यह किसी निश्चित परिभाषा में नहीं बँध सकती। लेखकों ने एक भूतपूर्व छात्रा से—जो अब पूरे समय की स्कूल-निर्देशिका परामर्शदात्री है—निर्देशन की परिभाषा करने को कहा था। उसका उत्तर था, "निर्देशन क्या है ? मेरे लिए यह चौबीसों घंटे का कार्य है।" वास्तव में जो कोई भी हृदय से निर्देशन के दायित्व का निर्वाह करना चाहता है, उसके लिए निर्देशन सेवाओं का क्षेत्र विशाल और गंभीर है।

निर्देशन की आवश्यकता जीवन की समस्याएँ अधिकाधिक जटिल बनती जा रही हैं। आचार और व्यवहार की शुद्धता और अशुद्धता से सम्बन्धित परम्परागत धारणाएँ और व्यक्तिगत मान्यताएँ छिन्न-भिन्न हो रही हैं। मानवीय सम्बन्धों के विषय में हमारे शुद्धतावादी (Puritan) पूर्वजों के निश्चित विश्लेषण अब उदासीनता के सम्मुख पराङ्मुख हो रहे हैं। अब हम, बिना चुनौती प्राप्त किये,

इस बात का दावा नहीं कर सकते कि आचार की अमुक पद्धति पूर्णतया सही है और दूसरी ग़लत। न ही विचारक लोग इस बात को उपदेशात्मक रीति से कहने के लिए प्रस्तुत हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने भूत और वर्तमान आचार के अनुकूल ही भविष्य में भी आचरण करना चाहिए।

हमारे घर, स्कूल और सामाजिक तथा व्यावसायिक कार्यों तथा सम्बन्धों में निहित परस्पर विरोधी तत्त्व हमें विविध दिशाओं में खींचते हैं। हम अपने आपको बहुधा ऐसी उलझन और किंकर्त्तव्यविमूढ़ स्थिति में पाते हैं कि हमारे लिए बिना सहायता प्राप्त किये हुए आचार के ऐसे मार्ग पर चलना कठिन हो जाता है जो हमें उस लक्ष्य तक पहुँचा दे तथा हमारे चतुर्दिक् रहने वाले लोगों के लिए संतोषजनक हो। बहुधा परामर्श अथवा निर्देशन की स्वीकृत आवश्यकता हमें ऐसे व्यक्तियों का शिकार बना देती है जो ऐसे क्षेत्रों में निर्देशक अधिकारी के रूप में कार्य करते हैं जिनमें उनकी कोई पैठ नहीं होती और यदि होती भी है तो नगण्य; वे केवल ऊपरी बातों के सम्बन्ध में आकर्षक ढंग से बोलकर अपना प्रभाव जमा लेते हैं। ये सामान्य ऊपरी बातें कुछ क्षण के लिए श्रोता को संतुष्ट कर सकती हैं, किन्तु वे उसमें ऐसी शक्ति का निर्माण नहीं करतीं जिससे वह वास्तविकता का साहसपूर्वक सामना कर सके अथवा अपने जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को सुलझाने के लिए शक्ति प्राप्त कर सके।

वर्जीनिया के शिक्षकों के एक प्रतिनिधि समूह द्वारा अभी हाल ही में तैयार किये गये वक्तव्य के अनुसार इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्देशन का होना आवश्यक है :

प्रत्येक व्यक्ति के लिए ऐसा स्थान प्राप्त करना जिसमें वह व्यक्तिगत प्रसन्नता प्राप्त करता है।

नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के सम्बन्ध में जागरूकता का विकास करना।

व्यक्ति के रूप में मान्यता और प्रतिष्ठा प्राप्त करना।

प्रत्येक व्यक्ति के सम्बन्ध में यह अनुभव करना कि वह जिस समूह का सदस्य है उसमें अपना योग दे रहा है।

अपने आपको, अपनी योग्यताओं को, अपनी सीमाओं को और अपनी क्षमताओं को समझना।

विकास करने और अपनी योग्यताओं तथा अनुभवों के प्रयोग के अवसर के लिए।

उत्साह, प्रेम और ज्ञान के लिए।

समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुकूल स्वयं को ढालने की दिशा में साधन-सम्पन्नता और आत्म-निर्देशन का विकास करने के हेतु।

ये वक्तव्य इस तथ्य पर आधारित हैं कि "प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी अधिकारक्षेत्र में पृथक् स्थिति रखता है और उसमें परिवर्तन तथा विकास के लिए

शक्ति निहित होती है। उसमें ऐसे वांछनीय चुनाव करने की क्षमताएँ होती हैं जो उसे सतत समन्वय की ओर ले जा सकें।*

यह आवश्यक नहीं है कि जो व्यक्ति वास्तविक निर्देशन की आवश्यकता को अनुभव करता है, वह किसी समस्या के समाधान के लिए इच्छा भी रखता हो। किस सीमा तक कौन व्यक्ति अपने मामलों के प्रबंध के सम्बन्ध में स्वतन्त्र निर्णय करने की क्षमता रखता है, यह बात प्रत्येक व्यक्ति में पृथक्-पृथक् होती है। कुछ व्यक्ति जो अपने आपको आत्म-निर्भर समझते हैं, वे उपलब्ध सहायता से लाभ उठा सकते हैं; किन्तु जिसके विषय में वे अपरिचित हैं उसे वे स्वीकार नहीं करेंगे। एक अन्य प्रकार का भी व्यक्ति होता है जो अपने विषय में सोचने, अपने कार्यों का नियोजन करने अथवा वांछनीय जानकारी का स्वयं में अनुभव करने में असमर्थ अथवा अनिच्छुक प्रतीत होता है। इस प्रकार का व्यक्ति अपने "भार" को अपने परिवार के साथ अन्य सदस्यों अथवा परिचितजनों के कंधों पर डालने का प्रयत्न करता है। दुर्भाग्य से, इस व्यक्ति में अनिश्चित मनोवृत्ति और निर्भरता के रवैये के साथ-साथ ऐसे व्यक्ति द्वारा दी गई सहायता की कटु आलोचना करने की भी प्रवृत्ति होती है जिससे कि उसने सहायता प्राप्त की है।

मेडफोर्ड, मैसाचूसेट्स में गाइडेंस एण्ड प्लेसमेंट विभाग के निर्देशक ने स्कूलों के सुपरिटेंडेंट को प्रस्तुत किये गये ताजा वार्षिक प्रतिवेदन में कहा है:

निर्देशन और परामर्श सम्बन्धी कार्यक्रम का उद्देश्य ऐसी सेवाओं की व्यवस्था करना है जो नवयुवकों की वृद्धि और विकास की कुछ आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। वे सेवाएँ हैं:

१. व्यक्तिगत विकास और समन्वय :
   आत्म-बोध, क्षमताओं, विशेष रुचियों और अभिरुचियों की खोज।
   वांछनीय रवैयों और स्वभाव की मान्यता और विकास तथा अवांछनीय लक्षणों का अन्त।
   आत्म-निर्देशन।

२. शैक्षिक प्रगति और समन्वय :
   व्यक्तिगत आवश्यकताओं, अभिरुचियों, योग्यताओं और परिस्थितियों के अनुकूल उपयुक्त पाठ्य-विधियों का चुनाव।
   उचित प्रकार के उच्चतर प्रशिक्षण-कालेज या अन्य प्रकार का चुनाव।

३. व्यावसायिक विकास और समन्वय :
   व्यावसायिक अवसरों और धाराओं की जानकारी।
   ऐसे व्यावसायिक क्षेत्रों का ज्ञान जिनकी ओर व्यक्तिगत रुझानों और अभिरुचियों का सर्वश्रेष्ठ निर्देशन किया जा सके।
   उचित नौकरी की खोज करने में सहायता देना।

*Guidance in the Elementary Schools, जिल्द ३६, सं० ५; दिसम्बर १९६३, कामन्वेल्थ ऑफ़ वर्जीनिया, रिचमौंड Va, पृष्ठ ३-४

४. स्कूल परित्याग के पश्चात् कार्य करते रहना।
विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और माध्यमिक स्कूल के पाठ्यक्रम की प्रभविष्णुता के सम्बन्ध में अनुसन्धान।
निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन।

उपरोक्त आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति—जिसके लिए निर्देशन ने प्रमुख दायित्व ग्रहण किया हुआ है—से निर्वाचन करने की स्वाधीनता को क्षति पहुँचाये बिना हमारी वर्तमान स्थिति का सामना करने में भारी सहायता मिलेगी।

जब आप नवयुवकों की मूलभूत आवश्यकताओं की सूची को पढ़ते समय व्यक्तिगत विकास और समन्वय जैसी एक क्षेत्र की आवश्यकताओं के भी सम्भावित निर्देशन के अर्थों पर गंभीर दृष्टि रखते हैं तो आप उस कर्त्तव्य के विराट् आकार को देख कर चकित हो जाएँगे जो ऐसे पुरुष अथवा महिला की प्रतीक्षा कर रहा है जो निर्देशन के उत्तरदायित्वों को ग्रहण करने की तैयारी में व्यस्त होते हैं।

आपको निःसंदेह यह लोकोक्ति स्मरण होगी कि हथेली पर सरसों नहीं जमा करती। संभवतः सेवा का ऐसा और कोई अन्य क्षेत्र नहीं है जिसमें यह उक्ति निर्देशन के क्षेत्र की अपेक्षा अधिक सही उतरती हो। जब हम निर्देशन के अर्थ और कार्य पर तथा निर्देशन के सिद्धान्तों के व्यावहारिक उपयोग पर विचार करते हैं तो आप उन अनेक निर्देशन की विधियों को ही स्वीकार नहीं करते जिनका उपयोग नवयुवक और प्रौढ़ व्यक्तियों को अपने जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता देता है, अपितु (हम आशा करते हैं) आपको यह व्यक्तिगत संतोष भी होता है कि आप यथासंभव प्रभावपूर्ण सहायता प्रदान कर रहे हैं।

निर्देशन का अर्थ जब हम इस बात पर बल देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को कभी न कभी निर्देशन की आवश्यकता होती है, हमें यह निश्चित कर लेना चाहिए कि हम यह समझते हैं कि उसकी आवश्यकता क्या है और वह साधन हमें उसके लिए उपलब्ध करना चाहिए। निर्देशन का अर्थ निर्देश देना नहीं है। इसके द्वारा एक व्यक्ति का दृष्टिकोण दूसरे व्यक्ति पर नहीं लादना चाहिए। यह दूसरे व्यक्ति के लिए किया जाने वाला निर्णय नहीं है, वह तो उसे स्वयं करना चाहिए। यह दूसरे के जीवन-भारों को अपने ऊपर लेकर चलना नहीं है। वास्तव में निर्देशन ऐसी सहायता है जो व्यक्तिगत रूप से योग्य और पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित पुरुषों या महिलाओं द्वारा किसी भी आयु के व्यक्ति के लिए उसके जीवन के कार्यों का प्रबन्ध करने, उसके अपने दृष्टिकोण का विकास करने, अपना निजी निर्णय करने और अपना स्वयं का भार उठाने के हेतु उपलब्ध की जाती है।

शर्ले हैमरिन की निर्देशन की परिभाषा "आत्मदर्शन के कार्य में जॉन की सहायता करना ताकि वह स्वयं को भलीभाँति समझ सके"* सरल और व्यावहारिक है किन्तु निर्देशन की कल्पना को चुनौती देती है। यह वक्तव्य शब्दों के सख्त

* शर्ले ए० हैमरिन, Guidance Talks to Teachers, पृष्ठ १२, मकनाइट एण्ड मकनाइट पब्लिशिंग कं०, ब्लमिंगटन Ill, 1947.

विन्यास की अपेक्षा बहुत कुछ व्यक्त करता है। आत्मदर्शन के कार्य में जॉन या मेरी या किसी अन्य बालक, नवयुवक या वयस्क की सहायता करना कठिन कार्य हो सकता है। एक बार यदि निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं की सीमा को देखने का मार्ग दिखा दिया, तो उसकी कठिनाइयों अथवा समस्याओं को सुलझाने के लिए और अधिक सहायता देने के हेतु धैर्य, विवेक और प्रशिक्षण युक्त अनुभव की आवश्यकता है; तभी उस व्यक्ति को उस प्रकार की और उतनी सहार्यता प्राप्त हो सकती है जिससे वांछनीय तालमेल हो सके।

जब कभी किसी व्यक्ति को ज्ञान, भावनात्मक योग्यता, मानसिक तीक्ष्णता अथवा स्थायित्व, सामाजिक या नागरिक तालमेल अथवा व्यावसायिक दक्षता और नौकरी सम्बन्धी संतोष प्राप्त करने में किसी अन्य व्यक्ति से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहायता प्राप्त होती है तो किसी न किसी प्रकार के निर्देशन को सक्रिय समझना चाहिए। स्मरण रखना चाहिए कि इस प्रकार कल्पित निर्देशन व्यक्ति की विचार करने और कार्य करने की शक्ति को बढ़ा देता है। इसे ऐसा कार्य नहीं समझना चाहिए जो किसी व्यक्ति की स्वतंत्र रूप से कार्य करने और अपने निजी विचार को क्रियान्वित करने की योग्यता को कम करता हो।

जब कभी किसी बच्चे, नवयुवक या वयस्क को किसी निर्णय पर पहुँचने, अपने आचरण को सुधारने अथवा व्यक्तियों या वस्तुओं के सम्बन्ध में उसके रवैये को परिवर्तित करने में किसी व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा किसी भी प्रकार से सहायता प्राप्त होती है तो निर्देशन का कार्य गतिशील होता है। उदाहरण के लिए, एक दिन स्कूल का नियमित सत्र समाप्त होने पर स्कूल की एक छात्रा पौधों को पानी देने में अपनी गणित की अध्यापिका को सहायता दे रही थी। जबकि दोनों अपने कार्य में व्यस्त थीं तो अध्यापक ने कहा कि "यह लड़की गणित की अध्यापिका बनेगी।" उस पन्द्रह वर्षीय बालिका को यह बात बहुत अच्छी लगी और उसने उसे गाँठ बाँध लिया। आगे चल कर परिस्थितियों ने उसे अध्यापन कार्य अपनाने के लिए बाध्य किया। इस अति प्रशंसित अध्यापक द्वारा व्यक्त विश्वास ने बालिका के उद्देश्य को सफल बनाया, यह बात दूसरी है कि उसने गणित को अपने अध्यापन का विषय नहीं बनाया।

वयस्क व्यक्ति अपने आचरण द्वारा नवयुवकों के जीवन का निरन्तर मार्गदर्शन कर रहे हैं। बहुत बार बिना विशिष्ट उद्देश्य अथवा निर्देशन की जानकारी के बिना ही यह कार्य हो जाता है। जिस बच्चे ने श्रेष्ठ वयस्क के संसर्ग से लाभ उठाया है, जिसने उसके आचरण की नकल की है अथवा जो उसके शब्दों से प्रभावित हुआ है, वह भी जो कुछ उसने देखा और सुना है और जिसका उस पर प्रभाव पड़ा है, उससे उतना ही अपरिचित हो सकता है।

निर्देशन के कार्य सम्बन्धी रूप

जैसा कि अब समझा जाता है, निर्देशन व्यक्तित्व के प्रत्येक रूप—शारीरिक,

मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप को स्पर्श करता है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति के समस्त आचरणों और व्यवहारों से है। वह व्यक्ति को अपनी मूल क्षमताओं और वातावरणजन्य अवसरों का प्रयोग करते हुए समस्त कार्यों को संगठित करने में सहायता देता है। किसी एक स्थिति में, पाठ्यक्रम के समन्वय जैसे किसी विशिष्ट कार्य में तालमेल प्राप्त करने में निर्देशन सेवाएँ व्यक्ति की सहायता कर सकती हैं। तब शैक्षिक दर्शन पर बल दिया जायेगा। किन्तु अध्ययन कार्यक्रम का संतोषजनक समन्वय ऐसी अन्य बातों पर विचार करना आवश्यक बना देता है जिनमें निम्नलिखित में से समस्त या बहुत-सी बातें सम्मिलित हो सकती हैं: विद्यार्थी का स्वास्थ्य, उसकी बौद्धिक क्षमता, व्यापक रूप से या शिक्षा के एक क्षेत्र में अध्ययन के प्रति उसका रवैया, उसका परिश्रम, पठन-पाठन में वह कितना समय लगाता है या लगायेगा और अभिभावकों के सहयोग का प्रकार तथा सीमा।

शिक्षा में निर्देशन का कार्य इस क्षेत्र के कुछ प्रारम्भिक लेखक निर्देशन को मोटे तौर पर शिक्षा के पर्याय के रूप में देखते थे। अन्य लेखकों ने निर्देशन के विचार को शिक्षा के विचार से लगभग पूर्णतया पृथक् करने का प्रयत्न किया है। १९५०-५९ के प्रारम्भिक वर्षों में साल्ट लेक सिटी (उटा) स्कूलों की निर्देशन समिति ने एक समन्वयात्मक स्थिति ग्रहण की थी। इस दृष्टिकोण को "साल्ट लेक सिटी स्कूलों के निर्देशन कार्यक्रम" में इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है:

> वास्तविक अर्थ में निर्देशन सारी शिक्षा पर छाया हुआ है। यह शैक्षिक कार्यक्रम के व्यक्तीकरण के लिए स्कूल की चिन्ता को व्यक्त करता था। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक अध्यापक का यह दायित्व है कि वह प्रत्येक बच्चे की रुचियों, योग्यताओं और भावनाओं को समझे तथा उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शैक्षिक कार्यक्रम को अपनाये।
>
> दूसरे रूप में, निर्देशन विशेष सेवाओं की एक शृंखला है। इसमें वे कार्य सम्मिलित हैं जो प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्कूल के कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाते हैं। इनमें निम्नलिखित के लिए योजनाए होती हैं:—
>
> १. विद्यार्थियों की वास्तविक आवश्यकताओं और समस्याओं की खोज करना।
> २. व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विद्यार्थियों के सम्बन्ध में संग्रहीत जानकारी का प्रयोग करते हुए शिक्षण का समन्वय करना।
> ३. बच्चे की वृद्धि और विकास के सम्बन्ध में अधिक जानकारी का अध्यापकों में विकास करना।
> ४. नवीनीकरण, व्यक्तिगत अनुसूची, परामर्श, व्यावसायिक जानकारी, समूह का निर्देशन, नौकरी दिलाना, स्नातकों और स्कूल का परित्याग कर देने वालों से सम्पर्क बनाये रखने जैसी विशिष्ट सेवाओं की व्यवस्था करना।

५. कार्यक्रम की सफलता का मूल्यांकन करने वाला अनुसंधान करना।

यद्यपि निर्देशन सम्बन्धी दृष्टिकोण स्कूल के कार्य के प्रत्येक रूप को स्पर्श करता है, तो भी इस बात पर बल देना चाहिए कि उद्देश्य और प्रक्रिया की दृष्टि से शिक्षा और निर्देशन में भेद है। शिक्षा चाहे—इसकी परिभाषा प्रक्रिया के रूप में करें या उत्पादन के रूप में—एक व्यक्तिगत विषय है। बच्चे, नवयुवक अथवा वयस्क को स्वयं में वे परिवर्तन अपने आप करने चाहिएँ जिन्हें वह वांछनीय समझता है। अध्यापक का कार्य केवल इतना हो सकता है कि वह विद्यार्थी के आत्म-शिक्षण के लिए मूल्यवान अवसर उपलब्ध कर दे। उसके अध्ययन की इच्छा को बढ़ावा देने, उसे क्या सीखना चाहिए इसकी जानकारी प्राप्त करने में सहायता देने और अपने अध्ययन में संतोषजनक प्रगति करने के लिए उसे प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। शैक्षिक प्रक्रिया व्यक्ति के अन्दर स्थान बनाती है और शैक्षिक परिणाम उसके आचरण में दृष्टिगोचर होते हैं।

तब निर्देशन का शिक्षा से क्या सम्बन्ध है ? निर्देशन में व्यक्ति के बाहर के वे तत्त्व होते हैं जो उसके लिए उसकी आत्म-विकास की खोज में उपलब्ध किये जाते हैं। निर्देशन को उसके अत्यन्त व्यापक रूप में शिक्षा का एक रूप माना जा सकता है। और अधिक निश्चित परिभाषा करें तो, इसमें निर्देशन की वे समस्त प्रविधियाँ और जानकारी के वे सारे अंग सम्मिलित होते हैं जो व्यक्ति के लिए अपनी सहायता करने में सहायक हो सकते हैं।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि नवयुवक अपने गुरुजनों से बहुत कुछ अनौपचारिक निर्देशन प्राप्त करते हैं। वृद्धिशील बच्चे से अपने निकट सम्बन्ध के कारण माता-पिता और अध्यापक उनके आचार और व्यवहार पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। किसी भी बालिका को यह कहते हुए अनेक बार सुना जाता है कि मेरी माँ ने ऐसा किया है इसलिए मैं ऐसा कर रही हूँ। एक आदमी कह सकता है कि मेरे पिता जी ऐसे-ऐसे कहा करते थे, और जो मेरे पिताजी कहते थे वह मेरे लिए उचित है। पाठक अपने कुछ अध्यापकों का स्मरण करके इस रवैये की जाँच कर सकते हैं। क्या स्मरण रहता है ? क्या यह मूल रूप से पढ़ाई गई सामग्री होती है अथवा वे व्यवहार और आचरण की पद्धतियाँ हैं : जिन्होंने प्रभावित किया है और संभवतः अनजाने ही उनके छात्रों के रवैयों अथवा व्यवहार पर अस्थायी या स्थायी रूप से प्रभाव डाला है ?

इस प्रकार निर्देशन निरन्तर सक्रिय रहता है। अतएव हम अपने नवयुवकों को जिस प्रकार का व्यक्ति बनाना चाहते हैं, उस प्रकार का व्यक्ति हमें स्वयं को बनना होगा। जो माता-पिता अपने बच्चे की उपस्थिति में मिथ्या भाषण करते हैं वे बच्चे को सत्यवादी नहीं बना सकते। अध्ययन कक्ष का अध्यक्ष अध्यापक यदि साथी अध्यापक से बातचीत करता है तो वह छात्रों से यह नहीं कह सकता कि तुम लोग बातचीत न करो क्योंकि पढ़ने वाले छात्रों की पढ़ाई में बाधा पड़ती है। यह आवश्यक है कि हम सब निर्देशन के इस व्यापक विचार को समझ लें और सदैव इस बात के लिए जागरूक रहें कि हमारे कार्य सुयोग्य निर्देशक का काम करें।

मूल निर्देशक लक्ष्यों की पहचान निर्देशन के विचार के विविध रूपों के सम्बन्ध में एक उपयुक्त दृष्टिकोण प्राप्त करने के प्रयत्न में जो कठिनाई सामने आती है, वह स्पष्ट शब्दावली की है। निर्देशन के कार्यों के विस्तार या सुधार के साथ शब्द विज्ञान में परिवर्तन होते रहे हैं जो भारी उलझन में डाल सकते हैं। उदाहरण के लिए शब्दों के कुछ जोड़ों जैसे निर्देशन और परामर्श, निर्देशन कार्यकर्ता, और निर्देशन परामर्श-दाता, निर्देशन सेवाएँ और कर्मचारी सेवाएं अथवा निर्देशन और कर्मचारी सेवाएं का प्रयोग बहुधा निर्देशन के विचार में एक ही कार्यशील रूपों का परिचय देते हुए बिना सोचे समझे किया जाता है।

छात्र कर्मचारी, कर्मचारियों का कार्य, छात्र कर्मचारी कार्यकर्ता और कर्मचारी सेवाएं जैसी शब्दावलियाँ निर्देशन के साहित्य में स्थान पाने लगी हैं। स्पष्टतः 'कर्मचारी का कार्य' शब्दावली का प्रादुर्भाव उद्योग में प्रबन्धकों और कर्मचारियों के मध्य अच्छे सम्बन्धों और औद्योगिक जनशक्ति के विकसित उपयोग के लिए किये जाने वाले प्रशासकीय कार्यों का वर्णन करने के लिए हुआ था। छात्र कर्मचारी शब्दावली का प्रयोग कालेज स्तर पर छात्र जीवन के प्रशासकीय प्रबन्ध का निर्देश करने के लिए होने लगा था। आगे चलकर, निम्न स्कूलों के प्रशासकों ने छात्र कर्मचारी शब्दावली का प्रयोग इसी प्रकार प्रारम्भ कर दिया जिस प्रकार उसका प्रयोग उद्योग में और कालेज स्तर पर होता है।

आज की विचारधारा यह है कि कर्मचारी कार्य अथवा कर्मचारी सेवाओं की कल्पना को इतना विस्तृत कर दिया जाय कि उसमें वह सब कुछ आ जाय जो नव-युवकों को स्कूल में और कर्मचारियों को नौकरी में अपनी शक्तियों का अधिकतम विकास प्राप्त करने में सहायता देने के लिए किया जाता है। किन्तु निर्देशन और छात्र कर्मचारी सेवाओं के मध्य क्या सम्बन्ध होना चाहिए, इस पर मतभेद है। कुछ अधिकारियों के मतानुसार निर्देशन छात्र कर्मचारी सेवाओं के सम्पूर्ण कार्यक्रम के महत्त्वपूर्ण चरण या श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है। अन्य व्यक्तियों के दृष्टिकोण से यह सम्बन्ध उलट जाता है।

विली एस० गैरेट और वाल्टर जी० साइट्स द्वारा तैयार की गई और वारेन (ओहियो) सिटी स्कूलों के छात्र कर्मचारी सेवा विभाग द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार वहाँ छात्र कर्मचारी सेवाओं का विकास प्रत्येक विद्यार्थी के कल्याण में उनके आधारभूत योग की आवश्यकता के कारण हुआ है। यह विभाग निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करता है : स्कूल स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक, निर्देशन परामर्श, देखभाल, भाषण और श्रवण, स्कूल का सामाजिक कार्य और पंगु छात्रों की सहायता।

रिपोर्ट में कहा गया है :

किन्तु कर्मचारी सेवाओं को हम "निर्देशन टीम" का एक कारण समझते हैं। निर्देशन इस शिक्षा दर्शन का एक परिणाम है, कि स्कूल प्रणाली में प्रत्येक बच्चे को अपनी अधिकतम क्षमता प्राप्त करने के हेतु पूर्ण वृद्धि और विकास के लिए अवसर प्राप्त होना चाहिए।

इसलिए हम यह मानते हैं कि निर्देशन कार्य के दो अविभाज्य चरण हैं, (१) अध्यापन का निर्देशन सम्बन्धी विचार, (२) शैक्षिक कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में सहायता देने के लिए अध्यापक, स्कूल और छात्र तथा अविभावकों की सहायतार्थ उपलब्ध छात्र कर्मचारी सेवाएँ। शिक्षा का शिशु-केन्द्रित सफल कार्यक्रम उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि एक दूसरे की पूर्ति करने वाले निर्देशन के दोनों चरण न हों, एक-दूसरे की सहायता के बिना कोई भी सफलता से कार्य नहीं कर सकता।

सतत प्रक्रिया के रूप में निर्देशन

पिछले पचास वर्षों में होने वाले निर्देशन के विचार के द्रुत और विस्तृत विकास और उपयोग ने बहुत से प्रश्नों और विवादास्पद बातों को जन्म दिया है।

निर्देशन की वर्तमान स्थिति निर्देशन आन्दोलन अब भी अपनी यौवनावस्था में है। भिन्न-भिन्न समाजों में निर्देशन के प्रति भिन्न-भिन्न रवैया है। कुछ स्कूलों और स्कूल प्रणालियों में अत्यधिक सुसंगठित और लगभग सफलतापूर्वक संचालित निर्देशन कार्यक्रम मिलते हैं। अन्य स्कूलों में निर्देशन सेवाएँ नाममात्र को भी नहीं मिलतीं, केवल कक्षा में कुछ अनौपचारिक परामर्श या निर्देशन दे दिया जाता है।

किन्तु आज स्कूल और समाज के बहुत कम नेता ऐसे हैं जो नवयुवकों और वयस्कों—दोनों—के लिए निर्देशन सेवा के किसी रूप के मूल्य को न समझते हों। वर्तमान आन्दोलन की जड़ें समाजवैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक परिवर्तनों में हैं, और वह स्थायी होकर रहने वाला है। निर्देशन कार्यक्रम अधिकाधिक स्कूलों और स्कूल प्रणालियों में संगठित किया जा रहा है, यद्यपि छात्रों को निर्देशन की जितनी आवश्यकता है उसकी तुलना में उनकी संख्या दयनीय रूप से कम है।

सुसंगठित निर्देशन के लिए धन की आवश्यकता होती है जो अभी तक उपलब्ध नहीं है और निर्देशन के प्रशिक्षित कर्मचारियों का अब भी अभाव है। बहुत भारी संख्या में स्कूलों के प्रशासकों ने इस विषय में अब भी अपना उत्तरदायित्व नहीं समझा है। किन्तु वर्तमान निर्देशन की रीतियों का बहुत से प्रशासक मूल्यांकन करने लगे हैं। वर्तमान कार्यक्रमों में सुधार और उनका विस्तार हो रहा है। यह रुख बढ़ता हुआ मालूम होता है कि यदि हम धीरे-धीरे और सावधानी से आगे बढ़े तभी हम पथ-प्रदर्शित करने की आशा कर सकते हैं, अन्यथा हम गलत दिशादर्शन दे जायेंगे।

कुछ उचित प्रश्न शिक्षक और सामाजिक नेता कुछ इस प्रकार के प्रश्न पूछ रहे थे :

एक व्यक्ति को अपने जीवन में शीघ्र-से-शीघ्र कब निर्देशन की आवश्यकता हो सकती है ?

किस आयु में पहुँच कर निर्देशन की आवश्यकता नहीं रहती ?

क्या निर्देशन सेवाएँ केवल उन नवयुवकों तक सीमित कर देनी चाहिएँ जो तालमेल की गम्भीर समस्याओं में निमग्न हैं ?

क्या किसी व्यक्ति को अपने जीवन के संकटकाल में ही निर्देशन की आवश्यकता होती है ?

निर्देशन का अन्तिम लक्ष्य क्या है ?

यह लक्ष्य कब और कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?

इन और ऐसे प्रश्नों को केवल ऊपरी निर्णय पर आधारित उत्तरों की अपेक्षा कुछ और चाहिए; उन पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। उनका चलता हुआ सामान्य उत्तर नहीं दिया जा सकता। निर्देशन कार्यकर्त्ता ऐसे व्यक्तियों की सहायता करने का प्रयत्न कर रहे हैं जिनके व्यक्तित्व एक-दूसरे से बहुत अधिक भिन्न हैं। किन्हीं भी दो व्यक्तियों के जीवन सम्बन्धी अनुभव समान नहीं होते, विशेषतः शीघ्रता से परिवर्तित होने वाले हमारे वर्तमान समाज में तो ऐसा हो ही नहीं सकता। अतएव निर्देशन की जो रीतियाँ एक व्यक्ति की सहायता करते समय प्रभावशाली प्रतीत हो सकती हैं, वे ही दूसरे व्यक्ति के मामले में प्रभावहीन हो सकती हैं।

विवादास्पद प्रश्न निर्देशन में अनेक विचारधाराएँ विविध विचार वाले नेताओं में विवाद उत्पन्न कर रही हैं। ऐसा एक मुद्दा इस प्रश्न के विषय में है कि अधिकांश नवयुवकों के लिए निर्देशन की प्रत्यक्ष विधि अपनानी चाहिए या अप्रत्यक्ष। यद्यपि इस प्रश्न पर आगामी अध्यायों में अधिक विस्तार से विचार किया जायेगा हम उदाहरण के रूप में इसके तात्पर्य को स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे।

जूनियर हाई स्कूल का एक छात्र बुद्धिमान और भलीभाँति संतुलित था और वह अपने अध्यापकों तथा सहपाठियों में लोकप्रिय था। एक दिन पाठ के घंटे में उसे उसकी श्रेणी के परामर्शदाता के कार्यालय में बुलाया गया। वहाँ परामर्शदाता ने उससे उसकी समस्याओं के विषय में प्रश्न किया। लड़के ने कहा कि मेरी कोई समस्या नहीं है। उसने आग्रह किया कि प्रत्येक व्यक्ति की समस्याएँ होती हैं और उनके समाधान में मैं तुम्हारी सहायता करना चाहती हूँ। जब इस असंतोषजनक साक्षात्कार के पश्चात् लड़का अपनी कक्षा में लौटा तो उसने अपने अध्यापक से कहा कि संभवतः मेरी "समस्या" यह है कि मेरी कोई समस्याएँ नहीं हैं।

इस लड़के के अनुभव के विरुद्ध एक ऐसी ही श्रेष्ठ लड़की का अनुभव है जिससे कालेज की छात्रा के रूप में उस हाई स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम के विषय में पूछा गया जहाँ से वह स्नातक हुई थी। उसका उत्तर था : "हमारे यहाँ निर्देशन कार्यक्रम नहीं था, किन्तु डीन सहित प्रत्येक व्यक्ति सदैव हार्दिक मित्र था और एक-दूसरे की सहायता के लिए प्रस्तुत रहता था।" वास्तव में, इस स्कूल में निर्देशन कार्यक्रम इतना सुसंगठित था और इतनी सरलता से चलता था कि बहुत से छात्रों को यह भी ज्ञात नहीं था कि वे सावधानी से नियोजित निर्देशन भारी मात्रा में प्राप्त कर रहे थे।

दूसरा कुछ-कुछ विवादास्पद विषय यह है कि जिस व्यक्ति को निरन्तर निर्देशन सेवाएँ उपलब्ध होती हैं, उस पर उनका क्या प्रभाव होता है। एक समूह कहता है कि निरन्तर मिलने वाला निर्देशन व्यक्ति की अपने मामलों का प्रबन्ध करने

की शक्ति को दुर्बल कर देता है। निर्देशन का अन्तिम लक्ष्य नवयुवक के आत्म-निर्देशन को पर्याप्त रूप से विकसित करने में सहायता देना होना चाहिए ताकि वयस्क के रूप में उसे किसी भी समस्या को सुलझाने में बाहरी सहायता की कोई आवश्यकता न हो, या कम से कम हो। इससे कुछ भिन्न दृष्टिकोण इस विश्वास में मिलता है कि यदि सब नहीं तो बहुत से व्यक्तियों को अपने जीवन भर किसी न किसी प्रकार के निर्देशन की आवश्यकता हो सकती है।

निर्देशन की निरन्तरता स्पष्ट रूप से विरोधी ये दोनों दृष्टिकोण संभवतः इतने विलग नहीं हैं जितने कि वे प्रतीत होते हैं। हाल ही, तुलसा, ओकलाहामा में छात्र कर्मचारी और विशेष सेवाओं के सहकारी सुपरिंटेंडेंट बी० एल० शेफ़र्ड ने बताया है कि (१) निर्देशन में तात्कालिक उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को जब समस्या उत्पन्न हो तभी उसका सामना करने और उसको सुलझाने में सहायता प्रदान करना है, और (२) समस्त निर्देशन का अन्तिम लक्ष्य आत्मनिर्देशन है।

इस वक्तव्य पर कोई विवाद नहीं हो सकता कि निर्देशन के तात्कालिक और दीर्घकालीन दोनों लक्ष्य हो सकते हैं। इससे पूर्व प्रारम्भिक शैशवावस्था में निरोधात्मक निर्देशन के मूल्य की चर्चा की गई थी। आगे चलकर इस पुस्तक में, निरन्तर चलने वाली ऐसी प्रक्रिया के रूप में निर्देशन पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है जो बहुत छोटी अवस्था से लेकर वृद्धावस्था तक व्यक्ति के लाभार्थ चलती है।

बहुत छोटी अवस्था में प्रारम्भ होकर जो अनुभव जीवन भर तक चलते हैं, उनसे सामान्यतः निर्भरता अथवा स्वाधीनता के रवैये उत्पन्न होते हैं। किस सीमा तक कोई व्यक्ति अत्यधिक स्वाधीनता और बहुत अधिक निर्भरता के मध्य संतुलन रख सकता है, इसका घनिष्ठ सम्बन्ध निर्देशन के उस प्रकार से है जो वह—विशेषतः निर्माणात्मक वर्षों में—प्राप्त करता है। शैशव अथवा प्रारम्भिक नवयुवावस्था में बहुत अधिक संरक्षण प्रदान करने अथवा उसके व्यवहार के लिए व्यक्तिगत उत्तर-दायित्व पर इन वर्षों में बहुत अधिक बल देने से ऐसे रवैयों तथा ऐसे आचरणों के विकसित होने की सम्भावना रहती है जो बाद में उसके वयस्क उत्तरदायित्व ग्रहण करने या अच्छे मानसिक और भावनात्मक तालमेल में हस्तक्षेप करेंगे।

वृद्धिशील लड़के और लड़कियों को उनके विकसमान अनुभवों को संतोष-जनक रीति से पूरा करने के लिए ही सहायता देने की आवश्यकता नहीं होती, अपितु उन्हें यह भी अनुभव कराना चाहिए कि चाहे किसी व्यक्ति का शैशव और किशोरा-वस्था की चुनौतियों से कितना ही अच्छा तालमेल हो, फिर भी यह संभव है कि किसी भी आयु के वयस्क के रूप में उसे ऐसी समस्याओं से सामना पड़ सकता है जिन्हें सफलतापूर्वक सुलझाना उसकी शक्ति के बाहर हो, ऐसी स्थितियों में उसे जानना चाहिए कि उसे कहाँ से सहायता प्राप्त हो सकती है, उसे उपलब्ध साधनों का उपयोग करने के लिए तत्पर होना चाहिए और ऐसे व्यक्तियों से सुझाव प्राप्त करके जिन्होंने कि प्रशिक्षण और अनुभव के द्वारा स्थिति को समझने की योग्यता प्राप्त

कर ली है, अपने सर्वश्रेष्ठ निजी निर्णय के प्रकाश में अपनी समस्याओं को सुलझाना सीखना चाहिये।

अधिकाधिक समुदायों में युवा और प्रौढ़ दोनों को कुछ निर्देशन सम्बन्धी सहायता देने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। किन्तु वास्तव में ऐसे कार्यक्रम की स्थापना और प्रयोग के लिए कुछ नहीं किया गया है जिससे निर्देशन की निरन्तरता बनी रह सके। सन् १९५६ में ब्रुकलिन कालेज में जो निर्देशन सम्मेलन हुआ था, उसमें न्यूयार्क सिटी स्कूल सिस्टम में शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन के अध्यक्ष डा० मौरिस क्रुगमैन ने वर्तमान स्थिति का अत्यन्त उत्कृष्ट सार प्रस्तुत किया था। उनकी कुछ टिप्पणियाँ, अनुमति लेकर, यहाँ उद्धृत की जा रही हैं:

> मैं निर्देशन के ऐसे किसी विचार को नहीं जानता जिस पर इस बैठक के विषय 'निर्देशन, एक गतिशील प्रक्रिया' से कम मतभेद हो। यह एक दकियानूसी मुहावरा बन गया है। और फिर भी मैं निर्देशन में ऐसे किसी विचार को नहीं जानता जिसे इतना अधिक भंग किया गया हो। निर्देशन के जो कार्यक्रम वास्तव में इस व्यापक रूप से स्वीकृत सिद्धान्त के अनुकूल हैं, वे इतने कम हैं कि बहुधा उन्हें अद्वितीय कह कर निर्दिष्ट कर दिया जाता है।
>
> ऐसा क्यों होना चाहिए? इतने व्यापक रूप से स्वीकृत सिद्धान्त की व्यवहार में पूर्णतया उपेक्षा क्यों हो? संभवतः इसके बहुत से कारण हैं—जिनमें से अधिकांश संदिग्ध कहे जा सकते हैं। एक तो यह है कि इस विचार को बिना समझे निष्ठापूर्वक कह दिया जाता है—यह अच्छा प्रतीत होता है, और इसका विरोध करने का भी कोई कारण नहीं मालूम होता। दूसरे, सिद्धान्त और व्यवहार के मध्य सर्वविदित अन्तर है। सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा युग बहुधा पचास वर्ष माना जाता है। चूँकि निर्देशन आन्दोलन लगभग पचास वर्ष पुराना है, हम कुछ परिवर्तन के लिए प्रस्तुत हो सकते हैं। इस मामले में जीवन का प्रारम्भ पचास की आयु में होता है।
>
> किन्तु इससे भी अधिक विवश करने वाले कारण हैं। हमारी सब बातों के बावजूद निर्देशन अब भी अधिकांश व्यक्तियों के मस्तिष्क में व्यावसायिक ही अधिक है। ऐसा नहीं है कि व्यावसायिक निर्देशन महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसके विपरीत, यह पहले की अपेक्षा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, किन्तु उन पुराने अर्थों में नहीं जिनमें चौकोर छेद में चौकोर कील ठोक दी जाती है। तो भी, उस दिन, परामर्शदाताओं की एक बैठक में मैंने जनशक्ति की समस्याओं के एक विशेषज्ञ को यह कहते सुना कि निर्देशन के विचारों का विस्तार करना अवांछनीय है, केवल व्यावसायिक निर्देशन (पुराने अर्थों में) ही निर्देशन कर्मचारी का कार्य है, और यह भी इस सर्वविदित तथ्य के बावजूद कि अधिकतर व्यावसायिक असफलताएँ कार्य करने की असमर्थता के कारण नहीं होतीं, अपितु व्यक्तिगत समस्याओं के कारण होती हैं। यदि परामर्शदाताओं के लिए

संकीर्ण व्यावसायिक प्रदर्शन ही रह जाता है तो निर्देशन प्रक्रिया को शीघ्र प्रारम्भ करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

निर्देशन करने का समय वह है जब कि लड़का या लड़की किसी नौकरी या व्यवसाय में लगने के लिए प्रस्तुत होते हैं; यह तर्क दिया जाता है। हमारे नगर में जब कि मैं यह विश्वास करता हूँ कि हम प्रारम्भिक स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम में, अधिकांश समुदायों से आगे हैं, केवल पाँच वर्ष पूर्व प्रारम्भिक स्कूल निर्देशन के विचार का प्रचार करने में हमें बड़े कठिन समय से निकलना पड़ा था। यह दलील दी जाती थी कि, 'अभी ये बच्चे किसी नौकरी, व्यवसाय या उच्चतर शिक्षा के लिए प्रस्तुत नहीं हैं, इसलिए उन्हें निर्देशन सहायता की आवश्यकता नहीं है।' मैं कह सकता हूँ कि नगर में आज वह दृष्टिकोण नहीं रह गया है जो कुछ वर्ष पूर्व था।

विस्तृत निर्देशन की प्रक्रिया के सिद्धान्त के अनुकूल चलने में एक प्रमुख बाधा धन है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, इस देश के किसी भी बड़े नगर में इतने पर्याप्त कर्मचारी नहीं हैं जो जूनियर और सीनियर हाई स्कूल में शुद्ध मिश्रणरहित शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन कर सकें। जहाँ तक मैं समझता हूँ इस देश में प्रत्येक नगर इस कार्यक्रम को प्राथमिकता देता है, यह बात छोटे समुदायों के विषय में भी सत्य है। बजट में सबसे पहले इस स्तर पर न्यूनतम अथवा लाक्षणिक सेवाओं की व्यवस्था के लिए राशि निश्चित की जाती है और उसके पश्चात् इसी स्तर पर परामर्शदाता-छात्र के अनुपात में सुधार के लिए। विकास सम्बन्धी निर्देशन के लिए, छोटे बच्चों के साथ कार्य के लिए, निरोधात्मक निर्देशन के लिए, जल्दी स्कूल छोड़ देने वालों के साथ कार्य के लिए और निरन्तर चलने वाले निर्देशन की प्रक्रिया के अन्य रूपों के लिए लगभग कुछ शेष नहीं रहता।

किन्तु यह चित्र पूर्णतः निराशाजनक नहीं है। हम विस्तृत धारणाओं में सारे देश-भर में प्रारम्भिक स्कूल के निर्देशन पाठ्यक्रमों में, सामूहिक निर्देशन की सशक्त रीतियों में; विकसित प्रशिक्षण सुविधाओं और संचालन के विकसित स्तरों में; जिन लोगों ने स्कूल छोड़ दिया है उनके लिए स्कूल के बाहर के निर्देशन केन्द्रों में और वृद्धों के कल्याण में रुचि रखने वालों में भी हलचल देखने लगे हैं। पालन से श्मशान तक अथवा जन्म से मृत्यु तक निर्देशन की चर्चा करके कुंठित बुद्धि वाले लोग हमारा उपहास करते हैं, किन्तु छोटे बच्चों और युवा वयस्कों के साथ-साथ उन सुकुमारों को जो उस समय निर्देशन के केवल अकेले पात्र थे जब कि यह सेवा उपलब्ध थी, अधिक से अधिक निर्देशन सेवा प्रदान करने के लिए समाज का दबाव निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

सन् १९५९ में ऐसे ही अन्य सम्मेलन में डा० क्रुगमैन ने कहा :

आज हाईस्कूलों को छोड़कर पूरे समय की कुल ३१५ निर्देशन सेवाएँ हैं और हाई स्कूलों में ४०० हैं। किन्तु हाई स्कूल की सेवाएँ पूरे समय की नहीं हैं, परन्तु लगभग १२०० अध्यापकों में बँटी हुई हैं। इसी प्रकार न्यूयार्क नगर के स्कूलों

में ७१५ निर्देशन सेवाएँ हैं, किन्तु इनमें लगे हुए व्यक्तियों की संख्या १५०० से अधिक है।

दो निर्देशन निर्देशक होते हैं—एक शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन के लिए और दूसरा नौकरी दिलाने के लिए। निर्देशन के ३ नगर निर्वाचन मण्डल तालमेल कराने वाले हैं और २५ जिले के पथ-प्रदर्शन का समन्वय करने वाले हैं। वैसे प्रारम्भिक स्कूलों में परामर्शदाताओं के लिए केवल २६ बजट सेवाएँ हैं परन्तु वास्तव में ६७ पूरे समय की सेवाएँ हैं। जूनियर हाई स्कूल में १४३ निर्देशन सेवाएँ हैं। और १८ स्कूल कोर्ट सम्पर्क अध्यापक हैं, "६००" स्कूलों में ११ परामर्शदाता और विविध विशिष्ट स्थितियों के, जैसे सी० आर० एम० डी० कक्षाओं, शारीरिक रूप से विकलांगों, घर सीमाबद्ध, दृष्टि दोषयुक्त व्यक्तियों, संस्था के बच्चों तथा दूसरों के लिए ८ परामर्शदाता हैं।

जिन एक सौ सेवाओं के लिए सुपरिंटेंडेंट थियोबाल्ड ने अनुरोध किया है उनका उपयोग लगभग ४५ प्रारम्भिक स्कूलों में दूसरी और तीसरी श्रेणी में किया जायेगा। निर्देशन की एक नई धारणा इस कार्यक्रम में निहित है—छोटे बच्चों के निर्देशन के लिए अधिक केन्द्रित कार्यक्रम को विकसित करने के लिए प्रारम्भिक स्कूल का पूरे समय का परामर्शदाता, आधे समय का मनोवैज्ञानिक, आधे समय का सामाजिक कार्यकर्त्ता, मानसिक चिकित्सक और आवश्यक होने पर अंशकालीन परिचर्या अध्यापकों की टीमें बनाई जायेंगी।

प्रदर्शन निर्देशन परियोजना के विस्तार के लिए लगभग १०० सेवाओं की आगामी वर्ष के बजट में व्यवस्था की गई है, अब जूनियर हाई स्कूल में ४३, मनहट्टन और जार्ज वाशिंगटन हाई स्कूल से १३ जूनियर हाई स्कूल नगर के पाँच दूरस्थ पृथक्-पृथक् भागों में हैं जिनमें पोषक प्रारम्भिक स्कूल भी हैं और वे सीनियर हाई स्कूल भी जिनका पोषण ये हाई स्कूल करते हैं। इस कार्यक्रम का लक्ष्य उन बच्चों में प्रतिभा की खोज करना और शैक्षिक दृष्टिकोण का विकास करना है जो साधारणतया उसी समय स्कूल छोड़ कर काम में लग जाते हैं जबकि कानून उन्हें ऐसा करने की अनुमति देता। देश भर में बहुत से नगर इस परियोजना को ध्यान से देख रहे हैं और अपने समुदाय में इसका अनुकरण करने के लिए क़दम उठा रहे हैं.........

राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के द्वारा इस नगर के जूनियर और सीनियर हाई स्कूलों में हाल ही ५० निर्देशन सेवाएँ बढ़ाई गई हैं.........अतिरिक्त कर्मचारियों द्वारा जिन परियोजनाओं का विकास किया गया है, उनमें प्रतिभावान, मन्दबुद्धि, सुस्त छात्रों के साथ कार्य करना, जाँच की कार्यविधियाँ, प्रारम्भकाल में ही जानकारी प्राप्त करना, प्रारम्भ में ही स्कूल छोड़ देने वाले, सांस्कृतिक रूप से वंचित छात्र, कालेज निर्देशन तथा बहुत-सी अन्य बातें सम्मिलित हैं।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. निर्देशन की अपनी परिभाषा दीजिए।
२. निर्देशन के लिए वर्जीनिया में शिक्षक जिन आवश्यकताओं को जरूरी समझते हैं उनमें से प्रत्येक पर विचार कीजिए।
३. मेडफ़ोर्ड, मैसाचूसेट्स के निर्देशन विभाग ने जो बाह्य रूप प्रस्तुत किये हैं, उनका मूल्यांकन कीजिये।
४. लेखकों द्वारा निर्देशन की परिभाषा में क्या आप कुछ जोड़ना चाहेंगे ? क्या ?
५. निर्देशन को निरन्तर गतिशील प्रक्रिया क्यों समझना चाहिए ?
६. आज निर्देशन की जो स्थिति है, उसकी तुलना बीस वर्ष पूर्व की स्थिति से कीजिए।
७. निर्देशन के तात्कालिक उद्देश्यों और अन्तिम उद्देश्यों का मूल्यांकन कीजिए।
८. डा० क्रुगमैन द्वारा अपने वक्तव्य में प्रस्तुत किये गये विचारों का विश्लेषण कीजिये। समाज पर वे तर्क किस सीमा तक लागू होते हैं ?
९. कक्षा में निर्देशन के उस दृष्टिकोण को प्रस्तुत कीजिए जो आपके स्कूल या समाज की निर्देशन की नीतियों को निश्चित करता है।
१०. निर्देशन की उन पाँच आवश्यकताओं के नाम बताकर उन पर विचार किजिए जिनका जन्म परिवर्तनशील व्यावसायिक धारणाओं से हुआ है।

३

व्यवहार के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विज्ञान सम्बन्धी तत्त्व

प्रारम्भ से लेकर अन्त तक प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को लक्ष्य की खोज करने वाला साहस कहा जा सकता है—आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक संघर्ष। किसी भी युग में मनुष्य के व्यवहार का रूप केवल बढ़ते हुए अभावों और आवश्यकताओं को ही प्रतिबिम्बित नहीं करता अपितु जिस सीमा तक और जिस प्रकार व्यवहार को प्रेरित करने वाली प्रेरणाएँ स्वयं को संतोषजनक कार्य में अभिव्यक्त करती हैं, उसे भी प्रतिबिम्बित करता है।

मानवीय आवश्यकताओं का विकास

आधुनिक जीवन की बढ़ती हुई जटिलता बहुत-सी स्थितियों और परिस्थितियों को जन्म देती है जिसके लिए आवश्यकता की पूर्ति करने वाला रूढ़िगत व्यवहार अपर्याप्त है अथवा जो नई आवश्यकताओं या आकांक्षाओं को जन्म देता है। संभवतः पहले की अपेक्षा काफी अधिक संख्या में व्यक्ति ऐसे प्रश्न पूछते हैं :

मैं क्या करूँगा ?
मैं इसे कैसे करूँगा ?
मैं इतना असंतुष्ट क्यों हूँ ?
चीजें सामान्य स्थिति पर फिर कब आयेंगी ?

कभी-कभी स्थिति या परिस्थिति के केवल कुछ श्रेष्ठ ज्ञान की ही आवश्यकता होती है। दूसरे अवसरों पर, इतनी अधिक बातें घुलमिल जाती हैं कि किसी प्रशिक्षित विशेषज्ञ की सहायता की आवश्यकता आ पड़ती है। इसके अतिरिक्त, जो किसी बच्चे, नवयुवक या वयस्क के लिए केवल निर्णय लेने भर की बात होती है, वह दूसरे व्यक्ति के लिए एक प्रमुख समस्या बना सकती है।

मानवीय आवश्यकताओं के क्षेत्र मनुष्य की विशिष्ट आवश्यकताओं की विस्तृत सूची में संभवतः सैकड़ों बातें आ जायेंगी। इसके अतिरिक्त किन्हीं भी दो

व्यक्तियों की सूची समान नहीं होगी और न वे दोनों विभिन्न दशाओं में प्रत्येक व्यक्तिगत आवश्यकता को उसमें सम्मिलित करेंगे। आवश्यकताओं में भेद होने के कारण परामर्श की अनेक कठिनाइयाँ ऊत्पन्न हो जाती हैं।

मनुष्य की मौलिक आवश्यकताओं को चार व्यापक श्रेणियों के अनुसार समूहबद्ध किया जा सकता है : शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक। इससे भी विस्तृत वर्गीकरण व्यक्तिगत आवश्यकताओं और सामाजिक आवश्यकताओं के रूप में हो सकता है। मनुष्य की आवश्यकताओं का वर्गीकरण विस्तृत, व्यापक क्षेत्रों में किया जाता है या विशिष्ट सूची में उन्हें विभाजित किया जाता है, इस बात पर ध्यान न दिया जाय तो भी दोनों के मध्य कोई निश्चित विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती।

आवश्यकताएँ एक दूसरे से इस प्रकार घनिष्ठता से सम्बन्धित हैं कि (१) एक आवश्यकता का दूसरी आवश्यकता से निकट सम्पर्क हो सकता है (ध्यान दिये जाने की आवश्यकता और स्वीकृति की कामना), (२) एक की पूर्ति से दूसरी जाग्रत होती है (किस कार्य परियोजना के संतोषजनक रीति से समाप्त हो जाने पर आनन्ददायक खेलों में भाग लिया जाता है); अथवा (३) एक आवश्यकता को संतुष्ट न कर सकने पर दूसरी आवश्यकता बल पकड़ ले (माता-पिता के प्रेम के अभाव की क्षतिपूर्ति के लिए बहुत अधिक भोजन कर लेने का बच्चे का स्वभाव)।

यहाँ बताये गये तीनों प्रकार के पारस्परिक सम्बन्ध, साथ ही और भी सम्बन्ध जिनका कि उल्लेख किया गया है, प्रशिक्षित परामर्शदाता द्वारा साधारणतया समझे जाते हैं, और यह ज्ञान उस छात्र के प्रत्यक्ष व्यवहार को अत्यन्त सूक्ष्मता से देखने की अनुमति देता है जिसको कि परामर्श देना है। बहुत बार ऐसा होता है कि किसी छात्र के अध्यापक, माता-पिता या साथी उसके प्रदर्शित व्यवहारों के विषय में त्रुटिपूर्ण धारणा बना लेते हैं, उसका कारण यह है कि वे व्यवहार के प्रेरक तत्त्वों को नहीं जानते।

एक कालेज के अध्यापक ने अपनी एक छात्रा की शिकायत डीन से इसलिए की कि वह नवयुवती सामान्यतया (१) कक्षा में पिछली पंक्ति में बैठा करती थी, (२) कक्षा के वादविवाद में भाग नहीं लेती थी, और (३) सदैव खिड़की के बाहर देखा करती थी। यद्यपि छात्रा की लिखित रिपोर्टें और परीक्षाओं के परिणाम औसत से पर्याप्त अधिक थे, अध्यापक ने इस बात पर बल दिया कि उसके दिवा-स्वप्नों का कारण या तो रुचि का अभाव और अशिष्टता है या वह मानसिक अव्यवस्था का लक्षण है। उसकी मान्यता थी कि दोनों दशाओं में उसको तत्काल विशेषज्ञ की सहायता की आवश्यकता है।

जब उस छात्रा से डीन ने प्रश्न किया तो उसने उत्तर दिया कि "ओह, मुझे खेद है कि मैंने अपने अध्यापक को क्षुब्ध किया है। कक्षा के वादविवादों में वास्तव में मेरी बड़ी रुचि है। मैं जानती हूँ कि मैं कक्षा में अधिक नहीं बोलती, परन्तु जो कुछ कहा जाता है मैं उस पर सोचती रहती हूँ। मुझे लगता है कि जब मैं

अन्तरिक्ष में देखती हूँ तो मैं किसी बात पर ध्यान अधिक केन्द्रित कर सकती हूँ। अन्यथा, मेरे सहपाठी जो कुछ करते हैं उससे मेरा ध्यान बंट जाता है, विशेषतः अध्यापक की नाटकीय भाव-भंगिमा से, और ऐसा करना मूर्खतापूर्ण हो सकता है।" जब इस त्रिमार्गी साक्षात्कार द्वारा उसे यह बात मालूम हुई कि उसका नाटकीय प्रस्तुतीकरण ध्यान भंग करने वाला हो सकता है तो उसे आश्चर्य हुआ। एक प्रेरक रीति के रूप में उसने जान बूझकर इस भाव-भंगिमा का विकास किया था। संभव है, उसके बहुत से छात्रों को इसमें आकर्षण प्रतीत होता हो, किन्तु यह विशिष्ट छात्रा इस बात को स्पष्टतः पसंद नहीं करती थी।

आवश्यकताओं के रूप यद्यपि मानवीय आवश्यकताओं का व्यापक क्षेत्र व्यक्ति के जीवन-भर चलता रहता है, बाद के वर्षों में विशिष्ट आवश्यकताओं के रूप और घनत्व बदल जाते हैं। आगामी अध्यायों में छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी उन आवश्यकताओं का कुछ विवरण दिया गया है जिनकी उन्हें स्कूल के विविध स्तरों पर आवश्यकता होती है। यहाँ हम आवश्यकताओं के विकसमान रूपों की उस रूप में संक्षिप्त समीक्षा करेंगे जिसमें कि वे अध्ययन और निर्देशन से सम्बन्धित हैं।

शैशव और प्रारम्भिक बचपन शिशु की आवश्यकताएँ सरल होती हैं। एक दृष्टिकोण से वह केवल "वनस्पत्यात्मक" प्राणी है। उसकी आवश्यकताएँ उचित भोजन, उष्णता, निद्रा और कुछ शारीरिक कार्य तक सीमित हैं। आगे चलकर उसकी शारीरिक आवश्यकताओं में चलना, ठोस भोजन ग्रहण करना, बात करना, मलमूत्र त्याग पर नियन्त्रण करना और शरीर पर साधारण नियन्त्रण प्राप्त करना सम्मिलित होता है। सामाजिक रूप से वह आस-पास के व्यक्तियों और वस्तुओं में भेद करने लगता है, अन्य बच्चों या अपने से बड़ों से घुलता-मिलता है और सही तथा गलत की साधारण धारणाओं को समझता है और उन पर आचरण करता है। छोटे बच्चे की भावनात्मक आवश्यकताएँ अत्यन्त घनी हो सकती हैं जिनमें अनियन्त्रित प्रत्यक्ष व्यवहार भी सम्मिलित है।

बड़े बच्चे विकास की इस अवधि में बच्चे को अपेक्षाकृत परिश्रमपूर्ण कार्य में लगाने की आवश्यकता होती है; वह जिज्ञासु और साहसिक बन जाता है। अपनी ही आयु के साथियों में एक व्यक्ति के रूप में वह रुचि लेता है। वह स्वतन्त्र होना चाहता है, फिर भी उसे वयस्कों की देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता है। वह अपने निजी मूल्य निश्चित करना चाहता है और ऐसी आचार संहिता का विकास करना चाहता है जो उसके स्वयं के लिए संतोषजनक हो, किन्तु वह यह भी चाहता है कि उसका व्यवहार उसके छोटे और बड़े साथियों को स्वीकार्य हो। वह दूसरों का ध्यान और स्वीकृति प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है। ज्यों-ज्यों बच्चा व्यवहार के ऐसे स्वभाव को शनैः शनैः प्राप्त करता है जिसमें उसकी परिवर्तित आवश्यकताओं, अभावों और अभिरुचियों की पूर्ति की दिशा में सक्रिय होने की आशा होती है त्यों-त्यों उसका मूल व्यक्तित्व निश्चित रूप ग्रहण करने लगता है।

किशोरावस्था के वर्ष शक्ति से युक्त सुकुमार सक्रिय होना चाहता है। वह बेचैन होता है और साधारणतया थोड़े समय के लिए भी चुपचाप नहीं बैठा रह सकता। उसकी यह इच्छा कि लोग उसे वयस्क समझें, साथ ही वयस्क के उत्तर-दायित्वों को निभाने की उसकी असमर्थता बहुधा उसके अन्दर संघर्ष उत्पन्न कर देती हैं। विशेषतः प्रारम्भिक किशोरावस्था में रुचियाँ घटती-बढ़ती रहती हैं।

शारीरिक परिवर्तन, विकसमान सामाजिक चेतना, विपरीत लिंग के सदस्यों के प्रति शनैः शनैः परिपक्व होते हुए रवैये और वयस्कों के नियन्त्रण से मुक्ति पाने की बढ़ती हुई आवश्यकता नवयुवक पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। इसके परिणाम-स्वरूप समन्वय की कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं जिनके लिए अभिभावकों, अध्यापकों और स्कूल के परामर्शदाताओं की सहानुभूति एवं बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन की आवश्यकता होती है।

वयस्कता वयस्कता के वर्षों में आधारभूत शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताएँ तथा अभाव अपने पैर फैलाते हैं। परिपक्व मनुष्य या स्त्री (युवा या प्रौढ़) से यह आशा की जा सकती है कि वह समूह के स्तर के अनु-सार व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करेगा। विवाह और पारिवारिक जीवन से सम्बद्ध अनुभव, व्यावसायिक गतिविधि और सामाजिक सम्बन्ध व्यवहार की ऐसी समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं जो उन समस्याओं से भिन्न हैं जिनका सामना नव-युवावस्था में करना पड़ता है। किस प्रकार और किस सीमा तक एक वयस्क व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से संतोषजनक पूर्ति करता है, यह केवल आत्म-निर्देशन की शक्ति पर ही निर्भर नहीं करता अपितु उस स्थिति की प्रकृति पर भी करता है जो उसके सम्मुख उपस्थित होती है। चाहे कुछ भी हो, प्रत्येक व्यक्ति "अकेला नहीं चल सकता।" अनेक बार बहुत से व्यक्तियों को वयस्कों के सुप्रशिक्षित परामर्शदाता की सहायता की आवश्यकता होती है।

मानवीय व्यवहार की शक्तियाँ

निर्देशन का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य सब आयु के व्यक्तियों में अपने व्यवहार के सम्भावित परिणामों का मूल्यांकन करने की योग्यता और उत्सुकता का विकास करता है ताकि वे कारण और प्रभाव के मध्य स्थित सम्बन्ध को जान सकें और फिर अपनी जीवन-पद्धति में उपयोगी परिवर्तन कर सकें। इस निर्देशन का अर्थ निरोध और संरक्षण के रूप में लिया जाता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पृथक्-पृथक् परामर्शदाताओं के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे मानवीय व्यवहार की शक्ति-शाली प्रकृति को समझें।

उद्देश्यों का उद्भव और प्रभाव मानवीय व्यवहार के रूप में परिवर्तन का अर्थ है कार्यशीलता। उद्देश्य वह है जो गतिशील बनाता है। मनोवैज्ञानिक रूप से देखा जाय तो प्रेरणाएँ व्यक्ति के प्रत्यक्ष व्यवहार की आन्तरिक नियन्त्रक हैं, और उनकी जड़ें उसके मनोवैज्ञानिक विकास तथा उसके अनुभव की पृष्ठभूमि में निहित

हैं। उद्देश्यों के जागरण के मूल में तीव्र वासनाएँ और कामनाएँ होती हैं। आन्तरिक व्यवहार की नियामक अथवा तीव्र वासना कार्य करने की बाध्यता, उत्साह, लक्ष्य, उद्देश्य, इच्छा, रवैया, या रुचि का रूप धारण कर सकती है।

आन्तरिक स्थिति की शक्ति उस उत्तर का निश्चय करती है जो गति-प्रेरक प्रेरणा को दिया जाने वाला है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति तैरने के लिए प्रस्तुत है। वह पहले अपने पैर की उंगलियों से पानी की परीक्षा करता है। पानी बहुत अधिक ठण्डा है, इसलिए वह पानी में न घुसने का निश्चय करता है। अन्य अधिक कड़े हृदय के व्यक्ति पानी में कूद पड़ते हैं और उसे बाहर रह जाने के कारण चिढ़ाते हैं। वह इसकी प्रतिक्रियास्वरूप पानी में कूद पड़ता है, चाहे यह अनुभव कितना ही दुःखदायी हो। उसमें व्यवहार का निश्चय एक नहीं अपितु अनेक कारणों से हुआ है।

चूँकि मानवीय व्यवहार अनुभव-संशोधित आन्तरिक नियन्त्रणों से प्रेरित होता है, इसलिए कभी-कभी उसे बाध्य करने वाली प्रेरणाओं की उलझनों को पूर्णतया पहचाने बिना वह किसी कार्य में व्यस्त हो जाता है। अनेक अवसरों पर और विशिष्ट स्थितियों में व्यक्ति अपनी स्वाभाविक व्यवहार-पद्धतियों से पूर्णतया हट सकता है। लज्जाशील एकान्त-प्रिय बच्चे को उसके खेल के साथी आगे बढ़ने या आवेश में आने के लिए प्रेरित करते हैं। एक बुद्धिमान छात्र टेलीविजन कार्यक्रम देखने के लिए स्कूल द्वारा घर पर करने को दिये गये कार्य की उपेक्षा कर देता है यद्यपि वह जानता है कि दूसरे दिन कक्षा में इसके लिए उसे पछताना पड़ेगा। अध्यापक चाहता है कि विद्यार्थी उसकी शिक्षा से लाभ उठायें। किन्तु, चूँकि वह इस बात से अप्रसन्न है कि विशिष्ट कक्षा बहुत बड़ी है, वह छात्रों के अध्ययन सम्बन्धी हितों और उनकी योग्यता के स्तरों को जानने का यत्न नहीं करता। साहसी, वीरतापूर्ण और आत्म-बलिदान के कार्यों सहित अप्रत्याशित व्यवहार के बहुत से अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। यह अध्यापकों और निर्देशन कार्यकर्त्ताओं का दायित्व है कि वे नवयुवक के विशिष्ट कार्य अथवा रवैये का उसके सामान्य व्यवहार को सामने रख कर बुद्धिमानी से मूल्यांकन करें और फिर परिवर्तित व्यवहार के प्रेरक कारण की खोज करें।

जीव विज्ञान सम्बन्धी और सामाजिक आवश्यकताओं से सम्बद्ध तीव्र वासनाएँ

जीव विज्ञान सम्बन्धी वासना के मूल में इन्द्रियों की स्थितियाँ हैं जिससे संतुलन में परिवर्तन होकर व्यवहार को प्रेरणा मिलती है। ऐन्द्रियिक संतुलन (होमियोस्टेसिस) पुनः उस समय प्राप्त होता है जबकि इन्द्रियों का आन्तरिक असंतुलन समुचित कार्य की प्रेरणा देता है। शारीरिक थकावट आराम करने की इच्छा को प्रेरित करती है। यद्यपि मनुष्य तीव्र स्वार्थ के कारण थका देने वाला कार्य करते रहने को विवश हो जाय और चाहे वह स्वयं को यह समझ ले कि मैं थका नहीं हूँ, फिर भी आराम करने की आवश्यकता होती ही है।

शारीरिक माँग—जैसे भूख, प्यास, ऑक्सीजन की आवश्यकता, सेक्स की इच्छा के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से प्राप्त रुझानें होती हैं जो उन्हें

पूर्ति के लिए आगे धकेलती हैं। चाहे यह वस्तुतः सत्य हो या नहीं, हममें से अधिकांश व्यक्ति यह अनुभव करते हैं कि विकसमान शिशु दिन के तीन भोजनों के अतिरिक्त—जो अधिकतर वयस्कों को संतोष देते हैं—प्रातः और अपराह्न में "नमकीन" भी चाहता है। प्यास बुझाने के लिए शुद्ध जल सर्वश्रेष्ठ है; किन्तु प्रथानुसार बच्चे स्वादिष्ट द्रव पसन्द करते हैं।

विकासशील सेक्स की माँग नवयुवक के विचारों, भावनाओं और भावों को प्रभावित करती है; वास्तव में यह उस पर पूरा आधिपत्य जमा लेती है। जिस पर परिस्थितिजन्य स्थितियों से अन्तर में होने वाले परिवर्तनों पर प्रभाव पड़ता है, इस प्रकार दोनों लिंगों के अन्य सदस्यों के सम्बन्ध में व्यक्ति के रवैये उसके अन्दर विकसित होते हैं। नवयुवकों को व्यक्तित्व निर्माण के किसी और रूप में समझदार वयस्कों से इतना अधिक रचनात्मक निर्देशन नहीं चाहिए जितना कि वृद्धिशील प्रक्रिया के इस चरण में चाहिए।

यद्यपि हमारी बहुत-सी माँगों और इच्छाओं का प्रादुर्भाव शारीरिक क्रियाओं की आवश्यकताओं से होता है, परन्तु व्यवहार का नियमन सामाजिक उद्देश्यों से होता है, अन्य लोगों से हमारे सम्बन्धों में और वस्तुओं, दशाओं व स्थितियों के विषय में हमारे अनुभवों में विविध माँगों, इच्छाओं या लक्ष्यों से जो कि सामाजिक प्रकृति की हैं—हमारा व्यवहार प्रेरित होता है। प्रत्येक "सामान्य" व्यक्ति चाहता है कि उसके साथी उसे मान्यता और स्वीकृति प्रदान करें। वह साहसपूर्ण कार्यों की खोज करता है और अपने कार्यों में सफलता चाहता है; वह सहानुभूति; आर्थिक सुरक्षा और अपने साथियों के सम्बन्ध में रक्षा की आवश्यकता को अनुभव करता है; कम से कम कार्य के एक क्षेत्र में वह दूसरों से श्रेष्ठ होना चाहता है, और व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा स्थितियों पर आधिपत्य जमा कर अपने अहं को सहारा देना चाहता है। ये सामान्य माँगें, इच्छाएँ और रुचियाँ हैं। व्यक्ति इन्हें सामाजिक रूप से स्वीकृत गतिविधि द्वारा संतुष्ट करना चाहता है, या अन्य प्रकार से, यह अधिकतर उस निर्देशन की मात्रा और प्रकार पर निर्भर करता है जो उसने प्रारम्भिक शैशवकाल से प्राप्त किया है।

वास्तव में किसी व्यक्ति का महत्त्वाकांक्षा का धरातल उसके अपने भीतर और बाहर के प्रेरक तत्त्वों पर निर्भर करता है। बच्चा भी जाने या अनजाने में अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेता है। किन्तु बहुत बार वयस्क व्यक्ति नवयुवकों को अप्राप्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उत्साहित करते हैं। जिन लक्ष्यों को वह अपने शारीरिक जीवन और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए लाभप्रद समझता है उन तक पहुँचने में मिलने वाली सफलता या असफलता में उसकी आत्म-प्रतिष्ठा को लाभ या हानि है।

जब और यदि लक्ष्य-प्राप्ति के प्रयत्न में किसी न किसी प्रकार का हस्तक्षेप होता है तो तालमेल की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। तब व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से संतोष देने वाले व्यवहार की प्राप्ति के लिए सहायता की आवश्यकता होती है; इस सफलता का उल्लेख साधारणतः अच्छे तालमेल के रूप में किया जाता है।

यदि समस्या इतनी गम्भीर हो जाती है कि व्यक्ति अपनी सहायता नहीं कर सकता और कोई बाहरी सहायता उपलब्ध नहीं होती, तो वह निम्नतर लक्ष्य निश्चय करता है जो उसे तो संतोष दे सकते हैं किन्तु समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता। ऐसे असाधारण व्यवहार को व्यक्तित्व के तालमेल का लाक्षणिक अभाव कहा जाता है।

तालमेल की समस्याएँ

समस्या शब्द बड़ा लोकप्रिय हो गया है। माताएँ अपने समस्यापूर्ण बच्चों के सम्बन्ध में वाक्पटु होती हैं। पति और पत्नियाँ अपने समस्यापूर्ण जीवन-साथियों के कारण आत्म-क्षोभ के सागर में डुबकियाँ लेते हैं। समस्यापूर्ण कर्मचारियों और समस्यापूर्ण निरीक्षकों अथवा मालिकों के विषय में हम बहुत कुछ सुनते हैं। अध्यापक शिकायत करते हैं कि समस्यापूर्ण बच्चे उनकी कक्षाओं में सफल अध्यापन में बाधक होते हैं। राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ भाषणों, वादविवाद, पत्रिकाओं के लेखों और पुस्तकों के विषय हैं। रेडियो और टेलीविजन समस्यापूर्ण स्थितियों पर आवश्यकता से अधिक बल देते हैं।

समस्यापूर्ण दशाएँ और स्थितियाँ कुछ व्यक्ति भावनात्मक दृष्टि से कम से कम विचलित होकर अपना दैनिक कार्य चला ले जाते हैं। वे बुद्धिमानी और व्यावहारिक रीति से अपनी शारीरिक क्रिया सम्बन्धी और सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा कर लेते हैं। सामाजिक समूह के स्तरों को पूरा करने के लिए उन्होंने अपनी माँगों, इच्छाओं या रुचियों का पूरा करना सीख लिया है। वे कठिन स्थितियों या दशाओं को शान्ति से और बाह्यरूप से ग्रहण करते हैं। अन्य व्यक्ति सामान्य दशाओं या कार्यविधियों से तनिक भी विलगता आ जाने पर विचलित हो जाते हैं। वे अत्यधिक भावुक होते हैं और शीघ्र ही हताश हो जाते हैं। वे तनिक-सी व्यक्तिगत असफलता के लिए भी दूसरों को दोष देते हैं। ऐसे लोगों के लिए जीवन उलझी हुई समस्याओं का चक्रमात्र है।

जीवन की स्थिति समस्या बन जाती है या नहीं, यह साधारणतया उस व्यक्ति के रवैये पर निर्भर करता है जो उसमें से गुज़र रहा है। यह कह कर हम उन वास्तविक समस्याओं की गम्भीरता को कम नहीं कर रहे हैं जो कि उस समय उत्पन्न हो सकती हैं जबकि कोई व्यक्ति कठिन और भावना को जाग्रत करने वाली स्थिति का सामना करता है। चाहे उसकी आयु कुछ भी हो, इस व्यक्ति को अपनी समस्या सुलझाने के लिए ऐसी सहायता की आवश्यकता है जो कि सुप्रशिक्षित, अनुभवी परामर्शदाता द्वारा दी जा सकती है।

जब एक समस्यापूर्ण स्थिति उत्पन्न होती है, तो कोई विशिष्ट तत्त्व "पके अंगूठे की भाँति" बाहर दीखने लगता है। किन्तु जबकि समस्त सम्बन्धित तत्त्वों का विश्लेषण किया जाता है, तो सामान्यतया यह ज्ञात होता है कि उस व्यक्ति की समस्या अनेक बातों का परिणाम है जिनमें से प्रत्येक पर विचार करने की आवश्यकता है। जो भी चिकित्सा की जाय, उसमें (१) व्यक्ति के व्यक्तित्व का ज्ञान और

(२) उस अनुभवपूर्ण क्षेत्र का ज्ञान जिसमें कठिनाई उत्पन्न हुई है, होना आवश्यक है।

तालमेल की समस्याओं का सम्बन्ध साधारणतः मनुष्य की जीवन-पद्धति के एक या अधिक रूप से होता है। व्यक्ति का प्रदर्शित रवैया या व्यवहार विशेषतः उसकी निम्न बातों से प्रभावित होता है :

१. शारीरिक निर्माण और स्वास्थ्य की दशा
२. स्वाभाविक रवैये और व्यवहार के लक्षण (व्यक्तित्व)
३. नैतिक स्तर और धार्मिक मूल्य
४. मनोरंजन सम्बन्धी अभिरुचियाँ

इसके अतिरिक्त हम निर्जन स्थान में नहीं रहते, हम किसी न किसी कार्य-क्षेत्र में अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर निरन्तर कार्य कर रहे हैं। तालमेल की साधारण या गम्भीर समस्याएँ व्यक्ति के जीवन का निर्माण करने वाले निम्नलिखित में से एक या अधिक अनुभव-क्षेत्र में केन्द्रित होती हैं :

१. घर की दशाएँ
२. स्कूल की प्रगति
३. व्यावसायिक गतिविधियाँ
४. सामाजिक और नागरिक सम्बन्ध

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तिगत लक्षण अपने विकास के किसी भी स्तर पर इन चारों क्षेत्रों में अनुभव की गई स्थितियों और दशाओं के प्रभाव को व्यक्त करके हैं। व्यक्ति अनुभव के इन क्षेत्रों में से किसी एक में भी जो कुछ रवैये और प्रत्यक्ष व्यवहार के रूप में लाता है, वह तालमेल की उस सीमा का निर्णय करता है जो कि वह प्राप्त करेगा।

हम व्यक्तित्व के लक्षणों और प्रभाव के उन क्षेत्रों पर संक्षेप में विचार करेंगे जो तालमेल की समस्याओं में निहित हैं।

शारीरिक निर्माण और स्वास्थ्य की स्थिति बहुत से ऐसे व्यक्ति भाग्यवान हैं जिनका शारीरिक ढाँचा और निर्माण सामान्य है और स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अच्छा है। ऐसे लोगों के लिए तालमेल की उन कठिनाइयों को पूर्णतया समझना कठिन है जो व्यापक रूप से स्वीकृत स्तर से अस्थायी या स्थायी रूप से पृथक् स्थिति के साथ होती हैं। संभव है कि असाधारण दशा स्वयं में भावनात्मक हलचल का उतना कारण न हो जितना कि दूसरे लोगों पर व्यक्ति के दोषों का वास्तविक या काल्पनिक प्रभाव।

शारीरिक दशा या दोषों के कारण जो पीड़ा होती है उसे सहन करना बहुधा कठिन होता है, जिसके फलस्वरूप चिड़चिड़ापन, उदासीनता या निराशा उत्पन्न हो सकती है। फिर भी ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जो निरन्तर चलने वाली पीड़ा के बावजूद ऐसे उपयोगी कार्यों में लीन रह सकते हैं जो उनके लिए उनके साथियों का सम्मान और प्रशंसा अर्जित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक स्त्री को बचपन में पोलियो रोग हो गया था,

और उसने हमेशा पहियेदार कुर्सी पर बैठी रह कर भी कालेज स्तर की शिक्षा सम्मान (honours) सहित प्राप्त कर ली थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के एक सैनिक ने—जिसने युद्धभूमि में अपने दोनों हाथ गंवा दिये थे—अपनी कालेज की शिक्षा ही समाप्त नहीं की अपितु कालेज की गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपने साथियों के लिए एक उदाहरण भी उपस्थित किया था।

किन्तु ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिनमें शारीरिक दोष के कारण अथवा स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण तालमेल ठीक से नहीं बैठ सका है। शारीरिक अनाकर्षण, अंधापन, लंगड़ापन, वक्तृत्व दोष, ठिगनापन या कद की बहुत अधिक लम्बाई, पोषक भोजन, शारीरिक शक्ति या माँसपेशियों की संगति का अभाव, दुर्बलता अथवा और अन्य दोष तालमेल की कठिनाइयाँ उपस्थित करते हैं।

शारीरिक दोष से पीड़ित व्यक्ति एक या अधिक असाधारण व्यवहार प्रदर्शित कर सकता है। वह लजीला या एकान्तप्रिय हो सकता है, दूसरों के प्रति वह उदासीन अथवा वास्तव में उनका विरोधी हो सकता है, उसका रवैया आत्म-ग्लानि का हो सकता है। वह अपने दोषों को अस्वीकार कर सकता है। कुछ भी हो, जब कि ऐसे दोषों में उसे किसी व्यक्ति की सहायता नहीं मिलती जिनकी चिकित्सा नहीं हो सकती, तब तक यह संभव है कि उसके स्वास्थ्य की स्थिति उसके सामान्य कार्य और मनोरंजन की गतिविधियों में उसे भाग न लेने दे।

व्यक्तिगत रवैये और व्यवहार के लक्षण यह लगभग स्वयंसिद्ध तथ्य है कि हम अपने रवैयों अथवा अन्य व्यक्तिगत गुणों के साथ उत्पन्न नहीं हुए हैं, केवल कुछ सीमा तक—किसी विशिष्ट परिवार में जन्म लेने मात्र के कारण—हम विशिष्ट निर्माण और कुछ क्षमतााएँ पैतृक रूप से प्राप्त करते हैं। जो रवैये और लक्षण हमारे अन्दर विकसित होते हैं, वे हमारे वातावरण-जन्य प्रभावों और उनके सम्बन्ध में हमारी प्रतिक्रियाओं के परिणाम होते हैं। घर, स्कूल, कार्य-स्थान और विस्तृत समाज के वातावरण में किसी भी व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित रवैयों और व्यवहार के लक्षणों के आधार खोजे जा सकते हैं।

प्रारम्भिक शैशव से ही अधिकांश व्यक्ति उस देखे हुए व्यवहार की निरन्तर नकल करते हैं जो उन्हें आकर्षक प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त, जिस सीमा तक किसी व्यक्ति को, उसकी प्राकृतिक आवश्यकताओं या विकसित रुचियों के संतोष के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है या उसे आगे बढ़ाया जाता है, उस सीमा तक उसका व्यवहार पर्याप्त रूप से प्रभावित होता है। अभिभावकों और अध्यापकों द्वारा डाले गए विचार और कार्य के स्वभाव रवैये के शक्तिशाली निर्माता हैं क्योंकि ये व्यक्तिगत सफलता और तालमेल पर प्रभाव डालते हैं। समाचारपत्र, पुस्तकें, रेडियो और टेलीविज़न के कार्यक्रम तथा चलचित्र नवयुवकों और वयस्कों—दोनों—को सामान्य और विशिष्ट रवैयों तथा आदर्शों को विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब कि व्यक्ति अपने आस-पास के प्रभाव डालने वाले तत्त्वों से भावनात्मक रूप

से जाग्रत होता है तो वह उनके साथ पर्याप्त तालमेल बिठा लेता है अथवा उसके सम्मुख ऐसी परिस्थिति आ खड़ी होती है जो समस्यापूर्ण स्थिति होती है।

तालमेल के लिए जिन दशाओं में उसे सहायता की आवश्यकता हो सकती है, वे हैं निकृष्टता या श्रेष्ठता की भावना, अत्यधिक लजीलापन, अति गतिशीलता या अहं, समाज-विरोधी रवैया और लोगों के साथ कदम मिला कर चलने में असमर्थता, कार्य प्रारम्भ करने की क्षमता और आत्म-विश्वास का अभाव, गंभीर रुचि और अरुचि, खेल की भावना का अभाव और भावनात्मक स्थायित्व का अत्यन्त अभाव। इस समस्या का स्रोत व्यक्ति के पैतृक निर्माण में मिल सकता है; अन्य व्यक्तियों के साथ उसके अनुभवों का पृथक् होकर बढ़ना, उसकी कठिनाई का रूप है।

नैतिक स्तर और धार्मिक मूल्य बच्चे को नैतिक स्तर उसके गुरुजनों से प्राप्त होते हैं। कभी-कभी वह यह देख कर चकित हो जाता है कि वयस्क व्यक्ति की कथनी और करनी में सदैव एकरूपता नहीं होती। उदाहरणार्थ, एक अभिभावक बच्चे को मिथ्या भाषण के लिए मना करता है, फिर भी बच्चा उसी अभिभावक को टेलीफोन पर मिथ्या भाषण करते सुनता है। इसी प्रकार बुद्धिशील बच्चे को सिखाया जाता है कि ईमानदारी सब से श्रेष्ठ नीति है, परन्तु संध्याकालीन भोजन के समय वह अपने पिता को सहकर्मी व्यवसायी के साथ बेईमानी की बात कहते सुनता है। बहुत से बच्चे अपने लिए ऐसी नैतिक संहिता का विकास करके उसका अनुसरण करते हैं जो उनके अभिभावकों को सदैव स्वीकार्य नहीं होती। यदि बच्चों को अपने साथियों के साथ हिलमिल करके रहना है तो उनके द्वारा अपनाये जाने वाले निजमों में एक बात है अपने साथी की चुगली न करना, अर्थात् वह वयस्कों द्वारा निर्मित नियमों की किसी सहपाठी अथवा खेल के साथी द्वारा अवहेलना करने पर गुरुजनों से उसकी शिकायत न करे।

बच्चे के सम्मुख धार्मिक कठिनाइयाँ बहुत कम आती हैं। यदि उसे प्रारम्भ में ही धार्मिक शिक्षा प्राप्त होती है तो उसकी धार्मिक धारणाएँ उसके लिये सामान्यतः संतोषजनक रहती हैं। ईश्वर की दयालु पिता के रूप में कल्पना की जाती है जो आपके अच्छा कार्य करने पर आपको पुरस्कार देता है और नटखटपन के लिए दण्ड देता है, ऐसा उसे बताया जाता है। बच्चे के नैतिक स्तर का सामान्यतः उस धार्मिक शिक्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है जो उसे प्राप्त होती है।

किशोरावस्था के बाद के वर्षों में संदेह, भ्रम और संघर्ष हो सकते हैं। इनका प्रादुर्भाव उन स्थितियों से जिनमें अन्य व्यक्तियों के सम्बन्धों पर लागू होने वाले पारस्परिक अन्तर निहित हैं, और धार्मिक विश्वासों या निरीक्षणों के भेदों से होता है। घर के रवैये घर से बाहर के रवैये और व्यवहारों के विरुद्ध हो सकते हैं। उसकी अपनी माँगें, इच्छाएँ या रुचियाँ नैतिकता के पारस्परिक रूपों या धार्मिक शिक्षाओं का उल्लंघन प्रतीत हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, रवैयों के भावनात्मक रूप से नैतिक मूल्यों और धार्मिक अनुभवों को पृथक् करना उसके लिए कठिन हो

सकता है। इस प्रकार का उसका व्यवहार उसके तालमेल के अभाव का परिचायक हो सकता है।

गलत तालमेल—चाहे हल्का हो या गंभीर—अधिकारी की उपेक्षा, मिथ्या-भाषण, चोरी या विश्वासघात, असावधान या हानिकारक व्यवहारों, सामाजिक रूप से अस्वीकृत नैतिक स्तरों, धार्मिक कड़ाई या धार्मिक संदेहों, संसार का सुधार करने की असाधारण इच्छा, दूसरे लोगों के नैतिक स्तरों या धार्मिक विश्वासों में अधीरता अथवा ऊपरी छल-कपट और भीतरी असुरक्षा के मध्य संघर्ष जैसी एक या अनेक स्थितियों में निहित हो सकता है।

मनोरंजन सम्बन्धी रुचियाँ कार्य और खेल के संतुलित कार्यक्रम का व्यक्ति के लिए क्या मूल्य होता है, इसके विषय में बहुत कुछ कहा और लिखा जा चुका है। किसी न किसी समय यह संभव है कि एक व्यक्ति एक ही कार्य को काम, खेल या कठोर श्रम मान ले। बहुत बार इनमें से प्रथम और अन्तिम बातों का प्रयोग पर्याप्त रूप में किया जाता है। किन्तु वस्तुतः इन विविध गतिविधियों में नीचे लिखे अनुसार अन्तर किया जा सकता है: (१) कार्य लक्ष्य-निर्दिष्ट गतिविधि है जो प्रक्रिया में प्राप्त आनन्द पर ध्यान दिए बिना वांछनीय लक्ष्य की प्राप्ति के साधन के रूप में ग्रहण की जाती है, (२) खेल एक ऐसी गतिविधि है जो भावी लाभ पर ध्यान दिये बिना वर्तमान संतोष के लिए की जाती है, (३) कठोर परिश्रम एक ऐसी गतिविधि है जिसमें कोई व्यक्ति केवल इसलिए लगता है क्योंकि उसे बाहरी शक्तियों या परिस्थितियों द्वारा ऐसा करने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

किसी भी आयु का व्यक्ति उस प्रकार के कामों में भाग लेने के लिए प्रेरित होता है जिनमें वह अधिकतम व्यक्तिगत संतोष प्राप्त करता है। सम्भवतः जो वस्तु एक व्यक्ति को आनन्द या संतोष देती है, वह दूसरे के लिए दुःखदायी हो सकती है। बहुत से वयस्क व्यक्ति बच्चों के अनेक खेलों से ऊब जाते हैं। बहुत से बच्चे काम के समय खेलना चाहते हैं। नवयुवक या प्रौढ़ व्यक्ति किसी कार्य परियोजना में इतना उलझ जाता है कि वह उस कार्य में तब तक लगा रहता है जब तक कि वह वांछनीय लक्ष्य न प्राप्त कर ले या थकावट उसे छोड़ने के लिए विवश न कर दे।

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए यह आवश्यक है कि आराम या मनोरंजन के लिए कुछ समय अवश्य दिया जाय, चाहे कार्य की पूर्ति में उसका कितना ही स्वार्थ निहित हो। बच्चे सामान्यतया दौड़ना, कूदना और सक्रिय खेलों में भाग लेना पसन्द करते हैं। किशोरों और नवयुवकों के मनोरंजन कार्यों में खेल, पर्वतीय यात्रा, नृत्य, सामाजिक समूह, सभाएँ या टेलीविज़न कार्यक्रम और रेडियो सुनने में अकेले या दूसरों के साथ मिलकर भाग लेना सम्मिलित है। प्रौढ़ व्यक्ति छोटे व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक शान्त और बैठकर किये जाने वाले मनोरंजनों में भाग लेना पसंद करते हैं।

युवक और प्रौढ़ दोनों प्रकार के ऐसे व्यक्तियों के सम्मुख तालमेल की समस्या आती है जिन्हें शारीरिक रूप से उनके समवयस्क साथियों के साथ मनोरंजन में भाग

लेने का अवसर प्राप्त नहीं होता। खराब या नर्म स्वास्थ्य उन्हें परिश्रम के कार्यों में भाग लेने से रोक सकता है। ऐसे लोगों को बहुधा ऐसे स्वास्थ्यप्रद और आरामदेह कार्यों की खोज करने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है, जिनमें वे आनन्द प्राप्त कर सकें।

मनोरंजन सम्बन्धी दूसरी समस्या वह कठिनाई है जो बहुधा उन प्रौढ़ व्यक्तियों के सम्मुख आती है जो अपने प्रारम्भिक वर्षों में धन या प्रतिष्ठा की महत्त्वाकांक्षाओं से इतने दबे रहे कि उन्हें मनोरंजन सम्बन्धी पर्याप्त गतिविधि से बहिष्कृत रह कर अपने कार्य में लगा रहना पड़ा। जब ये व्यक्ति अन्तिम रूप से अपने जीवन कार्य से अवकाश ग्रहण करने का निर्णय करते हैं तो वे सम्भवतया अपने आपको ढीली-ढाली स्थिति में पाते हैं। वे अपने प्रारम्भिक मित्रों का सम्पर्क छोड़ चुके होते हैं; उन्होंने किसी मनोरंजन कार्य में रुचि नहीं ली है, जिसे वे जीवन की निरर्थक प्रणाली समझते हैं, अतः उसके अनुकूल वे स्वयं को बनाने में असमर्थ होते हैं।

इन लोगों की भावनाओं से मिलते-जुलते कुछ रवैये उन प्रौढ़ व्यक्तियों के हैं जो अपनी युवावस्था में अच्छे खिलाड़ी थे। चूँकि बढ़ती हुई आयु और व्यावसायिक कार्यों की चिन्ता उन्हें परिश्रमपूर्ण कार्यों में भाग लेने से रोकती है, वे स्वयं को दुःखद स्थिति में पाते हैं। न तो उन्होंने अपनी आयु के स्तर के अनुकूल मनोरंजनों में अपनी रुचि का विकास किया है और न अब वे जनता द्वारा उतने पूजे जाते हैं जितने कि वे युवावस्था में पूजे जाते थे। इसलिए वे अपनी सारी शक्ति कार्य पर लगाना चाहते हैं और सामाजिक स्थितियों में आवश्यक आराम पाने का प्रयत्न नहीं करते। सौभाग्य से, शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी धारा प्रवाहित हो रही है जो ऐसे मनोरंजन-कार्यों में नवयुवकों को रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित करती है जिनका आनन्द वे वृद्धावस्था और युवावस्था दोनों में उठा सकते हैं।

घरेलू दशाएं वास्तव में वह लड़का या लड़की भाग्यशाली है जिसका विकास ऐसे घर में होता है जिसके सदस्य भावनात्मक नियन्त्रण, आत्म-अनुशासन और परस्पर सहयोग रखते हैं। इन प्रशंसनीय गुणों का अभाव इतने घरों में है कि बहुत से अध्यापकों और परामर्शदाताओं का विश्वास है कि अधिकांश ग़लत तालमेलों की जड़ें घर की अवांछनीय दशाओं और प्रारम्भिक शैशव काल में प्राप्त प्रभावहीन प्रशिक्षण में हैं।

आज के अमेरिकी घर की तीव्र आलोचना हो रही है। उद्योगवाद के विकास से जो भारी उत्पादन हो रहा है, उसने घर से उन सहकारितापूर्ण गतिविधियों को समाप्त कर दिया है जो भूतकाल में परिवार के जीवन का आधार थीं। आधुनिक सुविधाओं ने घर को सफलता से चलाने के लिए आवश्यक घण्टों को कम कर दिया है और प्रयत्न की मात्रा को घटा दिया है। घर के बाहर दी जाने वाली मनोरंजन की बहुत-सी सुविधाओं और समाजवाद के अवसरों ने उस सीमा को कम करने के लिए पर्याप्त कार्य किया है जो परिवार के सामाजिक और मनोरंजक कार्यों का केन्द्र है।

परिवार के सदस्यों के कार्यों के समय में जो अन्तर है उसने और इस तथ्य ने कि माता घर के बाहर कार्य करती है, नियमित पारिवारिक दिनचर्या में व्यवधान डाल दिया है। इतना ही नहीं, बहुत से घरों में परिवार के विविध सदस्य पारिवारिक इकाई की अपेक्षा पृथक्-पृथक् सामाजिक कार्यों में लीन रहते हैं। आधुनिक अमेरिकी परिवार शिथिल होता जा रहा है, सदस्य अधिकाधिक मात्रा में व्यक्तिवादी होते जा रहे हैं। बहुत से व्यक्ति पारिवारिक सम्बन्धों में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के अनुभव से अधिक व्यक्तिगत आत्म-निर्देशन और आत्म-अनुशासन प्राप्त करते हैं, किन्तु दूसरे लोग सहयोग के अभाव के फलस्वरूप अरक्षा से पीड़ित होते हैं। कुछ व्यक्ति अपने बच्चों पर परम्परागत प्रभुत्व या परम्परागत रवैया बनाये रखना चाहते हैं। ऐसे मामलों में घर के कठोर अनुशासन और घर के बाहर देखी गई स्वाधीनता में होने वाले संघर्ष के फलस्वरूप तालमेल की ऐसी समस्याएँ उपस्थित हो सकती हैं जिनका समाधान लगभग असम्भव हो गया है।

घरेलू दशाएँ और अभिभावकों के रवैये ऐसी समस्यापूर्ण स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिनके लिए निर्देशक परामर्शदाताओं की सेवाओं की आवश्यकता हो सकती है। इस प्रकार की दशाओं और रवैये में अत्यधिक कठोर माता पिता, अत्यन्त रुचि लेने वाले या उदासीन माता-पिता, पारिवारिक द्वेष और मतभेद, माता-पिता में से किसी एक के द्वारा दिये गये तलाक अथवा किसी की मृत्यु के कारण टूटा हुआ घर, नगर या देश के एक भाग से दूसरे भाग में जल्दी-जल्दी घर परिवर्तन, घर के बहुत अधिक या बहुत कम कर्त्तव्य, परिवार के सदस्यों के नैतिक स्तरों और धार्मिक मान्यताओं में अन्तर, निम्न चारित्रिक स्तर और स्कूल या समुदाय के साथ घर के सहयोग का अभाव सम्मिलित हैं। बहुत घरों में अनुचित तालमेल के ये समस्त तत्व उपस्थित होते हैं। किन्तु, इनमें से एक भी तत्त्व क्षोभ, असुरक्षा की तीव्र भावना या गम्भीर भावनात्मक गड़बड़ का कारण बन सकता है।

मनोवैज्ञानिक सामान्यतः इस बात से सहमत हैं कि बचपन के अनुभव किसी भी व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। जीवन के प्रारम्भिक पाँच या छः वर्षों में विकसित होने वाले रवैये और स्वभाव भावी व्यवहार पर शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं। यहाँ तक कि शैशव के प्रारम्भिक वर्षों में जो घर की दशाएँ होती हैं वे व्यक्ति के बाद के वर्षों में भी चलती रहती हैं, व्यक्ति के जो लक्षण प्रारम्भिक अवस्था में विकसित हो जाते हैं वे आयु की वृद्धि के साथ-साथ घने होते जाते हैं।

स्कूल की प्रगति जो विद्यार्थी ऐसे स्कूल में पढ़ता है जिसमें पाठ्यक्रम के विषय और अध्यापन की विधियाँ उसकी आवश्यकता के अनुकूल नहीं हैं, उसके लिए मानसिक योग्यता और रुचि सम्बन्धी स्वार्थों के संदर्भ में अध्यापन की गतिविधियों में संतोषजनक समन्वय कठिन हो सकता है। अन्य बातें भी विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति पर विरोधी प्रभाव डाल सकती हैं और इस प्रकार रवैये और व्यवहार की समस्या उत्पन्न कर सकती हैं।

निम्नलिखित दशाओं में से एक या अधिक होने पर स्कूल के संतोषजनक तालमेल में बाधा पड़ सकती है, अथवा उसकी गति मंद हो सकती है : पाठ्यक्रम के विषय विद्यार्थी की मानसिक स्थिति से मेल न खाते हों, अध्यापकों द्वारा दी जाने वाली सहायता बहुत कम या बहुत अधिक हो, अध्ययन का कम स्वभाव, घर पर अध्ययन करने की अपर्याप्त सुविधाएँ, असफलता का भय, स्कूल के कार्य या स्कूल के विशिष्ट विषय में रुचि का अभाव, घर के लिए दिया जाने वाला भारी या भलीभाँति न समझा हुआ कार्य, स्कूल के खेलों या स्कूल के बाहर की सामाजिक गतिविधियों में बहुत अधिक या बहुत कम भाग लेना, अध्यापक व छात्र में विरोध, अपने बच्चे के स्कूल के कार्यों के प्रति माता-पिता की उदासीनता अथवा बहुत अधिक समर्पण का रवैया, भावी योजनाओं के सम्बन्ध में अनिश्चय और माता-पिता के साथ व्यवसाय के चुनाव को लेकर संघर्ष। बच्चे, किशोर या नवयुवक के स्कूल जीवन में अध्ययन की सफल प्रगति में हस्तक्षेप करने वाली बहुत सी स्थितियों में से ये कुछ हैं। हमारी बड़ी और स्कूल की असमान जनसंख्या के सदस्यों की विविध आवश्यकताएँ और अभिरुचियाँ चतुराई, समझदारी और अध्यापकों तथा निर्देशन परामर्शदाताओं की बुद्धिमानी को चुनौती है। बहुत अधिक बार स्कूल के छात्रों की तालमेल की समस्या ऐसे गलत तालमेल के तत्त्वों का निर्देश करती है जिन्हें सुलझाना स्कूल के लोगों की योग्यता और उन्हें प्राप्त सुविधा के बाहर है। जब तक माता-पिता और समुचित सामुदायिक अभिकरणों से सहयोग प्राप्त नहीं होता तब तक चिकित्सा सम्बन्धी उपायों के अतिरिक्त अध्यापक और परामर्शदाता उस छात्र के लिए कुछ नहीं कर सकते, और ये उपाय अपेक्षाकृत ऊपरी होते हैं।

व्यावसायिक गतिविधियाँ चूँकि व्यावसायिक निर्देशन के विविध क्षेत्रों पर आगे चलकर विस्तारपूर्वक विचार किया जायेगा इसलिए इस स्थान पर विचार किसी व्यवसाय के चुनाव और उसके लिए तैयारी से सम्बंधित कुछ प्रमुख समस्याओं तक ही सीमित है। हाई स्कूल और कालेज स्तर पर बहुत से नवयुवक साधारणतया अपने भावी व्यावसायिक कार्यों के विषय में चिन्तित होते हैं। जो समस्याएँ व्यावसायिक चुनाव और उसकी तैयारी से, तथा उसके फलस्वरूप कर्मचारी के तालमेल से सम्बन्ध रखती हैं, उनमें व्यावसायिक रुचियों के सम्बन्ध में अनिश्चितता, बहुत उच्च और बहुत निम्न व्यावसायिक आकांक्षाएँ, अभिभावकों का हस्तक्षेप, एक से अधिक व्यवसायों में रुचि, अध्यापक के परामर्श का अभाव अथवा बुद्धिहीन निर्देशन, व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए अपर्याप्त अवसर, कर्मचारियों का अत्यधिक संभरण, नौकरी के लिए आवेदन करने की कठिनाइयाँ, नौकरी की अपेक्षाओं से तालमेल बिठाने में असमर्थता सम्मिलित हैं।

विशिष्ट स्थितियों के निम्नलिखित उदाहरण उन मुख्य भेदों को समझने में सहायता देंगे जो किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत रवैये और व्यवहार से सम्बन्धित तालमेल की समस्याओं और उसके अनुभवों से सम्बन्धित हैं :

१. लगभग पचास वर्ष हुए किसी ग्रामीण समाज में पच्चीस परिवार थे। इन परिवारों के बच्चे खेतों में कार्य करते थे, स्कूल जाते थे और साथ मिलकर खेलते थे। आज अधिकांश बच्चे वयस्क हो गये हैं और अपना निजी परिवार लेकर अब भी उसी समाज में रहते हैं। किन्तु एक परिवार के सात बच्चों ने उस समुदाय का परित्याग कर दिया है और वे देश-भर में विख्यात व्यावसायिक और व्यापारिक नेता बन गये हैं। इस परिवार के सदस्यों और उनके पड़ोसियों में जो अन्तर है, उसका कारण प्रारंभिक वातावरणजन्य परिस्थितियाँ न होकर कुछ व्यक्तिगत विशेषताएँ हैं जिन्होंने अधिक विस्तृत अनुभव प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रेरित किया है।

२. एक व्यक्ति अनेक अवसरों पर किसी न किसी व्यवसाय में प्रवेश करने के लिए विवश किया गया। हाई स्कूल के वरिष्ठ छात्र के नाते टेक्नीकल इंजीनियरिंग में उसे कालेज की छात्रवृत्ति प्रदान की गई थी। आगे चलकर उसे बैंक में एक पद और विक्रय अधिशासी का स्थान स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहन दिया गया। किन्तु वह अध्यापक बनना चाहता था, इसलिए उसने इन समस्त अवसरों को अस्वीकार कर दिया, यद्यपि उसे कालेज के रास्ते अपना लक्ष्य प्राप्त करना पड़ा। आज वह एक शैक्षिक नेता है। वह अपने कार्य में अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं को साथ लेकर आया है जो उसे संभवतया किसी भी क्षेत्र में सफलता दिला सकती थीं, किन्तु उसके अन्तिम व्यावसायिक चुनाव ने उसके जीवन के समस्त अन्य क्षेत्रों—घर, शैक्षिक, सामाजिक और नागरिक—पर प्रभाव डाला है। यदि उसने अन्य व्यवसाय अपना लिया होता तो वह आज की अपेक्षा एक भिन्न व्यक्ति होता। जिस वातावरण में वह रह रहा है और जिसके द्वारा उसका रवैया और व्यवहार प्रभावित होता है, उससे उसकी तालमेल की समस्याएँ भिन्न हैं।

सामाजिक और नागरिक तालमेल अब स्कूल नवयुवकों में सामाजिक और नागरिक सम्बन्धों तथा मनोरंजनात्मक कार्यों के प्रति बौद्धिक और स्वस्थ रवैयों के विकास के लिए अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करने लगे हैं जैसा कि इससे पहले उन्होंने कभी नहीं किया। इन अनुभव क्षेत्रों पर ध्यान देने के कार्य में समस्त स्कूल स्तरों पर निर्देशन के कार्यों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रूप निहित है। इन तालमेल क्षेत्रों पर अगले अध्यायों में विस्तारपूर्वक विचार किया जायेगा। यहाँ केवल उन कुछ समस्याओं पर सुझाव दिया जा रहा है जिनका साक्षात्कार नवयुवकों और वयस्कों से सामाजिक और नागरिक सम्बन्धों के संदर्भ में अन्य व्यक्तियों से होता है। इनमें से समस्या उत्पन्न करने वाली कुछ स्थितियाँ इस प्रकार हैं: सामाजिक कार्यों में बहुत अधिक या अपर्याप्त रूप से भाग लेना, असहिष्णुता या समाज-विरोधी रवैया, स्त्री-पुरुषों में अस्वस्थ सम्बन्ध, विरोधी सेक्स से मेल-जोल का अभाव, नागरिक कार्यों

की ओर उदासीनता अथवा अवांछनीय व्यवहार, मनोरंजन कार्यों का बुद्धिरहित चुनाव, खेलों या अन्य मनोरंजनों में बहुत-अधिक भाग लेना या बिल्कुल भाग न लेना, व्यावसायिक रूप से संचालित मनोरंजन सुविधाओं की भारी लागत अथा निम्न-कोटि और समाज प्रेरित अवकाश-कालीन कार्यों की अपर्याप्तता।

समन्वय की समस्याओं की मान्यता माता-पिता और अध्यापक कभी-कभी यह अनुभव नहीं कर पाते कि नवयुवक की तालमेल की समस्या होती है। या तो वे कठिनाई के व्यवहार सम्बन्धी लक्षणों को स्वीकार नहीं करते या वे बच्चे के कार्यों को ऊपरी कारणों के परिणाम समझते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्यापक जितना दीक्षित होगा और जितनी पैनी दृष्टि रखता होगा, उतना ही वह छात्र के नवीन या असाधारण व्यवहार के प्रदर्शन के प्रति जागरूक रहेगा। कुछ स्कूलों में निर्देशन विभाग के सदस्य अध्यापकों को त्रुटिपूर्ण तालमेल के संभावित लक्षणों से अवगत कराते रहते हैं। अध्यापकों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे निर्देशन कर्मचारियों को ऐसे बच्चे के विषय में सूचना दें जिसमें तनिक भी कठिनाई के लक्षण परिलक्षित होते हैं। अध्यापक और माता-पिता किसी व्यवहार को देखकर अनदेखा कर दें या उसकी महत्त्वहीन उपेक्षा कर दें इसकी अपेक्षा अधिकांश परामर्श-दाता इस बात को पसन्द करेंगे कि वे उस व्यवहार के प्रति शंका करें जो तनिक भी असाधारण हो या बिल्कुल असाधारण न हो।

निकाय के लिए बर्मिंघम (अलाबामा) पब्लिक स्कूलों के निर्देशन विभाग ने निम्नलिखित सूचियाँ बनाई हैं :

निर्देशन विभाग की सूचनार्थ कुछ कारण :

आयु-श्रेणी में नियुक्ति
उल्लेखनीय शिथिलता
योग्यता से कम सफलता
भावनात्मक कठिनाइयाँ
सामाजिक अयोग्यताएँ—पीछे हटना, अधिक आगे बढ़ना आदि
अध्ययन का शिथिल स्वभाव
अनियमित उपस्थिति
निरुत्साह
शारीरिक पंगुता
कार्य पर जाना चाहता है
मानसिक दोष
(अत्यन्त) अपरिपक्वता
वाणी सम्बन्धी दोष
पढ़ने में कठिनाइयाँ

विशिष्ट समस्याएँ

एलिस इतनी उदास क्यों है ?
जॉनी पढ़ना क्यों नहीं सीखता ?
मेरी चीजें क्यों उठाती है ?
सैम्मी अपने अध्यापक को उत्तर क्यों देता है ?
जेन इतनी गुपचुप और मन्द क्यों है ?
जब से माइक स्कूल में आया है तब से वह तीन बार क्यों फेल हो चुका है ?
साराह स्कूल जाने से पूर्व प्रतिदिन प्रातःकाल क्यों रोती है ?
हेनरी अपना समय भली-भाँति व्यतीत करे, इसके लिए उसे किस प्रकार सहायता दी जा सकती है ?
मार्था को व्यापारिक या कालेज की तैयारी की पाठ्य विधि पढ़नी चाहिए ?
बिल स्वाभाविक रूप से उद्दंड क्यों है ?
छः वर्षीय जॉन के लिए जो हकलाता है, क्या करना चाहिए ?
टाम विज्ञान में 'अ' वर्ग में और अंग्रेजी में 'फ' वर्ग में क्यों आता है ?
जॉन स्कूल क्यों छोड़ना चाहता है ?

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. ऐसी तीन समस्याएँ स्मरण कीजिए जो आपके सामने बचपन में आई थीं और तीन ऐसी जो किशोरावस्था में आई थीं। इन्हें सुलझाने के लिए किस सीमा तक और किस प्रकार माता-पिता, अध्यापकों या स्कूल के परामर्शदाताओं ने आपकी सहायता की थी ?
२. ऐसी तीन स्थितियाँ और दशाएं बताइये जो एक व्यक्ति के लिए तो समस्याएँ उत्पन्न कर देती हैं, किन्तु दूसरे व्यक्ति के लिए नहीं करतीं। अन्तर की व्याख्या कीजिए।
३. जीवन के तालमेल की समस्याओं पर 'छोटी-छोटी बातें अपना महत्त्व रखती हैं' कहावत कैसे चरितार्थ हो सकती है ?
४. यदि संभव हो सके तो अपने अध्यापक से इस विषय पर वाद-विवाद का आयोजन कराइये : आज का घर पचास वर्ष पूर्व के घर से श्रेष्ठ है।
५. टेलीविजन घर के लिए तालमेल की कौन-सी समस्याएँ लाया है ?
६. अपने प्रारम्भिक स्कूल और हाई स्कूल के दिनों को स्मरण कीजिए। आप या आपके स्कूल के साथी तालमेल की जितनी समस्याएँ स्मरण कर सकें, उन सबकी सूची बनाइये। इन समस्याओं के समाधान में आपके अध्यापकों या परामर्शदाताओं ने कहाँ तक सहायता की थी ?
७. अपने ऐसे दो परिचित व्यक्तियों की तुलना कीजिए जो लाभदायक स्थितियों में नौकर हैं, एक अपने कार्य में भलीभांति लगा हुआ है और दूसरा असंतुष्ट है। इस व्यवहार के अन्तर की व्याख्या आप कैसे करेंगे ?
८. जिस व्यवसाय के लिए आप तैयारी कर रहे हैं या जिसमें आप अभी लगे हुए हैं, उसका चुनाव आपने क्यों किया ? अपना निर्णय करने में आपको कितना निर्देशन प्राप्त हुआ ?

९. मनोरंजन कार्यों में आप कितना समय प्रति सप्ताह व्यतीत करते हैं, आप किस प्रकार का मनोरंजन करते हैं और क्यों ? क्या आपकी ऐसी अवकाशकालीन रुचियाँ हैं जिन पर आप अमल नहीं करते ? यदि ऐसा है, तो क्यों नहीं करते ?

१०. आपके कितने मित्र हैं ? कितने परिचित हैं ? उनका चुनाव आप किस आधार पर करते हैं ?

११. निम्नलिखित घटनात्मक विवरणों को ध्यानपूर्वक पढ़िये । प्रत्येक को इन दृष्टिकोणों से देखिये :

१. उन बातों को खोजने का यत्न कीजिए जिनसे समस्या उत्पन्न हुई ।

२. इस समस्या द्वारा प्रभावित अनुभव-क्षेत्रों का निर्देश कीजिए ।

३. समस्या की गंभीरता की सीमा का मूल्यांकन कीजिए ।

४. प्रयोग की गई या सुझाई गई चिकित्सा की उपयुक्तता पर अपनी सम्मति दीजिए । यदि रिपोर्ट में कोई चिकित्सा न बताई गई हो तो समस्या के समाधान की कोई पद्धति बताइये ।

१. लैरी एल० १६६ की बुद्धि-लब्धि के साथ पन्द्रह वर्ष का लड़का है । वह अकेली संतान है । प्रारम्भिक स्कूल में उसकी शिक्षा विशेष कक्षाओं में हुई जिनमें केवल प्रतिभा-सम्पन्न बच्चे थे, और अब वह हाई स्कूल में गौण कक्षा का छात्र है । सामाजिक रूप से वह लजीला व आत्मनिमग्न लड़का है जिसे सदैव मित्र बनाने और उनसे मित्रता बनाये रखने में अत्यन्त कठिनाई हुई है क्योंकि उसे अधिक सामान्य नवयुवकों के कार्यों में कभी रुचि नहीं रही । जब उसके सहपाठी बेसबाल (Baseball) खेलते हैं तो लैरी गणित सम्बन्धी सिद्धान्तों का अध्ययन करने में अपना समय व्यतीत करता है । यदि दूसरे लड़के उसे सिनेमा देखने के लिए आमंत्रित करते हैं तो वह उन्हें मना कर देता है और अकेला म्यूजियम या विज्ञान प्रदर्शनी देखने चला जाता है ।

लैरी का घरेलू जीवन अब और सदा से अत्यन्त विषादपूर्ण रहा है । उसके माता-पिता कभी मिलजुल कर नहीं रहे । गत वर्ष स्थिति इतनी अधिक बिगड़ गई कि लड़के की माँ बहुत अधिक रुग्ण हो गई और उसे मानसिक रोगों के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया । तीन मास बाद वह अस्पताल से आई और फिर पारिवारिक कलह आरम्भ हो गये । हाल ही लैरी को स्नायविक रोग हो गये हैं और पाखंड वृद्धि हो गयी है, जो माता-पिता और उसे, दोनों के लिए अशांतिकारक हैं । डाक्टरी सहायता ली गई थी, किन्तु अब तक उसके रवैये या व्यवहार में कोई सुधार दिखाई नहीं देता ।

२. जॉन एम० १२ वर्ष का लड़का है जिसकी बुद्धि-लब्धि ८१ है और जो स्कूल में एक वर्ष पीछे है । उसकी शारीरिक दशा सामान्य है । किन्तु भावनात्मक दृष्टि से अस्थायी प्रकृति का है और उसमें आत्म-नियन्त्रण नाममात्र को भी नहीं है । वह बचपने का प्रदर्शन करता है और अविश्वसनीय तथा बेचैन है । वह अपने स्कूल के कार्य में कोई रुचि नहीं लेता और अपने सहपाठियों को परेशान करने का यत्न करता है, किन्तु वयस्कों के प्रति वह अत्यन्त विनम्र है । दंड का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परन्तु वह प्रेम और स्नेह प्राप्त करना चाहता है और इसलिए चतुराईपूर्ण दयालुता से उससे काम लिया जा सकता है— किन्तु इससे सीमित सफलता ही मिलती है । वह अपने छोटे भाई से क्षुब्ध है ।

परिवार की आर्थिक स्थिति औसत श्रेणी की है । ऐसा प्रतीत होता है कि जॉन की माता में इस बच्चे के प्रति स्नेह का बहुत अभाव है । वह यह विश्वास व्यक्त करती है कि वह निकम्मा है, और छोटे लड़के पर बहुत ध्यान देती है । पिता लड़के को रात्रि से

सोने समय तक घर में नहीं रहने देता क्योंकि माता-पिता उसके व्यवहार को सहन नहीं कर सकते ।

जॉन के अध्यापकों ने उसके अध्ययन की मंद गति से अपनी पढ़ाई का तालमेल बिठाने का प्रयत्न किया है । इसीलिए उसने साधारण कार्य में सफलता की कुछ भावना का अनुभव किया है । उसके रवैये में भी कुछ सुधार दिखाई देता है । यद्यपि वह अब भी स्कूल में खिलौने लेकर आता है, और दीवार के साथ रगड़कर माचिस भी जलाता है, फिर भी वह जान बूझकर अन्य बच्चों को परेशान नहीं करता ।

१२. बच्चों, सुकुमारों और वयस्कों के साथ के अपने अनुभव से निम्न में प्रत्येक से सम्बन्धित समस्यापूर्ण स्थितियों या दशाओं की चरित्र सम्बन्धी रिपोर्ट लिखिये :
   अ. शारीरिक गठन और स्वास्थ्य की स्थिति
   ब. नैतिक स्तर
   स. व्यक्तिगत रवैयों और व्यवहारों के लक्षण
   द. धार्मिक व्यवहार

१३. निम्नलिखित में से प्रत्येक अनुभव-क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली समस्यापूर्ण स्थिति की चरित्र सम्बन्ध रिपोर्ट प्रस्तुत कीजिए :
   अ. घरेलू सम्बन्ध
   ब. स्कूल की गतिविधियाँ
   स. व्यावसायिक गतिविधियाँ
   द. सामाजिक और नागरिक तालमेल

४ निर्देशन के सिद्धान्त और आधार

तालमेल की कठिनाइयों का स्रोत किसी एक विशिष्ट कारण में यदाकदा ही मिलता है। इसी प्रकार, व्यवहार के त्रुटिपूर्ण समन्वय का किसी एक क्षेत्र पर ही प्रभाव दिखाई नहीं देता अपितु उसके समस्त व्यवहार का रूप उससे प्रभावित प्रतीत होता है। जो स्त्री अपने वैवाहिक जीवन में सुखी नहीं है, वह अपनी संतान के साथ भी सुखी नहीं होती। जो कर्मचारी अपने आप को सुरक्षित नहीं समझता अथवा जो अपनी नौकरी से असंतुष्ट है वह घर का जीवन भी संतुष्ट नहीं रहने देता। जिस बच्चे का स्कूल का जीवन संतोपजनक नहीं है, संभव है कि वह घर पर या अपने पड़ोसी-साथियों के साथ अनियंत्रित व्यवहार करने लगे।

निर्देशन का कार्यकारी रूप

जो व्यक्ति बच्चों, नवयुवकों और युवकों में वांछनीय व्यवहार के विकास से सम्बन्धित है, उसका रुझान निर्देशन की ओर होना चाहिए। व्यक्ति के भीतर और बाहर के उस प्रत्येक तत्त्व से उसे पूर्णतया परिचित होना चाहिए जो उसके तालमेल को बिगाड़ता है। यदि वह उन व्यक्तियों की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करने की आशा करता है, जिन्हें सहायता की आशा है तो उसे अपना कार्य विनम्रता से सम्बन्धित विशिष्ट निर्देशन स्थिति में अपने कर्त्तव्य को भलीभाँति समझ कर और निर्देशन सम्बन्धी अपने दायित्वों को बुद्धिमानी और उद्देश्यपूर्ण दृष्टि से पूरा करने के दृढ़ निश्चय के साथ प्रारम्भ करना चाहिए। उसे इस बात से भी परिचित होना चाहिए कि वह (१) किसी व्यक्ति को अपने रवैयों अथवा व्यवहार में परिवर्तन लाने की भावना को प्रेरित और (२) परिवर्तन को सक्रिय बनाने में सहायता कर सकता है और उसे यही करना चाहिए।

निर्देशन की विधि वर्तमान सामाजिक स्थिति में निहित अनेक विघ्नकारी तत्त्वों का किसी व्यक्ति पर क्या संभावित प्रभाव पड़ सकता है, इसके विपय में

अधिकाधिक जानकारी बढ़ती जा रही है। यदि जीवन के समन्वय का हमें अधिक बुद्धिमानी से विश्लेपण करना है और समस्त व्यक्तियों विशेषत: नवयुवकों के लिए निरोधात्मक निर्देशन की अधिक प्रभावशाली ढंग से व्यवस्था करनी है तो जीवन के तालमेलों के कारण और कार्य के सम्बन्धों में अधिक अनुसंधान करने की आवश्यकता है।

मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान और शिक्षा में निहित निर्देशन की कल्पना मानव समृद्धि के लिए किये जाने वाले समस्त प्रयत्नों में नेताओं के रवैयों और व्यवहारों को प्रभावित करती है। उदाहरणार्थ चिकित्सक, दाँत के डाक्टर और नर्सों को अपने रोगियों की चिकित्सा करने के लिए निर्देशन-दीक्षित या मनोवैज्ञानिक कार्यविधि अपनाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है ताकि वे उनकी कठिनाई में समन्वय करने के लिए उनकी सहायता कर सकें और उनकी शारीरिक स्थिति में सुधार कर सकें। सामाजिक नियोजक ऐसी आवास सम्बन्धी सुविधाओं और शैक्षिक, मनोरंजन तथा स्वास्थ्य सम्बंधी सेवाओं की व्यवस्था करते हैं जो समाज के सदस्यों को अच्छा शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक समन्वय प्राप्त करने और उन्हें बनाये रखने में सहायक हो सकें।

हम पहले बता चुके हैं कि प्रभावशाली शिक्षा निर्देशन को लेकर चलती है। किसी व्यक्ति की शैक्षिक प्रगति उन प्रेरणाओं पर निर्भर है जो वह अपनी आंतरिक शक्तियों के पूर्णतम विकास की दिशा में माता-पिता और स्कूल के अध्यापकों से प्राप्त करता है। इसलिए स्कूल के स्तर पर ध्यान दिये बिना निर्देशन सेवाओं में वे विशिष्ट सहायताएँ सम्मिलित होती हैं जो छात्रों को अपने आपको और अपने दायित्वों को समझने तथा अपनी अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में मदद देने के लिए स्कूल के सुयोग्य कर्मचारियों द्वारा दी जाती हैं।

व्यवसाय के रूप में निर्देशन निर्देशन और उसके कार्यों के सम्बन्ध में कुछ विचार सर्वसाधारण के इस ज्ञान के परिणामस्वरूप उद्भूत हुए हैं कि व्यक्ति के अपने निजी मामलों के प्रबंध में आत्म-निर्देशन अधिकाधिक कठिन होता जा रहा है। सहायता देने अथवा निर्देशन-निर्दिष्ट कार्य में रुचि किसी सच्चे, अच्छे इरादे वाले, योग्य व्यक्ति का विशेषाधिकार है।

वास्तव में व्यवसाय के रूप में निर्देशन (१) कुल शैक्षिक कार्यक्रम की सीम में कार्य करना है, (२) उसके अभ्यासी से यह आशा करना है कि वह समुचित व्यावसायिक तैयारी करे और (३) वे आवश्यक सेवाएँ प्रस्तुत करना है जो समुचित लचीले निर्देशन कार्यक्रम के रूप में संगटित होती हैं। हम निर्देशन के सम्बन्ध में मैथ्यूसन की संक्षेप में दी गई इस परिभाषा से सहमत हैं कि "प्रभावशाली आत्म-निर्देशन के हेतु अपने चुनावों, योजनाओं और समन्वयों को क्रियान्वित करने और शिक्षा से सम्बन्धित व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तियों की सहायता की नियमित, व्यावसायिक प्रक्रिया है।"*

*आर० एच० मैथ्यूसन, Guidance Policy and Practice, परि० संस्करण, पृष्ठ १९७, हार्पर एण्ड ब्रादर्स, न्यूयार्क, १९५५, अनुमति सहित उद्धृत।

यद्यपि व्यावसायिक सेवा के रूप में निर्देशन का विचार अभी समस्त शैक्षिक नेताओं द्वारा स्वीकार नहीं किया गया है, कुछ स्कूलों के प्रबन्धक आदि निर्देशन के मौलिक रूपों को समझने लगे हैं। उदाहरणार्थ "दि प्रोग्राम आफ़ गाइडेंस एंड प्लेसमेंट, बाल्टीमोर पब्लिक स्कूल्स" शीर्षक बुलेटिन में यह वक्तव्य प्रकाशित हुआ है :

> बाल्टीमोर में पथप्रदर्शन कार्यों का आधार व्यतिगत भेदों की अभिस्वीकृति, मानवीय वृद्धि और विकास की मूल कल्पनाओं और वर्तमान शैक्षिक अवसरों की विभिन्नताओं, आधुनिक व्यावसायिक जीवन की जटिलताओं, मानवीय सम्बन्धों के महत्त्व, अपने मनपसंद चुनाव करने के व्यक्ति के अधिकार और इस बात के ज्ञान पर है कि व्यक्ति का अपने जीवन की स्थितियों से तालमेल बिठाना एक निरन्तर परिवर्तित होने वाली प्रक्रिया है।

इस बात को स्वीकार करते हुए कि किसी शैक्षिक संस्था में निर्देशन कार्यकर्त्ता उन बातों को मान कर चलते हैं जिनका उल्लेख पूर्ववर्ती उद्धरण में किया गया है, कि जो भी सेवाएँ उपलब्ध की जाएँ उनसे कुछ मूल निर्देशन सिद्धान्तों के प्रयोग का परिचय मिलना चाहिए।

निर्देशन के मूल सिद्धान्त

अधिकांश व्यक्ति इस लोकोक्ति से परिचित हैं : घोड़े की चोरी के बाद अस्तबल में ताला लगाना। उन्होंने अपने निजी जीवन में उन घटनाओं को अनुभव किया होगा जिनमें मनन तो खूब किया गया है किन्तु दूरदर्शिता का अत्यधिक अभाव था। निर्देशन की कल्पना में दूरदर्शिता के उपयोग को सम्मिलित करने की आवश्यकता है ताकि ऐसी स्थितियों को यथासंभव रोका जा सके जो व्यक्ति को परिस्थितियों से तालमेल बिठाने के लिए सहायता प्राप्त करने हेतु विवश कर देती हैं। जब विघ्नकारी अथवा अस्वास्थ्यकर परिस्थितियाँ व्यवहार के संतोषजनक रूपों में हस्तक्षेप करती हैं तो यह अध्यापकों और निर्देशन कर्मचारियों का दायित्व हो जाता है कि वे अपेक्षित सेवा प्रदान करें। दिये जाने वाले निर्देशन का कार्य—निरोध संरक्षण या ऐसा इलाज जिसके लिए प्रयत्न किया गया है—चाहे कुछ भी हो, उसकी सफलता के लिए कुछ मान्यताएँ अनिवार्य हैं।

निर्देशन के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त :

१. किसी भी व्यक्ति के जटिल व्यक्तित्व के प्रत्येक रूप में उसके समस्त प्रदर्शित रवैयों और व्यवहार के रूप का महत्त्वपूर्ण तत्त्व निहित होता है। जिन निर्देशन सेवाओं का उद्देश्य किसी विशिष्ट अनुभव क्षेत्र में वांछनीय समन्वय करना होता है उन्हें व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर विचार करना होगा।

२. यद्यपि अनेक बातों में समस्त मनुष्य समान होते हैं तो भी किसी बच्चे, नवयुवक या वयस्क की सहायता करने या उसका निर्देशन करने का यत्न

करने से पूर्व व्यक्तिगत भेदों को समझना और उन पर विचार करना आवश्यक है।

३. निर्देशन का कार्य किसी व्यक्ति को (१) व्यवहार के प्रेरक, महत्त्वपूर्ण और प्राप्तव्य लक्ष्यों को प्राप्त और स्वीकार करने तथा (२) उसके कार्यों के सम्पादन में इन बाह्य रूपों के प्रयोग में सहायता देना है।

४. वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक उथल-पुथल ऐसे अनेक त्रुटि-पूर्ण समन्वय के तत्त्वों को जन्म दे रहे हैं जो अनुभवी और पूर्णतया प्रशिक्षित निर्देशन परामर्शदाताओं तथा समस्या वाले व्यक्ति के मध्य सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

५. निर्देशन को व्यक्ति के लिए शैशवावस्था से वयस्कता तक सेवा की गति-शील प्रक्रिया समझना चाहिए।

६. निर्देशन सेवा को ऐसे इने-गिने व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं कर देना चाहिए जो उसकी आवश्यकता की स्पष्ट साक्षी देते हों अपितु समस्त अवस्थाओं के ऐसे समस्त व्यक्तियों तक उसका विस्तार करना चाहिए जो उससे स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से लाभ उठा सकें।

७. पाठ्यक्रम की सीमाओं और अध्यापन की कार्यविधियों में निर्देशन का दृष्टिकोण परिलक्षित होना चाहिए।

८. यद्यपि निर्देशन व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक चरण को स्पर्श करता है तथापि निर्देशन के साधारण तथा स्वीकृत क्षेत्रों में उस सीमा तक ध्यान दिया जाता है जहाँ तक व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, उसके घर, स्कूल और व्यावसायिक तथा सामाजिक मांगों और सम्बन्धों के तालमेल में बाधक होते हैं अथवा उस सीमा तक वह ध्यान देता है, जहाँ तक कि इन अनुभव क्षेत्रों की परिस्थितियों से उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होते हैं।

९. माता-पिता और अध्यापकों के निर्देशन-निर्दिष्ट उत्तरदायित्व होते हैं।

१०. निर्देशन सम्बन्धी विशिष्ट समस्याएँ चाहे आयु के किसी भी स्तर पर हों, ऐसे व्यक्तियों को सौंप देनी चाहिएँ जिन्होंने उसी प्रकार के समन्वय के लिए प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

११. व्यक्ति के सम्बन्ध में यथासंभव पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके बुद्धिमानी से निर्देशन का कार्य करने के लिए व्यक्ति के मूल्यांकन और अनुसंधान का कार्यक्रम बनाना चाहिए और निर्देशन कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रगति और सफलता का शुद्ध और संचित रिकार्ड उपलब्ध करना चाहिए। सुनिर्वाचित स्तरी-कृत परीक्षाओं और मूल्यांकन के अन्य साधनों द्वारा उसकी मानसिक क्षमता, कार्य में सफलता, प्रदर्शित अभिरुचियों और अन्य व्यक्तिगत विशेषताओं से सम्बन्धित विशिष्ट तथ्यों को संचित और लिपिबद्ध करके निर्देशन के लिए उनका उपयोग करना चाहिए।

१२. संगठित निर्देशन कार्यक्रम व्यक्ति और समुदाय की आवश्यकताओं के अनुसार लचीला होना चाहिए।

१३. निर्देशन के कार्यक्रम के प्रशासन का दायित्व निर्देशन में ऐसे व्यक्तिगत रूप से योग्यता प्राप्त और पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित अध्यक्ष या मुखिया पर छोड़ देना चाहिए जो अपने सहकारियों और अन्य सामुदायिक कल्याण तथा निर्देशन अभिकरणों के साथ मिल कर कार्य करता हो।

१४. स्कूल के निर्देशन सम्बन्धी वर्तमान कार्यक्रम की समय-समय पर जानकारी देते रहना चाहिए। इसके कार्य की सफलता उन परिणामों पर निर्भर होनी चाहिए जो इस कार्यक्रम के प्रति समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों—निर्देशकों और निर्देशितों—के रवैयों और उन व्यक्तियों के व्यवहारों से परिलक्षित होते हैं जिनकी उसने सेवा की है।

निर्देशन के सिद्धान्तों का प्रयोग निर्देशन में बुद्धिमत्ता एवं अनुभवपूर्ण नेतृत्व अत्यंत महत्त्व रखता है। बहुधा कहा जाता है कि "जैसा आचार्य होता है, वैसा विद्यालय होता है।" संगठित निर्देशन कार्यक्रम पर भी यह बात इतनी ही लागू होती है। संगठन की पूर्णता; उपकरणों की विशालता; रिकार्डों की बहुतायत; निर्देशन प्रपत्र और प्रतिवेदन और निर्देशन कर्मचारियों का विशेष प्रशिक्षण—ये सब मिलकर भी सफल निर्देशन के सम्पूर्ण कार्यक्रम का निर्माण नहीं करते। इन बातों का विशेष महत्त्व होते हुए भी निर्देशन का मूल उस भावना में निहित है जिससे सेवाएँ की जाती हैं—प्रयत्न की सहकारिता और उद्देश्य की लगन उन समस्त व्यक्तियों को प्रेरित करती है जो निर्देशन कार्य में भाग लेते हैं। इनमें प्रशासकों, अध्यापकों और विशेषज्ञों के साथ-साथ व्यक्तिगत सहायता और परामर्श प्राप्त करने वाले भी सम्मिलित हैं।

निर्देशन कर्मचारी, निर्देशन के वांछनीय परिणाम तब तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक कि वे सम्पूर्ण व्यक्ति पर उस रूप में विचार नहीं करते जिसमें कि वह वातावरण-जन्य समस्त परिस्थितियों से प्रभावित होता है। अब तक परामर्शदाता नवयुवकों को शैक्षिक रूप से और कुछ कम मात्रा में व्यावसायिक रूप से सहायता देने में अपेक्षाकृत सक्रिय और सफल रहे हैं। किन्तु घर और समाज के साथ श्रेष्ठ तालमेल बिठाने के लिए निर्देशन देने की दिशा में बहुत कम कार्य किया गया है। उन स्कूलों में भी यही स्थिति है जहाँ निर्देशन सेवाओं का संगठन वर्तमान दशाओं और आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर किया गया है।

निर्देशन सेवाओं के स्कूल कार्यक्रम के संचालन में मूल सिद्धान्तों का बुद्धिमत्ता-पूर्ण प्रयोग केवल उन युवकों अथवा वयस्कों के लिए ही मूल्यवान नहीं होता जिनके लाभ के लिए वह किया जाता है, अपितु उनके माता-पिता, स्कूल के कर्मचारियों और समस्त समुदाय के लिए भी लाभदायक होता है। इस तथ्य को न तो वे सरकारी नेता सदैव स्वीकार करते हैं जो शैक्षिक उद्देश्यों के लिए धन की व्यवस्था करते हैं और न स्कूल के प्रशासक जो बजट का निर्माण करते हैं। संभव है कि कुछ निहित

स्वार्थ उपलब्ध निधि के बुद्धिमत्तापूर्ण वितरण में हस्तक्षेप करें। अधिकाधिक व्यावसायिक तथा अन्य नेतागण स्कूल समुदाय के लिए प्रभावशाली निर्देशन सेवाओं का मूल्य समझने लगे हैं। तो भी बहुधा उपलब्ध निर्देशन सेवाएँ अपर्याप्त होती हैं क्योंकि शिक्षा के इतने अधिक रूप हैं जिनके लिए आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती है।

मौलिक प्रस्थापनाएँ

स्कूल के विविध स्तरों पर प्रयुक्त होने वाली निर्देशन सेवाओं के व्यापक संगठन और प्रयोग तथा विशेष कार्यविधियों के विषय में आगामी अध्यायों में विचार किया जाएगा। यहाँ हम कुछ मौलिक धारणाओं पर विचार करेंगे।

निर्देशन कार्यक्रम के प्रति रवैया स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम में स्कूल निकाय की समन्वित सेवाएँ होती हैं जिनमें प्रशासक, अध्यापक, व्यावसायिक निर्देशन कार्यकर्त्ता तथा स्कूल के अन्य कर्मचारी सम्मिलित होते हैं जिनका समुचित सामुदायिक अभिकरणों से सहयोग रहता है। समस्त सेवाओं का लक्ष्य व्यक्ति और समूह के कल्याण को प्रोत्साहित करना है।

स्कूल निर्देशन कार्यक्रम की अपेक्षाकृत प्रभविष्णुता कुछ अंशों में (१) प्रशासकों द्वारा इसके कार्यों और लक्ष्यों के ज्ञान तथा स्वीकृति, (२) सुप्रशिक्षित अनुभवी और व्यक्तिगत रूप से योग्य निर्देशकों, (३) छात्रों के निर्देशन की आवश्यकताओं की अभिस्वीकृति, और (४) माता-पिता तथा समाज के सहयोग पर निर्भर करती है। यदि स्कूल के कर्मचारी निर्देशन सेवाओं के विकास में पर्याप्त रुचि लें तो किसी भी स्कूल में निर्देशन सेवाओं का पर्याप्त सक्रिय कार्यक्रम स्थापित किया जा सकता है किन्तु प्रशासन द्वारा लादा गया कार्यक्रम यदाकदा ही सफल होता है।

भिन्न-भिन्न स्कूल प्रणालियों और स्कूल स्तरों पर निर्देशन कार्यक्रम भिन्न-भिन्न होते हैं। निर्देशन के अर्थ पर भी स्कूल और समुदाय के नेताओं में मतभेद हैं। जब हम बच्चों, नवयुवकों और वयस्कों के लिए उपलब्ध निर्देशन सहायता की मात्रा और प्रकार का सर्वेक्षण करते हैं तो हम यह देख कर प्रभावित हुए बिना नहीं रहते कि किसी एक क्षेत्र में निर्देशन कार्यक्रम का विशद रूप है तो दूसरे में अत्यन्त अनौपचारिक विषयों को छोड़कर अन्य विषयों का अभाव नहीं है। बड़ी स्कूल प्रणालियों में ऐसे अध्यापक होते हैं जो संगठित निर्देशन के प्रति उदासीनता का रवैया प्रदर्शित करते हैं अथवा उसे पसन्द नहीं करते, तो भी अपने छात्रों के साथ निजी सम्बन्धों में निर्देशन के प्रति प्रशंसनीय रवैया रखते हैं। इन अध्यापकों ने गलत निर्देशन में निहित कुछ ऐसे खतरे देखे हैं जो उस समय होते हैं जब कि स्कूल के प्रबन्धक आदि अथवा अन्य व्यक्ति निर्माण और प्रयोग के उन निहित सिद्धान्तों को समझे बिना निर्देशन सेवाओं को बड़े पैमाने पर संगठित करने का प्रयत्न करते हैं जिन्हें कार्यों के औपचारिक कार्यक्रम की स्थापना में जानने और प्रयोग करने की आवश्यकता है।

स्कूल के निर्देशन की वर्तमान स्थिति बच्चों के अनुचित व्यवहार, युवकों के अपराधपूर्ण कार्यों और वयस्कों की भौतिकतावादी आत्मसंतुष्टि के रवैयों में जो वृद्धि हुई है उसने लोक-भावना को जाग्रत किया है। बहुत से व्यक्ति यह विश्वास करने लगे हैं कि समाजविरोधी रवैयों का ऐसा प्रदर्शन मुख्यतः उस बल का परिणाम है जो अभी पिछले दिनों में अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा शैक्षिक आदर्श के रूप के अनुमोदन पर दिया गया है। उपचार की सर्वश्रेष्ठ रीति के विषय में मतभेद है। कुछ लोगों का मत है कि उस कड़े दंडात्मक अनुशासन को पुनः स्वीकार करने की आवश्यकता है जो पहले किसी समय स्वीकृत था। दूसरा मत है कि निर्देशन और अधिक निर्देशन ही इसका उत्तर है।

लेखकों का दृढ़ मत है कि बच्चों को उत्तरदायित्व संभालने और अधिकारों तथा सुविधाओं की माँग करने की शिक्षा दी जानी चाहिए। यद्यपि हम व्यक्ति के लिए उसके रवैयों और कार्यों के सहानुभूतिपूर्ण और मर्मस्पर्शी निर्देशन के मूल्य को स्वीकार करते हैं, तो भी हम मैथ्यूसन के इस कथन से सहमत हैं :

> किसी भी संक्रान्तिकाल में निर्देशन शिक्षा के समानान्तर और उससे घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित रहते हुए भी एक विशिष्ट प्रक्रिया बना रहेगा। आगे चलकर यदि शिक्षा सामाजिक रूप से दीक्षित व्यक्तिगत विकास पर आज की अपेक्षा अधिक ध्यान देने लगेगी तो शिक्षण में वे गतिविधियाँ सम्मिलित हो जाएँगी जिनका इस बाह्य रूप से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। किन्तु विशिष्टता प्राप्त, व्यक्ति-वादी, परामर्शपूर्ण कार्य के रूप में निर्देशन की प्रक्रिया और उसका कार्यक्रम शिक्षण के संदर्भ में लगभग उसी कार्यकारी स्थिति में रहेंगे जिसमें कि वे आज हैं।*

निर्देशन कार्यक्रम के फलितार्थ यदि कोई व्यक्ति बुद्धिमत्तापूर्ण कल्पित और समुचित रूप से संचालित निर्देशन कार्यक्रम द्वारा पृथक्-पृथक् व्यक्तियों को किसी भी आयु स्तर पर प्राप्त होने वाली सहायता की उपयोगिता से सहमत हो जाता है तो निर्देशन की कार्यविधियों के मूल सिद्धान्तों का निर्माण अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। अधिक कठिन कार्य कार्यक्रम को इस प्रकार संगठित और कार्यान्वित करना है जिससे प्रत्येक सम्बन्धित व्यक्ति अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सके।

जो स्कूल निर्देशन कार्यक्रम का दायित्व संभालता है, उसके लिए फलितार्थों का श्रेष्ठ विवरण तुलसा, ओकलाहोमा के स्कूलों के लिए दिया गया है :

> मोटे रूप में स्कूल निर्देशन कार्यक्रम का सम्बन्ध उस प्रत्येक बच्चे के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य तथा व्यक्तित्व के विकास से है जिसके सम्पर्क में स्कूल होता है। निर्देशन शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया में निहित है। निर्देशन का एक अंतिम लक्ष्य सुगठित व्यक्तित्व है। निर्देशन के कार्यक्रम का सम्बन्ध सस्मत युवकों की समस्याओं से होना चाहिए न कि उनसे जो अनुशासन की समस्याएँ हैं,

*Ibid, पृष्ठ १९८-१९९

कक्षा के कार्य में असफल रहते हैं अथवा तीव्र अनुचित तालमेल के मामले हैं। निर्देशन कार्यक्रम का यह उद्देश्य है कि वह प्रत्येक व्यक्ति को अपनी निजी भावनात्मक आवश्यकताओं और उस समाज की माँगों के मध्य यथासंभव सर्वश्रेष्ठ समन्वय स्थापित करने में सहायता दे, जिसमें कि वह रहता है। अतएव निर्देशन का तात्कालिक उद्देश्य प्रत्येक छात्र को समय-समय पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं का सामना करने और उन्हें सुलझाने के योग्य बनाने में सहायता देना है। समस्त निर्देशन का एक अंतिम लक्ष्य आत्म-निर्देशन है। ऐसे निर्देशन के कार्यक्रम की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि हम प्रत्येक बच्चे की भव्यता और मूल्य में विश्वास रखें तथा उसका सम्मान करें।

स्कूल के प्रत्येक अध्यापक का दायित्व है कि वह लड़के और लड़कियों के निर्देशन में सहायता दे। जो व्यक्ति निर्देशन के कार्यक्रम में भाग लेने का दायित्व संभालता है, उसे प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं और समस्याओं को खोजने में सहायता देनी चाहिए और उसकी समस्याओं का समाधान करने में सहायक होना चाहिए। निर्देशन कार्यक्रम के दो अंग हैं, एक तो प्रत्येक बच्चे को सुस्थापित अथवा अपेक्षित नमूने के अनुकूल तालमेल करने में सहायता देना और दूसरे उस नमूने को इस प्रकार रखना जिससे पृथक्-पृथक् बच्चे की आवश्यकता अधिक अच्छे रूप में पूरी हो सके।

ऊपर दी गई परिभाषा के अनुसार निर्देशन के कार्यक्रम का दायित्व सँभालने से स्कूल के लिए निम्नलिखित फलितार्थ होते हैं :

प्रत्येक बच्चे के लिए

१. ऐसी स्थितियों का निर्माण करना जिनसे प्रत्येक बच्चा सामाजिक रूप से सुरक्षित, असाधारण भय और चिन्ताओं से मुक्त, इस विश्वास में आनन्दित होने की भावना का अधिकतम अवसर प्राप्त कर सके कि उसकी सर्वश्रेष्ठ लब्धियाँ माननीय और स्वीकार्य हैं।
२. सफलता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक बच्चे को अवसर प्रदान करना।
३. उन जानकारियों और रवैयों का विकास करना जो श्रेष्ठ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का निर्माण करते हैं।
४. अपनी योग्यताओं, रुचियों, स्वार्थों और सफलताओं की दृष्टि से स्वयं को समझना।
५. अच्छे सामाजिक व्यवहार—विविध स्थानों और अवसरों के अनुकूल व्यवहार—के प्रति मूल रवैयों का विकास करना।
६. संतुलन, ज्ञान-प्राप्ति की क्षमता का विकास करना और आत्म-निर्देशन में वृद्धि करना।
७. बौद्धिक, सामाजिक और मनोरंजन सम्बन्धी मूल्यों में रुचि का विकास करना।

८. वर्तमान और भावी योजनाओं के सम्बन्ध में निर्णय करने के लिए आवश्यक शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत-सामाजिक जानकारी प्राप्त करना ।
९. ऐसे योग्य और संतोपजनक व्यवसाय का चुनाव करने में सहायता देना जो व्यक्ति की रुचियों और रुझानों के अनुकूल हो ।
१०. समूह के सर्वश्रेष्ठ हितों में आत्मनियंत्रण और अन्य व्यक्तियों के साथ सफलतापूर्वक सहयोग करने के रवैयों और योग्यताओं—सामूहिक कल्याण के लिए व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना के संतुलन का विकास करना ।
११. अपनी तथा अन्य व्यक्तियों की क्षमताओं तथा सीमाओं की स्वीकृति के लिए ज्ञान और सम्पूर्ण सम्मान का विकास करना ।
१२. आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान का विकास करना ।

स्कूल के संगठन और संचालन के लिए

१. स्कूल की कार्यविधियों की अधिकांश अन्य बातों के ऊपर व्यक्ति की व्यक्तित्व सम्बन्धी आवश्यकताओं को स्थान देना ।
२. ऐसे पाठ्यक्रम और कार्यकारी स्थितियों की व्यवस्था करना जिनमें प्रत्येक बच्चा अपनी पूर्ण क्षमता के अनुसार सफलतापूर्वक कार्य कर सके ।
३. छात्रों के सम्बन्ध में ऐसी जानकारी प्रदान करना जो समुचित शैक्षिणक सामग्रियों और अनुभवों का निर्णय करने के लिए आवश्यक है ।
४. उन परिस्थितियों की व्यवस्था करना जिनमें बच्चे नियोजन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और सामूहिक कार्यों को सफलतापूर्वक करते हैं ।
५. ऐसे अध्यापकों की व्यवस्था करना जिनकी कक्षाओं में सद्भावना और सहानुभूतिपूर्ण ज्ञान का वातावरण है ।
६. कक्षा में सफलतापूर्वक परामर्श देने के लिए आवश्यक रवैयों, कुशलताओं और प्रविधियों के विकास में अध्यापकों की सहायतार्थ व्यावसायिक सेवा की व्यवस्था करना ।
७. ऐसी स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था करना जो उन शारीरिक स्थितियों को रोक सकेगी जो गलत तालमेल का कारण होती हैं ।
८. पृथक्-पृथक् बच्चे की आवश्यकताओं, रुझानों और रुचियों को समझने के लिए आवश्यक परीक्षा करने और लेखबद्ध करने के तथ्यों के लिए सामग्रियों की व्यवस्था करना ।
९. जहाँ कहीं आवश्यकता हो वहाँ छात्र के तालमेल में सहायता देने के लिए माता-पिता से परामर्श की व्यवस्था करना ।

१०. उन व्यक्तियों के लिए विशिष्ट सेवाओं की व्यवस्था करना जिनका तालमेल सामूहिक कार्यविधि द्वारा या कक्षा के अध्यापक के व्यक्तिगत प्रयत्नों के द्वारा नहीं किया जा सकता।

११. कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए संगठित सहकारी विधि के हेतु अवसर प्रदान करना।

१२. कर्मचारियों के नियोजन के लिए अवसर प्रदान करना ताकि समान दृष्टिकोण और लक्ष्यों का विकास हो सके।

उपरोक्त फलितार्थों पर कोई वैध आपत्ति नहीं हो सकती। किन्तु जो रहन-सहन का ढंग समझा जा सकता है, उसके विषय में बहुत से प्रश्न पूछे जा सकते हैं। पुनः मैथ्यूसन के शब्दों में निर्देशन कार्यक्रम में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए :

१. निर्देशन कार्य (जिसमें मूल्यांकन, तालमेल, दीक्षा और विकास की प्रक्रिया सम्मिलित है) नर्सरी स्कूल और किंडरगार्टन से कालेज और विश्वविद्यालय के स्तर सहित वयस्क शिक्षा तक और स्कूल के बाहर के युवकों और वयस्कों के लिए भी सामुदायिक सेवाओं सहित चलता रहता है।

२. निर्देशन प्रक्रिया व्यापक होगी; स्कूल के प्रत्येक कार्यक्रम में इसे सम्मिलित कर लिया जायेगा और यह अध्यापकों तथा विशेषज्ञों द्वारा संचालित होगी।

३. निर्देशन कार्यक्रम निश्चयात्मक होगा और जो निश्चित बाह्य रूपों की दिशा में कार्य-विधियों और कार्यों के रूप में जाना जा सकेगा, व्यावसायिक विशेषज्ञों द्वारा यह अत्यन्त गहन रूप में व्यवहृत होता है।

४. सामूहिक कार्यों सहित निर्देशन कार्यक्रम के समस्त अंगों को रीतिबद्ध संगठित कर्मचारी सेवा में समन्वित किया जायेगा जिसके समस्त सम्बन्धित कार्य उन्हीं लक्ष्यों की ओर निर्दिष्ट होंगे।

५. अपने प्रारंभिक लक्ष्य में कार्यक्रम प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं और समस्याओं पर केन्द्रित होगा; यह सामाजिक रूप से दीक्षित आत्म-बोध, विकास और निर्देशन को जन्म देने का यत्न करेगा।*

इन पाँच लक्षणों में से प्रत्येक लक्षण में अनेक फलितार्थ होते हैं जो क्षेत्र में विस्तृत और प्रयोग में सूक्ष्म होते हैं। प्रस्तुत की गई सामग्रियों के प्रकाश में यह संभव है कि पाठक अब यह अनुभव करें कि (१) पथ-प्रदर्शन निर्देश देने की अपेक्षा कुछ अधिक है, (२) परामर्श का प्रारंभ और अन्त आमने-सामने होने वाले एक साक्षात्कार में ही नहीं होता, (३) निर्देशन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन-ढाँचे के प्रत्येक रूप को स्पर्श करती है, और (४) प्रभावशाली कार्य-

क्रम में बहुत-सी गतिविधियाँ होती हैं और बहुत से व्यक्तियों की सेवाएँ इसमें सम्मिलित होती हैं।

स्कूल निर्देशन की धाराएँ

प्रस्तुत की जाने वाली सेवाओं की संख्याओं और विषयों की प्रभविष्णुता में स्कूलों और स्कूल प्रणालियों में अब भी भारी अन्तर है। निर्देशन की कल्पना से अपरिचित उत्साही व्यक्तियों की गलत व्याख्याओं के कारण कुछ शिक्षक और साधारण नेता ऐसे आन्दोलन में सम्मिलित होने में सकुचाते हैं जो उन्हें अपनी पहुँच में ऊपरी और इस प्रकार मूल रूप से निकम्मी प्रतीत होती है।

हम जानते हैं कि व्यक्ति के जीवन में सुनियोजित निर्देशन के मूल्य से अधिकाधिक विचारक परिचित होते जा रहे हैं। अतएव, स्कूल द्वारा संचालित निर्देशन सेवाओं में एकरूपता के वर्तमान अभाव का कारण निम्नलिखित में से एक या अधिक के प्रभाव को माना जा सकता है :

१. निर्देशन की आवश्यकताओं की समाज द्वारा अभिस्वीकृति की सीमा।
२. शिक्षा का वर्तमान दर्शन।
३. निर्देशन की ओर स्कूल के प्रशासकों का रवैया।
४. पाठ्य सामग्री में निपुणता प्राप्त करने की तुलना में छात्रों में अध्यापकों की रुचि की सीमा।
५. प्रशिक्षित निर्देशन कर्मचारियों की उपलब्धता।
६. निर्देशन की सेवाओं के लिए बजट में व्यवस्था।

निर्देशन में बढ़ी हुई रुचि की साक्षी इस पुस्तक को लिखने की तैयारी में लेखकों ने सारे संयुक्त राष्ट्र के स्कूलों और स्कूल प्रणालियों से अनुरोध किया कि वे निर्देशन सेवाओं में परियोजित अथवा सक्रिय कार्यक्रमों से सम्बन्धित जो भी सामग्री उनके पास उपलब्ध हो, उसकी सूचना प्रदान करें। इस अनुरोध का परिणाम अत्यन्त उत्साहवर्द्धक रहा; केवल इसलिए नहीं कि भारी संख्या में उत्तर प्राप्त हुए, अपितु इसलिए भी कि निर्देशन की कल्पना की वास्तविक जानकारी पर आधारित निर्देशन सेवाओं की आवश्यकता और उनके मूल्य को दूर-दूर तक स्वीकार कर लिया गया था।

कुछ उत्तरदाताओं ने सूचित किया कि वे एक कार्यक्रम का उद्घाटन करने की तैयारी कर रहे हैं अथवा वे अपने छात्रों के लिए निर्देशन की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं और वे स्कूल की स्थापित कार्यविधियों के द्वारा उन्हें पूरा करने का प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ स्कूल-प्रणालियों से निर्देशन सेवाओं का विस्तृत विवरण प्राप्त हुआ जिनमें समस्त शैक्षिक स्तर—नर्सरी या किंडरगार्टन स्कूल से जूनियर कालेज तक—सम्मिलित थे। अधिकाधिक स्कूल समुदायों में, माध्यमिक स्कूलों में विशिष्ट निर्देशन सेवाएँ उपलब्ध हैं, किन्तु निम्नतर स्तरों पर अधिकांश में बच्चे के

निर्देशन का दायित्व अध्यापक पर रहता है, आचार्य और समुचित सामाजिक अभिकरण इस कार्य में उसकी सहायता करते हैं।

वे स्कूल और स्कूल प्रणालियाँ जिन्होंने प्रभावशाली कार्यकारी निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ किया है, विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रस्तुत करते हैं। किन्तु जैसी कि आशा की जा सकती है, किसी एक सेवा पर दिये जाने वाला बल भिन्न-भिन्न स्कूलों में भिन्न-भिन्न होता है। स्पष्टतः बल की यह विभिन्नता छात्रों की आवश्यकताओं, प्रशासक के दृष्टिकोण, निकाय के सहयोग, परामर्शदाता के प्रशिक्षण और अनुभव तथा समाज के स्वार्थों की विभिन्नताओं के फलस्वरूप होती है।

स्कूल का निर्देशन कार्यक्रम

यह व्यापक धारणा है कि निर्देशन का सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक रूप से होना चाहिए। यह सम्बन्ध किस सीमा तक क्रियान्वित किया जाय, यह विशद रूप से निश्चित नहीं किया जा सकता।

शिशु कल्याण के लिए स्कूल का दायित्व जब स्कूल जरूरतमंद छात्रों को दूध और गर्म भोजन तथा कपड़े देने लगा तो एक शैक्षिक व्यंगकार ने इस आशय की टिप्पणी की कि पहले हमने उनको 'सीखा', फिर हमने उनका पेट भरा और फिर हमने उन्हें कपड़े पहिनाये और अंत में माता-पिता का उत्तरदायित्व उनका पालन करने तक रह जायेगा। व्यंगकार कुछ भी कहें, किन्तु ऐसे माध्यम के रूप में शिक्षा की विकसित होती हुई कल्पना ने स्कूल के कार्य को विस्तृत और घना रूप दिया है, जिसमें व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक चरण में रचनात्मक परिवर्तनों को आकृष्ट किया जा सकता है और किया जाना चाहिए।

समस्त नागरिकों के व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए निर्मित सामाजिक अभिकरण के रूप में औपचारिक या स्कूल शिक्षा की संस्था अपने सेवा कार्यों के क्षेत्र का विस्तार कर रही है। निस्संदेह इसका प्रारंभिक कार्य प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं, अभावों, माँगों और इच्छाओं को सामाजिक रूप से स्वीकार्य रीति से पूरा करने के लिए उसे ज्ञान, चातुर्य, निपुणता और शक्ति प्राप्त करने में बचपन से ही अवसर प्रदान करना है।

व्यक्ति का अधिकांश अध्ययन कक्षा में होता है। यदि अध्यापन-अध्ययन प्रक्रिया को प्रत्येक छात्र की शिक्षा सम्बन्धी निर्धारित आवश्यकताओं को पूरा करना है तो अन्य प्रशिक्षित कर्मचारियों की सेवाओं की आवश्यकता होगी—ऐसे कर्मचारियों की जो कक्षा के बाहर कार्य करते हैं किन्तु कक्षा के अध्यापक से निकट का सहयोग बनाये रखते हैं। स्कूली शिक्षा की आधुनिक कल्पना में ऐसे बहुत से परस्पर जुड़े हुए कार्य होते हैं जिनसे स्कूल की निर्देशन सेवा का निर्माण होता है।

निर्देशन की आवश्यकताओं का क्षेत्र छात्रों को किस प्रकार की और कितनी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता की आवश्यकता होती है यह विकासशील स्तरों और स्कूल के धरातल के अनुसार कुछ-कुछ भिन्न-भिन्न होती है। फिर भी निर्देशन के

कुछ रूप निरन्तर कार्य करते रहते हैं। एक धरातल से दूसरे धरातल पर विशिष्ट विधियों में अन्तर हो सकता है; कुछ समन्वय क्षेत्रों में एक स्तर पर दूसरे स्तरों की अपेक्षा सहायता की अधिक आवश्यकता हो सकती है। संक्षेप में, प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर में और घर के बाहर उसके साथियों के सम्बन्ध में वांछनीय रवैयों और व्यवहार की रीतियों का विकास करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

सफाई और स्वास्थ्य संरक्षक स्वभाव बचपन से ही डालने की आवश्यकता है। विलम्बित लक्ष्यों पर ध्यान दिये बिना केवल कार्य के लिए ही कार्य करना एक प्रमुख मानवीय आवश्यकता है। अतएव बच्चे का "खेल" नवयुवकों और वयस्कों के लिए अवकाशकालीन या मनोरंजन का कार्य बन जाता है। स्वस्थ और संतोषप्रद "खेल" के जीवन का विकास निर्माणकारी वर्षों में निर्देशन की कुशलता पर निर्भर करता है। औपचारिक शिक्षा के आरम्भ से लेकर अन्त तक विद्यार्थी को अपने स्कूल के अध्ययन कार्य में सहायता प्राप्त होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त एक शिशु, नवयुवक या वयस्क के रूप में उसे यह प्रदर्शित करने में सहायता मिलनी चाहिए कि वह एक नागरिक के रूप में अपने दायित्व को जानता और समझता है। उसे यह जानने की आवश्यकता है कि घर और विदेश के अन्य लोगों के सँदर्भ में उसके दायित्व क्या हैं।

नवयुवकावस्था की प्राप्ति के साथ उस व्यक्ति के जीवन में निर्देशन सम्बन्धी अन्य आवश्यकताएँ उत्पन्न होती हैं जो आगे आने वाले नवयुवक और वयस्ककालीन उत्तरदायित्वों के साथ वांछनीय तालमेल करना चाहता है। हाई स्कूल के छात्र और उच्चतर संस्था में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के लिए विवाह और पारिवारिक जीवन के लिए तैयारी तथा किसी व्यवसाय का चुनाव करके उसके लिए तैयारी करना अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय बन जाते हैं। अंत में जब वयस्क धीरे-धीरे अपने तथा दूसरों के कल्याण के लिए व्यक्तिगत उत्तरदायित्व ग्रहण करता है तो उसके सम्मुख तालमेल की समस्याएँ उपस्थित हो सकती हैं जिनके समाधान के लिए उसे अनुभवी अथवा विशेष रूप से प्रशिक्षित परामर्शदाताओं की सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

निर्देशन की व्यवस्थाएं व्यक्ति की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताएं चाहे कुछ भी हों, यह समाज के हित में है कि उसके लिए ऐसे व्यक्ति की सेवाएँ उपलब्ध की जायें जो उसकी कठिनाई में सहायता करने के लिए विशेष रूप से योग्य हो। निर्देशन कर्मचारियों का एक प्रमुख कार्य सामूहिक स्थितियों में अथवा व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा परामर्श देना है। साथ ही, निर्देशन के ऐसे अनेक चरण हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से क्रियान्वित होते हैं। इसके अतिरिक्त माता-पिता और समाज के अन्य सदस्यों के अलावा स्कूल का प्रत्येक कर्मचारी निर्देशन-निर्दिष्ट दायित्वों को किसी न किसी मात्रा में ग्रहण करता है।

८. अनुभव के किसी क्षेत्र का चुनाव करके उन रीतियों का उल्लेख कीजिए जिनके द्वारा उनमें निहित तीन परिस्थितियों से किसी व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को क्षति पहुँच सकती है।
९. उदाहरण देकर बताइए कि प्रत्यक्ष रूप से सुसमन्वित व्यक्ति के लिए निर्देशन सेवाएं क्या कर सकती हैं?
१०. ऐसे अध्यापक का उदाहरण दीजिए जो संगठित निर्देशन को व्यर्थ समझता है।
११. अनुभव के एक क्षेत्र से सम्बन्धित भावनात्मक बाधाएँ किस प्रकार दूसरे क्षेत्रों को प्रभावित करती हैं? उदाहरण दीजिए।
१२. व्यावसायिक निर्देशन और पथ-प्रदर्शन सेवाओं के अन्य अंगों में क्या सम्बन्ध है? समझा कर बताइए।
१३. वे रीतियां बताइए जिनमें गलत पथ-प्रदर्शन व्यक्ति के आत्म-बोध, आत्म-निश्चय और आत्म-निर्देशन के विकास में हस्तक्षेप कर सकता है।

५ निर्देशन का संगठन और संचालन

निर्देशन सेवाओं का निश्चित संगठनात्मक रूप प्रस्तुत करना और यह कहना कि यह ऐसा है असंभव और अबुद्धिमत्तापूर्ण कार्य होगा। इसके अतिरिक्त किसी प्रस्तावित योजना में परिवर्तन करने की अनुमति न देकर उस कार्यक्रम को क्रियान्वित करना उचित भी नहीं है। निर्देशन के सफल कार्यक्रम का संगठन लचीला होना चाहिए और उसके संचालन में समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों का सहकार होना चाहिए।

सामान्य विचारणीय बातें

किसी संस्था या स्कूल समुदाय में जिस प्रकार निर्देशन सेवाएँ संगठित और संचालित की जाती हैं, उसके मूल में कुछ ये बातें होती हैं—स्कूल का स्तर, व्यक्ति की आवश्यकताएँ और समाज के स्वार्थ, स्कूल का आकार, निकाय का रवैया और बजट में व्यवस्थाएँ।

निर्देशन सेवाओं का रूपनिर्माण जिस सीमा तक निश्चित रूप या नमूने के अनुसार निर्देशन कार्यक्रम का संगठन किया जाता है और जिस सीमा तक विभिन्न प्रकार की सेवाएँ विशेष रूप से नियुक्त कर्मचारियों द्वारा की जाती हैं, उनमें स्कूलों में मतभेद है। कार्यविधियाँ लगभग सम्पूर्ण विकेन्द्रीयकरण अथवा केन्द्रीयकरण के अभाव से—जिसमें निकाय के प्रत्येक सदस्य को 'कुशल परामर्शदाता' मान लिया जाता है—प्रारम्भ होकर कठोरता से स्थापित सत्ता के ऐसे केन्द्रीयकरण तक चलती हैं जिसमें किसी को भी अपने विशिष्ट क्षेत्र से बाहर कार्य करने की अनुमति नहीं होती। चूँकि स्कूल अपने छात्रों की तत्कालीन और दूरवर्ती आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न कर रहे हैं, इसलिए बहुत से स्कूल संगठन के ऐसे रूप के मूल्य को स्वीकार कर रहे हैं जिसमें प्रत्येक की कमियों को यथासंभव दूर करके विकेन्द्रित और केन्द्रित दोनों नमूनों के लाभों को सम्मिलित किया गया हो।

विकेन्द्रित सेवाएं संगठन का विकेन्द्रित रूप निर्देशन सेवाओं का दायित्व लगभग पूर्ण रूप से स्कूल के अध्यापकों पर ही डाल देता है। इस योजना के आधीन निर्देशन अपेक्षाकृत अनौपचारिक हो जाता है और अध्यापकों के निर्देशन सम्बन्धी प्रयत्नों में कोई तालमेल नहीं होता, और यदि होता भी है तो बहुत कम। निर्देशन में रुचि रखने वाले अध्यापक अपने छात्रों को श्रेष्ठ और सामयिक सहायता दे सकते हैं; अन्य अध्यापक जो छात्रों के कल्याण की अपेक्षा अपने पाठ्य-विषयों से अधिक सम्बन्ध रखते हैं, निर्देशन के रूप में बहुत कम कार्य कर सकते हैं।

नवयुवक यह जल्दी ही समझने लगते हैं कि उनकी कठिनाई के समय में वे कौन-से अध्यापकों पर सहायता के लिए निर्भर कर सकते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि निकाय के कुछ ही सदस्य निर्देशन में कुशल समझे जाते हैं जिनके पास आचार्य और साथी अध्यापक अपनी 'समस्याएँ' भेज सकते हैं। ऐसे कुछ स्कूलों में जिनमें इस प्रकार के अनौपचारिक निर्देशन का विकास हुआ है, उन अध्यापकों द्वारा अत्युत्तम कार्य किया गया है जिन्हें नवयुवकों में अपनी रुचि और नेतृत्व के स्वीकृत गुणों के कारण अपने निर्देशन के दायित्वों को भलीभाँति निभाने के लिए विस्तृत अध्ययन के द्वारा स्वयं को तैयार करने के हेतु प्रेरित किया गया है।

सत्ता का केन्द्रीयकरण संगठन के केन्द्रित रूप में कार्यक्रम ऐसे विशेष रूप से प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं के समूह के इर्द-गिर्द घूमता है जिनका दायित्व स्कूल के समस्त कर्मचारियों की निर्देशन सेवाओं में तालमेल करना है। निर्देशन की अधिकांश गतिविधियाँ केन्द्रीय निर्देशन कार्यालय से निकलती हैं अथवा उसके द्वारा होकर आती हैं। परामर्श सम्बन्धी कार्य निर्देशन कर्मचारियों के निर्देशन और निरीक्षण में चुने हुए अध्यापकों द्वारा किये जाते हैं। छात्र का मापदंड और उसका लेखा-जोखा रखना निर्देशन कर्मचारियों का मुख्य उत्तरदायित्व हो जाता है और 'विशेपज्ञों' को निश्चित कर्त्तव्य सौंप दिये जाते हैं।

योजनाओं की तुलना संगठन के प्रत्येक रूप—केन्द्रित और विकेन्द्रित—से लाभ और हानि दोनों ही होते हैं। यदि निर्देशन कार्यक्रम को बहुत अधिक कठोरता और बहुत अधिक विस्तार के साथ संगठित किया जाय तो यह आशंका रहती है कि ढाँचे के द्वारा किये जाने वाले कार्य की अपेक्षा स्वयं ढांचा ही अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। जो समय और शक्ति रिकार्ड, रिपोर्ट, प्रपत्र तथा अन्य प्रकार के लिखा-पढ़ी के कार्यों की विस्तृत तैयारी पर लगते हैं उनका उपयोग छात्रों को वास्तविक परामर्श देकर अधिक अच्छे रूप में किया जा सकता है।

इस तथ्य को चित्रित करते हुए एक बड़े नगर स्कूल के उच्च रूप से संगठित निर्देशन कार्यक्रम के सम्बन्ध में कहा जाता है कि स्कूल में आने वाले आगंतुक परीक्षा कार्यक्रमों की पूर्णता, बहुत-सी रिकार्ड फाइलों और संदर्भ तथा रिपोर्टों के लिए प्रयोग में आने वाले बहुत से मुद्रित प्रपत्र देखकर प्रभावित होते थे। निर्देशन के अध्यक्ष और पूरे समय कार्य करने वाले दस परामर्शदाता बहुत सारे कार्यों में लगे हुए बहुत ही व्यस्त प्रतीत होते थे। उनका कार्यक्रम इतना ओत-प्रोत था कि छात्रों के साथ होने

वाले व्यक्तिगत सम्मेलनों के पश्चात् मुलाकातों की निश्चित सूची चला करती थी। एक बार एक गंभीर दुश्चरित्र के लिए निर्देशन कार्यालय से एक लड़के की शिकायत की गई। साक्षात्कार सूची बहुत भरी हुई होने के कारण इस शिकायत के लगभग तीन सप्ताह पश्चात् का समय लड़के को मुलाकात के लिए दिया गया।

दुर्भाग्य से तीन सप्ताह की अवधि समाप्त होने से पूर्व ही लड़के का निरंतर चलने वाला सामाजिक रूप से अवाँछनीय व्यवहार पुलिस की दृष्टि में आ गया। न्यायालय की कार्यवाही और उसके साथ-साथ चलने वाले समाचार-पत्रों के अवांछनीय प्रचार लड़के के लिए अत्यन्त हानिप्रद ही सिद्ध नहीं हुए अपितु उससे स्कूल की निर्देशन सेवाओं की भी कटु आलोचनाएँ हुईं। वास्तव में, चूँकि इस हाई स्कूल में निर्देशन का कार्यक्रम एक प्रमुख परियोजना थी जिस पर पर्याप्त धन व्यय होता था, अतएव स्कूल प्रशासकों और बाहरी नेताओं ने निर्देशन सेवाओं के केन्द्रीयकृत संगठन के महत्त्व पर संदेह किया। इसी समय, निकाय के सदस्य स्कूल में उस घनिष्ठ रूप से गुँथे हुए निर्देशन विभाग का विरोध करने लगे जो उनकी स्वीकृति के बिना उन पर लाद दिया गया था और जिसने उन अनेक सेवाओं को सर्वाधिकारी के रूप में लेकर संचालन करना प्रारंभ कर दिया था जो पहले उनके अधिकार में थीं। अतएव इस समाज में बहुत वर्षों तक माध्यमिक स्कूल के छात्रों का निर्देशन विकेन्द्रित रूप में चलता रहा।

यह समझा जा सकता है कि इस लड़के का समाज-विरोधी व्यवहार एक विशेष स्थिति का द्योतक था जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता थी; इस समय नियोजित सूचियों और निर्देशन की अन्य गतिविधियों को अलग रखा जा सकता था। यदि स्कूल की निर्देशन सेवाओं का ताना-बाना इतना कठोर न होता तो यह संभव था कि कोई अध्यापक-परामर्शदात्री इस लड़के की स्थिति पर तत्काल ध्यान देती और लड़के के रवैयों तथा कार्यों में परिवर्तन लाने के लिए मैत्रीपूर्ण रीति से वह जो कुछ कर सकती, करती।

यद्यपि कठोर रूप से केन्द्रित सेवाएँ ऊपर वर्णित स्थिति प्रस्तुत कर सकती हैं, तथापि संगठित निर्देशन कार्यक्रम का एक लाभ यह है कि इसमें प्रयत्नों की उतनी आवृत्ति होने की संभावना कम रहती है जितनी कि विकेन्द्रित योजना के अन्तर्गत निर्देशन सेवाओं में रहती है। यदि प्रत्येक अध्यापक और निर्देशन कर्मचारी ने निर्देशन के मुखिया अथवा अध्यक्ष के निरीक्षण में उसे कुछ निश्चित दायित्व सौंप दिये हैं, तो कोई भी व्यक्ति उस विरोधात्मक परामर्श का शिकार नहीं होगा जो अच्छे इरादे वाले किन्तु अपेक्षाकृत अपूर्ण सूचना प्राप्त अध्यापक द्वारा दिया जाता है।

योजनाओं का मिश्रण इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि अत्यधिक प्रभावशाली बनने के लिए निर्देशन कार्यक्रम के संगठन को ऐसी योजना पर चलना चाहिए जो केन्द्रीयकरण और विकेन्द्रीयकरण दोनों के सिरों के मध्य में हो। ऐसी योजना में सेवाओं का संगठन किया जाता है ताकि कार्यक्रम के लक्ष्यों को समस्त निकाय द्वारा

समझा जा सके। कुछ दायित्व विशेषज्ञों को सौंप दिये जाते हैं और कुछ अध्यापकों तथा स्कूल के अन्य कर्मचारियों द्वारा ग्रहण कर लिये जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण मान्यताएँ किसी स्कूल या स्कूल प्रणाली की निर्देशन सेवाओं का संगठन और संचालन समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों के निर्देशन के ज्ञान और उसके प्रति प्रदर्शित रवैयों पर निर्भर करते हैं। जहाँ निर्देशन की आवश्यकता को बहुत कम या बिल्कुल नहीं समझा जाता, वहाँ संगठन के केन्द्रीय रूप को प्राप्त करने के लिए संभवतः कोई प्रयत्न नहीं किया जाएगा और यदि किया भी जाएगा तो कम। छात्रों को दी जाने वाली सहायता आकस्मिक व अनौपचारिक होगी और कुछ अध्यापकों द्वारा स्वेच्छा से दी जाएगी। किन्तु यदि स्कूल के लोग और समाज के नागरिक सहसा यह समझ जाएँ कि निर्देशन शिक्षा का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रूप है तो समाज के नेताओं की सहायता प्राप्त करके स्कूल प्रशासन उत्साह को अच्छे रूप में बढ़ने दे सकता है। आवश्यक धन उपलब्ध हो जाएगा, भवन की सुविधाएँ प्राप्त हो जायेंगी, प्रशिक्षित निर्देशन कर्मचारी जुटा लिये जायेंगे और कार्यक्रम को संगठित करने के लिए किसी निर्देशन विशेषज्ञ को बुला लिया जाएगा। यह संगठन जितना ही स्पष्ट और विशाल होगा उतना ही अधिक वे उत्साही व्यक्ति स्वयं से संतुष्ट होंगे जिन्होंने कार्यक्रम को संभव बनाया है। तब वे अध्यापकों के सम्मुख यह कहते हुए कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे, "देखिए, हमने आपके लिए क्या किया है ? आपकी कठिनाइयाँ समाप्त हो गई हैं। हमारा निर्देशन विभाग सब की देख-भाल करेगा।"

दुर्भाग्य से, इस प्रकार स्थापित और संगठित निर्देशन कार्यक्रम जितनी कठिनाइयाँ सामान्यतः सुलझाते हैं, उससे कहीं अधिक उत्पन्न कर देते हैं। जिन व्यक्तियों से स्कूल के अधीन कार्य करने की आशा की जाती है, उन पर लादी गई स्कूल की किसी भी नीति के सफल होने की संभावना नहीं है। नई सेवा का प्रारम्भ शनैः-शनैः होना चाहिए और उसमें समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों के संयुक्त प्रयत्न आवश्यकता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ होने चाहिए, और उन्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि उस आवश्यकता को कैसे पूरा किया जा सकता है।

निर्देशन सेवाओं का संगठन

हम यह कल्पना करें कि एक स्कूल में किसी भी स्तर पर इस आवश्यकता को अनुभव किया जा रहा है कि निर्देशन सेवाओं के रूप में स्कूल में जो कुछ भी है, उसे एक संगठित योजना के अंतर्गत लाया जाए। यह कैसे किया जाना चाहिए ? कुछ आधारभूत सिद्धान्त और कार्यविधियाँ हैं, जिन पर यह सोचे बिना ध्यान देना चाहिए कि आया संगठन की प्रक्रिया छोटी या बड़ी संस्था में हो रही है, आया वह प्रारम्भिक, माध्यमिक या उच्चतर स्तर पर हो रही है अथवा वह स्थानीय है या नगर-व्यापी।

मूल कल्पनाएँ कार्यक्रम के संगठन से सम्बन्धित कुछ मूल कल्पनाएँ हैं, जिन पर वास्तविक कार्य आरम्भ होने से पूर्व विचार करने की आवश्यकता है। इस

का सम्बन्ध (१) प्राप्य लक्ष्यों, (२) किये जाने वाले कार्यों, (३) दायित्व सौंपने और सत्ता प्रदान करने तथा (४) कार्यक्रम की अन्तिम सफलता का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली प्रविधियों से हैं।

कार्यक्रम के लक्ष्य कोई भी कार्यक्रम जिसकी स्थापना की जाती है, स्पष्ट और निश्चित रूप से निर्मित लक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए। सैद्धान्तिक रूप से, निर्देशन सेवाओं का लक्ष्य समस्त व्यक्तियों की समस्त आवश्यकताओं को पूरा करना है। किन्तु किसी निश्चित कार्यक्रम को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक शिशु, नवयुवक अथवा वयस्क—जिसकी सेवा करनी है—की निर्देशन सम्बन्धी निश्चित आवश्यकताओं का मूल्यांकन कर लेना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभावों—उसकी जातीय, राष्ट्रीय और पारिवारिक पृष्ठभूमि, उसके स्वास्थ्य की स्थिति, उसकी मानसिक क्षमता और भावनात्मक रवैयों, उसकी रुचियों और योजनाओं, उसके आस-पास के वातावरण से उसके सम्बन्ध और उस पर पड़ने वाले वातावरण के प्रभाव पर विचार करने की आवश्यकता है। किसी भी स्कूल की जनसंख्या में इन तत्त्वों के बहुत से भिन्न-भिन्न संयुक्त रूप मिल सकते हैं। वे क्या हैं ? परिस्थितियों का एक या दूसरा संयुक्त रूप किस प्रकार फैला हुआ है ? ये वे प्रश्न हैं जिनके उत्तर उन लोगों को देने चाहिए जो अपने विद्यार्थियों के लिए निर्देशन सेवाओं को संगठित करने की योजना बना रहे हैं। कार्यक्रम के लक्ष्य आवश्यकताओं के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं।

किये जाने वाले कार्य जबकि विशिष्ट लक्ष्य या बाह्य रूप निश्चित कर लिये जाते हैं तो अगला कदम होता है निर्देशन के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किये जाने वाले निश्चित कार्यों का निर्णय करना। किसी विशेष स्कूल समुदाय में या किसी निश्चित अवधि में निर्देशन के बाह्य रूप और उसके फलस्वरूप होने वाले कार्य अपेक्षाकृत अपरिवर्तित प्रतीत हो सकते हैं। किन्तु स्कूल निर्देशन कार्यक्रम का संगठन स्थिर नहीं रह सकता। तीव्र गति से परिवर्तित होने वाले व्यावसायिक अवसर, यातायात की विकसित सुविधाएँ और हमारे देश में विस्थापित परिवारों तथा जीवन की स्थिति में सुधार करने की दृष्टि से आने वाले अन्य लोगों के प्रवेश,—ने मिलकर नगर के एक समाज या भाग से दूसरे समाज या भाग में जनसंख्या को आने जाने के लिए प्रेरित किया है। इसके फलस्वरूप निर्देशन के लक्ष्यों और कार्यों में होने वाले परिवर्तन सम्बन्धित स्कूल या स्कूल प्रणालियों में क्रियान्वित किये जाने चाहिएँ।

निर्देशन के कार्यक्रम के लिए आवश्यक लचीलेपन को चित्रित करने के लिए अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मन शरणार्थियों के प्रवेश और पिछले कुछ समय में बहुत से प्यूरटो रिकान्स (Puerto Ricans) के मुख्य भूमि में आगमन के कारण और अभी बिल्कुल हाल में अपनी मातृभूमि से भाग कर हमारे देश में आने वाले हंगेरियनों ने स्कूल के लोगों द्वारा निर्देशन सेवा की व्यवस्था करने की कुशलता पर भार डाला है। इन सेवाओं की उन क्षेत्रों में आवश्यकता थी जहाँ ये लोग आकर बस गये थे।

उदाहरणार्थ, किसी विशेष स्कूल में जहाँ इस समाज में आकर बसने वाली जनसंख्या के छात्रों की बहुत बड़ी संख्या है, वहाँ निर्देशन का एक उद्देश्य तो यही है कि वह समाज की प्रथाओं और अवसरों से परिचित होने में छात्रों की सहायता करे। स्कूल का यह उत्तरदायित्व है कि वह इन नवयुवकों को अपने नये घर के वातावरण की रीतियों से परिचित कराये। तब निर्देशन कर्मचारियों का कर्त्तव्य यह हो जाता है कि वे इन छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से पूरा करें। अप्रत्यक्ष रूप से पूरा करने के लिए उन्हें अध्यापकों को इस बात के लिए सहायता देनी होगी कि वे नागरिक दायित्वों से सम्बन्धित शैक्षिक व्यवधान को दृष्टि में रख कर अपनी पाठ्यक्रम की सामग्रियाँ निश्चित करें; प्रत्यक्ष रूप से सहायता देने के लिए वे इन छात्रों के लिए समाज में भ्रमण यात्रा का प्रबन्ध कर सकते हैं, कक्षा के बाहर की गतिविधियों में भाग लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं और संसार के अन्य भागों से आने वाले उन छात्रों के लिए—जिन्हें भाषा सम्बन्धी कठिनाई होती है—अंग्रेजी भापा में निपुणता प्राप्त करने में सहायक हो सकते हैं।

दायित्वों का बँटवारा और सत्ता की रेखाएं निर्देशन कार्यक्रम संगठित करने से पूर्व यह महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक कर्मचारी की निर्देशन सम्बन्धी रुचियों और योग्यताओं की खोज की जाय ताकि उनकी व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार उन्हें विशिष्ट कार्य सौंपे जा सकें। साथ ही, सत्ता की निश्चित रेखाएँ स्थापित करनी चाहिएँ ताकि प्रत्येक व्यक्ति यह ठीक-ठीक समझ ले कि उसके और अन्य कर्मचारियों के कर्त्तव्यों में क्या सम्बन्ध है। जब तक इन रेखाओं के सम्बन्धों को पूर्णतया समझ कर इन पर अनुकरण नहीं किया जाएगा, तब तक नवयुवक गलत सूचनाओं और गलत प्रदर्शन के शिकार हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, हाई स्कूल के स्तर पर अध्यापक परामर्शदाताओं अथवा कक्षा परामर्शदाताओं का एक विशेष कर्त्तव्य छात्रों को स्कूल के पाठ्यक्रमों के अनुसार अपनी पाठ्य विधि का कार्यक्रम बनाने में सहायता देना है। छात्र की रुचियों के अनुसार कार्यक्रम बनाते समय यह आवश्यक हो सकता है कि इनमें से किसी नियम को हटाना पड़े। परामर्शदाता को यह अधिकार नहीं है कि वह ऐसा परिवर्तन कर सके। अतएव इस समस्या को डीन या निर्देशन के अध्यक्ष के पास ले जाने की आवश्यकता होती है, जो या तो परिवर्तन करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेता है अथवा यह मामला आचार्य या अधीक्षक के पास भेज देता है।

कार्यक्रम का मूल्यांकन निर्देशन का कार्यक्रम कितनी ही सावधानी और बुद्धिमत्ता से क्यों न बनाया जाय, संभवतः वह पूर्ण नहीं होता। सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तनों, छात्रों की नवीन आवश्यकताओं और नई पद्धतियों या प्रविधियों के कारण निर्देशन में निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं। निर्देशन कर्मचारियों को अपने कार्यक्रम की श्रेष्ठता की मात्रा तक सचेष्ट और उसमें वांछनीय परिवर्तन करने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए।

संगठन से पूर्व के विचार निर्देशन का कार्यक्रम संगठित करने की योजना प्रारम्भ करने से पूर्व कुछ आधारभूत प्रश्न पूछने और उनका उत्तर देने की आव-

श्यकता है। वास्तविक तथ्य प्राप्त करने चाहिए किन्तु "आराम कुर्सी" की प्रविधि से नहीं। तथ्यों को एकत्रित करना एक ऐसा सहकारितापूर्ण कार्य होना चाहिए जिसमें सब अध्यापक भाग लेते हैं।

कुछ प्रमुख विचारणीय बातें निम्नलिखित हैं :

१. छात्रों की किन-किन अनुभव-क्षेत्रों में सेवा करने की आवश्यकता है ?
२. इस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने में कितने मनुष्यों और कितने समय की आवश्यकता होगी ? क्या वे उपलब्ध हैं ?
३. विविध प्रस्तावित सेवाओं को प्रदान करने के लिए कौन-कौन से अध्यापक योग्यता प्राप्त हैं ?
४. कर्मचारियों में कितनी वृद्धि करने की आवश्यकता है ?
५. कर्मचारी किस सीमा तक इस कार्यक्रम में रुचि रखते हैं और इसमें भाग लेने के लिए प्रस्तुत हैं ?
६. क्या स्कूल के आचार्य सहित समस्त कर्मचारी पर्याप्त कार्यक्रम के विकास के लिए अपेक्षित समय और शक्ति लगाने के योग्य हैं और इसके लिए वे प्रस्तुत हैं ?
७. निर्देशन की विविध गतिविधियों को चलाने के लिये क्या भवन में समुचित स्थान उपलब्ध है ?
८. परीक्षा की तथा निर्देशन की अन्य सामग्रियों को क्रय करने के लिए क्या स्कूल बजट में धन की व्यवस्था हो सकेगी ?
९. क्या परिनियोजित कार्यक्रम में माता-पिता रुचि रखते हैं और वे उसमें सहयोग देंगे ?
१०. निर्देशन सेवाओं के विस्तार की दिशा में उच्चतर स्कूल के अधिकारियों और समाज का क्या रवैया है ?
११. अन्य सामुदायिक अभिकरणों के सहयोग को कैसे और किस सीमा तक आकर्षित किया जा सकता है ?
१२. छात्रों को अपने लिए कार्यक्रम का मूल्य समझने की दिशा में किस प्रकार प्रेरित किया जा सकता है और उसकी सेवाओं का उपयोग करने के लिए उन्हें किस प्रकार उत्साहित किया जा सकता है ?

इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर तत्काल नहीं मिल सकते। यदि और जब इस परियोजना के पक्ष में आंशिक उत्तर प्राप्त हों तभी शनैः शनैः ऐसे विस्तार से प्राप्त होने वाले लाभों के सम्बन्ध में समाज, स्कूल के अधिकारी, अध्यापक और छात्रों के शिक्षित होने के साथ-साथ प्रारम्भिक कार्यों का विस्तार किया जाय।

संगठन के प्रकार

स्कूल या स्कूल प्रणाली की योजना समिति द्वारा अंतिम रूप से निर्धारित नर्देशन का प्रकार कुछ आधारभूत तथ्यों पर निर्भर करता है, जो इस प्रकार हैं :

१. स्कूल स्तर
२. स्कूल का आकार
३. उपलब्ध सुविधाएँ

प्रारम्भिक स्कूलों के बच्चों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताएँ हाई स्कूल या कालेज के विद्यार्थियों से भिन्न होती हैं। अतएव विभिन्न स्कूल स्तरों पर छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाये गये कार्यक्रम भिन्न प्रकार से संगठित किये जायेंगे और उनमें आवश्यकतानुसार कम या अधिक निर्देशन कर्मचारियों की सेवाएँ सम्मिलित की जायेंगी। ग्रामीण स्कूल, जिला स्कूल, छोटे नगर के स्कूल और बड़े नगर के स्कूल उपकरणों को प्राप्त करने के लिए उपलब्ध सुविधाओं और धन की दृष्टि से भिन्न-भिन्न होते हैं। निम्नलिखित विचार-विमर्श में संगठनों के विविध विशिष्ट प्रकार प्रस्तुत किये जायेंगे। किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि निर्देशन सेवाओं का संगठन सदैव लचीला और स्कूल तथा समाज की आवश्यकताओं, अभिरुचियों और आर्थिक स्थिति के अनुकूल होना चाहिए।

प्रारम्भिक स्कूल स्तर पर निर्देशन का संगठन प्रारम्भिक स्कूलों में मिलने वाली निर्देशन सेवाओं के संगठन के प्रकार स्कूल के आकार और स्कूल के प्रति समुदाय और स्वयं स्कूल द्वारा प्रदर्शित रवैये के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। एक

चित्र १. लगभग १२५ छात्रों वाले प्रारम्भिक स्कूल में निर्देशन का संगठन
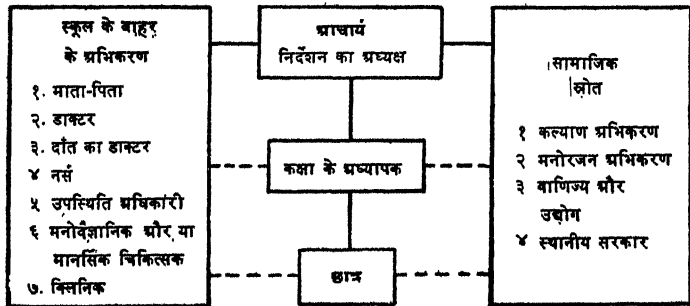
सिरे पर ऐसे स्कूल हैं जहाँ संगठित निर्देशन को कोई मान्यता नहीं दी जाती जबकि दूसरे सिरे पर उपयुक्त और सुप्रशिक्षित निर्देशन कर्मचारियों की सुनियोजित सेवाओं द्वारा समस्त बच्चों के लिए अत्यधिक संगठित निर्देशन के अवसर उपलब्ध किये जाते हैं।

अध्याय ४ में निर्देशन के लक्ष्यों, कार्यों और क्षेत्रों पर विचार किया गया था। औसत आकार के प्रारम्भिक स्कूल में (लगभग १२५ छात्र) इन सेवाओं का संगठन सामान्यतः चित्र १ में प्रदर्शित योजना के अनुसार होता है। निःसंदेह चित्र संख्या १ में सम्मिलित बाहरी अभिकरणों की सेवाओं का उपयोग कोई स्कूल किस

सीमा तक कर सकता है यह उनकी उपलब्धता पर निर्भर करता है। किन्तु माता-पिता या अभिभावक तो सदैव होते ही हैं, उन्हें स्कूल के शिशु कल्याण सम्बन्धी उन दायित्वों में हाथ बंटाना चाहिए जो स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम में निहित होते हैं।

अधिक बड़े प्रारम्भिक स्कूलों में निर्देशन कार्यक्रम के नेतृत्व का भार किसी प्रशिक्षित और व्यक्तिगत रूप से योग्य अध्यापक को आचार्य द्वारा सौंपा जा सकता है, जो निर्देशन समिति का अध्यक्ष होता है। समिति के अन्य सदस्य निर्वाचित अध्यापक होते हैं, जो साधारणतया प्रत्येक श्रेणी से एक-एक होता है। चूँकि विषय-क्षेत्रों के अनुसार अपेक्षाकृत कम प्रारम्भिक स्कूलों का विभागीकरण हुआ है, इसलिए आचार्य के लिए यह कठिन है कि वह मुख्य परामर्शदाता के लिए भी अध्यापन से बचा हुआ समय दे सके। अतएव निर्देशन समिति के सदस्यों द्वारा छात्रों के लिए की जाने वाली सेवाएँ नियमित स्कूल के समय के पूर्व या पश्चात् अध्यापकों के लंच के समय में होती हैं।

प्रारम्भिक स्कूल की निर्देशन की स्थिति बड़े नगरों की स्कूल प्रणाली की अपेक्षा छोटे नगरों के स्कूलों में अधिक अच्छी है। अधिकांश बड़े नगरों के स्कूलों में निर्देशन सेवाएँ सब के द्वारा अथवा निम्नलिखित में से बहुत से व्यक्तियों द्वारा की जाती हैं —

१. पूरे समय या आंशिक समय के आधार पर कार्य करने वाले प्रशिक्षित परामर्शदाता।
२. स्कूल-जिले के निर्देशन का समन्वय करने वाले।
३. पूरे समय या आंशिक समय के उपस्थिति अधिकारी अथवा दौरा करने वाले अध्यापक।
४. उपचारात्मक अध्ययन करने के विशेषज्ञ—पठन, भाषण आदि।
५. मनोवैज्ञानिक, मानसिक रोग चिकित्सक और सामाजिक कार्यकर्त्ता जो साधारणतया स्कूल प्रणाली के केन्द्रीय कार्यालय से सम्बद्ध होते हैं और समय-समय पर पृथक्-पृथक् स्कूलों का दौरा करते हैं।
६. समुचित सामाजिक अभिकरण।

किन्तु अधिकांश प्रारम्भिक स्कूलों में अब भी विद्यार्थियों का निर्देशन करने का उत्तरदायित्व अध्यापकों पर है। उपलब्ध परामर्शदाताओं और अन्य प्रशिक्षित कर्मचारियों की सेवाओं का उद्देश्य अध्यापक के कार्यों की पूर्ति करना है। यह पूर्ति कक्षा की कठिन स्थिति के प्रबन्ध पर अध्यापक परामर्शदाता के मध्य परामर्श, ताल-मेल की गंभीर समस्याओं वाले बच्चों के परीक्षार्थ भेजने और अध्यापन-अध्ययन स्थितियों तथा कक्षा की दशाओं से सम्बन्धित अन्य सेवाओं जैसी गतिविधियों के द्वारा होती है।

माध्यमिक स्कूल स्तर पर निर्देशन का संगठन माध्यमिक स्तर पर प्रारम्भिक स्तर की अपेक्षा निर्देशन सेवाएँ सामान्यतः संगठन का काफी अधिक निश्चित रूप प्रदर्शित करती । स्कूल के भीतर और बाहर दोनों की विस्तृत सेवाएँ संगठन की

जटिलता में वृद्धि करती हैं। इसलिए कार्य और कर्मचारियों के सम्बन्ध में सही-सही रेखा खींच लेनी चाहिए और निःसंदेह सहकारिता योजनाओं के रूप के अतिरिक्त और किसी भी रूप में इसका उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

चित्र २. प्रारम्भिक स्कूल में निर्देशन कार्यक्रम
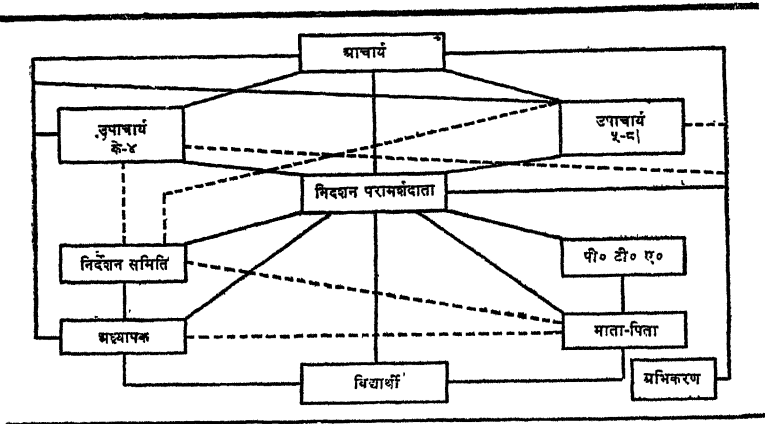
छोटे हाई स्कूलों में निर्देशन जब हम जूनियर और सीनियर हाई स्कूलों या छः-वर्षीय माध्यमिक स्कूलों में निर्देशन की संगठन सम्बन्धी योजनाओं पर विचार करते हैं तो हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हम औसत से बड़े आकार के स्कूलों की चर्चा कर रहे हैं। इस समय, अमेरिका में कम-से-कम ३० प्रतिशत हाई स्कूलों में १०० से भी कम छात्र हैं, और १० प्रतिशत हाई स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या का औसत ५० विद्यार्थियों से भी कम है। इस प्रकार के स्कूलों में निर्देशन सेवाओं का संगठन सरल रूप में किया जाना चाहिए, जिसमें अधिकतर उत्तरदायित्व आचार्य और अध्यापकों पर होना चाहिए।

अब भी ऐसे छोटे समाज हैं जिनके पास केवल एक स्कूल भवन होता है, उनमें प्रथम श्रेणी से बारहवीं श्रेणी तक के स्कूल की आयु के समस्त बच्चे रखे जाते हैं। कुछ दृष्टियों से यह स्थिति आदर्श प्रतीत होती है। निरीक्षण करने वाला आचार्य और उसके अध्यापक समस्त छात्रों और अभिभावकों से भली-भाँति परिचित होते हैं। स्कूल के संचालक आदि प्रत्येक नवयुवक की विकासमय प्रगति पर दृष्टि रख सकते हैं और आवश्यकता के समय उनका अनौपचारिक निर्देशन कर सकते हैं। किन्तु वास्तव में इस प्रकार के छोटे स्कूल में बहुधा लाभ की अपेक्षा हानियाँ अधिक होती हैं। पाठ्यक्रम के विषय सीमित होते हैं और गलत मार्ग पर चलने वाले बच्चों को दूरवर्ती निर्देशन की अपेक्षा दंड भरे अनुशासन में रहना पड़ता है।

चूँकि इन छोटे स्कूलों में वेतन साधारणतया कम होते हैं और उन्नति के अवसर भी थोड़े होते हैं, इसलिए अध्यापकों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है;

जो स्त्री या पुरुष छात्रों के लिए अधिक उपयोगी हो सकते थे वे अधिक लाभदायक शैक्षिक क्षेत्र के लिए कुछ वर्षों के पश्चात् स्कूल छोड़कर चले जाते हैं। इसके अतिरिक्त, माता-पिताओं की महत्त्वाकांक्षाएँ और ईर्ष्या-द्वेष स्कूल के निर्देशन के कार्यक्रमों में हस्तक्षेप कर सकते हैं। अतएव "अकेला पड़ा रहने दो" का निष्क्रिय रवैया चलता

चित्र ३. प्रत्येक सीनियर हाई स्कूल, शेनेक्टेडी, एन० वाई० में निर्देशन सेवाओं का संगठन
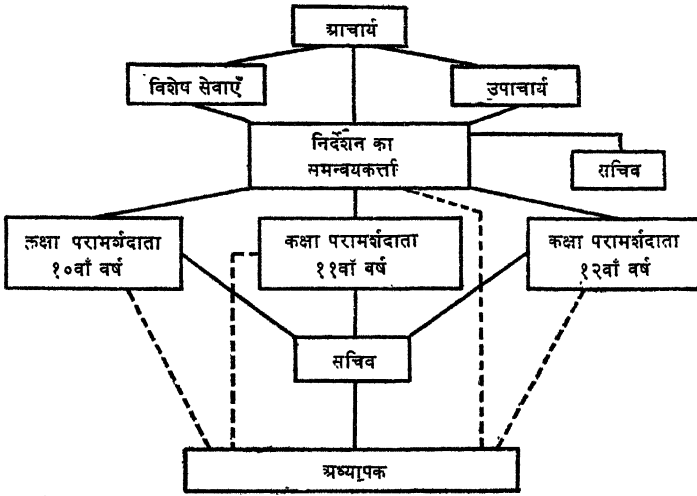
रह सकता है और जब ऐसे स्कूलों के स्नातक कालेज में अपनी शिक्षा जारी रखते हैं या व्यवसाय में प्रवेश करते हैं तो उनके सम्मुख ताल-मेल की अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं।

अधिक बड़े माध्यमिक स्कूलों में निर्देशन का संगठन अधिक बड़े माध्यमिक स्कूलों में केन्द्रित टाउनशिप या जिले के चार-वर्षीय हाई कूल, छोटे नगर के जूनियर और सीनियर हाई स्कूल और बड़े नगर के जूनियर व सीनियर हाई स्कूल सम्मिलित होते हैं। इन माध्यमिक स्कूलों में प्रस्तुत की जाने वाली निर्देशन सेवाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। कुछ सरल होती हैं और कुछ अधिक विस्तृत। चित्र ३ (शेनेक्टेडी, एन० वाई०) और चित्र ४ (ब्रुकलिन, एन० वाई०) की तुलना कीजिए।

सम्पूर्ण स्कूल प्रणाली के निर्देशन का संगठन कुछ नगर या स्कूल मंडल इतने अधिक बड़े होते हैं कि वे स्कूल प्रणाली के समन्वित कार्यक्रम की व्यवस्था कर सकते हैं। समाज की रुचि काफी अधिक होती है ताकि निर्देशन सेवाएँ व्यापक नमूने पर संगठित की जा सकती हैं जिनमें स्वयं स्कूलों और स्कूल से बाहर के निर्देशन अभिकरणों द्वारा दी जाने वाली सहायता सम्मिलित होती है। ये बाहरी अभिकरण या तो

चित्र ४. एक जूनियर हाई स्कूल ब्रुकलिन, एन० वाई० में निर्देशन का संगठन और कार्य
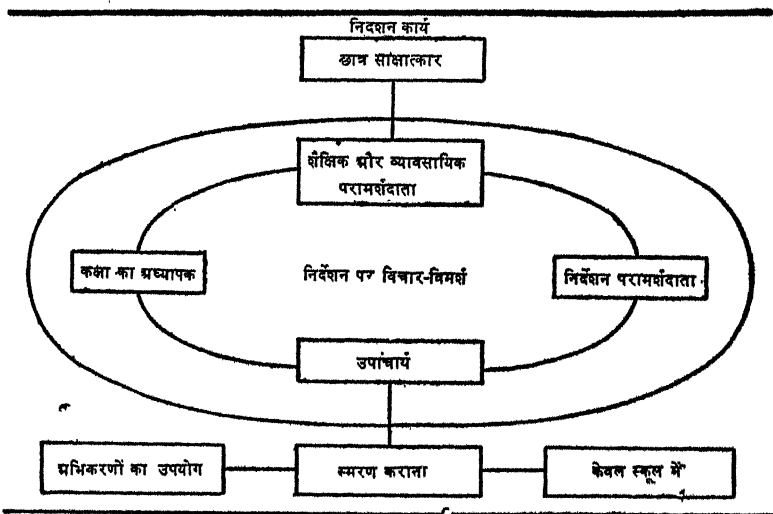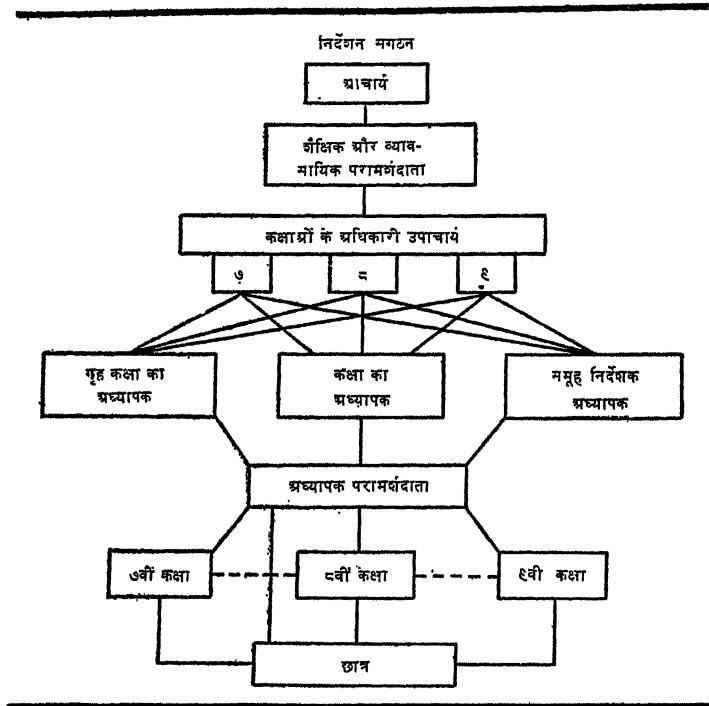
स्कूल प्रणाली के भाग होते हैं अथवा उनसे घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध होते हैं। देश भर में विविध प्रकार के पूर्ण इकाई वाले संगठन देखे जा सकते हैं। सत्ता और कर्मचारियों के दायित्व की रेखाएँ सामान्यतः स्पष्ट रूप से दिखाई जाती हैं, स्कूलों, प्रशासकीय कर्मचारियों और स्कूल से बाहर के अभिकरण में निर्बाध रूप से चलने वाले सहयोग की व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार की व्यवस्था का एक प्रमुख उद्देश्य छात्र की निर्देशन सम्बन्धी समस्त आवश्यकताओं के दायित्व से प्रत्येक अध्यापक को मुक्त करना है।

चित्र ५. निर्देशन सेवाओं, ब्लूमफील्ड, एन० जे० का संगठन सम्बन्धी नक्शा
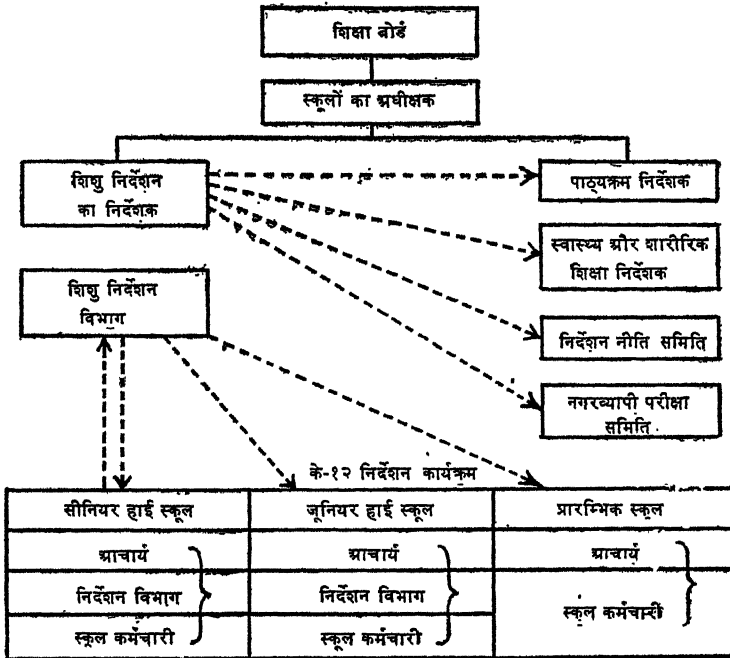
निर्देशन सेवाओं में भाग लेने वाले व्यक्तियों के कर्तव्य और सम्बन्ध भिन्न-भिन्न स्कूल में भिन्न-भिन्न होते हैं। स्कूल प्रणाली के मुख्य कार्यालय में कुछ विशेष सेवाओं का केन्द्रीयकरण करने की दिशा में प्रवृत्ति है। ये केन्द्रीयकृत सेवाएँ समस्त स्तरों के स्कूलों के लिए उपलब्ध की जाती हैं। प्रत्येक स्कूल का सेवाओं का अपना निजी संगठित कार्यक्रम भी होता है। चित्र नं० ५, ६ और ७ की तुलना कीजिए जो

चित्र ६. कैंटन, ओहियो के सार्वजनिक स्कूलों में छात्र-कर्मचारी सेवाओं का संगठन
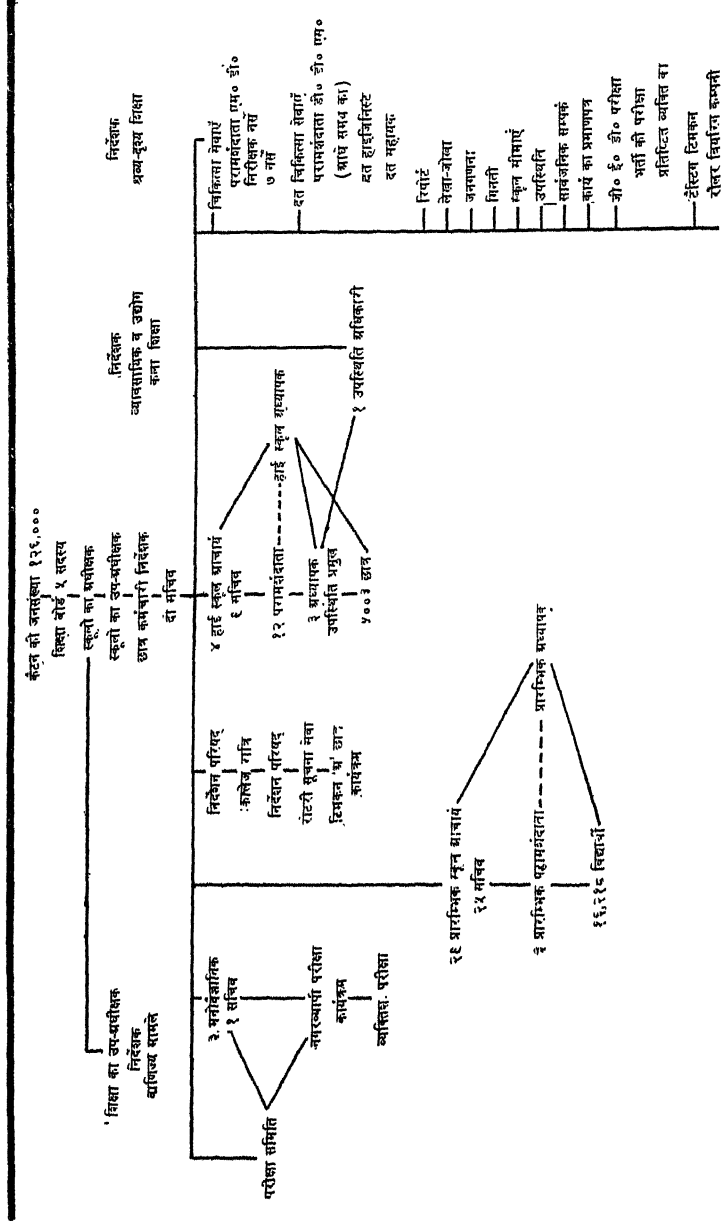
मध्यम आकार के नगरों में समस्त स्कूल प्रणालियों को संगठित निर्देशन सम्बन्धों का दिग्दर्शन कराते हैं।

कालेज स्तर पर निर्देशन का संगठन कालेज स्तर पर निर्देशन और कर्मचारी सेवाएँ उन सेवाओं के विस्तार का प्रतिनिधित्व करती हैं जो निम्नतर स्तर पर की जाती हैं। निर्देशन के कुछ रूप नया बल प्राप्त करते हैं। छात्रों के कार्यक्रम का नियोजन उस कालेज में एक महत्त्वपूर्ण निर्देशन कार्य होता है जिसमें पाठ्यक्रम के विषय भारी संख्या में होते हैं और जहाँ अपेक्षित पाठ्य-विधियों तथा पूर्वापेक्षाओं की बड़ी शृंखला होती है। कालेज के विद्यार्थी के लिए यह बड़ी उलझन पैदा करती हैं। विशेषतः उस समय जबकि उसे निर्वाचित विषयों का चुनाव करना पड़ता है। इस क्षेत्र में मार्गदर्शन देने के लिए निकाय के ऐसे सदस्य उपलब्ध होने चाहिएँ जो समस्त सूचनाओं से सुसज्जित हों।

चित्र ७. निर्देशन और परामर्श विभाग, टकसन, अरीजोना, सार्वजनिक स्कूल
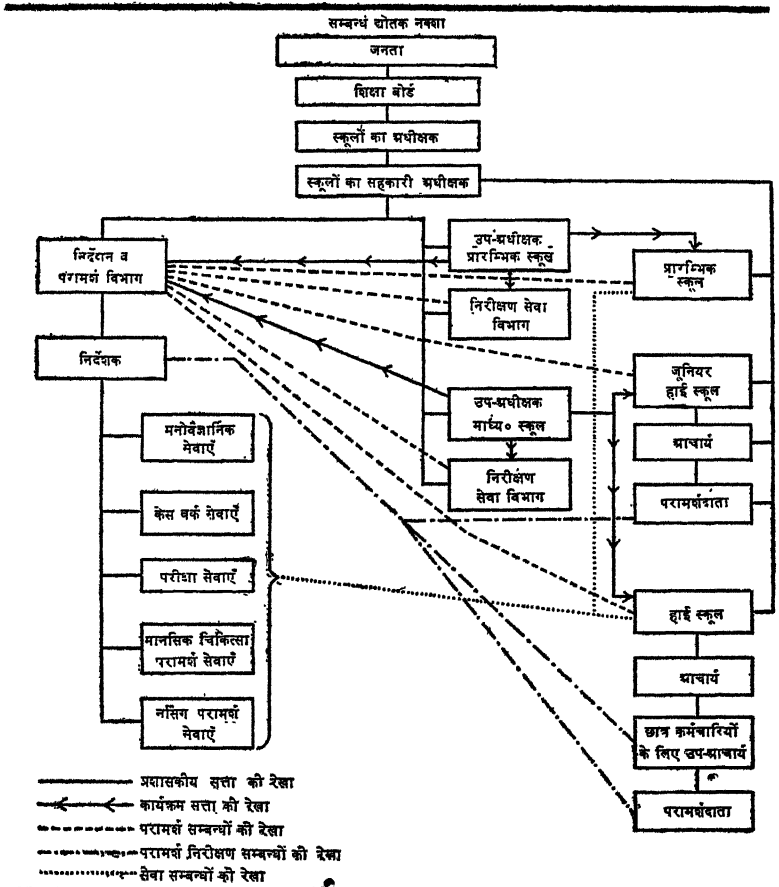
छात्र सरकार, भ्रातृत्व, स्कूल के प्रकाशन और खेलों के कार्यक्रम सहित सामाजिक और मनोरंजन सम्बन्धी गतिविधियों के विस्तृत कार्यक्रम निकाय का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष निर्देशन या निरीक्षण चाहते हैं। कालेज के छात्रों के तालमेल के लिए व्यवसाय का चुनाव और उसके लिए तैयारी महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। जो विद्यार्थी घर से दूर रहते हैं, उनके सम्मुख ऐसी अन्य व्यक्तिगत समस्याएँ उपस्थित हो सकती हैं जिनके लिए विशेषज्ञों द्वारा निर्देशन की आवश्यकता होती है। कालेज स्तर पर निर्देशन या व्यक्तिगत सेवा के कार्यक्रम पर सावधानी से विचार करने और बुद्धिमत्ता से उसे क्रियान्वित करने की आवश्यकता है, तभी कालेज के प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकता अधिकतम सफलता के साथ पूरी की जा सकती है।

वयस्कों के लिए निर्देशन सेवाएँ संगठित करना पुरुषों और स्त्रियों की सहायता करने की दृष्टि से बनाया गया शिक्षा और निर्देशन का कार्यक्रम तालमेल की उन बहुत-सी समस्याओं को सुलझा सकता है जो उनके अनुभव के विविध-क्षेत्रों में उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसे कार्यक्रम निरंतर नियोजित हो रहे हैं। कुछ समुदायों में इस प्रकार की निर्देशन सेवाओं का अभाव है, यदि वे हैं भी तो, बड़े शिथिल ढंग से निर्मित। समय-समय पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं के समाधान के लिए विविध या निजी या सार्वजनिक अभिकरण सुविधाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं। जैसी कि आशा की जा सकती है, इस प्रकार विकसित होने वाले कार्यक्रमों के फलस्वरूप बहुधा अच्छे इरादे से किन्तु अस्त-व्यस्त संगठन बनते हैं।

इस प्रकार के कल्याण समूह इतने प्रकार की भिन्न-भिन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करते हैं कि वे किसी भी क्षेत्र में पर्याप्त सेवा करने में असमर्थ रहते हैं। अतएव विशेषतः, बड़े नगरों में, सुविधाओं को संगठित करने और वांछनीय प्रतीत होने वाली नई सुविधाएँ बढ़ाने की दृष्टि से वयस्कों के लिए उपलब्ध वर्तमान निर्देशन सेवाओं का अध्ययन किया जा रहा है। किसी बड़े नगर की समस्त सार्वजनिक और निजी रूप से संगठित सेवाओं को एक ऐसे संगठन सम्बन्धी नमूने में मिलाना कठिन है जो समुचित पद्धति और कर्मचारियों के सम्बन्ध का संकेत कर सके। सेनडीगो, कैलीफोर्निया, इस प्रकार की परियोजना का पुनर्गठन कर रहा है। वयस्क शिक्षा और निर्देशन नगर के शिक्षा बोर्ड के अधीन कर दिए गए हैं। अध्यापक और निर्देशन कर्मचारी नगर के अन्य अभिकरणों के साथ मिल कर निकट सहकारिता से कार्य कर रहे हैं। संगठन का जो रूप विकसित हुआ है, वह चित्र ८ में दिखाया गया है।

जैसा कि इस चार्ट के अध्ययन से जाना जा सकता है, सेनडीगो में वयस्क शिक्षा और परामर्श का कार्यक्रम वयस्क अनुभव के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश पा रहा है। इस नगर के बहुत से सार्वजनिक और निजी कल्याण तथा निर्देशन संगठन स्कूल के कार्यक्रम के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रखते हैं।*

* देखिये अनुक्रमणिका, प्रारम्भिक से वयस्क स्तर तक निर्देशन की लासएंजिल्स की संगठन सम्बन्धी योजना के लिए।

चित्र ८. सेनडीगो, कैलिफ़, नगर स्कूलों के वयस्क शिक्षा विभाग का परामर्शदाता संगठन
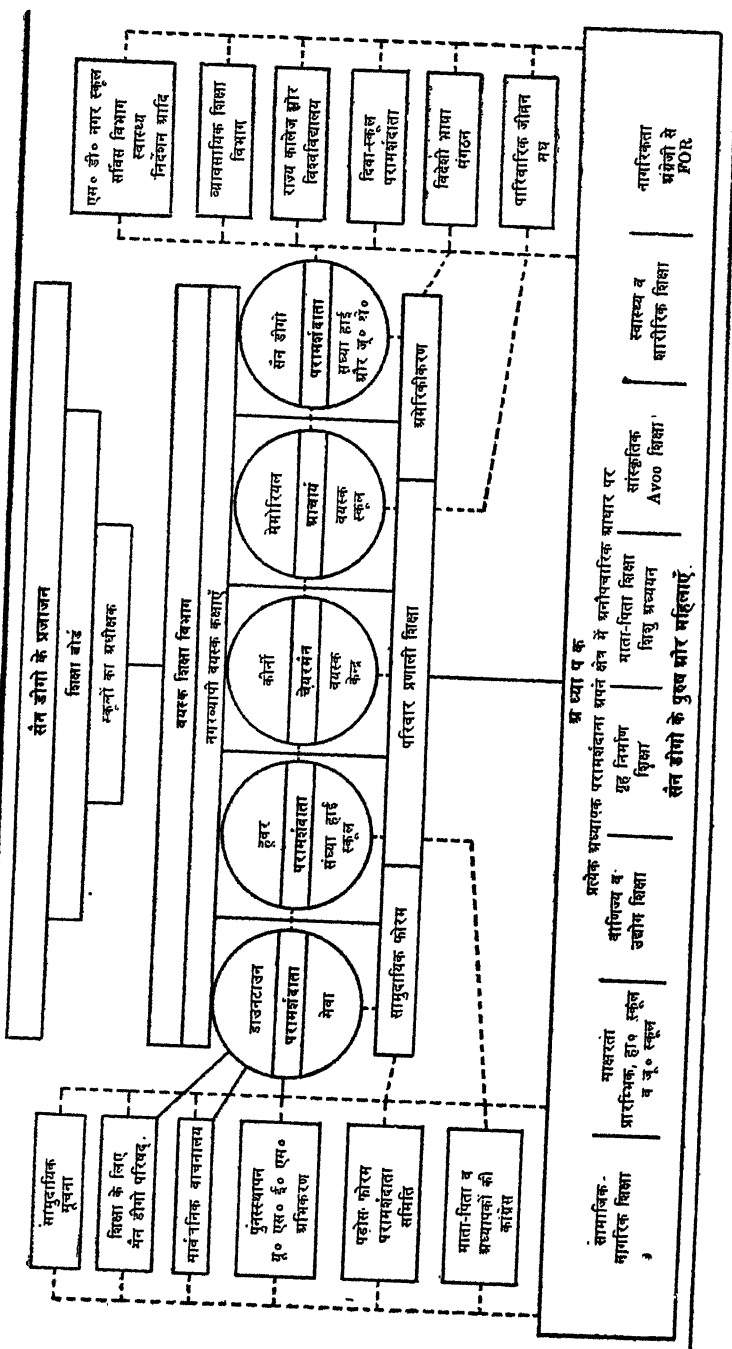
संगठित निर्देशन कार्यक्रम का प्रयोग और संचालन

कुछ सिद्धान्तों को कार्यान्वित करने और कार्यक्रम को इस प्रकार संगठित करने के लिए जिससे कि सेवाओं में न तो विश्रृंखलता आये और न पुनरावृत्ति हो निर्देशन के दृष्टिकोण को स्वीकार कर लेना पर्याप्त नहीं है। निर्देशन के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उसका प्रशासन और संचालन ऐसे सुयोग्य व्यक्तियों द्वारा होना चाहिए जो निर्देशन के विविध कार्यों में रत हों। इसके अतिरिक्त अपने विविध उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए निर्देशन कार्यकर्ताओं के लिए पर्याप्त स्थान, उपकरण और सामग्री की व्यवस्था करनी चाहिए।

निर्देशन कार्यक्रम के आवश्यक तत्त्व निकाय द्वारा छात्र-केन्द्रित सेवाओं को महत्त्व की अभिस्वीकृति ही निर्देशन के लक्ष्यों की सफल प्राप्ति की गारंटी नहीं दे सकती। स्कूल के भीतर और बाहर के कार्य को बहुत से छात्रों में क्रियान्वित करने के लिए निकट सहकारिता और मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।

चित्र ९. छात्र-केन्द्रित निर्देशन, बाल्टीमोर, एम० डी०
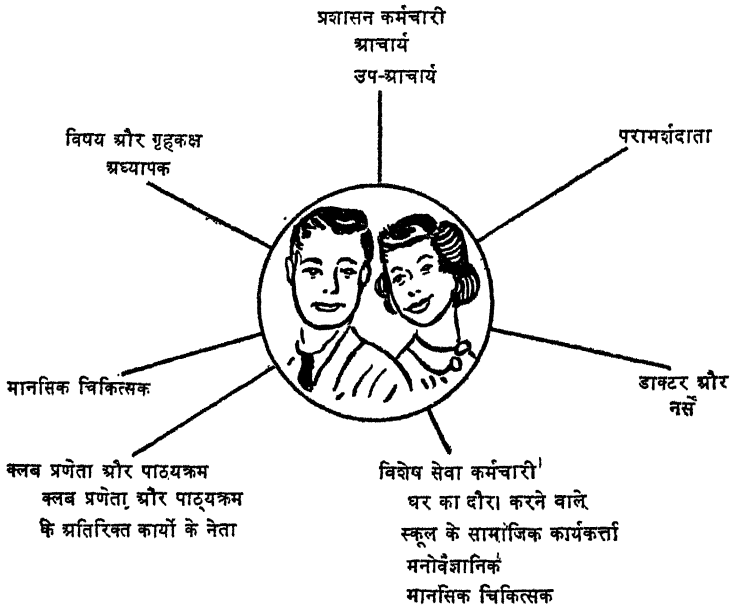
नगरव्यापी या व्यक्तिगत स्कूल निर्देशन के कार्यक्रम के लिए निम्नलिखित की व्यवस्था आवश्यक है :

१. छात्रों की दैनिक परामर्श सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने और एक स्कूल स्तर से दूसरे में प्रगति करने पर संकटपूर्ण स्थिति में उनकी

सहायता करने के लिए पर्याप्त संख्या में पूरे समय के प्रशिक्षित परामर्श-दाताओं की सेवाएँ।

२. सामूहिक निर्देशन का नियोजित कार्यक्रम।

३. स्कूल कर्मचारियों के लाभ के लिए परामर्श सेवाएँ।

४. अनौपचारिक छात्र-अध्ययन और छात्र मूल्यांकन यंत्रों के प्रशासन का गतिशील कार्यक्रम।

५. समुचित शैक्षिक, व्यावसायिक तथा अन्य जानकारी प्राप्त करना और विद्यार्थियों को प्रदान करना।

६. छात्रों का विवरण (उपस्थिति और जनगणना)।

७. अपवाद स्वरूप व्यक्तियों का निर्देशन।

८. शिशु श्रम नियमों के अनुसार पूरे समय की या अंशकालीन नौकरी सेवाएँ।

९. घर और स्कूल में सहयोग।

१०. स्कूल के निर्देशन कार्य से सामाजिक चिकित्सा सम्बन्धी तथा सामुदायिक सेवाओं का मिश्रण।

११. अध्यापकों, परामर्शदाताओं तथा अन्य कर्मचारियों का नौकरी में रहते प्रशिक्षण, जिसका उद्देश्य उन्हें शिक्षा, व्यावसायिक अवसरों और निर्देशन पद्धतियों की धाराओं से परिचित कराना है।

निर्देशन कार्यक्रम के कुछ आवश्यक तत्त्व चार्लोटेसविले, वर्जीनिया के स्कूलों की निर्देशन सेवा की रूपरेखा में दिये गये हैं। सूचना निर्देशक ने उन्हें लेखकों को इस प्रकार बताया है :

१. पृथक्-पृथक् छात्रों के लिए सेवाएँ :

(क) संग्रहणीय लेखा : घर और परिवार, स्कूल श्रेणियाँ, उपस्थिति, स्वास्थ्य लेखा, शैक्षिक अभिरुचियाँ, सफलता, व्यक्तित्व और पाठ्यक्रम के अतिरिक्त गतिविधियाँ।

(ख) सूचनात्मक सेवाएँ : व्यावसायिक, शैक्षिक, संदर्भात्मक अभिकरण।

(ग) परामर्श : अध्यापक, माता-पिता, बच्चा।

(घ) काम दिलाना : कक्षा, उपचारात्मक, अपवादस्वरूप, हटाना।

(ङ) स्मरण करना : स्नातक, बीच में स्कूल छोड़ देने वाले, स्कूल के अंदर।

२. समूहों की सेवाएँ :

(क) प्रवेश से पूर्व की दीक्षा : स्कूल के नियमों के साथ तालमेल।

(ख) प्रवेश के बाद की दीक्षा : अध्यापकों और अन्य सहपाठियों से परिचित होना।

३. अध्यापकों के लिए सेवाएँ :

(क) नौकरी में रहते प्रशिक्षण : निर्देशन सेवाओं के लिए दीक्षा की व्यवस्था करना।

(ख) छात्रों से सम्बन्धित जानकारी : परीक्षा, कार्यक्रम, बुद्धिमानी, सफलता, रुचि और व्यक्तित्व, परीक्षा का अभिप्राय ।

(ग) कक्षा अध्यापक के क्षेत्र के बाहर के भेजे गए व्यक्तिगत मामलों को स्वीकार करना । ये मामले निर्देशन परामर्शदाताओं और बाह्य अभिकरणों को भेजे जाते हैं ।

४. माता-पिताओं के लिए सेवाएँ :

(क) प्रवेश से पूर्व की दीक्षा : स्कूल के अनुभव का अभिप्राय समझने, ऐसी विधियाँ खोजने जिनसे स्कूल और घर परस्पर सहयोग कर सकें, स्कूल-कार्यक्रम की व्याख्या करने और ऐसे तरीके सुझाने के लिए जिनसे माता-पिता सहायता कर सकें, माता-पिता से सम्पर्क करना । यह पी० टी० ए० कार्यक्रम का एक अंश है ।

(ख) व्यक्तिगत परामर्श : माता-पिता, शिशु और अध्यापक से ।

५. प्रशासकों के लिए सेवाएँ :

(क) छात्रों की आवश्यकता को पहचानना : परीक्षा लेने, परामर्श देने, अध्यापकों की सिफारिशों के समस्त चरणों से ।

(ख) पाठ्यक्रम का निर्माण : पाठ्यक्रम के परिवर्तन और परिवर्द्धन में आचार्य और अध्यापकों की सहायता करना ।

(ग) मूल्यांकन : निर्देशन सेवाओं की सफलता का अध्ययन ।

उपरोक्त सेवाओं के अतिरिक्त, हाई स्कूल में अध्यक्ष (Speakers) होते हैं और ऐसी यात्रा का प्रबन्ध किया जाता है जहाँ व्यावसायिक और शैक्षिक जानकारी प्राप्त होती है । सामाजिक अध्ययन की कक्षाओं में व्यावसायिक इकाइयों का शिक्षण दिया जाता है । प्रत्येक विद्यार्थी की समस्या को लेकर अध्यापक सम्मेलन होते हैं ।

प्रारम्भिक स्कूल पी० टी० ए० बच्चों की आवश्यकताओं के समझने के लिए माता-पिता के साथ विशेष अध्ययन समूहों का आयोजन करते हैं ।

सेवाओं का समन्वय सेवाओं के निर्देशन-निर्दिष्ट किसी भी एक क्षेत्र के पद का विश्लेषण करने से विशिष्ट कार्यों की एक लम्बी सूची तैयार हो जायेगी, जिनमें से कुछ कार्य तो ऐसे होंगे जो एक या अधिक क्षेत्रों में प्रवेश करते प्रतीत हो सकते हैं । विविध सेवाओं को पृथक्-पृथक् रखने और साथ ही उनमें तालमेल बिठाने के लिए सावधानीपूर्वक नियोजन करने की आवश्यकता है । समुचित विभागों या व्यक्तियों के लिए विशेष कर्त्तव्यों को निर्धारित करके उन्हें प्रदान करने का दायित्व समस्त स्कूल प्रणाली या पृथक्-पृथक् स्कूल पर है ।

सेवाओं का पूर्ण वितरण नगरव्यापी आधार पर संगठित स्कूल की निर्देशन सेवाएँ (देखिये चित्र ९ पृष्ठ ८० पर) ऐसे केन्द्रीय विभाग द्वारा समन्वित की जा सकती हैं जो पृथक्-पृथक् स्कूलों के सहयोग के साथ मुख्य कार्यालय के बाहर कार्य करती हैं अथवा ऐसी निर्देशन परिषद् यह कार्य कर सकती है जिसके सदस्य अधीक्षक के

कार्यालय के प्रतिनिधि और निर्वाचित विशिष्ट सेवा कार्यकर्त्ता अथवा पृथक्-पृथक् स्कूल के कर्मचारी होते हैं।

परामर्शदाताओं के लिए लिखी गई पुस्तिका में से हम विलमिंगटन, डेलावेर के सार्वजनिक स्कूलों में अपनाई जाने वाली निर्देशन नीतियों और सेवाओं के सम्पूर्ण

चित्र १०. शिशु विकास और विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा कर्मचारियों के विभाग द्वारा प्रस्तुत की गई सेवाएँ। स्कूलों का अधीक्षक, विलमिंगटन डेल०, शिशु विकास और निर्देशन का विभाग।

स्वास्थ्य सेवाएँ	बाह्य बच्चों के लिए सेवाएँ	निर्देशन सेवाएँ
बच्चों और कर्मचारियों की नियमित तथा विशेष शारीरिक परीक्षा। दाँत की परीक्षा और निरोधात्मक विचार। दाँत की चिकित्सा (आवश्यक और एक्सरे)। मुक्तावस्था, टीका और एक्स-रे का कार्यक्रम। स्क्रीनिंग परीक्षा (कान, आँख, खोपड़ी आदि)। नर्सों की सामान्य सेवाएँ। प्राथमिक सहायता। अभिभावकों, पारिवारिक चिकित्सकों या विशेषज्ञों, क्लिनिकों आदि को भेजे जाने वाले बच्चों के विषय में स्मरण दिलाना। स्वास्थ्य कर्मचारियों को नौकरी में रहते प्रशिक्षण।	मनोवैज्ञानिक सेवाएँ। सामाजिक सेवाएँ। अपवादस्वरूप बच्चों की पहचान। अपवादस्वरूप बच्चों के लिए सिफारिश। वाणी में सुधार। भाषण पठन शिक्षण। घर की, अस्पताल की स्थितियों के लिए शिक्षण। मानसिक चिकित्सा सम्बन्धी निदान और चिकित्सा। पृथक्-पृथक् प्रगति कक्षाओं तथा अन्य विशेष कक्षाओं को कार्य देना और उनसे कार्य लेना। अपवादस्वरूप बच्चों के अध्यापकों को नौकरी में रहते प्रशिक्षण प्राप्त करने में सहायता देना। शिशुओं और उनके परिवारों के लिए सामाजिक मामले सम्बन्धी सेवा। स्कूलों और जनता तथा निजी अभिकरणों के सम्पर्क।	मनोवैज्ञानिक परीक्षण रुचि और सफलता का परीक्षण—सामूहिक और व्यक्तिगत (पथ-प्रदर्शन उद्देश्यों के लिए)। व्यावसायिक जानकारी। शिशुओं और अभिभावकों को परामर्श देना (शैक्षणिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत)। बच्चों और अभिभावकों को विशेषज्ञों के पास भेजना। दौरा करने वाले अध्यापकों या घर जाने वाले अधिकारियों की सहायता। केन्द्रीय निर्देशन समिति सेवाएँ। निर्देशन कर्मचारियों के लिए नौकरी में रहते प्रशिक्षण।

संगठन का विवरण केन्द्रीय कर्मचारी इकाई के संचालन के उदाहरणस्वरूप यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं :

> विलमिंगटन के सार्वजनिक स्कूल सहकारिता के आधार पर चलते हैं जो केन्द्रीय कर्मचारियों के नेतृत्व और साधनों के साथ आचार्य और अध्यापकों को स्कूल का नियोजन और संगठन इस प्रकार करने के लिए उत्साहित करते हैं जो विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है। प्रत्येक स्कूल संगठन की आवश्यकताएँ कुछ दृष्टियों से पृथक् होती हैं किन्तु बहुत-सी दृष्टियों से समस्त स्कूल समूहों की आवश्यकताओं के सदृश होती हैं। इसलिए स्कूल और नेताओं तथा केन्द्रीय कर्मचारियों के मध्य होने वाला सहयोग प्रत्येक शैक्षिक इकाई के संचालन में अधिकतम कुशलता की अनुमति देता है।
>
> शिशु विकास और निर्देशन का विभाग केन्द्रीय कर्मचारी इकाई है। इसका उपयोग आचार्यों और अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को सहायता देने के लिए किया जाता है।
>
> प्रत्येक स्कूल आचार्य के पथ-प्रदर्शन में निर्देशन कार्यक्रम चलाता है। एक सामान्य दर्शन और एक-सी निश्चित कार्यविधि है, किन्तु यह प्रत्येक स्कूल का दायित्व है कि वह उस स्कूल की विशिष्टता और उसके छात्रों की आवश्यकता के अनुकूल उसकी व्याख्या करे। संलग्न नक्शा निर्देशन सेवाओं की पूर्ण योजना को निश्चित करता है और विशेष प्रकार की उन अनेक सेवाओं का दिग्दर्शन कराता है जो बच्चों की आवश्यकता पूरी करने में सहायता देने के लिए अध्यापकों तथा अन्य व्यक्तियों के लिए उपलब्ध होती हैं।

लास ऐंजिल्स, कैलीफोर्निया की सार्वजनिक स्कूल प्रणाली में निर्देशन परिषद् तालमेल कराने वाली संस्था है। चित्र ११ उसके सदस्यों की सूची प्रस्तुत करता है। समान्य विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए समय-समय पर परिषद् की बैठक होती है। परिषद् की एक हाल की बैठक के फलस्वरूप "निर्देशन और परामर्श कार्यक्रम की स्थिति" पर एक प्रतिवेदन लास ऐंजिल्स के शिक्षा बोर्ड के सम्मुख प्रस्तुत किया गया था।

केन्द्रीय निर्देशन परिषद् के सियोक्स नगर, इयोवा में अन्य स्कूल और सामुदायिक समूहों से सम्बन्ध का चित्रण चित्र १२ में किया गया है। स्कूलों में प्रत्यक्ष सम्बन्धों (स्पष्ट रेखाओं) से अन्य समुदाय समूहों (टूटी रेखाओं से) की तुलना करके देखिये।

बहुत से समुदायों में पृथक्-पृथक् स्कूल संगठित सेवाएँ प्रस्तुत कर सकते हैं, किन्तु पृथक् स्कूल कार्यक्रमों का कोई केन्द्रित प्रशासन और तालमेल नहीं है, यदि कहीं है भी तो बहुत कम। स्कूल के नेता आवश्यक सेवाओं के बहुत बढ़ते हुए क्षेत्र को पहचानने लगे हैं और उसी के अनुसार योजना बना रहे हैं। यह प्रदर्शित किया जा चुका है कि केन्द्रीय सुविधाओं द्वारा प्रदान की गई सेवाओं से पृथक्-पृथक् स्कूल ही लाभ नहीं उठा सकते अपितु कम धन से अधिक कार्य करना भी संभव हो सकता है। तो

चित्र ११. लास एंजिल्स सिटी स्कूल डिस्ट्रिक्ट : निर्देशन परिषद्
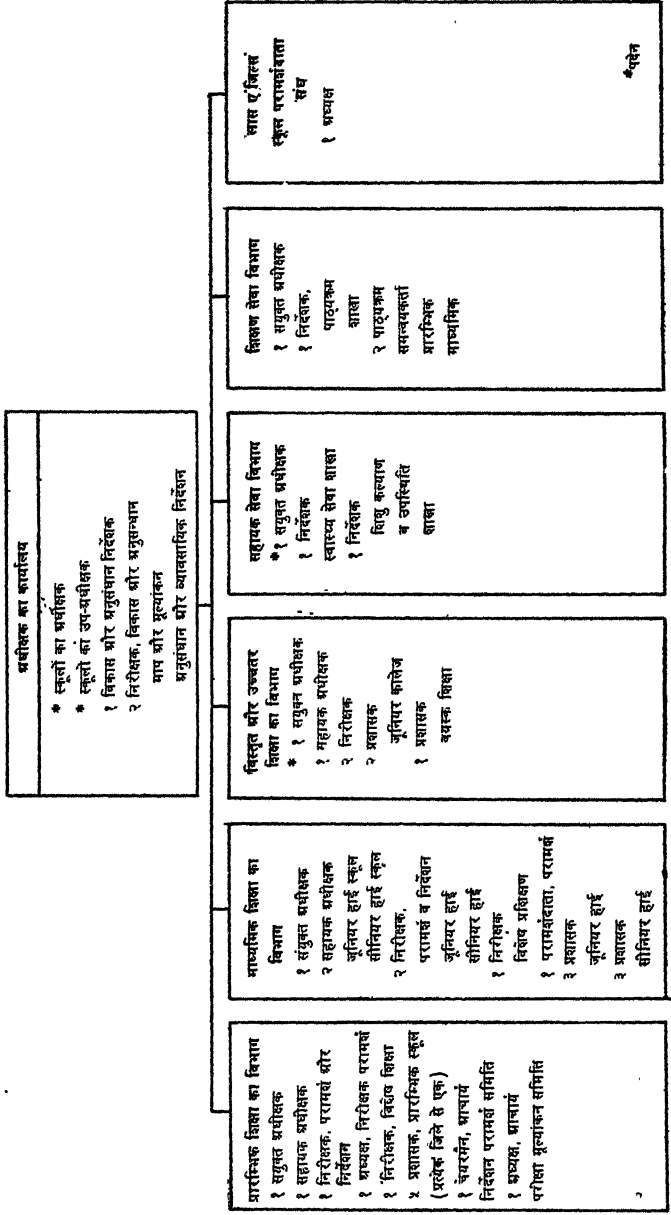
भी केन्द्रीयकरण के कुछ कट्टु विरोधी हैं। उदाहरणार्थ, पूर्वी समुद्र तट पर एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक कस्बे के रूप में एक नगर का प्रारम्भ हुआ। इस क्षेत्र में पड़ोस के विशाल नगर से इतने अधिक परिवार आकर बस गये कि यहाँ पाँच स्कूल समुदायों की स्थापना हो गई जिनमें मूल कस्बे की स्कूली जनसंख्या न्यूनतम है। यह कल्पना की जाती है कि इन पाँचों स्कूल प्रणालियों में घनिष्ठ सहयोग होगा जिसमें मूल कस्बे के स्कूल का उन पर नाममात्र का अधिकार होगा। आजकल विविध स्कूल प्रशासकों और ऐसे नेताओं में जिनकी इस विषय में कोई गति नहीं है, इस बात पर कट्टु विवाद है कि समस्त शैक्षिक विषयों को एक संगठित स्कूल प्रणाली में केन्द्रित कर दिया जाय अथवा प्रत्येक समुदाय एक स्वतन्त्र-सत्ता सम्पन्न शैक्षिक इकाई बन जाय। प्रत्येक समाज में कुछ श्रेष्ठ निर्देशन सेवाओं की व्यवस्था की जाती है, किन्तु उनके सम्बन्धों की विशेषता सहयोग में नहीं स्पर्द्धा में है।

पृथक्-पृथक् स्कूल निकाय समितियाँ कुछ स्कूलों में निर्देशन के लिए अपनाई जाने वाली समिति विधि ने संतोषजनक परिणाम प्रस्तुत किये हैं। इस योजना के अनुसार निकाय के सदस्य अपनी अभिरुचियों के अनुसार समितियों में विभक्त हो जाते हैं। प्रत्येक समिति निर्देशन के विशिष्ट क्षेत्र के लिए उत्तरदायी है। इसके कार्यों में छात्रों से सम्बन्धित आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपलब्ध साधनों के विषय में अनुसन्धान करना और प्राप्त परिणामों को दृष्टि में रख कर सुझाव देना सम्मिलित है। इसका यह उद्देश्य नहीं है कि ये समितियाँ कार्यरत निर्देशन कर्मचारियों का स्थान ग्रहण करें। ये समितियाँ सदैव निर्देशन कर्मचारियों के निकट सहयोग से कार्य करती हैं। कुछ स्कूलों में अनेक निर्देशन कर्मचारी इन समितियों में अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं।

यदि निकाय समितियों के सदस्य अपने दायित्वों को गम्भीरता से ग्रहण करें तो उनका योग अत्यन्त मूल्यवान हो सकता है। परन्तु प्रत्येक अन्य समिति से सहयोग करने और प्रयत्न की आवृत्ति को रोकने के लिए प्रत्येक समिति को सावधान रहना चाहिए। सम्बन्धित समितियाँ केवल परामर्शदाता के रूप में कार्य करती हैं; वे नीति की सिफारिश कर सकती हैं, किन्तु निर्देशन कार्यक्रम के संचालन सम्बन्धी कार्यों या सेवा कर्मचारियों की गतिविधियों पर उनका कोई निरीक्षणात्मक या प्रशासकीय नियन्त्रण नहीं होता।

इन "स्थायी" समितियों की संख्या और इनके कार्यों के विशिष्ट क्षेत्र स्कूल स्तर और सेवाओं की आवश्यकता के अनुसार भिन्न होते हैं। जिन अधिकांश स्कूलों में समिति-प्रणाली अपनायी जाती है, वहाँ की कार्यविधि सामान्यतः निम्नलिखित योजना से मिलती-जुलती होती है :

१. आचार्य अपने सहायकों को लेकर एक निर्देशन परिषद् नियुक्त करता है जिसका वह पदेन सदस्य होता है और जिसमें आचार्य का एक सहायक, एक मुख्य परामर्शदाता और निकाय के कम-से-कम ३ सदस्य सम्मिलित

चित्र १२. केन्द्रीय निर्देशन परिषद् का अन्य स्कूल और सामुदायिक समूहों से सम्बन्ध, सियोक्स नगर, इयोवा
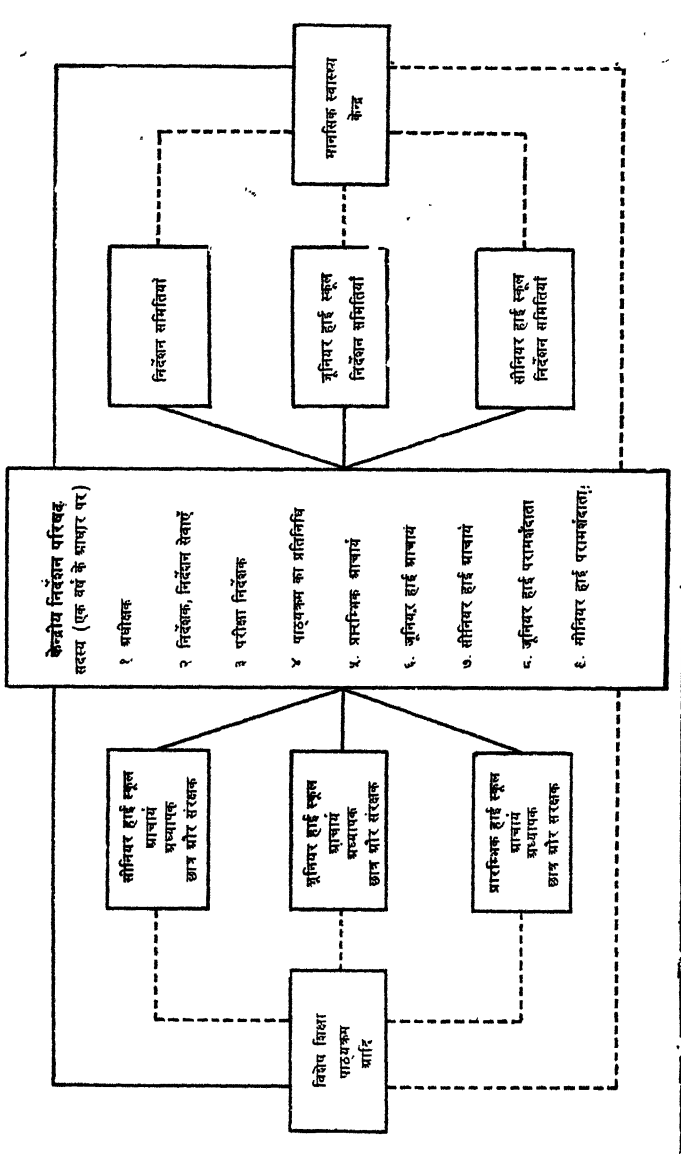
होते हैं जो प्रशिक्षण, अनुभव और रुचि के कारण इस परिषद् की सदस्यता के योग्य होते हैं।

२. परिषद् सेवा के उन विविध रूपों का सर्वेक्षण करती है जो विशेष अध्ययन से लाभान्वित हो सकती है। फिर निकाय के सदस्यों को अपनी रुचि की समितियों में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। स्कूल के स्तर और वर्तमान काल में परिचालित निर्देशन कार्यों की प्रभविष्णुता के अनुसार निम्नलिखित में से सब या कुछ अध्ययन के विशेष क्षेत्र का निर्माण कर सकते हैं :

(क) व्यक्तिगत और समूह प्रशासित मूल्यांकन प्रविधियाँ।

(ख) लेखा रखने, व्याख्या करने और व्यक्तिगत काम की प्रगति पर सूचना का उपयोग करने की पद्धतियों में सुधार।

(ग) छात्रों, अध्यापकों और अभिभावकों के हितों और आवश्यकताओं के सम्बन्ध में जानकारी की व्यवस्था और पुस्तकालय की सुविधाओं का उपयोग।

(घ) छात्रों को अध्ययन सम्बन्धी सुझाव।

(ङ) अध्यापकों द्वारा दिया गया गृह कार्य।

(च) अध्यापक-छात्र और परामर्शदाता-परामर्शपात्र का अनुपात।

(छ) सह-पाठ्यक्रम और पाठ्क्रम के बाहर की गतिविधियाँ।

(ज) सामाजिक स्थिति : सांस्कृतिक नमूने, गृह-निर्माण, मनोरंजन की सुविधाएँ, छात्रों या स्नातकों के लिए स्थानीय कार्य के अवसर, स्वास्थ्य और सुरक्षा व्यवस्था आदि।

(झ) स्कूल-घर-समुदाय के सम्बन्ध।

(ञ) व्यावसायिक प्रशिक्षण, काम दिलाना और स्मरण कराते रह कर कार्य कराना।

(ट) नौकरी में रहते हुए निर्देशन प्रशिक्षण।

यदि प्रत्येक कमेटी का प्रत्येक सदस्य सामूहिक परियोजना की सफलता के लिए अपने दायित्व के अंश को पूरा करता है तो समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों, छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों, परामर्शदाताओं और प्रशासकों के लिए अनुसंधान सम्बन्धी योग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। किन्तु अच्छा कार्य पूरा करने में समय और शक्ति का व्यय होता है। चूँकि समिति का अधिकांश कार्य स्कूल के नियमित समय के पश्चात् होता है, इसलिए निकाय के कुछ सदस्य समिति के अपने दायित्व का निर्वाह करने में असमर्थ अथवा अनिच्छुक रहते हैं। सौभाग्य से अन्य व्यक्ति इतनी अधिक और इस प्रकार की सेवा करते हैं कि वे अपनी कर्त्तव्य सीमा से बहुत आगे निकल जाते हैं।

भौतिक उपकरण

अत्यन्त उच्च कोटि की निर्देशन सेवाएँ निर्देशन में रुचि रखने वाले अध्यापकों और अन्य वयस्कों द्वारा अत्यन्त अनौपचारिक स्थितियों में की जा सकती है। कोने के औषधिगृह में एक या अधिक नवयुवाओं के साथ सोडा पीते हुए, स्कूल के बरामदे में या अपने घर में आराम कुर्सी पर बैठे-बैठे भी निर्देशन सेवाओं में भाग लेना संभव है। इस प्रकार अनौपचारिक रूप से निर्देशन कार्यों में व्यस्त व्यक्तियों को जो कुछ सफलता प्राप्त होती है वह इस तथ्य से जानी जा सकती है कि परामर्शदाताओं के पास ऐसी बहुत अधिक जानकारी एकत्रित हो जाती है जो परामर्शपात्रों के विषय में प्राप्त की गई है। इसके अतिरिक्त ये अनौपचारिक निर्देशन सम्मेलन सामान्यतः इसी प्रकार की गतिविधियों से निर्देशन कार्यालय में उद्भूत होते हैं और इसके पश्चात् भी चलते रहते हैं।

निर्देशन कार्यालय और परामर्श कक्ष निर्देशन और परामर्श के लिए निश्चित किये गये कमरे स्कूल स्तर और स्कूल के आकार के अनुसार भिन्न-भिन्न आकार और भिन्न-भिन्न संख्याओं में होते हैं। सामुदायिक अभिकरणों में निर्देशन कार्य के लिए निर्धारित स्थान स्थानीय आवश्यकताओं और उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार होना चाहिए।

निर्देशन कार्यालय चाहे कितने ही अधिक, कितने ही कम, कितने ही बड़े या कितने ही छोटे क्यों न हों, वे मैत्रीपूर्ण कमरे होने चाहिएँ। उनकी सज्जा यदि साधारण किन्तु आकर्षक हो, डेस्क, मेजें और फाइलों के सिरे व्यवस्थित हों और सामान्य वातावरण शांत, आरामदेह और आनन्ददायक हो तो नवयुवक और वयस्क प्रसन्नतापूर्वक वहाँ आते हैं। जो निर्देशन कर्मचारी वहाँ उनका स्वागत और उनकी सेवा करने के लिए प्रस्तुत हैं उनकी सच्चाई और सहयोग में उन्हें विश्वास होता है।

इस पद का उपयोग करने वाले व्यक्तियों में जिस प्रकार की भावना होती है वह विशेष महत्त्व रखती है। किन्तु ऐसे मामलों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है जो कार्यालय की स्थिति; फर्नीचर के प्रकार और व्यवस्था; रिकार्ड; रिपोर्ट; निर्देशन प्रपत्र और ऐसी सामग्रियों के फाइलिंग उपकरणों की पर्याप्तता; और परीक्षा सामग्रियों, संदर्भ ग्रंथों तथा अन्य निर्देशन साधनों से सम्बन्ध रखते हैं।

कमरे के स्थान का उपयोग जब कि निर्देशन कार्यक्रम की स्थापना की जाती है तो विशेषता प्राप्त निर्देशन सेवाओं को दिये जाने वाले कमरे या कमरों की स्थिति पर सर्वप्रथम ध्यान दिया जाना चाहिए, इस कार्य के लिए निर्धारित कमरा बहुधा अंधेरा और उदासी भरा होता है जो भवन के किसी कोने में छिपा होता है और इसलिए अन्य उपयोगों के लिए अवांछनीय होता है। कक्षा के कमरे उज्ज्वल एवं आनन्ददायक होने चाहिएँ और ऐसे ही निर्देशन कार्यालय होने चाहिएँ; तभी वे छात्रों और अध्यापकों की गतिविधियों के केन्द्र बन सकते हैं (जो कि बनने चाहिएँ)। नवीनतर स्कूलों में जो कमरे निर्देशन के उद्देश्यों के लिए निश्चित किये जाते हैं वे

साधारणतया पहले खंड के मुख्य बरामदे या अन्य प्रशासकीय कार्यालयों के निकट स्थित होते हैं ताकि वहाँ स्कूल के भीतर और बाहर के वे व्यक्ति सरलता से पहुँच सकें जो निर्देशन कार्यों में भाग लेते हैं।

कमरे के स्थान की व्यवस्था के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण हैं। व्यक्तिगत साक्षात्कारों की गोपनीयता रखने के लिए स्थान का इस प्रकार से विभाजन किया जा सकता है कि उसमें अनेक निजी कार्यालय और एक साधारण कार्यालय बन जाये। विशेष सम्मेलन छोटे कमरों में हो सकते हैं और अधिक साधारण मामलों पर केन्द्रीय कार्यालय में कार्यवाही की जा सकती है। किन्तु कमरे की हर प्रकार की व्यवस्था करने में एक गंभीर आपत्ति है; इससे औपचारिकता की भावना आ जाती है जो निजी वातावरण के द्वारा प्राप्त लाभों को व्यर्थ कर सकती है। यदि साक्षात्कार करने वालों की दूसरी पंक्ति के लिए कुर्सियाँ बाहरी कमरे की दीवार के सहारे "शोकाकुल बैठकों" की भाँति लगा दी जाएँ तो इसका प्रभाव बिल्कुल ही नष्ट हो जाता है।

अधिक अच्छा तो यह हो कि निर्देशन का कार्य विशाल अविभक्त कमरों में किया जाय जहाँ परामर्शदाताओं की डेस्कें इस प्रकार से लगी हों जिससे सब के लिए कुछ मात्रा में गोपनीयता प्रारम्भ हो सके। इसके अतिरिक्त, कमरे में एक

चित्र १३. निर्देशन कार्यालय की विभाजित व्यवस्था
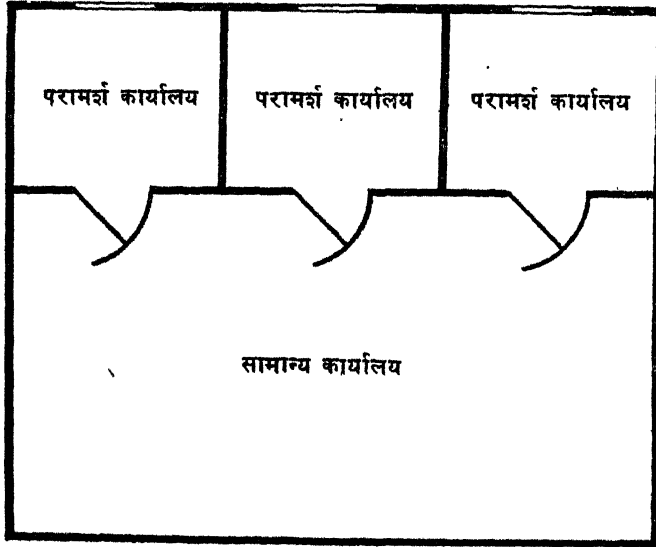
लम्बी वाचनालय की मेज भी रखी जा सकती है जिससे परामर्शदाता से बात करने की प्रतीक्षा में बैठे हुए विद्यार्थी वहाँ बैठ कर पढ़ या अध्ययन कर सकें। यदि इस योजना को स्वीकार कर लिया जाय तो भवन में कहीं भी एक छोटा कार्यालय होना

चाहिए जिसका प्रयोग परामर्शदाता द्वारा ऐसे छात्र या अभिभावक से साक्षात्कार करने के लिए किया जा सकता है जो भावनात्मक दृष्टि से अस्त-व्यस्त हो या जिसकी समस्या अत्यन्त व्यक्तिगत और गंभीर हो।

यदि निर्देशन इकाई में एक या अधिक बड़े कमरे हों तो वे एक दूसरे से सटे होने चाहिएँ और उनके आवागमन का रास्ता बरामदे का प्रयोग किये बिना होना चाहिए। निर्देशन कार्यक्रम की गतिविधियाँ स्थल और उद्देश्य दोनों दृष्टियों से संयुक्त होनी चाहिएँ। यह खेदजनक है कि कुछ पुराने भवनों में जहाँ उनके निर्माण के पश्चात् निर्देशन कार्यक्रम संगठित किया गया था, विविध निर्देशन कर्मचारियों के कार्यालय बहुत दूर-दूर रखे गये हैं।

निर्देशन कार्यालय का फर्नीचर और उपकरण निर्देशन उपकरण के रूप में कम से कम कुछ अनिवार्य फर्नीचर होना चाहिए। यह फर्नीचर है डेस्क, कुर्सियाँ, फाइल की आलमारी, पढ़ने की मेज, काम करने की मेज, किताबों की आलमारी, पत्र-पत्रिका रखने की रैकें, और यदि संभव हो सके तो उस सामग्री को रखने के लिए कक्ष हो जिसकी तत्काल आवश्यकता नहीं पड़ती। यदि कार्यालय में पर्याप्त स्थान उपलब्ध न हो तो तो वे कक्ष भवन के दूसरे भाग में हो सकते हैं।

रिकार्ड कार्डों, खाली प्रपत्रों और दैनिक उपयोग की सामग्रियों की नियमित व्यवस्था के लिए विभिन्न प्रकार और विभिन्न आकार की बहुत-सी फाइल रखने की आलमारियाँ होनी चाहिएँ। फाइल रखने की बहुत-सी भरी हुई आलमारियाँ देखने वाले पर प्रभाव डालती हैं। किन्तु ऐसी फाइलों के रख-रखाव में कागजी काम ही ज्यादा होता है। इन फाइलों की सामग्री निर्देशन में सहायता देती है। रिकार्ड और रिपोर्टें आवश्यक तो हैं, किन्तु उसी सीमा तक जहाँ तक कि वे निर्देशन कार्यों को वास्तव में प्रगति दे सकें।

पुस्तकों के खानों और पत्र-पत्रिका के रैकों में उच्चतर अध्ययन की संस्थाओं से सम्बन्धित आवश्यक और नवीनतम सामग्री, व्यवसायों पर लिखी गई पुस्तकें, और निर्देशन से सम्बन्धित समस्त व्यक्तियों—छात्रों, अभिभावकों, कर्मचारियों और अन्य—की रुचि और लाभ की अन्य मुद्रित तथा हस्तलिखित जानकारी होनी चाहिए। कुछ स्कूलों के निर्देशन कार्यालय में स्थान की कमी के कारण ऐसी सामग्री स्कूल के नियमित पुस्तकालय में रखी जाती है और वह वहाँ देखी जा सकती है। यद्यपि भवन में उनका कहीं भी उपलब्ध होना लाभदायक है, तथापि निर्देशन कक्ष में उन्हें रखने से निश्चित लाभ होते हैं क्योंकि तत्कालीन सम्मेलनों के लिए उनका सरलता से उपयोग किया जा सकता है।

परामर्शदाता की डेस्क और साक्षात्कार के लिए आने वाले विद्यार्थी की कुर्सी किस प्रकार रखी जाय, यह महत्त्वपूर्ण है। पहली बात तो यह कि परामर्शदाता और परामर्शपात्र दोनों की कुर्सियाँ यथासंभव आरामदेह होनी चाहिएँ; यदि आराम कुर्सी हो तो और भी अच्छा है। दूसरे, विद्यार्थी की कुर्सी इस प्रकार रखनी चाहिए कि उसके मुख पर प्रकाश न पड़े। यदि किसी को प्रकाश के सम्मुख बैठना ही पड़े तो

परामर्शदाता को बैठाना चाहिए। संभव है कुर्सियों की स्थिति विशेष महत्त्वपूर्ण न प्रतीत होती हो, किन्तु परामर्श कार्य की सफलता पर इसका महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। जिस व्यक्ति से साक्षात्कार किया जाता है—चाहे वह नवयुवक हो या वयस्क—भावात्मक दृष्टि से वह विचलित हो जाता है, उसके मुख पर तीव्र प्रकाश पड़ने देना तृतीय श्रेणी की पद्धति है। चाहे किसी भी विषय पर विचार-विमर्श किया जा रहा हो, शारीरिक दृष्टि से स्थिति आरामदेह होनी चाहिए।

उपयुक्त चित्रों, पौधों, फूलों तथा अन्य साधारण किन्तु आकर्षक वस्तुओं की उपस्थिति से निर्देशन कार्यालय में मैत्री और प्रसन्नता का वातावरण बन सकता है। एक निर्देशन कार्यालय में प्रतिभावान छात्रों द्वारा कला कक्षाओं में बनाए गए चित्र, सिरेमिक कक्षाओं से प्राप्त मूर्तियाँ, बर्तन और छोटी-छोटी उपयोगी तथा आकर्षक वस्तुएँ, कार्यालय में दान दिए गए और विद्यार्थियों द्वारा देखभाल किये गए पौधे और छात्रों तथा अध्यापकों के उपवनों से विभिन्न ऋतुओं में प्राप्त पुष्पावलियाँ बड़े गौरव से सजा कर रखी गई हैं। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों की गतिविधियों के बड़े आकार के फोटोग्राफ, फोटोग्राफी क्लब द्वारा खींचे गये चित्र तथा विद्यार्थियों द्वारा निर्मित और निर्देशन के मामलों से सम्बन्धित चार्ट भी निर्देशन कार्यालय में हैं। यह बड़ा हवादार आकर्षक कमरा छात्रों का कमरा है और साथ ही निर्देशनदाताओं का कार्यालय भी; सब विद्यार्थी ऐसा अनुभव करते हैं कि जब कभी वे अपनी नियमित अध्ययन कक्षा में इस भवन में अन्यत्र व्यस्त न हों तब उन्हें इस स्थान पर आने का अधिकार है। सहायक छात्र कर्मचारी निर्देशन कार्यों को चलाने में ही सहायता नहीं देता बल्कि निर्देशन कार्यालय को स्वच्छ और आकर्षक बनाये रखने में भी गौरव अनुभव करता है। ये छात्र सहायक अच्छे प्रचारक होते हैं; वे अपने सहपाठियों को कार्यालय की सामग्री का उपयोग करने और दुःख गाथा परामर्शदाता को सुनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

बजट सम्बन्धी विचारणीय बातें

विद्यार्थी में रुचि रखने वाले और समझदार अध्यापक या परामर्शदाता का व्यक्ति के जीवन-क्रम पर कितना प्रभाव पड़ता है, यह रुपये आने पाई में नहीं आंका जा सकता। किन्तु निर्देशन की सफल सेवा के संचालन के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है।

समाज का रवैया स्कूलों कौर सामाजिक संगठनों में पर्याप्त निर्देशन कार्यक्रम के तीव्र विकास में मुख्य बाधा उनकी लागत पर होने वाला व्यय है। अपने बच्चों को शिक्षा सम्बन्धी सुविधाएँ दिलाने पर होने वाले व्यय को जनता समझ सकती है और उसके लिए कर का भार उठाने को भी प्रस्तुत है, किन्तु निर्देशन सेवाओं की कल्पना शिक्षा-विधि के आवश्यक अंग के रूप में इतनी नवीन है कि वह साधारणतया समझ में नहीं आती। जनसाधारण के लिए स्कूल निर्देशन अध्यापक या परामर्शदाता द्वारा उसके बच्चे को दिये गए उस परामर्श से अधिक कुछ नहीं है जो वह अभिभावक के रूप

में अपने बच्चे को देना चाहता है किन्तु किसी कारण से वह बच्चा उसकी बात पर ध्यान नहीं देता।

सुसंगठित और अच्छे कर्मचारियों से युक्त तथा पूर्णतया सुसज्जित कार्यक्रम बहुत महंगे होते हैं। फर्नीचर और मूल उपकरणों की प्रारम्भिक लागत बहुत होती है। किन्तु सुप्रशिक्षित और कुशल निर्देशन कर्मचारियों, क्लर्कों, परीक्षा-सामग्रियों, पुस्तक-पुस्तिकाओं, रिकार्ड के रिक्त प्रपत्रों और अन्य निर्देशन साधनों के लिए जो प्रतिवर्ष धनराशि चाहिए उसकी तुलना में यह तुच्छ है।

बहुत-सी स्कूल प्रणालियों ने विस्तृत निर्देशन सेवाएँ जारी करना चाहा था, किन्तु "नगर पिताओं" की अदूरदर्शिता के कारण उन्हें रुक जाना पड़ा। जब स्पष्टतः कोई संकटकालीन स्थिति उत्पन्न हो जाती है तभी वे निर्देशन के लिए अधिक राशि प्रदान करने को प्रस्तुत होते हैं। इस पर भी यह राशि उसी कार्य के लिए निर्दिष्ट की जाती है जो देखने में तत्कालीन आवश्यकता प्रतीत होती है। संकट के वास्तविक आधार की उपेक्षा कर दी जाती है।

न्यूयार्क नगर के हाल के बजट के सम्बन्ध में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। प्रारम्भिक, जूनियर और सीनियर हाई स्कूल स्तरों पर निर्देशन सेवाओं के विस्तार के हेतु एक दस-वर्षीय ब्ल्यूप्रिन्ट के आधार पर उस शैक्षिक बजट में जिसकी सिफारिश स्कूलों के अधीक्षक ने की थी—प्रारम्भिक और जूनियर तथा हाई स्कूलों के लिए पूरे समय के अतिरिक्त परामर्शदाताओं के लिए धन की व्यवस्था की गई थी। जिस समय मेयर, नगर परिषद् और बजट निर्देशक स्कूल की सिफारिशों का अध्ययन कर रहे थे, बाल अपराधों की तीव्र वृद्धि के फलस्वरूप जनसाधारण में पर्याप्त आन्दोलन जाग्रत हो गया था। अतएव जूनियर और सीनियर हाई स्कूल स्तर पर अतिरिक्त परामर्शदाताओं के लिए राशि स्वीकार की गई, किन्तु प्रारम्भिक स्कूलों के लिए जो परामर्शदाताओं की माँग की गई थी उसे पूर्णतया ठुकरा दिया गया। जागरूक अभिभावकों, नागरिक संगठनों और शिक्षकों ने सम्बन्धित अधिकारियों को यह समझाने का भरसक प्रयत्न किया कि शैशवास्था में दिया गया निरोधात्मक निर्देशन नवयुवकों में विकसित होने वाले समाज-विरोधी व्यवहारों को रोकने का एक श्रेष्ठ साधन है, फिर भी उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया गया। साधारण जनता "परिणामों" की माँग करती थी; अतः नई शैक्षिक "सनक" के लिए पैसा नहीं था। हमें यह कहते हर्ष है कि १९६१ के बजट में निर्देशन के इस अभाव को दूर कर दिया गया है।

बजट सम्बन्धी आवश्यकताएँ जीवन-यापन की लागत की अति प्रचारित वृद्धि की भाँति निर्देशन सेवाओं के लिए आवश्यक व्यय में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। कारण स्पष्ट है :

१. समस्त स्कूल स्तरों पर छात्रों की संख्या बढ़ रही है।
२. सारे संयुक्त राज्य में निर्देशन की कल्पना का विस्तार (क) जिन स्थानों में पहले निर्देशन सेवाओं की आवश्यकता को स्वीकार नहीं किया गया

था, वहाँ स्कूल निर्देशन सेवा जारी करने और (ख) वर्तमान कार्यक्रमों का विस्तार करने के लिए प्रोत्साहन दे रहा है।

३. निर्देशन प्रारम्भ करने के लिए अपेक्षित सामग्री का मूल्य अधिक था। उदाहरण के लिए, परीक्षा की २५ पुस्तकों का सेट जो दस वर्ष पूर्व ७० सेंट प्रति सेट की दर से आता था, अब उसका मूल्य कम से कम दुगुना हो गया है।

४. शैक्षिक नेता अधिक और श्रेष्ठ प्रशिक्षित परामर्शदाताओं तथा निर्देशन-विशेषज्ञों की माँग कर रहे हैं।

निर्देशक कर्मचारियों की वर्तमान कमी के दो मुख्य कारण हैं। प्रथम, परामर्शदाताओं का प्रशिक्षण महंगा पड़ता है, इसलिए अधिकांश कालेजों और विश्वविद्यालयों को—जो इस प्रकार का प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाते हैं—बजट सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण उच्च-निर्वाचित, उपलब्ध आवेदनकर्त्ताओं के छोटे से समूह को चुनने के लिए विवश होना पड़ता है। दूसरे, बहुत से स्कूलों या स्कूल प्रणालियों में परामर्श का भार बहुत अधिक होता है (कुछ उदाहरण तो ऐसे हैं जहाँ १००० या इससे भी अधिक व्यक्तियों पर एक परामर्शदाता होता है)। तीसरे, अपने विशद प्रशिक्षण के बावजूद परामर्शदाता को नियमित अध्यापक के वेतन पर कार्य करना पड़ता है।

ऐसा प्रयत्न चल रहा है कि शनैः-शनैः परामर्शदाता का भार अधिकतम ३०० परामर्शपात्रों तक सीमित कर दिया जाय और अध्यापकीय वेतन के अतिरिक्त २०० डालर से ५०० डालर तक की उसके वेतन में वृद्धि कर दी जाय। पिछले अध्याय में हमने पूरे समय के परामर्शदाताओं की चर्चा की है। कुछ स्कूलों में—विशेषतः उन माध्यमिक स्कूलों में जहाँ पूरे समय के परामर्शदाता नहीं होते—अध्यापक-परामर्शदाताओं की स्थिति शोचनीय है। नित्य तीन या चार अध्ययन कक्षाएँ चलाने के अतिरिक्त एक परामर्शदाता से यह आशा की जाती है कि वह १२०० छात्रों को परामर्श देगा। इतना ही नहीं, उसके परामर्श दायित्व में शैक्षिक और व्यावसायिक सलाह देना, कार्यक्रम निर्माण में प्रत्येक परामर्शपात्र को सहायता देना, व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने में प्रत्येक विद्यार्थी की सहायता करना, पढ़ाने वाले अध्यापक और अभिभावक से भेंट करना, बाहरी अभिकरणों के पास छात्रों को भेजना और ऐसे विशेषज्ञों से सम्पर्क रखना जो उसके किसी परामर्शपात्र के साथ कार्य कर रहा है, सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, रिकार्ड रखने, रिपोर्ट प्रस्तुत करने और अन्य प्रकार के कागजी काम उसे सौंपे जा सकते हैं।

सम्बन्धित लागतें सही रीति से यह निश्चय करना कठिन है कि स्कूल निर्देशन की लागत क्या होनी चाहिए। स्कूल का आकार, स्कूल का स्तर, निर्देशन की आवश्यकता को पूरा करना आवश्यक है, और इसका निर्णय उपलब्ध धनराशि के आधार पर होता है। इस क्षेत्र के विशेषज्ञों का अनुमान है कि पर्याप्त निर्देशन सेवाओं के लिए समस्त स्तरों पर प्रत्येक छात्र के लिए १० डालर से २० डालर प्रतिवर्ष

व्यय होना चाहिए; यह राशि शिक्षा पर व्यय होने वाले धन की ३ प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए।

हमारे शैक्षिक विषयों में इस गंभीर कमी पर व्यक्त की जाने वाली चिन्ता का एक लक्षण सार्वजनिक विश्वविद्यालयों और उच्चतर सार्वजनिक शिक्षाओं के लिए संघीय सरकार द्वारा की गई व्यवस्था है। संयुक्त राज्य भर में स्कूलों को प्रोत्साहन देने के लिए संघीय कार्य सन् १९५८ में स्वीकृत राष्ट्रीय सुरक्षा शिक्षा अधिनियम है। इस बिल का मुख्य उद्देश्य योग्य छात्रों को अपनी शिक्षा—विशेषतः विज्ञान और गणित में—जारी रखने के लिए प्रोत्साहन देना था किन्तु उद्देश्य अधिक विशाल लक्ष्य की पूर्ति था। जैसा कि शिक्षा कार्यालय के कुछ अधिकारियों ने व्यक्त किया है, इसका सबसे बड़ा लाभ प्रत्येक राज्य में योग्यता और रुचि की परीक्षा तथा निर्देशन के विस्तार के रूप में हुआ है। (देखिए अध्याय २२)।

विविध उत्साहवर्द्धक निर्देशन की धाराओं के बावजूद सूची संस्थाओं, मानसिक रोग के चिकित्सालयों तथा अन्य पुनस्स्थापन सेवाओं पर अपेक्षाकृत भारी धनराशि व्यय की जाती है। यदि बजट में निर्धारित की गई धनराशियाँ निर्देशन को अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए अवसर देने को पर्याप्त होतीं तो निरोध कार्यों पर व्यय होने वाला धन उस विशाल धनराशि को कम कर देता जिसकी उपचारात्मक और दंडात्मक कार्यों के लिए आवश्यकता होती है। आर्थिक बचत से भी अधिक महत्त्वपूर्ण इसके अतिरिक्त होने वाला श्रेष्ठ तालमेल और सुखी नागरिकता है। लोकमत शिक्षा में निर्देशन कार्य की माँग करता है जिससे सरकारी अधिकारियों को उसका मूल्यांकन करने का अवसर मिलता है, जिसके फलस्वरूप प्रत्येक अमेरिकी को समुचित निर्देशन सेवा प्रदान करने के लिए संघ, राज्य और समाज की थैलियों के मुँह खुलने लगते हैं।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. निर्देशन के संगठन की केन्द्रित और विकेन्द्रित योजनाओं से सम्बन्धित गुणों का मूल्यांकन कीजिए।

२. बताइये कि "मिश्रित" योजना में प्रत्येक योजना के कौन-कौन से भाग सम्मिलित किये जा सकते हैं।

३. इनमें से प्रत्येक की व्याख्या कीजिए: निर्देशन, कर्मचारी सेवाएँ, परामर्श देना, रेखा सत्ता, कर्मचारियों के कर्त्तव्य।

४. निर्देशन की तीन ऐसी विशिष्ट सेवाएँ बताइये जो समस्त स्कूल स्तरों पर समान रूप से प्रचलित हैं।

५. स्कूल द्वारा दी गई निर्देशन सेवाओं को सामाजिक रवैया किस प्रकार प्रभावित करता है?

६. लागत सम्बन्धी उन कुछ विशिष्ट बातों को बताइये जिन पर विचार करने की आवश्यकता है।

७. इस बात के पक्ष में विचार व्यक्त कीजिए कि स्कूल के समस्त कर्मचारियों को निर्देशन संगठन के नियोजन में भाग लेनी चाहिए।

८. यह क्यों आवश्यक है कि सत्ता की सीमा को इस कार्य में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति द्वारा समझा जाय।
९. प्रारम्भिक स्तर पर निर्देशन सेवाओं का बहुत अधिक निश्चित रूप से संगठित होना क्यों अवांछनीय हो सकता है?
१०. जिस प्रारम्भिक स्कूल में आप थे, उसमें दी जाने वाली निर्देशन सेवाओं का स्मरण कीजिए। वे किस प्रकार संगठित थीं?
११. जिस हाई स्कूल में आप थे, वहाँ वे किस प्रकार संगठित थीं?
१२. अपने समाज के किसी प्रारम्भिक स्कूल में जाइये, उस स्कूल के निर्देशन संगठन की रूप रेखा बनाइये।
१३. एक हाई स्कूल में जाकर उसकी निर्देशन सेवाओं के संगठन का अध्ययन कीजिए।
१४. इस अध्याय में वर्णित हाई स्कूल निर्देशन सेवाओं की संगठन सम्बन्धी योजनाओं का अध्ययन कीजिए। इनमें से आपको कौन-सी सर्वश्रेष्ठ लगती है। कारण बताइये।
१५. जिस कॉलेज में आप थे अथवा जिस कॉलेज में आप अब अध्ययन कर रहे हैं उसके निर्देशन कार्यक्रम की रूप-रेखा बताइये। क्या आप उसमें निर्देशन की कोई कमी पाते हैं? आपकी दृष्टि से सेवाओं का पुनर्गठन किस प्रकार होना चाहिए?
१६. किसी स्कूल या स्कूल प्रणाली के लिए निर्देशन सेवाओं का अत्यन्त विशद रूप में गठन करने से क्या हानियाँ हो सकती हैं?
१७. यदि फाइल की सामग्री बहुत हो तो उसमें किस वस्तु का अभाव रह सकता है?
१८. यदि संभव हो तो अपने समाज के स्कूलों में निर्देशन सेवाओं के लिए प्रति छात्र आने वाली लागत ज्ञात करो। इसी समाज में पुनरस्थापन उद्देश्यों के लिए प्रति व्यक्ति आने वाली लागत से इसकी तुलना कीजिए।
१९. स्कूल प्रणाली के निर्देशन कार्यक्रम के लिए अपेक्षित धन के अधिकाँश प्रतिशत की व्यवस्था किसे करनी चाहिए—संघ, राज्य या समुदाय सरकार? अपने पक्ष में कारण दीजिए।

६ निर्देशन कर्मचारियों के दायित्व

निर्देशन कार्यक्रम का संगठन और क्रियान्वयन पहले से ही संस्था में और उस से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों में ऐसे स्त्री-पुरुषों की कल्पना कर लेता है जो व्यक्तिगत रूप से अच्छी योग्यता प्राप्त हैं और अपने प्रशिक्षण और अनुभव के आधार पर इस कार्यक्रम में अपने विशेष दायित्व को पूरा कर सकते हैं। ये दायित्व बहुत से और भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। सहयोग करने वाले प्रत्येक निर्देशन कर्मचारी का कर्त्तव्य है कि वह (१) यह जाने कि स्कूल अथवा अन्य संस्था द्वारा वास्तव में कौन-कौन सी साधारण और विशिष्ट सेवाएँ प्रदान की जानी हैं; (२) उन कार्यों के प्रकार और सीमा को भली-भाँति समझ ले जिनमें उसे अपने सहयोगियों के कर्त्तव्य के संदर्भ में कार्यलीन होना हो; और (३) न्यूनतम प्रयत्नों की पुनरावृत्ति और व्यर्थता को यथासम्भव रोक कर अपने निश्चित दायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने के लिए उसे प्रस्तुत रहना चाहिए।

निर्देशन दायित्वों का वितरण

विविध कर्मचारियों के विशिष्ट निर्देशन दायित्वों की व्याख्या भिन्न-भिन्न स्कूलों में भिन्न-भिन्न प्रकार से की जाती है। स्कूल या स्कूल प्रणाली के आकार से उन कर्त्तव्यों की संख्या और प्रकार का निश्चय किया जाता है जो किसी विशेष व्यक्ति को सौंपे जाते हैं। चाहे कर्त्तव्यों का वितरण कुछ भी हो, चाहे निर्देशन कार्यकर्त्ता का कार्य कितने ही विस्तार या संकीर्णता से निर्धारित किया जाय उत्तरदायित्व का एक निर्देशक सिद्धान्त समझ लेना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए : प्रत्येक कर्मचारी को अपने विशिष्ट कार्य को जानना चाहिए और दृढ़ता से उस पर जम कर रहना चाहिए, उसे निर्देशन या परामर्श कार्यों से भी बचना चाहिए क्योंकि यह वास्तव में उसके सहयोगियों का उत्तरदायित्व है, उसे ऐसी किसी या समस्त गतिविधियों में अवश्य

उत्साहपूर्वक और बुद्धिमानी से योग देना चाहिए जिसमें कि उसके सहयोग की आशा की जाती है।

स्कूल निर्देशन के विविध रूप अध्याय ५ में दिखाये गये संगठन सम्बन्धी नक्शों की तुलना से ज्ञात होता है कि निर्देशन कार्यक्रम विषय की विशदता, व्यवसाय-कर्मचारी-सम्बन्धों, सामान्य और विशिष्ट बल की दृष्टि से भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। फिर भी ऐसे समस्त स्कूलों में निर्देशन के कुछ रूप समान होते हैं जिनमें औपचारिक कार्यक्रम संगठित किये गए हैं और चलाये जाते हैं। स्कूल प्रणाली में सामान्यतः ये मूल सेवाएँ सम्मिलित की जाती हैं : व्यक्तिगत योग; रवैयों और अभिरुचियों का अध्ययन; पाठ्यक्रम की सामग्रियाँ या अध्ययनों के कार्यक्रम का तालमेल; नये स्कूल की दीक्षा; कक्षा के बाहर की गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन; घरेलू या सामाजिक सम्बन्धों की या अवकाशकालीन गतिविधियों से सम्बन्धित विद्यार्थियों की समस्या को सुलझाने के लिए किये गये प्रयत्न; व्यावसायिक निर्देशन और आगे की शिक्षा के लिए तैयारी।

बहुत-सी स्कूल प्रणालियों में निर्देशन कर्मचारियों के सम्बन्ध अपनी छात्र निर्देशन सेवाओं के कार्यकारी लक्ष्यों में निर्देशन की आवश्यकताओं से निर्लिप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, डेस मोयन्स (इयोवा) सार्वजनिक स्कूलों में निर्देशन और परामर्श कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं :

१. क्रमागत स्कूल स्तरों पर व्यक्तिगत विद्यार्थी के विकास सम्बन्धी अनुभव, हितों और आवश्यकताओं को समझने के लिए आवश्यक तथ्यों का संग्रह करना।

२. उन तथ्यों को संगठित और लिपिबद्ध करना ताकि उनकी व्याख्या की जा सके और शैक्षिक कर्मचारियों, माता-पिताओं और विद्यार्थियों के सतत प्रयोग के लिए वे उपलब्ध किए जा सकें।

३. समस्त स्कूल स्तरों पर किसी विद्यार्थी के रिकार्ड पर विद्यार्थी, उसके अभिभावक, कालेज के प्रतिनिधियों और/या वाणिज्य तथा औद्योगिक कर्मचारियों से विचार-विमर्श करते समय एक स्वीकृत समान शब्दावली का प्रयोग करना।

४. समूह निर्देशन, व्यवितगत परामर्श सेवा और साहित्य के द्वारा सम्बन्धित शैक्षिक, व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जानकारी उपलब्ध करना।

५ प्रत्येक विद्यार्थी के लिए मैत्रीपूर्ण सलाहकार के रूप में एक व्यक्तिगत परामर्शदाता की व्यवस्था करना ताकि उससे विद्यार्थी को अपनी शैक्षिक, व्यवितगत, सामाजिक और व्यावसायिक सयस्याओं को सुलझाने में सहायता मिल सके।

६. प्रत्येक विद्यार्थी के सहयोग से ऐसा अनुभवपूर्ण कार्यक्रम बनाना जिसमें उसकी योग्यताओं का उपभोग, अभिरुचियों का पूरा लाभ और आवश्यकताओं का समाधान हो सके।

७. प्रत्येक अवसर पर विचार-विनिमय करने और योजना बनाने के लिए माता-पिताओं को आकर्षित करना।

८. विकास सम्बन्धी योजना को आगे बढ़ाने में सहायता देने के लिए स्कूल और सामुदायिक कार्यों में उपलब्ध समस्त साधनों और सुविधाओं का उपयोग करना।

९. विद्यार्थियों को एक अनुभव-स्तर से दूसरे अनुभव-स्तर पर यथासम्भव सरलता और दक्षता से पहुँचने में सहायता देना।

१०. पुनः अध्ययन के लिए मुख्य बिन्दुओं के रूप में ६ अ और ११ अ छमाहियों पर बल देते हुए आवश्यकतानुसार प्रत्येक विद्यार्थी की योजना की आवृत्ति को संभव बनाना।

११. समस्त अध्यापकों और प्रशासकों की निर्देशन और परामर्श सेवाओं के ज्ञान, सुधार और आवृत्ति की निरन्तर व्यावसायिक वृद्धि की व्यवस्था करना।

१२. उन निरन्तर परिवर्तित होने वाले सामुदायिक अवसरों को अधिक भली प्रकार समझने में अध्यापकों, प्रशासकों और विद्यार्थियों को अवसर देना जिनका उपयोग छात्र स्कूल में रहते हुए कर सकें और स्कूल छोड़ने के पश्चात् अपने जीवन की योजना बनाते समय विशेष रूप से कर सकें।

सम्भव है, प्रथम दृष्टि में, इन निर्देशन आवश्यकताओं के लिए व्यवस्था करना भारी काम प्रतीत न हो। किन्तु सामान्य लक्ष्यों को निश्चित सफलताओं में परिवर्तित करने के लिए पूर्णतया सुसज्जित निर्देशन कर्मचारियों के समन्वित प्रयत्नों की आवश्यकता होती है। सब विद्यार्थियों की निर्देशन सम्बन्धी समस्त आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक कर्त्तव्यों की यदि सूची बनाई जाय तो बहुत-से पृष्ठ भर जाएँ। इस अध्याय में आगे चलकर हम विविध निर्देशन कर्मचारियों के विशिष्ट उत्तरदायित्वों पर विचार करेंगे।

निर्देशन दायित्वों का वितरण जब उन निश्चित निर्देशन कार्यों पर विचार किया जाता है जो कि किसी भी स्तर पर निर्देशन कर्मचारियों के उत्तरदायित्वों में सम्मिलित हैं तो यह धारणा बढ़ती जाती है कि कर्त्तव्यों के अव्यवस्थित बँटवारे के द्वारा इन दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह नहीं किया जा सकता। प्रत्येक कर्मचारी को एक निश्चित कार्य सौंप देना चाहिए और वह समस्त निर्देशन कार्यक्रम के संदर्भ में अपने कार्य को समझने में समर्थ होना चाहिए।

सामान्यतः समुदायव्यापी स्कूल निर्देशन के कार्यक्रम में निम्नलिखित सम्बन्ध सम्मिलित होते हैं: प्रशासकीय, निरीक्षण के, परामर्श या सलाह सम्बन्धी, सहकारिता और प्रत्यक्ष सेवा। अध्याय ५ के नक्शे चित्र ५-८ देखकर पाठक विविध प्रत्यक्ष बनाम अप्रत्यक्ष दायित्व के साधारण नमूनों और व्यवसाय-कर्मचारियों के सम्बन्धों से परिचित हो जाता है। कुछ स्कूल प्रणालियों में व्यक्तिगत स्कूलों की निर्देशन सेवाओं का

पूर्णतया प्रशिक्षित, अनुभवी निर्देशन-निर्देशक द्वारा समीकरण किया जाता है जबकि एक सामान्य ढाँचे में प्रत्येक स्कूल अपने छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने में अपेक्षाकृत स्वायत्त सत्ता का उपयोग करता है।

वे विविध सेवा सम्बन्ध जो समस्त स्कूल प्रणाली के निर्देशन विषयों की विशिष्टता बताते हैं, व्यक्तिगत स्कूल के पूर्ण कर्मचारी युक्त निर्देशन कार्यक्रम में भी होते हैं। इन प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष निर्देशन सम्बन्धों में ये कर्मचारी सम्मिलित होते हैं :

१. आचार्य व उसके सहायक।
२. निर्देशन अध्यक्ष, समन्वयकर्त्ता या डीन।
३. गृहकक्ष के अधिकारी और पठन कक्षा के अध्यापक।
४. अध्यापक परामर्शदाता।
५. एक या अधिक पूरे समय के प्रमाणित परामर्शदाता।
६. निश्चित सेवा क्षेत्रों के विशेषज्ञ :
   उपस्थिति अधिकारी।
   सामाजिक कार्यकर्त्ता अथवा दौरा करने वाला अध्यापक (पूरे या आंशिक समय का)
   मनोवैज्ञानिक (पूरे या आंशिक समय का)
   मानसिक रोग चिकित्सक (आंशिक समय का)
   डाक्टर, दाँत का डाक्टर, नर्स (पूरे या आंशिक समय के)
   स्कूल-न्यायालय सम्पर्क कर्मचारी (आंशिक समय का)
   व्यावसायिक और काम दिलाने वाला परामर्शदाता (माध्यमिक स्कूल और कालेज)
७. माता-पिता।
८. सामुदायिक स्वास्थ्य, कल्याण और निर्देशन अधिकारी।

निर्देशन सेवाओं का प्रशासन

शैक्षिक प्रशासक की सत्ता का क्षेत्र या स्तर चाहे कुछ भी हो, उसका मुख्य कर्त्तव्य उन सबके विकास और समन्वय को आगे बढ़ाना है जिनके लिए वह उत्तरदायी है। अतएव स्कूल प्रणाली का अधीक्षक, प्रारम्भिक, जूनियर हाई या सीनियर हाई स्कूल का आचार्य अथवा कालेज का अध्यक्ष उसमें निर्देशक कार्यक्रम का मुखिया होता है। अधिक छोटे स्कूलों में उसे परामर्श देने का दायित्व भी अपने ऊपर लेने की आवश्यकता है। अधिक बड़े स्कूलों और हाई स्कूलोत्तर संस्थाओं में सामान्यतया निर्देशन सेवाओं को क्रियान्वित करने सम्बन्धी छोटी-छोटी बातें सुयोग्य कर्मचारियों को सौंप दी जाती हैं।

प्रशासकीय दायित्व निर्देशन कार्यक्रम के सम्बन्ध में प्रशासक के मूल दायित्वों में निम्नलिखित भी सम्मिलित हैं :

१. प्रभावशाली निर्देशन सेवाओं के मूल दर्शन और सिद्धान्तों का ज्ञान और उनकी स्वीकृति ।
२. सेवाओं के संगठन और पुनर्गठन में नेतृत्व ।
३. सेवा में रहते किसी न किसी रूप में सम्पूर्ण कर्मचारियों में निर्देशन-केन्द्रित रवैये को प्रोत्साहित करना ।
४. सुयोग्य निर्देशन कर्मचारियों का चुनाव करना और उन्हें कार्य सौंपना ।
५. निर्देशन कार्यों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष निरीक्षण ।
६. कार्यक्रम के क्रियान्वित करने के लिए बजट की सीमा में आवश्यक स्थान, उपकरण और सामग्री की व्यवस्था करना ।
७. कार्यक्रम की प्रभविष्णुता का आवधिक मूल्यांकन कराना ।

निर्देशन कार्यक्रम की सफलता का अन्तिम दायित्व प्रशासक पर होता है। किन्तु सामान्यतः सर्वश्रेष्ठ परिणाम उस समय प्राप्त होते हैं जब कि वह अपने कर्त्तव्य-पालन में अन्य कर्मचारियों के सहयोग को प्रोत्साहन देता है। कर्मचारियों में से विषय के विभागों के मुखियाओं, स्कूल के सचिवों, पुस्तकालयाध्यक्षों, स्कूल संरक्षक और निःसंदेह—स्वयं निर्देशन कार्यकर्त्ताओं को इसमें सम्मिलित किया जा सकता है।

सेवा-रत अध्यापकों का निर्देशन में प्रशिक्षण निकाय के समस्त सदस्यों को नौकरी में रहते शिक्षा देने की व्यवस्था करना स्कूल के मुखिया का एक महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य की पूर्ति निकाय की बैठकों, अधिक पीछे हटने वाले अध्यापकों के साथ व्यक्तिगत रूप से वार्तालाप करके, व्यक्तिगत उदाहरण से, निर्देशन के मूल-तत्त्वों पर स्कूल में सुयोग्य व्यक्तियों के लिए अल्पकालीन पाठ्य विधियों की व्यवस्था करके और निर्देशन की पाठ्य विधियों के लिए स्कूल वर्ष में पड़ोस के कालेज या विश्वविद्यालय में या ग्रीष्मकालीन अवकाश में निर्देशन संस्थाओं में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित करके की जा सकती है।

बहुत से स्कूल पुस्तकालयों में कम से कम एक खंड में निकाय के सदस्यों के उपयोग के लिए सामग्री रहती है। शिशु विकास, निर्देशन विधियों और सम्बन्धित विषयों पर पुस्तकें और पुस्तिकाएँ इन "अध्यापकों के खानों" में स्थान पाने लगी हैं। वे फिल्में भी उपयोगी हैं, जिनमें वे विधियाँ चित्रित की जाती हैं जिनसे नवयुवकों को उनकी समस्याएँ सुलझाने में सहायता दी जा सकती है। (फिल्मों की सूची परिशिष्ट में देखिये)। एक स्कूल वर्ष में निर्देशन क्षेत्र में नई पुस्तकों की समीक्षा और उन पर विचार-विमर्श करने के लिए अथवा सचित्र फिल्मों को देखने और उन पर वाद-विवाद करने के लिए निकाय की दो बैठकें की जा सकती हैं।

निर्देशन कर्मचारियों का चुनाव कुछ राज्यों को छोड़कर शेष राज्यों ने स्कूल के पूरे समय के परामर्शदाताओं को प्रमाणपत्र देने के लिए अपेक्षित न्यूनतम अध्ययन और अनुभव की व्यवस्था कर दी है (देखिये परिशिष्ट)। इसलिए निर्देशन कर्म-चारियों का चुनाव करने में स्कूल प्रशासक कुछ सीमा तक बँधे होते हैं। किन्तु अधिकांश स्कूल अध्यापक-परामर्शदाताओं की सेवा का साथ ही साथ अथवा पूरे

समय के निर्देशन कर्मचारियों के स्थान पर उपयोग करते हैं। अतएव अंशकालीन निर्देशन कार्यों के लिए योग्य व्यक्तियों का चुनाव करना स्कूल के मुखिया का दायित्व हो जाता है।

अध्यापक-परामर्शदाताओं का चुनाव यथासंभव स्कूल कर्मचारियों में से करना चाहिए। चुने हुए व्यक्ति ऐसे होने चाहिएँ जिन्होंने अपने अध्यापन काल में अपने छात्रों में रुचि प्रदर्शित की हो और उन्हें समझा हो, छात्रों का विश्वास और निकाय का सम्मान अर्जित किया हो, अध्यापन सम्बन्धी श्रेष्ठ योग्यता का प्रदर्शन किया हो और शिक्षा के व्यापक क्षेत्र व निर्देशन में तथा विशेष रूप से सम्बन्धित क्षेत्रों में अपना अध्ययन जारी रखा हो।

निर्देशन कर्मचारियों का चुनाव करना प्रशासक के लिए सरल कार्य नहीं है। प्रत्येक स्कूल या अन्य संस्था में ऐसे व्यक्ति होते हैं जो चुने गये व्यक्तियों की अपेक्षा स्वयं को किसी विशेष दायित्व के हेतु अधिक उपयुक्त समझते हैं। कुछ अध्यापक या अन्य कार्यकर्त्ता जिन्हें कोई नियमित कार्य सौंप दिया गया है—यह अनुभव करते प्रतीत होते हैं कि अन्य व्यक्तियों को दैनिक कार्य से मुक्त करके विशेष कार्यों के लिए अवसर प्रदान किया जाता है जिससे उनका कार्य बहुत हल्का हो जाता है। अतएव "निर्देशन प्रपंच" के विषय में हम बहुत अधिक बातें सुनते हैं। ये असन्तुष्ट व्यक्ति यह नहीं समझते कि कक्षा को परामर्श देने के लिए प्रतिदिन जो एक घण्टा दिया जाता है वह ऐसी परिस्थिति भी तो उत्पन्न कर सकता है जब व्यक्तिगत परामर्श देने, वृत्त तैयार करने, माता-पिता से मिलने और इसी प्रकार के अन्य कार्यों के लिए स्कूल समय से पूर्व या पश्चात् एक घण्टे से अधिक समय देने की आवश्यकता पड़ जाय।

इस बात को समझने की असमर्थता कि विशेष कार्य में "सरल कार्य" ही नहीं होता, स्कूल के लोगों तक ही सीमित नहीं है। न्यूयार्क नगर में पुलिस विभाग में कुछ योग्यता प्राप्त व्यक्तियों को विभाग के बाल-अपराध-निरोधक ब्यूरो के सदस्य के रूप में विशेष कार्य सौंपे जाते हैं। ये लोग पहरा नहीं देते। उनका कार्य अपराधी नवयवकों, माता-पिताओं और सामुदायिक अभिकरणों के साथ होता है। उन्हें विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए, उनके कार्य का समय लम्बा और अनियमित होता है; चूँकि वे चाकू और पिस्तौलों के साथ खेलने वाले लड़कों के साथ निबटने का प्रयत्न करते हैं इसलिए उन्हें सदैव शारीरिक खतरा बना रहता है। तो भी कुछ नियमित कार्य करने वाले पुलिसमैन उनके जे० ए० बी० (Juvenile Aid Bureau) के कार्यों से असन्तुष्ट हैं।

उदाहरण के लिए बाल-अपराध-निरोधक ब्यूरो के एक विवेकशील योग्य सदस्य को कठिन पड़ोस वाले स्कूल सौंपे गये। जिन स्कूलों के लिए उसने कार्य किया उन्होंने उसके सहयोग की बहुत सराहना की। किन्तु एक अवसर पर जब एक घायल विद्यार्थी के लेने के लिए दो पुलिसमैन एम्बुलेंस के साथ उस स्कूल में पहुँचे तो उनमें से एक ने स्कूल में ऊपर चढ़ते हुए कहा"......कहाँ है। उसे कितना सरल कार्य मिला है। मैं शर्त लगाता हूँ उसे कभी इन सीढ़ियों पर नहीं चढ़ना पड़ता। वह तो इधर-

उधर खड़ा होकर गप्पें लड़ाता है। काफी आराम का काम है, मैं कहता हूँ।" वास्तव में जिस प्रकार का निर्देशन कार्य वह पुलिस वाला कर रहा था और जिसके विषय में यह व्यक्ति अपनी ईर्ष्या व्यक्त कर रहा था, उस प्रकार का कार्य यह कभी नहीं कर सकता था।

इस प्रकार का अभिव्यक्त या अनुभूत रवैया निर्देशन कर्मचारियों के चुनाव में प्रशासकीय कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है। निर्वाचित व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जिसने अपने साथी अध्यापकों के साथ अच्छे कार्यकारी सम्बन्ध स्थापित कर लिये हों, तभी वह अपने नवीन कार्य में उनका सहयोग प्राप्त कर सकता है। निर्देशन कर्मचारियों को बाहर से स्कूल में लाना आवश्यक है और उनके आगमन से पूर्व स्कूल निकाय को उनसे परिचित होने का अवसर देना चाहिए। इस प्रकार की नवीन स्थिति में प्रवेश करने वाला व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जो मानव स्वभाव को और नवागंतुक के प्रति होने वाले असंतोष की संभावना को समझता हो। उसे जो सत्ता प्रदान की गई है, उसका उपयोग उसे शनैः शनैः करना चाहिए और उससे पूर्व अपने नये सहयोगियों का सम्मान तथा विश्वास प्राप्त कर लेना चाहिए।

निर्देशन कार्यों का निरीक्षण स्कूल के प्रशासक को अपने निर्देशन कर्मचारियों के सम्बन्ध में निरीक्षण के उन्हीं सिद्धान्तों का उपयोग करना चाहिए जो उसके निरीक्षण के दायित्व को पूरा करने में सम्पूर्ण निकाय के लिये वांछनीय हैं। उसे उन सुझावों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए जो परामर्शदाताओं द्वारा पाठ्यक्रम में परिवर्तन या विस्तार, छात्रों का पाठ्यक्रम के साथ समन्वय, अथवा स्कूल कार्यक्रम में कुछ या समस्त छात्रों के लिए उपयोगी कार्यविधि या कार्य के जारी करने के विषय में दिये जाएँ। निर्देशन कर्मचारियों की बैठक में सम्मिलित होने और उन्हें निर्देशन प्रदान करने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए। निर्देशन सम्बन्धी मामलों पर परामर्शदाताओं से भेंट करने के लिए उसका उपलब्ध रहना आवश्यक है। यदि अध्यापकों और निर्देशन कर्मचारियों में कोई मतभेद हो जाय या दोनों समूहों में से कोई भी समूह दूसरे को सहयोग न दे तो उसे ऐसी स्थिति के प्रति सतर्क रहना चाहिए। संक्षेप में, स्कूल निर्देशन के समस्त कार्यों द्वारा प्रशासक के प्रभाव की अभिव्यक्ति होनी चाहिए, किन्तु उसका रवैया कभी तानाशाह जैसा विध्वंसात्मक आलोचना का नहीं होना चाहिए।

निर्देशन सेवाओं का समन्वयकर्त्ता

किसी भी निर्देशन कार्य के सरल और सफल संचालन के लिए यह अनिवार्य है कि समस्त स्कूल प्रणाली के लिए विविध सेवा का समन्वय निर्देशन के निर्देशक डीन, निर्देशन के अध्यक्ष, उच्च परामर्शदाता अथवा किसी व्यक्तिगत स्कूल से सम्बन्धित निर्देशन के समन्वयकर्त्ता द्वारा हो। जिन प्रारम्भिक स्कूलों में संगटित निर्देशन कार्य नहीं है, इस कार्य के करने वाले को साधारणतया प्रमुख परामर्शदाता कहा जाता है। माध्यमिक स्कूलों और कालेजों में निर्देशन या कर्मचारी सेवाओं का सरकारी समन्वयकर्त्ता

डीन या निर्देशन का अध्यक्ष होता है। किन्तु डीन शब्द का प्रयोग भ्रामक हो सकता है क्योंकि कुछ शैक्षिक संस्थाओं में अनुशासनकर्त्ता को डीन कहते हैं।

उत्तरदायित्व समस्त स्कूल प्रणाली के निर्देशन के निर्देशक को ऐसा सम्पर्क अधिकारी समझा जा सकता है जो केन्द्रीय कार्यालय के बाहर कार्य करते हुए पृथक्-पृथक् स्कूलों के कर्मचारियों के साथ उनके हेतु विशेष सेवाओं की व्यवस्था करने में और अपने कार्यक्रम के विषयों में सुधार करने में निर्देशन विभागों को सहयोग देता है। इस वादविवाद के शेष भाग का सम्बन्ध स्कूल निर्देशन समन्वयकर्त्ता या अध्यक्ष के कार्य से सम्बन्धित है।

आचार्य की स्वीकृति लेकर अपने कर्मचारियों के सहयोग से समन्वयकर्त्ता निर्देशन नीतियों की स्थापना और उनका क्रियान्वयन करते हैं। तालमेल की कठिन समस्याओं को सुलझाने में वह अन्य कर्मचारियों की सहायता करता है; कार्यक्रम की गतिविधियो के सम्बन्ध में अध्यापकों को सूचित रखता है और किसी नवयुवक को आगे भेजने और उपचारात्मक उपायों को करने जैसे मामलों में उनका सहयोग लेता है, वह छात्रों के प्रति मित्रतापूर्ण रुचि का रवैया रखता है और उनके साथ सहयोग करता है, परीक्षण कार्यक्रम, छात्रों के प्रवेश, छात्रों के कार्यक्रम और कक्षा के बाहर की विद्यार्थियों की गतिविधियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण करता है। वह माता-पिताओं से मिलकर उनके बच्चों की अभिरुचियों, योजना और समस्याओं पर विचार-विमर्श करता है और स्कूल तथा अन्य सामुदायिक अभिकरणों के मध्य सम्पर्क अधिकारी का कार्य करता है।

व्यक्तिगत विशेषताएँ जो व्यक्ति नवयुवकों में रुचि रखता है, जिसमें नेतृत्व के गुण हैं और जो कठिन परिश्रम तथा स्पष्ट दीखने वाली असफलताओं से नहीं घबड़ाता, वह निर्देशन का अध्यक्ष होने के योग्य है। समन्वयकर्त्ता के बहुत से दायित्व होते हैं, उसके घण्टे लम्बे होते हैं और उसका धैर्य कार्य के अनुकूल होना चाहिए। सब लोगों के लिए वह सब कुछ होना चाहिए। उसमें क्रोध का उत्तर मुस्कान से देने की क्षमता होनी चाहिए ; छात्रों, माता-पिताओं अथवा अध्यापकों के बेलगाम दुर्व्यवहार के सामने उसे शान्त और भावना की दृष्टि से संयम में रहना चाहिए ; उसे प्रत्येक समय सहिष्णु, विवेकशील, लक्ष्य-रत, आत्म-नियंत्रित, सहयोग-पूर्ण और दूसरों की विपत्ति में सहायता देने के लिए तैयार रहना चाहिए। साथ ही उसे मानव होना चाहिए जो कष्ट, सहिष्णुता, निराशा और अनुचित टीका-टिप्पणी को भुगत चुका हो। अन्य व्यक्तियों की दुर्बलताओं के प्रति उसे अपने अनुभव के आधार पर सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। इस सबके अतिरिक्त उसे यह जानना चाहिए कि भावुकता को जगाने वाली तालमेल की अपनी निजी समस्याओं का कैसे सामना किया जाय और वस्तुगत व्यवहार की तर्कसंगत रीति से उसे सुलझाने में उसे कुशल होना चाहिए।

समन्वयकर्त्ता को सदैव सचाई से उद्भूत प्रसन्नता का रवैया और सेवा की कामना रखनी चाहिए। संभव है कि वह अपराधी के साथ सहानुभूति रखता हो,

किन्तु उसे अपराध की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। कथनी और करनी दोनों से ईमानदारी, उद्योग, सहयोग के रवैये और अपने साथियों में अन्य उच्च नैतिक स्तरों की स्थापना को प्रोत्साहन देने के लिए उसे निरंतर प्रयत्न करना चाहिए।

निर्देशन और अनुशासन एक कार्य जो निर्देशन समन्वयकर्त्ता के कर्त्तव्यों में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए, वह है छात्र को सुधारने के हेतु दंडात्मक अनुशासन सम्बन्धी उपायों का प्रयोग। वास्तव में किसी भी परामर्शदाता से यह आशा नहीं की जानी चाहिए कि वह इस दायित्व को संभालेगा। ऐसे व्यवहारों से निर्देशन का निश्चित लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि निर्देशन की कार्यविधि भावुकतापूर्ण हो अथवा परामर्शदाता समाजविरोधी व्यवहार को क्षमा कर देता है और केवल शिक्षाशास्त्र का हामी होता है। अनेक अवसरों पर उसके और उसकी समस्या के कठोर और वस्तुगत उपचार द्वारा उसके हितों की सर्वश्रेष्ठ रक्षा हो सकती है किन्तु उस नवयुवक को यह अनुभव हो जाना चाहिए कि उसका परामर्शदाता उसकी सहायता करने का प्रयत्न कर रहा है न कि दंड देने का। निर्देशन कर्मचारियों के प्रति विद्यार्थियों का रवैया विश्वास और मित्रता का होना चाहिए और उनमें ऐसे वयस्कों से सहायता लेने की इच्छा हो जो उनमें और उनके कल्याण में रुचि रखते हैं। निर्देशन कार्यालय ऐसे कमरे में होना चाहिए जिसमें विद्यार्थी तत्परता—अपितु उत्साह—से आवें। यदि छात्रों के मस्तिष्क में निर्देशन कर्मचारियों का चित्र तिरस्कारपूर्ण, झिड़कियाँ देने वाला, स्कूल के नियमों को भंग करने पर या अन्य प्रकार से अनुचित व्यवहार करने पर दंड देने वाले व्यक्ति का बन जाय तो छात्रों का यह व्यवहार उसके प्रति नहीं बना रह सकता।

स्कूल से सम्बन्धित ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसका कार्य दैनिक अनुशासन की समस्याओं से निबटना हो। यह व्यक्ति दुर्बल नहीं होना चाहिए बल्कि इसके कार्यालय में बुलाया जाना ही ऐसा अनुभव होना चाहिए जिससे विद्यार्थी बचना चाहें। अनुशासनकर्त्ता की निर्देशन में रुचि होनी चाहिए और उस स्कूल की निर्देशन सेवाओं से वह परिचित हो। जब कि वह ऐसे अपेक्षाकृत दैनिक मामलों की देख-भाल करता है जैसे: कक्षा से भाग जाना, पुस्तकें खो देना, स्कूल या पढ़ाई की कक्षा में देर से आना, अध्यापकों के साथ सहयोग न करना, और ऐसे ही सैकड़ों मामले जो लगभग प्रतिदिन उसके सामने आते हैं तो उसे समझ लेना चाहिए कि छात्र में समन्वय की क्षमता नष्ट हो गई है जिसके लिए कुशल परामर्शदाता की सेवाओं की आवश्यकता है। ऐसे मामले समन्वयकर्त्ता के पास भेज देने चाहिएँ ताकि वह आवश्यक सेवा प्रदान कर सके।

पुरस्कार धन सम्बन्धी पुरस्कारों के अतिरिक्त—जो साधारणतया छोटे होते हैं—व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छे कार्य के लिए बहुत सी क्षतिपूर्त्तियाँ की जा सकती हैं। उसकी ओर से किये जाने वाले प्रयत्नों की सराहना जो सेवा के अनेक वर्षों बाद व्यक्त की जाती है, माता-पिता की कृतज्ञता, उन नवयुवकों का वांछनीय विकास जो

निर्देशन सेवा के उत्तर में लाभान्वित हुए हैं या हो रहे हैं—ये शक्ति के व्यय के लाभदायक परिणाम हैं।

स्कूल का परामर्शदाता

आजकल बहुत से स्कूल एक से अधिक पूरे समय के राज्यप्रमाणित परामर्शदाता नहीं रख सकते। कुछ स्कूलों में यह व्यक्ति अंशकालीन अध्यापक-परामर्शदाताओं के सहयोग से निर्देशन सेवाओं को समन्वित करने का दायित्व निभाता है। अन्य स्कूलों में, आकार और उपलब्ध कर्मचारियों के आधार पर, निर्देशन सेवाओं का समन्वयकर्त्ता उप-आचार्य या निर्देशन का अधिकारी प्रशासकीय सहायक होता है। प्रत्यक्ष परामर्श सेवाएँ अनेक पूरे समय के परामर्शदाताओं अथवा अध्यापक-परामर्शदाताओं द्वारा सम्पादित होती हैं।

दायित्वों का भार प्रारंभिक स्कूल स्तर पर सुसंगठित निर्देशन कार्यक्रम में विभिन्न आयु-स्तरों के लिए आवश्यक निर्देशन सेवाओं के क्रियान्वयन के लिए अनेक कर्मचारियों का चुनाव किया जाता है। समस्त कार्य का दायित्व मुख्य परामर्शदाता का हो सकता है जिसके सहायक अन्य अध्यापक-परामर्शदाता होते हैं जिनमें से प्रत्येक प्रारंभिक श्रेणियों, माध्यमिक श्रेणियों और उच्चतर श्रेणियों के अध्यापकों को सहयोग देता है। जूनियर और सीनियर हाई स्कूल स्तरों पर चुने हुए अध्यापक परामर्शदाताओं अथवा श्रेणी सलाहकारों को कुछ विद्यार्थी (सामान्यतः श्रेणी के आधार पर) निर्देशन के लिए सौंप दिए जाते हैं जिनके शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास का उत्तरदायित्व उन पर होता है।

कुछ स्कूल प्रणालियों में प्रमाणित परामर्शदाताओं को दो या अधिक स्कूल सौंप दिए जाते हैं। ये परामर्शदाता (१) विद्यार्थियों की गंभीर समस्याओं के समाधान में अध्यापक-परामर्शदाताओं की सहायता करते हैं, (२) स्कूल के बाहर के समुचित अभिकरणों के पास विद्यार्थियों को भेजते हैं, (३) नवयुवकों की तालमेल की समस्याओं को भलीभाँति समझने और निर्देशन-सिद्धान्तों के व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापकों और अभिभावकों के सम्मेलन की व्यवस्था करते हैं, और (४) स्कूल के निर्देशन कर्मचारियों तथा प्रशासकों, अध्यापकों, विशेषज्ञों और सामुदायिक नेताओं के समूहों में साधारण सम्पर्क अधिकारी के रूप में कार्य करते हैं।

चूंकि शिशुओं और किशोरों के सम्मुख कभी-कभी तालमेल की गंभीर समस्याएँ उपस्थित हो जाती हैं, इसलिए उन्हें ऐसे पुरुष या स्त्री की सहानुभूति चाहिए जिन्हें वे भलीभाँति जानते हैं और जिनमें उनका विश्वास है। यही कारण है कि बहुत से जूनियर और सीनियर हाई स्कूलों में यह प्रथा चल पड़ी है कि जब विद्यार्थियों का समूह स्कूल में प्रवेश करता है तभी से उसका निर्देशन प्रारंभ हो जाता है और जब तक वे स्नातक नहीं हो जाते तब तक चलता रहता है। इस प्रकार परामर्शदाता और उसके परामर्शपात्रों में घनिष्ठ व्यक्तिगत सम्बन्ध विकसित हो सकते हैं।

सौभाग्य से जिन स्कूलों में दो परामर्शदाताओं—शैक्षिक और सामाजिक—की प्रत्येक श्रेणी समूह के लिए व्यवस्था होती है, उनमें से एक निश्चित प्रथम वर्षीय शैक्षिक परामर्शदाता होता है जो स्कूल स्तरों में परिवर्तन करने की प्रविधियों से भलीभाँति परिचित होता है और प्रवेश करने वाले छात्रों की तालमेल की समस्याओं का उसे ज्ञान होता है। इस योजना के अन्तर्गत प्रथम वर्षीय सामाजिक परामर्शदाता (जो विद्यार्थियों की कक्षा के बाहर की गतिविधियों तथा उनकी व्यक्तिगत समस्याओं की देखभाल करता है) तब तक उनका शैक्षिक परामर्शदाता बना रहता है जब तक कि वे स्कूल में रहते हैं। उच्चतर कक्षा के लिए भी एक निश्चित सामाजिक परामर्शदाता होता है जो स्नातकीय अवधि, अंतिम वृत्तों और कुछ स्नातकोत्तर योजनाओं के समस्त विवरणों की सार-संभाल करता है। इस प्रकार प्रत्येक छात्र को एक परामर्शदाता उपलब्ध होता है जो उसके साथ उसके अध्ययन काल तक रहता है, इसके अतिरिक्त और अन्य परामर्शदाता होते हैं जो विशिष्ट स्थितियों में उसकी सहायता करते हैं।

पूरे समय बनाम आंशिक समय का परामर्श कार्य अधिकांश अध्यापक-परामर्शदाता अंशकालीन सेवा के आधार पर कार्य करते हैं। प्रतिदिन उन्हें अध्ययन के एक या दो घण्टों से और कभी-भभी गृहकक्ष तथा अन्य कार्यों से भी मुक्त कर दिया जाता है। अन्य व्यक्ति परामर्श कार्य पर पूरा समय लगाते हैं। यह दूसरी व्यवस्था हानिकारक है। सप्ताहों और स्कूल वर्षों तक पूरा दिन निर्देशन और परामर्श कार्यों में काम करने से परामर्शदाता कक्षा की गतिविधियों से सम्पर्क गँवा बैठता है। कक्षा की पढ़ाई से पृथक् रहने के फलस्वरूप उन छात्रों को निर्देशन देने की कुशलता में कमी आ सकती है जो अपने स्कूल दिवस का अधिकांश समय कक्षा में बिताते हैं। कक्षा के प्रबन्ध और कार्यों की समस्याओं को समझने तथा उनसे सहानुभूति रखने के लिए व्यक्तिगत रूप से भाग लेना अत्यन्त लाभदायक है।

किन्तु कुछ उन कठिनाइयों के सम्बन्ध में भी कहा जाना चाहिए जो कक्षा और निर्देशन कार्यालय के उत्तरदायित्वों में निहित दो विभिन्न प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक करने के प्रयत्न में अध्यापक-परामर्शदाता के सम्मुख आती हैं। उसे ऐसा प्रतीत हो सकता है कि वह एक परिधि में चक्कर काट रहा है और किसी भी उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक नहीं निभा पा रहा है। वह किसी अभिभावक या छात्र से महत्त्वपूर्ण चर्चा कर रहा हो या निर्देशन कार्य का कोई महत्त्वपूर्ण चरण अभी पूरा न हुआ हो कि स्कूल का घण्टा बज जाय और उसे अधूरा कार्य छोड़ कर भागना पड़े। संभव है कि जिस समय उसका परामर्श का घण्टा हो, उस समय उसके बहुत से निर्देशनपात्र उससे मिलने के लिए खाली न हों, इसका तात्पर्य यह है कि इन विद्यार्थियों से मिलने की व्यवस्था स्कूल के समय से पहले या बाद में की जाय।

स्कूल के परामर्शदाता के कार्य स्कूल परामर्शदाता के निश्चित कार्य समूह हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि स्कूल की प्रत्येक नई नीति अथवा पाठ्यक्रम में वृद्धि या विस्तार उसके पहले से ही भारी बोझ में और वृद्धि करते हैं। उसके बहुत से दायित्वों में उसके प्रत्येक विद्यार्थी की स्वास्थ्य सम्बन्धी, शैक्षिक, सामाजिक और व्यावसायिक

आवश्यकताएँ सम्मिलित होती हैं। परामर्शदाता परीक्षण करने, उसके संशोधन और वृत्त लेखन में तथा परीक्षण के परिणामों की व्याख्या करने में भाग लेता है। विद्यार्थियों के कार्यक्रमों के निर्माण में सावधानीपूर्वक और सही-सही सहायता देना उसका दायित्व है। वह माता-पिताओं और उन बाहरी अभिकरणों से मिलता है जो उसके किसी न किसी छात्र में रुचि लेते हैं (देखिए चित्र १४)। वह समन्वयकर्त्ता, अपने सहयोगियों और मामले से सम्बन्धित उन अध्यापकों से चर्चा करता है जो उसके निर्देशन कार्यों में भाग लेते हैं। वह छात्रों की गतिविधियों को प्रेरित करता है और छात्रों द्वारा प्रारम्भ की गई परियोजनाओं का निर्देशन करता है। वह सामूहिक और

चित्र १४. परामर्शदाता और उसके सम्पर्क, बाल्टीमोर एम० डी०
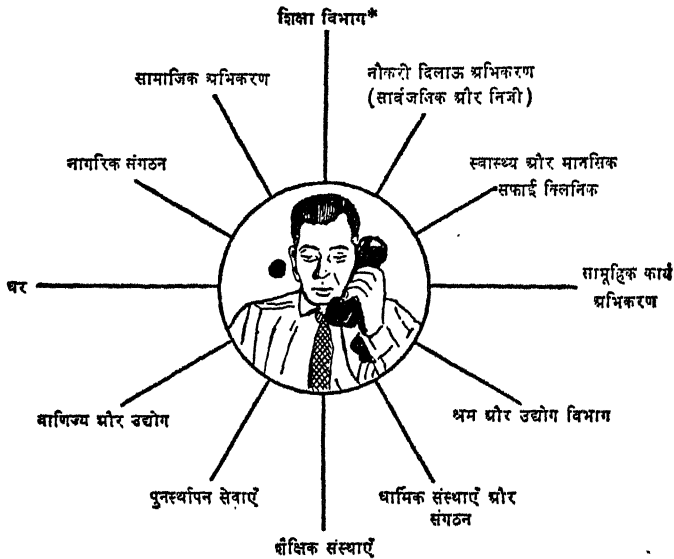
*प्रशासकीय कर्मचारी
माप और अनुसंधान कार्यालय
अन्य स्कूल में परामर्शदाता
पाठ्यक्रम कार्यालय
रुचि-परीक्षण विभाग
स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा विभाग
विशेष शिक्षा विभाग
विशेष सेवा विभाग
(घर का दौरा करने वाले
स्कूल का सामाजिक कार्यकर्ता)
चिकित्सा सेवाएँ (डाक्टर और नर्सें)
विषय निरीक्षक
अध्यापक

व्यक्तिगत स्थितियों में निर्देशन देता है। सेवाओं के समन्वयकर्त्ता के रूप में वह निर्देशन सेवाओं से सम्बन्धित समस्त व्यक्तिओं के लिए सब कुछ होता है, परामर्शदाता अपने छात्र समुदाय के समस्त छात्रों और व्यक्तिशः छात्र कल्याण में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए सर्वस्व होता है (देखिए परिशिष्ट)।

देश भर के स्कूल और स्कूल प्रणालियों से लेखकों को प्राप्त निर्देशन कार्यक्रमों की विवरणात्मक रिपोर्टों में परामर्शदाता के कर्त्तव्यों की विस्तृत सूची सम्मिलित की गई थी। उदाहरणार्थ विलमिंगटन, डेलावेयर में निर्देशन वर्कशाप ने प्रत्येक परामर्शदाता के सामान्य कर्त्तव्यों की सूची दी है और इसके अतिरिक्त विभिन्न स्कूल स्तरों से सम्बन्धित परामर्शदाता के विशिष्ट दायित्वों का पृथक्-पृथक् ब्यौरा दिया है। प्रत्येक परामर्शदाता के सामान्य कर्त्तव्यों की सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रही है:

सामान्य—प्रत्येक परामर्शदाता

उपलब्ध निर्देशन सेवाओं से कक्षा के नये अध्यापकों तथा स्कूल कर्मचारियों को परिचित होने में सहायता देता है।

प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए नियोजित दीक्षा कार्यक्रम में भाग लेता है और उसके एकीकरण में सहायता देता है। विद्यार्थियों और स्कूल के बीच समुचित सम्बन्ध बनाने का प्रयत्न करता है; स्कूल, घर और समुदाय के वांछनीय सम्बन्धों के विकास में सहायक होता है।

प्रत्येक नये विद्यार्थी के लिए समय की प्रगति के साथ जोड़ी जाने वाली परामर्शदाता की पुस्तिका का विकास करता है।

नये छात्रों पर विशेष ध्यान देते हुए उन विविध स्कूल वृत्तों की व्याख्या करता है जो छात्रों के लिए अपरिचित हैं।

स्थायी वृत्तों को पूर्ण बनाये रखने के लिए जानकारी प्रदान करने में सहायता देता है।

निर्देशन कार्य के हेतु प्रयोग में आने वाली परीक्षाएँ लेता है या इस कार्य में सहायता देता है। जब वांछनीय होता है तो परिणामों से छात्रों और अभिभावकों को सूचित करता है।

विद्यार्थी की योग्यताओं, अभिरुचियों, रुझानों और शारीरिक लक्ष्यों का यथासम्भव वस्तुगत माप प्राप्त करता है।

प्रत्येक विद्यार्थी (और/या अभिभावकों) को अपने अध्ययन की ऐसी पाठ्यविधि का नियोजन करने में सहायता देता है जिससे वह अपनी शैक्षिक और व्यावसायिक आवश्यकताओं तथा योजनाओं को पूरा करने के लिए कुशलता और संतोष का उच्चतम स्तर प्राप्त कर सके। आवश्यक बातों के लिए प्रत्येक विद्यार्थी के साथ वर्ष में कम से कम एक बार विस्तृत भेंट की जायेगी, इसके अतिरिक्त समय-समय पर उत्पन्न होने वाली स्थितियों का सामना करने के लिए और भी भेंटों का प्रबन्ध किया जायेगा।

प्रत्येक विद्यार्थी के साथ भेंट करके उसे सहायता और परामर्श देता है ताकि वह स्वयं को और अपनी समस्याओं को समझ सके ।

विद्यार्थियों की समस्त स्वास्थ्य समस्याओं में स्कूल को नर्सों से निकट सम्पर्क रखता है । आवधिक शारीरिक परीक्षाओं के लिए कक्षा की सूचियाँ बनाता है।

विद्यार्थी के घरेलू वातावरण, आर्थिक स्थिति और व्यक्तित्व के सम्बन्धित रूपों की जानकारी प्राप्त करता है ।

जब आवश्यकता होती है तब अभिभावकों से घर में, टेलीफोन पर, स्कूल आदि में बातचीत करता है । वांछनीय होने पर अभिभावकों की सामूहिक सभाएँ करता है ।

रिपोर्टों और सम्मेलनों द्वारा अन्य स्कूल के कर्मचारियों से छात्र के कल्याण के लिए जानकारी और सिफारिशों का विनिमय करता है ।

प्रत्येक विद्यार्थी की शक्तियों और दुर्बलताओं को समझना और उसकी योग्यताओं का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने के लिए प्रेरित करना उसका विशिष्ट उत्तरदायित्व है ।

भावात्मक कठिनाइयों के लक्षणों के प्रति उसे निरन्तर सचेत रहना चाहिए । यदि इन कठिनाइयों का ज्ञान प्रारम्भ में ही हो जाय तो बहुत-सी समस्याएँ अध्यापकों और परामर्शदाताओं द्वारा सुलझाई जा सकती हैं । कठिन समस्याएँ उपलब्ध विशेषज्ञों के पास भेजनी चाहिएँ ।

डीन, आचार्य या नर्स के द्वारा मनोवैज्ञानिक या सामाजिक कार्यकर्त्ता सेवा के लिए शिशु विकास और निर्देशन विभाग, मानसिक चिकित्सालय; गवर्नर बेकन हैल्थ सेंटर, व्यावसायिक पुनस्स्थापन, युवा सहायक विभाग, अस्पताल क्लिनिक, नेमूर्स क्लिनिक के पास समस्याग्रस्त छात्रों को भेजता है । (टिप्पणी : अधिकांश अन्य सामुदायिक अभिकरणों को छात्र, स्कूल और सामुदायिक अभिकरणों के समन्वयकर्त्ता द्वारा भेजे जाते है ।)

शैक्षिक और व्यक्तिगत समस्याओं अथवा योजनाओं के सम्बन्ध में छात्र को परामर्श देता है ।

कार्य जगत् के सम्बन्ध में—विशेषतः उन कार्यों के सम्बन्ध में जिनमें कि विद्यार्थियों की रुचि होती है—व्यावसायिक जानकारी एकत्रित करता है।

वास्तविक शैक्षिक और व्यावसायिक जानकारी विद्यार्थियों को देने के लिये क्षेत्रीय पर्यटन की व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से व्यवस्था करता है या व्यवस्था करने में सहायता देता है ।

उपयोगी प्रतीत होने पर डीन के साथ व्यवसाय सम्मेलनों की योजना बनाता है, संगठन और प्रबन्ध करता है ।

इच्छुक विद्यार्थियों को व्यावसायिक निर्देशन परामर्श समिति के सदस्यों से उनकी रुचि के व्यवसायों के सम्बन्ध में साक्षात्कार करने के लिए व्यावसायिक परामर्शदाता के पास भेजता है ।

विद्यार्थी को अपनी योग्यता और कुशलता के अनुकूल व्यावसायिक चुनाव करने में सहायता देता है।

समस्त व्यक्तियों (अर्थात् नर्स, सामाजिक कार्यकर्त्ता, मनोवैज्ञानिक, कक्षा का अध्यापक, अभिभावकों आदि) को लेकर स्कूल निर्देशन क्लिनिक की व्यवस्था करने में सहायता देता है ताकि एकत्रित सूचना का उपयोग उस छात्र की सहायता के लिए किया जा सके जो कुछ कठिनाई अनुभव कर रहा हो।

विद्यार्थी को पहल और स्वाधीनता का विकास करने में सहायता देता है ताकि वह आत्म-निर्देशन में प्रगति कर सके।

आगामी श्रेणी या स्कूल से सम्बन्धित कार्यों के विषय में जानकारी देता है जिसमें उस प्रकार के विषय भी सम्मिलित होते हैं जो पाठ्य-विधि में पढ़ाये जाते हैं अथवा जिनकी उनसे अपेक्षा की जाती है।

अध्यापकों तथा अन्य स्कूल कर्मचारियों और घर में प्राप्त जानकारी का विश्लेषण करके पाठ्य विधि और कार्यक्रमों के परिवर्तनों की उपयुक्तता का निश्चय करता है।

जो क्षमता-सम्पन्न विद्यार्थी बीच में ही अपनी पढ़ाई स्थगित कर देते हैं, उन्हें स्कूल में प्राप्त अनुभवों को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने में सहायता देता है; कुछ मामलों में ऐसे विद्यार्थी को कार्य-अध्ययन कार्यक्रम में भर्त्ती कराने का प्रयत्न करता है।

बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वाले को डेलावेयर स्टेट एम्प्लायमेंट सर्विस में पंजीकृत होने का सुझाव देता है।

सामूहिक निर्देशन की कक्षाओं की बैठकों, सामूहिक बैठकों—कालेज प्रेप, वाणिज्य शिक्षा और साधारण; व्यक्तिगत वितरण के लिए बुलेटिनों; अंग्रेजी की कक्षाओं के दौरों (जहाँ छात्र अनुसूचित होते हैं); अतिथि वक्ताओं के सत्रों; फिल्मों; वांछनीय लक्षणों और रवैयों के वादविवादों और सामाजिक तालमेल में वृद्धि करने वाले कार्यों द्वारा व्यवस्था करता है।

जो विद्यार्थी आगामी वर्ष उसके नियन्त्रण में होंगे, उन्हें अन्य छात्रों से मिलने के लिए स्कूलों को भेजने का निमन्त्रण स्वीकार करता है।

निर्देशन कार्यक्रम के समस्त स्तरों में प्रत्येक समय पर स्मरण दिलाते रहने की प्रक्रिया की वांछनीयता को स्वीकार करता है। यह स्मरण कराने की क्रिया छात्र के स्नातक हो जाने के पश्चात् कई वर्ष तक काम दिलाने, सिफारिश करने, कालेज की श्रेणियों और कक्षा के पुनर्मिलन के सिलसिले में चलती रहती है।

टिप्पणी : सामाजिक कार्य और सम्बन्धित दायित्व बहुधा परामर्शदाताओं को (उनकी तैयारी और अनुभव के कारण) उसी प्रकार सौंप दिये जाते हैं जिस प्रकार वे समस्त कर्मचारियों को सौंपे जा सकते हैं। व्यावसायिक कर्मचारी के रूप में परामर्शदाता ऐसे अतिरिक्त कर्त्तव्यों को अपने कार्य के रूप में स्वीकार कर लेता है। किन्तु ऐसे मामलों में उसे अपने आचार्य को यह परा-

मर्श देने का दायित्व है कि : (१) सामाजिक और कक्षा द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्य, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हुए भी उसके परामर्श सम्बन्धी कर्त्तव्यों से भिन्न और उनके अतिरिक्त हैं और उन्हें स्वीकार करने से स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम को परिमाण औररर श्रेष्ठता दोनों दृष्टियों से क्षति पहुँचेगी। इसके विपरीत, सामाजिक कक्षा द्वारा प्रदान किये गए निर्देशन कार्य (यह मान कर कि वह योग्यता प्राप्त है) के लिए अतिरिक्त समय की व्यवस्था करनी चाहिए तभी दोनों दायित्व सफलतापूर्वक निभाये जा सकते हैं।

परामर्श देने के लिए योग्यताएँ परामर्श से पूर्व के प्रशिक्षण और अनुभव की राशि और प्रकार प्रत्येक राज्य में पृथक्-पृथक् है। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, कुछ राज्यों को छोड़कर शेष सभी राज्यों ने कुछ न्यूनतम अपेक्षाएँ प्रमाणपत्र देने के लिए निर्धारित की हैं। वांछनीय प्रमाणीकरण के रूप या स्तर के अनुसार कुछ राज्यों की अपेक्षाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए न्यूयार्क राज्य में अस्थायी और स्थायी प्रमाणपत्र जारी किये जाते हैं। जो अध्यापक या अन्य कर्मचारी निर्देशन या परामर्श में कक्षा के पाँच घण्टों से अधिक समय लगाते हैं, वे किसी निर्धारित पाठ्य विधि में १६ श्रेय (credits) प्राप्त करने और अध्यापन या अन्य समुचित कार्य का तीन वर्ष का अनुभव होने पर ऐसी सेवा प्रारम्भ कर सकते हैं। पूरे समय के परामर्शदाता का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए पाँच वर्ष की अवधि में उन्हें कम से कम १४ अतिरिक्त श्रेय और पाँच वर्ष का अनुभव प्राप्त करना होगा, जिसमें दो वर्ष का अनुभव न्यूयार्क राज्य के सार्वजनिक स्कूलों में निर्देशन सेवाओं का और / या अन्य अनुभव होना आवश्यक है।

कुछ ऐसे मूल सिद्धान्त हैं जो अधिकांश स्कूल प्रणालियों और उच्चतर अध्ययन की संस्थाओं में समान हैं। बहुत-से राज्यों में परामर्श देने से पूर्व अध्यापन का अनुभव एक आवश्यक शर्त है। परामर्शदाता की नौकरी से पूर्व की शिक्षा में साधारणतया कालेज की उपाधि प्राप्त करना; अध्यापन तैयारी शिक्षा; मनोविज्ञान, समाज विज्ञान और अर्थशास्त्र का अध्ययन सम्मिलित होता है। कुछ राज्य स्नातकोत्तर उपाधि के साथ-साथ निर्देशन और कर्मचारी सेवा के क्षेत्र का अध्ययन भी चाहते हैं। निश्चित निर्देशन पाठ्य विधियों में सामान्यतया इन मूल बातों की तैयारी होनी चाहिए :

निर्देशन के सिद्धान्त और व्यवहार
व्यक्तिगत परामर्श की प्रविधियाँ
सामूहिक स्थितियों में परामर्श देना
निर्देशन कार्यक्रमों का संगठन और संचालन
शैक्षिक और व्यावसायिक सूचना
परीक्षण और माप
निरीक्षित परामर्श अनुभव*

* देखिये परिशिष्ट, निर्देशन कार्यक्रम में भाग लेने की तैयारी करने वाले को परामर्श

संयुक्त राज्य अमेरिका के शिक्षा कार्यालय ने परामर्शदाताओं के लिए उन अपेक्षित योग्यताओं की सूची बनाई है जिन्हें निर्देशन में निरीक्षित अभ्यास के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इन योग्यताओं को दो व्यापक श्रेणियों में संगठित किया गया है : (१) छात्रों के साथ कार्य, अध्यापकों के साथ कार्य, अभिभावकों के साथ कार्य और समुदायों के साथ कार्य के शीर्षक से समूहबद्ध किये गये परामर्शदाता के कर्त्तव्य और कार्य, और (२) व्यक्तिगत विश्लेषण, व्यावसायिक जानकारी, परामर्श कार्य और प्रशासकीय सम्बन्धों सहित प्रशासकीय प्रशिक्षण के क्षेत्र।*

इन व्यक्तिगत योग्यताओं की सूची इतनी बड़ी है कि उसे यहाँ प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। अतएव हम यहाँ केवल वे ही योग्यताएँ दे रहे हैं जो कार्य सम्बन्धी शीर्षक में ली गई हैं।

कार्य सम्बन्धी

१. छात्रों के साथ कार्य करने के लिए अपेक्षित योग्यताएँ। निम्न योग्यताएँ होनी चाहिए:

(क) पाठ्यक्रम और वैकल्पिक विषयों के चुनाव में छात्र को परामर्श दे सके।

(ख) सूचनाओं का चयन करके उन्हें छात्र को समझा सके।

(ग) शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत समस्याओं के स्रोत के सम्बन्ध में छात्रों को निर्देश कर सके।

(घ) यह निश्चय कर सके कि समस्त छात्रों के लिए कौन-सी सूचना एकत्रित की जाय।

(ङ) मामले का अध्ययन कर सके।

(च) विद्यार्थी के कार्य के स्वभाव का मूल्यांकन कर सके।

(छ) विद्यार्थी के व्यक्तित्व के रूपों का मूल्यांकन कर सके और सबल तथा दुर्बल दोनों क्षेत्रों का निश्चय कर सके।

(ज) छात्र की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उसकी पृष्ठभूमि का मूल्यांकन कर सके।

(झ) स्कूल रुझान, पढ़ाई और सफलता के लिए सामूहिक परीक्षण ले सके।

(ञ) छात्र की वर्तमान और विगत शैक्षिक सफलता का मूल्यांकन कर सके।

दिया जाता है कि जिस राज्य या राज्यों में वह कार्य करने की आशा करता है, वहाँ के प्रमाणीकरण की विशिष्ट अपेक्षाओं की जानकारी प्राप्त कर ले। देखिये (Guidance Workers Certification Requirements) यूनाइटेड स्टेट्स का स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग, वाशिंगटन डा० सी०।

*Supervised Practice in Counselor Preparation, पृष्ठ ७-१५, १९५२। स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण का संयुक्त राज्य विभाग, वाशिंगटन, डा० सी०।

(ट) विद्यार्थी की वर्तमान रुचियों और कार्यों का मूल्यांकन कर सके ।

(ठ) समस्याओं को समझने और सुलझाने में विद्यार्थियों की सहायता कर सके ।

(ड) विद्यार्थी के तालमेल की प्रविधियों का प्रयोग और उनकी व्याख्या कर सके ।

(ढ) सामाजिक चित्रण (Sociogram) कर सके और उन्हें समझा सके ।

(ण) जीवन-वृत्त सम्बन्धी रिपोर्टों के द्वारा छात्र के महत्त्वपूर्ण व्यवहार का वर्णन कर सके ।

(त) उस सूचना का मूल्यांकन कर सके जो विद्यार्थी अपनी शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत समस्याओं के विषय में रखता है।

(थ) संतोषजनक परामर्श स्थिति का निर्माण कर सके ।

(द) नियमित परीक्षण कार्यक्रम का संगठन और निर्देशन कर सके ।

(ध) आर्थिक संग्रह और सूचना के आलेख के लिये रूपों का चुनाव और निर्णय कर सके ।

(न) प्रभावशाली और आर्थिक उपयोग के लिए वृत्तों का संगठन और कार्य विधियों का संस्थापन कर सके ।

(प) पर्याप्त उपचारात्मक कार्य की व्यवस्था के लिए स्कूल के स्रोतों का उपयोग कर सके ।

(फ) पृथक्-पृथक् छात्रों को उनकी योग्यता के अनुसार काम दिलाने के कार्य में सहायता कर सके ।

(ब) निर्देशन कार्यों के लिए सामूहिक कार्य-विधियों का उपयोग कर सके ।

(भ) निर्देशन सेवाओं के मूल्यांकन के नियमित कार्यक्रम का संगठन और निर्देशन कर सके ।

(म) छात्र के लिए प्रभावशाली स्मरण-कार्यक्रम का निर्माण और विकास कर सके ।

(य) भावात्मक दृष्टि से अव्यवस्थित छात्रों को अपनी स्थिति समझने के योग्य बना सके, और आवश्यकता होने पर उन्हें दूसरों के पास भेज सके ।

सहयोगियों के साथ कार्य करने के लिए आवश्यक योग्यताएँ :

(क) प्रशासकों, निरीक्षकों और अध्यापकों का विश्वास और सम्मान प्राप्त कर सके ।

(ख) अशैक्षणिक सेवा के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों के साथ सहयोग कर सके ।

(ग) निर्देशन कार्यक्रम का संगठन, प्रारम्भ या उसमें सुधार कर सके ।

(घ) निर्देशन समिति के कार्य का नेतृत्व कर सके।
(ङ) निर्देशन सेवाओं से सम्बन्धित समस्याओं पर अध्यापकों के सामूहिक सम्मेलन कर सके।
(च) छात्र समस्याओं पर सामूहिक और गोष्ठी के वादविवाद को संगठित कर सके और उसे नेतृत्व दे सके।
(छ) सेवा-रत प्रशिक्षण के कार्यक्रम का संगठन और संचालन कर सके।
(ज) स्मरण दिलाने के कार्यक्रम और उपस्थिति पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं या परिवर्तनों के परिणामों की व्याख्या कर सके और उन्हें प्रभावशाली रीति से उपस्थित कर सके।
(झ) छात्रों की निश्चित समस्याओं पर पृथक्-पृथक् अध्यापकों की सहायता कर सके।
(ञ) निर्देशन कार्यक्रम के समस्त अंगों पर अनुसंधान कर सके और उसके अध्ययन का मूल्यांकन कर सके।

अभिभावकों के साथ कार्य करने के लिए आवश्यक योग्यताएं :

(क) सफलतापूर्वक घरों का दौरा कर सके।
(ख) अभिभावकों का विश्वास और सम्मान प्राप्त कर सके।
(ग) छात्रों की तालमेल की समस्या को सुलझाने में अभिभावकों का सहयोग प्राप्त कर सके।
(घ) छात्र-अभिभावक संघर्ष में छात्र और अभिभावक दोनों के साथ कार्य कर सके।
(ङ) अभिभावकों के सम्मेलनों का संगठन और निर्देशन कर सके।

समुदाय में कार्य करने के लिए आवश्यक योग्यताएँ :

(क) यह जान सके कि छात्रों को कब और कैसे भेजा जा सकता है।
(ख) अनेक सामुदायिक कार्यों में प्रभावशाली रीति से भाग ले सके।
(ग) स्कूल के समस्त कार्यक्रम की व्याख्या कर सके और यह बता सके कि निर्देशन कार्यक्रम इस कार्यक्रम का अंग किस प्रकार है।
(घ) मालिकों और अन्य सामाजिक समूहों में प्रभावशाली सम्बन्धों का विकास कर सके।
(ङ) वयस्कों के समूहों को स्कूल का निर्देशन कार्यक्रम प्रभावशाली रीति से बता सके।
(च) निर्देशन कार्यक्रम के लिए समाज का समर्थन प्राप्त कर सके।
(छ) समुदाय में स्थित अन्य निर्देशन अभिकरणों को जान सके और ऐसे निर्देशन कार्यक्रमों का विकास कर सके जो इन अभिकरणों की उपलब्ध सेवाओं का उपयोग कर सकें।

कोई भी अनुभवी परामर्शदाता समस्त परामर्श-सम्बन्धों में सफल परिणामों की आशा नहीं कर सकता। उसकी सफलता कुछ अंशों में उसके प्रशिक्षण की विशदता और गहनता पर निर्भर करती है। किन्तु सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उसका वह आधारभूत रवैया है जो कि वह उन लोगों के प्रति प्रदर्शित करता है जिनके साथ उसे कार्य करना है। मिनेसोटा विश्वविद्यालय के गिल्बर्ट रेन—जो राष्ट्रीय व्यावसायिक निर्देशन संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं, इन रवैयों को नए कौंसलर्स क्रीड* में इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं :

परामर्शदाता की प्रतिज्ञा

१. मैं इस बात को स्वीकार करूँगा कि मानव मेरे लिए इतना जटिल है कि मैं उसे पूर्णतया नहीं समझ सकता। मैं सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध कुशलता से उसे समझने का यत्न करूँगा और जब तक मैं जीवित हूँ तब तक उन कुशलताओं को प्रतिवर्ष विकसित करने का प्रयत्न करूँगा, किन्तु मैं व्यक्ति को पूर्णतया समझने की दिशा में ही बढ़ूँगा।

२. मैं व्यक्ति का सदैव उसके विशिष्ट वातावरण में अध्ययन करूँगा और यह समझूँगा कि मनुष्य को उस वातावरण के दबाव और माँगों से पृथक् करके मैं उसका वास्तविक अध्ययन नहीं कर सकता। स्थिति से संयुक्त मनुष्य ही मेरे अध्ययन का विषय होगा और मेरी सेवाओं का लक्ष्य होगा।

३. जिस व्यक्ति के साथ मैं व्यवहार करूँगा, उसकी सचाई का सम्मान करने में उसे निर्णय का वही अधिकार प्रदान करूँगा जो मैं अपने लिए चाहता हूँ। मैं प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व सम्बन्धी अधिकारों को उन्हें पवित्र मानकर सम्मान करूँगा और तोड़-मरोड़ कर उससे लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं करूँगा और न उसके जीवन में प्रवेश करने का यत्न करूँगा।

सेवा के निश्चित क्षेत्र

जैसा कि पाठक समझ चुके हैं, कुछ निर्देशन-केन्द्रित सेवाएँ पूरे समय या आंशिक समय के आधार पर व्यक्तिगत रूप से योग्यता प्राप्त और समुचित रूप से प्रशिक्षित विशेषज्ञों द्वारा चलाई जाती हैं। किस सीमा तक इनमें से किसी विशेष सेवा की आवश्यकता होती है अथवा वह उपलब्ध होती है, यह छात्रों की जनसंख्या के निर्माण पर और निर्देशन के प्रति सामुदायिक रवैयों पर निर्भर करता है।

उपस्थिति अधिकारी जिसे कभी आवारा अधिकारी कहा जाता था, उसके कर्त्तव्यों में केवल अनिच्छुक बच्चों को (शब्दशः अथवा आलंकारिक दृष्टि से कान

* सी० जी० रेन "Trends and Predictions in Vocational Guidance," *Occupations, The Vocational Guidance Magazine*, मई १९४७, पृष्ठ ५१३.

पकड़कर) स्कूल में घसीट कर लाना ही था। वर्तमान काल का उपस्थिति अधिकारी स्कूल की निर्देशन सेवाओं में सक्रिय रूप से भाग लेता है। उसका कर्त्तव्य अनुपस्थित विद्यार्थियों की जाँच करना और उनकी अनुपस्थिति के कारणों की खोज करना है। छोटे बच्चे जो स्कूल से अनुपस्थित रहते हैं, उसके अनेक कारण हो सकते हैं : बीमारी, माता-पिता का बहुत अधिक लगाव, घर के बहुत अधिक उत्तरदायित्व, स्कूल के कार्यों में सफलता का अभाव, अध्यापक और छात्र के बीच व्यक्तित्व सम्बन्धी भेद अथवा आवारागर्दी।

उपस्थिति अधिकारी की निर्देशन विधि का दिग्दर्शन सिटी स्कूल डिस्ट्रिक्ट, न्यू रौशैल, न्यूयार्क की निर्देशन सेवाओं में कराया गया है :

> यह उपस्थिति अधिकारी का उत्तरदायित्व है कि वह स्कूलों अथवा अन्य स्रोतों से सूचित अनुपस्थिति के समस्त मामलों की खोज करे और उनमें तालमेल बिठाये। सामाजिक वांछनीय पद्धतियों का उपयोग करते हुए वह अनुपस्थिति के मूल कारणों का निश्चय करता है। जब अनुपस्थिति के कारण ज्ञात हो जाते हैं, तो स्कूल प्रणाली और समुदाय के समस्त स्रोतों का उपयोग प्रत्येक छात्र के समुचित तालमेल के हित में किया जाता है। इस कार्य की प्रकृति के लिए समय की आवश्यकता होती है ताकि परामर्श कार्य और स्मरण कराने की पद्धति लाभदायक सिद्ध हो सके। लड़कों और लड़कियों, अभिभावकों, स्कूल के परामर्शदाताओं, स्कूल की नर्सों, अध्यापकों, आचार्यों, मनोवैज्ञानिकों, पादरियों और न्यायालय के प्रतिनिधियों के साथ सम्मेलन किये जाते हैं। जब तक तालमेल न बैठ जाय, इन मामलों का अनुसरण किया जाता है।

स्कूल का सामाजिक कार्यकर्त्ता बहुत से नवयुवक तालमेल की समस्याओं से पीड़ित होते हैं जिनका घर और/या स्कूल से बाहर की अन्य स्थितियों अथवा परिस्थितियों से सम्बन्ध होता है, किन्तु इसके कारण वे स्कूल से बहुत अधिक अनुपस्थित नहीं रहते। अथवा उपस्थिति अधिकारी का इससे प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता। ऐसी दशा में स्कूल का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह ऐसे प्रशिक्षित व्यक्ति की सेवाओं का उपयोग करे जो स्कूल के बाहर तालमेल न होने देने वाले तत्त्वों की खोज करे और जिन बच्चों का भलीभाँति तालमेल नहीं होता उनके कल्याण के विषय में समुदाय के साथ सहयोग करे।

कभी स्कूल अप्रशिक्षित व्यक्ति को नौकर रखा करते थे (अब भी कभी-कभी वे उन्हें नौकर रखते हैं) जिनको दौरा करने वाले अध्यापक कहा जाता था और जिनका कार्य स्कूल और घर के सहयोग में वृद्धि करना होता था। जब नवयुवकों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकता को और अधिक स्वीकार किया गया तो यह बात अनुभव की गई कि विशेष रूप से प्रशिक्षित कर्मचारी स्कूल और समुदाय के मध्य महत्त्वपूर्ण सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। किन्तु अपेक्षाकृत कम स्कूल अपने निर्देशन कर्मचारियों में पूरे समय का सामाजिक कार्यकर्त्ता रखते हैं। बढ़ती हुई स्कूल प्रणालियों में

सामाजिक कार्यकर्त्ता केन्द्रीय कार्यालय से संलग्न होते हैं और प्रत्येक स्कूल के साथ अंशकालीन कार्य के आधार पर कार्य करते हैं।

सामाजिक कार्य अनेक प्रकार से स्कूल के निर्देशन से भिन्न होता है। स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम का सम्बन्ध स्कूल के समस्त छात्रों के कल्याण से होता है; स्कूल के सामाजिक कार्य का उद्देश्य छात्रों के छोटे-छोटे समूहों की सहायता करना होता है, विशेषतः उनकी जिन्हें कि विशिष्ट सहायता की आवश्यकता होती है। स्कूल का परामर्शदाता साधारणतया अपना अधिकांश प्रशिक्षण कालेजों या विश्वविद्यालयों में प्राप्त करता है; सामाजिक कार्यकर्त्ता के लिए सामाजिक कार्य के स्नातक स्कूल में विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता होती है। किन्तु शिक्षा के इन दोनों क्षेत्रों में पर्याप्त बातें समान होती हैं ताकि परामर्शदाता और सामाजिक कार्यकर्त्ता पारस्परिक सहयोग से कार्य कर सकें।

जिन बच्चों की कठिनाइयाँ इतनी गंभीर होती हैं कि वे स्कूल के कर्मचारियों द्वारा नहीं सुलझाई जा सकतीं तो वे स्कूल के आचार्य या परामर्शदाता द्वारा सामाजिक कार्यकर्त्ता के पास भेज दिए जाते हैं। उन्हें भेजने के कुछ कारण निम्नलिखित हैं :

घर की अस्वस्थ परिस्थितियाँ
समाज-विरोधी व्यवहार
अत्यन्त अग्रगंता या संकुचित व्यवहार
अध्ययन क्षेत्र में गंभीर असफलता

सामाजिक कार्यकर्त्ता अपने पास भेजे गए छात्र के सम्बन्ध में समाज सेवा विनिमय से पूछताछ करता है ताकि उन कल्याण अभिकरणों की खोज की जा सके जिनका उस परिवार के साथ सम्पर्क रहा हो। वह नवयुवक, उसके अभिभावकों और स्कूल के उन कर्मचारियों के साथ साक्षात्कार करता है जो उस बच्चे के संसर्ग में आए हों। तब वह अपनी प्राप्त जानकारियों की रिपोर्ट तैयार करता है और इस मामले के अध्ययन को दृष्टि में रख कर या तो वह इस समस्या को सुलझाने की दिशा में स्कूल के साथ मिलकर कार्य करता है अथवा उस बच्चे को किसी समुचित सामुदायिक अभिकरण के पास भेज देता है।

स्कूल का मनोवैज्ञानिक शिक्षा में प्रशिक्षण और अनुभव रखने वाला मनो-वैज्ञानिक शिशु विकास, अध्ययन, छात्र-मूल्यांकन और व्यक्तिगत सम्बन्धों के विषय में अपने विशिष्ट ज्ञान का उपयोग करके अपने छात्रों—विशेषतः जो अपवादरूप हैं—का अधिक ज्ञान प्राप्त करने में परामर्शदाताओं और अध्यापकों की सहायता कर सकता है। यद्यपि कुछ स्कूलों में मनोवैज्ञानिक निर्देशन विभाग के पूरे समय के कर्मचारी के रूप में कार्य करते हैं, तो भी अधिक साधारण बात यह है कि जब-जब आवश्यकता होती है तब-तब प्रत्येक स्कूल को मनोवैज्ञानिकों की सेवाएँ उपलब्ध हो जाती हैं।

स्कूल के मनोवैज्ञानिक का प्रमुख उत्तरदायित्व यह है कि वह मूल्यांकन के चाहे किन्हीं भी स्तरीकृत यन्त्रों का उपयोग करके विद्यार्थियों की अध्ययन तत्परता का निश्चय करे अथवा उनकी रुचियों-रवैयों अथवा व्यवहार की धाराओं की खोज

करे और इस प्रकार उपलब्ध परिणामों का प्रयोग करे, सुधारे और उनकी व्याख्या करे। बहुत से स्कूलों में दैनिक, सामूहिक परीक्षण निर्देशन कर्मचारियों द्वारा या स्कूल के अन्य कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। किन्तु यदि मानसिक रूप से तेज या मन्द छात्रों के लिए विशेष कक्षाएँ चलाई जाती हैं तो इन कक्षाओं में प्रवेश राज्य द्वारा प्रमाणित मनोवैज्ञानिक द्वारा किये गए कुछ परीक्षणों के आधार पर होता है।

बहुत से कालेज और निम्नतर स्तर पर कुछ स्कूल एक मनोवैज्ञानिक को अपने यहाँ रखते हैं। वह स्कूल के परीक्षण कार्यक्रम के लिए ही उत्तरदायी नहीं होता अपितु तालमेल की सामान्य समस्याओं का भी उपचार करता है जो शारीरिक अवयव-जन्य कठिनाइयों के कारण उत्पन्न न होकर अन्य कारणों से होती हैं। कुछ स्कूल प्रणालियों में विशेष विभाग होता है जो न्यूयार्क सिटी में चीफ गाइडेंस ब्यूरो के आधीन होता है। बी० सी० जी० (Bureau of Child Guidance) वास्तव में स्कूल का निर्देशन विभाग नहीं होता। इसमें एक निर्देशक (मानसिक रोग चिकित्सक), मनो-वैज्ञानिक और मानसिक रोग चिकित्सक सामाजिक कार्यकर्त्ता होते हैं। मनोवैज्ञानिक उन अव्यवस्थित बच्चों के लिए परीक्षक और परामर्शदाता का कार्य करते हैं जो विशेष निदान और उपचार के लिए स्कूल के परामर्शदाताओं द्वारा भेजे जाते हैं। बी० सी० जी० के सदस्य नौकरी में लगे हुए अध्यापकों के लिए निर्देशन की पाठ्य विधियाँ भी चलाते हैं। इस प्रकार के विभाग की सेवाएँ अत्यधिक सहायक होती हैं, किन्तु, जैसा कि अधिकाँश निर्देशन कर्मचारियों के विषय में सत्य है, इन कर्मचारियों की संख्या इतनी कम है कि सेवा के सम्बन्ध में प्राप्त होने वाली सभी माँगों की पर्याप्त पूर्ति नहीं की जा सकती। बजट के अभाव में कर्मचारियों की सीमा बहुत कम रखनी पड़ती है।

मानसिक रोग चिकित्सक किसी नवयुवक की भावात्मक कठिनाइयाँ इतनी गंभीर और गंहरी हो सकती हैं कि स्कूल का निर्देशक अथवा मनोवैज्ञानिक उसकी समस्या का समाधान न कर सके। इस प्रकार की स्थिति में एक प्रशिक्षित मानसिक रोग चिकित्सक की सेवाओं की आवश्यकता होती है। प्रत्येक स्कूल को ऐसे छात्रों के उपचार के लिए मानसिक रोग चिकित्सक की सेवाएँ उपलब्ध करने का अवसर प्राप्त होना चाहिए जो स्पष्टतः गंभीर मानसिक रोग से पीड़ित प्रतीत होते हों। पक्षाघात-जन्य उन्माद (Dementia praecox) एक गंभीर मानसिक और भावात्मक रोग है, यदि शीघ्र ही इसका बोध हो जाय तो सुयोग्य विशेषज्ञों द्वारा इसकी चिकित्सा हो सकती है। निःसंदेह, नवयुवकों की प्रत्येक बात को लेकर मानसिक रोग चिकित्सक के पास नहीं दौड़ पड़ना चाहिए। यदि ऐसे प्रत्येक लड़के या लड़की को "मानसिक रोगी" मान लिया जाय जो भावात्मक दृष्टि से असंतुलित हों तो लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। किन्तु समस्त स्कूल कर्मचारियों—विशेषतः निर्देशन कर्मचारियों—को सावधान रहने की आवश्यकता है ताकि वे उस विचलित व्यवहार को तत्काल समझ सकें जिसका उपचार तालमेल के लिए किए जाने वाले निर्देशन सम्बन्धी प्रयत्नों से नहीं होता। ऐसे मामलों में अच्छे मानसिक रोग चिकित्सक की सेवाएँ प्राप्त करनी

चाहिएँ। या तो वह स्कूल-चालित निर्देशन क्लिनिक के सदस्य के रूप में स्कूल प्रणाली से सम्बन्धित हो अथवा सामुदायिक स्वास्थ्य अभिकरण या शिशु-निर्देशन क्लिनिक का कर्मचारी हो।

स्वास्थ्य सेवा कर्मचारी समय-समय पर विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की जाँच करने के लिए डाक्टर की आंशिक सेवाओं की आवश्यकता होती है। प्रारंभिक स्कूलों में एक निश्चित अवधि के पश्चात् बच्चों के स्वास्थ्य की डाक्टर द्वारा परीक्षा कराई जाती है। बहुत से हाई स्कूलों में स्वास्थ्य शिक्षा विभाग के सदस्य निर्देशन के इस रूप के लिए उत्तरदायी होते हैं। किन्तु माध्यमिक स्कूल बढ़ती हुई संख्या में इस बात को अनुभव करने लगे हैं कि उन्हें ऐसे डाक्टर की सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिएँ जो आवश्यकता के समय तत्काल बुलाया जा सके। बहुत से कालेजों में डाक्टर नौकर रहते हैं। इसके अतिरिक्त वे उन छात्रों के लिए भी उपचार की व्यवस्था रखते हैं जो अपने घर से दूर कालेज होस्टलों में या कालेज की बस्ती में रहते हैं।

स्कूल भवन में—विशेषत: बड़े नगरों के स्कूलों में—एक पूरे समय की नर्स रखना लगभग आवश्यक हो गया है। बहुत से नर्सरी स्कूलों और किंडरगार्टन में दौरा करने वाली नर्स बच्चों के स्वास्थ्य की नित्य परीक्षा करती है। रोगों को रोकने और बच्चों का स्वास्थ्य बनाए रखने में हम आजकल जो रुचि ले रहे हैं उसके फलस्वरूप अधिकांश स्कूल प्रणालियों में—उनके बजट की क्षमता के अनुसार—बच्चों के स्वास्थ्य और निर्देशन के लिए पर्याप्त व्यवस्था होने लगी है।

स्वास्थ्य सेवा का दूसरा अंग दाँतों की देखभाल है जिसका प्रचार बड़े नगरों के कुछ स्कूलों में बढ़ रहा है। देश के कुछ भागों में, स्कूल यह माँग करते हैं कि उनके विद्यार्थी इस बात की लिखित साक्षी दें कि उन्होंने वर्ष में कम से कम एक बार दातों की परीक्षा और सफाई कराई है। जिन अभिभावकों के परिवार में स्कूल जाने वाले बच्चे बड़ी संख्या में होते हैं, उन्हें दाँतों की वार्षिक देखभाल के लिए धन व्यय करने में कठिनाई हो सकती है। अतएव स्कूल के प्रशासक और स्वास्थ्य विभाग ऐसी व्यवस्था कर रहे हैं कि यह कार्य या तो स्कूल से संलग्न दाँत के डाक्टर की अंश-कालीन सेवाओं द्वारा सम्पन्न कराया जाय या सामुदायिक दाँत के क्लिनिक या निजी दाँत के डाक्टरों द्वारा सहकारिता के सम्बन्धों के आधार पर कराया जाय।

स्कूल-न्यायालय सम्पर्क अधिकारी बड़े नगरों में कुछ लड़के अपने अपराधों अथवा समाजविरोधी कार्यों के कारण पुलिस की दृष्टि में चढ़ जाते हैं और वे न्यायालयों में घसीटे जाते हैं। नवयुवक अपराधियों के सम्बन्ध में लोगों की बढ़ती हुई धारणा यह है कि उन्हें सुधार कर पुन: स्थापित किया जाय न कि उनके अपराधों के लिए उन्हें केवल दंड दिया जाय। अतएव कोई कार्रवाई करने से पूर्व न्यायाधीश तथा शिशु न्यायालय के अन्य कर्मचारी यह प्रयत्न करते हैं कि वे अपराधी की पृष्ठभूमि की कुछ जानकारी प्राप्त करें, जिसमें घर, स्कूल और पड़ोस के अनुभव तथा सम्बन्ध भी सम्मिलित होते हैं।

न्यायालय सम्पर्क अधिकारी का यह कर्त्तव्य है कि वह लड़के या लड़की के विषय में जानकारी प्राप्त करे और न्यायालय, घर तथा स्कूल के साथ सहयोग करे। यद्यपि बाद का अंतिम निर्णय करना न्यायाध्यक्ष का कर्त्तव्य है, तथापि स्कूल का प्रतिनिधित्व बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है क्योंकि वह न्यायालय को उस पर प्रभाव डालने वाले तत्त्वों से अवगत ही नहीं कराता अपितु वह घर, स्कूल और सम्भवतया प्रोबेशन अधिकारियों और उनके साथ मिल कर कार्य करता है जिन पर नवयुवक के रवैये और व्यवहार को सुधारने के लिए प्रोत्साहन देने का उत्तरदायित्व है।

व्यावसायिक और काम दिलाने वाले परामर्शदाता कुछ जूनियर और सीनियर हाई स्कूलों में रुचि रखने वाले और अपेक्षाकृत सुयोग्य अध्यापक परामर्शदाताओं पर छात्रों को व्यावसायिक निर्देशन देने और स्कूल में रहते आंशिक कार्य तथा स्नातक हो जाने के पश्चात् पूरे समय के कार्य पर लगाने का उत्तरदायित्व होता है। इस प्रकार की व्यवस्था बहुत कम सफल होती है। अध्यापक-परामर्शदाता को आँशिक अध्यापन कार्य के साथ व्यावसायिक निर्देशन को मिला देना चाहिए। विद्यार्थियों को व्यावसायिक अवसरों से परिचित कराने, उनके व्यावसायिक चुनावों में सहायता देने, कार्य का पता लगाने और समुचित काम दिलाने में समय लगता है। छात्र का कक्षा का अध्ययन और मालिक की सुविधा—दोनों पर विचार करने की आवश्यकता है, साथ ही अध्यापक-परामर्शदाता के अध्यापन के घण्टों को भी ध्यान में रखना चाहिए। इसका परिणाम साधारणतया कक्षा से टेलीफोन और टेलीफोन से कक्षा तक की भाग-दौड़ होता है।

जो स्कूल पूर्णतया प्रशिक्षित, व्यावसायिक और काम दिलाने वाले परामर्शदाता की सेवाएँ प्रदान कर सकता है, वह भाग्यवान है, विशेषतः उस समय जब कि समस्त नौकरियाँ स्कूल द्वारा सीधी दिलाई जा सकें। कुछ स्कूल समुदाय यूनाइटेड स्टेट्स एम्प्लायमेन्ट सर्विस की स्थानीय शाखाओं की सुविधाओं का लाभ उठाते हैं। स्कूल के व्यावसायिक परामर्शदाता और सरकारी नौकरी दिलाने वाले अधिकारियों के मध्य अच्छा कार्यकारी सम्बन्ध स्थापित हो सकता है। नौकरी दिलाने वाले अधिकारी उन संभावित पदों के विषय में परामर्शदाता को सूचित करते रहते हैं जो कि खाली होने वाले होते हैं और परामर्शदाता चुनाव करने तथा नौकरी पर नियुक्त करने के लिए प्रत्याशियों और उनके वृत्तों को नौकरी अभिकरण के पास भेजते हैं।

विद्यार्थियों को नौकरी स्वयं स्कूल द्वारा दिलाई जाय अथवा केन्द्रीय सामुदायिक अभिकरण द्वारा यह कार्य किया जाय, इस विषय में निर्देशकों में मतभेद है। कुछ लोग यह अनुभव करते हैं कि स्कूल द्वारा नौकरी दिलाने का प्रयत्न अधिक व्यक्तिगत हो सकता है, इसलिए इसके अधिक सफल होने की संभावना है। अन्य व्यक्ति यह अनुभव करते हैं कि यह बात इतनी अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है क्योंकि सामुदायिक नौकरी अभिकरण द्वारा अधिक संख्या में नौकरी प्रस्तुत करने के अवसर हो सकते हैं।

अपने सामूहिक और व्यक्तिगत परामर्श कार्य तथा नौकरी दिलाने के साथ-साथ व्यावसायिक परामर्शदाता स्कूल के व्यावसायिक और कार्य सम्बन्धी पुस्तकालय को सब प्रकार से पूर्ण बनाने के लिए भी उत्तरदायी है। वह छात्रों को प्रस्तुत की गई सामग्री का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए भी प्रोत्साहन देता है।

परामर्शदाता का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, किन्तु बुरी तरह उपेक्षित कार्य बीच में ही स्कूल छोड़ देने वाले छात्रों और स्नातकों को स्मरण कराने का—विशेषतः नौकरी की सफलता और नौकरी के संतोष की दृष्टि से—है। निर्देशन कार्य की इस कमी के अनेक कारण समझ में आते हैं। समय का अभाव भी एक कारण है। भूतपूर्व छात्रों से यदि समय-समय पर डाक द्वारा सम्बन्ध स्थापित किया जाय तो भी मँहगा पड़ता है। स्वयं नवयुवकों की ओर से असहयोगपूर्ण रवैया एक दूसरा कारण है। कुछ स्नातक और बहुधा बीच में ही स्कूल छोड़ देने वाले विद्यार्थी स्पष्टतः अपने मातृ-विद्यालय में रुचि लेना बंद कर देते हैं। या तो उन्हें भेजे जाने वाले पत्रों का वे उत्तर ही नहीं देते, और यदि देते भी हैं तो अपने स्वयं के और अपने कार्यों के विषय में गलत या अपर्याप्त सूचना देते हैं।

कुछ हाई स्कूलों और कालेजों में समस्त स्नातकों के लिए स्मरण दिलाने के पंचवर्षीय प्रयत्न किये जाते हैं। यह समय खाने वाली परियोजना है, किन्तु इसके परिणाम स्कूल के लिए मूल्यवान होते हैं। कुछ व्यावसायिक परामर्शदाता अपने विद्यार्थियों के मालिकों से, उनके व्यवसाय स्थलों पर जाकर अथवा टेलीफोन या डाक द्वारा सम्पर्क बनाये रखते हैं। स्कूल का सक्रिय संगठन एक अच्छा माध्यम है जिससे भूतपूर्व छात्रों के लिए स्कूल की निर्देशन सेवाएँ उपलब्ध रह सकती हैं।

स्कूल के अन्य कर्मचारी हमने अनेक बार कहा है कि स्कूल का प्रत्येक कर्मचारी छात्र-कल्याण के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी होता है। कक्षा का अध्यापक इस कार्यक्रम का मूलाधार होता है। पुस्तकालयाध्यक्ष, सहायक क्लर्क और संरक्षण कर्मचारी भी उन कार्यों में भाग लेते हैं जो स्कूल के जीवन से अच्छा तालमेल करने के लिए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से छात्रों को सहायता देने के लिए स्कूल में किये जाते हैं।

अध्यापक हम निर्देशन कार्यक्रम में अध्यापक-परामर्शदाता का दायित्व पहले ही देख चुके हैं। यहाँ हम संक्षेप में पूरे समय के अध्यापक के उस प्रभाव के सम्बन्ध में विचार करेंगे जो कक्षा में छात्रों पर पड़ता है। यह कहा गया है कि निर्देशन का प्रारम्भ और अंत अध्यापक के साथ ही होता है।

सचेत अध्यापक यह जानकर कि कक्षा के बाहर छात्र को सहायता की आवश्यकता होती है, उसे समुचित परामर्शदाता के पास भेज देता है। सहयोगपूर्ण अध्यापक ही गलत तालमेल वाले विद्यार्थी के सम्बन्ध में परामर्शदाता की सिफारिशों को कक्षा में पूरा करता है। सम्बन्धित स्कूल स्तरों पर अध्यापकों के जो विशेष निर्देशन सम्बन्धी उत्तरदायित्व होते हैं, उन पर बाद में विचार किया जाएगा (देखिए अध्याय १२ से

१९)। व्यापक रूप से, मैन्युअल डिपार्टमेंट आफ गाइडेंस, चाइल्ड वेलफेयर एण्ड अटेंडेंस आफ दि रिचमौंड, कैलीफोर्निया स्कूल्स के अनुसार :

> (निर्देशन) सेवा की प्रभविष्णुता एक बड़ी सीमा तक अध्यापक के सहानुभूतिपूर्ण विवेक पर निर्भर करती है। बच्चे के सम्बन्ध में अध्यापक का ज्ञान, स्कूल में बच्चे की समस्या की प्रकृति, कक्षा के अनुभवों का उसका उपयोग अथवा सहपाठियों के साथ उसका सम्बन्ध, निर्देशन निरीक्षक के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बातें हैं।
>
> अध्यापक और निर्देशन निरीक्षक तथा स्कूल के अन्य कर्मचारी मिलकर अभिभावकों की सहायता करते हैं जिससे वे अपने बच्चों की समस्याओं को अधिक भली भाँति समझ सकें और यह भी जान सकें कि बच्चे के अच्छे ताल-मेल के लिए वे और स्कूल किस प्रकार से कार्य कर सकते हैं।

अध्यापक के वांछनीय व्यक्तित्व के प्रशंसनीय लक्षण ये हैं : छात्रों में रुचि, धैर्य, अनुसरणशीलता, सचाई, उत्साह, मैत्री, चातुर्य, सहयोग, अन्य व्यक्तियों का ध्यान रखना, न्याय भावना, प्रसन्नता और विनोद भावना। अध्यापक का प्रत्यक्ष व्यवहार और व्यक्त रवैया नवयुवकों पर शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं। वह उपदेश की अपेक्षा उदाहरण देकर छात्रों को अधिक प्रभावित कर सकता है। रवैये और भावनाएँ पकड़ी भी जाती हैं और सिखाई भी जाती हैं। वे उस अध्ययन स्थिति का उप-उत्पादन हैं जिसमें विद्यार्थी और अध्यापक एक साथ रहते तथा कार्य करते हैं। जो अध्यापक स्थिति के कारण नहीं, स्वभाव से ही सही कार्य करता है, वह अपने छात्रों से सम्मान तथा प्रशंसा प्राप्त करता है। वह अनुकरण करने योग्य है और जो उसके व्यवहार का अनुकरण करते हैं, उनके उससे लाभान्वित होने की आशा की जा सकती है।

जब कक्षा का अध्यापक अपने विद्यार्थियों का अध्ययन करता है, भिन्न-भिन्न योग्यता वाले विद्यार्थियों के अनुकूल पाठ्यक्रम की सामग्रियों और कार्यविधियों को ढालता है, तालमेल की समस्याओं को न बढ़ने देने का प्रयत्न करता है और स्कूल में उपलब्ध समस्त सुविधाओं का लाभ उठाता है तो वह अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह में मिलने वाली सफलता की परीक्षा कर सकता है। (इन क्षेत्रों को अंतर्हित करने वाली प्रश्नावली के लिए देखिए परिशिष्ट, इसका निर्माण मिशीगन में उपयोग के लिये किया गया था)।

पुस्तकालयाध्यक्ष अध्ययन कार्यों के सिलसिले में विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले अनुसंधान पर आधुनिक शैक्षिक-पाठ्यक्रम और कार्यविधियाँ अधिकाधिक बल दे रही हैं। अतएव पुस्तकालयाध्यक्ष—जो कुछ प्रणालियों में अध्यापक-पुस्तकालयाध्यक्ष का पद रखता है—निर्देशन कर्मचारियों में से एक मूल्यवान व्यक्ति है। जबकि विद्यार्थी अनुसंधान कार्य में व्यस्त होते हैं तो यह संदर्भ-सामग्री खोज निकालने में नवयुवकों की सहायता करती है, उन्हें अधिक घनिष्ठता से जान और समझ सकती है। वह न केवल उनके अध्ययन कार्यों का ही निर्देशन करती है अपितु उनके व्यवहार और

चित्र १५. बाल्टीमोर एम० डी० में स्कूल कर्मचारियों के निर्देशन कार्य
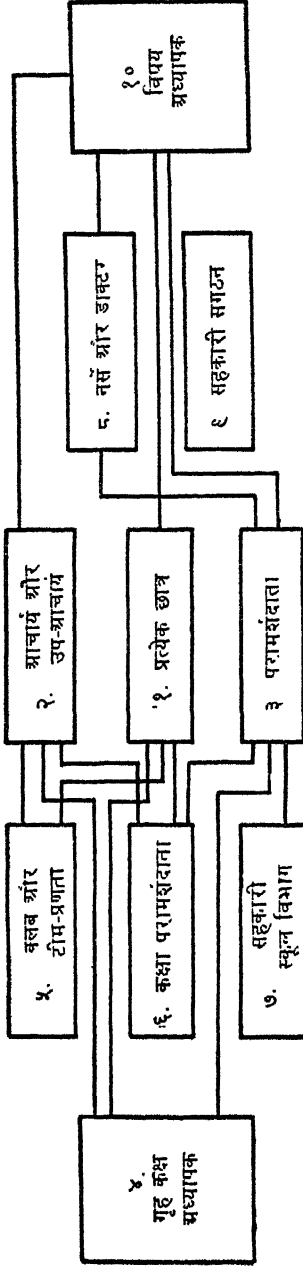
*१. प्रत्येक छात्र

२. आचार्य और उप आचार्य

निकाय के सदस्यों, अभिभावकों तथा दूसरों को समझने और भाग लेने के लिए आवश्यक प्रेरणा देने के हेतु नेतृत्व करते हैं।

स्कूल में निर्देशन सेवाओं का समीकरण करते हैं।

उपस्थिति, समय की पाबंदी और अनुशासन का निरीक्षण करते हैं।

छात्रों के समूहीकरण के लिए नीतियों का विकास करते हैं।

कक्षा के लिए मुख्य सूचियाँ बनाते हैं।

जनतंत्री स्कूल के वातावरण में लचीला पाठ्यक्रम और कक्षा के बाहर भी विविध गतिविधियाँ चलाते हैं।

३. परामर्शदाता

छात्रों में विद्यमान अंतर को जानने और व्यक्ति के ताल‍मेल के लिए सिफारिश करने के हेतु वृत्तों का अध्ययन करते हैं।

अनुसंधान ब्यूरो द्वारा संचालित छमाही परीक्षा कार्यक्रम के (माध्यमिक स्कूल में) निर्माण चेयरमैन के रूप में कार्य करते हैं।

आवश्यकता होने पर परीक्षण करते हैं या परीक्षण की व्यवस्था करते हैं।

छात्रों के संग्रहीत वृत्तों की व्याख्या करने में, समस्याओं को समझने में, समाधान खोजने में, इन योजनाओं का प्रारम्भ करने में और आवश्यकता होने पर इनमें सुधार करने में, जब मुख्य सूची से

छात्र की आवश्यकता पूरी होती हो तो सूची तैयार करने में उन्हें
सहायता देने के लिए विद्यार्थियों से साक्षात्कार करते हैं।

वर्तमान शैक्षिक, व्यावसायिक और सामाजिक सूचना एकत्रित
व संगठित करते हैं और समूहों तथा कक्षाओं को प्रदान करते हैं।

अभिभावकों, प्रशासकों, निरीक्षकों और अध्यापकों से चर्चा
करते हैं।

स्कूल छोड़ देने वाले अथवा स्नातक हो जाने वाले छात्रों से
सम्पर्क रखते हैं।

कार्यक्रम के मूल्यांकन और उनमें परिवर्तन करने के लिए
•निरन्तर किये गये अध्ययन से प्राप्त सूचनाओं से अन्य कर्मचारियों
को अवगत कराते हैं।

निर्देशन कार्यक्रम के बाह्य रूपों और व्यवहारों से कर्मचारियों
को सभा सम्मेलनों द्वारा अवगत कराते हैं।

स्कूल और समुदाय में उपलब्ध विशेष सेवाओं का उपयोग
करते हैं।

४. गृहकक्ष अध्यापक

स्कूल के नागरिक के रूप में विद्यार्थियों को अधिकारों और
दायित्वों की दीक्षा देते हैं।

अनुपस्थिति और देरी से आने के कारणों का विश्लेषण करते हैं
और प्रत्येक छात्र के साथ कार्य करके इन कार्यों को दूर करने का
यत्न करते हैं।

प्रत्येक छात्र के परीक्षण सम्बन्धी तथ्यों, चरित्र की विशेषताओं,
श्रेणियों, जीवन वृत्तों, कक्षा के बाहर की गतिविधियों, स्कूल और
समुदायिक जीवन में उनके योग से सम्बन्धित जानकारी का संचय
करके उसका अध्ययन करते हैं।

स्कूल परम्पराओं, स्कूल और समुदाय में विचरण के नियमों
और कक्षा के बाहर की गतिविधियों के सम्बन्ध में सूचना देते हैं।

विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं और सम्बन्धों पर दृष्टि रखते हैं।

स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से पीड़ित छात्रों को स्कूल के डाक्टर
और नर्स के पास भेजते हैं।

जिन छात्रों को विशेष अध्ययन या सहायता की आवश्यकता
होती है, उनकी सूचना परामर्शदाताओं को देते हैं।

कार्यालय और छात्रों के मध्य सम्पर्क अधिकारी का कार्य करते हैं।

किसी विद्यार्थी की समस्या को लेकर होने वाले सम्मेलन में
भाग लेते हैं।

५. क्लब और टीम प्रणेता

अनुभव के व्यावसायिक और गैर-व्यावसायिक रूप दिखाते हैं।

सामाजिक कुशलताओं को प्रयोग करने, सभाएँ नियोजित करने
व चलाने, धन संग्रह और व्यय करने तथा कार्यक्रम का प्रचार करने
के अवसर प्रदान करते हैं।

६. कक्षा के परामर्शदाता

सामाजिक कार्यों, नृत्यों, भोजों, धार्मिक ग्रन्थों, खेलों और सामु-
दायिक आन्दोलनों द्वारा स्कूल के मनोबल का निर्माण करते हैं।

समह को सर्वश्रेष्ठ योग देने में प्रत्येक विद्यार्थी की सहायता करते हैं।

सामाजिक विकास और सच्ची नागरिकता के महत्त्व पर बल देते हैं।

७. सहकारी स्कूल विभाग

प्रशासकीय कर्मचारी। विशेष शिक्षा विभाग।
अनुसंधान ब्यूरो। विषय निरीक्षक।
रुझान परीक्षण विभाग।
डाक्टरी सेवाएँ : डाक्टर और नर्सें।
विशेष सेवाएँ : शिशु निर्देशन क्लिनिक, गृह-आगंतुक, आगंतुक अध्यापक।
विद्यार्थी के वर्तमान स्कूल के अतिरिक्त अन्य स्कूलों के अध्यापक।

८. नर्सें और डाक्टर

सावधानी से और समय-समय पर जाँच करके स्वस्थ छात्रों को स्वस्थ रखते हैं।

शारीरिक कमियों को सुधारने का प्रयत्न करते हैं।

शारीरिक कमियों को सुधारने के लिए छात्रों और अभिभावकों से साक्षात्कार करते हैं और आवश्यकता होने पर लापरवाही के परिणामों और सुधार करने की रीतियों से अवगत कराते हैं।

किसी छात्र की समस्या को लेकर होने वाले सम्मेलन में भाग लेते हैं।

६. सहकारी संगठन

शैक्षिक संगठन। श्रम और उद्योग विभाग।
सामूहिक कार्य और सामाजिक अभिकरण। वाणिज्य और उद्योग।
स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य क्लिनिक। नागरिक संगठन।
धार्मिक संस्थाएं और संगठन। नौकरी अभिकरण।

१०. विषय अध्यापक

छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों और विषयों में योग्यताओं का निदान करते हैं।

व्यक्तिगत भेदों को ध्यान में रखकर शिक्षण विधि अपनाते हैं।

विषय के जीवन सम्बन्धी मूल्य (व्यावसायिक दृष्टि से सम्बन्धित) का उद्घाटन करते हैं।

अध्ययन के स्वभाव का विश्लेषण करते हैं और यह बताते हैं कि कठिनाइयों पर कैसे विजय पाई जा सकती है।

विशेष योग्यताओं, प्रतिभाओं, रुचियों और कमियों के सम्बन्ध में भावात्मक स्थायित्व का विकास करने के अवसर प्रदान करते हैं।

विद्यार्थियों के तालमेल में सहायता देने के लिए होने वाले सम्मेलनों में भाग लेते हैं।

रवैयों पर सूक्ष्म दृष्टि भी रखती है और उसके फल की सूचना डीन अथवा समुचित परामर्शदाता को दे सकती है और देती है। अनेक अवसरों पर अध्यापक-पुस्तकालयाध्यक्ष छात्रों को तालमेल की गंभीर समस्याओं के समाधान में भारी सहायता दे सकती है।

उन स्रोत सामग्रियों में जो कि स्कूल पुस्तकालय में होनी चाहिएँ, पुस्तकों का भारी चुनाव तथा अन्य पठन सामग्री, श्रव्य-दृश्य सामग्री होती है जिनमें विविध प्रकार की फिल्में, फिल्मों की पट्टियाँ और रिकार्ड होते हैं। पुस्तकालय को विद्यार्थियों और अध्यापक दोनों के लिए समान रूप से कार्य की प्रयोगशाला कहा जा सकता है। इस प्रकार पुस्तकालयाध्यक्ष अनेक पाठ्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियों का केन्द्र बन जाता है। पुस्तकालयाध्यक्ष की प्रभविष्णुता (१) बच्चों में रुचि, (२) विविध पाठ्य-विधियों की सामग्री से परिचय, (३) विद्यार्थियों और अध्यापकों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए चिन्ता, और (४) ऐसी सामग्री को चुनने और समझने की योग्यता जिसका शैक्षिक, व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक तालमेल पर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है, विशेष महत्त्व रखते हैं।

सहायक क्लर्क वृत्तों को रखना निर्देशन कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग है। एक कुशल सचिव की अन्य कर्मचारियों द्वारा बहुत प्रशंसा होती है। यदि सचिव वृत्त-रक्षा योग्यता के साथ-साथ नवयुवकों में रुचि और निरीक्षण के आधीन निर्देशन के कुछ छोटे-मोटे कार्यों में भाग लेती है, तो वह कर्मचारी मण्डल की एक मूल्यवान सदस्या होती है।

संरक्षण कर्मचारी अध्यापक और विद्यार्थियों के अनेक कार्यों के प्रति संरक्षक इंजीनियर और उसके सहकारियों द्वारा जो रवैया प्रदर्शित किया जाता है, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि वह निकाय के सदस्यों, और विद्यार्थियों, दोनों को जल्दी स्कूल ले आता है और वहाँ देर तक उन्हें अटकाये रखता है, जिससे स्कूल की सफाई के कार्य में बाधा पड़ती है। छात्र परियोजना के निर्माण और प्रदर्शन में संरक्षण कर्मचारियों की भी सहयोगपूर्ण सेवाओं की आवश्यकता हो सकती है। जबकि ये सभी पुरुष स्कूल भवन के सब भागों में अपने कर्त्तव्यों का पालन करने में व्यस्त होते हैं तो वे विद्यार्थियों को भली प्रकार से जान जाते हैं। इस सिलसिले में एक संरक्षक इंजीनियर को यह कहते सुना गया था कि "यह अच्छी बात है कि मैंने कुछ मनोविज्ञान पढ़ा है और मैं आपसे अपने विद्यार्थियों के विषय में बात करता हूँ। अन्यथा वे मुझे पागल बना डालते।" सब प्रकार के मामलों में उनके सहयोग और अध्यापकों तथा छात्रों के प्रति उनकी मैत्री के कारण स्कूल के संरक्षण कर्मचारी स्कूल के निर्देशन कर्मचारियों के लिए निश्चित रूप से उपयोगी हो सकते हैं।

स्कूल और समुदाय माता-पिताओं, स्थानीय स्वास्थ्य, कल्याण और निर्देशन अभिकरणों और अन्य सामुदायिक समूहों से स्कूल के सम्बन्ध अत्यधिक महत्त्व रखते हैं। स्कूल-घर-समुदाय सहयोग के विविध रूपों की चर्चा ११वें अध्याय में की गई है।

स्कूल के भीतर और स्कूल के बाहर सहयोग देने वाले व्यक्तियों और समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों का सार प्रस्तुत करने के लिए बाल्टीमोर, मेरीलैंड में स्कूल कर्मचारियों के निर्देशन कार्यों को चित्र १५ में प्रस्तुत किया गया है। यह सुझाव दिया जाता है कि इस अध्याय में सेवा के जिन विविध क्षेत्रों पर विचार किया गया है उनकी समीक्षा करते हुए पाठक इस चार्ट का सावधानी से अध्ययन करें।

इस चार्ट में निम्नलिखित स्कूल कर्मचारी सम्मिलित किये गये हैं:

१. प्रत्येक छात्र।
२. आचार्य और उप-आचार्य।
३. परामर्शदाता।
४. गृहकक्षा अध्यापक।
५. क्लब और टीम संचालक।
६. कक्षा के परामर्शदाता।
७. सहकारी स्कूल विभाग।
८. नर्सें और डाक्टर।
९. सहकारी संगठन।
१०. विषयों के अध्यापक।

यह स्मरणीय है कि इस सूची में इन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है: उपस्थिति अधिकारी, स्कूल का मानसिक रोग चिकित्सक, पुस्तकालयाध्यक्ष, सहायक क्लर्क और संरक्षक कर्मचारी वर्ग।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. प्रारंभिक स्कूल, जूनियर हाई स्कूल और सीनियर हाई स्कूल के आचार्य के निर्देशन सम्बन्धी उत्तरदायित्वों पर क्रमशः विचार कीजिए।
२. स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम में कालेज के प्रधान को किस सीमा तक और किस प्रकार भाग लेना चाहिए?
३. छोटे स्कूल के निकाय के सदस्यों के निर्देशन सम्बन्धी उत्तरदायित्वों की तुलना बड़े स्कूल के निकाय के सदस्यों के उत्तरदायित्वों से कीजिए।
४. परामर्श से सम्बन्धित किस कार्य को आप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझते हैं? क्यों?
५. कक्षा के अध्यापकों के निर्देशन सम्बन्धी दायित्वों पर ब्यौरेवार विचार कीजिए।
६. अध्यापक-परामर्शदाता के विशिष्ट कर्त्तव्यों की सूची बनाइए।
७. ऐसे अध्यापक परामर्शदाता या कक्षा के सलाहकार का वर्णन कीजिए जिसे आप पसन्द करते हैं और उसका भी वर्णन कीजिए जिसने आपकी कोई सहायता नहीं की। इस अंतर का क्या कारण था?
८. अध्यापकों के लिए नौकरी में रहते हुए दी जाने वाली निर्देशन पाठ्यविधि में प्रारंभिक स्कूल स्तर पर कौन-कौन से विषय सम्मिलित करने चाहिएँ?
९. निर्देशन कर्मचारियों को जो निकाय से सहयोग प्राप्त नहीं होता उसके कुछ कारण बताइये।
१०. निर्देशन में अध्यापक-समिति की कार्यविधि के पक्ष और विपक्ष में तर्क दीजिए।

११. विलमिंगटन, डेलावेयर कार्यक्रम में दिए गए स्कूल परामर्शदाताओं के कर्त्तव्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
१२. निर्देशन कर्मचारियों के उत्तरदायित्वों में से अनुशासन सम्बन्धी मामलों को निकालने के पक्ष और विपक्ष में तर्क दीजिए।
१३. व्यावसायिक परामर्शदाता की व्यक्तिगत शैक्षिक और अनुभव सम्बन्धी योग्यताएँ क्या होनी चाहिएँ ?
१४. क्या सम्पर्क बनाये रखने के कार्यक्रम का आपको कोई अनुभव था ? आपके सम्मुख जो कठिनाइयाँ आईं, उनमें से कुछ का उल्लेख कीजिए।
१५. निश्चित उदाहरण देकर बताइये कि स्कूल के पुस्तकालयाध्यक्षों, स्कूल क्लर्कों और स्कूल के संरक्षकों के निश्चित निर्देशन दायित्व होते हैं।
१६. संयुक्त राज्य अमेरिका के शिक्षा कार्यालय द्वारा सुझाई गई परामर्शदाताओं की योग्यताओं में से क्या आप कोई योग्यता हटाना चाहेंगे ? कौन सी ?
१७. अध्यापक-परामर्शदाता को परामर्श कार्य से पूर्व दिए जाने वाले प्रशिक्षण और योग्यता के न्यूनतम कार्यक्रम की रूपरेखा बताइये।
१८. परामर्शदाता के प्रमाणीकरण के लिए अध्यापन के अतिरिक्त अन्य अनुभव क्यों मूल्यवान हैं ? क्या आप इस आवश्यकता को स्वीकार करते हैं ? अपने मत का युक्तियुक्त समर्थन कीजिए।

७

निर्देशन और पाठ्यक्रम

जनतंत्र इस सिद्धान्त पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुकूल अपनी प्रतिभाओं को विकसित करने का अवसर दिया जाय। सहयोगपूर्ण कार्य और व्यक्तियों तथा समूहों के मध्य स्वस्थ पारस्परिक सम्बन्ध भी अच्छे जनतंत्रीय जीवन के आधार हैं। जो भी पाठ्यक्रम नवयुवकों को अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न करने के लिए प्रेरित करता है, वह प्रसन्न, कर्त्तव्यपरायण नागरिकों को उत्पन्न करने का अपना दायित्व पूरा करता है।

निर्देशन और शिक्षण

जब हम किसी भी स्कूल स्तर पर पाठ्यक्रम और शैक्षणिक पद्धतियों के विषय में सोचते हैं तो हमें अनेक मूलभूत शैक्षिक सिद्धान्तों पर विचार करना पड़ेगा। इन सिद्धान्तों में कुछ इस प्रकार हैं : (१) स्कूल के शैक्षिक उद्देश्य, (२) वह सीमा जहाँ तक अध्ययन सम्बन्धी अनुभव इन बाह्य रूपों की पूर्त्ति करते हैं, (३) संगठन का वह रूप जो इन अनुभवों को अधिकतम व्यापक बनाता है, और, (४) उस सीमा को निश्चित करना जहाँ तक स्कूल के लक्ष्य प्राप्त किए जा रहे हैं।

शिक्षा का एक लक्ष्य रचनात्मक जीवन के आधार का विकास है। समस्याओं को समझने और उनके विषय में स्पष्टता से विचार करने, व्यक्तियों, स्थितियों और परिस्थितियों के सम्बन्ध में संतोषजनक रवैये का विकास करने, दैनिक कार्यों का बुद्धिमानीपूर्वक नियोजन करने और उपयोगी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पर्याप्त आत्म-निर्देशन का उपयोग करने में बच्चों की सहायता करना इसमें सम्मिलित है। इस प्रकार व्यक्ति अपने सतत दैनिक अनुभवों से शनैः शनैः योग्य नागरिक बनना सीखते हैं।

यहाँ हमारा सम्बन्ध स्कूल की उन गतिविधियों से है जो शिक्षा के उद्देश्यों और लक्ष्यों को पूरा करने में योग दे सकती हैं। प्रत्येक स्कूल कर्मचारी—चाहे वह

किसी पद पर हो—का यह दायित्व है कि वह स्कूल के सम्पूर्ण कार्यक्रम को इस योग्य बनाने में यथाशक्ति योग दे जिससे स्कूल के छात्र और वह समाज, जिसका कि स्कूल एक अंग है, अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकें। अतएव प्रत्येक व्यावसायिक कर्मचारी का यह कर्त्तव्य है कि वह बच्चे को अपेक्षित आदर्श से तालमेल बिठाने और उसकी आवश्यकताओं तथा योग्यताओं के अनुकूल एक ढाँचा बनाने में सहायता दे। जब बच्चा आत्म-निर्देशन के दैनिक अनुभवों में रहता और बढ़ता है तो उसकी निर्वाचन की स्वतंत्रता सुरक्षित रहती है।

निर्देशन-केन्द्रित पाठ्यक्रम

निर्देशन पर आधारित पाठ्यक्रम में अध्ययन की पाठ्य विधि की अपेक्षा बहुत कुछ होता है। इसमें अध्ययन के वे समस्त अवसर सम्मिलित होते हैं, जो बढ़ते हुए बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्कूल प्रदान कर सकते हैं। इसका आधार यह सिद्धान्त है कि बच्चे केवल पाठ्य सामग्री में ही पारंगत न हों अपितु वे कार्य-विधियों, पाठ्य सामग्री के प्रति रवैये, मूल्यों के ज्ञान और व्यवहार के रूपों को भी जानें।

पाठ्यक्रम के मूल सिद्धान्त जिस पाठ्यक्रम में स्कूल द्वारा प्रदान किए जाने वाले समस्त कार्य और अध्ययन की स्थितियाँ होती हैं वह पाठ्यक्रम इतना विस्तृत और सक्षम होता है कि उसमें विद्यार्थी अपनी व्यक्तिगत विभिन्न स्थितियों के बावजूद आत्म-अभिव्यक्ति कर सकते हैं। निर्देशन पर आधारित पाठ्यक्रम (१) अध्ययन का समन्वय, (२) सोद्देश्य गतिविधि, (३) खेल और कार्य के मध्य संतुलित आंतरिक सम्बन्ध, (४) अध्ययन के सृजनात्मक रूप, (५) शिशु के व्यवहार पर ताल-मेल बिठाने वाले प्रभावों, और (६) शिक्षा के अंतिम लक्ष्यों की आवश्यकताओं को स्वीकार करता है।

निर्देशन पर आधारित पाठ्यक्रम इतना लचीला हो जाता है कि विभिन्न व्यक्तित्व रखने वाले अध्यापक अपनी पृथक्-पृथक् कार्य-विधियों में पाठ्यक्रम सम्बन्धी सामान्य सुझावों को स्वीकार कर सकते हैं। पाठ्यक्रम में सम्मिलित अध्ययन की इकाइयों में उन्हें पर्याप्त विकल्प प्राप्त होने चाहिए जिससे उद्देश्य की निरंतरता की बलि चढ़ाए बिना उनकी व्यक्तिगत अभिरुचि और कार्यप्रणालियों की पूर्त्ति हो सके। पाठ्यक्रमों का निर्माण करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें विद्यार्थियों की पृथक्-पृथक् रुचियों और विविध व्यक्तित्वों के अनुसार अपनाया जा सके।

यह आवश्यक नहीं कि कोई पाठ्यक्रम अपने निर्माण में अध्ययन की उन गति-विधियों तक ही सीमित रहे जो स्कूल के कमरे में या खेल के मैदान में होती हैं। इसमें वे सामाजिक गतिविधियाँ भी आ जानी चाहिएँ जो विद्यार्थी को अपना बौद्धिक क्षितिज विस्तृत करने और काल्पनिक अनुभवों की अपेक्षा वास्तविक अनुभवों के आधार पर अपने ज्ञान को विकसित करने का अवसर प्रदान करती हैं।

अध्ययन सम्बन्धी कुछ गतिविधियों में कक्षा में पारंगत हुआ जा सकता है, किन्तु कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिनका वास्तव में निरीक्षण करने और जिनमें भाग लेने से ही निपुणता प्राप्त हो सकती है। अतएव सफल शिक्षा के लिए स्कूल के संचालक सामुदायिक सुविधाओं का अधिकाधिक उपयोग करने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्कूल के बाहर के अध्ययन में प्राप्त होने वाला अनुभव महंगा होता है, किन्तु बहुधा इतना सस्ता भी होता है कि विश्वास नहीं किया जा सकता। अनुभव की इन कुछ खाइयों को पाटने के लिए अब कक्षा में टेलीविजन का प्रयोग किया जाता है। टेलीविजन और कक्षा से बाहर के कार्यों से प्राप्त होने वाला अध्ययन सम्बन्धी लाभ इतना मूल्यवान है कि उन पर होने वाला धन और शक्ति का अतिरिक्त व्यय अपव्यय नहीं है। स्कूल के बाहर के अनेक अनुभवों और पुस्तकों के अध्ययन पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम से अध्यापक भी लाभ उठा सकते हैं।

पाठ्यक्रम के समन्वय में वही कार्य नहीं होता जो कि उसमें सम्मिलित किया जाता है, अपितु प्रत्येक कार्य के लिए दिया गया समय और छात्र के लिए उसका मूल्य भी उसमें सम्मिलित होता है। निश्चित समय वाली सूचियाँ बहुधा विद्यार्थी के कार्य की सफलता में हस्तक्षेप करती हैं। चतुर अध्यापक अपनी अध्यापन सम्बन्धी इकाइयों को अपनी निजी समय सीमाओं के अनुकूल बनाकर इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न करेगा। किन्तु ठसाठस भरे हुए पाठ्यक्रम के कारण अध्यापक के लिए यह असंभव हो जाता है कि वह अध्ययन की कुशलता के हेतु वांछनीय गति से चल सके। इससे मन्दबुद्धि छात्रों को बहुधा कठिनाई होती है, विशेषतः उस समय जब कि अपूर्ण जानकारी के फलस्वरूप गलत धारणा बन जाए। अध्ययन में पर्याप्त कुशलता अधिकाधिक कठिन होती जाती है और निर्देशन परामर्शदाता पर अतिरिक्त कार्य बढ़ जाता है।

छात्र का हित अध्ययन-प्रक्रिया का प्रारम्भिक बिन्दु होना चाहिए। उसको दिए जाने वाले कार्य उसकी क्षमता की सीमा में होने चाहिए ताकि उसे सफलतापूर्वक अध्ययन करने का संतोष और अधिक तथा श्रेष्ठ कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हो सके। प्रत्येक विद्यार्थी को उसके मानसिक स्तर वाले विद्यार्थियों के साथ यथासंभव स्पर्द्धा करनी चाहिए, न कि उससे अधिक निकृष्ट अथवा श्रेष्ठतर विद्यार्थियों के साथ। जो पाठ्यक्रम अध्ययन-क्षमता की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के ज्ञान पर आधारित होता है और जिसमें पृथक्-पृथक् विद्यार्थी की आवश्यकताओं के अनुकूल विस्तार या सुधार हो सकता है, वह शिक्षकों और छात्रों—दोनों—के लिए समान रूप से संतोषजनक होता है।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार सुनियोजित पाठ्यक्रम अपरिवर्तनीय नहीं होता। जैसे-जैसे शैक्षिक नेता बच्चों के साथ कार्य करते हैं, वैसे-वैसे उसमें परिवर्तन और विकास होते जाते हैं। विकासशील पाठ्यक्रम बच्चों के दैनिक जीवन में कार्य करता है, उनकी आवश्यकताओं पर आधारित होता है, आगे पढ़ने के लिए उन्हें प्रेरित करता

है, अध्ययन के लिए उनकी क्षमताओं के अनुकूल होता है और उनके आत्म-बोध, आत्मानुभव और आत्म-निर्देशन के विकास में उनकी सहायता करता है।

स्कूल के कर्मचारियों के दायित्व की विस्तृत कल्पना और वांछनीय सामाजिक लक्ष्यों की दिशा में प्रत्येक शिशु की योग्यता के विकास की शैक्षिक प्रक्रिया के सम्बन्ध में उनकी चिन्ता के कारण स्कूल के पाठ्यक्रम से नई अपेक्षाएं की जाने लगीं। इस आलोचना पर भी ध्यान दिया गया है कि शिक्षण के विभिन्न स्तर एक-दूसरे से बहुत अधिक स्वतंत्र रहे हैं। उदाहरणार्थ, प्रारंभिक स्कूल का पाठ्यक्रम उन छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता जो माध्यमिक स्कूल में जाने वाले हैं, जूनियर हाई स्कूल का पाठ्यक्रम नवयुवक को सीनियर हाई स्कूल के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं करता और सीनियर हाई स्कूल के पाठ्यक्रम का कालेज के कार्यक्रम से तालमेल नहीं बैठता। इसके अतिरिक्त माध्यमिक स्तर पर विभिन्न विषयों में भी कोई ताल-मेल या एकरसता नहीं आई है। परिणाम यह हुआ है कि आलोचकों ने अपेक्षित सामग्री की पुनरावृत्ति या अभाव की कटु आलोचना की है।

निर्देशन-केन्द्रित पाठ्यक्रम का सृजन

पाठ्यक्रम का नियोजन सहकारितापूर्ण होना चाहिए। उसे अध्यापकों, निरीक्षकों, निर्देशन परामर्शदाताओं, अभिभावकों, पाठ्यक्रम विशेषज्ञों और स्वयं बच्चों के सर्वश्रेष्ठ विचारों को संगठित करना चाहिए। जिस अध्यापक, निर्देशन परामर्श-दाता अथवा नागरिक ने पाठ्यक्रम के निर्माण में सहायता दी है, वह संभवतः उसके सफल संचालन के लिए यथाशक्ति योग प्रदान करने के लिए प्रेरित होगा। इस योजना में भाग लेने-वाला प्रत्येक व्यक्ति अध्ययन सम्बन्धी परिणामों का बुद्धिपूर्वक मूल्यांकन कर सकता है, चाहे यह मूल्यांकन समाज के भाग न लेने वाले सदस्यों की आशाओं के अनुकूल न हो। जिस पाठ्यक्रम का अध्यापक अनुसरण करता है, उसमें उसकी आस्था होनी चाहिए। उससे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह ऊपर से लादे गए पाठ्यक्रम को—जिसके निर्माण में उसका कोई हाथ न रहा हो—पूर्णतः समझ लेगा अथवा उसे बिना आपत्ति के स्वीकार कर लेगा।

पाठ्यक्रम में सुधार निर्देशन में प्रशिक्षित अध्यापक निर्देशन-केन्द्रित पाठ्य-क्रम की इकाइयों के विकास में रुचि रखते हैं। स्कूल के पाठ्यक्रम के विषय उपयुक्त हों, यह निर्देशन परामर्शदाताओं की चिन्ता का प्रमुख विषय है क्योंकि वे बच्चों के साथ-साथ अध्यापकों, निरीक्षकों और प्रशासकों के साथ कार्य करते हैं। अध्यापक और स्कूल के अन्य कर्मचारी मूल्यांकन और सुझाव के द्वारा समान समस्याओं पर घनिष्ठता से कार्य कर सकते हैं। चूंकि परामर्शदाता अपने परामर्शपात्रों की अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयों को भलीभाँति समझ सकते हैं, इसलिए वे पाठ्यक्रम के सुधार में अच्छा योग दे सकते हैं। यदि छात्रों को पाठ्यक्रम की योजना बनाने में भाग लेने दिया जाय तो वे बहुधा अच्छे सुझाव दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त, जब परामर्शदाता

अथवा सुयोग्य अध्यापक समूह निर्देशन सत्रों में छात्रों से मिलते हैं तो वहाँ होने वाले पाठ्यक्रम से सम्बन्धित वाद-विवाद महत्त्वपूर्ण होते हैं।

निर्देशन को विशेषता देने वाले अध्यापकों और परामर्शदाताओं के कर्त्तव्य पाठ्यक्रम समिति के सदस्यों के रूप में स्कूल से सम्बन्धित स्तर के कर्त्तव्यों से भिन्न होते हैं। प्रारम्भिक स्कूल के स्तर पर अध्यापक अपने छात्र समूह के प्रत्येक सदस्य के विकास का मौलिक अध्ययन के विविध माध्यमों के द्वारा निर्देशन करता है और परामर्शदाता (यदि कोई होता है तो) अध्यापक के साथ मिलकर इस विकासशील प्रक्रिया का उत्तरदायित्व निभाता है।

माध्यमिक स्कूल के स्तर पर विभागीकरण के फलस्वरूप अध्यापक से यह आशा की जाती है कि वह छात्र निर्देशक के साथ-साथ पाठ्य-विषय का विशेषज्ञ भी हो। निर्देशक परामर्शदाता का यह कर्त्तव्य है कि सम्बन्धित विषयों में अध्ययन सम्बन्धी अनुभवों के समन्वय में छात्रों और अध्यापकों की सहायता करे। परामर्शदाता को पाठ्यक्रम के विविध क्षेत्रों का पूर्ण ज्ञान होता है, उसका ज्ञान उस अध्यापक से अधिक होता है जो साधारणतया एक विषय का विशेषज्ञ होता है। इसलिए परामर्शदाता विषय सामग्री में कुशलता प्राप्त करने की छात्र की प्रगति को ही प्रभावित नहीं कर सकता अपितु वह ऐसे सुझाव भी दे सकता है जो पाठ्य विधि की सीमा को पार कर जाते हैं और इसके द्वारा वे स्नातकों अथवा स्कूल छोड़ जाने वालों की स्कूल के बाहर की गतिविधियों में सहायता करते हैं।

पाठ्यक्रम की सामग्रियों की स्वीकृति पाठ्यक्रम की सामग्रियों को छात्र के भावनात्मक और बौद्धिक विकास स्तर के अनुकूल स्वीकार करना चाहिए। अध्यापक का एक तात्कालिक उत्तरदायित्व प्रत्येक विद्यार्थी की पृष्ठभूमि का यथासंभव ज्ञान प्राप्त करना है ताकि शिक्षण की समुचित इकाइयों का आयोजन किया जा सके। घरेलू और सामाजिक जीवन में उत्पन्न होने वाले आधारभूत अनुभवों और सामाजिक अथवा अन्य प्रतिबन्धों दोनों का ज्ञान होना चाहिए तभी अध्यापक ऐसी शिक्षा प्रदान कर सकेगा जो सम्बन्धित छात्रों के भावात्मक और बौद्धिक विकास को हानि पहुँचाने के स्थान पर सहायता पहुँचा सकेगी। घर और समुदाय की लाभप्रद स्थितियों के सम्बन्ध में जानकारी अध्यापक और परामर्शदाता—दोनों के लिए मूल्यवान् होगी।

विद्यार्थियों के सम्बन्ध में जानकारी एकत्रित करने में परामर्शदाता का महत्त्वपूर्ण भाग होता है। चूँकि वह अपने नियमित कार्य में नित्य प्रति लगा रहता है, इसलिए बहुधा वह अत्यन्त आवश्यक सामग्री एकत्रित कर लेता है। वह पिता का व्यवसाय, घर की विशेष समस्याएँ, अपने परिवार में छात्र की स्थिति और महत्त्व, परिवार के विभिन्न सदस्यों के रवैये और विश्वास, नवयुवक की सम्पत्ति तथा अन्य महत्त्वपूर्ण बातों का पता लगा सकता है। चूँकि सूचना के ये अंश उन बातों को समझने में महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं जिनसे बच्चा सुविज्ञ (tick) बनता है, इसलिए परामर्शदाता इन

सूचनाओं से अध्यापक को अवगत कराता है ताकि वह शिक्षण कार्यों को अधिक सार्थक बना सके। इन साधनों से कक्षा में एकरूपता बढ़ती है।

सहकारिता का मूल्य निर्देशन पर आधारित पाठ्क्रम का महत्त्व उस सीमा पर निर्भर करता है जहाँ तक अध्यापक परामर्शदाता और स्कूल के अन्य कर्मचारी ऐसे पाठ्यक्रम सम्बन्धी कार्यों की व्यवस्था मिलकर कर सकते हैं जिसमें कि विद्यार्थी भी भाग ले सकें। जितना अधिक मिलकर कार्य होगा और उद्देश्य की एकता जितनी घनिष्ठ होगी, निर्मित होने वाला मूल पाठ्यक्रम उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा। वह व्यक्तियों के बौद्धिक भेदों की स्वीकृति और उनकी आवश्यकताओं, रुचियों और उद्देश्यों के सम्मान पर आधारित होना चाहिए। जब विद्यार्थियों के जीवन स्कूल के भीतर और बाहर श्रेष्ठता की दृष्टि से प्रभावित करने वाले होते हैं, उस समय पाठ्यक्रम अत्यधिक उपयोगी बन जाता है।

अध्ययन का अच्छा वातावरण निर्माण करने और अध्ययन सम्वन्धी प्रतिक्रियाओं को आमन्त्रित करने वाली प्रविधियों का उपयोग करने के लिए स्कूल के कर्मचारियों में सहयोग की आवश्यकता है। जो अध्यापक अध्ययन की मनोविज्ञान और व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं को समझते हैं, वे इस सम्भावना में भी वृद्धि करेंगे कि निर्देशन पर आधारित पाठ्यक्रम से सब छात्रों के लिए अधिक लाभदायक परिणाम निकलेंगे। जब अध्ययन की इकाइयों की सामग्रियाँ एकत्रित की जाएँ तो अध्ययन की एकरूपता की आवश्यकता पर बल देना चाहिए।

पाठ्यक्रम को सक्रिय बनाने के प्रयत्न शिक्षा में रुचि रखने वाले दार्शनिकों, विशेषतः जान डेवी, की बच्चे में बढ़ती हुई अभिरुचि और मनोवैज्ञानिकों के अनुसन्धान से प्राप्त परिणामों के फलस्वरूप पाठ्यक्रम में सुधार करने सम्बन्धी बीसवीं शताब्दी का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जो निर्देशन आन्दोलन के समानान्तर था। पाठ्यक्रम को उसकी कार्य-पद्धति में अधिक सक्रिय बनाने का प्रयत्न किया गया जिससे अनेक आकर्षक वाक्यांशों का प्रचलन हुआ, उनमें से कुछ हैं : "व्यक्तिकरण", "भंडार वृद्धि", "वृद्धि", द्रुत प्रगति", तथा "अध्ययन की समरसता"। विविध स्कूल समुदायों में प्रयोगात्मक पाठ्यक्रमों का निर्माण किया गया ताकि सम्बन्धित समुदायों के अध्ययन की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्त्ति हो सके। उनके सफल संचालन के कारण कुछ पाठ्यक्रम अन्य स्कूलों अथवा स्कूल-श्रृंखलाओं द्वारा अक्षरशः स्वीकार कर लिये गये जहाँ वे अपेक्षित उद्देश्य की पूर्त्ति करने में बहुधा असफल हो रहे हैं। उनकी असफलता का मुख्य कारण यह है कि वे ऊपर से लादे गये थे और जिन स्कूलों में उन्हें जारी किया गया था वे उनकी अध्ययन सम्बन्धी आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं थे।

इनमें से कुछ "नवीन" पाठ्यक्रम ठोस मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक सिद्धान्तों पर आधारित थे। समुचित परिवर्तनों के पश्चात् उनकी बहुत-सी मौलिक धारणाओं ने वर्तमानकालीन पाठ्यक्रम के निर्माण और उपयोग पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला है। सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रयोगों में से कुछ की सूची संक्षिप्त विवरण सहित निर्माताओं के नाम के साथ यहाँ दी जा रही है :

पाठ्यक्रम	विवरण
डाल्टन लेबोरेटरी योजना हैलन पार्कहर्स्ट	यह योजना अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, व्यक्ति द्वारा पहल और सामूहिक अन्तर्कार्य पर बल देती है। कार्य सौंपे जाते हैं जो एक मास में समाप्त करने होते हैं। विद्यार्थी उस कार्य का चुनाव कर सकता है जिसे वह पहले समाप्त करना चाहता है। प्रातःकाल का समय शैक्षिक कार्य में बीतता है, विशेषतः कला, संगीत जैसे विषयों का अध्ययन किया जाता है, और अपराह्न सत्रों में शारीरिक शिक्षा दी जाती है।
विनेटका योजना कार्ल्टन वाशबर्न	यह योजना विद्यार्थी को प्रत्येक विषय में अपने अध्ययन की निजी गति को अपनाने की अनुमति देती है। निरन्तर अध्ययन के लिए विद्यार्थी की तत्परता पर इसका आधार होता है जिसका निश्चय प्रत्येक बिषय की पूर्ववर्ती जाँच से किया जाता है। जब तक बच्चा अध्ययन सामग्री के लिए निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर लेता तब तक वह अपना अध्ययन जारी रखता है।
परियोजना पद्धति विलियम एच० किल्पैट्रिक	यह योजना विद्यार्थियों को उत्पादक-उपभोक्ता समस्याओं जैसी परियोजनाओं और अभ्यास परियोजनाओं के निर्माण और क्रियान्वयन में एक साथ मिलकर कार्य करने का अवसर प्रदान करती है। बच्चे की रुचि और योग्यता के अनुसार अध्ययन का व्यक्तिकरण कर दिया जाता है।
गतिविधि कार्यक्रम	इस योजना के द्वारा पाठ्यक्रम में अनेक गतिविधियों को समाविष्ट करने का यत्न किया जाता है। अपनी दैनिक गतिविधियों, अनुसन्धान और अभिव्यक्तियों की योजना बनाने में और खेतों की यात्रा के कार्यक्रम बनाने में बच्चे भाग लेते हैं।
अनुभव-पाठ्यक्रम जान डेवी और अनुयायी	इस योजना की मान्यता है कि बच्चे के अनुभवों का मूल्य इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस सीमा तक अपने विचार और व्यवहार में

अनुभवों को सक्रिय बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। डेवी का विश्वास था कि अनुभव में "विचित्र रूप से संयुक्त सक्रिय और निष्क्रिय तत्त्व" सम्मिलित होते हैं।

केन्द्रित पाठ्यक्रम

केन्द्रित (core) पाठ्यक्रम इस धारणा पर आधारित है कि अध्ययन सम्बन्धी कुछ अनुभव स्कूल के प्रत्येक स्तर पर समस्त छात्रों के लिए मूल्यवान होते हैं। विद्यार्थी के व्यक्तिगत ताल-मेल और उसके सामाजिक सम्बन्धों में उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समान क्षेत्रों के आस-पास इस प्रकार केन्द्र का संगठन किया जाता है। माध्यमिक स्तर पर उन विषयों के लिए जो पढ़ाई में सम्मिलित नहीं होते सामान्यतः केन्द्र कक्षा चलाई जाती है जिसमें कक्षा के लम्बे घण्टे (दो या चार नियमित घण्टे) और कक्षा के नियमित घंटे होते हैं। एक केन्द्रित कक्षा में साधारणतया अंग्रेजी और सामाजिक अध्ययन और कभी-कभी कला, संगीत तथा विज्ञान भी सम्मिलित होते हैं।

पाठ्यक्रम की स्पष्टता

स्पष्टता का सम्बन्ध विद्यार्थी के एक स्कूल स्तर से दूसरे स्कूल स्तर पर पहुँचने अथवा शिक्षण की प्रत्येक इकाई में पाठ्यक्रम के समन्वय से है। किंडरगार्टन में प्रविष्ट होने वाला बच्चा स्कूल प्रणाली में ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है त्यों-त्यों वह विभिन्न समूहों, विभिन्न स्कूल भवनों, विभिन्न अध्यापकों और संगठन सम्बन्धी विभिन्न व्यवस्थाओं के सम्पर्क में आता है। स्पष्टता का कार्य इन संक्रान्तियों को यथा-सम्भव सुगम और सरल बनाने में विद्यार्थियों की सहायता करना है।

अतएव निर्देशन पर आधारित पाठ्यक्रम एक स्कूल स्तर से दूसरे स्कूल स्तर तक और किसी भी स्तर पर विशिष्ट अध्ययनों को समन्वित करने का यत्न करना है ताकि बच्चे का औपचारिक प्रशिक्षण प्रारम्भ से लेकर निरन्तर और सक्रिय रूप से चल सके। इस प्रकार के पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों की रुचि, ज्ञान और सहकारिता को बल मिलने की सम्भावना है।

स्कूल स्तरों के मध्य स्पष्टता स्तरों के मध्य की स्पष्टता से सम्बन्धित विशिष्ट समस्याओं पर अगले अध्यायों में विचार किया जायेगा; यहाँ कुछ सामान्य समस्याओं पर विचार करेंगे। किंडरगार्टन में भर्ती होने वाले बच्चे को इस प्रकार प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है कि वह दूसरे बच्चों से घुलमिल जाए और अध्या-

पिका को अपनी माता के स्थान पर समझने लगे। जब बच्चा प्रारम्भिक स्कूल में प्रवेश करता है तो नये वातावरण में दीक्षित करने के लिए उस पर काफी व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यद्यपि समस्याएँ कुछ-कुछ भिन्न होती हैं, तथापि तथ्य यह है कि प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ाई के उच्चतर स्तर पर पहुँचने या कुछ ताल-मेल बिठाने पड़ते हैं। उसके कल्याण का दायित्व स्कूल पर है। यहाँ कक्षा का अध्यापक और निर्देशन परामर्शदाता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन जाते हैं।

प्रारम्भिक स्कूल, जूनियर हाई स्कूल अथवा सीनियर हाई स्कूल के स्नातक को जो स्पष्ट तालमेल करने पड़ते हैं, उनमें से कुछ ये हैं :

१. नये सामाजिक समूहों में प्रवेश करना।
२. भिन्न प्रकार के स्कूल संगठन के अनुकूल बनना।
३. पाठ्य विषयों में विशेषज्ञ अध्यापकों से भेंट करना।
४. पहले पढ़े हुए विषयों से भिन्न विषयों का अध्ययन करना।
५. व्यक्ति के रूप में अध्यापक द्वारा उसमें ली गई रुचि के भेदों को समझना।
६. अध्ययन की नई पद्धतियों से तालमेल बिठाना।
७. अध्ययन की विभिन्न प्रणालियों को सीखना।
८. व्यवहार की अधिक विस्तृत स्वाधीनता को अनुभव करना।
९. अध्ययन के कार्यक्रम का निर्णय करना।
१०. विकासशील आन्तरिक माँगों की पूर्ति करना।
११. स्कूल की पाठ्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियों में भाग लेना।

स्कूल के अन्दर स्पष्टता पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार किया जा सकता है जिससे स्पष्टता की समस्याएँ कम हो जाएँ, किन्तु अध्यापक और निर्देशन परामर्श-दाता को छात्रों की सारी समस्याओं को सुलझाने के लिए सचेत रहना चाहिए ताकि स्कूल के अन्दर पूर्ण स्पष्ट स्थिति रह सके। स्कूल और कालेज की निर्वाचन पद्धति से अध्ययन में बाधाएँ पैदा होती हैं। बाधाओं से बचने का यत्न करना चाहिए। परामर्शदाता इस प्रकार के कार्यक्रम सुझा सकते हैं जिनसे बाधाएँ उत्पन्न न हों। यह निश्चित करके कि अध्ययन के कोई महत्त्वपूर्ण विषय नहीं छूटे हैं, अध्यापक वह समस्त शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करते हैं जिसके द्वारा विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत पूर्ण निपुणता प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

विद्यार्थी के तालमेल का नियोजन करना परामर्शदाता का प्रथम दायित्व है। यह दायित्व उस स्कूल तक ही सीमित नहीं रहता जिसमें वह कार्य कर रहा है, अपितु निम्नतर और उच्चतर स्कूलों के स्तर तक भी जाता है। उसे पोषक विद्यालय के साथ-साथ उन विद्यालयों की पाठ्यक्रम सम्बन्धी सामग्री के विषय में भी सावधान रहना चाहिए जहाँ उसके स्नातक भेजे जाते हैं।

आज के स्कूल की एक सबसे बड़ी कमी अत्यधिक विभागीकरण (विविध विभागों में वितरण) है। अध्यापक और स्कूल के अन्य कर्मचारी प्रत्येक विषय को

अधिक औपचारिक बनाने और विभिन्न विभागों के अध्यापन-अध्ययन कार्यों को एकरूप बनाने के लिए उपायों की खोज कर रहे हैं। विद्यार्थी अध्ययन के क्षेत्रों को पार करना चाहता है। उसे इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये कि कक्षा में जिस विषय पर विवाद हो रहा है, उसमें वह उस दूसरे विषय से सम्बन्धित ज्ञान या कौशल का भी उपयोग करे जिसका उसने अध्ययन किया है।

पाठ्यक्रम का मूल्यांकन

किसी भी स्कूल स्तर पर या किसी भी अध्ययन-क्षेत्र में पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम के विषयों का मूल्यांकन ऐसी निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें स्कूल के समस्त कर्मचारियों के सहयोग की आवश्यकता होती है। सावधिक मूल्यांकनों में निम्नलिखित बातों पर विचार करना चाहिए : (१) मूल सिद्धान्तों की वैधता, (२) पाठ्यक्रम द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त विशिष्ट प्रविधियों की क्षमता, और (३) उसके ढालने में किस सीमा तक संचालकों के व्यक्तिगत झुकाव परिलक्षित होते हैं।

पाठ्यक्रम के मूल्यांकन में पाठ्यक्रम का पुनर्गठन या सुधार सम्मिलित है।

पाठ्यक्रम के तालमेल के लिए जो कुछ भी किया जाता है उसके मूल में निम्नलिखित धारणाएँ हैं :

१. शैक्षिक प्रक्रिया द्वारा मानवीय व्यवहार में परिवर्तन किये जाते हैं।
२. ये परिवर्तन कुछ शुद्धता से आंके जा सकते हैं।
३. पाठ्यक्रम के मूल्यांकन के लिए कोई भी स्पष्ट परिवर्तन महत्त्वपूर्ण विचारणीय विषय है।
४. उन नमूनों पर आधारित पाठ्यक्रम की पर्याप्तता से सम्बन्धित निष्कर्ष सामान्यतः वैध होते हैं जो विद्यार्थियों की विशिष्ट प्रतिक्रियाएँ प्रतीत होते हैं।

सतत मूल्यांकन और पाठ्यक्रम के नियोजन के द्वारा ज्यों-ज्यों नई कार्य-विधियों का विकास, मूल्यांकन और सुधार हुआ त्यों-त्यों उसकी न्यूनताओं का ज्ञान हुआ और उन्हें दूर किया गया। शक्तिशाली प्रक्रिया ने (१) शैक्षिक बाह्य रूपों को स्पष्ट करने, (२) अधिक और श्रेष्ठ कार्य करने के लिए विद्यार्थी को प्रेरित करने, (३) पृथक्-पृथक् छात्र के लिए निर्देशन के मूल्य को निर्धारित करने, और (४) ऐसी शैक्षिक जानकारी देने की व्यवस्था की है जो अभिभावकों और रुचि रखने वाले अन्य नागरिकों के लिए उपयोगी होता है।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. निर्देशन में रुचि रखने वाले पाँचवीं श्रेणी के अध्यापक के रूप में बताइए कि आपकी श्रेणी के पाठ्क्रयम के सुधार के लिए आप क्या सुझाव देंगे ?
२. पाठ्यक्रम के निर्माण के लिए आपकी दृष्टि में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व क्या है ? अपने मत की पुष्टि में तर्क दीजिए।

३. पाठ्यक्रम की सामग्रियों के आपके विश्वास के अनुसार सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत क्या हैं ? व्याख्या कीजिए ।
४. उस शैक्षिक दर्शन की व्याख्या कीजिए जो निम्नलिखित में से प्रत्येक के मूल में है : गतिविधि कार्यक्रम, डाल्टन योजना, विटनेका योजना, अनुभव पाठ्यक्रम ।
५. केन्द्रित पाठ्यक्रम की, उसके लाभ-हानि सहित, आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए ।
६. पाठ्य क्रम निर्माण समितियों में अध्यापकों और निर्देशन परामर्शदाताओं को सम्मिलित करने का क्या महत्त्व है ?
७. यदि आप पुन: स्कूल का छात्र-जीवन प्राप्त कर सकें तो उस पाठ्यक्रम का वर्णन कीजिए जिसका आप किसी भी स्तर पर अध्ययन करना चाहेंगे ।
८. स्कूल में असफलता को घटाने या मिटाने के लिए प्रयोग की जा सकने वाली कार्य-विधियों पर विचार कीजिए ।
९. कक्षा के किस प्रकार के समूह को आप पढ़ाना पसन्द करेंगे ? व्याख्या कीजिए ।
१०. पाठ्यक्रम और अभ्ययन के प्रभावपूर्ण उद्देश्यीकरण में, यदि कोई है तो, क्या सम्बन्ध है ?
११. हाई स्कूल के उस पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए जिसका आपने अध्ययन किया है ।
१२. वे प्रमुख स्पष्टीकरण समस्याएं बताइये जिन्हें निर्देशन परामर्शदाताओं को पहचानना चाहिए ।
१३. ऐसी रीतियों का सुझाव दीजिए जिनके द्वारा किसी स्कूल की इकाई में स्पष्टीकरण किया जा सके ।

८ छात्र-मूल्यांकन और वृत्त-आलेख

व्यक्ति का अध्ययन शिक्षा का महत्त्वपूर्ण रूप बन गया है। पहले कुशलता में सफलता की मात्रा का निश्चय करने के लिए माप पर बल दिया जाता था, परन्तु अब शनैः शनैः व्यक्ति के शारीरिक, भावात्मक और सामाजिक विकास तथा उसकी बौद्धिक सफलता के अध्ययन का मूल्यांकन करने वाली प्रविधियों के उपयोग पर ध्यान दिया जाने लगा है। इसके अतिरिक्त पहले विद्यार्थी के जो भी वृत्त रखे जाते थे, उनमें साधारणतया उसकी शैक्षिक प्रगति के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था। अब शिक्षक यह प्रयत्न करते हैं कि विद्यार्थी के वृत्त-आलेख में उसके विकास और अनुभव के यथासंभव अधिक से अधिक रूप सम्मिलित किये जायें।

मूल्यांकन की कल्पना

शिक्षा और निर्देशन के क्षेत्र में सामान्यतया माप की अपेक्षा मूल्यांकन शब्द का अधिक प्रयोग होता है। माप की अपेक्षा मूल्यांकन का क्षेत्र अधिक विशाल है, यद्यपि ये दोनों शब्द बहुधा पर्यायवाची रूप में प्रयुक्त होते हैं। मूल्यांकन में कम से कम दो मुख्य बातें होती हैं : (१) परिवर्तन की सीमा का निश्चय करना, और (२) परिवर्तन की वांछनीयता तथा पर्याप्तता का निर्णय करना। माप की एक या अन्य प्रविधि के प्रयोग से प्राप्त विवरण के द्वारा व्यक्ति की ज्ञानप्राप्ति, रवैये के विकास, रुचियों में वृद्धि और भावात्मक नियन्त्रणों की सफलता को समझा जाता है।

मूल्यांकन का कार्य स्कूल में और अन्यत्र प्राप्त अनुभवों के फलस्वरूप विद्यार्थी में किसी सीमा तक परिवर्तन हो रहे हैं, अध्यापक और निर्देशक इसका निरन्तर अध्ययन कर रहे हैं। चूँकि किसी भी स्थिति में व्यक्ति के व्यवहार को व्यक्तित्व सम्बन्धी तत्त्व प्रभावित करते हैं, इसलिए व्यक्ति के विकास के समस्त रूपों का पर्याप्त मूल्यांकन करना बहुधा कठिन होता है। अन्य अधिक विषयगत रूप यह अपेक्षा कर सकते हैं कि प्राप्त विवरण दो या अधिक विशेषज्ञों के परिपक्व और

प्रशिक्षित निर्णय का प्रतिनिधित्व करे। चूँकि अपने स्तरों और व्यक्तियों के प्रति अपने रवैये तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया के सम्बन्ध में अध्यापक भिन्न-भिन्न स्थिति रखते हैं, इसलिए किसी व्यक्ति के उसके व्यक्तित्व के किसी क्षेत्र में विकास की स्थिति के सम्बन्ध में किसी एक अध्यापक का निर्णय अपर्याप्त या अशुद्ध हो सकता है।

विकास प्रक्रिया में किसी कदम पर वांछनीय सफलता क्या है? उदाहरण के लिए, जिस बच्चे ने समाचार-पत्र की किसी अपेक्षाकृत सरल रिपोर्ट या इसी प्रकार की सामग्री में जो कुछ पढ़ा है, उसे किस आयु में वह पढ़ और समझ सकता है? अपनी विकास प्रक्रिया में उससे कब यह आशा की जा सकती है कि वह दूसरों के अधिकारों और अपने दायित्वों को समझ सकता है? यदि पढ़ाई में या अध्ययन द्वारा विकसित किसी अन्य क्षेत्र में कोई बच्चा वह रवैया प्रदर्शित नहीं करता जो कि उसे करना चाहिए, तो इसका क्या कारण है? इन प्रश्नों के उत्तरों की खोज करना निर्देशन कार्यकर्त्ताओं—अध्यापकों या विशेषज्ञों का दायित्व है।

मूल्यांकन की विधियाँ विद्यार्थी के मूल्यांकन में ये बातें सम्मिलित हैं: (१) अध्यापकों और परामर्शदाताओं द्वारा विद्यार्थी के कक्षा में प्रदर्शित रवैये, व्यवहार और अध्ययन कार्य का थोड़ा बहुत अनौपचारिक अध्ययन, और (२) अधिक औपचारिक मूल्यांकन प्रविधियों का प्रयोग। हमारे शैक्षिक लक्ष्यों का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उसकी आन्तरिक सीमा की परिधि में ऐसी योजनाओं, सामग्रियों और कार्य-विधियों की व्यवस्था करना है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे वयस्क स्थिति प्राप्त करने में सहायता दे सकें। अतएव अध्यापकों और परामर्शदाताओं का एक मुख्य दायित्व तो यह है कि वे विद्यार्थी की निहित क्षमताओं, उसकी अध्ययन की आवश्यकताओं और जीवन के रचनात्मक लक्ष्यों को पर्याप्त रूप से प्राप्त करने की दिशा में अपने स्वयं के रवैये की खोज करें।

स्कूल सत्र या वर्ष में विद्यार्थी के साथ अध्यापक का जो निरन्तर सम्पर्क रहता है, उसमें निर्देशन में रुचि रखने वाला अध्यापक उसकी अभिरुचियों, योग्यताओं और स्वभावों के विषय में बहुत कुछ जान सकता है। विद्यार्थी की विशेषताओं की अनौपचारिक अध्ययन द्वारा अध्यापक जो जानकारी प्राप्त करता है उसका समर्थन उन संचित तथ्यों से हो सकता है, जो परामर्शदाता और अन्य विशेषज्ञ विविध प्रकार के मापक यन्त्रों की सहायता से प्राप्त करते हैं। छात्र मूल्यांकन के कुछ अधिक सामान्य कार्यक्रमों पर इस अध्याय में संक्षेप में विचार किया गया है।

अनौपचारिक अध्ययन विधियाँ

अधिकांश अध्यापकों के सम्मुख प्रतिदिन उस समय अपर्याप्तता की भावना आकर उपस्थित हो जाती है, जिस समय वे अपने विद्यार्थी के व्यवहार का मूल्यांकन और अध्ययन प्रक्रिया का निर्देशन करने का प्रयत्न करते हैं। कुछ प्रयोगों के फल-स्वरूप बच्चों के अध्ययन में कुछ कार्य-विधियाँ अध्यापकों और परामर्शदाताओं के लिए सहायक सिद्ध हुई हैं। इन विधियों में ये सम्मिलित हैं: (१) विद्यार्थी के व्यवहार

का निरीक्षण और व्यवहार में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने पर जीवन-वृत्त सम्बन्धी रिपोर्टों का लेखन, (२) विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किए आत्म-चरितात्मक विवरण, (३) सामाजिक स्थिति (Sociogram), (४) अध्यापक-छात्र साक्षात्कार, (५) व्यक्तिगत अथवा सामूहिक परियोजनाएं, (६) मौखिक कविता पाठ अथवा छोटी पहेलियाँ, (७) छात्रों की नोट बुकें, रिपोर्टें और कथाएं, तथा (८) प्रदर्शित मौलिक वृत्तियाँ। यद्यपि ये समस्त विधियाँ छात्र की विशेषताओं का संकेत देने की दृष्टि से मूल्यवान हैं, तथापि हम कुछ का विवेचन करेंगे और शेष का केवल संक्षेप में उल्लेख करेंगे।

निरीक्षण निरीक्षण एक गतिमान प्रक्रिया है। कुछ व्यक्ति जागरूक निरीक्षक होते हैं और अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय जानकारी दे सकते हैं। माता-पिता घर में निरीक्षण करते हैं, परामर्शदाता साक्षात्कार में, परीक्षक परीक्षण के समय निरीक्षण करता है और अध्यापक उसके दैनिक अध्यापन काल में। निरीक्षक नियोजित रूप से निरीक्षण करता है ताकि वह अध्यापन और अध्ययन प्रक्रियाओं में सहायक हो सके।

भूतकाल में, अध्यापक आकस्मिक सम्पर्क से छात्रों के नेताओं को जान पाते थे, आज हम समस्त छात्रों के व्यवहार के विकसित रवैये को सावधानी से देखते हैं और घटित होने वाली घटनाओं को तत्काल अथवा उसके शीघ्र पश्चात् लिपिबद्ध कर लेते हैं। चाहे कोई व्यक्ति कितना ही विश्वास क्यों न करे कि वह घटित घटना को स्मरण रख लेगा, किन्तु वास्तविकता यह है कि वह उसे तभी निश्चित रूप से स्मरण कर सकेगा जब कि उसे तत्काल लिख लेगा।

निरीक्षक व्यवहार की साधारण इकाइयों अथवा व्यवहार के रूपों का निरीक्षण करने की इच्छा कर सकता है। दोनों मामलों में वह वैज्ञानिक पद्धति से आगे बढ़ सकता है। यदि वह कक्षा में समस्त विद्यार्थियों के व्यवहार का अध्ययन समय की पाबन्दी, स्वच्छता आदि निश्चित बातों के संदर्भ में करना चाहता है तो वह समस्त बातों की सूची बना लेता है और उनमें से प्रत्येक के विषय में जो कुछ देखता है, उसे लिख लेता है। किन्तु यह निरीक्षक किसी विशेष प्रकार के व्यवहार में—उदाहरणार्थ लड़कों के बेसबाल के खेल में—रुचि रखता है तो वह उस स्थिति के व्यवहार के समस्त या अनेक रूपों का सावधानी से निरीक्षण करके उनको ही सही-सही लिपिबद्ध कर लेगा।

पृथक्-पृथक् विद्यार्थियों के निरीक्षण और अध्ययन में अध्यापक तथा परामर्शदाता निम्नलिखित विशेषताओं के प्रदर्शन की खोज कर सकते हैं:

१. साथियों का ध्यान, मान्यता या सराहना प्राप्त करने की कामना।
२. आधिपत्य अथवा समर्पण की ओर झुकाव।
३. स्पर्द्धा, छेड़छाड़, जिज्ञासा या खेलने की इच्छा का प्रदर्शन।
४. कक्षा में सहयोग देने और वाद-विवाद में भाग लेने की इच्छा।
५. अध्ययन का स्वभाव।
६. पढ़ने और विशेष कार्यों को पूरा करने की गति।

७. प्रश्नों का उत्तर देने में अभिव्यक्ति की योग्यता।
८. सामाजिक अनुरूपता।
९. नेतृत्व के गुण।
१०. पूछे गए प्रश्नों के प्रकार तथा संख्या।
११. स्कूल के कार्य में रुचि की सीमा।
१२. वाणी दोष अथवा अन्य शारीरिक दोष।
१३. धोखा देने का प्रयत्न।
१४. सावधान होने में तत्परता।

निरीक्षण प्रविधि के द्वारा विश्वसनीय तथ्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं किन्तु व्यक्तिगत दुर्भावना तथ्यों को तोड़ने मरोड़ने के लिए प्रेरित कर सकती है और इससे निरीक्षण के परिश्रम व्यर्थ हो जाते हैं। गपशप करने वाला व्यक्ति भी निरीक्षक होता है, किन्तु उसकी निरीक्षण की रिपोर्ट अपने निजी स्वार्थों या उद्देश्यों को अभिव्यक्त करेगी। यदि निरीक्षक विश्वसनीय है, तथ्यों का मूल्यांकन करने और उन्हें सही-सही प्रस्तुत करने की योग्यता के लिए प्रख्यात है और विचाराधीन स्थिति में अनुभव रखता है तो उसका निरीक्षण वैध माना जा सकता है।

मूल्यांकन प्रविधियों के रूप में निरीक्षण की कुछ सीमाएँ निम्नलिखित हैं:

१. निरीक्षक भारी दुर्भावना रखता हो और उसे दबाने में असमर्थ हो।
२. समय और संख्या की दृष्टि से निरीक्षण सीमित हो सकते हैं।
३. प्रस्तुत की गई बातें कुल स्थिति के सही अनुपात में न हों।
४. निरीक्षक अपनी रिपोर्ट सही न दे पाया हो।
५. निरीक्षित व्यवहार गलत समझ लिया गया हो जिससे अनुचित अथवा गलत परिणाम निकाले गए हों।

जीवन सम्बन्धी वृत्त यदि ऐसी योजना प्रारम्भ की जाय जिसमें प्रत्येक अध्यापक एक-एक कार्ड या कागज का उपयोग उन घटनाओं को लिखने के लिए करे जो कि कक्षा में होती हैं तो ऐसे तथ्य एकत्रित हो सकते हैं जो परामर्शदाता के लिए उपयोगी होंगे। अनेक प्रकार के व्यवहारों की सूचना दी जा सकती है—ऐसे व्यवहार जो प्रशंसनीय हैं और ऐसे व्यवहार जिनके लिए समन्वय करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए अध्यापक सहायक कार्यों की सूचना दे सकते हैं और अशिष्टतापूर्ण कार्यों की भी।

यदि अध्यापकों को ऐसे जीवन सम्बन्धी वृत्त लिखने के लिए उत्साहित किया जाय तो वे छात्रों के व्यवहार को अधिक सावधानी से देखेंगे और पृष्ठभूमि में इसका मूल्यांकन करेंगे। इन वृत्तों का सामूहिक प्रभाव चौंकाने वाला हो सकता है। यदि अध्यापक इन तथ्यों को गम्भीरता से ग्रहण करें तो वे उसके परामर्शदाता के और विद्यार्थी के लिए लाभदायक हो सकते हैं।

आत्मचरितात्मक विवरण किसी विद्यार्थी के दैनिक व्यवहार और उसके रवैयों, रुचियों तथा आदर्शों से सम्बन्धित तथ्यों को प्राप्त करने की एक मनोरंजक

पद्धति यह है कि उससे एक विस्तृत आत्मकथा लिखवाई जाय। उसमें विद्यार्थी क्या लिखता है उसके द्वारा, और जो नहीं लिखता है उसके द्वारा भी, उसके व्यक्तित्व का सूक्ष्म विश्लेपण किया जा सकता है। यह कार्य विशेप कमरे में निश्चित समय के अन्दर सामूहिक रूप से देने के स्थान पर यदि अंग्रेजी की कक्षा में दिया जाय तो परिणाम अधिक संतोपजनक हो सकते हैं।

किसी व्यक्ति के लिए अपने निजी अनुभवों को स्वतन्त्रतापूर्वक और पूर्णता के साथ लिखना वहुधा कठिन होता है। वह उन बातों को लिखने के लिए प्रेरित हो सकता है जो उसकी दृष्टि में वांछनीय हों अथवा जिन तथ्यों को कल्पना से पृथक् करना उसके लिए सम्भव न हो। विद्यार्थी से सम्बन्धित पुस्तिका में दिये गये अन्य तथ्यों से यदि उसका जीवनचरित परिपूर्ण होता है तो उसके द्वारा प्राप्त जानकारी पहले से ही शंकित समस्याओं पर प्रकाश डाल सकती है अथवा और अधिक अध्ययन के लिए नई समस्याओं का उद्घाटन कर सकती है।

आत्मचरितात्मक विवरण लिखने से विद्यार्थी को अन्य रीति की अपेक्षा अपना स्वयं का और अपने व्यवहार का मूल्यांकन करने का अधिक अच्छा अवसर मिलता है। कार्य की अनेक प्रकार की विविधताओं का उपयोग किया जा सकता है, जैसे "मेरा अत्यन्त मनोरंजक अनुभव" या किसी निश्चित अवधि की विस्तृत डायरी लिखकर।

सामाजिक चित्र (Sociograms) कुछ अध्यापक उन लोगों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए समाजशास्त्र का प्रयोग अधिक उपयोगी समझते हैं जिन्होंने अभी समवयस्क व्यक्तियों से सन्तोषजनक सम्वन्ध स्थापित नहीं किये हैं और जो अच्छे सामाजिक जीवन का विकास करने के लिये सहायता चाहते हैं। समाज-चित्र (Sociogram) का निर्माण कठिन नहीं है, किन्तु इसका उपयोग करने के लिए सावधानी की आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए समाज मापक (Sociometric) अध्ययन में अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी से अपनी कक्षा में से अपनी रुचि के क्रम के अनुसार तीन सर्वश्रेष्ठ मित्रों के नाम लिखने को कहता है, अथवा ऐसे तीन सहपाठियों के नाम लिखवाता है जिन्हें वे कक्षा की परियोजना में सहयोगी के रूप में रखना चाहेंगे। फिर अध्यापक छात्र के इन चुनावों के आधार पर एक समाज-चित्र (देखिये चित्र १६) बनाता है। कक्षा के अत्यन्त लोकप्रिय सदस्य (पी० टी० और एस० डी०) तथा न्यूनतम पसंद किये गये बच्चे (डी० वी०) को पृथक् किया जा सकता है।

निर्माण के समय यह समाज-चित्र अध्यापक को ऐसे छात्र की खोज करने में सहायता दे सकता है जो कक्षा में प्रत्यक्षत: अकेला हो। चूँकि बच्चों के साथ यह बात विशेष रूप से सम्भव है कि वे अपनी मैत्री को शीघ्रता से और बहुधा परिवर्तित कर दें, इसलिए किसी भी विद्यार्थी की कल्पित यथारूप स्थिति प्रतिमास अथवा उससे शीघ्र परिवर्तित हो सकती है। इसके अतिरिक्त, भावुक विद्यार्थी परियोजना के उद्देश्य के सम्बन्ध में शंकित हो सकता है। समवयस्कों के सम्बन्धों को जानने के

लिए अध्यापक को समाजचित्र की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु बुद्धिमानी से प्रयुक्त समाज-मापक प्रविधियाँ मूल्यवान होती हैं।

अध्यापक-छात्र साक्षात्कार व्यक्तिगत रूप से परामर्श देने की प्रविधि का वर्णन १०वें अध्याय में किया गया है। अध्यापक और छात्र की आमने-सामने की

चित्र १६. पाँचवीं श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ मित्रों का (तीन-चुनाव) दिखाने वाला समाज-चित्र
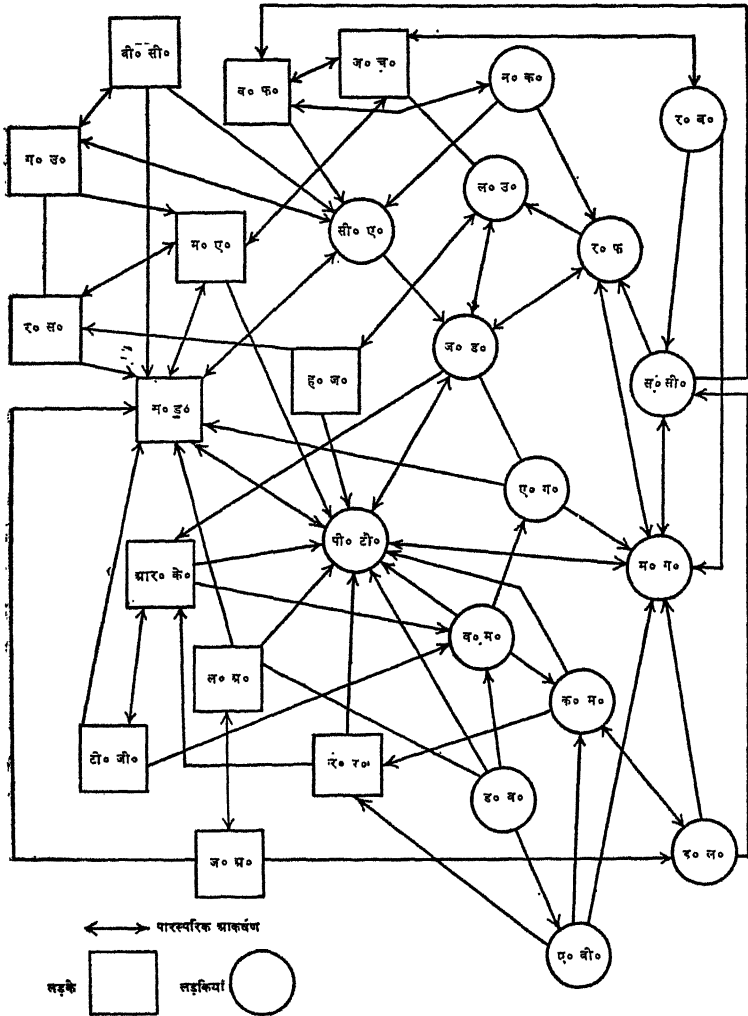
* एल० डी० क्रो और एलाइस क्रो, Human Development and Learning, New York, American Book Company, १९५६, पृष्ठ ३८३।

बातचीत सही अर्थों में साक्षात्कार नहीं होती। जिस अध्यापक पर विद्यार्थी को विश्वास होता है वह स्कूल सत्र के पूर्व या पश्चात् भोजन के समय या और किसी अवसर पर अपनी तात्कालिक रुचि या समस्या के सम्बन्ध में अनौपचारिक बात करने के लिये उसकी खोज करता है। इसी प्रकार अध्यापक की यह इच्छा हो सकती है कि किसी विद्यार्थी विशेष को वह कोई सूचना दे या उससे प्राप्त करे। इस प्रकार की अनौपचारिक तात्कालिक बातचीत अध्यापक के लिए अत्यन्त उपयोगी हो सकती है और अध्यापक-छात्र सम्बन्ध में छात्र को सुरक्षा की भावना दे सकती है। स्कूल के पश्चात् विद्यार्थी को फटकारने के लिये या उसे अपनी बात कहने का अवसर न देकर अपनी ही कहे जाने के लिए रोकने से न तो अध्यापक को लाभ होता है और न विद्यार्थी को।

छात्र-अध्ययन की अन्य विधियाँ जिन रीतियों से अध्यापक द्वारा मौखिक पाठ, छोटी पहेलियों, परियोजनाओं और विद्यार्थी की नोट बुकों तथा रिपोर्टों का उपयोग किया जा सकता है, वे स्वतः स्पप्ट हैं। अध्ययन का स्वभाव, सफाई की ओर रुचि, सौंपे गये कार्य को सावधानी से करने का रवैया और किसी परियोजना में सहयोग देने की योग्यता और तत्परता विद्यार्थी के ऐसे विशेष गुण हैं जो किसी सावधान, समझदार अध्यापक की दृष्टि से ओझल नहीं हो सकते। बहुधा अध्यापक अपनी दृष्टि का प्रयोग रचनात्मक रूप में कर सकता है। उदाहरण के लिए संभव है कि कोई नव-युवक सृजनात्मक क्षमता रखता है, किन्तु वह तब तक उसका परिचय नहीं दे पाता जब तक कि अध्यापक उसे प्रोत्साहन न दे। एक अंग्रेजी के अध्यापक को यह दुर्लभ क्षमता प्राप्त थी कि वह अपने छात्रों को कविता में अपने विचार अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित किया करता था। कविता लिखने का कार्य घर के लिए नहीं देता था और जब कभी अध्यापक चाहता था, लड़के उसे काम करके दिखा दिया करते थे।

अध्यापक और परामर्शदाताओं ने केवल विद्यार्थियों की भावनाओं और रवैयों के सम्बन्ध में ही ज्ञान प्राप्त नहीं किया, अपितु अध्यापकों ने उन छात्रों को प्रोत्साहन भी दिया जिन्होंने अपनी लेखनकला को विकसित करने की प्रतिभा का भी परिचय दिया था। इस मनुष्य की कार्यविधि उन अनेक अध्यापकों की कार्यविधि के समान है जो सृजनात्मक अभिव्यक्ति के विविध क्षेत्रों में रुचि रखते हैं। बच्चे अपनी आव-श्यकताओं और इच्छाओं को चित्रकला, नृत्य, संगीत और इसी प्रकार की अभिव्यक्ति के रूपों में प्रगट करते हैं। विद्यार्थियों के उत्तरों से जो उनके विभिन्न स्तरों का बोध होता है उससे अध्यापकों को अपने छात्रों के सम्बन्ध में कुछ जानने का अवसर मिलता है और उसी के अनुसार वे उसकी पढ़ाई को निर्देशन प्रदान करते हैं।

औपचारिक मूल्यांकन प्रविधियाँ

वैज्ञानिक माप शिक्षा का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन बन रहा है। यह एक ऐसी प्रविधि है जो अध्यापक, आचार्य और निर्देशन कर्मचारियों को अपने छात्रों की अध्ययन तत्परता, रवैयों, अभिरुचियों, रुझानों और सफलता का मूल्यांकन करने में

सहायता देती है। जो व्यक्ति किसी नवयुवक का निर्देशन करना चाहता है, उसके पास ऐसा साधन होना चाहिए जिससे वह यह जान सके कि जिस व्यक्ति से वह व्यवहार कर रहा है वह किस प्रकार का है, उसकी विचारशैली कैसी है, व्यावसायिक और ग़ैर-व्यावसायिक क्षेत्रों में उसकी रुचियाँ, अरुचियाँ क्या हैं और किस सीमा तक उसने सफलता प्राप्त की है और किस सीमा तक प्राप्त करने की उसकी क्षमता है।

माप के स्तरीकृत साधनों का महत्त्व वह प्रत्येक गतिविधि जिसके द्वारा स्कूल कर्मचारी प्रत्येक विद्यार्थी को स्कूल और पाठ्यक्रम से तालमेल बिठाने, अन्य व्यक्तियों से तालमेल बिठाने अथवा व्यावसायिक चुनाव करने में सहायता देता है, सही निर्देशन कार्य है। प्रत्येक कार्य करते समय कर्मचारी को उस व्यक्ति के विषय में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए जिसकी वह सहायता करना चाहता है। जिस व्यवसाय में वह रुचि रखता है, क्या उस विषय की पृष्ठभूमि और उसके प्रति उसमें रुझान है? क्या स्कूल के पास इतनी सुविधाएँ हैं जिससे वह शैक्षिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण के रूप में उस छात्र की आवश्यकताएँ पूरी कर सके? क्या माता-पिता के पास इतने साधन हैं जिससे वे उसे उस कालेज में भेज सकें जहाँ कि वह पढ़ने के लिए जाना चाहता है और उसे जाना चाहिए? इन तथ्यों के संभरण में परीक्षणों के मूल्य और उपयोग की हमें खोज करनी चाहिए जिनसे ऐसे प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में सहायता मिल सके।

परामर्श देने के लिए अपेक्षित जानकारी सब प्रकार के साधनों से प्राप्त होती है। स्कूल के अध्यापक तथा अन्य व्यक्ति संग्रहीत वृत्तों के निर्माण में सहायता देते हैं जिनमें कक्षा या कक्षा के बाहर के व्यवहार के जीवन-वृत्त भी सम्मिलित होते हैं। विद्यार्थियों के साथ न्याय करने की दृष्टि से जानकारी के समस्त उपलब्ध स्रोतों का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि पृथक्-पृथक् देखने से वे ग़लत हो सकते हैं अथवा कुछ का ग़लत अर्थ लगाया जा सकता है। विषयगत पद्धति से प्राप्त की जाने वाली जानकारी से अधिक निश्चित जानकारी प्राप्त करनी हो तो उसके लिए परीक्षण किया जा सकता है।

छात्र के मूल्यांकन के कार्यक्रम की सफलता प्रयोग में लाये जाने वाले परीक्षण के प्रकारों, प्रशासन की कुशलता, प्राप्त अंकों की शुद्धता, परिणामों की व्याख्या करने की क्षमता और सम्बन्धित व्यक्ति के लाभार्थ परिणामों के उपयोग की सुविधा पर निर्भर करती है। निर्देशन सम्बन्धी उद्देश्यों के लिए प्रयोग किये जाने वाले परीक्षण कार्यक्रमों का (१) शैक्षणिक उद्देश्यों, (२) अभिरुचियों, और (३) व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए परीक्षण करना चाहिए। परामर्शदाताओं के लिए परीक्षण उस समय उपयोगी समझे जाते हैं जबकि वे इन उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं:

१. ऐसी वैध और विश्वसनीय जानकारी प्रस्तुत करता जिससे पाठ्यक्रम सम्बन्धी बुद्धिमत्तापूर्ण चुनाव करने में उसके माता-पिता और स्कूल कर्मचारियों के साथ-साथ विद्यार्थी को सहायता पहुँचाई जा सके और जिनके द्वारा उसे ऐसे विद्यार्थियों या अध्यापकों के साथ रखा जा सके जिससे

स्कूल के प्रशासकों को सहायता मिल सके, जिनके साथ रह कर वह अधिकतम गति से वृद्धि कर सके और अपनी योग्यता के उच्चतम स्तर तक पहुँच सके ।

२. प्रत्येक विद्यार्थी और विद्यार्थियों के समूह के लिए निरन्तर, क्रमिक और संगठित अध्ययन में सहायता करना ।
३. प्रत्येक छात्र के लिए दिये हुए स्तर पर स्थिति के तुलनात्मक मूल्यांकन के एक आधार की स्थापना करना ।
४. ऐसे सार्थक ढाँचे का निर्माण करना जिससे व्यक्ति से सम्बन्धित तत्त्वों की व्याख्या की जा सके ।
५. प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में वैज्ञानिक, वस्तुगत तथ्य प्रस्तुत करना जिनका उपयोग परामर्शदाता इस प्रकार कर सकता है जिससे प्रत्येक विद्यार्थी अपनी शक्ति और दुर्बलता को समझ सके ।
६. जिन विद्यार्थियों के साथ, परामर्शदाता कार्य करता है उनके सम्बन्ध में तुलनात्मक तथ्य प्रस्तुत करना ।
७. स्नातकों और बीच में स्कूल छोड़ देने वाले विद्यार्थियों में स्कूल की अवधि के पश्चात् स्कूल के अनुभवों और परामर्शदात्री सेवाओं के सम्बन्धों के निरन्तर चलने वाले अध्ययन के लिए परामर्शदाता को सुविधा देना ।

औपचारिक प्रविधियों का उपयोग स्तरीकृत मापक यन्त्र और मूल्यांकन के अन्य साधन अन्त की ओर ले जाने वाली रीति के रूप में प्रयुक्त होते हैं । व्यक्ति से सम्बन्धित ज्ञान की पृष्ठभूमि जो अध्यापक-निर्मित परीक्षण लेकर और मूल्यांकन के औपचारिक साधनों से, कक्षा की अध्ययन विधियों के अतिरिक्त, प्राप्त की जाती है, ऐसी जानकारी के आधार का निर्माण करती है जिस पर सफल अध्यापन और परामर्श की कार्यविधियाँ बनती हैं । अतएव यथासंभव उपलब्ध उपयुक्त मूल्याँकन की प्रविधियों के उपयोग की (१) सफल अध्ययन की प्रेरणा, (२) शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत निर्देशन, तथा (३) चारित्रिक विकास के लिए आवश्यकता है ।

साधारणतया प्रयुक्त और थोड़ी-बहुत पर्याप्त रूप से स्तरीकृत मूल्यांकन प्रविधियों में निम्निलिखित बातें सम्मिलित हैं :

१. स्तरीकृत परीक्षण, तुलाएँ और सूचियाँ :
   (अ) व्यापक वर्गीकरण के लिए बौद्धिक परीक्षण ।
   (ब) भेदात्मक रुझान के रूप ।
   (स) विशेष रुझानों के परीक्षण ।
   (द) स्कूली सफलता के परीक्षण—विशद, विशेष क्षेत्र के ।
   (इ) व्यक्तित्व परीक्षण और तुलाएँ ।
   (फ) अभिरुचि सूचियाँ ।
२. परियोजनात्मक प्रविधियाँ ।
३. स्थिति सम्बन्धी परीक्षण ।

४. साक्षात्कार।

५. विचाराधीन व्यक्ति का इतिहास।

अधिकांश स्कूल प्रणालियों में ऊपर लिखी गयी सब या उनमें से बहुत-सी विविध प्रकार की व्यक्ति या सामूहिक स्तरीकृत परीक्षक सामग्री का प्रयोग परीक्षण की एक निश्चित योजना अथवा आवश्यकता के अनुसार किया जाता है। सामान्यतः इनका उपयोग कक्षा के अध्यापक या अध्यापक-परामर्शदाता द्वारा प्रशिक्षित परामर्श-दाता के निरीक्षण में किया जाता है। यदि कुछ प्रशिक्षण दिया जाय तो अध्यापक परीक्षणों के चुनाव, क्रियान्वयन और प्रयोग में कुशल हो सकता है। परीक्षण के परिणामों की व्याख्या करने और इन लाभदायक तत्त्वों का—चाहे वे कितने ही छोटे क्यों न हों—अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित करने की निपुणता का विकास करने के लिए गम्भीर तैयारी और दीर्घ अनुभव की आवश्यकता है।

परियोजनात्मक प्रविधियों और स्थिति से सम्बन्धित परीक्षणों जैसे मूल्यांकन करने वाले साधनों के निर्माण और उनके स्तरीकरण का कार्य अभी प्रारम्भ ही हुआ है। जो साधन उपलब्ध हैं, उनका सही प्रयोग और उनके परिणामों की उपयुक्त व्याख्या पूर्णतया प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक ही कर सकता है। मुख्यतः इसका प्रयोग उन व्यक्तियों के साथ किया जाता है जिनकी अध्ययन सम्बन्धी या व्यक्तिगत कठिनाइयाँ इतनी गम्भीर और गहरी हैं कि उनका बोध अन्य अधिक सरल मापकों से नहीं हो सकता है।

जैसा कि हम पहले वता चुके हैं, आमने-सामने के साक्षात्कार में विद्यार्थी के विषय में बहुत कुछ जाना जा सकता है। इस प्रविधि के प्रयोग से होने वाले लाभों पर १०वें अध्याय में विचार किया गया है। विचाराधीन विद्यार्थी का इतिहास सही अर्थों में मूल्यांकन करने का साधन नहीं है। वह तो एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा उस व्यक्ति के सम्बन्ध में विविध विश्वसनीय स्रोतों से यथासम्भव अधिक से अधिक सामग्री जुटाई जा सकती है। उसके निर्माण और उससे प्राप्त परिणामों का उपयोग साधारणतया गम्भीर रूप से ग़लत तालमेल वाले व्यक्ति के निदान और उपचार के लिए किया जाता है।

स्तरीकृत परीक्षण, तुलाएँ और सूचियाँ

स्कूलों में प्रयोग के लिए हज़ारों प्रकार के मापक साधन उपलब्ध हैं। वे सब समान रूप से वैध (जिनका उनके द्वारा परीक्षण करने की आशा की जाती है, उनका परीक्षण करने के लिए) अथवा विश्वसनीय (निरन्तर प्रयोग से उचित परिणाम देने वाले) हैं। पूर्व-निर्मित कुछ परीक्षण अधिक उपयोग के कारण स्तरीकृत हो गये हैं, किन्तु उनकी मदें प्रख्यात हो जाने के कारण उनका वर्तमान महत्त्व संदिग्ध हो गया है। इसके विपरीत बहुत से नवनिर्मित परीक्षणों का रूप अस्थायी है; उनका स्तरीकरण अभी पूरा नहीं हुआ है। अतएव परीक्षण सामग्रियों का चुनाव करते समय परीक्षकों को सावधान रहने की आवश्यकता है।

स्कूल का परामर्शदाता उन व्यापक साधनों में रुचि रखता है जो स्वास्थ्य की स्थिति, बुद्धि, विशेष रुझानों, अध्ययन प्रगति और व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त हों। ऐसे परीक्षणों के प्रयोग से तथ्य प्राप्त किये जा सकते हैं जो प्रत्येक विद्यार्थी के शारीरिक गठन, स्कूल सम्बन्धी योग्यताओं, तात्कालिक या दीर्घकालीन अभिरुचियों और महत्त्वाकांक्षाओं तथा व्यक्तिगत गुणों के अध्ययन में ठोस रूप से सहायक होते हैं। चूँकि स्कूल के निर्देशन और परामर्श कार्य के लिये की जाने वाली शैक्षिक तैयारी के अधिकांश कार्यक्रम में छात्र के मूल्यांकन के क्षेत्र में विस्तृत और गहन अध्ययन सम्मिलित होता है, इसलिए हम माप के विविध क्षेत्रों का केवल संक्षिप्त सर्वेक्षण कर रहे हैं।

स्वास्थ्य और शारीरिक योग्यता तालमेल के उद्देश्य से यदि किसी व्यक्ति की आवश्यकताओं का अध्ययन किया जाय तो सबसे पहले उसकी शारीरिक स्थिति पर विचार करना चाहिए। किसी काम में रुचि या सफलता न होने पर भावात्मक अथवा सामाजिक दृष्टि से ग़लत तालमेल का कारण बहुधा शारीरिक आधार होता है। बहुत से व्यवसाय ऐसे होते हैं जिनमें शारीरिक बल और स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है। इन कारणों से समन्वित जीवन के लिए समय-समय पर शारीरिक परीक्षाएँ होती रहनी आवश्यक हैं।

सावधिक स्वास्थ्य परीक्षा का मूल्य समस्त नवयुवकों की समय-समय पर पूर्ण रूप से स्वास्थ्य परीक्षा होनी चाहिए। स्वास्थ्य और सुरक्षा के सम्बन्ध में प्रत्येक छात्र के ज्ञान तथा रवैये का निश्चय करने की दृष्टि से कागज़ पेंसिल द्वारा परीक्षण करने की बात पर भी विचार किया गया है।

शारीरिक योग्यता के बहुत-से परीक्षणों के लिए प्रशिक्षित चिकित्सकों की विशेषज्ञ-प्रविधियों की आवश्यकता होती है। स्कूल में प्रयोग करने के लिए शुद्ध मापक यन्त्र और ऊँचाई तथा भार के नक्शे उपलब्ध हैं। ने नक़शे मापक स्थितियाँ बताते हैं और इनकी व्याख्या पारिवारिक रुझानों तथा अन्य बातों को ध्यान में रख कर करनी चाहिए। आजकल अधिकांश स्कूल अपने समस्त विद्यार्थियों के श्रवण एवं दृष्टि तथा फेफड़ों और हृदय सम्बन्धी सावधिक परीक्षणों के लिए चिकित्सक और नर्स की व्यवस्था करते हैं। यदि यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी किसी गम्भीर शारीरिक रोग से पीड़ित है तो परामर्शदाता तत्काल उसकी जाँच पारिवारिक चिकित्सक अथवा किसी अन्य विशेषज्ञ से कराने की व्यवस्था करता है।

दाँतों की देखभाल नवयुवकों के दाँतों की समय-समय पर जाँच होती रहना अत्यन्त आवश्यक है। बहुत-से स्कूल प्रत्येक विद्यार्थी से प्रत्येक स्कूल वर्ष में कम से कम एक बार दाँतों की रिपोर्ट चाहते हैं। इसका उद्देश्य दाँतों के ऐसे रोगों का परिचय प्राप्त करना है जिनकी चिकित्सा करना आवश्यक है अथवा जिन पर ध्यान दिया जा रहा हो।

कुछ समुदायों में, जिन बच्चों के माता-पिता निजी डाक्टर का व्यय नहीं उठा सकते उन्हें क्लिनिक में या ऐसे डाक्टर के पास भेज देते हैं जो स्कूल से सहयोग

करते हैं तथा दाँतों की परीक्षा और चिकित्सा निःशुल्क अथवा बहुत कम शुल्क लेकर करते हैं। कुछ स्कूलों या सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के निर्देशन विभाग का दूसरा कार्य माता-पिताओं को उस समुचित भोजन के सम्बन्ध में शिक्षण देना है जिसके फलस्वरूप दृढ़ तथा स्वस्थ दाँतों का निर्माण होता है।

सामान्य और विशेष योग्यताओं का माप

क्रमशः निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्कूल के निर्देशन कर्मचारियों द्वारा सामान्य ज्ञान के परीक्षण, वर्गीकरण परीक्षा, रुझान और रुझानों के परीक्षण किये जाते हैं :

१. सामान्य बुद्धि-परीक्षणों के परिणामों का उपयोग छात्रों को एक ही प्रकार के अध्यापन-अध्ययन समूहों में बाँटने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए यद्यपि "सामाजिक उन्नति" का महत्त्व है (स्कूल सम्बन्धी सफलता पर ध्यान दिये विना विद्यार्थियों को समान आयु के समूहों में एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में चढ़ाना), समूहीकरण की पूर्ण विषमता एक ही कक्षा में मानसिक दृष्टि से श्रेष्टतम और पढ़ने में मन्द दोनों प्रकार के छात्रों की अध्ययन सम्वन्धी प्रगति में हस्तक्षेप कर सकती है।

२. अध्ययन के जिस क्षेत्र अथवा जिन क्षेत्रों में पृथक्-पृथक् विद्यार्थी के अत्यधिक सफल होने की सम्भावना है, उनका ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेदात्मक रुझानों के परीक्षण किये जाते हैं। इन परीक्षणों का उपयोग सीनियर हाई स्कूल या कालेज के परामर्शदाता के लिए विशेषतया मूल्यवान है क्योंकि वह विद्यार्थियों को कालेज के मुख्य विषय के सम्बन्ध में निर्णय करने में सहायता देता है।

३. विशेष रुचि के परीक्षणों के परिणाम नवयुवकों की उस क्षमता का संकेत दे सकते हैं जो उसमें किसी विशिष्ट कार्य में सफलता प्राप्त करने की है।

बौद्धिक परीक्षण मनोवैज्ञानिकों में बुद्धि की प्रकृति के सम्बन्ध में जो वाद-विवाद वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में प्रारम्भ हुआ था, वह अब तक चल रहा है। मूलभूत प्रश्न यह है कि मानसिक योग्यता या प्रदर्शित बौद्धिक व्यवहार के स्तर से केवल आन्तरिक क्षमता के विकास का बोध होता है अथवा नाड़ी-प्रणाली पर पड़ने वाले वातावरण-जन्य प्रभाव का। किन्तु अध्यापक या परामर्शदाता के लिए बौद्धिक परीक्षण का मूल उद्देश्य व्यक्ति की अध्ययन क्षमता का परीक्षण करते समय निश्चय करना है।

यद्यपि यह कल्पना की जाती है कि परीक्षण यंत्र में ऐसी कोई सामग्री नहीं होती जिसकी विद्यार्थी को अध्ययन द्वारा जानकारी हो। कागज पेंसिल की परीक्षाओं में साधारणतया संख्या, संख्या-श्रृंखला, शब्दावली, रूपों की स्मृति, रिक्त स्थान, कल्पना, चित्र-पूर्ति, दृष्टांत, निर्देशन का अनुसरण, वाक्यों की व्याख्या, ठोस

विचार, समस्याओं का समाधान और इसी श्रेणी से सम्बन्धित बातें होती हैं। अतएव पृष्ठभूमि के अनुभव के साथ-साथ आन्तरिक मानसिक योग्यता परीक्षण कार्य को प्रभावित कर सकती है जिससे किसी भी शैक्षिक स्तर पर अध्ययन तत्परता में व्यक्तिगत भेदों का भान होता है।

बौद्धिक परीक्षणों में प्राप्त सफलताओं का उपयोग करने के लिए अध्यापकों और परामर्शदाताओं को प्रशिक्षित होना चाहिए। एकल समूह बौद्धिक परीक्षा के परिणामों पर वे व्यक्तिगत छात्र की अध्ययन सम्बन्धी सफलता और उसके उपचार को आवश्यकता से अधिक आधारित कर देते हैं। कालेजों ने देखा है कि जब अन्य तत्त्व अर्थात् विद्यार्थी की अध्ययन में रुचि और निम्नतर स्कूल स्तरों पर अध्यापन की प्रभविष्णुता-समान होते हैं, तो हाई स्कूल में प्राप्त अंक बौद्धिक परीक्षा की अपेक्षा कालेजों में शैक्षिक अध्ययन की सफलता का अधिक सही निर्देश करते हैं।

लेखकों ने हाई स्कूल के २६३६ स्नातकों की बौद्धिक लब्धियों और उनकी सम्बन्धित चार-वर्षीय स्कूली औसतों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। उस अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि व्यापक रूप से जिन स्नातकों को उच्चतर बौद्धिक लब्धियाँ प्राप्त थीं, उन्होंने स्कूल में अधिक अच्छा औसत प्राप्त किया था। फिर भी कल्पित बौद्धिक स्तर और शैक्षिक सफलता में काफी कमियाँ थीं, जिनमें उस अध्यापक या परामर्शदाता को चेतावनी मिलती थी जो यह मानता हो कि मानसिक रूप से श्रेष्ठ व्यक्ति सदैव सफल रहता है। इस अध्ययन का सार सारिणी संख्या १ में दिया गया है।

स्मरण रहे कि १११ की बौ० ल० वाला कोई भी विद्यार्थी ९०% से अधिक स्कूली औसत प्राप्त नहीं कर सका, किन्तु जिस विद्यार्थी को १३५ की बौ० ल० प्राप्त थी, उसने ७०% से कम चार-वर्षीय औसत के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। इससे स्पष्ट है कि बौद्धिक लब्धि के अतिरिक्त अन्य तत्त्व अध्ययन योग्यता के विस्तार और अध्ययन की सफलता के लिए उत्तरदायी हैं। पूर्वचर्चित इन तत्वों में से कुछ हैं : व्यक्तिगत रुचियों और महत्त्वाकांक्षा में अंतर और अध्यापन कार्य-विधियों या मूल्यांकन के अध्यापकों में अन्तर।

माध्यमिक स्कूल और कालेज के कर्मचारी उन मानसिक रूप से श्रेष्ठ छात्रों द्वारा प्रस्तुत समस्याओं से संघर्ष कर रहे हैं जो अपने अध्ययन कार्यों में उच्च स्तर का प्रदर्शन नहीं करते। हाल ही न्यूयार्क नगर स्कूल प्रणाली के शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन विभाग को उन श्रेष्ठ छात्रों का अध्ययन करने के लिए आर्थिक सहायता दी गई थी जो सीनियर हाई स्कूलों में वांछनीय सफलता प्राप्त नहीं कर सके थे। मनुष्यों की वर्तमान कमी को पूरा करने के लिए परियोजना स्वीकार की गई थी।

न्यून सफलता प्राप्त करने वाले बुद्धिमान छात्रों को निम्न श्रेणियों में रखा गया था :

१. १३५ बौ० ल० अथवा अधिक बुद्धि के सामूहिक परीक्षणों में

सारिणी १. २६३६ हाई स्कूल स्नातकों की बौ० ल० और स्कूल औसत†

छात्रों की बौ० ल०	स्कूल औसत के साथ छात्रों की संख्या						योग
	६५%*-६९%	७०%-७४%	७५%-७९%	८०%-८४%	८५%-८९%	९४%-१००%	
१४० और अधिक		१	१	१३	११	१४	४०
१३०-१३९	१	८	११	३४	४९	१७	१२०
१२५-१२९		१५	४३	६५	४२	८	१७३
१२०-१२४	१	४१	६४	६६	४६	७	२२५
११५-११९	१०	१०२	११५	७८	३८	४	३४७
११०-११४	२४	१२१	११२	४४	२५	२	३२८
१०५-१०९	७०	१७७	१०२	३५	१३		३९७
१००-१०४	८२	१७५	९०	२५	६		३७८
९५-९९	१०२	१२५	५२	९			२८८
९०-९४	६६	९४	२०	३			१८३
८५-८९	५९	४३	७				१०९
८०-८४	२५	११					३६
७५-७९	८	४					१२
योग	४४८	९१७	६१७	३७२	२३०	५२	२६३६
उच्चतर बौ० ल०	१३५	१४१	१४५	१५७	१५६	१५८	१५८
माध्यमिक बौ० ल०	९८	१०८	११२	११९	१२९	१३३	११०
न्यूनतम बौ० ल०	७५	७६	८६	९०	१००	१११	७५

२. इयोवा परीक्षणों में ८८ प्रतिशत या अधिक प्राप्त करने वाले

३. ८५ प्रतिशत से कम के तीन सत्रों के लिए औसत श्रेणी।

इस परियोजना में सम्मिलित ३९ हाई स्कूलों में निश्चित सफलता से नीचे रह जाने वालों की संख्या लगभग ५००० विद्यार्थी थी अर्थात् इन स्कूलों की कुशाग्र बुद्धि एवं प्रतिभा-सम्पन्न जनसंख्या का ६० प्रतिशत से भी अधिक। लड़कियों की अपेक्षा लड़कों ने अधिक संख्या में अपनी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं किया।

†एल० डी० क्रो और एलाइस क्रो, Educational Psychology, संशोधित संस्करण, पृष्ठ १५९, अमेरिकन बुक कम्पनी, न्यूयार्क १९५८।

*६५ उत्तीर्ण अंक हैं।

इस परियोजना के संचालकों में मानसिक-रोग चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्त्ता और स्कूल-परामर्शदाता सम्मिलित थे। पूर्ण सफलता प्राप्त न करने वाले विद्यार्थियों के माता-पिता से उनके घरों पर साक्षात्कार किया गया। इन साक्षात्कारों के फलस्वरूप ज्ञात हुआ कि इस अपूर्ण सफलता के कुछ कारण इस प्रकार थे :

१. अत्यधिक अनुपस्थिति, स्कूल परिवर्तन आदि के कारण होने वाली शैक्षिक खाई
२. स्वास्थ्य की दशाएँ
३. सशक्त पारिवारिक प्रभाव
४. परिवार-शिशु सम्बन्धों में बाधाएँ

समूह के दस प्रतिशत छात्रों का मानसिक रोग सम्बन्धी मूल्यांकन (स्टैनफोर्ड-बिनेट बुद्धि-परीक्षा, रोरशैक इंकब्लोट परीक्षा तथा अन्य साधन और व्यक्तिगत साक्षात्कार) किया गया। विशेष मूल्यांकन प्राप्त करने वाले इन विद्यार्थियों में १५० विद्यार्थी भावनात्मक दृष्टि से भ्रमित, अव्यवस्थित, चकित, अपनी मानसिक क्षमता से अनभिज्ञ और अपने व्यक्तिगत आंतरिक सम्बन्धों में दुविधा की भावना रखने वाले थे।

इस परियोजना में विविध सेवाएँ सम्मिलित थीं, शिक्षण, उपचारात्मक, पठन, विशेष समूह कार्य, अभिभावकों के साथ प्रमुख परियोजना, मानसिक रोग चिकित्सक की देखभाल (केवल कुछ लोगों की), कोलम्बिया विश्वविद्यालय में नियमित पाठ्यविधियों में भाग लेना। अध्ययन में अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए दी जाने वाली प्रेरणा पर और अधिक बल दिया गया। यह लिखते समय इस अध्ययन के अन्तिम परिणामों की घोषणा करना असामयिक होगा। विभिन्न स्कूलों में स्तरों के निर्धारण और प्राप्त किये गये सामूहिक बुद्धि-अंकों की विश्वसनीयता जैसे विविध तत्त्वों के कारण यह नहीं कहा जा सकता कि विद्यार्थी ने वांछित सफलता प्राप्त नहीं की है। किन्तु इस प्रकार की परियोजना का मूल्य इसलिए है कि वह अभिभावकों, शिक्षकों और सर्व-साधारण को सुयोग्य नवयुवकों को ऐसी प्रेरणा देने के लिए सचेत करती है जिससे वे विकट अध्ययन स्थितियों में भाग लेकर लाभान्वित होने की कामना करने लगें।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर वर्तमान युग में दिये जाने वाले बल ने योग्य विद्यार्थियों को उनके स्कूली जीवन से यथाशीघ्र खोज निकालने की आवश्यकता के प्रति प्रशासकों और निर्देशन कर्मचारियों को सचेष्ट कर दिया है। क्लीवलैंड ओहियो स्कूलों के प्रबन्धकों ने कई वर्षों तक ऐसा ही किया है। इसके फलस्वरूप उन्होंने प्रतिभासम्पन्न छात्रों के लिए एक उच्च कोटि का कार्यक्रम तैयार कर लिया है।

भली-भाँति स्तरीकृत बुद्धि-परीक्षणों के प्रयोग का शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशों में मूल्य है। हाई स्कूल और कालेज में, उच्च गणित और विज्ञान जैसे विषयों में कुशलता प्राप्त करने के लिए उच्चकोटि की मानसिक सावधानी की आवश्यकता

होती है। जो विद्यार्थी मानसिक रूप से मंद होते हैं, यदि उन्हें इन विषयों का चुनाव करने की अनुमति दे दी जाय तो उन्हें सामान्यतः अध्ययन सम्बन्धी कठिनाई होती है। यह भी ज्ञात हुआ है कि कुछ व्यावसायिक क्षेत्रों में मिलने वाली सफलता बौद्धिक योग्यता की उच्च कोटि पर निर्भर करती है। बुद्धि परीक्षाओं के परिणाम परामर्श-दाताओं के लिए पाठ्यविधियों की सिफारिश करने में सहायक होते हैं। ये पाठ्य-विधियाँ व्यवसाय सम्बन्धी योग्यता की दृष्टि से मूल्यवान होती हैं। किन्तु अध्यापकों और विद्यार्थियों को यह स्मरण रखना चाहिए कि शैक्षिक, सामाजिक या व्यावसायिक सफलता का निश्चय केवल बौद्धिक लब्धि से ही नहीं होता।

भेदात्मक रुझान के साधन (batteries) तत्त्वों के विश्लेषण के फलस्वरूप कुछ मानसिक रोग चिकित्सकों ने तथाकथित मौलिक-मानसिक-योग्यताओं के अनुसार बुद्धि-परीक्षणों का निर्माण किया है जो लक्षण-सम्बन्धों के गुणक-तत्त्व सिद्धान्त पर आधारित हैं। इन योग्यताओं में मौखिक ज्ञान, शब्द प्रवाह, संख्या, अंतरिक्ष से सम्बन्धित स्मरणशक्ति, प्रत्यक्षज गति और तर्क सम्मिलित है। भेदात्मक-रुझान के साधन व्यापक बुद्धि-परीक्षाओं से भिन्न होते हैं क्योंकि इसका निर्माण अनेक परीक्षणों से होता है जिनमें से प्रत्येक परीक्षण का निर्माण किसी-न-किसी मूल मानसिक योग्यता को मापने के लिए हुआ है।

यद्यपि इनमें से अधिकांश साधन हाई स्कूलों और कालेजों में प्रयोग के लिए हैं, तथापि इसी प्रकार के साधनों का निर्माण बच्चों और वयस्कों के लिए किया जाता है। सेना और संयुक्त राज्य काम दिलाऊ सेवाएँ उन साधनों का उपयोग करती हैं जिनका निर्माण उनकी विशिष्ट परीक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया गया है। जिन व्यक्तियों को ऐसी परीक्षाओं का अनुभव है, उनका विश्वास है कि मानवीय योग्यताओं के अंतर का पता लगाने के लिए व्यापक बुद्धि-परीक्षण श्रेष्ठ साधन हैं।

विशेष रुझान सम्बन्धी परीक्षाएँ उस गुण या योग्यता को रुझान कहा जा सकता है जो कुछ सीमा तक सभी व्यक्तियों में होता है। जो व्यक्ति अपने कुल व्यक्तित्व के एक अंग के रूप में किसी विशिष्ट, सीमित कार्यक्षेत्र में अध्ययन से लाभान्वित होने की श्रेष्ठ योग्यता रखता हो, उसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह उसके प्रति विशेष रुझान रखता है। यह श्रेष्ठता चाहे पैतृक हो या परिस्थिति-जन्य, किन्तु यह अनिश्चित होती है। शब्दकोष के अनुसार "प्राकृतिक या सशक्त क्षमता या योग्यता" ही रुझान है।

उस सीमा का निश्चय करने के लिए मापक साधनों का निर्माण किया गया है जहाँ श्रेष्ठ कार्य के लिए एक व्यक्ति आन्तरिक तत्परता दिखाता है। औसत से श्रेष्ठ वह योग्यता (उदाहरण के लिए चेतना सम्बन्धी योग्यता या कार्य-कुशलता) जो विविध व्यवसायों में सफलता प्राप्त करने के लिए उचित है, की खोज करने के लिए कुछ रुझान-परीक्षणों का निर्माण किया गया है। अन्य परीक्षाएँ यंत्र शिक्षा,

कानून अध्यापन और औषधि जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक परीक्षणों की विशेष रुझानों को मापने के लिए होती हैं।

इस बात पर मतभेद है कि आंतरिक रुझान ग्राफिक कलाओं या डिजाइन, संगीत, साहित्य-सृजन, अध्यापन या विशिष्टीकरण के अन्य क्षेत्रों के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के मूल में है। संभवतः यह सत्य है कि केवल धैर्यपूर्ण चेतन व्यवहार ही गुणों को उत्पन्न नहीं करता, अथवा बहुत-सी पाठ्यविधियाँ लेने और बहुत-सी पुस्तकें पढ़ लेने से ही कोई व्यक्ति कानूनी प्रतिभा, शारीरिक रोगों का सूक्ष्मता से निदान करने की क्षमता और श्रेष्ठ अध्यापक बनने की योग्यता नहीं प्राप्त कर सकता। मानव प्रयत्न के किसी क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य संभवतः एक 'रुझान' की अपेक्षा बहुत-सी विशिष्ट योग्यताओं के होने का प्रमाण है।

यद्यपि विशिष्ट योग्यताओं को मापने के लिए प्रयत्न किये गये हैं, तथापि रुझान की उचित परीक्षाओं का निर्माण अभी तक नहीं हुआ है। बहुत से उपलब्ध साधन असंतोषजनक हैं जिनका कारण उनमें सम्मिलित वस्तुओं के प्रकार और स्तरीकरण के लिए प्रयुक्त भिन्न-भिन्न प्रकार की जनसंख्याएँ हैं। इसके अतिरिक्त, परीक्षा लेने के समय कार्यान्वयन के प्रकार को मापने के लिए एक रुझान-परीक्षा ली जाती है।

इन परीक्षणों के परिणामों से परीक्षित कुशलता या योग्यता में भावी सफलता का संकेत मिल सकता है। कोई क्षमता क्रियान्वित होती है या नहीं, यह विविध बातों पर निर्भर करता है। ये बातें हैं: (१) समुचित अध्ययन और व्यवहार में गंभीरतापूर्वक लगने की व्यक्ति की उत्सुकता, (२) उसके लिए उपलब्ध प्रशिक्षण का प्रकार और राशि, (३) परिवार या अन्य उत्तरदायित्वों और दायित्वों का दबाव, और (४) उसकी विशेष योग्यता में सार्वजनिक रुचि और उसे कार्यान्वित करने की माँग। इसके बावजूद निर्देशन कार्यक्रम में रुझान परीक्षाएँ होनी चाहिएँ। यदि मूल्यांकन के अन्य साधनों के साथ इनका उपयोग किया जाय तो वे नवयुवक के विकासशील व्यक्तित्व के अनेक रूपों में से किसी एक के सम्बन्ध में परामर्शदाता को कुछ जानकरी दे सकते हैं।

निर्देशन कार्यक्रम में उपलब्धि परीक्षाएँ शैक्षिक उपलब्धि एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें निर्देशन परामर्शदाता अपेक्षाकृत सही सूचना प्राप्त कर सकता है। निर्देशन कर्मचारियों को इस प्रकार के छात्र-मूल्यांकन की आवश्यकता है। अध्यापक-निर्मित परीक्षणों का मूल्य है, और अनेक स्तरीकृत परीक्षण वैध और विश्वसनीय होते हैं। उपलब्धि परीक्षाएँ दो प्रकार से महत्त्वपूर्ण हैं: (१) स्वयं व्यक्ति के लिए ऐसी उपलब्धियाँ प्रदान करके जिनसे वह उस प्रगति का मूल्यांकन कर सके जो वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में कर रहा है, (२) किसी अध्ययन क्षेत्र में व्यक्ति को प्राप्त ज्ञान राशि के विषय में परामर्शदाता को जानकारी देकर।

उपलब्धि परीक्षणों के कार्य स्तरीकृत उपलब्धि परीक्षण (१) सर्वेक्षण, (२) प्रत्यक्ष या (३) उद्देश्य का पूर्वाभास हो सकता है।

एक सर्वेक्षण परीक्षण में वे बातें होती हैं जिनमें विशेष विषय या विषय इकाई के सम्बन्ध में अध्ययन सामग्रियाँ सम्मिलित हैं। यह परीक्षण करने का स्कूल का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि किस सीमा तक छात्र स्थापित अपेक्षाओं की पूर्ति करते हैं। भाषा के प्रयोग अथवा वर्गमूल निकालने में योग्यता जैसे विषय क्षेत्र या विषय इकाई में प्रत्येक विद्यार्थी की सम्बन्धित शक्ति या दुर्बलता की जानकारी प्राप्त करने के लिए समुचित प्रत्यक्ष-परीक्षा—जैसा कि उसके नाम से स्पष्ट है—ली जाती है। फिर ज्ञात की हुई दुर्बलताएँ व्यक्तिशः छात्र या समूह-केन्द्रित उपचारात्मक अध्ययन का आधार बन जाती हैं।

पूर्वाभास-परीक्षण करने का उद्देश्य किसी विशिष्ट विषय क्षेत्र में छात्र या कक्षा के अध्ययन प्रारम्भ करने या उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने की तत्परता का निश्चय करना है। प्रारम्भिक स्कूल में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की, कक्षा में उनकी स्थिति का निर्णय करने के लिए पठन परीक्षा ली जाती है। पूर्वाभास के लिए हाई स्कूलों और कालेजों में उपयुक्त उपलब्धि परीक्षाएँ ली जाती हैं।

शैक्षिक मनोविज्ञान के अध्ययन में प्रयोग के प्रथम चरण के रूप में लेखकों ने इस प्रयोग में लगे हुए १६० विद्यार्थियों का शैक्षणिक मनोविज्ञान के तत्त्वों पर आधारित पूर्वाभास (prognostic) परीक्षण किया था। इसके परिणाम से ज्ञात हुआ कि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में कितना भारी अंतर है। वास्तव में, जिन विद्यार्थियों की प्रारम्भ में पूर्वाभास परीक्षाएँ ली गई थीं उनकी अपेक्षा कुछ अन्य थोड़े से छात्रों ने छमाही कार्य के अन्त में कुल मिलाकर न्यूनतर अंक प्राप्त किये थे। यह भी ज्ञात हुआ कि समस्त विद्यार्थी ऐसी सामग्री से परिचित थे जो छमाही कार्य में सम्मिलित थी और इसलिए यह उच्च अध्ययन की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार की गई थी।

सफलता-परीक्षणों के क्षेत्र प्रारम्भिक स्कूलों के लिए बहुत से वैध और विश्वसनीय सफलता सम्बन्धी परीक्षणों की खोज की गई है। ऐसी दोनों प्रकार की परीक्षण प्रणालियाँ उपलब्ध हैं जिनमें विविध विषय क्षेत्रों और एक ही क्षेत्र के परीक्षणों का समावेश है; जैसे गणित, शब्द और शब्दावली का प्रयोग, हिज्जे, पठन, लेखन क्षमता, विज्ञान, स्वास्थ्य और सुरक्षा तथा सामाजिक अध्ययन (इतिहास, नागरिकशास्त्र और भूगोल)। इनमें से कुछ का उपयोग तो सम्पूर्ण श्रेणी २ से ९ तक होता हैं, दूसरे विविध कक्षा स्तरों पर एक दूसरे की सीमा में प्रवेश कर जाते हैं।

प्रारम्भिक और माध्यमिक स्तर के विषयों के लिए सैंकड़ों उपलब्धि परीक्षाओं का निर्माण किया गया है और अधिक परीक्षणों का निर्माण किया जा रहा है। कुछ प्रणालियाँ भी उपलब्ध हैं। अधिकांश में ये प्रणालियाँ कल्पित मौलिक ज्ञान, कुशलताओं और सम्बन्धों की जानकारी का अपने अन्दर समावेश करती हैं। शैक्षिक सोपान के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर उपयोग के लिए इनका निर्माण हुआ है। वे बिन्दु हैं: प्रारम्भिक स्कूलों में उत्तीर्ण होने सम्बन्धी परीक्षाएँ, हाई स्कूल प्रवेशार्थियों के लिए परीक्षाएँ, कालेज प्रवेश परीक्षा और स्नातक वृत्त परीक्षाएँ। इनमें से किसी भी

प्रणाली द्वारा प्रदान किये गए तथ्य विद्यार्थियों को उपयुक्त विषय में या विषय को अध्ययन स्तरों में रखने में परामर्शदाता की सहायता कर सकते हैं।

यद्यपि प्रारम्भिक स्कूल स्तरीकृत उपलब्धि परीक्षाओं का विस्तार के साथ प्रयोग करते हैं, तो भी उच्चतर शैक्षिक स्तरों पर इनका मूल्य सीमित है। यह अंतर अवाँछनीय है। प्रारम्भिक स्कूलों में पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत समान हैं ; उनका सम्बन्ध मौलिक ज्ञान और निपुणताओं से है। किन्तु उच्चतर स्कूलों में शिक्षा-दर्शन और नीति तथा अध्यापक और छात्रों की रुचियों के अनुसार पाठ्यक्रम और शिक्षण-सम्बन्धी बल भिन्न-भिन्न होता है। जो अनिवार्य विषय समझे जाते हैं वे एक स्कूल से दूसरे स्कूल में और कभी-कभी एक ही संस्था के शिक्षकों में भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

व्यक्तित्व का मूल्यांकन

व्यक्तित्व एक शक्तिशाली संयुक्त व्यवहार है जिसका जन्म निहित क्षमताओं और वातावरण-जन्य प्रभावों के पारस्परिक कार्यों से होता है। दूसरे शब्दों में, यह व्यक्ति के व्यवहार के समस्त अंगों के पारस्परिक सम्बन्धों का परिणाम है। व्यक्तित्व में आन्तरिक क्षमताएँ, प्रेरक आवश्यकताएँ, आकांक्षाएँ और महत्त्वाकांक्षाएँ, किसी स्थिति के प्रति भावात्मक रवैया, प्रत्यक्ष कार्य आदि सम्मिलित होता है। अतएव "व्यक्तित्व" के मूल्यांकन में बुद्धि, रुझान और सफलता के साथ-साथ किसी भी युग के व्यक्ति की अन्य विशेषताओं अथवा गुणों का माप भी सम्मिलित है। जिन मापक साधनों पर पहले विचार किया जा चुका है, उनका प्रयोग कक्षा के योग्य अध्यापकों और अध्यापक-परामर्शदाताओं द्वारा किया जा सकता है और उनसे प्राप्त परिणामों की व्याख्या अध्ययन की प्रगति के सम्बन्ध में की जा सकती है। यहाँ हमारा सम्बन्ध उन वस्तुओं के मूल्यांकन से है जिन्हें व्यक्तित्व को अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्वों के रूप में देखा जा सकता है।

लक्षणों का महत्त्व बहुत से गुण अथवा लक्षणों के समूह (सम्बन्धित लक्षणों की सामान्य श्रेणियाँ) जिनसे किसी व्यक्ति के कुल व्यक्तित्व का निर्माण होता है, अकेलेपन में कार्य नहीं करते। उनमें निरन्तर एक आंतरिक खेल चलता रहता है; एक लक्षण का कार्य दूसरे लक्षण के कार्य को प्रभावित कर सकता है। किन्तु कुछ विशिष्ट परिस्थितियों अथवा कुछ निश्चित स्थितियों में एक या दूसरा लक्षण या लक्षणों के समूह इतने शक्तिशाली बन सकते हैं कि दूसरे लक्षण पर्याप्त रूप से कार्य करने में असमर्थ प्रतीत होने लगें।

यह सर्वविदित है कि व्यक्तित्व के तत्त्व नौकरी के तालमेल और श्रमिक के संतोष में महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं।। सफलता के लिए अपेक्षित चातुर्य रखना ही पर्याप्त नहीं है, उससे भी कुछ अधिक की आवश्यकता होती है। श्रमिक इस योग्य होना चाहिए कि वह अपने मालिक, अपने सहयोगियों और अपने परिवार के साथ चल सके। उदाहरण के लिए, यदि एक श्रमिक को वह पदवृद्धि प्राप्त न हो जिसकी कि वह आशा लगाये हुए है तो उसमें असंतोष की भावना जाग्रत हो जाती है, और

वह भावना उसके कार्य में हस्तक्षेप करती है। जो नवयुवक किसी से प्रेम करता है, उसके प्रेम का प्रभाव उसके रवैये और व्यवहार पर बहुत अधिक पड़ सकता है। उसके रहन-सहन के प्रति उसके पहले की लापरवाही के स्थान पर अब वह अपने परिधान और बनाव शृंगार में गहरी रुचि लेने लगता है, अध्ययन कक्षाओं में उसका ध्यान अब वाद-विवाद के विषय पर नहीं जमता, विशेषतः यदि उसका प्रेमपात्र विरुद्ध लिंग का और उसका सहपाठी है; घर के लिये दिये जाने वाले कार्य की उपेक्षा कर सकता है; घर पर उसके कल्पना-निमग्न, उदास या चिड़चिड़ा हो जाने की संभावना है।

अनुभवी अध्यापक और परामर्शदाता जानते हैं कि इस प्रकार की स्थिति एक सामान्य बात है और वे इससे तब तक चिन्तित नहीं होते जब तक कि नवयुवक की शक्तिशाली क्षमताओं के निर्माणात्मक विकास पर इस नई बढ़ती हुई माँग के कारण हस्तक्षेप न होने लगे।

किन्तु ऐसे भी अवसर होते हैं, जब माता-पिता, अध्यापक, परामर्शदाता और वह व्यक्ति स्वयं उसके प्रत्यक्ष कार्यों या उसकी आन्तरिक स्थिति की व्याख्या करने में असमर्थ होते हैं। अध्ययन में कम सफलता अनुचित व्यवहार या भावात्मक अव्यवस्था के कारण उस असफलता में निहित है जिसका आधार स्कूल या सामुदायिक स्तरों, परस्पर-विरोधी आकांक्षाओं और रुचियों में संघर्ष या अव्यवस्थित विचार प्रणाली के मूल्य का अज्ञान है।

नवयुवक को आत्मबोध और उसके फलस्वरूप आत्मानुशासन सहित आत्म-प्राप्ति में सहायता देने के लिए परामर्शदाताओं को कठिनाइयों के अन्तर्निहित कारणों की खोज करने की आवश्यकता है। प्रत्यक्ष व्यवहार की आंतरिक प्रेरणाओं का मूल्यांकन करने के लिए अध्ययन की विविध विधियों का उपयोग किया जाता है। मूल्यांकन की पूर्वोक्त विधियों के अतिरिक्त, (१) कागज और पेंसिल परीक्षणों, प्रश्नावलियों तथा व्यक्तित्व के गुणों को मापने की सूचियाँ, और (२) परियोजनात्मक प्रविधियाँ और स्थिति सम्बन्धी परीक्षाएँ जिनके प्रयोग से संयुक्त "संपूर्ण" व्यक्तित्व का कार्यकारी विश्लेषण प्राप्त होता है, ऐसी मान्यता है।

व्यक्तित्व के लक्षणों की माप किसी व्यक्ति के विशिष्ट लक्षणों के माप का अध्ययन (१) प्रश्नावलियों या सूचियों, जिनके विविध प्रश्नों का उत्तर वह व्यक्ति स्वयं देता है, (२) मूल्यांकन तुलाओं जिनमें एक या अधिक व्यक्ति व्यवहार या रवैये के उन निश्चित रूपों का मूल्यांकन करते हैं जो उस व्यक्ति के स्वाभाविक गुण प्रतीत होते हैं—के द्वारा होता है। यद्यपि व्यक्तित्व सम्बन्धी प्रश्नावलियों, सूचियों और तुलाओं के स्तरीकरण के लिए प्रयत्न किये गए हैं तथापि संभव है कि स्थापित मान्यताएँ विश्वसनीय न हों। आत्म-मूल्यांकनकर्त्ता अथवा अन्य मूल्यांकनकर्त्ता के उत्तर व्यक्ति प्रधान होते हैं। प्रथम बात आत्म-वंचना या हठवादिता की साक्षी दे सकती है, दूसरे का मूल्यांकन व्यक्तिगत पक्षपात या मत का द्योतक हो सकता है, तथ्य का नहीं।

आत्म-प्रयुक्त रुचियों और सूचियों का सम्बन्ध उस रीति से है जिसमें कोई व्यक्ति लोगों, वस्तुओं, दशाओं और स्थितियों के विषय में अनुभव करता है। उनमें बहुत से क्षेत्र होते हैं, यथा (१) विविध व्यावसायिक क्षेत्रों के प्रति रवैया, (२) राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक अथवा धार्मिक प्रश्नों पर सम्मतियाँ, (३) स्कूल, घर, या समुदाय की स्थितियों के सम्बन्ध में अथवा पारिवारिक सदस्यों, स्कूल कर्मचारियों निरीक्षकों, सहयोगियों या अन्य साथियों के प्रति रवैया। व्यक्तित्व सम्बन्धी परीक्षाएँ और मूल्यांकन तुलाएँ स्वभावों, निश्चित स्थितियों में प्रत्याशित प्रतिक्रियाओं और व्यवहार के अन्य रूपों पर बल देती हैं।

इन समस्त मापों का प्रभावशाली प्रयोग उस रवैये पर निर्भर है जो उनके प्रति निर्देशन में रुचि रखने वाले निकायों के सदस्यों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है और निर्देशन कर्मचारियों में ऐसे परामर्शदाता को सम्मिलित करने पर निर्भर करता है, जो अनुसूचित विविध प्रविधियों में प्रशिक्षण प्राप्त हो। इन मापक यंत्रों का चुनाव और व्याख्या करने में विवेक की आवश्यकता है। जानना सदैव ही करना नहीं होता। परीक्षण के प्रश्नों के उत्तरों से व्यवहार के स्वीकृत रूपों के बोध का ज्ञान हो सकता है किन्तु विचाराधीन व्यक्ति का वास्तविक व्यवहार कागज पर प्रदर्शित प्रतिक्रिया से बहुत अधिक भिन्न हो सकता है। निर्देशन परामर्शदाता इन परीक्षणों की शुद्धता का निःसंदेह मूल्यांकन कर सकता है। प्राप्त अंकों का बुद्धिमत्तापूर्ण अर्थ बताने के लिए अन्य मापक उपकरणों के प्रयोग से अधिक अनेक मामलों के परिणामों पर दीर्घकाल तक कार्य करने का अनुभव होना आवश्यक है। (स्कूल निर्मित मूल्यांकन तुलाओं के एक उदाहरण के लिए देखिए परिशिष्ट)।

परियोजनात्मक प्रविधियाँ और स्थिति सम्बन्धी परीक्षाएँ निश्चित व्यक्तित्व के लक्षणों से सम्बन्धित परीक्षण या सूची में "निर्माणात्मक" सामग्री होती है। इसमें उत्तर के दिये हुए एक रूप के अनुसार वे निश्चित मदें होती हैं, जिनसे विचाराधीन व्यक्ति या मूल्यांकनकर्त्ता उस मद का चुनाव करता है जो उसे अत्यन्त उपयुक्त प्रतीत होती है। इसके फलस्वरूप उत्तर सीमित हो जाते हैं। "अनिर्मित" स्थितियाँ या कार्य जो परियोजनात्मक प्रविधि में प्रस्तुत किये जाते हैं, विचाराधीन व्यक्ति को स्वतंत्रतापूर्वक और अनौपचारिकता से उत्तर देने की अनुमति देते हैं। साधारणतया परीक्षण व्यक्तिगत रूप से किया जाता है और परीक्षणकर्त्ता कभी-कभी प्रश्न पूछ लेने या अनौपचारिक सुझाव दे देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करता।

उदाहरण के लिए रोरशैक इंकब्लाट प्रविधि की सामग्रियों में दस कार्ड होते हैं, जिनमें से प्रत्येक स्पष्ट रूप से निरर्थक रूप या स्याही के धब्बे का संकेत करता है। जब विचाराधीन व्यक्ति को प्रत्येक कार्ड दिया जाता है तो उससे कहा जाता है कि वह कार्ड में जो कुछ देखता है उसका वर्णन करे। थेमेटिक एपरसेप्शन टेस्ट (T.A.T.) और चिल्ड्रन्स एपरसेप्शन टेस्ट (C.A.T.) जैसी कुछ परियोजनात्मक प्रविधियाँ चित्रमय सामग्री का प्रयोग करती हैं। विचाराधीन व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वह प्रत्येक चित्र के सम्बन्ध में एक कहानी कहेगा,

जिसमें यह भी सम्मिलित होगा कि क्या हो चुका है, क्या हो रहा है और क्या होगा। यहाँ भी परीक्षक निष्क्रिय व्यक्ति के रूप में कार्य करता है।

इन प्रविधियों के प्रयोग में विचाराधीन व्यक्ति मुक्त हृदय से कल्पना कर सकता है। अपने उत्तरों, अपनी आशाओं और अभिलाषाओं, अपने भयों और चिन्ताओं, अपनी रुचियों और अरुचियों, अपने विचारों और अपने आक्रामक, समर्पणात्मक या अन्य अभिव्यक्ति सम्बन्धी रवैयों के द्वारा उसे परियोजना के प्रति प्रोत्साहित किया जाता है। मूल्यांकन के अनुभव और प्रेरणात्मक द्व्यर्थक शब्दों की अनौपचारिकता के कारण उत्तर के बाह्यरूपात्मक रूपों की व्याख्या प्राप्त करना कठिन हो जाता है। पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त क्लिनिकल मनोवैज्ञानिक के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति को परियोजनात्मक प्रविधि का प्रयोग करने या फलात्मक तथ्यों की व्याख्या करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

स्थिति सम्बन्धी परीक्षण का उद्देश्य छिपी हुई या आंशिक रूप से छिपी "जीवित जैसी" स्थिति में व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण करना है। "निर्माणात्मक" स्थिति के परीक्षण का उदाहरण यह है कि विद्यार्थियों से अपने हिज्जे के परीक्षा-पत्र स्वयं शुद्ध कराये जायें। इन परीक्षा-पत्रों की जाँच तो अध्यापक कर लेते हैं किन्तु उन पर निशान नहीं लगाते जिससे विद्यार्थी अशुद्ध शब्दों के हिज्जे बदल कर जो बेईमानी करे, वह पकड़ी जा सके।

स्थिति सम्बन्धी पर्याप्त परीक्षाएँ लेना महँगा भी है और कठिन भी है। जब तक कोई व्यक्ति ऐसी बहुत-सी स्थितियों में भाग नहीं लेता, तब तक वह यह निश्चय नहीं कर सकता कि प्रदर्शित व्यवहार स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त, जो बात ज्ञात होती है वह यह है कि विचाराधीन व्यक्ति ने किसी निश्चित रीति से कार्य किया है; यह आवश्यक नहीं कि उस व्यवहार का कारण स्पष्ट हो ही जाय।

स्कूल का परीक्षण कार्यक्रम

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में, एक फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक एल्फ्रेड बिनेट और उसके साथी थियोफिल साइमन ने फ्रांसीसी स्कूलों में मन्दबुद्धि छात्रों की मानसिक योग्यता का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बुद्धि की एक व्यक्तिगत परीक्षा का निर्माण किया। फिर इस परीक्षा का ल्यू एम० टर्मन ने स्टैंडर्ड रिवीज़न ऑफ दि बिनेट स्केल के रूप में अनुवाद और स्तरीकरण किया तथा अमेरिका में व्यक्तिगत रूप से दिये जाने वाले बुद्धि परीक्षण के रूप में इसका प्रयोग किया। इसके पश्चात् मौड मेरिल की सहायता से टर्मन ने इस तुला में फिर संशोधन किया।

व्यक्ति का परीक्षण स्टैनफोर्ड-बिनेट स्केल के १९३७ के संशोधन और वेशलर की और अधिक आधुनिक काल में निर्मित व्यक्ति की बुद्धि तुलाओं का प्रयोग क्लिनिक के अधिकारियों द्वारा विचलित व्यक्तियों के अध्ययन में किया जाता है। स्कूल निर्देशन कर्मचारी (जब तक कि वे इसके लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित न हों) इन

व्यक्तिगत बुद्धि तुलाओं या अन्य व्यक्तित्व-मूल्यांकन उपकरणों का प्रयोग करने का बहुत कम प्रयत्न करते हैं।

सामूहिक परीक्षा प्रथम विश्वयुद्ध में सामूहिक बुद्धि परीक्षणों आर्मी आल्फा (साक्षर सिपाहियों के लिए) और आर्मी बीटा (निरक्षर या अंग्रेज़ी न बोलने वाले सैनिकों के लिये) के निर्माण और प्रयोग ने मनोवैज्ञानिकों को स्कूली बच्चों के प्रयोगार्थ सामूहिक बुद्धि परीक्षाओं के निर्माण के लिए प्रोत्साहन दिया। प्रारम्भ में ऐसी सामूहिक परीक्षाएँ संकेत द्वारा ली जाती थीं, एक स्कूल का आचार्य स्तरीकृत बुद्धि मान्यताओं से अथवा पड़ोसी स्कूल के बौद्धिक स्तर से अपने विद्यार्थियों को बौद्धिक स्तर की तुलना करने के लिए उत्सुक हुआ, एक अध्यापक जिसने माप की पाठय-विधि पढ़ी थी—ऐसी किसी न किसी परीक्षा का परीक्षण करना चाहता था। किन्तु जब स्कूलों का निर्देशन कार्यक्रम संगठित होने लगा तभी स्कूल के प्रबन्धकों आदि ने समस्त विद्यार्थियों के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के साधन के रूप में एक स्तरीकृत परीक्षण उपकरण के प्रयोग के महत्त्व को स्वीकार किया।

आज स्कूलों में समस्त स्तरों पर प्रवेश पाने वाले छात्रों की बुद्धि परीक्षा लेने की प्रथा है। कुछ प्राइमरी स्कूलों में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों की भी पढ़ने की परीक्षा ली जाती है। बहुत से माध्यमिक स्कूल नये छात्रों की गणित की मौलिक बातों में कुशलता और पढ़ने में तथा भाषा कलाओं में उनकी निपुणता का निश्चय करने के लिए उपयुक्त परीक्षाओं का प्रयोग करते हैं। वर्तमान समय में स्कूलों और स्कूल प्रणालियों में समस्त विद्यार्थियों के निश्चित प्रगति स्तरों पर नियमित परीक्षाएँ लेने के संगठित कार्यक्रम की दिशा में प्रवृत्ति बढ़ रही है।

परीक्षण कार्यक्रम का नियोजन परीक्षण के पर्याप्त कार्यक्रम में परामर्शदाताओं, अध्यापकों, माता-पिताओं और छात्रों के सहयोगपूर्ण नियोजन के साथ-साथ प्रशासकीय प्रोत्साहन और स्वीकृति की भी आवश्यकता होती है। स्कूलों के प्रशासकों और निरीक्षकों को यह समझ लेना चाहिए कि विद्यार्थियों का—अध्यापकों का नहीं—मूल्यांकन करना है। कभी-कभी अध्यापक यह विश्वास करते हैं कि जब स्तरीकृत अथवा अन्य स्कूल या स्कूल प्रणालियों की परीक्षाएँ होने लगेंगी तो स्कूल के प्रशासक या निरीक्षक अध्यापक पर विशेष ध्यान देंगे न कि विद्यार्थी पर।

किसी विशिष्ट परीक्षा का क्या उद्देश्य है, यह विद्यार्थियों को समझना चाहिये। उन्हें ऐसा अवसर दिया जाना चाहिए जबकि उनके सम्मुख परीक्षा के परिणामों की व्याख्या की जा सके। माता-पिताओं को भी यह जानना चाहिए कि उनके बच्चों की परीक्षा होनी है और यह परीक्षा विद्यार्थियों के लाभ के लिये ली जा रही है।

परीक्षा का कार्यक्रम लम्बा होना चाहिए। उदाहरण के लिए शेकर हाइट्स, ओहियो के स्कूलों के परीक्षा के कार्यक्रम में द्वितीय श्रेणी से हाई स्कूल की उच्च कक्षा तक की उपयुक्त क्षेत्रों में परीक्षाएँ होती हैं।

चुनी हुई परीक्षाएँ ऐसी होनी चाहिएँ जो वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति कर सकें। अन्य बातें समान होने पर उनका कार्यान्वयन, सफलता प्राप्ति और उनकी

चित्र १७. शेकर हाइट्स स्कूल, परीक्षा में प्राप्तांक की तालिका, १६५८-५६

दिनाँक		प्रारम्भिक		जूनियर हाई		सीनियर हाई	
मास	सप्ताह	श्रेणी	परीक्षा	श्रेणी	परीक्षा	श्रेणी	परीक्षा
सितम्बर	१			७	प्रवेश परीक्षाएँ		
	२			७	कैली० मानसिक मैट० (नये छात्र)		
				७	व्यक्तित्व की कैली परीक्षा		
	३			७	इयोवा पठन	१२	अमेरिकन कौंसिल
	४	४	समुद्रतट संगीत रुचि			१२	इंग्लिश शब्दावली
अक्तूबर	१			७	इयोवा आधारभूत निपुणताएँ		
	२			६	अमेरिकन कौंसिल	११	अमेरिकन कौंसिल
				८	कैली० मानसिक मैट० गणित (केवल साधारण)		
	३						
	४					१०	सह० शब्दावली
नवम्बर	१	४	स्टैन० आंशिक बैट०	७	अंग्रेजी (अ० नि०)		
				८	अंग्रेजी (अ० नि०)		
		५	स्टैन० आंशिक बैट०	६	अंग्रेजी (अ० नि०)		
		६	स्टैन० आंशिक बैट०				
	२				गणित (केवल साधारण)	१२	सह० ट्रिगनोमेट्री
	३	६	कैली० मानसिक मैट०				
दिसम्बर	१			८	अमेरिकन इतिहास (अ० नि०)		
	२						
	३	२	कुहलमेन-एंडर्सन				
	४						
जनवरी	१			७	स्टैन० आंशिक बैटरी		
				८	स्टैन० आंशिक बैटरी		
	२			७	गणित (केवल साधारण)		

दिनाँक		प्रारम्भिक		जूनियर हाई		सीनियर हाई	
मास	सप्ताह	श्रेणी	परीक्षा	श्रेणी	परीक्षा	श्रेणी	परीक्षा
जनवरी	३			८	सह० अंग्रेजी		
				९	फ्रेंच इकाई परीक्षा (अ० नि०)		
				७	अंग्रेजी (अ० नि०)		
				८	अंग्रेजी (अ० नि०)		
				९	अंग्रेजी (अ० नि०)		
	४			८	गणित		परीक्षाएँ
फरवरी	१						
	२			८	इयोवा बीजगणित रुचि	११	इयोवा पठन
	३						
	४				गणित (केवल साधारण)		
मार्च	१	४	पिंटनर				
		५	विविध पिंटनर				
		६	विविध पिंटनर				
	२						
	३			७	अंग्रेजी (अ० नि०)		
				८	अंग्रेजी (अ० नि०)		
	४			९	अंग्रेजी (अ० नि०)		
अप्रैल	१			९	सहकारी समितियाँ	१०	सहकारी समितियाँ
						११	सहकारी समितियाँ
	२					१२	सहकारी समितियाँ
	३				गणित (केवल साधारण)		
	४			९	स्टैन० गणित		
मई	१					१२	इंग्लिश शब्दावली
	२						
	३			७	अंग्रेजी (अ० नि०)		
				८	अंग्रेजी (अ० नि०)		
				९	अंग्रेजी (अ० नि०)		
				८	अमेरिकन इतिहास (अ० नि०)		
	४				बीजगणित (अ०नि०)	१०	सह० शब्दावली
					गणित (केवल साधारण)		
				८ व ९	फ्रेन्च (अ० नि०)		
जून	१						परीक्षाएँ
	२						

नोट—(अ० नि०) का अर्थ है अध्यापक-निर्मित परीक्षण।

व्याख्या करना सरल होना चाहिए। चूंकि परीक्षाओं की लागत अपेक्षाकृत ऊँची होती है, उनके सावधानी और बुद्धिमत्तापूर्वक चुनाव पर ध्यान देना चाहिये। जब तक स्तरीकृत परीक्षाओं से अनुभव प्राप्त न हो जाय, तब तक एक समय में एक या दो से अधिक परीक्षाएँ न ली जायँ।

लेने योग्य परीक्षा वही है जिसमें छात्र सफलता प्राप्त कर सकें और उसके परिणामों को लिखा जा सके, समझाया जा सके और उनका उपयोग किया जा सके। प्राप्त अंकों पर परामर्शदाता को विशेष ध्यान देना चाहिए और प्राप्त किये गये अंक अधिक हैं या कम इसकी अपेक्षा उसे यह देखना चाहिए कि छात्र विशेष के निर्देशन में उठाये जाने वाले अगले कदम से इसका क्या सम्बन्ध है।

परीक्षण कार्यक्रम का कार्यान्वयन सामूहिक परीक्षा लेने के लिए चुने गये अध्यापक को परीक्षा और परीक्षा की नियमावली का अध्ययन करने के लिए उस व्यक्ति से मिलना चाहिये जिसके अधीन छात्र हों। जिस पद्धति का उपयोग किया जाने वाला है, उसके विषय में उन्हें सही ज्ञान होना चाहिये और ऐसे प्रश्नों तथा समस्याओं के सम्बन्ध में जिनके उत्पन्न होने की सम्भावनाएँ हैं उन्हें सचेत कर देना चाहिए। इन बातों पर बल देने की आवश्यकता है : (१) नियमावली में दिये गये निर्देशों का सही-सही पालन करने का महत्त्व, और (२) समय से पूर्व परीक्षण सामग्री तैयार कर लेने की आवश्यकता, ताकि परीक्षण प्रारम्भ हो जाने के पश्चात् उसमें विघ्न न पड़े।

परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए की जाने वाली व्यवस्थाएँ भी इतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं, किन्तु पद्धति व्ययसाध्य है। जब पृथक्-पृथक् व्यक्तियों द्वारा परीक्षण किये जाते हैं, तो प्रथम प्राप्त किये गए अंकों की जाँच कर ली जानी चाहिए। यदि योग्य छात्र प्राप्तांकों की दृष्टि से सफल रहते हैं, तो भी अन्तिम उत्तरदायित्व अध्यापक का है।

समस्त प्राप्तांकों को लिपिबद्ध कर लेना चाहिए। जिस आलेखन पद्धति में व्यक्तिगत प्राप्तांकों के अतिरिक्त परीक्षण में प्राप्त स्तर मान्यताएँ और स्थानीय समूह का माध्यम सम्मिलित हो, वह व्यक्तिगत परिणामों की व्याख्या में सहायक होती है। इसमें क्लर्क का अतिरिक्त समय तो लगता है, किन्तु व्यक्तिगत कार्यों की व्याख्या करने में इससे सहायता मिलती है।

परीक्षण प्राप्तांकों का मूल्य जिस लक्षण या योग्यता की परीक्षा ली गई है, उसका सम्पूर्ण आभास परीक्षण में प्राप्त अंकों से नहीं मिलता, किन्तु वे उस मापने योग्य सीमा का संकेत अवश्य करते हैं जिस सीमा तक छात्र में विशिष्ट गुण या लक्षण विद्यमान हैं। साधारणतया बुद्धि, रुचि या सफलता परीक्षण का उच्च मूल्यांकन अथवा रुचियों की सूची अच्छी क्षमता का संकेत करते हैं। जबकि प्राप्तांकों से प्रतिशत के आधार पर स्थिति ज्ञात की जाती है, उसे एकदम अन्तिम नहीं समझ लेना चाहिए चाहे वे प्रारम्भिक अंकों की अपेक्षा अधिक अर्थपूर्ण क्यों न हो।

व्यक्तियों के व्यवहार और शक्तिशाली योग्यता के विश्लेषण में सहायता प्राप्त करने के लिए निर्देशन परामर्शदाताओं के पास वैध स्तरीकृत परीक्षणों के परिणामों पर निर्भर करने का अवसर होता है। किन्तु प्रत्येक परामर्शदाता यह जानता है कि किसी विशिष्ट परीक्षण में किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त अंकों की अपेक्षा उसे अधिक जानने की आवश्यकता है । उदाहरण के लिये, एक छः वर्षीय लड़के द्वारा दी गई बुद्धि परीक्षा में प्राप्त ७२ अंक उस पन्द्रह वर्षीय लड़के द्वारा जो उसी परीक्षा में उतने ही अंक प्राप्त करता है, अधिक उच्चतर मानसिक योग्यता का संकेत करते हैं। प्राप्त अंक एक समान हैं, किन्तु आयु भिन्न-भिन्न है, इसलिए परीक्षण के लिए आयु के स्तरों का निर्माण किया गया है।

विचाराधीन व्यक्ति का इतिहास

जबकि विद्यार्थियों में विद्यमान अध्ययन सम्बन्धी व्यक्तिगत अन्तर के शैक्षिक महत्त्व और अध्यापन-अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी सिद्धान्तों के प्रयोग पर वर्तमान समय में बल दिया जा रहा है, तब निर्देशन विचाराधीन व्यक्ति के इतिहास के अध्ययन के प्रयोग की आवश्यकता होने लगी है । सामाजिक कार्यकर्त्ता, मनोवैज्ञानिक और मानसिक रोग चिकित्सक व्यक्ति के पूर्ण व्यक्तित्व को समझने के लिए विचाराधीन व्यक्ति के इतिहास का अध्ययन करने की पद्धति पर विचार करते हैं।

विचाराधीन व्यक्ति के इतिहास की रचना विचाराधीन व्यक्ति का इतिहास मूल्यांकन का कोई साधन नहीं है। यह एक प्रकार से उस व्यक्ति के सम्बन्ध में समस्त उपलब्ध तथ्यों का संग्रह है, जिसका गहन अध्ययन और विशेष उपचार करने की आवश्यकता होती है। किसी विचाराधीन व्यक्ति का इतिहास तभी वैध हो सकता है जबकि उसमें सम्मिलित समस्त जानकारी सही है। गलत तथ्यों को सूचित करने की अपेक्षा किसी व्यक्तित्व के रूप के सम्बन्ध में कोई जानकारी बिल्कुल न देना अधिक श्रेयस्कर है, तभी वह इतिहास सम्बन्धित व्यक्ति की आवश्यकताओं और समुचित उपचार के बुद्धिमत्तापूर्ण मूल्यांकन का आधार बन सकता है।

जब किसी व्यक्ति को विशेष उपचारात्मक चिकित्सा या पुनःस्थापन के लिये किसी स्कूल या अन्य सामुदायिक अभिकरण द्वारा किसी मनोवैज्ञानिक क्लिनिक के पास भेजा जाता है तो क्लिनिक का कोई प्रशिक्षित सदस्य—सामान्यतः मानसिक रोग चिकित्सक सामाजिक कार्यकर्त्ता—क्लिनिक के अध्ययन के लिये आवश्यक विविध प्रकार की जानकारी एकत्रित करके उसको क्रमानुसार रखता है। विचाराधीन व्यक्ति के सम्पूर्ण इतिहास में निम्नलिखित बातें होती हैं :

परिचयात्मक तथ्य : नाम, आयु, लिंग आदि ।
निरीक्षण योग्य लक्षणों सहित समस्या की निश्चित दशा या स्थिति ।
स्वास्थ्य इतिहास
पारिवारिक इतिहास
स्कूल का अनुभव

व्यावसायिक अनुभव (यदि वयस्क हो)
सामाजिक तालमेल
परीक्षाएँ
शारीरिक
मानसिक
मनोवैज्ञानिक
मानसिक रोगात्मक
शैक्षिक

जिस विशिष्ट व्यक्ति या स्थिति का अध्ययन किया जा रहा हो उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये इस रूपरेखा को स्वीकार किया जा सकता है। विचाराधीन व्यक्ति के इतिहास के निर्माण से सम्बन्धित एक बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। 'विचाराधीन व्यक्ति के मामले का इतिहास' शब्दावली का प्रयोग किसी भी व्यक्ति के विषय में किसी भी जानकारी के लिए सहसा नहीं कर डालना चाहिए। उदाहरणार्थ, अध्यापन या परामर्श कार्य के लिए अध्ययन करने वाले व्यक्तियों के हेतु कालेज में अध्ययन का एक क्षेत्र मानवीय विकास और तालमेल का है। अपनी पाठ्य-विधि के सम्बन्ध में बहुधा विद्यार्थी से आशा की जाती है कि वह एक अवधि तक विकासशील नवयुवक के व्यवहार का निरीक्षण करे और निरीक्षण के परिणामों की सूचना दे। इस सूचना में स्कूल में प्राप्त सफलता के सम्बन्ध में उपलब्ध तथ्य, किये गये परीक्षणों के परिणाम और इसी प्रकार की जानकारी की अन्य बातें सम्मिलित होनी चाहिएँ। यह एक व्यक्ति की रिपोर्ट या विचाराधीन मामले की रिपोर्ट है और इसे विचाराधीन मामले का इतिहास नहीं समझ लेना चाहिये जो एक प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्त्ता या मनोवैज्ञानिक द्वारा तैयार किया जाता है।

मामले का अध्ययन मामले का अध्ययन विचाराधीन मामले के इतिहास से भी आगे जाता है। विचाराधीन मामले के इतिहास के तथ्यों की व्याख्या की जाती है, सम्बन्धित व्यक्ति की कठिनाइयों का निदान किया जाता है, समुचित चिकित्सा अथवा उपचार किया जाता है और जब तक संतोषजनक तालमेल दिखाई नहीं देता तब तक इसके लिए निरन्तर प्रयत्न किया जाता है।

मामले के सम्पूर्ण अध्ययन करने का कार्य विशेषज्ञ का है। यह गलत तालमेल की गम्भीर समस्या को सुलझाने की क्लिनिक की विधि है जो अध्यापकों और स्कूल के निर्देशकों के प्रशिक्षण और अनुभव से बाहर की बात है। यद्यपि मामले के इतिहास में सम्मिलित करने के लिये सामाजिक कार्यकर्त्ता को सम्बन्धित तथ्य प्रदान करने का दायित्व स्कूल के निर्देशकों पर है, तो भी तथ्यों की व्याख्या और अपेक्षित उपचार का प्रयोग करने का कार्य मानसिक रोग चिकित्सक और उसके सहकारियों, निर्देशन क्लिनिक या मानसिक रोग के अस्पतालों का है। स्कूल कर्मचारियों का उत्तरदायित्व मामले के इतिहास में सम्मिलित करने के लिए जानकारी देने के अतिरिक्त विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तावित चिकित्सात्मक उपायों का प्रयोग करना भी है।

निर्देशन पुस्तिका

जानकारी को लिपिबद्ध करना उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि उसे प्राप्त करना। महत्त्वपूर्ण बातों को इस प्रकार लिखना और ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जिससे उनका उपयोग कुशलतापूर्वक हो सके। लिखने और फाइल करने का कार्य परिश्रम-साध्य और नीरस होते हुए भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वृत्त इस प्रकार का होना चाहिये कि उसमें और भी सामग्री बढ़ाई जा सके और उसमें नवीनतम परिचयात्मक तथ्यों के अतिरिक्त विद्यार्थी के सम्बन्ध में निम्नतर स्कूल में भर्ती होने के समय से लेकर हाई स्कूल से स्नातक होने तक की सारी महत्त्वपूर्ण बातें सम्मिलित हों।

संग्रहशील वृत्त का विकास वृत्तों के उन विविध प्रकारों को जानने के लिए जिन शब्दावलियों का वर्षों से प्रयोग होता रहा है उनमें संग्रहशील वृत्त पिछले दिनों जोड़ा गया है। संग्रहशील वृत्त विभिन्न स्कूलों में विभिन्न प्रकार से तैयार किया जाता है और विभिन्न प्रकार से ही इसकी व्याख्या की जाती है। किन्तु यह साधारणतया कुछ मूलभूत सूचनाओं के प्रयत्न का संकेत करता है जिसमें समय-समय पर तथ्य जोड़े जाते हैं। व्यक्ति का वृत्त कार्ड पर या फोल्डर में रखा जा सकता है। यह एक स्थायी वृत्त समझा जाता है और इस प्रकार बनाया जाता है कि वर्षों तक चल सके।

संग्रहशील वृत्त में सामान्यतया जो जानकारी सम्मिलित की जाती है (जिसमें से कुछ समय-समय पर परिवर्तित होती रहती है जैसे पता आदि) वह इस प्रकार है :

१. परिचयात्मक तथ्य
२. घर की दशाएँ और पृष्ठभूमि
३. आर्थिक संभावनाएँ और समस्याएँ
४. स्वास्थ्य वृत्त
५. शैक्षिक वृत्त
६. कक्षा के बाहर की गतिविधियों का वृत्त
७. चरित्र और व्यक्तित्व विकास वृत्त
८. व्यक्तिगत क्षमताओं का वृत्त
९. विशेष महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वृत्त
१०. विशेष रुचियों और सफलताओं का वृत्त
११. शैक्षिक योजनाएँ
१२. व्यावसायिक रुचियाँ
१३. कार्य-अनुभव
१४. स्कूल के बाद के जीवन की योजनाएँ
१५. जब विद्यार्थी स्कूल में प्रविष्ट होता है तो छात्र का एक छोटा चित्र जो वृत्त के साथ रखा जाता है। अन्य चित्र उसके विकास के बाद के वर्षों में इसमें सम्मिलित किये जा सकते हैं।

उदाहरणार्थ मद ९ से मद १४ तक प्रत्येक विद्यार्थी के वृत्त को पूर्ण बनाये रखने के लिए समस्त आवश्यक परिवर्तनों और परिवर्द्धनों को संग्रहशील वृत्त कार्ड पर लिखने में पर्याप्त समय लग जाता है। अतएव कुछ स्कूल प्रत्येक छात्र के लिये एक लिफाफा अथवा फोल्डर रखते है जिसमें विद्यार्थी की प्रगति दर्शाने वाला संग्रहशील वृत्त कार्ड और ऐसे पृथक्-पृथक् कार्ड रखे जाते हैं जिनमें क्रमशः महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, अध्यापकों और परामर्शदाताओं की टिप्पणियाँ, व्यावसायिक अभिरुचियाँ, कार्य के अनुभव और इसी प्रकार की अन्य बातें लिखी होती हैं। अन्य स्कूलों में; सूचना के विविध क्षेत्र पृथक्-पृथक् फाइल किये जाते हैं और भिन्न-भिन्न कार्यालयों में रखे जाते हैं: (१) स्वास्थ्य का सम्पूर्ण वृत्त स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा विभाग के कार्यालय में, (२) तथ्य युक्त परिचयात्मक जानकारी और वार्षिक उपस्थिति तथा सफलता का वृत्त साधारण कार्यालय में, और (३) कम वस्तुगत, व्यक्तिगत तथ्य निर्देशन कार्यालय में।

इसके अतिरिक्त अधिकांश स्कूल प्रणालियों में स्कूल प्रत्येक स्तर—प्रारम्भिक जूनियर हाई, सीनियर हाई—पर अपने संग्रहशील वृत्त रखते हैं जो स्कूल में रखे रहते हैं और जब विद्यार्थी आगामी उच्चतर स्कूल में जाता है तो सम्बन्धित तथ्यों की प्रतिलिपि करके वहाँ भेज दी जाती है। समस्त सम्बन्धित तथ्यों को एक कार्ड पर लिखने की प्रथा है जो विद्यार्थी के साथ एक स्कूल स्तर से दूसरे स्कूल स्तर तक यात्रा करता रहता है। पोर्टलैंड, मेन के सार्वजनिक स्कूलों के संग्रहशील वृत्त कार्ड देखिये।

वृत्त का उपयोग कुछ स्कूलों में निर्देशन वृत्त केवल परामर्शदाता के लिए उपलब्ध होते हैं। इन वृत्तों को देखने और इनका उपयोग करने की व्यवस्था अध्यापक के लिए भी होनी चाहिए क्योंकि विद्यार्थियों के लक्ष्य, अभिरुचियाँ, क्षमताएँ, सफलता की सीमाएँ और कार्यान्वियन ऐसे तथ्य हैं जो कक्षा के कार्य के मूल्यांकन और आगामी अध्ययन के निर्देशन के लिए आधार का कार्य करते हैं। इस सामान्य प्रविधि का एक अपवाद है; व्यक्ति के सम्बन्ध में गोपनीय जानकारी जो केवल परामर्शदाता के लिए ही उपयोगी है—या तो फोल्डर को सामान्य प्रयोग के लिए प्रस्तुत करने से पूर्व उसमें से हटा देनी चाहिए या उसे पृथक् फाइल में रखना चाहिए।

अध्यापकों को उस वैज्ञानिक अध्ययन को समझने में सहायता देनी चाहिए जो विद्यार्थियों के परिपक्व होने पर इन वृत्तों के द्वारा प्राप्त होता है। जो अध्यापक निर्देशन दृष्टिकोण नहीं रखते, वे वृत्त कार्ड पर उस सूचना को लिखना पसंद नहीं करते क्योंकि यह सूचना उन्हें अनावश्यक प्रतीत होती है। यदि एक बार वे व्यक्तिगत रूप से वृत्तों का मूल्य समझ लें, फिर वे प्रपत्र में सम्मिलित बातों पर अपने छात्रों के मूल्यांकन में पूरा सहयोग देंगे। इतना ही नहीं, यदि अध्यापकों को फोल्डर की सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाय तो ज्यों-ज्यों छात्रों की प्रगति की कहानी उन्हें ज्ञात होगी त्यों-त्यों वे अपने छात्रों में सक्रिय रुचि लेने लगेंगे। लिखे हुए तथ्यों

और जानकारी से परामर्शदाताओं और अध्यापकों को मानव व्यवहार के विषय में अधिक अच्छा ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

बच्चे के वृत्त में यदि कोई बात महत्त्वपूर्ण हो तो उसकी सूचना अभिभावकों को दे देनी चाहिए। परामर्शदाता बच्चे के विषय में जो कुछ कहता है, यदि वह उसकी लिखित साक्षी प्रस्तुत कर सके तो वह अभिभावकों से और अधिक सहयोग प्राप्त कर सकता है। यदि दीर्घकाल के संग्रहीत तथ्य अभिभावकों को दिखाए जाएँ तो वे परामर्शदाता के निर्णय की आलोचना करना और स्वयं को परामर्शदाता से श्रेष्ठ नहीं तो कम-से-कम उसके समान बुद्धिमान होने का दावा करना छोड़ दें। कुछ हाई स्कूलों में विद्यार्थी को भी अपना वृत्त देखने और महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर परामर्शदाता से विचार-विमर्श करने की अनुमति होती है। अन्य स्कूल इस नीति को अनुचित मानते हैं।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. मूल्यांकन और माप में अंतर बताइये।
२. कुछ कमियाँ क्या हैं : निरीक्षण प्रविधि की ? परियोजनात्मक प्रविधि की ? परीक्षण प्रविधि की ?
३. व्यक्ति के माप के उन विविध प्रकारों का वर्णन कीजिए जिनका अच्छे निर्देशन के सहायक के रूप में उपयोग किया जा सके।
४. निर्देशन के उद्देश्य से परीक्षण कार्यक्रम के लिए किन महत्त्वपूर्ण स्थितियों पर विचार करना चाहिए।
५. बुद्धि परीक्षा, सफलता परीक्षा, रुचि परीक्षा और अभिरुचि सूची के लिए तैयारी कीजिए। फिर समूह या व्यक्ति के लिए इनमें से प्रत्येक का प्रयोग कीजिए। परिणामों का अध्ययन करके छात्रों के लिए उनका मूल्यांकन कीजिए।
६. यांत्रिक रुचि से अध्ययन की रुचि किस प्रकार भिन्न है ?
७. स्तरीकृत परीक्षणों और अध्यापक निर्मित परीक्षणों का मूल्यांकन कीजिए।
८. व्यक्तित्व के माप में क्या कठिनाइयाँ आती हैं।
९. पृष्ठ १६४-१६५ पर दिये गये परीक्षण कार्यक्रमों का अध्ययन कीजिए। आप क्या अन्तर और क्या समानताएं पाते हैं ?
१०. छात्रों के मूल्यांकन में मामले के अध्ययन की प्रविधि का क्या मूल्य है ?
११. निर्देशन फ़ोल्डर के क्या महत्त्वपूर्ण उपयोग हैं ? गिनाइये।
१२. विद्यार्थियों की गतिविधियों के संग्रहशील वृत्तों का क्या मूल्य है—छात्रों के लिए ? मालिक के लिए ? स्कूल के लिए ? कालेज के लिए ?
१३. प्रयोग में आने वाले वृत्त प्रपत्रों के प्रकारों के सम्बन्ध में अपने स्कूल या कालेज के काम दिलाने वाले परामर्शदाता से बात कीजिए।
१४. निर्देशन कार्यों के लिए वृत्तों तक किसकी प्रत्यक्ष पहुँच होनी चाहिए ? क्यों ?
१५. विद्यार्थियों को अपने निर्देशन वृत्त देखने की अनुमति देने से क्या हानि-लाभ हैं ?

९

निर्देशन में सामूहिक कार्यविधि

सामूहिक कार्यविधि जीवन की जनतान्त्रिक पद्धति की विशेषता है। अतएव सामूहिक कार्यविधि अधिकाधिक लोकप्रिय निर्देशन प्रविधि बनती जा रही है। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता और लेखक जो व्यक्तिगत स्थितियों में परामर्श देने का कार्य कर रहे हैं, वे निर्देशन या कर्मचारियों के मुख्य कार्यों का दिग्दर्शन कराते हैं। निर्देशन की कल्पना के सत्य पर ध्यान दिये बिना तथाकथित व्यक्तिगत निर्देशन महंगा पड़ता है और सामूहिक स्थितियों में दिये जाने वाले निर्देशन द्वारा इसकी पूर्ति की जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त, कुछ ऐसे निर्देशन कार्य हैं, यदि उन्हें व्यक्ति-केन्द्रित के स्थान पर समूह-केन्द्रित कर दिया जाय तो वे अधिक लाभदायक होते हैं।

सामूहिक स्थितियों में निर्देशन के साधारण कार्य

यदि सही व्याख्या न की जाय तो सामूहिक निर्देशन एक ग़लत अर्थ का संकेत करेगा। सर्वसाधारण या समूह का सामूहिक रूप से निर्देशन नहीं किया जा सकता। निर्देशन सेवाएँ प्रदान करने के लिए जो कुछ भी व्यवस्था की जाती है, उसका लक्ष्य एक निश्चित व्यक्ति होता है, चाहे वह पृथक् हो या सामूहिक स्थिति में। कुछ निर्देशन कार्यकर्त्ता निर्देशन के व्यक्तिश: या व्यक्तिगत रूप के पक्ष में इतने अधिक हैं कि वे समूह में व्यक्ति का निर्देशन करने के रूप में तथाकथित समूह निर्देशन की चर्चा करते हैं। हमने सामूहिक स्थितियों में निर्देशन शब्दों का प्रयोग करके शब्दावली में मध्यवर्ती मार्ग ग्रहण किया है जिसका अर्थ निर्देशन के कुछ उन रूपों से है जिनकी व्यवस्था एक-से स्वार्थ या निर्देशन की आवश्यकता वाली स्थितियों में की जाती है। इनकी पूर्त्ति व्यक्तिगत परामर्श देने की अपेक्षा छोटे या बड़े समूहों में परामर्श देकर अधिक बचत और लाभ के साथ की जा सकती है। सामूहिक निर्देशन करने वाले अध्यापक या निर्देशन कर्मचारियों के नेता को व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों और समूह के प्रत्येक सदस्य के रवैयों को कभी विस्मृत नहीं करना चाहिए। जबकि निम्नलिखित

विचार-विमर्श में समूह निर्देशन शब्द का प्रयोग किया गया है तो यह ध्यान रखना चाहिए कि इसका संकेत व्यक्ति-केन्द्रित अर्थ की ओर है।

कौन से समूहों के लिये ?

सामूहिक स्थितियों में निर्देशन की कल्पना साधारणतया उन निर्देशन सेवाओं के संदर्भ में की जाती है जो स्कूल के कर्मचारियों द्वारा छात्रों के बड़े या छोटे समूहों के लिए उपलब्ध की जाती हैं। यद्यपि स्कूल के प्रत्येक विद्यार्थी का कल्याण निर्देशन कर्मचारियों का प्रमुख चिन्तनीय विषय है, फिर भी यह स्मरण रखना चाहिये कि सेवाओं का कार्यक्रम तभी सफल हो सकता है जबकि वह माता-पिताओं और स्कूल के कर्मचारियों के साथ-साथ नवयुवकों का निर्देशन करे।

समस्त निर्देशन के कार्यों का अन्तिम लक्ष्य आत्म-बोध और दूसरे के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करना है। जिन व्यक्तियों को अपने कार्यों का प्रबन्ध करने के लिये दूसरों से सहायता प्राप्त होती है, उन्हें यह जानकारी अवश्य प्राप्त करनी चाहिये। जब तक अभिभावकों, अध्यापकों और परामर्शदाताओं का यही समझदारी का रवैया न हो, तब तक प्रभावशाली सहायता प्रदान करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है। इस अध्याय में हम उस कार्यक्रम के उद्देश्यों और संचालन पर विचार करेंगे जो उन विविध प्रकार के समूहों के लिये हैं जिनकी हम चर्चा कर सकते हैं।

सामूहिक नेतृत्व प्रेरक और सफल सामूहिक नेता बनने के लिये मनुष्य में (१) सृजनात्मक कल्पना होनी चाहिये; (२) इस कार्य में समय लगाने और विचार करने की तत्परता हो ; और (३) समूह के सदस्यों में से नेता का निर्माण करने की क्षमता हो। सामूहिक कार्य के द्वारा निर्देशन के रूप में जो भी प्रयत्न किया जाता है, उसका ध्यान निर्दिष्ट व्यक्ति के महत्त्वपूर्ण स्वार्थों पर होना चाहिए। जो कार्यक्रम ऊपर से लादे जाते हैं या जिनका निर्देशन एक व्यक्ति करता है, वे अपने उद्देश्य में बहुत कम सफल होते हैं। यह एक मूलभूत सिद्धान्त है जिसका पूर्णतया पालन करना चाहिये।

चाहे समूह में स्कूल के विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक, समुदाय के अन्य सदस्य हों अथवा वाणिज्य या उद्योग के समूह हों, उसके निर्देशन लक्ष्यों में संभवत इनमें से एक या अधिक बातें सम्मिलित होती हैं : (१) सहायक सूचना का प्रसार, (२) समान समस्याओं का समाधान, (३) समूह के व्यापक रवैयों और दृष्टिकोणों की जानकारी प्राप्त करना, अथवा (४) परस्पर-विरोधी स्वार्थों, नीतियों या दृष्टिकोणों का विश्लेषण तथा उनका समीकरण।

यदि इसका उद्देश्य केवल सूचना देना हो तो समूह में नेतृत्व अधिक प्रत्यक्ष हो सकता है। निःसंदेह व्यक्तिगत स्वार्थ और आवश्यकताएँ अब भी मूल रूप से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। जिन व्यक्तियों के उपलब्ध सूचना से लाभान्वित होने की आशा की जाती है, उन्हें अपने हित में सूचना के मूल्य को समझना चाहिये। अन्यथा अत्यन्त सचेत व्यक्तियों को छोड़ कर समूह के शेष व्यक्ति अपना समय आलस्यपूर्ण बातों

में, पत्र लिखने, दूसरी कक्षाओं के लिये पाठ तैयार करने या दिवास्वप्न देखने में गंवा देंगे।

यह मान कर कि समूह के सदस्य विचाराधीन विषय में रुचि रखते हैं, नेता प्रत्यक्ष शिक्षण में लगता है। रुचि बनाये रखने के लिए सामग्री सुगटित होनी चाहिए और विषय का प्रस्तुतीकरण प्रेरक हो तथा ऐसी भाषा में हो जिसे श्रोतागण सरलता से समझ सकें। साधारणतया भाषण के पश्चात् उस पर वाद-विवाद होता है जिसमें समूह के कुछ या समस्त सदस्य भाग ले सकते हैं।

वांछनीय जानकारी देने के लिए समूह का प्रत्यक्ष निर्देशन योग्यता प्राप्त अध्यापकों, निर्देशन कर्मचारियों या सामुदायिक अभिकरणों के प्रतिनिधियों—जैसे वाणिज्य और औद्योगिक नेताओं, सरकारी अधिकारियों, कला, संगीत, साहित्य और अन्य व्यापक शिक्षा के नेताओं—द्वारा होना चाहिए। अतिथि वक्ता ऐसे व्यक्ति होने चाहिएँ जो केवल अपने क्षेत्र से ही परिचित न हों, अपितु श्रोता-ज्ञान भी रखते हों ताकि वे अपना मन्तव्य समूह की शैक्षिक स्थिति और रुचियों को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत कर सकें।

जब विचाराधीन विषय का सम्बन्ध व्यक्तिगत रुचियों, रवैयों अथवा सामूहिक समस्याएँ हों तो अधिक अप्रत्यक्ष नेतृत्व सम्बन्धी कार्यविधि की आवश्यकता होती है। इस प्रकार का नेतृत्व प्राप्त करना बहुधा कठिन होता है। अधिकांश में इस वाद-विवाद में समूह के सदस्यों में आदान-प्रदान होता है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इसका प्रणेता निष्क्रिय है और वह वाद-विवाद को आगे बढ़ाने में योग नहीं देता।

अप्रत्यक्ष विधि का एक उदाहरण एक कालेज के मनोविज्ञान क्लब की प्रणेता है। समूह और प्रणेता के मध्य सम्बन्ध अत्यन्त सहयोग और सौहार्दपूर्ण था। किन्तु कुछ विद्यार्थियों को इस बात की शिकायत थी कि निकाय कालेज में अनुचित मात्रा में मनमानी चलाता है। अतएव इस क्लब के प्रणेता ने समूह की समस्त गतिविधियों के प्रबन्ध का उत्तरदायित्व विद्यार्थियों के कंधों पर डालने का निर्णय किया। सभाओं में वह रुचि लेने वाली किन्तु मौन दर्शिका बन गई। अनेक सप्ताह पश्चात् क्लब के छात्र-अधिकारियों ने उससे पूछा कि क्या उसे उनमें कोई रुचि नहीं रह गई है? उसके रवैये से समूह के सदस्य अत्यन्त चिन्तित थे, और क्लब का कार्य संतोषजनक रीति से प्रगति नहीं कर रहा था। जब इन नवयुवकों को बताया गया कि उनकी प्रणेता अब भी बहुत अधिक रुचि रखती है, किन्तु वह विद्यार्थियों की गतिविधियों पर बहुत अधिक हावी होने से बचना चाहती है; इसके उत्तर में सबने एक स्वर से कहा : नहीं-नहीं, हमारा यह तात्पर्य नहीं था। हम अपनी योजनाओं में आपकी सहायता चाहते हैं। कृपया इस प्रकार अलग-अलग न रहिये।

केवल नवयुवक ही नहीं, अपितु बहुत से तथाकथित वयस्क भी परस्पर-विरोधी व्यवहार और रवैये का परिचय देते हैं। वे यह विश्वास करना चाहते हैं कि वे अपने मामलों का प्रबन्ध स्वयं कर रहे हैं। साथ ही वे अपने में प्रदर्शित रुचि और अनुभवी नेताओं के निर्देशन द्वारा सुरक्षा भी प्राप्त करना चाहते हैं। किन्तु वास्तव

में प्रभावशाली होने के लिए सामूहिक कार्यों का निर्देशन चातुर्यपूर्ण और शिष्ट होना चाहिए।

सफल सामूहिक नेता समूह के किसी भी सदस्य की टिप्पणी को शिष्टता और रुचि के साथ सुनता है, विचारों के स्पष्टीकरण में सहायता देता है, सामूहिक विचार और योजना में एकरूपता लाता है और अल्पभाषी सदस्यों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। सामूहिक नेता का यह भी उत्तरदायित्व है कि वह प्रत्येक सदस्य की अभिव्यक्त रुचि के अनुसार समूह के कार्य का प्रारम्भ और संगठन करे। यदि वह यह विश्वास करता है कि ऐसा कार्य समूह के अधिकांश सदस्यों को स्वीकार्य होगा तो वह उस कार्य का सुझाव देता है। यह उसके लिए आवश्यक हो सकता है कि अन्य सदस्यों द्वारा प्रगट किये गए विचारों को वह संक्षेप में प्रस्तुत करे, किन्तु उसकी टिप्पणियाँ संक्षिप्त और विषय के अनुकूल होती हैं। सम्भवतः नेता की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण योग्यता यह है कि वह अपने निजी विचारों, सुझावों या दृष्टिकोण के विरुद्ध व्यक्त की गई असहमति को वस्तुगत रूप में स्वीकार करता है।

व्यक्ति को परामर्शदान के समर्थन के रूप में समूह स्थिति किसी संस्था की निर्देशन सेवाओं के विशिष्ट कार्यों से सम्बन्धित सामूहिक स्थितियों में निर्देशन के कार्यक्रमों का नियोजन और प्रसारण निर्देशन कर्मचारियों द्वारा होना चाहिए। यद्यपि परामर्श कार्य परामर्शदाता और परामर्शपात्र के मध्य एक व्यक्तिगत कार्य है, तो भी यदि परामर्श कार्य ऐसे लोगों के छोटे समूहों के साथ किया जाय जिनकी समस्याएँ या प्रश्न समान होते हैं, तो समय की बचत हो सकती है और सम्भवतः अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। समूह के एक सदस्य का प्रश्न दूसरे सदस्य की विचारधारा को प्रेरित कर सकता है, अथवा समूह की स्थिति द्वारा संकोचशील और अवकाश ग्रहण करने वाले व्यक्ति को प्रश्न पूछने या अधिक सरलता से सहायता की माँग करने के लिए उत्साहित किया जा सकता है, वैसे परामर्शदाता के साथ आमने-सामने के साक्षात्कार में वह ऐसा नहीं कर सकता।

समूहों में छात्रों का निर्देशन

अधिक स्कूल और कालेज अनेक प्रकार की ऐसी सामूहिक स्थितियाँ उत्पन्न करते हैं जिनके निर्देशन सम्बन्धी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अर्थ निकलते हैं। इनमें से कुछ स्थितियाँ कार्यों के समस्त स्कूल कार्यक्रमों में समान हैं और वर्षों तक एक ही सूची के अनुसार चलते रहते हैं, अन्यों का निर्देशन सेवाओं के स्कूल कार्यक्रम से सीधा सम्बन्ध है, शेष का उद्भव आधुनिक आवश्यकताओं से होता है। प्रत्येक सम्बन्धित शैक्षिक स्तर के उपयुक्त निश्चित सामूहिक प्रविधियों के प्रयोग पर आगामी अध्यायों में विचार किया जायेगा। यहाँ हम सामूहिक स्थितियों के रूपों में निर्देशन के केवल उन उद्देश्यों पर जिनका संगठन किया जा सकता है, उनके सम्बन्धित कार्यों और उनके प्रत्याशित परिणामों पर विचार करेंगे।

सेवित उद्देश्य समूह में निर्देशन के लक्ष्य स्कूल के स्तर, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और स्वार्थों, प्रशासकीय दर्शन और स्कूल के उपलब्ध कर्मचारी जो सामूहिक नेतृत्व की क्षमता रखते हैं, के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। जो संस्थाएँ सामूहिक कार्यक्रमों की व्यवस्था करती हैं उनमें बच्चे, नवयुवक और वयस्क भाग लेकर निम्नलिखित लाभ उठा सकते हैं :

१. जानकारी जो उनके अनुभव के विविध क्षेत्रों से तालमेल बैठाने में उनको सहायता देगी। इन क्षेत्रों में ये सम्मिलित हैं :
   (क) शैक्षिक प्रगति
   (ख) कार्य सम्बन्धी अवसर और व्यावसायिक तैयारियाँ
   (ग) अवकाशकालीन गतिविधियाँ
   (घ) सामाजिक और नागरिक दशाएँ
२. सहकारितापूर्ण जीवन में अनुभव जिनसे निम्नलिखित का विकास होता है :
   (क) पहल
   (ख) खिलाड़ी-भावना
   (ग) दूसरों का विचार
   (घ) आत्म और सामाजिक ज्ञान
३. निम्नलिखित के द्वारा व्यक्तिगत योग्यताओं और रुचियों का विकास :
   (क) सामूहिक योजनाओं में भाग लेने से
   (ख) छात्रों द्वारा प्रारम्भ किये गए कार्यों के संगठन से
   (ग) स्कूल के भीतर और बाहर विशेष सेवाओं तथा कार्यक्रम से ।

एक किशोर, कभी-कभी बच्चा अथवा युवक यह विचार करने लगता है कि वह ऐसी समस्यामूलक स्थितियों और दशाओं का अनुभव कर रहा है जो उसके लिए कुछ विचित्र हैं। बहुधा उसके अभिभावक उसे नहीं समझते, वह संघर्षात्मक आकांक्षाओं या अभिरुचियों का शिकार हो जाता है; उसके अध्यापक उसके द्वारा कक्षा या स्कूल के कुछ नियमों के पालन की आशा करते हैं जिन्हें वह मूर्खतापूर्ण समझता है; वह शारीरिक और शरीर निर्माण सम्बन्धी ऐसे परिवर्तनों से चिन्तित हो जाता है जिन्हें वह शारीरिक विकास की लक्षणात्मक प्रक्रिया के रूप में नहीं समझ पाता ; समान आयु के लोगों से सम्बन्ध स्थापित करने में उसे कठिनाई होती है। बहुत बार नवयुवक अपनी परेशानियों और चिन्ताओं को अपने तक सीमित रखता है। वह शनैः-शनैः क्षोभ या अरक्षा की भावना का विकास करता है जो अनजाने में तब तक चल सकती है जब तक कि उसकी कठिनाइयाँ सूक्ष्मदर्शी माता-पिता, अध्यापक या परामर्शदाता द्वारा न समझी जाएँ ।

जब समुचित रूप से संगठित समूह में नवयुवकों को अपनी सम्बन्धित रुचियों, अभिलाषाओं, रवैयों या भावात्मक प्रतिक्रियाओं पर विचार करने का अवसर प्राप्त हो जाता है तो वे यह समझने लगते हैं कि उनकी "कल्पित" समस्याओं में से अधिकांश उनकी आयु के छात्रों द्वारा अनुभव की जाती हैं। एक बुद्धिमान सामूहिक नेता, जिसने

समूह का विश्वास प्राप्त कर लिया है, तालमेल की गंभीर समस्या रखने वाले लड़के या लड़की को व्यक्तिगत परामर्श प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

सामूहिक स्थितियों और कार्यों के प्रकार निर्देशन के विस्तृत अर्थों के अनुसार प्रत्येक सामूहिक अध्यापन-अध्ययन स्थिति में निर्देशन निहित होता है। सामान्य अध्ययन—जिसे प्रारम्भिक स्तर पर सुगठित अध्ययन, माध्यमिक स्कूलों में शिक्षा और अनुभव का पाठ्यक्रम और कालेज में संयुक्त व्यापक शिक्षा माना गया है—का आधार निर्देशन की कल्पना है। बहुत से स्कूल कक्षा के बाहर की सामूहिक स्थितियों और गतिविधियों की व्यवस्था भी करते हैं, जिनमें भाग लेकर नवयुवक आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हैं अथवा उन्हें समुचित रवैये और व्यवहार की विशेषता का विकास करने में सहायता दी जा सकती है।

निर्देशन-केन्द्रित सामूहिक स्थितियों और गतिविधियों की व्यवस्था करने में भिन्न-भिन्न स्कूलों में अंतर है। इसके अतिरिक्त जो गतिविधियाँ सम्मिलित की जाती हैं, उनकी रीति और प्रकार भी समान नहीं होते। अधिकतर निम्न प्रकार की गतिविधियों का प्रसार है :

१. स्कूल सभा
२. गृह-कक्ष कार्यक्रम, विशेषतः जूनियर और सीनियर हाई स्कूलों में
३. निर्देशन पाठ्य विधियाँ
४. रुचि और सेवा क्लब
५. स्कूल शासन और प्रबन्ध के संगठित कार्यक्रम
६. विशेष लघु-समूह सम्मेलन।

निर्देशन के इन माध्यमों के कुछ साधारण कार्यों और संगठित रूपों पर यहाँ संक्षेप में विचार किया जा रहा है

स्कूल सभा स्कूल सभा एक प्रकार का सामूहिक संगठन है जो समस्त शैक्षिक स्तरों पर प्रचलित है। साप्ताहिक बैठक की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है कि एक बड़े श्रोता-कक्ष या कमरे में अधिक से अधिक विद्यार्थियों को एक साथ एकत्रित करने के एक या अधिक अवसर प्राप्त हो सकें। कुछ अधिक छोटे प्रारम्भिक स्कूलों में प्रारम्भिक व्यायाम के हेतु समस्त छात्रों को प्रतिदिन एकत्रित किया जाता है। और अधिक बड़े प्रारम्भिक स्कूलों तथा अधिकांश जूनियर और सीनियर हाई स्कूलों में सप्ताह में एक बार या दो बार नियमित सभा होती है। कुछ अधिक बड़े कालेजों और विश्वविद्यालयों ने इस प्रकार की सभा को समाप्त कर दिया है, केवल ऐसे अवसरों पर जबकि कोई विख्यात वक्ता आता है या सामूहिक परियोजना प्रस्तुत करनी होती है, तब संस्था के विशिष्ट समूह समय-समय पर एकत्रित हो जाते हैं। किन्तु बहुत से छोटे कालेजों में धर्म का एक घण्टा प्रति सप्ताह होता है जिसमें विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से उपस्थित होना पड़ता है।

गैर-स्कूली संस्थाएँ अपने कर्मचारियों में एकता के रवैये को प्रोत्साहित करने के लिए और उनकी रुचि के कुछ मामलों को उनकी जानकारी में लाने के लिये उनकी

सभा बुलाने के महत्त्व को समझती हैं। बहुत से व्यापारिक संस्थान, औद्योगिक संयन्त्र, व्यावसायिक समूह और सामाजिक तथा नागरिक संगठन नियमित सभाएँ करते हैं जिनमें अपनी इच्छा से अथवा आदेशानुसार उस संस्था या समूह से सम्बन्ध रखने वाले समस्त व्यक्ति उपस्थित होते हैं। ऐसी सभाओं में आदेश दिये जाते हैं, संचालन-सम्बन्धी योजनाओं पर विचार होता है और प्रबन्धकों तथा कर्मचारियों की समस्याओं पर विचार किया जाता है। यदि कार्यक्रम भाग लेने वालों के लिये रुचिकर है और भलीभाँति संगठित किया जाता है तो किसी भी स्तर पर अथवा किसी भी समूह के लिए अत्यन्त उपयोगी हो सकता है।

स्कूल सभा के बहुत से महत्त्व हैं। यह निम्नलिखित के लिये अवसर प्रदान करती है :

१. विद्यार्थियों में एकता और स्कूल के प्रति व्यक्ति के रवैयों को विकसित करने में सहायता देने के
२. विविध माध्यमों के द्वारा कक्षा के अध्ययन को समष्टिरूप से विस्तृत करने के। वे माध्यम हैं : अतिथि वक्ता, चलचित्र या टेलीविजन और छात्रों तथा अध्यापक द्वारा तैयार एवं प्रस्तुत किये गये शैक्षिक कार्यक्रम।
३. अच्छा श्रोता बनने का स्वभाव डालने के
४. आत्माभिव्यक्ति और छात्र-चालित कार्यक्रमों के द्वारा स्वयं को प्रस्तुत करने की भावना को विकसित करने के हेतु प्रोत्साहन देने के
५. स्कूल प्रशासन अधिकारियों के निर्वाचन के लिए प्रयुक्त होने वाली मत प्रदान करने की रीति से विद्यार्थियों को परिचित कराने के
६. श्रेष्ठ शैक्षिक सफलता और स्कूल के कार्य के अन्य चरणों के लिए व्यक्तियों और समूहों को अभिस्वीकृति देने के
७. व्यवहार के स्कूली और सामुदायिक स्तरों के प्रति छात्रों को सावधान करने के
८. स्कूल और समुदाय के विशेष कार्यों तथा अवसरों की विद्यार्थियों को सूचना देने के

प्रत्येक सभा के घण्टे से इन समस्त लक्ष्यों की पूर्ति की आशा नहीं की जा सकती। इनमें से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये छात्रों के हितों को ध्यान में रखकर कार्यक्रम बनाना चाहिए। आचार्य या अन्य प्रशासक को यह नहीं समझना चाहिए कि सभा का घण्टा विद्यार्थियों को उनके उत्तरदायित्वों का स्मरण कराने, कुछ के दुर्व्यवहार के लिए सबको डाँटने और किसी वाँछनीय व्यवहार से हटने पर छात्रों को अच्छे व्यवहार का पाठ पढ़ाने के लिए ज़ोर-ज़ोर से भाषण देने का है। किन्तु यह स्मरण रखना उचित होगा कि सभा का कार्यक्रम कितना ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, कुछ रुचि न लेने वाले छात्र अपने पड़ोसियों से कानाफूसी करेंगे, अपनी जगहों

पर हलचल करेंगे या अन्य अशान्तिमय कार्य करेंगे। श्रोताओं के ऐसे व्यवहार को सहन नहीं किया जा सकता; कठोर अनुशासनात्मक व्यवहार और अनुमति-योग्य व्यक्तित्व के मध्य कोई "आनन्दपूर्ण माध्यम" होना चाहिए।

कुछ स्कूलों में, छात्रों और निकाय के परामर्शदाताओं से निर्मित एक समिति सभा के कार्यक्रमों का निर्माण करती है। वक्ताओं में सामुदायिक नेता और स्कूलों के स्नातक होते हैं जो छात्रों द्वारा आमन्त्रित किये जाते हैं। छात्रों द्वारा प्रारम्भ की गयी परियोजनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं जिनमें नाटक, संगीत, नृत्य, कला-प्रदर्शनी, छात्रों को पुरस्कार प्रदान करना, वाद-विवाद और गोष्ठियाँ, छात्र परिषद् के लिये नामज़द-गियाँ, व्यावसायिक अवसर, खेल-कूद, प्रवेश पाने वाले छात्र के लिए दीक्षा कार्यक्रम तथा ऐसे अन्य मामले जो छात्रों से सम्बन्धित हैं, सम्मिलित हैं।

गृह-कक्ष कार्यक्रम गृह-कक्ष कार्यों में भाग लेने वाले छात्रों के लाभों के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा जा चुका है। अधिकांश प्रारम्भिक स्कूलों में पूर्व पाठ का कक्षा का घण्टा (जो सामान्यतः पन्द्रह से तीस मिनट तक का होता है) उन कार्यों पर लगाया जाता है जो कि कक्षा के नियमित कार्यों के अलावा होते हैं और जिनमें निर्देशन मूल्य की कल्पना की जाती है। अनेक जूनियर और सीनियर हाईस्कूलों में, सामूहिक स्थितियों में निर्देशन लगभग पूर्णतया गृह-कक्ष के कार्यों तक ही सीमित है। गृह-कक्ष निर्देशन के मूल्य से सम्बन्धित प्रशासक का जो उत्साह है, वह अधिकांश अध्यापकों और छात्रों में नहीं दिखाई देता। गृह-कक्ष निर्देशन के कार्यक्रम से जो आज-कल असन्तोष है, संभवतः उसका कारण यह है कि अध्यापक और विद्यार्थी दोनों ही न तो यह समझते हैं कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य क्या है और न यह कि इसके उद्देश्यों की पूर्ति किस प्रकार सफलतापूर्वक की जा सकती है। गृह-कक्ष के घण्टे की अवधि, प्रशासकीय विवरण की राशि, सम्बन्धित छात्रों की विशेष रुचि और अध्यापक में नेतृत्व की योग्यता आदि ऐसी बातें हैं जो इस बात का निश्चय करती हैं कि इस माध्यम से किस सीमा तक निर्देशन-कार्य की पूर्ति की जा सकती है।

गृह-कक्ष के घण्टे में कुछ प्रशासकीय विवरणों पर ध्यान देना चाहिए। ये विवरण हैं, उपस्थिति लिखना, रिपोर्ट करना और सूचनाओं को पढ़ना। इस प्रकार के कार्यों में समय लगता है क्योंकि इनसे विद्यार्थियों को प्रश्न और वाद-विवाद करने का अवसर मिलता है। गृह-कक्ष का अध्यापक कितना ही कुशल क्यों न हो, किन्तु उसे अनुभव होता है कि बिना कुछ नियोजन कार्य किये ही घण्टा समाप्त हुआ जा रहा है। इसके अतिरिक्त गृह-कक्ष का घण्टा उसके नाम के अनुकूल होना चाहिये, ऐसी घरेल स्थिति जिसमें प्रत्येक छात्र अपनी स्कूल की और निजी अनेक समस्याओं को अध्यापक की सहायता से सुलझा सके। विद्यार्थी अपनी समान समस्याओं और रुचियों पर विचार करना चाहते हैं। वे गृह-कक्ष के कार्यों के संगठन में भी अपने ही तरीके से रुचि रखते हैं। नवयुवक स्कूल प्रशासन, गरीब बच्चों के लिए क्रिसमस पर धन-संग्रह, सफाई और सुरक्षा आन्दोलनों के आयोजन तथा अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों जैसे स्कूल या समाज के लिए कल्याणकारी परियोजनाओं में सहर्ष भाग लेते हैं।

यदि प्रशासकीय कार्यों को शीघ्रता से निबटाया जा सके और कार्यक्रमों को छात्रों की रुचि के अनुकूल निर्धारित किया जा सके तो गृह-कक्ष का घण्टा निर्देशन के लिए मूल्यवान माध्यम बन सकता है। प्रतिदिन के दस-पन्द्रह मिनट के घण्टे में दैनिक खानापूरी के अतिरिक्त अन्य कार्य कठिनाई से हो सकता है अतएव प्रति सप्ताह एक घण्टा चालीस या पैंतालीस मिनट का रख देना चाहिए।

लम्बे गृह-कक्ष के घण्टे में क्या और कैसे किया जाता है, यह महत्त्वपूर्ण है। कुछ स्कूलों में यह "मौन" घण्टा होता है, जिसमें यह माना जाता है कि अध्यापक और विद्यार्थी दिन भर के अध्यापन और अध्ययन के लिये तैयारी करते हैं। यह 'गपशप' का घण्टा भी हो सकता है जिसमें लड़के आपस में एक-दूसरे से व्यक्तिगत मामलों में गपशप करते हैं और अध्यापक कक्षा का कार्य तथा रिपोर्टें तैयार करने का प्रयत्न करते हैं। इस समय का उपयोग छात्रों की तात्कालिक रुचि के मामलों पर वाद-विवाद करके भी किया जा सकता है जिसका नेतृत्व अध्यापक करे। कुछ स्कूलों में प्रशासकीय ब्यौरा समाप्त करने के पश्चात् छात्रों को यह अनुमति होती है कि वे परामर्शदाताओं या अध्यापकों से परामर्श करने के लिए कक्षा से बाहर चले जायें, पुस्तकालय में चले जाएँ अथवा अन्य कक्षाओं के छात्रों के साथ सामूहिक परि-योजनाओं में भाग लें। गृह-कक्ष के लिए नियोजित निर्देशन कार्यक्रम में उन नवयुवकों की व्यक्तिगत रुचियों पर ध्यान रखना चाहिये जो इस अवधि को अपनी रुचि के कार्य करने का अवसर समझते हैं और उन कार्यों को करना चाहते हैं जो वे महत्त्वपूर्ण समझते हैं।

निर्देशन पाठ्यविधियाँ माध्यमिक स्कूलों में और उससे कुछ कम प्रारम्भिक स्कूलों की उच्चतर श्रेणियों में यह भावना बढ़ती जा रही है कि प्रति सप्ताह पाठ का एक घण्टा निर्देशन के उद्देश्यों के लिए पृथक् निश्चित कर देना चाहिए। तब गृह-कक्ष का घण्टा ऐसा रह सकता है जिसमें कक्षा अध्यापक के नेतृत्व में उन कार्यों में अनौप-चारिक रीति से व्यस्त हो सकती है जो उस समूह के लिए तात्कालिक रुचि के हों। निर्देशन का अनुसूचित घण्टा नियमित पाठ का घण्टा नहीं होता; कार्य करने के लिए कोई अक नहीं दिये जाते। यद्यपि पाठ्य विधि की सामग्री साधारणतया "निर्मित" होती है ताकि विचारणीय विषय अनुक्रमिक ढाँचे के अनुकूल हो। अध्यापक परामर्श-दाता—जो "पाठ" पढ़ाता है—वह लगभग अनुमतिपूर्ण पद्धति अपनाता है (सामूहिक निर्देशन की रूपरेखा के लिए देखिए अध्याय १४)।

जबकि विद्यार्थी एक के पश्चात् एक स्कूल स्तरों पर प्रगति करता है, तब उसे अपने वर्तमान और भावी जीवन के विविध क्षेत्रों के साथ तालमेल बिठाने की प्रविधि सीखने की आवश्यकता होती है। इस अध्ययन प्रक्रिया का कम-से-कम एक भाग नियमित अध्ययन कार्यक्रम में निहित होता है। तालमेल के किसी न किसी विशिष्ट क्षेत्र से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले तत्त्व सम्भवतः विशेष सामूहिक स्थिति या निर्देशन कक्षा में अधिक पर्याप्त रूप से संभाले जा सकते हैं। ऐसी पाठ्य-विधियों में अधिकांश रूप से सम्मिलित किये जाने वाले क्षेत्र शैक्षिक और

व्यावसायिक अवसरों तथा मानवीय सम्बन्धों या मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा पर विशेष बल देते हैं।

रुचि और सेवा क्लब बच्चे अपने ही जैसे विचार वाले सहपाठियों की गतिविधियों में भाग लेना चाहते हैं ताकि वे उनमें अपनी रुचियों की अभिव्यक्ति और सूत्रपात करने की अपनी क्षमता तथा आत्म-निर्देशन का दिग्दर्शन कर सकें। यद्यपि वे बहुधा अत्यन्त आत्म-केन्द्रित प्रतीत होते हैं, तो भी वे अन्य व्यक्तियों के लिए प्रसन्नतापूर्वक कार्य करने को प्रस्तुत रहते हैं। नवयौवन की इन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए रुचि और गतिविधि के क्लब श्रेष्ठ माध्यम हैं।

क्लबों की स्थापना कक्षा के नियमित कार्यों या व्यक्तिगत रुचियों और स्कूल या समुदाय के सम्बन्धों के फलस्वरूप हुई है। हमारे विचार के लिए, कक्षा के बाहर की गतिविधियों में वे समस्त सामूहिक परियोजनाएँ सम्मिलित कर ली गई हैं जो नवयुवकों को अपनी असीम शक्ति और उनकी विशेष रुझानों को शारीरिक श्रम की टीमों, विषय सम्बन्धी क्लबों, पत्रकारों, पुस्तकालय, कार्यालय, ट्रैफिक या अन्य सेवा समूहों के उपयोग के लिए अवसर प्रदान करती हैं। प्रत्येक समूह निकाय के एक सदस्य द्वारा संचालित होना चाहिए जो उस समूह में रुचि रखता हो और समूह की गतिविधियों का कुशलता से और अप्रत्यक्ष रूप से निर्देशन करने की योग्यता रखता हो।

किसी भी स्कूल में मिलने वाले क्लबों की संख्या और प्रकार स्कूल के स्तर और छात्र की रुचि पर निर्भर करते हैं। रुचि या पाठ्यक्रम का क्लब इतना लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण हो सकता है कि क्लब की स्थिति बदलकर वह वैकल्पिक पाठ्यविधि का रूप ग्रहण कर सकता है, जो साधारणतया क्लब के भूतपूर्व नेता द्वारा पढ़ाई जाती है। यदि पाठ्यविधि का अध्यापक ऐसे अनौपचारिक रवैये को बनाये रखता है जो उसकी क्लब पद्धति की विशेषता थी, तो यह पाठ्यविधि भी क्लब की भाँति ही विद्यार्थियों में लोकप्रिय हो जाती है।

उदाहरणार्थ, कुछ माध्यमिक स्कूलों में स्कूल का समाचार-पत्र और स्कूल के अन्य प्रकाशन पहले पत्रकार क्लब द्वारा तैयार और प्रकाशित किये जाते थे। अब पत्रकारिता का नियमित रूप से अध्ययन कराया जाता है जिसमें रुचि रखने वाले योग्य विद्यार्थी अंग्रेजी की नियमित पाठ्यविधि के स्थान पर पत्रकारिता का चुनाव करते हैं। यहाँ उन्हें पत्रकारिता में आधारभूत प्रशिक्षण प्राप्त होता है जिसका उपयोग स्कूल के प्रकाशनों के उन्नत उत्पादन में होता है। निःसंदेह सम्पादकीय कार्य स्कूल के बाहर का बहुत-सा समय ले लेता है।

स्कूल के क्लब की गतिविधियों के प्रति शिक्षकों और नवयुवकों—दोनों—के रवैये भिन्न-भिन्न होते हैं। कक्षा के बाहर की सामूहिक गतिविधियों में विद्यार्थियों के भाग लेने के महत्त्व पर कुछ आचार्य इतना अधिक विश्वास करते हैं कि वे अपने नियमित स्कूल दिवस का एक घण्टा क्लब के लिए निर्धारित कर देते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी को क्लब में भाग लेना पड़ता है। इस प्रकार जो छात्र घर के कार्यों के कारण स्कूल

के समय के पश्चात् होने वाली गतिविधियों में भाग नहीं ले सकते, उन्हें क्लब का सदस्य बनने का अवसर प्राप्त हो सकता है। किन्तु साधारणतया यह नीति वाँछनीय नहीं है। ज्योंही क्लब की गतिविधि अनिवार्य हो जाती है, कुछ छात्र विद्रोह करने लगते हैं, क्लब के कार्य को स्कूल का एक और कार्य समझ लिया जाता है, स्वाभाविक उत्साह समाप्त हो जाता है। बहुत से अध्यापक भी इस कार्यविधि पर आपत्ति करते हैं, क्योंकि इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक अध्यापक से क्लब का नेता बनने की आशा की जाती है, चाहे वह उसमें रुचि रखता हो या न रखता हो, या उसमें नेतृत्व के गुण हों या न हों।

कुछ शिक्षकों का दृष्टिकोण यह है कि पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्त क्लब पाठ्यक्रम से सम्बद्ध कर दिये जाने चाहिएँ। इस नीति के समर्थक इस बात पर बल देते हैं कि तब पाठ की कक्षाओं के सत्र उसी अनौपचारिक रीति से चलाये जाएँगे जिससे कि क्लब के कार्य चलाये जाते हैं। कुछ अध्ययन क्षेत्रों में—विशेषतः माध्यमिक स्तर पर—यह लगभग असंभव प्रतीत होगा। अध्ययन पाठ्यविधि की माँगों के अनुसार अध्यापक की कार्यविधि सीमित होती है। कक्षा की गतिविधि कार्य ही समझी जाती है, चाहे वह एक आनन्दप्रद अनुभव क्यों न हो। क्लब के कार्य का चाहे कितना ही शैक्षिक मूल्य हो और इस परियोजना की पूर्ति में क्लब के सदस्य चाहे कितनी ही गंभीरता से भाग लें, फिर भी वे इसे मनोरंजक "खेल" या मनोरंजन ही समझते हैं।

सामान्यतया कक्षा के समय के पश्चात् रुचि या सेवा क्लबों में भाग लेने के फलस्वरूप "छात्र कार्य" के अनेक पुरस्कार प्राप्त होते हैं जो क्लब के निश्चित कार्यों के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। सदैव ऐसे कुछ छात्र होते हैं जो केवल इन पुरस्कारों को प्राप्त करने के लिए ही क्लब के सदस्य बनते हैं। ये "क्लब के कीड़े" होते हैं जो बहुत से क्लबों के सदस्य होते हैं। वे अनेक क्लबों के सदस्य होने के कारण या तो अध्ययन के अपने उत्तरदायित्वों की उपेक्षा करते हैं अथवा निष्क्रिय सदस्य होते हैं। कुछ नवयुवक इतने संकोची या एकान्तप्रिय (संभवतः तटस्थ) होते हैं कि वे किसी भी सामूहिक गतिविधि में भाग नहीं लेते।

क्लबों के कीड़े और क्लबों से उदासीन, दोनों ही को न केवल स्कूल में अपितु वयस्क जीवन की तैयारी के लिए भी क्लब की सदस्यता के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण के विकास के हेतु अपने परामर्शदाता की सहायता की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, सेवा क्लब का सदस्य बनकर अपने स्कूल और अपने सहपाठियों की सेवा करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करके दूसरों के कल्याण की दिशा में निर्देशन के रूप में बहुत कुछ किया जा सकता है।

स्कूल के प्रशासन और प्रबन्ध में विद्यार्थियों का भाग छात्रों और अध्यापकों द्वारा स्कूल प्रशासन और प्रबन्ध का कार्यक्रम संगठित करने और चलाने से जनतांत्रिक जीवन के लिए निर्देशन का अच्छा अवसर प्राप्त हो सकता है। ऐसा कार्यक्रम समस्त स्कूल स्तरों पर उपलब्ध होता है। जब नवयुवक परिपक्व होते हैं और निर्णय करने की क्षमता उनमें आने लगती है, तो स्कूल के मामलों का प्रबन्ध करने के लिए

उन्हें अतिरिक्त उत्तरदायित्व सँभालने की अनुमति होनी चाहिये। किन्तु पूर्ण नियंत्रण उनके हाथों में नहीं होना चाहिए। चूंकि निकाय के सदस्य स्कूल समुदाय के ऐसे ही अंग हैं जैसे कि छात्र, अतएव निकाय के सदस्यों को ऐसे मामलों में अपनी बात करने का अवसर होना चाहिए जिसका सम्बन्ध सारे स्कूल के कल्याण से है। इसके अतिरिक्त नवयुवक हर प्रकार से बुद्धिमान नहीं होते। स्कूल की स्थितियों को सुधारने के प्रयत्न में संभव है वे ऐसी सुविधाएँ या कार्यविधियाँ प्रारम्भ करना चाहें जो स्कूल के नियमों के प्रतिकूल हों अथवा जिनको पूरा करना असंभव हो। स्कूल में जो कुछ होता है उसका पूरा दायित्व स्कूल के प्रमुख प्रशासक पर होता है; अतएव विद्यार्थी परिषद् के कार्यों पर अंकुश लगाने का उसे अधिकार होता है। जिन स्कूलों में स्कूल-शासन परिषद् के अध्यापक-सदस्य छात्रों के उत्साह पर अपने कुशल और अप्रत्यक्ष निर्देशन का प्रयोग करता है, वहाँ आचार्य को अपनी सत्ता का बहुत कम उपयोग करने की आवश्यकता पड़ती है।

सामूहिक कार्य के संगठन का रूप भिन्न-भिन्न स्कूलों में भिन्न-भिन्न होता है, किन्तु साधारणतया हमारे निजी नागरिक शासन के परिवर्तित रूप का परिचय देता है और समस्त छात्रों को, स्पष्ट रूप से वर्णित उत्तरदायित्व और सत्ता की मर्यादाओं के साथ उसमें भाग लेने की अनुमति देता है। प्रारम्भिक स्कूलों की कक्षाओं में और माध्यमिक स्कूलों के गृह-कक्षों में यह प्रथा है कि प्रबन्ध के समुचित विवरण का उत्तर-दायित्व कक्षा द्वारा निर्वाचित पदाधिकारियों पर होता है। छात्र पदाधिकारी सामान्यतः विविध श्रेणियों के अध्यक्षों द्वारा नामजद और विद्यार्थियों द्वारा निर्वाचित होते हैं। यदि किसी स्कूल में द्वि-दलीय प्रणाली होती है तो विविध प्रत्याशियों को प्रस्तुत करने पर लगाये गये सभा के घंटे खूब उत्साह और स्कूली भावना को जगा सकते हैं। छात्र-सरकार के कार्यों का निकाय प्रणेता परामर्शदाता या अध्यापक-परामर्शदाता होना चाहिए जो अप्रत्यक्ष रूप से और बुद्धिमत्तापूर्वक निर्देशन प्रदान कर सके तथा जो अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह के लिए स्कूल के समय के पश्चात् अनेक घंटे लगाने को प्रस्तुत हो।

स्कूल के प्रशासन में सक्रिय रूप से भाग लेने से स्कूल के प्रत्येक छात्र के लिए एक आदर्श स्थिति बन जायेगी। कभी-कभी परामर्शदाता इसमें भी कठिनाई अनुभव करते हैं कि वे कुछ नवयुवकों को विद्यार्थियों के प्रशासन से कुछ छात्रों को होने वाले लाभ के हेतु पहल करके उसे पूरा करने के लिए प्रेरित कर सकें। फिर भी सब छात्र चाहते हैं कि समस्त उपलब्ध सुविधाएँ उन्हें प्राप्त हों। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जहाँ भाग न लेने वाले विद्यार्थी परिवार के वयस्क सदस्यों द्वारा प्रदर्शित नागरिक रवैयों को प्रतिबिम्बित करते हैं। छात्रों के स्कूल प्रशासन में भाग लेने से जो महत्त्व-पूर्ण परिणाम निकलते हैं, उनमें से कुछ ये हैं :

१. छात्रों और अध्यापकों में मैत्री तथा सहकारिता का विकास।
२. अच्छी नागरिकता की दिशा में और उसका उत्तरदायित्व संभालने के लिए प्रशिक्षण।

३. विद्यार्थियों के आत्म-अनुशासन को प्रोत्साहन।
४. नेतृत्व के गुणों का विकास।
५. अन्य व्यक्तियों के अधिकारों के संदर्भ में व्यक्तिगत दायित्व का ज्ञान प्राप्त करना।

छोटे समूहों के विशेष सम्मेलन स्कूल प्रचालित सामान्य सामूहिक कार्यों के द्वारा दिये जाने वाले निर्देशन के अतिरिक्त परामर्शदाताओं और अध्यापक-परामर्शदाताओं को बहुधा लघु-समूह परियोजनाओं के नेतृत्व करने अथवा समूह के हितों या कल्याण से सम्बन्धित तात्कालिक समस्याओं पर छात्रों के छोटे समूहों से वार्तालाप करने के लिए बुलाया जाता है। इस प्रकार के समूह-निर्देशन सम्मेलन साधारणतया तात्कालिक आवश्यकताओं के कारण बुलाये जाते हैं, इसके लिए परामर्शदाताओं को कोई प्रारम्भिक तैयारी नहीं करनी पड़ती और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें कुछ ही सत्रों की आवश्यकता है।

कभी-कभी लघु समूह सम्मेलनों के लिए निर्देशन कर्मचारी द्वारा अनुरोध किया जाता है। बहुधा इनका सूत्रपात विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है। परियोजना सम्मेलनों में सामूहिक कक्षाओं या गृह-कक्ष निर्देशन घंटों के लिए सामयिक रूपरेखा बनाने का कार्य सम्पन्न किया जा सकता है, पड़ोस के अस्पताल या अन्य सामुदायिक अभिकरण को स्वेच्छित सेवाएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं, सभा के कार्यक्रम के लिए योजना बनाई जा सकती है, छात्र-शिक्षण समूहों का संगठन और इस प्रकार की अन्य सेवा योजनाओं पर विचार किया जा सकता है। समान शैक्षिक या व्यावसायिक हित या स्कूली जीवन की समस्या रखने वाले छात्रों के छोटे समूह विशिष्ट शिक्षा, निश्चित व्यापार या औद्योगिक कार्य के अवसर के लिए जानकारी प्राप्त करने के हेतु, अध्ययन के किसी विशेष क्षेत्र में होने वाली कठिनाइयों अथवा रुचि या कठिनाई के अन्य क्षेत्रों में जो सारे समूह के लिए एक-सी हैं, अध्यापक से मिलने के लिए उत्सुक हो सकते हैं।

जब कभी परामर्शदाता को यह ज्ञात होता है कि किसी छोटे समूह को किसी प्रकार के निर्देशन की आवश्यकता है तो वह एक समूह के रूप में उनके सम्मेलन की व्यवस्था करता है। किसी छोटे समूह के सम्मेलन में कितनी सफलता प्राप्त होती है, यह विद्यार्थियों द्वारा परामर्शदाता की ईमानदारी की स्वीकृति, सहकरितापूर्ण रवैये और सहायक होने की क्षमता पर निर्भर करता है।

परामर्श कार्य की सामूहिक गतिविधियाँ और अध्यापक

अपने पद पर अध्यापक या परामर्शदाता का विकास व्यक्तिगत रूप से प्राप्त निरीक्षक की सहायता और अपनी स्वयं की भूलों से ज्ञान प्राप्त करने के व्यक्तिगत अनुभव के फलस्वरूप माना जाता है। आजकल सामूहिक प्रक्रिया में अनुभव के द्वारा व्यावसायिक निपुणता प्राप्त करने की प्रथा चल पड़ी है।

अध्यापक और परामर्शदाता की दीक्षा बहुत-सी स्कूल प्रणालियों में नव-नियुक्त नये अध्यापक और अन्य अध्यापक दीक्षा प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से आचार्य अथवा सहकारी से मिलते हैं। स्कूल की नीतियाँ, संगठन सम्बन्धी योजना, छात्र-जनसंख्या का गठन, स्कूल के स्तर, पाठ्यक्रम के विषय और स्कूल तथा कक्षा की प्रबन्ध सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण बातें संक्षेप में उन्हें बता दी जाती हैं। प्रत्येक समूह के लिए एक या अधिक सत्रों की आवश्यकता हो सकती है। "नये" अध्यापक को निकाय के किसी अनुभवी अध्यापक के साथ लगाया जा सकता है ताकि वह व्यक्तिगत रूप से उसे सारी जानकारी दे दे।

परामर्शदाताओं को—चाहे वे नये हों या अनुभवी—यह जानने की आवश्यकता है कि जिस स्कूल में उनकी नियुक्ति हुई है उसमें उनके कर्तव्य और उत्तरदायित्व क्या होंगे। कभी-कभी स्कूल का प्रमुख प्रशासक यह जानकारी देने का कार्य स्वयं करता है। अनेक बार यह कार्य प्रशासकों, निरीक्षकों, निर्देशन विभाग के पुराने कर्मचारियों और चुने हुए अध्यापकों की सामूहिक सभाओं के द्वारा किया जाता है।

न्यूयार्क नगर में नव-नियुक्त परामर्शदाता शिक्षा बोर्ड के बड़े कक्ष में शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन विभाग के मुखिया के साथ दो सप्ताह तक दीक्षा प्राप्त करते हैं, उसके पश्चात् वे सम्बन्धित स्कूलों में अपना कार्यभार सँभालते हैं। इस ज्ञान प्राप्ति की अवधि में नवागन्तुकों को उनके कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों का ही बोध नहीं होता अपितु वे अपने सहकर्मियों से भी परिचित हो जाते हैं।

मौलिक बोध-सत्रों के अतिरिक्त प्रारम्भिक स्कूलों और जूनियर हाई स्कूलों के परामर्शदाता बोर्ड के मुख्य कार्यालय में प्रति सप्ताह मिलते रहते हैं। इन सत्रों में उन्हें अपने सम्बन्धित निरीक्षकों द्वारा अपनी समान या व्यक्तिगत समस्याओं पर विचार करने, अनुभवों का आदान-प्रदान करने और उन विविध प्रविधियों को अपने साथियों से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिनका उपयोग वे अपने निजी स्कूल में कर सकते हैं।

निर्देशन संस्थाएँ अमेरिकन कर्मचारी और निर्देशन संस्था तथा उससे सम्बन्धित संस्थाओं का वार्षिक सम्मेलन देश-भर के निर्देशन कार्यकर्त्ताओं को उन बड़े और छोटे समूहों में—जहाँ वे एक-दूसरे से परिचित होकर विविध निर्देशन कार्यों, विधियों और प्रविधियों के सम्बन्ध में विचार-विनिमय करते हैं—परस्पर मिलने का श्रेष्ठ अवसर प्रदान करते हैं। यह सम्मेलन इसी प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रादेशिक सभाओं की भी व्यवस्था करता है।

बहुत से राज्य, कस्बे और नगर की निर्देशन संस्थाएँ निर्देशन सेवाओं की उन्नति और विकास के लिए माध्यम के रूप में निर्देशन कार्यकर्त्ताओं द्वारा संगठित की गई हैं। पृथक्-पृथक् समूह निर्देशन कार्यों—जैसे व्यावसायिक, मानसिक स्वास्थ्य-शिक्षा, मानव-निर्माण या अनुसंधान—के किसी न किसी रूप से सम्बन्धित होते हैं। प्रारम्भिक स्कूल के परामर्शदाताओं, माध्यमिक स्कूल के परामर्शदाताओं, कालेज

निर्देशन कर्मचारियों और परामर्शदाताओं को प्रशिक्षण देने वालों की संस्थाएँ भी इस क्षेत्र में समुचित योजनाओं का विकास कर रही हैं।

आजकल निर्देशन कार्यकर्ताओं के इतने अधिक संगठित समूह हैं कि इस क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता को समस्यता के लिए समूह का चुनाव करना पड़ता है। बड़े-बड़े संगठन और कुछ छोटे समूह भी अपनी सभाओं की रिपोर्टें—प्रस्तुत किये गये पत्रों सहित—प्रकाशित करते हैं। यद्यपि परामर्शदाता केवल एक या ऐसे कुछ समूहों के द्वारा सक्रिय रूप से कार्य कर सकता है, तो भी वह समस्त समूहों के विवरण पढ़ कर लाभ उठा सकता है।

समूहों में अभिभावकों का निर्देशन

प्रारम्भिक शैशव में बच्चा अपने माता-पिता की दया पर निर्भर करता है और जैसा कि उसके रवैये और व्यवहार का वे निर्देशन करते हैं, उसके अनुसार वह अपना मार्ग बनाता है (देखिये अध्याय १२)। समस्त विकासशील वर्षों में बच्चा उन अनुभवों से प्रभावित होता है जो वह घर में प्राप्त करता है। सामाजिक और व्यावसायिक कार्यों का अभिभावकों की रुचियों और कार्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। शैक्षिक प्रगति बहुत अधिक सीमा तक अभिभावकों और स्कूल के कर्मचारियों के सहयोगपूर्ण प्रयत्नों पर निर्भर करती है। स्कूल, समुदाय और घर पिछले वर्षों की अपेक्षा आजकल बच्चों और नवयुवकों के कल्याण के लिए अधिक मिल-जुलकर कार्य करते हैं।

अभिभावक-अध्यापक संस्थाएँ संयुक्त राज्य अमेरिका में अभिभावकों के लिए दो राष्ट्रीय संगठन हैं—यूनाइटेड पेरेंट्स एसोसियेशन और पेरेंट-टीचर एसोसियेशन। दोनों संगठनों के उद्देश्य समान हैं। बच्चों और नवयुवकों को स्वस्थ, उत्पादक नागरिक बनाने के शिक्षण के दायित्व में हाथ बँटाना। जैसा कि उनके शीर्षकों से स्पष्ट है, पहले समूह की सदस्यता केवल अभिभावकों के लिये है, दूसरे समूह में रुचि रखने वाले अध्यापक और माता-पिता दोनों होते हैं। अधिकांश स्कूलों में इन दोनों राष्ट्रीय संगठनों में से एक की शाखाएँ मिल सकती हैं। जिन रीतियों से यह संगठन स्कूल की सेवा कर सकता है उस पर विचार करने के लिए प्रत्येक स्कूल की शाखा की प्रत्येक मास में बैठक होती है। इनमें से कुछ बैठकों में अतिथि वक्ता आमन्त्रित किये जाते हैं जिनसे समूह के उपस्थित सदस्य शिशु-पालन और निर्देशन के उप रूपों पर विचार-विमर्श करते हैं। कभी-कभी आचार्य, निर्देशन कर्मचारी या अन्य योग्यता प्राप्त व्यक्ति को स्कूल की नीतियों या कार्यविधियों—जैसे पाठ्यक्रम के विषय, शैक्षणिक प्रविधियाँ, पदवृद्धि और कक्षा में नियुक्ति, उपलब्ध निर्देशन सेवाएँ और इसी प्रकार के अभिभावकों से सम्बन्धित मामले—का स्पष्टीकरण करने के लिए आमन्त्रित किया जाता है।

इन मासिक बैठकों के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में छोटी समितियाँ कार्य करती हैं। इन कार्यकारी बैठकों का नियमन बहुधा स्कूल का कोई निर्देशन कर्मचारी

करता है। ऐसे सत्र अभिभावकों को अनौपचारिक निर्देशन का श्रेष्ठ अवसर प्रदान करते हैं।

श्रेणी अभिभावक समूह यद्यपि अधिकांश अच्छे अभिभावक किसी भी आयु के नययुवकों के कल्याण में रुचि रखते हैं, तो भी उन्हें विशेष रुचि अपने निजी बच्चों में और उनकी ही आयु के सहपाठियों में होती है। अतएव, बच्चों की श्रेणियों के समूहों के अनुसार अभिभावकों के संगठन को प्रोत्साहन दिया जाता है। नर्सरी स्कूलों और किंडरगार्टन के बच्चों के बहुत से अभिभावक अपने व्यक्तिगत बच्चों के रवैयों, व्यवहार और आवश्यकताओं के विषय में अध्यापकों से विचार करने के लिए सामूहिक रूप से प्रति सप्ताह मिलते हैं। यदि कक्षा के नियमित घण्टों में अभिभावक अपने बच्चों का निरीक्षण कर सकें तो ये बैठकें विशेष रूप से मूल्यवान हो सकती हैं।

प्रारम्भिक स्कूल में भी यह पद्धति लोकप्रिय होती जा रही है। प्रत्येक सत्र में एक सप्ताह 'अभिभावकों का सप्ताह' के रूप में निर्धारित कर दिया जाता है। इस सप्ताह में, अभिभावकों को जितनी बार वे चाहें कक्षा सत्रों में बैठने के लिए उत्साहित किया जाता है। यदि स्कूल के साथ सम्बद्ध संगठित श्रेणी-अभिभावक समूह होते हैं तो अभिभावक अपने बच्चों के सम्बन्ध में—विशेषत: जबकि बच्चे के स्कूल के और घर के व्यवहारों की तुलना की जाती है—अध्यापकों या अध्यापक-परामर्शदाताओं के साथ होने वाले सामूहिक सम्मेलन में बहुत कुछ जान सकते हैं।

शिशु अध्ययन समूह इन समूहों की चर्चा हम पहले कर चुके हैं। अभिभावकों का एक छोटा समूह प्रति सप्ताह साधारणतः अपराह्न में एक बार तीन बजे के मध्य अपनी बैठक करता है। चार से छः सप्ताह तक की अवधि में इस समूह का नियमन एक परामर्शदाता शिशु विकास और अभिभावकों द्वारा निश्चित तालमेल के रूप का अध्ययन करने के लिए करता है।

कठिनाइयों का मुकाबला सामूहिक रूप से अभिभावक निर्देशन की विविध विधियों का क्षमता की दृष्टि से भारी मूल्य है। किसी नवयुवक की समस्या को सुलझाते समय परामर्शदाता बहुधा ऐसा अनुभव करते हैं कि निर्देशन की आवश्यकता नवयुवक को नहीं उसके माता-पिता को है। जब अभिभावक अपने बच्चे के संदर्भ में अपने निजी रवैये और व्यवहार को सुधारने का अवसर पाते हैं तो बच्चे को बहुत-से त्रुटिपूर्ण तालमेलों से बचाया जा सकता है।

स्कूल के परामर्शदाताओं के सम्मुख कभी-कभी कठिन परिस्थिति उपस्थित हो जाती है। बहुधा माता अधिक अच्छी अभिभाविका बनने की दृष्टि से यथासम्भव स्कूल को सहयोग देने के लिये पर्याप्त समय और शक्ति का व्यय करती है। वह जब अपने बच्चे के कार्यों के निर्देशन में सहायक होना चाहती है तो अपने निरोधात्मक उपायों का किस प्रकार उपयोग करे, यह जानने की उसकी इच्छा होती है। इस प्रकार के माता-पिता अपने उत्तरदायित्व को इतनी गम्भीरता से ग्रहण करते हैं कि इरादा न होते हुए भी वे अपने बच्चे को भयभीत कर देते हैं। अतएव सामूहिक सत्रों

या व्यक्तिगत सम्मेलनों में अभिभावकों को सहानुभूतिपूर्ण निर्देशन और अत्यन्त कठोर अनुशासन के अन्तर बताना परामर्शदाता का कर्त्तव्य हो जाता है।

इनसे भी अधिक परेशान करने वाले वे अभिभावक होते हैं जो अभिभावकों के सामूहिक कार्यक्रमों में भाग नहीं ले सकते या नहीं लेना चाहते। कुछ का यह कहना है—और सही भी है—कि रुचि रखते हुए भी उनके पास इतना अवकाश नहीं होता कि वे इन समूहों में सक्रिय भाग ले सकें। किन्तु अधिकांश असहयोगी अभिभावकों के लिए अभिभावकों के संगठनों की बैठकें केवल बकवास होती हैं। उनका विश्वास है कि अभिभावक का कर्त्तव्य इतना ही है कि वे बच्चे का सही-सही पालन करने की योग्यता रखते हों। उनके अभिभावकों को कोई निर्देशन नहीं मिला था, फिर वे ही निर्देशन क्यों प्राप्त करें। इस प्रकार का रवैया रखने वाले अभिभावक से उसके बच्चे के सम्बन्ध में स्कूल के परामर्शदाता से मिलने के लिये अनुरोध किया जाता है तो वह यह समझता है कि इसका कारण अन्य बच्चों द्वारा किया गया दुर्व्यवहार होगा अथवा अध्यापक उसके लड़के या लड़की को भलीभाँति समझ नहीं पाया है।

परामर्शदाता को सबसे अधिक निराशा उस माता या पिता से होती है जो बच्चे की स्कूल की प्रगति में कोई रुचि नहीं लेते। यह माना जा सकता है कि नवयुवक नियन्त्रण के बाहर हो गया है, किन्तु यह कहना सही नहीं है कि उसके लिये घर पर कुछ नहीं किया जा सकता। यह स्कूल का उत्तरदायित्व हो जाता है कि वह उसे अनुशासित करे या अन्य प्रकार से उसकी समाज-विरोधी या हानिकारक आदतों को बदले। ये अभिभावक परामर्शदाताओं का कोई निर्देशन स्वीकार नहीं करते और बच्चे के परामर्शदाता से मिलने के लिए बुलाये जाने पर भी वे नहीं जाते।

सामूहिक स्थितियों में निर्देशन के सहायक

वाद-विवाद के आवश्यक विषयों में सामूहिक रुचि को प्रेरित करने के लिए नेताओं की सहायतार्थ अब अनेक प्रकार की सामग्रियाँ उपलब्ध हैं। किन्तु इन सामग्रियों का प्रयोग सोच-समझ कर करने की आवश्यकता है। समूह निर्देशन की पूरक सामग्रियों में समुचित पुस्तकें, चलचित्र और फिल्मों के टुकड़े, रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रम तथा यात्रा और भ्रमण सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त विशेषतः जूनियर हाई स्कूल स्तर पर नवयुवकों द्वारा परीक्षण कार्य भी किये जा सकते हैं।

पाठ्य सामग्री नवयुवकों के लिए बहुत-सी पाठ्य सामग्री प्रकाशित हो चुकी है। नेशनल फोरम इनकार्पोरेशन ने कक्षा ७ से १२ तक के लिये निर्देशन श्रेणियों के हेतु पुस्तकमाला और आकर्षक नक्शे तैयार किये हैं। साइंस रिसर्च एसोसियेट्स इनकार्पोरेशन से कुछ नवयुवकों और कुछ अध्यापकों और परामर्शदाताओं के लिए बहुत-सी पुस्तक-पुस्तिकाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। नवयुवकों, अध्यापकों और परामर्शदाताओं या अभिभावकों के लिये पुस्तकें, पुस्तिकाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। वे शिशु अध्ययन, मानवीय विकास और तालमेल निर्देशन सेवाओं को लागू करने के उपाय,

अभिभावक-शिशु सम्बन्ध और इस प्रकार के विषयों जैसे सामूहिक या व्यक्तिगत अध्ययन के विषय में होती हैं ।

समूह-निर्देशन परियोजनाओं के सम्बन्ध में समुचित पाठ्य-सामग्री के उपयोग का मूल्य स्कूल के लोग समझने लगे हैं। कुछ स्कूल अपनी निजी पुस्तिकाएँ तैयार करते हैं। शैक्षिक संस्थाओं में जूनियर हाई स्कूल से कालेज तक के विद्यार्थियों के लिए पुस्तिकाएँ साधारण बात हैं। कुछ प्रारम्भिक स्कूलों में भी वे प्राप्य हैं।[१] इन पुस्तिकाओं में नवयुवकों और उनके अभिभावकों दोनों के लिए मूल्यवान सूचनाएँ होती हैं। कुछ उदाहरण ऐसे हैं जहाँ आकर्षक पुस्तिकाएँ तैयार करने में काफी कौशल का परिचय दिया जाता है। आकर्षक शीर्षक, मनमोहक रेखाएँ और संक्षेप में वर्णित सूचनाएँ, छात्रों, स्कूल कर्मचारियों या माता-पिताओं को इनको पढ़ने और इन्हें पढ़कर लाभान्वित होने के लिए प्रेरित करती हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं: सियोक्स फॉल्स एस० डी० स्कूलों में निर्देशन सेवाओं के बारह पृष्ठ के विवरण (छात्रों के लिए उपयोगी) में बहुत से शब्द चित्र दिये गये हैं और उसका प्रारम्भ इस प्रकार होता है: हाँ! (बड़े अक्षरों में) आप निःसंदेह इनमें से कुछ विषयों के सम्बन्ध में आश्चर्य कर रहे होंगे..."तो इन पृष्ठों में (तीरों के साथ) इन सेवाओं की संक्षिप्त सूची और विवरण दिये गये हैं।"

ब्लूमफील्ड एन० जे० सार्वजनिक स्कूलों के शिशु निर्देशन विभाग ने सीनियर हाई स्कूल के छात्रों के उपयोग के लिए एक बीस पृष्ठ की पुस्तिका प्रकाशित की है। इसका शीर्षक है "एक निर्देशन जिससे बी० एच० एस० में आपका जीवन आनन्दमय और लाभप्रद हो सके"। दूसरा उदाहरण एक पुस्तिका का है "कैंटन (ओहियो) के चार हाई स्कूलों द्वारा भविष्य की पगडंडियाँ" जिसमें विस्तृत शैक्षिक और व्यावसायिक जानकारी दी गई है। "हम मिलकर परामर्श करें" शीर्षक वाली चार पृष्ठ की पुस्तिका है जिसमें न्यूबर्ग एन० वाई० सार्वजनिक स्कूलों के विद्यार्थियों, अभिभावकों और संरक्षकों को स्कूल की निर्देशन सेवाओं में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया है।

प्रारम्भिक स्कूल के परामर्श कार्य से सम्बन्धित एक पुस्तकमाला में टैकोमा वाशिंगटन के प्रारम्भिक स्कूलों में निर्देशन सेवाओं के सम्बन्ध में चित्रमय सूचनाएँ दी गई हैं। कुछ शीर्षक इस प्रकार हैं: "प्रारम्भिक स्कूल परामर्शदाता के उपयोग की रीतियाँ", "परामर्शदाता के रूप में अध्यापक", "अध्यापक और परामर्शदाता का संयुक्त कार्य" और "परामर्शदाता अध्यापकों के साथ कार्य कैसे करते हैं।"

स्कूल अपने छात्रों के लिये क्या प्रयत्न कर रहे हैं, इसके विषय में जनता को सचेत करने के लिए स्कूल के प्रबन्धकों द्वारा किये जाने वाले उच्चकोटि के रचनात्मक प्रयत्नों के और भी अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। एक साल रिचमौंड, कैलीफोर्निया, स्कूल डिस्ट्रिक्ट ने वित्तीय रिपोर्ट प्रकाशित की थी, जिसका शीर्षक था:

[१] देखिये आर० एम० ह्वाइट "Student Handbooks : Observations and Recommendations", The Personnel and Guidance Journal, जिल्द ३७, सं० १, सितम्बर १९५८।

"Mother Goose Goes to School"। इसमें जो बहुत-सी बातें दी गई थीं, उनके प्रारम्भ में समुचित रूप से चित्रित करके नर्सरी कविताओं के उद्धरण दिये गये थे। इस प्रकार की पाठ्य सामग्री का उपयोग करके सामूहिक सत्रों में सजीव वाद्-विवाद को प्रेरित किया जा सकता है।

श्रव्य-दृश्य सहायक जीवन की घटनाओं का चित्रण करने वाले चलचित्र छात्रों और अभिभावकों के लिए सामूहिक स्थितियों में निर्देशन की श्रेष्ठ रीतियाँ प्रदर्शित करते हैं। अध्यापकों, अध्यापक-परामर्शदाताओं और परामर्शदाताओं के सामूहिक सत्रों के लिये फिल्में भी उपलब्ध हैं—जिनमें कक्षा के भीतर और बाहर निर्देशन-केन्द्रित प्रविधियों के उपयोग की रीतियाँ दर्शाई जाती हैं। चलचित्रों और फिल्म की पट्टियों का उपयोग करते समय समूह के सदस्यों को प्रदर्शन के लिए और उसके पश्चात् होने वाले वाद-विवाद के लिए तैयार कर लेना आवश्यक है।

समूह का नेता (१) समुचित फिल्म का चुनाव करके उसका पूर्ण परिचय देता है, (२) यह निश्चय कर लेता है कि फिल्म निर्बाध रूप से चलती रहे और उसमें इतना अधिक समय न लग जाये कि उसके तत्काल पश्चात् होने वाला वाद-विवाद ही रुक जाय, (३) प्रदर्शन के उद्देश्य से समूह को सावधान कर देता है और प्रदर्शन के समय जिन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए उनका सुझाव दे देता है, (४) प्रदर्शन के पश्चात् फिल्म के सम्बन्ध में वह कुछ प्रश्न पूछता है, और (५) फिर मुक्त वाद-विवाद को प्रोत्साहन देता है। यदि समूह को भली-भाँति तैयार न किया जाय तो संभव है कि कुछ व्यक्ति महत्त्वहीन विवरणों पर अधिक ध्यान दें और फिल्म के उद्देश्य को ही भुला बैठें। जब बच्चे फिल्म देखते हैं तब यह स्थिति उत्पन्न हो जाने की अधिक संभावना रहती है।

अधिकाधिक राज्य और नगर स्कूल-दिवस में प्रदर्शन के लिए शैक्षिक उद्देश्यों के लिए स्थानीय रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रमों को बढ़ावा दे रहे हैं। सम्बन्धित विविध कार्यक्रम इस प्रकार निर्धारित किये जाते हैं कि उनका उपयोग सभा के घण्टों या कक्षा में किया जा सकता है। साथ ही स्कूल की सार्वजनिक भाषण प्रणाली द्वारा अनेक कक्षाओं को रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है।

इसमें से कुछ कार्यक्रम और आलेख निर्देशन-मूल्य रखते हैं। समुचित फिल्मों की भाँति निर्देशन कक्षा के सत्रों में इन पर भी सूक्ष्म वाद-विवाद किया जा सकता है। व्यापारियों द्वारा संचालित रेडियो और टेलीविजनों पर प्रसारित इस प्रकार के कार्यक्रमों को देखने के लिए भी अभिभावकों से सिफारिश की जा सकती है, ये कार्यक्रम शिशु-अध्ययन के लिए आयोजित होने वाली अध्ययन गोष्ठियों का आधार बन सकते हैं। चलचित्रों को देखने के लिए दिये गये सुझावों का यहाँ भी अनुकरण किया जा सकता है।

समूह निर्देशन के अन्य माध्यम स्वास्थ्य केन्द्र, उच्चतर शिक्षा की स्थानीय संस्थाएँ अथवा व्यापारिक संस्थान और औद्योगिक संयन्त्रों जैसे सामुदायिक अभिकरणों में नवयुवकों या अभिभावकों की यात्रा सामूहिक स्थिति में निर्देशन कार्यक्रमों की

सहायक सिद्ध हो सकती है। समूह का नेता अथवा जिस अभिकरण की यात्रा की गई है उसका सदस्य अभिकरण के कार्यों पर वाद-विवाद का प्रारम्भ करता है।

परीक्षणात्मक पाठ्य विधियाँ—विशेषत: माध्यमिक स्कूल के स्तर पर—नवयुवकों को विविध व्यावसायिक क्षेत्रों के सामूहिक सत्रों में देखने, भाग लेने और विचार करने के अवसर प्रदान करती हैं। कुछ जूनियर हाई स्कूलों में रुचि रखने वाले विद्यार्थी स्कूल के सत्र या वर्ष में इन अनेक सामूहिक निर्देशन कार्यों में भाग लेते हैं। यह परामर्शदाता का दायित्व है कि वह (१) छात्रों के समूहों को उस प्रकार की पाठ्यविधियों की सिफारिश करे जिसके अनुकूल वे अपनी रुचियों और रुझान के आधार पर प्रतीत हों; (२) परीक्षणात्मक कार्यों में उनका साथ दे, और (३) समूह सत्रों में व्यवसायों के सम्बन्ध में उनकी आवश्यकतानुसार और जो कुछ वे जानना चाहें, उस पर उनसे विचार-विमर्श करे।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. 'सामूहिक निर्देशन' की अपेक्षा 'सामूहिक स्थितियों में निर्देशन' वाक्यावली के प्रयोग के युक्तियुक्त होने को सिद्ध कीजिए।

२. यदि निर्देशन कर्मचारी इतने अधिक होते कि प्रत्येक विद्यार्थी को आवश्यकतानुसार अथवा वांछनीय परामश प्राप्त हो सकता तो क्या आप सामूहिक स्थितियों में से निर्देशन को हटा देते? क्यों या क्यों नहीं?

३. ऐसा सामूहिक निर्देशन कार्यक्रम प्रस्तुत कीजिए जो १२०० छात्रों के जूनियर हाई स्कूल के उपयुक्त हो।

४. समूह-कार्यों के ऐसे दो प्रणेताओं की तुलना कीजिए जिनसे आप परिचित हों। दोनों में से कौन-सा अधिक उपयुक्त है? क्यों?

५. सामूहिक स्थितियों में उठाये गये उन प्रश्नों को बताइये जो व्यक्तिगत परामर्श कार्य का विषय बन सकते हैं?

६. स्कूल की ऐसी सभा का वर्णन कीजिए—जिसमें आप उपस्थित रहे हों—जो अत्यन्त मनोरंजक थी, जो कम-से-कम मनोरंजक थी। इस अंतर का कारण क्या था?

७. स्कूल सभा के आठ उद्देश्यों को फिर पढ़िये। जिन स्कूल सभाओं में आप उपस्थित थे, उनमें कौन-कौन से उद्देश्यों की पूर्ति हुई और किन की नहीं हुई? आप विभिन्न सूचियों की व्याख्या कैसे करेंगे?

८. जूनियर या सीनियर हाई स्कूल के एक छात्र के रूप में गृह-कक्ष के घंटे के प्रति आपका क्या रवैया था? उन कार्यक्रमों का वर्णन कीजिए जिन्हें आप महत्त्वपूर्ण समझते हैं।

९. स्कूल प्रशासन में छात्रों के भाग लेने के फलस्वरूप होने वाले पाँच लाभ और पाँच कठिनाइयाँ बताइये। इन कठिनाइयों से कैसे बचा जा सकता है?

१०. प्रचलित क्लबों की संख्या और प्रकार से परिचित होने के लिए अपने समुदाय के प्रारम्भिक स्कूल और हाई स्कूल में जाइये। यदि सम्भव हो तो उस स्कूल के एक अध्यापक और एक छात्र की सम्मति भी उसके सम्बन्ध में प्राप्त कीजिए।

११. जिस कालेज में आप पढ़ते थे या पढ़ते हैं, उसमें कितनी और किस प्रकार की गतिविधियाँ हैं? इनमें से आप किन-किन के सदस्य रहे हैं? आप सदस्य क्यों बने? इन सामूहिक कार्यों में भाग लेने से आपको क्या लाभ हुआ?

१२. यदि निर्देशन सेवाओं के माध्यम के रूप में कक्षाओं या समूह-सम्मेलनों का आपका कोई अनुभव हो, तो उनसे आपको जो लाभ हुए हैं, उनका मूल्यांकन कीजिए।

१०

व्यक्तिगत स्थितियों में परामर्श-कार्य

किसी व्यक्ति को योजना बनाने, कार्यान्वित करने और उसके साथ तालमेल बैठाने के कार्य में सहायता देने के उद्देश्य से निर्देशन कार्यविधि में किये जाने वाले कार्य और बनाये रखे जाने वाले सम्बन्धों का उल्लेख करने के लिए सामान्यतः विविध शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है। निर्देशन शब्द में ही वे सेवाएँ निहित हैं जो किसी व्यक्ति की उसकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार की जाती हैं। व्यक्तिगत निर्देशन अनुपयुक्त नाम है, क्योंकि समस्त निर्देशन व्यक्तिगत होता है, चाहे कितने ही निर्देशक सामूहिक स्थिति में भाग ले रहे हों। कर्मचारियों का कार्य और परामर्श-कार्य भी भ्रामक शब्द हैं, क्योंकि मोटे रूप से उनकी व्याख्या करते समय निर्देशन के वे समस्त कार्य इसमें सम्मिलित कर लिए जाते हैं जिनका सम्बन्ध मानव कल्याण से होता है अथवा संकुचित रूप से उन व्यक्तिगत सम्बन्धों से होता है जो एक परामर्श-दाता और परामर्शपात्र के मध्य होते हैं।

इस पिछले संदर्भ में कभी-कभी भूल से व्यक्तिगत निर्देशन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वास्तव में, व्यक्तिगत निर्देशन वह सहायता है जो किसी व्यक्ति को जीवन के समस्त क्षेत्रों में रवैयों और व्यवहार के विकास में श्रेष्ठ तालमेल बैठाने के लिए दी जाती है। भ्रामक रूप से प्रयोग में आने वाली दूसरी शब्दावली है "साक्षात्कार करना" जिसका अर्थ व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए दिये जाने वाले परामर्श या सहायता से लिया जाता है। निर्देशन में साक्षात्कार का महत्त्वपूर्ण स्थान है, किन्तु परामर्श-कार्य की सम्पूर्ण प्रक्रिया में यह केवल एक स्थिति मात्र है।

शब्दावलियों के गलत प्रयोग से बचने के लिए व्यक्ति और परामर्शदाता के सम्बन्ध का वर्णन करने के लिए यहाँ व्यक्तिगत स्थिति में परामर्श-कार्य शब्दावली का प्रयोग किया गया है। चाहे स्थिति कोई भी रूप ग्रहण करे, निर्देशन या परामर्श सेवाओं का लक्ष्य सदैव एक शिशु, एक नवयुवक या एक वयस्क को अपने सामूहिक

सम्बन्धों में अधिक सूक्ष्म आत्म-प्राप्ति और अधिक रचनात्मक मूल्य प्राप्त करने में सहायता देना है।

व्यक्तिगत परामर्श-कार्य में व्यस्त कर्मचारियों में स्कूल के परामर्शदाता और अध्यापक-परामर्शदाता, कालेज सलाहकार, औद्योगिक कर्मचारी कार्यकर्त्ता, सामाजिक कार्यकर्त्ता, मनोवैज्ञानिक, मानसिक रोग चिकित्सक, वैवाहिक परामर्शदाता और धार्मिक नेता होते हैं।

परामर्श-कार्य के कार्यकारी रूप

अध्याय ३ में किसी भी आयु के व्यक्तियों के समक्ष उपस्थित होने वाली समन्वय की कुछ समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया था। बहुत-सी तथा-कथित समस्याएँ अस्थायी होती हैं अथवा उस निर्णय से सम्बन्धित होती हैं जिसके लिए आवश्यक सहायता सामूहिक स्थितियों में निर्देशन के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। अन्य समस्याएँ अधिक गंभीर हैं, जिनके लिए विवेकशील और चतुर व्यक्ति द्वारा व्यक्तिगत परामर्श की आवश्यकता होती है।

व्यक्तिगत और स्थिति सम्बन्धी प्रभाव निर्णय करने, कार्यों की रूपरेखा बनाने और जीवन की स्थितियों से समन्वय करने के कार्य में सहायता के लिए व्यक्ति की आवश्यकता उसके वर्तमान या भावी अनुभवों के किसी भी क्षेत्र में केन्द्रित हो सकती है। बहुत कम समस्याएँ एक क्षेत्र तक सीमित रहती हैं। निर्णयों की माँग करने वाली स्थितियों के प्रति व्यक्ति का रवैया और उन्हें पूरा करने की क्षमता सामान्यतः अनेक तत्त्वों पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति महत्त्वपूर्ण होती है। जिसका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होता है और जो दर्द या पीड़ा से पीड़ित नहीं होता अथवा जिसे रोग से पीड़ित हो जाने की व्यर्थ की आशंका नहीं रहती वह साधारण परेशानियों या निराशाओं को तर्कसंगत तालमेल से सह सकता है। इसी प्रकार, जिस लड़के या लड़की ने अथवा पुरुष या स्त्री ने अन्य व्यक्ति के साथ होने वाले अपने सम्बन्धों में अपने प्रति एक वस्तुगत, अपेक्षाकृत निष्पक्ष रवैया विकसित कर लिया है, वह संभवतः भावुकता को भड़काने वाली स्थितियों में आत्म-संयम रख सकता है। किन्तु घर और स्कूल का निर्देशन समस्त व्यक्तियों में इन वाँछनीय गुणों का विकास करने में अभी सफल नही हुआ है। जो व्यक्ति यह विश्वास करते हैं कि उनमें पर्याप्त भाव-संयम है, वे भी कभी-कभी अंतिम स्थिति में भावना में बह जाते हैं।

परामर्श-कार्य से जिस उद्देश्य की पूर्ति होती है उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध परामर्श-दाता की आयु, रुचियों और अनुभवों से होता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत परामर्श-कार्य में परामर्शदाता का एक उत्तरदायित्व यह भी है कि वह परामर्शपात्र को अपनी समस्या के आधारभूत कारण खोजने में भी सहायता दे। इस कठिनाई का प्रारम्भ घर, या स्कूल, नौकरी पर अथवा उसके सामाजिक सम्बन्धों या मनोरंजन कार्यों से भी हो सकता है।

घर के अनुभव यह असाधारण बात नहीं है कि कभी-कभी बच्चा अपने माता-पिता के व्यवहार को अन्यायपूर्ण समझकर क्षुब्ध हो उठे, या उन सुविधाओं के कारण ईर्ष्यालु हो जाय जो उसके भाई-बहिनों को दी गई हैं किन्तु उसे नही दी गईं, या इस बात से दुःखी हो जाय कि उसके सहपाठियों के घरों की तुलना में उसका घर अच्छा नहीं है। यदि उसके माता-पिता दोनों कहीं कार्य करते हैं और इसके फलस्वरूप घर से बाहर रहते हैं तो यह संभव है कि बच्चा स्कूल के पश्चात् ऐसे कार्यों में संलग्न हो जाय जिनकी कोई देखभाल नहीं होती और जिसके परिणामस्वरूप वह पड़ोसी बच्चों के अभिभावकों से मुसीबत में उलझ जाता है; फिर उसकी शिकायत उसकी माँ से होती है; और काम से थकी-माँदी माँ उसे पीट देती है। ये उन बहुत-सी समस्याओं में से कुछ हैं जो घर में उत्पन्न हो सकती हैं और वह भी उस समय जबकि माता-पिता अच्छे अभिभावक बनने का प्रयन्न करते हैं।

घर की वास्तविक और काल्पनिक कठिनाइयों का प्रभाव बच्चे या नवयुवक पर ऐसा हो सकता है कि उसे परामर्शदाता से व्यक्तिगत रूप में सहायता प्राप्त करना आवश्यक हो जाय। कुछ उदाहरणों में स्थिति स्कूल के निर्देशन द्वारा दी जाने वाली सहायता की माँग कर सकती है। यदि आन्तरिक क्षोभ और संघर्ष बहुत गंभीर हो जाता है, तो क्लिनिक की या मानसिक रोग चिकित्सक की सेवाओं की आवश्यकता पड़ सकती है।

नवयौवन की उत्तरावस्था और वयस्कता में अपना निजी घर बसाने की योजनाओं से सम्बन्धित मामले अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। साथी का चुनाव करना, विवाह करना, घर का चुनाव करना और उसे सजाना, घर के वित्त का बजट बनाना और बच्चों का पालन-पोषण करना, इन सब बातों से ऐसे प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं जिनसे युवक को पर्याप्त परेशानी हो सकती है। प्रौढ़ वयस्क को भी वैवाहिक तालमेल और अभिभावक-शिशु सम्बन्धों की समस्याओं को सुलझाने के लिए सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

स्कूल के अनुभव अपने प्रारम्भिक स्कूल के वर्षों में एक जागरूक और निर्देशन में रुचि रखने वाले अध्यापक के प्रयत्नों से सामूहिक स्थिति की तालमेल की समस्याओं को सुलझाने में बच्चे को साधारणतया सहायता प्राप्त हो सकती है। साधारण रूप से सर्वश्रेष्ठ बात तो यह है कि बच्चे को व्यक्तिगत परामर्श के लिए सौंप कर—जिससे वह अपने सहपाठियों से पृथक् होता प्रतीत हो—उसकी व्यक्तिगत कठिनाइयों पर बहुत अधिक बल नहीं देना चाहिये। बच्चे को ऐसा अनुभव होना चाहिये कि वह अपने साथियों से भिन्न नही है। ऐसी कार्यविधि जो उसके सहपाठियों को यह अनुभवी कराती है कि उस पर अधिक या भिन्न रीति से ध्यान दिया जा रहा है तो वह लाभदायक होने की अपेक्षा हानिप्रद ही अधिक सिद्ध होगी। किन्तु ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें बच्चे कक्षा के साथ चलने में असमर्थ रहते हैं अथवा ऐसे व्यवहार में लीन हो जाते हैं जो समूह के व्यवहार से भिन्न है। इस प्रकार की स्थिति पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

माध्यमिक स्कूल के छात्रों और कालेज के विद्यार्थियों को अपनी पाठ्यविधियों के नियोजन में और उनके साथ समन्वय करने में व्यक्तिगत रूप से प्राप्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है। किसी व्यक्ति के सम्मुख शैक्षिक कठिनाइयाँ हो सकती हैं अथवा उसकी उपस्थिति असंतोषजनक हो सकती है। विद्यार्थी और शिक्षक के मध्य होने वाले व्यक्तिगत मतभेद भी बहुधा कठिनाई उपस्थित कर सकते हैं। अध्ययन में जी न लगने का स्वभाव या घर की पढ़ाई में रुचि का अभाव स्कूल की सफलता में बाधा डालते हैं। नवयुवकों द्वारा उनके स्कूल के अनुभवों के सम्बन्धों में पूछे गये प्रश्नों से ज्ञात होता है कि उन्हें उन विषयों में परेशानी होती है जिनको वयस्क लोग महत्त्वपूर्ण नहीं समझते किन्तु जो हाई स्कूल और कालेज के छात्रों के जीवन में अत्यन्त महत्त्व रखते हैं।

व्यावसायिक और पेशे सम्बन्धी तालमेल इस क्षेत्र में बहुत-सी समस्याओं को सामूहिक स्थितियों के निर्देशन से सुलझाया जा सकता है। किन्तु कभी-कभी ऐसे भी अवसर आते हैं जब छात्रों की अपनी विशिष्ट स्थिति के सम्बन्ध में, या जब अन्य व्यक्तियों प्रति उनके रवैये या व्यवहार के कारण समस्या का समाधान कठिन हो जाता है, तब उन्हें निश्चित जानकारी दी जानी चाहिए। ऐसी स्थितियों में ही छात्र को ऐसे परामर्शदाता की सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिएँ जो उस समस्या का विश्लेषण करने और किसी युक्तिसंगत परिणाम पर पहुँचने में सहायता दे सके। व्यावसायिक चुनाव, तैयारी, और नौकरी सम्बन्धी संतोष के विषय में किसी व्यक्ति द्वारा उठाये गए प्रश्न उसके लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं।

कोई यह सोच सकता है कि बाहरी सहायता के बिना भी व्यक्ति अपने बहुत से प्रश्नों का उत्तर पा सकता है। कुछ व्यक्ति जो अपने प्रति और ऐसे अन्य व्यक्तियों के प्रति जिन्हें वे अपनी कठिनाइयों के लिये उत्तरदायी समझते हैं—अपने व्यवहार में अत्यन्त वस्तुवादी हैं, ऐसा कर सकते हैं। असुरक्षा या व्यक्तिगत प्रभावहीनता की भावना या किसी के कार्य की अभिव्यक्त अथवा अप्रत्यक्ष आलोचना किसी की भावना को इतनी ठेस पहुँचा सकता है कि जब स्पष्ट विचार और निष्पक्ष निर्णय करने की क्षमता असम्भव हो जाय। इस प्रकार की स्थितियों में व्यक्ति की तीव्र उत्कण्ठा होती है कि अपनी समस्या के विषय में ऐसे व्यक्ति से बात करे जिस पर उसका विश्वास है।

सामाजिक और अवकाशकालीन तालमेल किसी व्यक्ति के समस्त जाग्रत घण्टे उसके घर, स्कूल या व्यापार के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने में ही नहीं बीतते। प्रत्येक व्यक्ति को खेलने के लिए, विशेषतः उन लोगों के साथ जिनके स्वार्थ समान हैं, समय निकालना चाहिये। व्यक्तिगत अपूर्णताएँ, अवसरों का अभाव और कर्त्तव्य का दबाव तालमेल की गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं। यदि व्यक्ति अपनी कठिनाई के आधारभूत कारणों को समझने में असमर्थ है या समझना नहीं चाहता तो उसकी समस्या और उलझ जाती है। वह इस बात को तो स्वीकार नहीं करता कि गलती का उत्तरदायित्व उस पर है, अपितु वह अपने से बाहर के तत्त्वों को

दोषी ठहराता है। परामर्शदाताओं से पूछे गये बहुत-से प्रश्न इस व्यक्तिगत तालमेल के उत्तरदायित्व के हस्तान्तरण की साक्षी देते हैं जो अपने निजी कन्धों से उठाकर अपने मित्रों या परिचित जनों के सिर पर मढ़ने का प्रयत्न किया जाता है।

परामर्श कार्य की विधि व्यक्तिगत स्थिति में परामर्श देने का कार्य महत्त्वपूर्ण सेवा के रूप में या तो (१) निर्देशन कार्यों का स्कूल का कुल कार्यक्रम, या (२) मनोवैज्ञानिक अथवा निर्देशन क्लिनिकों द्वारा प्रदत्त सेवाओं के सक्रिय केन्द्र के रूप में संचालित होता है।

स्कूल में व्यक्तिगत परामर्श-कार्य

स्कूल में व्यक्तिगत परामर्श की स्थिति या तो केवल कुछ मिनटों की हो सकती है जिसमें किसी तात्कालिक और सरल प्रश्न का उत्तर खोज निकालने में सहायता दे दी जाती है या फिर ऐसी भी स्थिति हो सकती है जबकि तालमेल की व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने के लिए परामर्श-कार्यों की लम्बी शृंखला चल पड़ती है जो महीनों तक चल सकती है। गम्भीर भावात्मक अव्यवस्था या मानसिक रोग की स्थितियों में मानसिक रोग की चिकित्सा करने की आवश्यकता होती है।

अनौपचारिक परामर्श-कार्य की स्थितियाँ अपने छात्रों के साथ दैनिक सम्बन्धों में अध्यापक को अनौपचारिक परामर्श देने के बहुत से अवसर प्राप्त होते हैं। नियमित स्कूल या कक्षा के सत्र से पूर्व विद्यार्थी अध्यापक से ऐसे प्रश्न पूछना बन्द कर देता है जिनका उत्तर तत्काल और प्रभावशाली रीति से दिया जा सके। कोई भी अध्यापक किसी भी स्कूल स्तर पर जो नवयुवकों में रुचि रखता है और जिसने सहानुभूति के साथ स्थिति समझने की ख्याति अर्जित कर ली है, इस बात के अनेक उदाहरण दे सकता है। एक बच्चा पिल्ले को रखने के सम्बन्ध में, टूटे खिलौने को जोड़ने के विषय में या स्कूल का कार्य पूरा करने के सम्बन्ध में सलाह माँगता है। एक नवयुवक अपने अध्यापक से यह जानना चाहता है कि वह पार्टी में क्या पहने या उसमें किस प्रकार से व्यवहार करे, जिस परियोजना पर वह कार्य कर रहा है, उसके विषय में उसे जानकारी कहाँ से मिल सकती है या दिन अथवा सप्ताह में उत्पन्न होने वाली किसी विशिष्ट स्थिति में वह क्या करे। इस प्रकार के प्रश्न लगभग सामयिक महत्त्व के होते हैं। कालेज के विद्यार्थी इसी प्रकार की स्थिति को उन अध्यापकों के पास उपस्थित करते हैं जिनमें उनका विश्वास होता है।

अधिक औपचारिक परामर्श-कार्य व्यक्तिगत परामर्श-कार्य का अर्थ है परामर्शदाता और परामर्शपात्र के मध्य अनौपचारिक सम्बन्ध। "औपचारिक" शब्द के प्रयोग से हमारा तात्पर्य केवल उस अनायास उत्पन्न होने वाली परामर्श-स्थिति—जो प्रतिदिन स्कूल के प्रबन्धकों के सम्मुख आती हैं—और उन अपेक्षाकृत निर्मित किन्तु फिर भी अनौपचारिक व्यक्तिगत परामर्श सत्रों के मध्य अन्तर बताना है जिसका संचालन विशेष योग्यता प्राप्त स्कूल कर्मचारी करते हैं।

साक्षात्कार व्यक्तिगत परामर्श-कार्य का मुख्य बिन्दु है। किन्तु अनौपचारिक स्थिति को छोड़कर किसी भी स्थिति में परामर्शदाता साधारणतया अन्य विविध कार्यों में लगते हैं जो परामर्शपात्र के साथ होने वाले साक्षात्कार में सहायक होते हैं। इन कार्यों में साक्षात्कार या साक्षात्कार की शृंखलाओं के लिये तैयारी और इस पर परामर्शपात्र की प्रतिक्रियाओं का अनुसरण सम्मिलित होता है। कुछ कार्यों में साक्षात्कार या साक्षात्कारों के मध्य में वे निरन्तर व्यस्त रहते हैं।

बहुत-से मामलों में परामर्शदाता को परामर्शपात्र के सम्बन्ध में पृष्ठभूमि के ज्ञान की आवश्यकता होती है जो साक्षात्कार में सहायक हो सके। ये तथ्य निर्देशन कार्यालय में रखे किसी कार्ड, रिपोर्ट या वृत्त से, अथवा निकाय के या अध्यापक-मण्डल के उन सदस्यों से जाने जा सकते हैं जो उस व्यक्ति से परिचित हों और स्कूल के बाहर उसके अभिभावकों अथवा विश्वस्त व्यक्तियों से भी ये सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

कुछ नगरों और समुदायों में सोशल सर्विस एक्सचेंज से भी आवेदन करके ये तथ्य प्राप्त किये जा सकते हैं। ये सामुदायिक-सेवा संगठन हैं जो उन समस्त व्यक्तियों अथवा परिवारों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी रखते हैं जिन्होंने पहले कभी सामुदायिक कल्याण अभिकरणों को सहायता के लिये आवेदन किया होता है। यह जानकारी सहयोग करने वाले स्कूलों या अन्य संस्थाओं को दे दी जाती है।

उन परीक्षणों और मापक उपकरणों के अतिरिक्त जिनका परामर्शपात्र पर पहले ही उपयोग किया जा चुका है, अन्य परीक्षणों का उपयोग करना उचित होगा। ऐसी परीक्षाओं का लेना, अंक देना और परिणामों की व्याख्या करना परामर्शदाता का उत्तरदायित्व हो जाता है। अधिक गम्भीर स्थितियों में अपेक्षाकृत ब्यौरेवार मामले की रिपोर्ट तैयार करना आवश्यक हो सकता है।

मामले की रिपोर्ट के लिये महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत विवरण साधारणतः साक्षात्कार के सत्रों में प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु उसके और उसकी समस्याओं के सम्बन्ध में पृष्ठभूमि का समस्त विवरण प्राप्त होने तक अव्यवस्थित या भावात्मक रूप से असंतुलित छात्र के साक्षात्कार में विलम्ब करना अबुद्धिमत्तापूर्ण कार्यविधि होगी, यद्यपि इस विधि को बहुत अधिक अपनाया जाता है। व्यक्ति एक समस्या से पीड़ित है। उसे तत्काल सहायता की आवश्यकता है। इस मामले में समस्त तथ्यों के संग्रहीत होने से पूर्व भी उसकी सहायता के लिए प्रशिक्षित परामर्शदाता बहुत कुछ कर सकता है।

परामर्शदाता उन निर्देशन कर्मचारियों से विचार-विमर्श करता है जो परामर्शपात्र के सम्पर्क में रहे हैं। वह स्कूल निर्देशक या निर्देशन क्लिनिक के मुखिया जैसे व्यक्तियों से भी उस कार्यविधि के विषय में विचार कर सकता है जिसका कि वह प्रयोग करने जा रहा है।

एक या अधिक साक्षात्कार के पश्चात् यदि परामर्श-कार्य बन्द कर दिया जाय तो भी यह जानने का प्रयास जारी रखा जाय कि वह व्यक्ति किस सीमा तक

वाँछनीय तालमेल बिठाने के लिये प्रयत्न कर रहा है; इस प्रकार उसके परामर्श-कार्य का मूल्यांकन हो सकेगा। यह परामर्श-कार्य का ऐसा चरण है जिसकी बहुधा उपेक्षा कर दी जाती है । अनेक निर्देशन कार्यालयों और निर्देशन क्लिनिकों में फाइलों का सर्वेक्षण करने से इस तथ्य की पुष्टि होती है । परामर्श-कार्य का दूसरा त्रुटिपूर्ण चरण है, परामर्शस्थिति के सम्बन्ध में शुद्ध वृत्त और रिपोर्ट का लिख कर न रखना। व्यक्ति से सम्बन्धित बाद की स्थितियों में इन आलेखों की आवश्यकता पड़ सकती है ।

क्लिनिक सम्बन्धी कार्यविधि

क्लिनिक की पद्धति का उपयोग निर्देशन प्रविधि के रूप में भावात्मक असन्तुलन के उन मामलों में किया जाता है जो गम्भीर होते हैं, जिसमें व्यक्ति के भीतर और बाहर गलत तालमेल के अनेक तत्त्व सक्रिय प्रतीत होते है। इन मामलों के अध्ययन और उपचार के लिये अपेक्षाकृत अधिक समय की आवश्यकता है ।

कार्यविधि की रीति क्लिनिक की कार्यविधियों में निम्नलिखित कार्य सम्मिलित हैं : (१) स्पष्ट रूप से तालमेल की गम्भीर कठिनाई होने की अभिस्वीकृति, (२) सम्बन्धित व्यक्ति के सम्बन्ध में विस्तृत तथ्यों का संग्रह और मामले के इतिहास के रूप में उन्हें लिपिबद्ध करना, (३) निरीक्षित लक्षणों के संदर्भ में तथ्यों की व्याख्या और उनका मूल्यांकन करना, (४) उपयुक्त उपचार की सिफारिश करना (५) उपचार का प्रयोग, और (६) होने वाले तालमेल के प्रकार और सीमा का निश्चय करने के लिए मामले का अनुसरण करते रहना ।

किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा किसी रोगी को क्लिनिक या मानसिक रोग चिकित्सक के पास उस समय भेजा जाता है जब यह समझा जाता है कि उसका तालमेल इतना बिगड़ गया है कि वह विशेषज्ञ के उपचार से ही ठीक हो सकता है । अतएव यह सामाजिक कार्यकर्त्ता का उत्तरदायित्व है कि वह तात्कालिक स्थिति से सम्बन्धित तथ्यों और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जुटाये ।

मामले के इतिहास में सम्मिलित सामग्री की विश्वसनीयता—जैसा कि ८वें अध्याय में बताया जा चुका है उन अभिभावकों, अध्यापकों या अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत की गई रिपोर्ट की सचाई जिससे कि सम्बन्धित व्यक्ति के विषय में साक्षात्कार किया गया है; उस व्यक्ति के साथ किये गये परीक्षणों, विचाराधीन व्यक्ति के सहयोग की सीमा और उस सामाजिक कार्यकर्त्ता की वस्तुगत स्थिति जिसने विचाराधीन इतिहास तैयार किया है, पर निर्भर करती है ।

यदि अध्ययन क्लिनिक के कर्मचारी द्वारा किया जाता है तो मानसिक रोग चिकित्सक, शिशु रोग विशेषज्ञ या चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्यकर्त्ता कर्मचारियों की एक बैठक बुलाकर उसमें रिपोर्ट पर विचार करते हैं । उपलब्ध तथ्यों पर विशेषज्ञों द्वारा की गई व्याख्या और मूल्यांकन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं । सामान्यतः यह आवश्यक प्रतीत होता है कि परीक्षणों, तुलाओं और सूचियों के फलस्वरूप

प्राप्त होने वाले तथ्यों की पूर्ति क्लिनिक के लिए विशेष रूप से उपयुक्त मूल्यांकन प्रविधियों का उपयोग करके की जाय ।

मूल्यांकन प्रविधियाँ ऐन्द्रियिक तीव्रता और माँस-पेशियों के समन्वय के व्यक्तिशः किये गये माप, मानसिक क्षमता, अध्ययन सम्बन्धी सफलता और व्यक्तिगत विशेषताएँ मूल्यांकन की प्रविधियों में सम्मिलित हैं । क्लिनिक के उद्देश्यों के लिए मूल्यांकन की एक अत्यन्त मूल्यवान प्रविधि है पूर्वोक्त परियोजनात्मक पद्धति, जिसका उपयोग करके मनुष्य के अचेतन जीवन का सूक्ष्मदर्शन किया जा सकता है । स्याही-बिन्दु द्वारा व्याख्या और वस्तु-सम्बन्धी आत्मबोध परीक्षण की रोरशैक पद्धति का प्रयोग क्लिनिकों में दूर-दूर तक किया जाता है । छोटे बच्चों के अध्ययन की दूसरी विधि क्रीड़ा चिकित्सा है जिसमें यह माना जाता है कि बच्चे अपनी गुडियाओं और खिलौनों से खेलते हुए अनजाने ही अपनी इच्छाओं, अभिलाषाओं और संघर्षों की अभिव्यक्ति कर जाते हैं । इन चीजों के प्रति अपने व्यवहार में उन वयस्कों अथवा स्थितियों के प्रति अपना रवैया प्रदर्शित करते हैं, जिन्हें वे अपनी कठिनाइयों का कारण समझते हैं ।

परिवर्तन करना निःसंदेह व्यक्ति के वातावरण में से ग़लत तालमेल वाले तत्त्वों को हटाना या उनमें परिवर्तन करना महत्त्वपूर्ण है । किन्तु अत्यन्त महत्त्व के वे वांछनीय परिवर्तन हैं जो अपने निजी रवैये और व्यवहार में किये जा सकते हैं । निपुण व्यक्ति द्वारा किये गये उपचारात्मक साक्षात्कारों से इस उद्देश्य की पूर्ति भली-भाँति हो सकती है ।

जबकि किसी व्यक्ति की कठिनाइयों को गहराई से समझ लिया जाय और उसके फलस्वरूप उस व्यक्ति की स्थिति में सुधार होने लगे तो "मामले" को समाप्त नहीं कर देना चाहिए । उसके तालमेल की क्रिया की अवधि में उसे सहायता की आवश्यकता होती है और उसे क्लिनिक के कर्मचारियों और उसके उपचार में भाग लेने वाले अन्य व्यक्तियों की उस समय तक सेवाएँ प्राप्त होती रहनी चाहिएँ जब तक कि उसके तालमेल से उसे स्वयं को और उसके परामर्शदाता को संतोष न हो जाय । दुर्भाग्य से, क्लिनिक उपचार बहुत शीघ्र समाप्त कर दिया जाता है जबकि उपचाराधीन व्यक्ति मानसिक रूप से अर्द्धरोगी होता है । पूर्ण तालमेल की दिशा में वह इस प्रकार निःसहाय छोड़ दिया जाता है ।

ब्रुकलिन कालेज का शैक्षिक क्लिनिक क्लिनिक की कार्यविधि के कार्यकारी रूपों के उदाहरण स्वरूप हम ब्रुकलिन कालेज से सम्बन्धित एक शैक्षिक क्लिनिक के संचालन का वर्णन संक्षेप में करेंगे । यह कालेज न्यूयार्क सिटी की नगरपालिका का एक कालेज है । इनमें से प्रत्येक कालेज के साथ एक निर्देशन क्लिनिक—अध्यापन शिक्षा के राज्य से अनुदान प्राप्त कार्यक्रम के एक अंग के रूप में होता है । अतएव ये क्लिनिक अध्यापक की शिक्षा के लिए माध्यम के साथ-साथ निर्देशन सेवाओं का भी कार्य करते हैं । ब्रुकलिन कालेज के क्लिनिक का कार्यक्रम जो यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है, इस बात का एक उदाहरण है कि उच्चतर शिक्षा की किसी संस्था में जो

अध्यापकों और स्कूल के परामर्शदाताओं को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करती है, किस प्रकार की निर्देशन सेवाएँ मूल्यवान होती हैं।

ब्रुकलिन कालेज शैक्षिक क्लिनिक

संगठन

शैक्षिक क्लिनिक का संगठन सितम्बर १९४८ में ब्रुकलिन कालेज में अध्यापन की शिक्षा के कार्यक्रम के रूप में हुआ था। इसके कर्मचारियों में मनोवैज्ञानिक, मानसिक रोग चिकित्सक, सामाजिक कार्यकर्त्ता, मानसिक रोग चिकित्सा सलाहकार और एक सलाह देने वाला चिकित्सक होता है। क्लिनिक के समस्त कर्मचारी कालेज शिक्षा विभाग के कर्मचारी होते हैं।

कार्यक्रम

क्लिनिक के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रभावपूर्ण अध्यापकों की तैयारी में शिक्षा विभाग की सहायता करना है। इसके अतिरिक्त क्लिनिक निर्देशन परामर्शदाताओं और उपचारक अध्यापकों को तैयार करने में भी सहायता देते हैं।

अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शैक्षिक क्लिनिक शिशु निर्देशन कार्यक्रम चलाता है और सम्बन्धित क्लिनिक-परियोजनाओं और अनुसंधान में लगा रहता है। इन कार्यों के द्वारा क्लिनिक कक्षा के उपस्नातकों और स्नातकों की शिक्षा की पूर्ति क्लिनिक के विविध, श्रेणीबद्ध अनुभवों की संयुक्त श्रृंखला के माध्यम से करता है और अध्यापकों तथा विद्यार्थियों की क्लिनिक और सम्बन्धित शैक्षिक मामलों के स्रोत के रूप में सेवा करता है।

शिशु निर्देशन सेवाएँ

सम्पूर्ण कार्यक्रम के रूप में शैक्षिक क्लिनिक निःशुल्क आधार पर शिशु निर्देशन सेवाएँ प्रदान करता है। कुल कार्यक्रम के अन्य लक्ष्यों और सेवाओं को ध्यान में रखते हुए क्लिनिक बच्चों को सीमित संख्या में ही स्वीकार कर सकता है।

रोगियों को भेजने की पद्धति व्यक्तियों का अध्ययन करने के लिए स्कूलों, सामाजिक अभिकरणों या अभिस्वीकृत सामुदायिक संस्थाओं द्वारा आवेदन किये जा सकते हैं। जबकि बच्चे स्कूल में न पढ़ते हों तभी माता-पिता द्वारा किये गये सीधे आवेदन को स्वीकार किया जाता है। क्लिनिक ३ से १८ वर्ष तक की आयु के उन व्यक्तियों पर विचार करता है जो ब्रुकलिन के स्कूलों में अध्ययन करते हैं। उन व्यक्तियों के मामलों पर भी विचार किया जाता है जो पढ़ते तो दूसरे प्रारम्भिक या हाई स्कूलों में हैं किन्तु रहते ब्रुकलिन के क्षेत्र में हैं।

प्रत्येक मामले में व्यक्ति को प्रस्तुत करने का आवेदन-पत्र (Referral application) भर कर भेजना पड़ता है। यह प्रपत्र आवेदन करने पर क्लिनिक से मिल सकता है। प्रत्येक भेजे जाने वाले व्यक्ति को क्लिनिक अध्ययन के लिए स्वीकार नहीं करता। विचाराधीन व्यक्ति से सम्बन्धित सामग्री का प्रारम्भिक

अध्ययन और उसके माता-पिता के साथ साक्षात्कार करने के पश्चात् इस मामले पर निर्णय किया जाता है। केवल वे ही मामले स्वीकार किये जाते हैं जिनमें यह समझा जाता है कि क्लिनिक के अध्ययन से कोई लाभ होगा। साधारणतया क्लिनिक यह प्रयत्न करता है कि जो सेवा की जा चुकी है उसकी पुनरावृत्ति न हो। कुछ निश्चित उदाहरणों में, क्लिनिक रोगी को किसी अन्य अधिक उपयुक्त अभिकरण के पास भेज देता है।

स्वीकृत रोगियों के प्रकार क्लिनिक अध्ययन के लिए ऐसे व्यक्तियों को स्वीकार करता है जिनकी समस्याएँ इस प्रकार की होती हैं जो कि विशेष रूप से शिशु निर्देशन क्लिनिकों को भेजी जाती हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

१. जिन बच्चों को शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता हो।
२. जिन बच्चों में अपवादस्वरूप रुझान और विशेष योग्यताएँ हों।
३. जिन बच्चों को अध्ययन में कठिनाई होती हो।
४. जो बच्चे कक्षा में व्यवहार सम्बन्धी कठिनाइयाँ प्रदर्शित करते हों।
५. जिन बच्चों के स्वभाव और चरित्र अस्वीकार्य हो गये हों।
६. जो बच्चे भय, चिन्ताओं आदि या समाज-विरोधी व्यवहार के कारण परिवार या समुदाय के साथ भली-भाँति समन्वय न कर पाते हों।

सेवाओं के प्रकार क्लिनिक तीन प्रकार की क्लिनिक सम्बन्धी सेवाएँ प्रस्तुत करता है : प्रत्यक्ष अध्ययन, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा और शैक्षिक चिकित्सा।

१. प्रत्यक्ष अध्ययन क्लिनिक में किये जाने वाले प्रत्यक्ष अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत होता है। प्रारम्भ में मानसिक रोग चिकित्सक सामाजिक कार्यकर्त्ता द्वारा प्रत्येक बच्चे की माता और / या पिता से साक्षात्कार किया जाता है। सामान्य रूप से यह साक्षात्कार एक बार में समाप्त हो जाता है, किन्तु कभी-कभी अनेक बार साक्षात्कार करना पड़ता है। तब मनोवैज्ञानिक बच्चे की परीक्षा करता है और फिर समस्या की प्रकृति के अनुसार वह परीक्षण की प्रणाली और साक्षात्कार तथा क्रीड़ा प्रविधियों का निश्चय करता है। प्रत्येक बच्चे की विस्तृत डाक्टरी परीक्षा होती है। जब मनोवैज्ञानिक, मानसिक रोग चिकित्सक सामाजिक कार्यकर्त्ता और चिकित्सक आवश्यक समझते हैं तो बच्चे को मानसिक रोगों के चिकित्सक के पास भेज दिया जाता है। कुछ मामलों में, बच्चे की परीक्षा न होने पर भी उसके सम्बन्ध में अध्यापक मानसिक रोग चिकित्सक से परामर्श कर लेते हैं—यह परामर्श समस्त उपलब्ध तथ्यों की परीक्षा, मूल्यांकन और व्याख्या पर आधारित होता है। प्रत्येक मामले को लेकर विचार-विमर्श होता है जिससे उन समस्त तथ्यों को समन्वित करने का अवसर मिलता है जो अध्यापकों ने उस व्यक्ति के सम्बन्ध में संग्रहीत किये हैं। इन तथ्यों पर व्याख्यात्मक विचार-विमर्श करने के लिए उस बच्चे के माता और / या पिता के साथ साक्षात्कार किया जाता है जिसका कि अध्ययन किया गया है। जब भी आवश्यक होता है, यह जानने के लिए अनेक व्याख्यात्मक भेंटें की जाती हैं कि बच्चे के तालमेल

में सुधार करने के कार्य में सहायक होने के लिए अभिभावक उन परिणामों और अपने कर्त्तव्यों को भली-भाँति समझते हैं या नहीं। प्रत्येक मामले का क्लिनिक द्वारा तैयार किया गया सारांश उन लोगों के पास भेज दिया जाता है जो विचाराधीन व्यक्ति को क्लिनिक में भेजते हैं। जब कभी आवश्यक होता है तब कर्मचारी विचाराधीन व्यक्तियों को भेजने वाले अभिकरण से भेंट करते हैं और मामले के सम्बन्ध में प्राप्त जानकारी और की गई सिफारिशों पर विस्तार-पूर्वक चर्चा करते हैं।

२. मनोवैज्ञानिक चिकित्सा क्लिनिक के सीमित मामले मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के लिए स्वीकार किये जाते हैं। क्लिनिक और शिक्षा विभाग में कर्मचारियों पर, जितने विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक उत्तरदायित्व हैं, उनके कारण यह संख्या सीमित मात्रा में रहती है। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में माता और बच्चे दोनों की परीक्षा साथ-साथ होती है किन्तु विभिन्न व्यक्तियों द्वारा मनोवैज्ञानिक चिकित्सा की अवधि विचाराधीन व्यक्ति की आवश्यकताओं और प्रगति तथा चिकित्सा के लक्ष्यों के अनुसार होती है।

३. शैक्षिक उपचार शैक्षिक उपचार उन थोड़े से बच्चों का किया जाता है जो पढ़ने में असमर्थ होते हैं। जो भी बच्चे उपचारात्मक पठन के लिए स्वीकार किये जाते हैं, उनका पहले विस्तृत अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में मानसिक रोग की परीक्षा भी सम्मिलित होती है। बच्चे के उपचारात्मक पठन के साथ-साथ बच्चे की माँ को भी मानसिक रोग चिकित्सक सामाजिक कार्यकर्त्ता द्वारा नियमित रूप से देखा जाता है। क्लिनिक में होने वाला उपचारात्मक पठन प्रक्रिया के सामान्य चिकित्सात्मक रूपों और उन निश्चित उपचारात्मक प्रविधियों के अनुसार होता है जो सहायक सिद्ध होते हैं।

परामर्श सम्बन्धी साक्षात्कार

साक्षात्कार की सफलता दोनों भाग लेने वालों की दृष्टि से होने वाले उद्देश्य की पूर्ति पर निर्भर करती है। यह सफलता किस सीमा तक प्राप्त होती है यह परामर्श-दाता के कौशल और परापर्शपात्र के सहयोग पर निर्भर करती है।

साक्षात्कार के लक्ष्य साक्षात्कार की प्रविधि का उपयोग निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए होता है :

१. जानकारी प्राप्त करने के लिए
२. जानकारी देने के लिए
३. नया नौकर चुनने के लिए
४. तालमेल की समस्या को सुलझाने में सहायता देने के लिए।

जानकारी प्राप्त करना तथ्य की खोज करने वाले साक्षात्कार का अत्यधिक प्रयोग वाणिज्य-संसार में होता है, इनका उपयोग व्यापार के सहयोगियों तथा अन्य व्यक्तियों के रवैयों और सम्मतियों तथा उनके द्वारा प्रयुक्त होने वाली प्रविधियों

का ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया जाता है। प्रश्नावली के द्वारा इस सामग्री को प्राप्त करना बहुधा संभव होता है। किन्तु यदि साक्षात्कार के द्वारा व्यक्तिगत सम्पर्क बना लिया जाय तो परिणाम और भी अधिक संतोषजनक हो सकते हैं।

किसी व्यक्ति की पुस्तिका में दिए गये तथ्यों की पूर्ति अध्यापक या निर्देशन कर्मचारी साक्षात्कार के द्वारा कर सकता है। स्कूल के बाहर की अभिरुचियों, घर के उत्तरदायित्वों, अध्ययन की आदतों, स्कूल के रवैयों, व्यक्तिगत सम्मतियों और इस प्रकार की अन्य बातों से सम्बन्धित प्रश्नों का उपयोग तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार में किया जाता है। जब तक कि बहुत अधिक प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की आवश्यकता न हो, इसके लिए साधारणतया एक ही साक्षात्कार पर्याप्त होता है। साक्षात्कार कितनी देर तक चलना चाहिए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कितनी जानकारी प्राप्त करनी है और जिस बच्चे से साक्षात्कार किया जा रहा है, उसकी आयु क्या है। यह अवधि साधारणतः पचास मिनट से अधिक नहीं होनी चाहिए। बहुत से मामलों में साक्षात्कार के लिए २०-२५ मिनट की अवधि पर्याप्त होती है।

सूचना देने के लिए सूचना देने का उत्तरदायित्व स्कूल के सभी कर्मचारियों का है। किसी भी आयु का विद्यार्थी जो कोई सूचना प्राप्त करना चाहता है, अध्यापक या परामर्शदाता से प्राप्त करता है। स्कूल के प्रबन्धकों का एक कर्त्तव्य यह भी है कि वे विद्यार्थियों को यह जानने के लिए प्रशिक्षित करें कि सूचनाएँ कहाँ से मिल सकती हैं और इन स्रोतों का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए। कुछ स्थितियों में, उनके प्रश्नों के उत्तर उन पुस्तकों या अन्य मुद्रित सामग्रियों में उपलब्ध नहीं होते जहाँ तक कि उनकी पहुँच है। अतएव नवयुवकों को ऐसा अनुभव करना चाहिए कि इन प्रश्नों के विषय में उन लोगों से स्वतन्त्रतापूर्वक सूचना प्राप्त कर सकते हैं जो कि इस विषय में जानकारी रखते हैं, ये व्यक्ति स्कूल के कर्मचारी होते हैं और स्कूल के नियमों, पाठ्यक्रमों और पाठ्यविधि अनुक्रमणिकाओं, कक्षा के बाहर की गति-विधियों, कालेज की अपेक्षाओं, व्यावसायिक तैयारी तथा व्यक्तिगत मामलों से पूर्णतया अवगत होते हैं।

जब कभी अध्यापक या परामर्शदाता विद्यार्थी को, उसके द्वारा माँगी गई, जानकारी देने का प्रयत्न करता है तो उसे तथ्यों के बारे में पूर्णतः निश्चित होना चाहिए और उन्हें ऐसी भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए जिसे विद्यार्थी सरलता से समझ सकें। यदि परामर्शदाता उत्तर न जानता हो, तो या तो वह उपलब्ध और समुचित संदर्भ सामग्री देखने में छात्र की सहायता कर सकता है अथवा वह अन्य साधनों से जानकारी प्राप्त करके दूसरे साक्षात्कार की व्यवस्था कर सकता है। इन साक्षात्कारों की अवधि माँगी गई जानकारी और उसे प्रदान करने की सरलता के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकती है।

नये कर्मचारी का चुनाव नौकरी सम्बन्धी साक्षात्कार पर इस क्षेत्र के मालिकों और लेखकों द्वारा पर्याप्त ध्यान दिया गया है। जब कोई अभ्यर्थी साक्षात्कार के लिए उपस्थित होता है तो स्थिति के दो रूप सामने आते हैं : (१) वर्तमान रिक्त

स्थान के लिए मालिक सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है, (२) अभ्यर्थी उस पद को प्राप्त करना चाहता है, जिसके लिए वह योग्य है और जिसमें वह कार्य करने का संतोष प्राप्त करेगा। मालिक और नौकर की सफलता में नौकरी का साक्षात्कार एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

साधारणतया साक्षात्कार से पूर्व आवेदनकर्त्ता उस पद के लिए अपने शैक्षिक अनुभव और व्यक्तित्व सम्बन्धी योग्यताओं की प्रश्नावली के उत्तर लिखकर प्रस्तुत करता है। भावी मालिक के पास सिफारिशी पत्र भी पहुँच सकते हैं। इसके अतिरिक्त, साक्षात्कार से पूर्व अथवा साक्षात्कार के समय अभ्यर्थी की परीक्षा भी ले ली जाती है अथवा पद की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए उससे अपनी योग्यता का व्यावहारिक प्रदर्शन करने के लिए भी कहा जा सकता है। इस प्रकार संचित तथ्य उस साक्षात्कार की आधारभूत पृष्ठभूमि का कार्य कर सकते हैं। व्यक्तित्व सम्बन्धी वे विशेषताएँ जिनका ज्ञान अन्य प्रकार से प्राप्त नहीं किया जा सकता, मालिक और प्रत्याशी के प्रत्यक्ष वार्तालाप और साक्षात्कार से स्पष्ट हो जाती हैं। दोनों में से प्रत्येक को एक दूसरे की साख, सचाई, विश्वसनीयता और सम्मानजनक इरादों के सम्बन्ध में सम्मति बनाने का अवसर प्राप्त हो जाता है जो अच्छे कार्यकर्त्ता के मानसिक साहस और सहकारितापूर्ण सम्बन्धों के लिए महत्त्वपूर्ण बातें हैं।

व्यक्तिगत समन्वय सम्बन्धी साक्षात्कार व्यक्तिगत समन्वय सम्बन्धी साक्षात्कार सम्भवतः निर्देशन अथवा परामर्श-कार्य के अत्यन्त कठिन रूप हैं। उदाहरण के लिए एक ऐसा व्यक्ति लीजिए जो परिस्थिति सम्बन्धी वर्तमान स्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने में असमर्थ रहा है। उसका भावात्मक असंतुलन हल्का हो और उसका सरलता से उपचार हो सकता हो अथवा वह गंभीर संघर्ष का परिचायक हो। ऊपरी लक्षण वास्तविक दशा का वैध संकेत देते हों, या न भी देते हों। परामर्शपात्र परामर्शदाता के साथ पूर्णतः सहयोग करता हो या न भी करता हो। उसकी कठिनाइयों के कारणों का ज्ञान उसकी मानसिक तीक्ष्णता, स्थिति को समझने की क्षमता या वह स्थिति जहाँ तक उसके तालमेल का असंतुलन बढ़ चुका है, के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है।

स्थिति के अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व परामर्शदाता के चारों ओर चक्कर काटते हैं। उसे ऐसे प्रश्नों पर विचार करने की आवश्यकता है, जैसे कि यहाँ दिये जा रहे हैं :

मैं समस्या को किस सीमा तक समझता हूँ ?
समस्या के प्रति और समस्या पीड़ित व्यक्ति के प्रति मेरा क्या रवैया है ?
मैं व्यक्ति और समस्या की पृष्ठभूमि के विषय में क्या जानता हूँ ?
इस समस्या का समाधान करने के लिए मुझ में कितनी योग्यता है ?
मुझे साक्षात्कार की कौन-सी प्रविधि या प्रविधियों को अपनाना चाहिए ?
संभावित परिणाम क्या होंगे ?

साक्षात्कार करने वाले के व्यक्तिगत गुण व्यक्तिगत तालमेल के लिए परामर्श-कार्य का साक्षात्कार एक कला है; इसके लिए साक्षात्कार करने वाले में निश्चित व्यक्तिगत विशेषताएँ, पूर्ण प्रशिक्षण और विशेषज्ञ निर्देशक के आधीन अनुभवहोना चाहिए।

यह आवश्यक है कि साक्षात्कार करने वाले में व्यक्तित्व सम्बन्धी वे वाँछनीय विशेषताएँ हों जिन पर इस पुस्तक में बल दिया गया है और जो किसी भी निर्देशन स्थिति के व्यक्ति से निबटने के लिए अनिवार्य हैं। साक्षात्कार का उद्देश्य चाहे कुछ भी हो, अध्यापक, स्कूल के परामर्शदाता, मालिक या निर्देशन क्लिनिक के कर्मचारी को विवेकशील और व्यक्तिगत रूप से पूर्णतया संतुलित होना चाहिए। विशेषतः समन्वय सम्बन्धी साक्षात्कारों में इन विशेषताओं का होना अनिवार्य है।

स्कूल के परामर्शदाता के प्रमाणीकरण के लिए लगभग सभी राज्यों की अपेक्षाओं में अध्यापन का अनुभव होना आवश्यक है। इसका कारण सरलता से समझा जा सकता है। किसी छात्र को बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श देने का कार्य हाथ में लेने से पूर्व उस व्यक्ति को कक्षा में छात्रों के साथ कार्य करने का अनुभव होना चाहिए।

परामर्शदाता का व्यवहार मैत्रीपूर्ण किन्तु सम्मानपूर्ण होना चाहिए। उसे भावनापूर्ण या "बच्चों जैसी" कार्यविधि नहीं अपनानी चाहिए, जिसके विषय में यह मान्यता है कि इससे परामर्शपात्र को सरलता होती है। जो व्यक्ति परामर्शदाता से सलाह लेना चाहता है, उसे यह विश्वास होना चाहिए कि परामर्शदाता उसे परामर्श के लिए स्वीकार कर लेगा ताकि वह निर्भय होकर अपनी भावनाओं को स्वतंत्रता के साथ व्यक्त कर सके। साथ ही, उस व्यक्ति को परामर्शदाता के निर्णय का सम्मान करना चाहिए और उसे इस बात का विश्वास होना चाहिए कि चाहे उसकी समस्या कुछ भी हो, परामर्शदाता उसकी गंभीरता और महत्त्व को समझेगा तथा उस पर गंभीरतापूर्वक विचार करेगा जिससे दोनों मिलकर उसका कोई समाधान खोज सकेंगे। किसी परामर्श-कार्य की स्थिति की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि दोनों व्यक्तियों में पूर्ण सौहार्द हो। यह सम्बन्ध तभी स्थापित हो सकता है जबकि परामर्शदाता परामर्शपात्र के खिंचाव को मैत्रीपूर्ण मुस्कान से और कभी-कभी मृदुहास्य से दूर करने का प्रयत्न करे। परामर्शदाता द्वारा प्रदर्शित उदासीनता का रवैया सहायता चाहने वाले व्यक्ति को विश्वस्त बनाने के स्थान पर शंकित कर देता है।

परामर्शदाता का रवैया परामर्शदाता-परामर्शपात्र के सम्बन्धों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रूप परामर्शदाता का यह रवैया है कि विचाराधीन व्यक्ति अपने विषय में चाहे कुछ भी कहे, उन बातों को गोपनीय रखा जाय, कभी प्रगट न किया जाय। जो परामर्श कार्य अथवा पाठ्यक्रम के चुनाव, पाठ्य विधि के अनुक्रम और व्यावसायिक रुचियों जैसे स्कूल के दैनिक मामलों से सम्बन्ध रखते हैं, उनमें परामर्शपात्र द्वारा अपने विषय में कोई गोपनीय सूचना नहीं दी जाती। जो व्यवितगत परामर्श असंतुलित स्थितियों या व्यक्तिगत गलत तालमेल के सम्बन्ध में होता है, उसमें व्यक्तिगत मामलों पर विचार करने की आवश्यकता होती है। चूंकि परामर्शपात्र को अपनी कठिनाइयाँ व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है, अतएव उसे परामर्शदाता की योग्यता और इस इच्छा पर विश्वास होना चाहिए कि वह उसके द्वारा व्यक्त की गई किसी गोपनीय बात को प्रगट नहीं करेगा।

बहुधा अध्यापक या परामर्शदाता अनजाने में किसी गोपनीय बात को प्रगट कर देते हैं। उदाहरण के लिए, कालेज की किसी छात्रा ने किसी छात्र से अपने सम्बन्धों के विषय में अपने किसी अध्यापक से सलाह ली। दुर्भाग्य से उस लड़की की कहानी से स्तब्ध होकर अध्यापक ने उस मामले की सूचना अपने सहयोगी अध्यापक को दे दी। शीघ्र ही यह बात अध्यापकों और कुछ लड़कों में फैल गई जिससे उस लड़की को बहुत धक्का लगा। इससे लड़के-लड़की दोनों बड़ी कठिनाई में फँस गये। यह ठीक है कि ऐसे भी अवसर आते हैं जबकि एकान्त में कही गई भेद की बात परामर्शदाता को अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों को इसीलिए बतानी पड़ती है कि परामर्शपात्र की समुचित सेवा की जा सके। यह स्थिति परामर्शपात्र को बता देनी चाहिए और उसकी अनुमति लेकर ही उपयुक्त व्यक्ति से चर्चा करनी चाहिए।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए हाई स्कूल की एक लड़की का अनुभव यहाँ दिया जा रहा है। यह लड़की डीन के कार्यालय में अत्यधिक सहयोग देने वाली छात्र-सहायिका थी। डीन ने देखा कि लड़की का वजन घट रहा है, वह खिची-खिची और परेशान प्रतीत होती थी, यद्यपि उसकी स्कूल की गतिविधियाँ पूर्ववत् प्रशंसनीय थीं। लड़की के हठ पर विजय प्राप्त करने और उसकी कठिनाई जानने के लिए डीन की ओर से अत्यधिक सहानुभूतिपूर्ण प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। उसका पिता नौकर था और माँ बीमार थी। लड़की अपने पिता की सहायता से अपनी माँ और दो छोटे भाइयों की देखभाल करने का प्रयत्न कर रही थी। परिवार की सहायता के लिए वह भी स्कूल के समय के पश्चात् अंश-कालीन कार्य कर रही थी। यद्यपि दूसरी नौकरी प्राप्त करने के लिए पिता कठोर परिश्रम कर रहा था, लड़की की आय के अतिरिक्त जुड़ी हुई थोड़ी-सी पूँजी से परिवार का व्यय पूरा करने का प्रयत्न किया जा रहा था। पारिवारिक प्रतिष्ठा के कारण लड़की किसी से सहायता भी नहीं माँग सकती थी। डीन ने सुझाव दिया कि एक सामुदायिक कल्याण अभिकरण उसके पिता को दूसरी नौकरी प्राप्त करने में सहायता दे सकेगा और जब तक उसकी माँ स्वस्थ नहीं होती तब तक के लिए एक व्यावहारिक नर्स परिवार की देखभाल के लिए दे सकेगा। पहले तो लड़की इस बात के लिए सहमत नहीं हुई कि कोई अन्य व्यक्ति उसकी पारिवारिक स्थिति से परिचित हो। अन्त में इस सुझाव के महत्त्व को समझ कर वह डीन की योजना पर सहमत हुई, किन्तु इस शर्त के साथ कि इस बात को स्कूल में उन दोनों के अतिरिक्त तीसरा व्यक्ति न जाने (और डीन ने इस वचन का पालन किया)।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, स्कूल के परामर्शदाता पर मामले का भारी बोझा रहता है। यही बात सामुदायिक अभिकरणों के कार्यकर्त्ताओं और स्कूल प्रणाली के निर्देशन विभाग के सलाहकारों पर लागू होती है। उदाहरणार्थ, निर्देशन विभाग, शिशु कल्याण और उपस्थिति रिचमौंड, कैलीफोर्निया स्कूलों ने (जिनमें आठ पूरे समय के और दो अंशकालीन सलाहकार हैं) अभी हाल के एक स्कूल वर्ष में सामाजिक और भावात्मक कठिनाइयों से पीड़ित ६५७६ बच्चों को, १८२६ प्रारंभिक

स्कूलों के छात्रों को और ४७५० माध्यमिक स्कूलों के छात्रों को सहायता दी। कुल मिलाकर २२७५८ सम्पर्क बच्चों, माता-पिताओं, स्कूल कर्मचारियों और सामाजिक अभिकरणों से किये गये।

बहुत से व्यक्तियों की परामर्श सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करना भी परामर्शदाता के लिए एक समस्या है, वह इस बात पर ध्यान दिए बिना संतोषजनक रीति से नहीं सुलझायी जा सकती कि व्यक्तिगत परामर्श कार्य पर निश्चित समय के अतिरिक्त वह कितना और समय देने को प्रस्तुत है। चूँकि वह समस्त व्यक्तियों का परामर्श-भार पर्याप्त रूप से उठाने में असमर्थ होता है, उसे यह निश्चय कर लेना चाहिए कि वह यथासंभव अधिक से अधिक छात्रों को सहायता देना चाहता है अथवा उसे ऐसे व्यक्तियों का चुनाव कर लेना चाहिए जिन्हें उसकी सेवाओं की सर्वाधिक आवश्यकता हो।

परामर्शदाता के रवैयों पर सर्वाधिक प्रभाव डालने वाली दो बातें व्यक्तिगत निर्देशन के संदर्भ में हैं : परामर्श कार्य की गोपनीय प्रकृति और परामर्शपात्रों की अत्यधिक संख्या। इस सिलसिले में हम शिक्षा के संयुक्त राज्य के कार्यालय के प्रकाशन से उद्धरण दे रहे हैं :

> परामर्शदाता प्रत्येक परामर्शपात्र के महत्त्व का सम्मान करके उसे अपनी प्रारम्भिक निष्ठा प्रदान करता है। परामर्शदाता अपने और परामर्शपात्र के मध्य गोपनीय सम्बन्धों की सुरक्षा का दायित्व स्वीकार करता है। अपने लेखन, भाषण और साक्षात्कार से वह यह स्पष्ट करता है कि परामर्शदाता का परामर्शपात्र से वही सम्बन्ध होता है जो कि वकील का मवक्किल से या डाक्टर का रोगी से होता है।
>
> परामर्शदाता उन सबको स्वीकार कर लेता है जो उससे सहायता लेना चाहते हैं, किन्तु अपनी सेवा की बढ़ती हुई माँग के कारण सेवा के गुणों को कम नहीं होने देता। जितनी सेवा वह संतोषजनक रीति से कर सकता है यदि उससे अधिक माँग होती है तो वह उपयुक्त प्रशासकीय अधिकारी को सूचित कर देता है कि वह उन सबकी पर्याप्त सेवा करने में असमर्थ है। जब तक अतिरिक्त सेवाएँ उपलब्ध नहीं होतीं, वह उन व्यक्तियों का चुनाव कर लेता है जिन्हें उसकी सेवाओं की अत्यधिक आवश्यकता है।
>
> परामर्शदाता सक्रिय रूप से व्यवसाय के रूप में परामर्श के विचार को बढ़ावा देता है। वह दूसरों को यह समझाने का प्रयत्न करता है कि वे अपनी सामर्थ्य के बाहर परामर्श-कार्य का उत्तरदायित्व न लें।
>
> परामर्शदाता अन्य कर्मचारियों और प्रशासकों का सहयोग तथा सहायता स्कूल के परामर्श सम्बन्धी कार्यक्रम के लिए आवश्यक समर्थक सेवाओं की व्यवस्था करने के लिए प्राप्त करते हैं।
>
> आवश्यकता होने पर परामर्शदाता परामर्शपात्रों को समुचित व्यक्तियों या अभिकरणों के पास भेज देता है और ऐसा प्रयत्न करता है कि यह भेजने का कार्य संभव हो सके और परामर्श-कार्य निरन्तर चल सके।

स्कूल के कर्मचारी के रूप में परामर्शदाता स्कूल का एक अंग होता है और उसके सामान्य कर्त्तव्यों को स्वीकार करता है। वह उन लोगों का विरोध करता है जो परामर्शदाता के रूप में उसके कर्त्तव्यों में हस्तक्षेप करते हैं, क्योंकि वे या तो अपनी अयोग्यता का परिचय देते हैं अथवा उसके समय पर अनुचित दबाव डालते हैं।

परामर्शदाता समय-समय पर अपने कार्यों का मूल्यांकन करता है और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त करता है जो उसके कार्य की किस्म का सुधार कर सकें।*

साक्षात्कार की पद्धतियाँ आज की हमारी साक्षात्कार की प्रविधियाँ हमारे पुराने परामर्श-कार्य या साक्षात्कार कार्यों से भिन्न हैं। भली-भाँति प्रशिक्षित परामर्शदाता अब परामर्शपात्रों को न तो फटकारता है और न चेतावनी देता है अथवा साधारणतया प्रोत्साहन देने वाले इन साहसपूर्ण वाक्यों का प्रयोग करता है: "तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है" अथवा "मुझ पर विश्वास करो। सब कुछ ठीक हो जायेगा।" और न पहले की भाँति परामर्शदाता किसी के गहन रवैयों और भावनाओं के आत्म-परीक्षण के उपचारात्मक मूल्यों पर पूर्णतया निर्भर करता है।

अब भी बहुत से साक्षात्कारकर्त्ता परामर्श-भरी या आग्रहपूर्ण प्रविधि का प्रयोग करते हैं। व्यक्ति अपनी समस्या बताता है। स्थिति का स्पष्ट करने वाले प्रश्नों के पश्चात् साक्षात्कारकर्त्ता उस समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। उसके वाक्य इस प्रकार प्रारम्भ होते हैं: "मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे लिये उचित होगा कि तुम······", "यदि तुम्हारे स्थान पर मैं होता तो मैं···" "मेरे सामने भी ऐसी ही समस्या आ गई थी, उस समय मैंने······" अथवा इसी प्रकार की वाक्यावलियों का प्रयोग करता है। जो साक्षात्कारकर्त्ता इस प्रकार की प्रविधि का उपयोग करता है वह वास्तव में उसी रूप को अपनाता है जो कि परामर्शपात्र चाहता है—अर्थात् निर्णय करने का उत्तरदायित्व परामर्शपात्र से हटा कर परामर्शदाता के ऊपर डाल देना। इसी प्रकार वर्तमान स्थिति के कारणों की परामर्शपात्र से व्याख्या करना निरर्थक है। समस्या की पृष्ठभूमि का बौद्धिक विश्लेषण उसके उपचार की दिशा में कोई सहायता नहीं देता, चाहे विचाराधीन व्यक्ति उसके विश्लेषण को स्वीकार कर ले।

जैसा कि हम जानते हैं, परामर्श-कार्य के उद्देश्य इन वर्षों में शनैः शनैः व्यवसाय-केन्द्रित निर्देशन से शैक्षिक परामर्शकार्य सहित जीवन के विविध क्षेत्रों में व्यक्तिगत तालमेल तक परिवर्तित हो रहे हैं। परामर्श-कार्य के विस्तृत होने वाले लक्ष्यों के साथ-साथ साक्षात्कार की विधियों पर भी विचारधाराओं में परिवर्तन हुआ है। इन दो कार्यविधियों ने अपने उपयोग में इस प्रकार एक निश्चित रूप ग्रहण कर लिया है कि वे क्रमशः गैर-निर्देशात्मक (मुवक्किल-केन्द्रित) और क्लिनिकात्मक (परामर्शदाता-केन्द्रित) हो गये हैं।

* Duties, Qualifications and Standards for Counselors, यूनाइटेड स्टेट्स आफिस ऑफ एजुकेशन. डिवीजन ऑफ वोकेशनल एजुकेशन, वाशिंगटन, डी० सी० फरवरी १९४९।

गैर-निर्देशात्मक अथवा मुवक्किल-केन्द्रित विधि का उपयोग विशेषतः व्यक्तिगत परामर्श स्थितियों पर होता है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति को अपनी निजी समस्या सुलझाने में सहायता देना है। यह इस मनोवैज्ञानिक मान्यता पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति यह आकांक्षा रखता है कि वह जीवन की माँगों से संतोषजनक तालमेल बिठा सके। अतएव आधारभूत कठिनाइयों को जानने, सूक्ष्मदृष्टि का विकास करने और रवैये या व्यवहार में जो भी परिवर्तन वांछनीय प्रतीत हो उसे करने के निश्चय सहित संभावित समाधान तक पहुँचने का लगभग पूर्ण उत्तरदायित्व मुवक्किल या परामर्शपात्र पर डाल दिया जाता है। मुख्य रूप से परामर्शदाता का कार्य एक श्रोता का कार्य है। उसका कार्य अपने और मुवक्किल के बीच एक सम्पर्क स्थापित करना है जिसके द्वारा वह मुवक्किल को स्वीकार्य कार्य-योजना की दिशा में अपनी कठिनाइयों के विषय में सोचने और बात करने के लिये प्रोत्साहन देता है। परामर्शदाता इस प्रक्रिया को (१) जो कुछ मुवक्किल कहता है कि उसके ऊपर निर्णय देने की अपेक्षा स्वीकृति का रवैया प्रदर्शित करके, (२) मुवक्किल द्वारा अभिव्यक्त भावना को दुहरा कर, और (३) जो कुछ मुवक्किल ने कहा है उसे संक्षेप में दुहरा कर और कभी-कभी "तो तुम्हारा यह विश्वास है कि······?" जैसी टिप्पणी करके मुवक्किल के विचारों को स्पष्ट करने में सहायता देकर लागू करता है।

साक्षात्कार की ग़ैर-निर्देशात्मक प्रविधि के प्रख्यात प्रणेता कार्ल आर० रौगर्स का मनोवैज्ञानिक उपचार के इस रूप के पक्ष में कथन निम्न प्रकार है :

> "यदि परामर्शदाता समस्या का समाधान करने में सहायता देता है तो इस प्रकार के परिणाम होंगे ऐसी आशा करने की अपेक्षा इसका सीधा लक्ष्य व्यक्ति की अधिक स्वाधीनता और शक्ति पर है। इसका लक्ष्य व्यक्ति है समस्या नहीं। इसका उद्देश्य किसी एक समस्या का समाधान करना नहीं है, अपितु व्यक्ति के विकास में सहायता देना है ताकि वह वर्तमान समस्या के साथ भविष्य में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का भी भली-भाँति निराकरण कर सके। यदि वह एक समस्या को अधिक स्वतन्त्रता, अधिक उत्तरदायित्व, कम भ्रमित और अधिक संगठित रीतियों से सुलझाने की शक्ति प्राप्त कर लेता है तो वह नई समस्याओं को भी इसी रीति से सुलझा सकेगा।"*

परामर्श-कार्य की तथाकथित निर्देशात्मक अथवा परामर्शदाता-केन्द्रित विधि के एक प्रमुख समर्थक ई० जी० विलियमसन इस बात पर बल देते हैं कि समुचित या रचनात्मक सहायता तब तक संभव नहीं है जब तक कि कठिनाई के बुद्धिमत्तापूर्ण निदान के लिए परामर्शदाता ने पर्याप्त तथ्य एकत्रित न कर लिये हों।

विलियमसन और अन्य क्लिनिकल मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार परामर्श-कार्य में विश्लेषण, संस्थान, निदान, पूर्व-निदान, चिकित्सा और पश्चात्कालीन देखभाल

* कार्ल आर० रौगर्स Counseling and Psychotherapy. पृष्ठ २८-२९ हौटन मिफलिन कम्पनी, बोस्टन, १९४२। अनुमति से उद्धृत। ग़ैर-निर्देशनात्मक विधि के लिए सी० आर० रौगर्स की Client Centered Therapy हौटन मिफलिन कम्पनी, बोस्टन, १९५१ भी देखिये।

सम्मिलित है। (देखिये अध्याय ८, मामले का अध्ययन)। निर्देशात्मक विधि में परामर्शदाता साक्षात्कार के समय नेतृत्व स्वयं संभाल लेता है और मुवक्किल की परीक्षा लेता है तथा उसे ऐसे कार्यों में लगा देता है जिससे उसे और मुवक्किल दोनों को आवश्यक तथ्य प्राप्त हो सकें। क्लिनिक-उपचारक मुवक्किल को स्वीकार कर लेता है चाहे आवश्यक उपचार आदि के सम्बन्ध में वह स्वयं ही निर्णय करे। किन्तु मुवक्किल उन अन्तिम निर्णयों के लिए उत्तरदायी होता है जो दोनों संयुक्त रूप से कार्यलीन रह कर करते हैं।

मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में निर्देशात्मक विधि और गैर-निर्देशात्मक विधि के सम्बन्धित मूल्यों के सम्बन्ध में परामर्शदाताओं और क्लिनिक के अधिकारियों में मतभेद है। कुछ लोगों का यह दावा है कि किसी भी परामर्श की स्थिति में कम से कम किसी न किसी मात्रा में निर्देशन होता है। कोई परामर्शपात्र असहयोगी हो सकता है अथवा बिना किसी निर्देशन के अपने कार्यों को समझने औरकार्य की रचनात्मक योजनाओं का विकास करने में अशक्त हो सकता है।

गैर-निर्देशात्मक विधि में साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कार से पूर्व पृष्ठभूमि की कुछ सामग्री प्राप्त कर लेता है। साक्षात्कार के समय जब वह परामर्शपात्र को अपनी समस्या स्पष्ट करने और कारणभूत घटनाओं तथा परिस्थितयों को स्पष्ट करने के लिए प्रोत्साहन देता है तो वह उसके रवैयों और अनुभवों के विषय में आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त कर सकता है। समय से पूर्व सामग्री के इस संयुक्त संचय द्वारा और मुवक्किल की बात सुनकर साक्षात्कार करने वाले उस व्यक्ति के और जिस प्रकार की सहायता उसे देनी है, उसके विषय में वह उचित जानकारी प्राप्त कर लेता है। इसके अतिरिक्त जब तक वह विचाराधीन व्यक्ति की कुछ पृष्ठभूमि से परिचित नहीं होगा तब तक वह मुवक्किल की कुछ बातों को भली-भाँति नहीं समझ सकेगा। इसका अर्थ यह हो सकता है कि साक्षात्कार के आलोचनात्मक बिन्दु में से मूल्यवान मूल तथ्य और आवश्यक सूचना निकाल दी गई है।

निर्देशात्मक विधि में (१) परामर्शदाता मुवक्किल की अपेक्षा अधिक बोलता है, (२) समस्या का सम्भावित समाधान मुवक्किल को नहीं परामर्शदाता को खोजना होता है, (३) इस उपचार की सफलता परामर्शदाता के नेतृत्व का अनुकरण करने की मुवक्किल की इच्छा और सामर्थ्य पर तथा सन्तोषजनक रीति से समस्या का समाधान होने तक मुवक्किल के साथ कार्य करने की परामर्शदाता की इच्छा पर निर्भर करती है। चाहे कोई भी परामर्श की विधि अपनाई जाय, इस विषय में कोई तर्क नहीं हो सकता; ऐसी विधि होनी चाहिये जो मुवक्किल को विकसित आत्मप्राप्ति और भविष्य की समस्याओं का मुकाबला करने के लिए प्रोत्साहन दे सके।

जिस सीमा तक गैर-निर्देशात्मक विधि परामर्श-कार्य के इन लक्ष्यों को प्राप्त करती है, वहाँ तक वह सराहनीय है। ध्यानपूर्वक सुनने और यदाकदा निर्देशात्मक प्रश्न पूछ लेने से परामर्शपात्र के रवैये में थोड़ी सरलता आ जाती है; इससे समस्या को समझने और कार्य को आयोजित करने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। यदि परा-

मर्शपात्र (१) अपनी समस्या को स्पष्ट करते-करते अधिकाधिक भ्रमित हो जाय, (२) अस्पष्ट, निराश या मानसिक रूप से मन्द हो जाय, (३) क्या करना चाहिए यह तो वह जानता है, किन्तु वह कार्य करने के लिये अपने आपको दबा न सके, और (४) भावनात्मक रूप से इतना असंतुलित हो जाय कि उसकी प्रथम आवश्यकता साहस की प्राप्ति हो अथवा ऐसी वस्तु हो जो कार्य के लिए परामर्शदाता के सुझाव के रूप में हो और जिसका वह सहारा ले सके तो पूर्णतया गैर-निर्देशात्मक विधि प्रभावहीन हो सकती है।

ये दोनों विचारधाराएँ परस्पर इतनी भिन्न नहीं हैं जितनी कि कुछ लोग समझते हैं। वास्तव में बहुत से अनुभवी और कुशल परामर्शदाता अच्छे निर्वाचक होते हैं। प्रत्येक विचारधारा वाले व्यक्तियों द्वारा बताई गई विधियों में निहित कुछ मूल्यों को वे समझते हैं। कोई भी परामर्श की दो स्थितियाँ समान नहीं होतीं; विशिष्ट स्थितियों में जो भी प्रविधियाँ सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होती हैं, सफल परामर्शदाता उन्हीं का उपयोग कर लेता है।

कुछ सामान्य सुझाव किसी परामर्श के साक्षात्कार में किस विधि का उपयोग किया जाता है, इस पर ध्यान दिये बिना कुछ ऐसी सामान्य बातें हैं, जिन पर ध्यान देना चाहिए। साक्षात्कारकर्त्ता को चाहिए कि वह स्वयं को दूसरे व्यक्ति की स्थिति में रखने का प्रयत्न करे और बिना पक्षपात या पूर्वाग्रह के दूसरे की बात को सुने। परामर्शदाता द्वारा दिये गये सुझावों और पूछे गये प्रश्नों को मित्रतापूर्ण रीति से प्रस्तुत करना चाहिए जिसका लक्ष्य परामर्शपात्र को सरलता प्रदान करना और उसका विश्वास जीतना होना चाहिए। ऐसा प्रतीत तो नहीं होना चाहिए कि साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कार को शीघ्रता से समाप्त कर देना चाहता है परन्तु उसे प्रस्तुत समस्या पर ही ध्यान देकर अन्य बातों पर समय नहीं गँवाना चाहिए। अंत में साक्षात्कार समाप्त होने पर मुवक्किल को ऐसा अनुभव होना चाहिए कि परामर्शदाता से उसे सहायता प्राप्त हुई है और भविष्य में भी वह सलाह लेने के लिए आ सकता है।

बहुधा यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या साक्षात्कार करने वाले को साक्षात्कार के समय आवश्यक बातें लिखते जाना चाहिए। साक्षात्कार का मूल्यांकन करने या आगामी साक्षात्कार की तैयारी के लिए तात्कालिक नोट ले लेना, साक्षात्कार के पश्चात् उन्हें स्मरण करने के प्रयत्न करने से अच्छा है। किन्तु भावनात्मक रूप से असंतुलित व्यक्ति परामर्शदाता को अपनी बातें लिखते देखकर चिढ़ भी सकता है। परामर्शदाता ऐसा नियम बना सकता है, कि जो कुछ वह लिखता है, अपने मुवक्किल को दिखा दे और उसे लिखने का उद्देश्य भी उसे समझा दे। सामान्यतः ऐसी स्थिति में मुवक्किल उसे अपना सहयोग प्रदान करता है। जिस बात पर परामर्शपात्र का ध्यान आकृष्ट करना अभीष्ट न हो, उसके लिए कोई संकेत निश्चित कर लेना चाहिए। यदि परामर्शपात्र की जानकारी में न हो या यदि यह उसकी जानकारी में हो और उसने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी हो तो साक्षात्कार का यह आलेखन मूल्यवान होता है। अन्यथा लेखन उपकरणों की उपस्थिति में परामर्शपात्र की निर्बाध अभिव्यक्ति में बाधा पड़ सकती है।

साक्षात्कार की सफलता इन बातों पर निर्भर करती है, जबकि मुवक्किल (१) विश्वास करता है कि उसे सहायता दी गई है, (२) आगामी साक्षात्कार के लिए वह पुनः आने को प्रस्तुत हो, और (३) भविष्य में ऐसी ही समस्याओं का सामना करने और उन्हें सुलझाने के लिए अधिक योग्यता प्रदर्शित करता है। चाहे साक्षात्कारकर्त्ता अपेक्षाकृत सक्रिय भाग लेता है या निष्क्रिय, वह निम्नलिखित 'करो" और "मत करो" का अनुसरण करके—जो कैंटन, ओहियो के सार्वजनिक स्कूलों के अध्यापकों, परामर्शदाताओं और आचार्यों के लिए निर्धारित पुस्तिका में सम्मिलित किये गये हैं—लाभान्वित हो सकता है।

कुछ साक्षात्कार सम्बन्धी 'करो'

१. वस्तुगत बनो, मूल्यों का अपना निर्णय न्यूनतम रखो।
२. अपने छात्र को जानो।
३. छात्र के दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न करो।
४. छात्र का विश्वास प्राप्त करो और उसके योग्य बनो।
५. साक्षात्कार में अपने छात्र की वास्तविक सेवा करो।
६. अच्छे श्रोता बनो, लेने वाले और देने वाले।
७. विचार-विनिमय करो।
८. विद्यार्थी को यथा रूप स्वीकार करो।

कुछ साक्षात्कार सम्बन्धी निषेध

१. अनावश्यक रूप से मत छा जाओ, यह छात्र का साक्षात्कार है।
२. अध्यापक की भाँति कार्य न करो ; परामर्शदाता के रूप में साक्षात्कार करो।
३. सत्यपरायण और स्पष्ट वक्ता बनो ; अनुदार और मुँहतोड़ उत्तर देने वाले नहीं।
४. व्यंग्य, अनुचित शब्द और आलोचना से बचो।
५. छात्र को सुधारने का प्रयत्न मत करो।
६. इस प्रकार के साक्षात्कार में दंडात्मक अनुशासन से बचो।

वाद-विवाद के लिये प्रश्न और विषय

१. 'व्यक्तिगत स्थितियों में निर्देशन' वाक्यांश के प्रयोग का औचित्य बताइये।
२. व्यक्तिशः निर्देशन और व्यक्तिगत निर्देशन में भेद बताइये। प्रत्येक का उदाहरण दीजिये।
३. अनुभव के निम्नलिखित प्रत्येक क्षेत्र के लिये पाँच प्रश्न बताइये जो परामर्श-कार्य के लिये व्यक्ति की आवश्यकता पर आधारित हों : घर, स्कूल और व्यावसायिक तालमेल; सामाजिक और अवकाश-कालीन तालमेल।
४. छः भिन्न-भिन्न प्रकार के परामर्शदाताओं के नाम बताइये। प्रत्येक के लिए दो प्रकार की परामर्श सेवाएं बताइये जो कि परामर्शदाता दे सकता है।

५. परामर्श-पात्र के सम्बन्ध में परामर्शदाता को क्या सूचनाएँ प्राप्त होनी चाहिएँ ? उनके प्रकार और राशि में किस सीमा तक अंतर हो सकता है ?
६. व्यक्तिशः स्थितियों में निर्देशन और निर्देशन कार्यों के अन्य रूपों में क्या सम्बन्ध है, स्पष्ट रूप से बताइये।
७. क्लिनिक की कार्यविधि से कौन से कार्य पूरे होते हैं ?
८. ऐसे तीन उदाहरण दीजिए जब क्लिनिक की सेवाओं का उपयोग किया गया था, अथवा किया जाना चाहिए था।
९. अध्याय ८ में मूल्यांकन की जिन रीतियों पर विचार किया गया है, उनसे मूल्यांकन की परियोजनात्मक प्रविधियाँ कैसे भिन्न हैं ?
१०. यदि सम्भव हो तो निर्देशन क्लिनिक में जाइये। अपने निरीक्षण की जानकारी कक्षा को दीजिए।
११. अकलिन कालेज में शैक्षिक क्लिनिक के कार्यक्रम का मूल्यांकन कीजिए।
१२. निर्देशन साक्षात्कार की परिभाषा कीजिये।
१३. इस अध्याय में वर्णित प्रत्येक प्रकार के साक्षात्कार का उदाहरण निश्चित स्थिति के द्वारा दीजिए।
१४. यदि आपका साक्षात्कारों का अनुभव हो तो परामर्शदाता द्वारा प्रदर्शित व्यक्तित्व के गुणों और उसकी कार्य-पद्धति का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
१५. निर्देशात्मक और गैर-निर्देशात्मक परामर्श विधियों में भेद बताइये। आप किसे पसंद करते हैं ? क्यों ?
१६. व्यक्तिशः स्थितियों में मामले का इतिहास कब और किस सीमा तक आवश्यक सहायक बन जाता है ?
१७. संभव हो तो किसी बच्चे या नवयुवक का साक्षात्कार कीजिए। अपनी कक्षा को उसकी जानकारी दीजिए जिसमें ये बातें भी सम्मिलित हों :
    (१) साक्षात्कार का उद्देश्य
    (२) साक्षात्कार के लिए तैयारी
    (३) आपने और साक्षात्कार के पात्र ने क्या कहा।
    (४) साक्षात्कार का प्रत्याशित परिणाम।
१८. यदि आप शैक्षिक या सामुदायिक क्लिनिक में जा सकें तो किसी कर्मचारी और परामर्श-पात्र के साक्षात्कार में बैठिए। नीचे लिखी बातें नोट कीजिए :
    (१) परामर्शदाता का परामर्श-पात्र के प्रति रवैया।
    (२) अपनी समस्या में परामर्श-पात्र की पैठ।
    (३) परामर्शदाता किस सीमा तक निर्देशात्मक विधि, और गैर-निर्देशात्मक विधि, और दोनों विधियों को संयुक्त रूप से अपनाता है।

११

घर और समाज के निर्देशन दायित्व

कोई स्कूल अन्तरिक्ष में नहीं बसता, उसके विद्यार्थी अपने रवैयों और व्यवहारों में उन प्रभावों को अभिव्यक्त करते हैं जो उन पर घर और समुदाय में पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त, स्कूल ऐसा अभिकरण है जो समाज के आधार पर खड़ा है। अतएव अपने छात्रों के लिए पर्याप्त शिक्षा प्रदान करने की दिशा में वह क्या करता है या क्या कर सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जनसाधारण स्कूल के लक्ष्यों और सम्बन्धित कार्यों को किस सीमा तक जानते और स्वीकार करते हैं।

स्कूल-समुदाय सम्बन्ध

हमारे देश के द्वारा प्रारम्भिक वर्षों में किये गए जीवन के लिए संघर्ष में न तो इस बात को समझा गया और न स्वीकार किया गया कि व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षा के माध्यम के रूप में स्कूल जाना आवश्यक है। यह बात स्वीकार कर ली गई कि स्कूल जाने का अर्थ है केवल पढ़ने-लिखने और गणित में पर्याप्त निपुणता प्राप्त करना।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, यद्यपि शिक्षा में रुचि तो दृढ़ता के साथ बढ़ी, तथापि अभी पिछले दिनों तक स्कूल के प्रबन्धकों और समाज के सदस्यों में सक्रिय सहयोग का लगभग अभाव था। अपवादस्वरूप केवल एक प्रथा यह थी कि कुछ समुदायों के स्कूलों के अध्यापक अपने छात्रों के घरों पर भोजन करते थे और इस प्रकार स्कूल-घर के बीच एक सम्पर्क स्थापित करते थे जो कभी-कभी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता था।

स्कूल-समुदाय सहयोग का मूल्य स्कूल जब सामुदायिक समस्या से परिचित होता है तो वह समुदाय को उन्नत करने की दृष्टि से पाठ्य-सामग्री, अध्यापन की पद्धति और निर्देशन की नीतियों को अपनाने का प्रयत्न करता है। अपने बच्चों के भविष्य की चिन्ता करने वाले अभिभावक और अपने छात्रों के कल्याण के

उत्तरदायित्व के प्रति सचेत स्कूल एक-दूसरे की सहायता इस समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कर सकते हैं। स्कूल और समुदाय द्वारा जो कुछ पारस्परिक सहयोग से प्राप्त किया जाता है, वह समस्त भाग लेने वालों के लिए लाभदायक होता है।

नेतृत्व की आवश्यकता परियोजना का चाहे कुछ भी महत्त्व हो अथवा उसकी पूर्ति के लिए कितनी ही वास्तविक रुचि प्रदर्शित की गई हो उसमें भाग लेने वाले सशक्त व्यक्तियों का अच्छा इरादा होना ही पर्याप्त नहीं है। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, सावधानी से नियोजित और नेताओं द्वारा बुद्धिमत्तापूर्वक क्रियान्वित की गई गतिविधियों में उत्साह के साथ भाग लेना। इन स्त्रियों और पुरुषों को उस परियोजना के मूल्य में विश्वास होना चाहिए, वे दूरदर्शी हों और व्यक्तिगत तथा अनुभव की दृष्टि से इतने योग्य हों कि वे व्यापक समूह को उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित कर सकें।

प्रयत्न के किसी भी क्षेत्र में रचनात्मक और कुशल नेतृत्व की इतनी आवश्यकता नहीं होती जितनी कि मानव-सम्बन्धों में होती है। कुछ अपवादों को छोड़ कर, लोग दूसरों के कल्याण में रुचि रखते हैं। विशेष रूप से वयस्क व्यक्ति बच्चों के (१) रचनात्मक रवैयों और व्यवहारों के विकास में, (२) व्यक्तिगत रूप में संतोषजनक और सामाजिक रूप से स्वीकार्य जीवन-कार्यों में भाग लेने के अवसरों में, और (३) स्कूल, घर, कार्य तथा सामाजिक सम्बन्धों में तालमेल में रुचि रखते हैं।

सैद्धान्तिक रूप से अपने बच्चों के कार्यों को निर्देशित करने का उत्तरदायित्व अभिभावकों पर होता है। किन्तु वे मुख्य रूप से अपने ही बच्चों में रुचि रखते हैं; अनेक बार अपने नेतृत्व की समस्याओं को सुलझाने के लिए उन्हें स्वयं निर्देशन की आवश्यकता होती है। व्यापारी और उद्योगपति उस प्रकार के नवयुवकों में रुचि रखते हैं जो आगे चल कर उनके यहाँ काम करेंगे। व्यावसायिक रूप से लड़कों और लड़कियों को तैयार करने में अधिकाधिक मालिक स्कूल सहित अन्य सामुदायिक अभिकरणों को सहयोग दे रहे हैं। कुछ बड़े प्रतिष्ठानों और कारखानों ने कर्मचारियों के तालमेल में सुधार करने के लिए कर्मचारी सेवाओं के कार्यक्रम चालू किये हैं। किन्तु व्यवसाय या औद्योगिक संगठन के मुखिया के ऊपर बहुत से उत्तरदायित्व होते हैं, वह महत्त्वपूर्ण सामुदायिक कार्य में अन्य समूहों के साथ सहयोग करने को तो बहुत अधिक उत्सुक होता है, किन्तु बहुत थोड़े मामलों को छोड़कर वह ऐसी परियोजनाओं का सूत्रपात करने से हिचकता है।

जो मूल रूप से सेवा समूहों का नेतृत्व करते हैं उन स्त्री-पुरुषों के लिए यह तर्क-संगत प्रतीत होगा कि वे मानव-कल्याण के क्षेत्रों में नेतृत्व ग्रहण करें। हमारा संकेत विशेषतः धार्मिक संगठनों के मुखियाओं, सामाजिक अभिकरणों के निर्देशकों, न्यायालयों और स्कूलों के निर्देशन कर्मचारियों की ओर है। पादरी पर सेवा के अनेक दायित्व हैं। बहुत से सामाजिक अभिकरणों में कर्मचारी आवश्यकता से कम होते हैं। चूंकि न्यायालय सामूहिक रूप से समाज के कल्याण से सम्बन्धित हैं, व्यक्तियों के साथ उनकी पद्धति स्वभावतः दंडात्मक होगी। अतएव गलत तालमेल और अपराध

से नवयुवकों को रोकने के लिए उचित कार्यक्रम की स्थापना में समाज के सहयोग के मूल्य से जनता को परिचित कराने के लिए स्कूल ही समुचित अभिकरण है।

यद्यपि स्कूलों के निर्देशन विभागों में कर्मचारियों की संख्या बहुत कम होती है, तो भी परामर्शदाता और अध्यापक-सलाहकार व्यक्तिशः छात्रों की व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं तथा समस्याओं की खोज भली-भाँति कर सकते हैं। फिर भी निर्माणात्मक वर्षों में तालमेल से सम्बन्धित अध्ययन के परिणाम यह बताते हैं कि नवयुवकों की बहुत-सी कठिनाइयाँ घर से या व्यापक सामुदायिक प्रभावों से उत्पन्न होती हैं। जब तक कि प्रत्येक प्रौढ़ व्यक्ति नवयुवक के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति का उत्तरदायित्व ग्रहण नहीं करता तब तक स्कूल-निर्देशन के निरोधात्मक या उपचारात्मक होने की अपेक्षा केवल शमनात्मक होकर रह जाने की संभावना है।

स्कूल के कर्मचारी और नेतृत्व का प्रशिक्षण

बच्चों के परिपक्व मस्तिष्क और स्वस्थ शरीर का विकास ही सच्चे अर्थों में स्कूल का कार्य कहा जा सकता है। इस दायित्व को पूरा करने के लिए स्कूल के परामर्शदाताओं और अध्यापक परामर्शदाताओं में वे व्यक्तिगत विशेषताएँ होनी चाहिएँ जो घर और समाज के साथ सहकारितापूर्ण सम्बन्धों की स्थापना के लिए आवश्यक हैं।

स्कूल और समुदाय के सहयोग के लिए कर्मचारियों का प्रशिक्षण यदि ऐसे निर्देशन के कार्यक्रम का विकास करना है जिसमें घर और समुदाय के साथ-साथ स्कूल के कर्मचारी भी सम्मिलित हों तो स्कूल के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना होगा ताकि वे समाज में रुचि लेने लगें। यह प्रथा चल पड़ी है कि अध्यापकों की शिक्षा के कार्यक्रमों में ऐसे अवसर सम्मिलित किये जायें जिनसे विद्यार्थी सामुदायिक अभिकरणों के कार्यों, अभिभावकों और अध्यापकों के सम्मेलनों तथा अभ्यास के लिए किये जाने वाले निरीक्षित अध्यापन में भाग ले सकें।

भूतकाल में, बहुत सारे अध्यापक ऐसे व्यक्तियों में से चुने जाते थे जिन्होंने अपनी शिक्षा पाठ्य-पुस्तकें पढ़ कर प्राप्त की थी और जिन्होंने कक्षा की गतिविधियों के आधार पर अच्छी श्रेणी प्राप्त की थी। वे बच्चों अथवा अन्य विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तकों में दी गई सामग्री पढ़ाने को तैयार रहते थे, किन्तु वे उनके चतुर्दिक् के श्रेष्ठ वातावरण की उपेक्षा करते थे, आज हम प्रत्येक अध्यापक के अनुभव को यथासम्भव अधिक से अधिक दिशाओं में विस्तृत करके उसके प्रशिक्षण की पृष्ठभूमि को उन्नत बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। क्षमतासम्पन्न अध्यापक अपने छात्रों के भौतिक और सांस्कृतिक वातावरण से परिचित होता है; अभिभावकों के रवैयों के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त करता है; वह यह जानता है कि सामूहिक स्थितियों में अध्ययन के निर्देशन का क्या अर्थ है।

कुछ मामलों में, जो छात्र अध्यापक बनने की तैयारी कर रहे हैं, उनसे आशा की जाती है कि वे प्रति सप्ताह एक निश्चित अवधि तक सामुदायिक सेवा करें। जब शिक्षा की भूमिका, शैक्षिक मनोविज्ञान अथवा मानवीय और अध्ययन जैसी पाठ्य-विधियों में वह भर्ती होता है तो प्रत्येक विद्यार्थी को किसी समुचित समाज कल्याण सेवा या मनोरंजन-अभिकरण में भेज दिया जाता है। उस अभिकरण में रहते हुए छात्र प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्त्ता की कार्यविधियों का निरीक्षण करता है, छोटी सामूहिक परियोजनाओं के नेतृत्व में सहायता देता है, अभिकरण के कार्यक्रम में भाग लेने वाले सदस्यों के व्यवहार का निरीक्षण करता है और अपनी प्राप्त सूचनाओं को रिपोर्ट के रूप में तैयार करता है। वह विद्यार्थी बच्चों को निकटस्थ यात्राओं पर ले जाता है, अभिभावकों से विचार-विमर्श करता है और अन्य प्रकार से सामुदायिक जीवन को अनुभव करता है। परामर्शदाता प्रशिक्षार्थी भी ऐसे ही कार्यों में लगते हैं, किन्तु अधिक विस्तृत और अधिक गहन अनुभवों में, जिनका उद्देश्य नेतृत्व के गुणों और व्यक्तिगत परामर्श-विधियों का विकास करना होता है।

स्कूल और घर के सम्बन्ध

इस सारी पुस्तक में शिशु के विकास और व्यक्तित्व के निर्माण के संदर्भ में घर का क्या कार्य है, इस बात पर हमने बल दिया है। हम जानते हैं कि किसी भी आयु के विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले तालमेलों पर परिवार भारी प्रभाव डालता है। माता-पिता, भाई-बहिन तथा अन्य सम्बन्धी अपने चतुर्दिक् रहने वालों के जीवन पर निश्चित तरीकों से प्रभाव डालते हैं। व्यक्ति उससे लाभान्वित हो सकता है, अथवा उस पर इसका उलटा प्रभाव पड़ सकता है। जिस घर में कलह या शिकायतें न होती हों, वहाँ विकास करने के लिए अच्छा वातावरण मिलता है। यदि तालमेल बिगाड़ने वाली बातें बच्चे पर निरन्तर प्रभाव डालती रहें, तो उसे समीचीन रूप से विकास करना कठिन हो जाता है।

घर के रवैयों का महत्त्व किसी घर की विशिष्ट प्रथाएँ, रवैये और पारस्परिक रवैये जातीय, आचार सम्बन्धी, सामाजिक या धार्मिक प्रभावों से उद्भूत होते हैं। जब तक कि स्कूल के लोग—विशेषतः परामर्शदाता—जीवन के पारिवारिक ढाँचे के संदर्भ में छात्र के असाधारण व्यवहार की व्याख्या नहीं कर सकते, तब तक वे किसी बच्चे या नवयुवक को जीवन की दूसरी पद्धतियों के अपनाने में सहायक नहीं हो सकते। घर के भीतर और घर के बाहर के स्तरों में होने वाले संघर्ष से नवयुवक बहुधा भ्रमित या क्षुब्ध हो जाते हैं।

इन विभिन्न अंतरों को समझाने के लिए कोई भी अनुभवी परामर्शदाता या अध्यापक सलाहकार अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है। उदाहरण के लिए, हाई स्कूल का एक डीन एक दिन तीसरे पहर स्कूल से निकलते समय एक विदुषी और अध्ययनशील पन्द्रह वर्षीय छात्रा को सीढ़ियों पर खड़ी सिगरेट का धुआँ उड़ाते देख कर चकित रह गया। छात्रा भी यह सुन कर चकित रह गई कि सार्वजनिक स्थान

पर लड़की का सिगरेट पीना किसी को अच्छा नहीं लगेगा। उसने कहा : "क्यों हमारे घर में तो सब पीते हैं। मैं और मेरी माँ बहुधा सड़क पर सिगरेट पीते हैं। आप जानते हैं, मेरे माता-पिता के विचार में यह स्कूल बहुत सख्त है। कभी-कभी मैं यह नहीं समझ पाती कि किसका कहना ठीक है।" डीन का क्या उत्तर हो सकता था।

दूसरा उदाहरण ऐसे दस-वर्षीय लड़के का है जिसका व्यवहार स्कूल के दूसरे लड़कों के प्रति अच्छा नहीं था। प्रत्येक दिन वह प्रातः काल सज-धज कर साफ-सुथरा स्कूल आता था, स्कूल से जाते समय शाम को वह मैला-कुचैला और गंदा हो जाता था। कभी-कभी उसके मुँह पर नोच-खसोट के भी निशान होते थे। वह वयस्कों और लड़कियों के साथ अपने व्यवहार में शिष्ट और सहयोग देने को तत्पर रहता था—किन्तु वह लड़कों से—विशेषतः उनसे जो उससे बड़े और अधिक बलिष्ठ होते थे, झगड़ा करने को निरन्तर प्रस्तुत रहता था। जब उससे इस व्यवहार का कारण पूछा गया, तो उसने उत्तर दिया कि "वीर पुरुष को बलवान होना चाहिये।" उस बच्चे के इस कथन का स्पष्टीकरण उसकी माँ की इस बात से हुआ जो उसने अध्यापक-परामर्शदाता को बताई कि मैं तो चाहती हूँ कि मेरा पुत्र सभ्य बने। किन्तु इसका पिता—जो भूतपूर्व मुक्केबाज़ था—प्रति दिन अपराह्न को इसकी शक्ल देखता है। जब तक किसी लड़ाई के चिह्न उसे दिखाई न दें वह इसे "निकम्मा", "दूध पीता बच्चा" या "मेरा बेटा नहीं है" कहता है। वह लड़का एक भावात्मक संघर्ष अनुभव कर रहा था। वह नहीं चाहता था कि उसका पिता उसे मरियल समझे। फिर भी वह अपनी सभ्य माँ से प्रेम करता था और वह उन लड़कों की मित्रता का इच्छुक था जिनसे कि वह लड़ता था।

एक शिक्षक ने टिप्पणी की थी कि बच्चा अपने साथ स्कूल में अपना परिवार लेकर आता है। इस वक्तव्य की सचाई बच्चों द्वारा प्रदर्शित व्यवहारों से ही स्पष्ट नहीं होती अपितु अभिभावकों द्वारा भी उस समय होती है जबकि वे स्कूल आते हैं। एक सनकी धर्मप्राण माता इस बात पर आग्रह करती थी कि वह हाई स्कूल में पढ़ने वाली अपनी लड़कियों को कभी सिनेमा नहीं जाने देगी। जब उसे सूचना दी गई कि वे सिनेमा जाती हैं तो उसने कहा कि यह इस बात का प्रमाण है कि स्कूल और उसकी लड़कियों—दोनों पर शैतान का प्रभाव है। तीव्र धार्मिक भावनाएँ भी बच्चों के रवैयों पर प्रभाव डालती हैं। प्रारम्भिक स्कूल की स्नातिका ऐसे हाई स्कूल में भर्ती होने को तैयार नहीं हुई जिसमें सह-शिक्षा थी, क्योंकि उसके पादरी ने उसके गिर्जाघर के लड़कों-लड़कियों को चेतावनी दी थी कि वे विरोधी लिंग के सदस्य से बात न करें और जब तक वयस्क न हो जायें, उनके विषय में सोचें भी नहीं।

यदि उनके ऊपर छोड़ दिया जाय तो संभव है कि नवयुवक स्कूल के सहपाठियों में से अपने मित्रों का चुनाव करते समय राष्ट्रीय अथवा जातीय भेदों की उपेक्षा कर जायँ। जब कोई कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं तो उनका कारण पूर्वाग्रही वयस्क होते हैं। कल्पित सामाजिक वर्गभेद नवयुवकों के समूहों में ऐसी दीवारें बन

जाती हैं जिनका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। बहुत से लड़के और लड़कियाँ बेईमानी से कपड़े या धन प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं अथवा वे उत्तेजक व्यक्तिगत अनुभवों या प्रसिद्ध सम्बन्धियों की काल्पनिक कहानियाँ सुनाते हैं ताकि वे अपने उन सहपाठियों पर प्रभाव डाल सकें जिन्हें वे अपने से "उच्चतर" सामाजिक या आर्थिक स्तर का समझते हैं। ऐसे ही कारणों से कुछ नवयुवक अपने सहपाठियों को अपने घरों पर आमंत्रित करने में लजाते हैं अथवा वे नहीं चाहते कि उनके माता-पिता उनके स्कूल में जायँ।

पारिवारिक पृष्ठभूमि के मतभेद विशेष रूप से कोई महत्त्व नहीं रखते। स्कूल के परामर्शदाताओं को तो इस बात की गंभीर चिन्ता है कि इन मतभेदों का प्रभाव विद्यार्थियों के और स्कूल तथा घर के पारस्परिक सम्बन्धों पर पड़ता है। जिन अभिभावकों का अपना लालन-पालन कठोर बंधनों में हुआ है—जो कि कुछ यूरोपीय परिवारों की विशेषता है—वे चाहते हैं कि उनकी संतान का भी प्राचीन संसार की परम्परा के अनुसार पालन-पोषण हो। अमेरिका के स्कूलों में जिस मृदु शिक्षा शास्त्र में उनके बच्चे लीन हो जाते हैं, उसकी वे तीव्र निन्दा करते हैं। कुछ अभिभावक जो अपने आपको सर्वसाधारण से (अध्यापकों से भी) सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से उच्च स्थिति का समझते हैं वे उस समय बौखला जाते हैं जबकि अध्यापक या परामर्शदाता उनके बच्चे के व्यवहार या रवैये की जरा भी आलोचना करने का साहस करते हैं; यदि बच्चा अध्यापन में प्रत्याशित सफलता प्राप्त नहीं करता है तो इसका उत्तरदायित्व बच्चे पर नहीं, स्कूल पर समझा जाता है।

कुछ घरों में माता-पिता के अनुशासन के अभाव का कारण आधुनिक जीवन की द्रुतगति, सामाजिक और आर्थिक दबाव तथा शिथिलतापूर्वक गठित पारिवारिक इकाइयाँ हैं। परेशान अभिभावक इतनी सारी बातों में उलझे होते हैं कि उनके बच्चे बिना रोक-टोक जो चाहें सो करते रहते हैं। इस प्रकार यह स्कूल का उत्तर-दायित्व हो जाता है कि स्कूल के अपेक्षाकृत छोटे से दिन, सप्ताह और वर्ष में इन नवयुवकों को आत्मसंयम का विकास करने, समुचित दायित्वों को संभालने और अन्य व्यक्तियों के अधिकारों का सम्मान करने के लिए प्रेरित करें।

अभिभावक-स्कूल सम्बन्धों के मूल तत्त्व जब बच्चों को लाभान्वित करने की दृष्टि से अभिभावक और स्कूल प्रबन्धक आदि परस्पर सहयोग करते हैं तो दो उद्देश्यों की पूर्ति होती है: बच्चे की प्रकृति के विषय में विकसित ज्ञान, और इस बात की ओर अधिक अभिस्वीकृति कि बच्चे के लिए अच्छी शिक्षा क्या कर सकती है। नर्सरी स्कूल, किंडरगार्टन तथा अत्यंत प्रारंभिक कक्षा के अध्यापकों के कर्त्तव्यों का विवेचन करते समय उन्हें बहुधा "माता का स्थानापन्न" कहा जाता है। यह सत्य है कि अपने छात्रों पर अध्यापकों और परामर्शदाताओं का और उनके पारिवारिक जीवन का जो प्रभाव पड़ता है, वह हमारी कल्पना से भी परे हो। किन्तु न तो अध्यापक और न अभिभावक ही एक-दूसरे का स्थान ग्रहण कर सकते हैं। प्रत्येक के

अपने-अपने कर्त्तव्य हैं; यदि वे दोनों मिल कर कार्य करें तो सम्भवतः वे अपने विशिष्ट दायित्वों को अधिक पर्याप्त रूप से पूरा कर सकते हैं।

मैरीलैंड विश्वविद्यालय के छात्रों के सहकारी डीन जार्ज विगैंड ने अनुसरण-शीलता और शैक्षिक सफलता का अध्ययन किया था। उनके अनुसंधान के फलस्वरूप, शैक्षिक सफलता में अभिभावकों का जो भाग हो सकता है, उसके कुछ निष्कर्ष इस प्रकार हैं :

१. जबकि सफल और असफल विद्यार्थियों में भेद करने के लिये लक्ष्य प्राप्ति की आकांक्षा, अनुसरणशीलता और निर्णय करने की क्षमता आवश्यक है उन दशाओं का उल्लेख भी महत्त्वपूर्ण है जो इन तत्त्वों को शक्ति और उन्नति प्रदान करती हैं।

२. अभिभावकों द्वारा रुचि, प्रोत्साहन और जनतन्त्री निरीक्षण की पृष्ठभूमि उनके बच्चों में कार्यों के व्यापक रूपों को सबल बनाती है जो केवल शैक्षिक स्थिति में ही नहीं अपितु अन्तर्व्यक्तिगत और व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिये भी महत्त्वपूर्ण है।

३. सफल विद्यार्थी वह है जिसे इस बात की शिक्षा दी गई है कि वह समस्त स्थितियों के अनुकूल कार्य कर सके और इस व्यवहार को अभिभावकों के अनुकूल रवैयों से समर्थन और बल प्राप्त हो सके।*

मेरिया पियर्स के अनुसार अभिभावक-अध्यापक या अभिभावक-परामर्शदाता के मध्य संघर्ष निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक रवैयों के होने से हो सकता है। अभिभावक (१) अध्यापक से भयभीत हों, (२) यह समझें कि अध्यापक उनके प्रयत्नों को स्वीकार नहीं करता या नहीं समझता, या (३) अध्यापक उनके बच्चे की देखभाल करने में असमर्थ हो। अध्यापिका (१) अपने निजी शैशवकालीन अनु-भवों के आधार पर अभिभावकों के अनुकूल न हो, (२) यह अनुभव करती हो कि बच्चे के सभी कार्यों के लिये माता-पिता दोषी हैं, और (३) अभिभावकों के प्रति अपने अन्दर उच्च भावना रखती हो।

बच्चा अपने विकासशील वर्षों में जबकि वह परिवर्तनशील पूर्वाग्रहों और आस्थाओं पर विचार व्यक्त करता है तो वह स्वयं स्थिति को और उलझा सकता है। स्कूल में प्रवेश करने से पूर्व वह साधारणतया इन उद्गारों के द्वारा कि "मेरे माता-पिता सब कुछ जानते हैं।" अपने माता-पिता में अपना विश्वास प्रगट करता है। प्रारम्भिक स्कूल के दिनों में वह यह आग्रह करके घरेलू आधिपत्य से मुक्ति पाने का प्रयत्न कर सकता है कि वह अपने मन के मुताबिक कार्य कर रहा है "क्योंकि अध्या-पक ऐसे कहते हैं।" अधिक आयु वाले नवयुवकों का रवैया अध्यापकों के प्रति भद्र स्वभावयुक्त सहनशीलता का हो सकता है। साथ ही घर के सम्बन्धों में कुछ स्वत-

* जार्ज विगैंड, "Adaptiveness and the Role of Parents in Academic Success" Personnel and Guidance Journal, ३५, १९५७, पृष्ठ ५२२, अनुमति से उद्धृत।

न्त्रता प्राप्त करके वह अपने अभिभावकों के प्रति विकासशील दिनों में जो दृष्टिकोण रखता था उसमें परिवर्तन करके अब अधिक वस्तुवादी हो जाता है। "फिर भी माँ और पिता जी इतने बुरे नहीं हैं" यह स्वीकार करते हुए वह उनकी क्षमताओं और दुर्बलताओं दोनों से परिचित हो जाता है।*

अभिभावक इस बात पर ध्यान दिये बिना कि वे स्कूल के साथ मिलकर काम करने के लिए इच्छुक हैं या इसकी क्षमता रखते हैं, उस स्कूल के विषय में जानना चाहते हैं जहाँ कि उनका बच्चा पढ़ रहा है—वह स्कूल उसके लिए और उसके साथ क्या कर रहा है, बच्चा उसमें कैसी प्रगति कर रहा है। वे पाठ्यक्रम के विकास, अध्ययन की पाठ्य-विधि और स्कूल तथा कक्षा के प्रबन्ध में रुचि लेते हैं। कुछ अभिभावक अध्यापन की नवीन प्रणालियों में भी रुचि लेते हैं, विशेषतः जबकि वे अपने लड़के या लड़की को घर के लिए दिये जाने वाले कार्य में सहायता देने का प्रयत्न करते हैं और जब उन्हें यह बताया जाता है कि "मास्टर जी तो इस प्रकार नहीं करते।" जो अभिभावक अपने बच्चे के व्यवहार या रवैये के कारण चिन्तित है, वह अपने बच्चे के सुधार के लिए अध्यापक या परामर्शदाता की सहायता ले सकता है।

घर और स्कूल के सहयोग की विधियाँ बहुत से माता-पिता स्कूलों के साथ घुलमिल कर कार्य कर रहे हैं। अभिभावक और अभिभावक-अध्यापक समूह विध्वंसात्मक आलोचना करने की अपेक्षा स्कूलों को रचनात्मक सहयोग दे रहे हैं। अभिभावकों और अध्यापकों की राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य संख्या १ करोड़ १० लाख से भी अधिक है। इस संस्था का मुखपत्र 'नेशनल पेरेंट-टीचर' प्रतिमास सितम्बर से जून तक चलता है। अनेक वर्ष पहले यूनाइटेड पेरेंट एसोसियेशन द्वारा संचालित नेतृत्व प्रशिक्षण पत्रों का उद्घाटन न्यूयार्क नगर में राजधानी के अभिभावकों के समूहों के अधिकारियों के लिये किया गया था। अभिभावकों के समूह भी संघीय, राजकीय और स्थानीय कानूनों को जारी और पारित करने के लिए प्रयत्न करते हैं जिनका उद्देश्य होता है शैक्षिक प्रगति को आगे बढ़ाना। किन्तु शिक्षा के सम्बन्ध में अभिभावकों में जो रुचि बढ़ती जा रही है उसका श्रेय अधिकांश में स्कूल के लोगों को है। अध्याय ६ में हमने बड़े और छोटे समूहों में अभिभावकों के निर्देशन पर विचार किया है। अन्य विधियों पर यहाँ संक्षेप में विचार किया जायेगा।

व्यापक सुझाव अभिभावकों के सहयोग के लिए भिन्न-भिन्न स्कूलों में प्रयोग की जाने वाली विधियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। किन्तु इस बात पर सहमति है कि स्कूल की परियोजनाओ में सक्रिय भाग लेने से अभिभावकों की रुचि और सहकारिता में वृद्धि होती है। आगस्टा, मैन, सार्वजनिक स्कूलों द्वारा प्रारम्भ किये गये निर्देशन-संस्थान के स्कूल के जीवन में अभिभावकों की रुचि उत्पन्न करने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत और क्रियान्वित थीं :

* मेरिया पियर्स के How to work With Parents, से उद्धृत। पृष्ठ ४-६, साइंस रिसर्च एसोसियेट्स, शिकागो, १९५५

१. अभिभावकों की रात्रि का आयोजन करते हैं और उनकी शिक्षा के लिए कार्यक्रम बनाते हैं। विद्यार्थी ऐसा प्रदर्शन दे सकते हैं जो अभिभावकों के लिये रुचिकर हो, जैसे बनावटी साँस की व्याख्या करना :
२. स्कूल में बच्चों द्वारा दी जाने वाली अनौपचारिक चाय या कॉफी पर अभिभावकों को आमन्त्रित करते हैं। छोटी श्रेणियों के स्तर पर इस कार्य का निरीक्षण संभवतः अध्यापक करते हैं।
३. अभिभावकों की पृष्ठभूमि पर पी० टी० ए० सूचीपत्र की सूचना के द्वारा जिसमें शिक्षा, नौकरी, रुचियाँ और दिल बहलाव के कार्य हैं।
४. पी० टी० ए० रात्रियों पर अभिभावकों का स्वागत करने में अध्यापकों की सहायतार्थ स्कूल की महिलाओं की समितियाँ बनाई जाती हैं। वे समस्त अभिभावकों का हार्दिक स्वागत करती हैं।
५. पी० टी० ए० की सभाओं में जलपान कराया जाता है।
६. प्रति मास एक दिन तीसरे पहर का समय अभिभावकों के लिए पृथक् कर दिया जाता है जिसमें वे अध्यापक से विचार-विमर्श करते हैं।
७. किसी भी समय अभिभावकों को आने के लिए प्रोत्साहन देते हैं।

मॉडेस्टो, कैलीफोर्निया सिटी स्कूल समय-समय पर "योर स्कूल्स" शीर्षक से एक संवादमय लेख प्रकाशित करते हैं जो निर्देशक डा० रौगर डब्ल्यू० चैपमैन द्वारा तैयार किया जाता है, जिसका उद्देश्य अभिभावकों को स्कूल के पाठ्य-विषयों से परिचित कराना है। घर और स्कूल के सहयोग के सम्बन्ध में उसके एक अंक में निम्नलिखित वक्तव्य प्रकाशित हुआ था :

> चाहे शैक्षिक मामलों में हो या जीवन-कार्य के नियोजन के लिए हो, समस्त परामर्श-कार्य को घर और स्कूल के निकट सम्पर्क से लाभ हो सकता है। समस्त बच्चों के माता-पिताओं को उनके बच्चों के अध्यापक से परिचित होने और बच्चों की कक्षा में जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किसी "समस्या" की स्थिति में कार्य करने में या यदि बच्चा तालमेल में अपर्याप्त लक्षण प्रदर्शित करता है तो घर और स्कूल के निकट सम्पर्क से ही अच्छे परिणाम निकल सकते हैं। गणित में असफल होने वाले प्रारम्भिक स्कूल के बच्चे के विषय में, हाई स्कूल की कक्षाओं में असफल होने वाली लड़की और जूनियर कालेज के विवाहित पुरुष के विषय में भी जो दिनभर के स्कूल के कार्यक्रम के साथ पूरे समय की नौकरी करने का असफल प्रयत्न करता है, यह बात समान रूप से सत्य है।

स्कूलों में यह निश्चित प्रथा है कि वे शैक्षिक नीतियों और स्कूल की कार्यविधियों से अभिभावकों को सूचित रखने के लिये छपी हुई सामग्री का उपयोग करते हैं। एल्कहोर्ट, इण्डियाना के स्कूल किंडरगार्टन में भर्ती होने वाले बच्चों के अभिभावकों में एक पुस्तिका वितरित करते हैं जिसका शीर्षक है "किंडरगार्टन के लिए तैयारी" (Getting Ready for Kindergarten); इसमें अभिभावकों के लिए स्वागत का संदेश, पंजीकरण के लिए निर्देश, किंडरगार्टन के शैक्षिक उद्देश्य और माता-पिता के

उत्तरदायित्व पर प्रकाश डाला जाता है। इस पुस्तिका में माता-पिताओं के लिए पुस्तकों, बच्चों के लिए कहानियों और छोटे बच्चों के लिए चित्र और कहानियों की पुस्तकों की सूची होती है। किंडरगार्टन के बच्चों के अभिभावकों के लिए दूसरी आकर्षक सचित्र पुस्तिका है, "महत्त्वपूर्ण साहस के कार्य का श्रीगणेश", जो एम्पोरिया, कंसास के स्कूलों द्वारा तैयार की गई है।

वारेन, ओहियो के स्कूलों में जाने वाले बच्चों के अभिभावकों को एक चार पृष्ठ की पुस्तिका दी जाती है, जिसका नाम है "अपने स्कूलों को जानिये", इस पुस्तिका में चार्ट के रूप में किंडरगार्टन से बारहवीं शिक्षा तक के स्कूल के पाठ्यक्रम के विषयों, विविध शैक्षिक स्तरों के लिए प्रवेशिका की अपेक्षाओं और निर्देशन की संक्षिप्त व्याख्या का समावेश होता है। अभिभावकों के लिये दूसरी पुस्तिका है, "स्कूल दिवस" जो साको, मैन, सार्वजनिक प्रारम्भिक स्कूलों का बुद्धिमानी से संगठित प्रकाशन है। अभिभावकों के प्रयोग के लिए एक और विस्तृत पुस्तिका है, "ब्रुकलिन के स्कूल में" (मैस०)। "बुद्धिमान अभिभावकों" के लिए ग्यारह "करो" की सूची से प्रारम्भ करके अभिभावकों की सूचना के लिए इस पुस्तिका में सरलता से वर्णित और चित्रित ५१ बातें सम्मिलित की गई हैं। हम ऐसे और भी अनेक प्रकाशनों की चर्चा कर सकते हैं, किन्तु माता-पिता के निर्देशन के लिये जो कुछ किया जा रहा है और जो कुछ किया जा सकता है, उससे पाठक को परिचित करने के लिए हमने सम्भवतः काफी पुस्तकें प्राप्त कर ली हैं।

अभिभावकों से साक्षात्कार स्कूल के परामर्शदाता अभिभावकों के सहयोग को प्रोत्साहन देने के साधन के रूप में अभिभावकों से साक्षात्कार करने पर पर्याप्त बल दे रहे हैं। आमने-सामने की इस स्थिति में एक प्रशिक्षित और निपुण साक्षात्कारकर्त्ता अभिभावक और बच्चे के विरोधों को मिटाने और अधिक सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए बहुत कुछ कर सकता है। ऐसा करना सदैव सरल नहीं होता। विचारों की दृष्टि से अभिभावक, बच्चे और साक्षात्कारकर्त्ता में मीलों का अन्तर हो सकता है। न्यूयार्क नगर में छात्रों की उपस्थिति की समस्या को सुलझाने के लिए अटैंडेंस ब्यूरो द्वारा आयोजित अभिभावक-शिशु सम्मेलन इस दिशा में एक कदम है। इस साक्षात्कार में जो टिप्पणियाँ सुनी जाती हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

बच्चा :

मैं स्कूल पसन्द नहीं करता।
अध्यापक सदैव मुझ पर सवार रहता है।
मेरे पास पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं।

अभिभावक :

वे मेरे बच्चे को नहीं समझते।
आप लोग मेरे पीछे क्यों पड़ते हैं? क्या आपको नहीं मालूम मेरा बच्चा बीमार है?

वह स्कूल में भर्ती हुआ, उससे पहले हमें उससे कोई परेशानी नहीं थी।
मैं आपको बताता हूँ कि क्या परेशानी है : वे इस तरह से नहीं पढ़ाते जैसा कि हम लोगों को पढ़ाया जाता था।
आप उसका जो चाहें सो कीजिए, किन्तु मुझे परेशान न कीजिए।

स्कूल :

अभिभावकों का कोई सहयोग नहीं।
बच्चा रुचि लेता प्रतीत नहीं होता।
बच्चा उपेक्षित प्रतीत होता है।
सुस्त, काहिल, कुछ नहीं पढ़ेगा।
घर को डाक से भेजे गये कार्ड और पत्रों का कोई उत्तर नहीं।

छात्रों की प्रगति की रिपोर्ट अभिभावक जानना चाहते हैं कि स्कूल के कार्य में उनका बच्चा कैसी सफलता प्राप्त कर रहा है। कभी-कभी परामर्शदाता यह विश्वास करने लगते हैं कि अभिभावक यह सुनना चाहते हैं कि उनका बच्चा सफलता के प्रत्येक क्षेत्र में कक्षा में सबसे आगे है। अभिभावकों की आशाओं के अनुकूल बच्चे के न हो सकने का कारण चाहे कुछ भी हो, किन्तु माता-पिता को यह जानकर निराशा होती है कि उनके पड़ोसी के बच्चे ने उनके बच्चे से अधिक अंक प्राप्त किये हैं। इस प्रकार की स्थिति उस समय विशेष रूप से होती है जबकि रिपोर्ट कार्ड पर बिना किसी व्याख्या के अक्षर या प्रतिशत का मूल्यांकन होता है।

कभी भी सावधान अध्यापक के लिये मूल्यांकित सफलता के लिए सही-सही अंक देना और उसके विषय में सूचित करना कठिन कार्य है। उदाहरण के लिए गणित में दिये गये 'सी' के लिए कोई अभिभावक अध्यापक से वार्तालाप करता है और कम अंक के विषय में शिष्टतापूर्वक अध्यापक के स्पष्टीकरण को सुनता है, फिर यह सम्भव है कि अध्यापक जो कुछ कहता है, उससे वह प्रभावित न हो। उसके लिए यह एक निश्चित तथ्य है कि उसके बच्चे को "ए" मिलना चाहिए था, किन्तु "सी" दिया गया है।

अभिभावकों को दी जाने वाली किसी रिपोर्ट का उस समय तक कोई मूल्य नहीं होता, जब तक कि वे उसमें निहित सूचना को नहीं समझते। इसलिए बहुत-सी प्रणालियाँ रिपोर्ट कार्डों का परीक्षण कर रही हैं जो सामान्यतः प्रयुक्त होने वाली औपचारिक संख्या या अक्षर प्रणाली से अधिक मूल्यवान हैं। एक सरलतम नवीन प्रणाली का उदाहरण पैसाडेना, कैलीफोर्निया, सिटी स्कूलों के अभिभावकों को दी जाने वाली जूनियर हाई स्कूल की रिपोर्ट से मिलता है (देखिए पृष्ठ २२६)। अक्षर का चिह्न इसमें रखा गया है, किन्तु उसकी व्याख्या कर दी गई है। प्रत्येक पाँच सप्ताह की अवधि के अन्त में ये रिपोर्टें जारी की जाती हैं क्योंकि सत्र के प्रथम पाँच सप्ताह वर्ष की महत्त्वपूर्ण अवधि होती है, एक साधारण रूप का विकास किया गया है जो कार्य के प्रारम्भिक चरण की ओर छात्र के रवैये से सम्बन्धित "चेतावनी" (अच्छी या निकृष्ट) का कार्य करता है। एक लिखित विज्ञप्ति उस विद्यार्थी के अभिभावक

चित्र १६. रिपोर्ट कार्ड

PASADENA CITY SCHOOLS
PASADENA, CALIFORNIA

JUNIOR HIGH SCHOOL REPORT TO PARENTS

The Pasadena Junior High Schools have as their general purpose the development in youth of the characteristics which we believe they must possess in order to be effective citizens in a democracy. Some of the characteristics which are more easily observed are listed under the headings SUBJECT GRADE and CITIZENSHIP GRADE. A check (✓) following one of the subheads indicates need for improvement in that area; a plus (+) means outstanding. Explanation of grades: A—Outstanding, B—Highly Satisfactory, C—Average, D—Barely Passing, E—Incomplete, F—Failure to Meet Minimum Requirements. THE GRADE AT EACH QUARTER REPRESENTS THE STUDENT'S TOTAL GRADE TO THAT DATE.

Name ______ Last ______ First ______ Initial ______ School Year ______

Subject and Grade Level ______ Period ______

School	1st	2nd	3rd	Final
I. SUBJECT GRADE—Skills, Understandings, and Appreciations in:				
Reliable Information				
Clear Expression				
Application of Knowledge				
Creative Thinking				
Skills to Accomplish the Above				
II. CITIZENSHIP GRADE				
Responsibility				
Effort				
Participation				
Class Conduct				
Courtesy				

	Teacher Signature	Parent Signature
1st		
2nd		
3rd		
4th		

(OVER)

This side of this report is designed for teacher and parent comments. Comments should be signed. We encourage parents to comment on this evaluation or to make suggestions.

Date	Teacher and Parent Comments

के पास भेजी जाती है जिसका कार्य संतोपजनक नहीं होता, कुछ स्थितियों में टेलीफोन पर सूचना देने या व्यक्तिगत साक्षात्कार की आवश्यकता होती है। पैसाडेना के अध्यापकों को भी श्रेष्ठ कार्यों के लिए प्रशंसात्मक सूचनाएँ छात्रों के घरों को भेजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

कुछ स्कूल प्रणालियाँ अभिभावकों को ऐसी रिपोर्टें भेजने का परीक्षण कर रही हैं जिनमें औपचारिक चिह्न नहीं होते। इन रिपोर्टों में साधारणतः दो भाग होते हैं : (१) व्यक्तिगत स्वभाव और विशेष रवैये, तथा (२) निपुणता, ज्ञान और विवेक। व्यक्तिगत स्वभाव के क्षेत्र में स्वस्थ जीवन, दूसरों से सम्बन्ध और काम की आदतें जैसे मुख्य शीर्षक सम्मिलित होते हैं। उप-विभाजन वक्तव्यों के रूप में होते हैं, जैसे "प्रसन्न और प्रमुदित है"। समुचित स्तम्भ में इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है : साधारणतया, कभी-कभी, बहुत कम।

सफलता की दिशा में की गई प्रगति से सम्बन्धित रिपोर्ट के दूसरे भाग में संक्षिप्त व्याख्या सहित विषयों की सूची होती है। जैसे :

भाषा

बोलने में विचारों की अभिव्यक्ति भली प्रकार से करता है

(समुचित टिप्पणियों के पश्चात् अवरोधात्मक शब्दों का प्रयोग किया जाता है)

उल्लेखनीय प्रगति

योग्यता के अनुकूल अच्छी प्रगति

सुधार हो रहा है, किन्तु प्रयास करने पर अच्छी प्रगति कर सकता है

प्रगति योग्यता से बहुत कम है

विद्यार्थियों से तथाकथित मेरी विकास योजना के विविध क्षेत्रों में अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए कहा जाता है।

कुछ स्कूलों में नवीन पद्धति के कारण अभिभावकों को अध्यापक अनेक पत्र लिखता है जिनमें छात्र की शैक्षिक प्रगति, रवैये और व्यवहारों का वह मूल्यांकन करता है। इन पत्रों का मूल्य अध्यापक की पत्र-लेखन की योग्यता पर निर्भर करता है ; पत्र मनोरंजक और सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक होना चाहिए। दुर्भाग्य से, इस प्रकार के पत्र लिखने में व्यस्त अध्यापक का पर्याप्त समय व्यय होता है।

जब अभिभावक को रिपोर्ट प्राप्त होती है तो अध्यापक और अभिभावक को मिल कर बातचीत करनी चाहिए। इस प्रकार की मुलाकातें सैद्धान्तिक रूप से बहुत अच्छी होती हैं, किन्तु व्यावहारिक रूप से सदैव सफल नहीं होतीं। इसके अतिरिक्त समस्त अभिभावक वार्तालाप में न तो आ सकते हैं और न आना चाहते हैं, यह भी हो सकता है कि स्कूल के समय में और उसके पश्चात् भी अध्यापक के पास प्रत्येक अभिभावक से महत्त्वपूर्ण वार्तालाप करने लिए के पर्याप्त समय न हो। इसके अतिरिक्त, बहुत से अभिभावक—जिन्होंने अपने छात्र जीवन में औपचारिक चिह्न प्राप्त किये हों—यह जानने के लिए आग्रह कर सकते हैं कि वास्तव में इन व्याख्या-

चित्र २०. रिपोर्ट कार्ड

Attendance and Punctuality

	Oct. 31 / Mar. 15	Dec. 15 / May 15	Jan. 31 / Jun 30
ABSENT			
LATE			

First Report

In view of this pupil's ability, he (she)
1 Is doing very well ______
2 Is doing satisfactory work ______
3 Could do better ______
4 Shows little effort ______

I have read this report
Parent's Signature ______

Second Report

In view of this pupil's ability, he (she)
1. Is doing very well ______
2. Is doing satisfactory work ______
3. Could do better ______
4. Shows little effort ______

I have read this report
Parent's Signature ______

Third Report

In view of this pupil's ability, he (she)
1. Is doing very well ______
2. Is doing satisfactory work ______
3. Could do better ______
4. Shows little effort ______

I have read this report
Parent's Signature ______

Class next term ______

77-5725-(2A-6B) 600M-10-44

P S ______ Borough ______

Board of Education

City of New York

REPORT CARD

Term beginning ______

Name ______

Class ______ Room ______

Teacher ______

TO PARENTS:

The school is trying to aid the growth of your child in scholarship, in health habits and in character. To get the best results, inside and outside school, your help is needed.

The principal and the teacher will be pleased to talk matters over with you.

NAME ______

In the development of these traits, the home shares responsibility with the school.

TRAINING IN PERSONALITY Desirable Traits	Oct. 31 / Mar. 15	Dec. 15 / May 15	Jan. 31 / Jan. 30
1. Works and plays well with others			
2. Completes work			
3. Is generally careful			
4. Respects the rights of others			
5. Practices good health habits			
6. Speaks clearly			
7.			
8.			

MEANING OF RATINGS

S—Satisfactory U—Unsatisfactory
I—Improvement is shown
A—Excellent B—Good
C—Passable D—Failing

When per cent. ratings are used, ______% is the passing rating, except in Spelling, where ______% is required.

Scholarship	Oct. 31 / Mar. 15	Dec. 15 / May 15	Jan. 31 / Jan. 30
Reading			
Literature			
Composition			
Spelling			
Arithmetic			
Geography			
History and Civics			
Penmanship			
Health Education			
Art			
Music			
Nature			
Sewing or Construction			

NEEDED IMPROVEMENT

First Period	Second Period	Third Period

त्मक वक्तव्यों और अवरोधात्मक चिह्नों का क्या अभिप्राय है—"क्या बच्चे का चिह्न ए, बी, सी, या डी है ?" सूचनाप्रद प्रपत्रों का उद्देश्य विद्यार्थी की प्रगति का अधिक अनुसंधानात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करना है, किन्तु बहुत-सी बातें उनके मूल्य के विरुद्ध जाती हैं। ऐसे रूप का निर्माण करने से पूर्व जो अभिभावकों, अध्यापकों और स्कूल के परामर्शदाताओं के लिए संतोषजनक हो, शिक्षको, अभिभावकों तथा स्कूल के परामर्शदाताओं को रिपोर्ट प्रपत्रों का निरन्तर अध्ययन करना चाहिए। एक रिपोर्ट कार्ड का न्यूयार्क नगर में प्रयोग किया जाता है जो पीछे प्रस्तुत किया गया है।

स्कूल और समुदाय में सहयोग

स्कूल और समुदाय के सहयोग की उपमा ऐसी सड़क से की जा सकती है, जिसके दो ओर रास्ते हों। समुदाय पर स्कूल को आर्थिक सहायता देने का दायित्व है, स्कूल पर यह दायित्व है कि वह समुदाय के छोटे-बड़े सदस्यों की शिक्षा को निर्देशन प्रदान करे। आज यह विचारधारा है कि सहकारिता के अधिक वैयक्तिक रूप का विकास किया जाय, जिसके द्वारा स्कूल समुदाय में और समुदाय स्कूल में प्रवेश पाते हैं। समुदाय-समर्थित स्कूलों में चलने वाली निःशुल्क शिक्षा में स्कूल-समुदाय के सहयोग के मूल उद्देश्य का विस्तार हो रहा है जिसमें समस्त नागरिकों के कल्याण से सम्बन्धित स्कूल तथा समुदाय द्वारा प्रारम्भ की गई गतिविधियों को सम्मिलित किया जा रहा है।

समुदाय का व्यापक सहयोग इस क्षेत्र में विविध प्रकार की सेवाएँ और अध्ययन किये जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, स्कूल बच्चों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन करता है। उपवन क्लबों, सामुदायिक संगठनों, गिर्जाघरों, सामाजिक समूहों, स्वास्थ्य परिषदों व बच्चों के थियेटरों में अपने नेतृत्व के द्वारा निकाय समुदाय में भाग ले रहा है।

स्कूलों और नगरों के आकारों की वृद्धि के साथ निर्देशन सेवाओं के विस्तार में भी वृद्धि करने की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। नागरिक छोटे समुदायों में स्कूल और उसके कार्य से परिचित होते हैं। बड़े-बड़े समुदायों में बहुत से नागरिक स्कूलों के प्रकारों के सम्बन्ध में और इन स्कूलों में क्या पढ़ाया जाता है, इस विषय में वे या तो कुछ नहीं जानते और यदि जानते भी हैं तो बहुत कम।

निर्देशन सेवाओं के सम्बन्ध में जनता को भलीभाँति समझाने की आवश्यकता है ताकि वह प्रसन्नतापूर्वक उसका भार वहन कर सके। बहुत से नगरों में निर्देशन कार्यक्रम में विलम्ब होता है। इसका यह कारण नहीं है कि स्कूल के नेताओं के पास कोई योजना नहीं है अपितु इसका कारण यह है कि लोगों को यह नहीं समझाया गया है कि निर्देशन पर व्यय होने वाली राशि धन का सदुपयोग है। अच्छे निर्देशन कार्यक्रम में व्यय किये गये डालर का उतना ही मूल्य है जितना कि कक्षा में अध्यापन सेवा पर व्यय किये गये डालर का होता है।

सामुदायिक साधनों का स्कूल द्वारा उपयोग शैक्षिक विषयों के विस्तार और उनकी गहनता पर आजकल जो बल दिया जा रहा है, वह कक्षा के अध्ययन के पूरक के रूप में अनेक साधनों के उपयोग की आवश्यकता का संकेत करता है। अधिकांश समुदायों के अनेक व्यवित या संगठन ऐसी कुशलताओं का प्रदर्शन करके अथवा निश्चित ऐसी जानकारी देकर स्कूलों के साथ सहयोग करने को प्रस्तुत हैं जिनसे छात्र के ज्ञान का विस्तार होता है। ऐसे व्यक्तियों में विशेष क्षेत्रों में निरीक्षण करने वाले कर्मचारी, नर्सें, डाक्टर, धार्मिक नेता, स्थानीय स्वास्थ्य केन्द्रों के प्रतिनिधि, अग्नि और पुलिस विभाग तथा नागरिक समूह, यथा रोटरी और किवानी क्लब सम्मिलित हैं।

स्कूलों के निर्देशन कर्मचारी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य क्लिनिक, सामुदायिक कल्याण, मनोरंजन, धार्मिक, व्यावसायिक और काम दिलाऊ अभिकरणों का उपयोग करते हैं। अनेक व्यक्ति, निगम, फाउंडेशन और व्यापारिक तथा उदार संगठन विशेष परियोजनाओं के लिए हाई स्कूल के योग्यता प्राप्त स्नातकों को छात्रवृत्ति या स्कूलों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

अधिकाधिक समुदायों में शिशु-न्यायालय स्थापित किये जा रहे हैं। यद्यपि कभी-कभी दंडात्मक विधियों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है, तो भी इन न्यायालयों की मुख्य रुचि नवयुवक अपराधियों के पुनस्स्थापन में है। स्कूल और शिशु न्यायालय मिलजुल कर कार्य करते हैं। कुछ समुदायों में, स्कूल प्रणाली के सदस्य न्यायालयों और स्कूलों के मध्य पूरे समय के सम्पर्क अधिकारी के रूप में कार्य करते हैं। स्कूल न्यायालय को विचाराधीन नवयुवक के विषय में पृष्ठभूमि की जानकारी देते हैं। यदि उस व्यक्ति को मानसिक शिक्षण अधिकारी के संरक्षण में सौंप दिया जाता है तो स्कूल उस अधिकारी को इस बात में सहयोग देता है कि वह अपराधी को नवीन जीवन प्रारम्भ करने में सहायता दे। न्यायालय उस बच्चे या नवयुवक को किसी संस्था को सौंप देता है या किसी क्लिनिक में उपचार कराने की सिफारिश कर सकता है। दुर्भाग्य से सेवा के अन्य क्षेत्रों की भाँति समुदाय की अभिस्वीकृत आवश्यकताओं की पूर्ति में धन का अभाव बाधक होता है।

स्कूल और समुदाय की शैक्षिक परियोजनाएँ व्यावसायिक कर्मचारियों के साथ साधारण सहयोग का उद्देश्य स्कूल के कार्यक्रम की सफलता को बढ़ाना है न कि शैक्षिक मामलों में शिक्षा बोर्ड या स्कूल के लोगों का उत्तरदायित्व कम करना। स्कूल और समुदाय दोनों को मिलकर स्कूल की नीतियों, पाठ्यक्रमों और भवनों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। स्कूल और समुदाय के सहकारितापूर्ण कार्य समूह द्वारा किये गये कार्यों या व्यक्तियों की सेवाओं द्वारा हो सकते हैं। स्कूल के नेताओं और जनसाधारण में जो सफल सहयोग अधिकाधिक समुदायों में बढ़ रहा है, उसका दिग्दर्शन निम्न प्रकार की गतिविधियों में होता है :

१. व्यावसायिक और साधारण नागरिक की सहायता से इनमें सुधार होता है
   शैक्षिक नीतियाँ
   स्कूल के पाठ्यक्रम

भवन निर्माण कार्यक्रम
अध्यापन स्थितियाँ

२. उदार समूह निम्नलिखित को प्रोत्साहन देते हैं :
पंचवर्षीय नागरिक शिक्षा का अध्ययन
पंगु बच्चों के लिए व्यवस्था
अंतःसांस्कृतिक सम्बन्धों का अध्ययन
अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम
नर्सरी विद्यालय

३. सामुदायिक अभिकरण स्कूलों को सहायता देते हैं।
४. अभिभावक कर्मचारी सेवा प्रस्तुत करते हैं।
५. स्कूल के संयुक्त कार्य के लिए स्कूल और समुदाय साधन प्रस्तुत करते हैं।
६. अंतःसांस्कृतिक सम्बन्धों को सुधारने के लिये समुदाय और स्कूल प्रयत्न करते हैं।
७. समुदाय और स्कूल अपराधों की समस्या का समाधान करते हैं।
८. समुदाय और स्कूल स्वास्थ्य और बच्चों की देखभाल की समस्याओं का समाधान करते हैं।
९. समुदाय और स्कूल पड़ोसियों के लिए मनोरंजन की व्यवस्था करते हैं।

नागरिकों की समितियाँ लोकमत को काफी प्रभावित कर सकती हैं जिससे आवश्यक स्कूल सेवाओं या उपकरणों के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त हो सकती है। उदाहरण के लिये, सिटीजन्स कमेटी आज एजुकेशन आफ आगस्टा, मैन द्वारा लोगों के लिये आकर्षक ढंग से गठित रिपोर्ट में अन्य बातों के अतिरिक्त यह सिफारिश भी की गई है कि आगस्टा में तीन आदमियों और एक सचिव का निर्देशन कर्मचारी-वर्ग होना चाहिये। इसके फलस्वरूप नगर के एक निर्देशन और एक अंशकालीन सचिव के कर्मचारी मण्डल में जूनियर हाई स्कूल के स्तर का एक पूरे समय का परामर्शदाता और हाई स्कूल में एक अंशकालीन परामर्शदाता और बढ़ाये गये।

नागरिकों के सहयोग सहित सेवा-समूह का एक उदाहरण न्यूयार्क सिटी यूथ बोर्ड है, जो बाल अपराधों को रोकने के क्षेत्र में एक सरकारी अभिकरण है। इस बोर्ड में अट्ठाइस अवैतनिक सदस्य हैं। दस नगर विभागों के मुखिया हैं जिनका अधिकतर कार्य बच्चों और नवयुवकों से पड़ता है (स्कूल, पार्क, कल्याण, स्वास्थ्य, आवास, संशोधन और अनेक न्यायालयों के)। अट्ठारह सदस्य (मेयर द्वारा नियुक्त) गैर-सरकारी नागरिक होते हैं जो बच्चों और नवयुवकों की समस्याओं में विशेष रुचि और उनकी जानकारी रखते हैं। यूथ बोर्ड स्कूलों, नगर परिषदों तथा रुचि रखने वाले अन्य समूहों के इन कार्यों में सहयोग देता है : (१) कठिनाई में डालने वाली समस्याओं से पीड़ित नवयुवकों और परिवारों की खोज करने तथा उन्हें सहायता देने में, (२) उन्हें जिस प्रकार की सेवा की आवश्यकता है

उसका निश्चय तथा व्यवस्था करने में, (३) नवयुवकों के लिये आवश्यक नवीन सेवाओं के समर्थन में योजना बना कर और सहयोग देकर, (४) पड़ोस के स्तर पर सामुदायिक

चित्र २१. यूथ बोर्ड का संचालन*
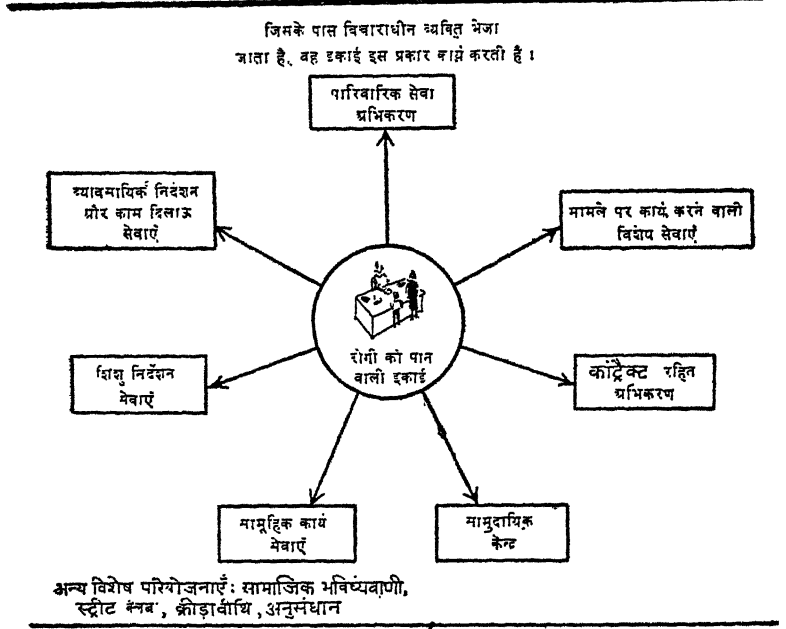
रुचि और प्रयत्न को प्रेरित तथा उसका समन्वय करके, और (५) अन्य प्रकार से नगर में बाल-अपराधों को रोकने और नियंत्रित करने में सहायता देकर। पचास से अधिक अभिकरण यूथ बोर्ड के सम्पर्क में हैं (देखिए चित्र २१)।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. स्कूल किन-किन रीतियों से समाज का अध्ययन कर सकता है ?
२. चार ऐसी स्कूल-केन्द्रित परियोजनाएँ बताइये जिन पर समुदाय स्कूल के सहयोग से कार्य कर सकता है।
३. "स्कूल समुदाय" और "सामुदायिक स्कूल" में अंतर बताइये।
४. समाज के वयस्क नागरिकों के लिए किस प्रकार से स्कूल की निर्देशन सेवा मूल्यवान हो सकती है ?
५. निर्देशन के अभिकरण के रूप में घर के महत्त्व पर विचार कीजिए।
६. आपके समुदाय में ऐसे कौन से अभिकरण हैं जो शैक्षिक कार्यक्रम में सहयोग दे रहे हैं ?

*Curriculum and Material, सितम्बर-अक्तूबर, १९५७ से पुनः मुद्रित। बोर्ड ऑफ एजुकेशन ऑफ दि सिटी ऑफ न्यूयार्क और दि न्यूयार्क सिटी यूथ बोर्ड की अनुमति से।

७. क्या व्यक्तियों और स्कूलों में अथवा समूहों और स्कूलों में सहयोग होना चाहिए ? कारण बताइये।
८. अध्यापकों से, समुदाय को; अभिभावकों से, स्कूल को; या समदाय से स्कूलों को आप वर्णित उत्तरदायित्वों के अतिरिक्त और क्या देना चाहेंगे ?
९. जिन स्कूलों में उनके बच्चे पढ़ते हैं, उनमें अभिभावकों के जाने से जो लाभ होंगे, उनकी रूप-रेखा बताइये।
१०. आपके समुदाय में व्यावसायिक या साधारण समूहों द्वारा क्या विशेष शैक्षिक या निर्देशन परियोजनाएँ चलाई गई हैं ?
११. आपके कस्बे या नगर में स्कूलों और समुदाय के सामाजिक सहकार्यों के लिए कौन-सी विधि अपनाई गई है ?
१२. बाल-अपराधों को रोकने के लिए आपके समुदाय में क्या कदम उठाये गये हैं ?
१३. आपके समुदाय में टेलीविजन का उपयोग कैसे किया जा रहा है ? सुधार के उपाय सुझाइये।
१४. अपने नागरिकों के लिए समुदाय को किस सीमा तक मनोरंजन की सुविधाएँ जुटानी चाहिए ?
१५. समुदाय-केन्द्रित स्कूल का निर्देशन से जो कार्यकारी सम्बन्ध है, उसका दिग्दर्शन कराने वाला एक मानचित्र बनाइये।

१२ शिशुओं का निर्देशन

मनोवैज्ञानिक इस बात पर निरन्तर बल देते हैं कि अपने तथा दूसरों के प्रति किसी के रवैये, काम और खेल के प्रति व्यवहार की आदत और उसके भावात्मक नियंत्रण अथवा उनके अभाव की जड़ें उसके शैशवकालीन अनुभवों में निहित होती हैं। जो कुछ वह घर में प्रारम्भिक पांच वर्षों में सीखता है और नर्सरी स्कूल तथा किंडरगार्टन में पढ़ते समय उसके कार्यों के जो परिणाम होते हैं वे ही सब मिल कर उसके भावी अध्ययन और तालमेल के आधार बनते हैं। इसलिए बच्चे के निर्देशन का महान् उत्तरदायित्व माता-पिता और नर्सरी स्कूल के अध्यापकों पर है।

माता-पिता का उत्तरदायित्व

प्रारम्भिक निर्माणकारी वर्षों में बच्चा जिस प्रकार का और जितना निर्देशन प्राप्त करता है, उसी के अनुसार उसके विचार करने के स्वभाव और व्यवहार की शैली का विकास होता है। स्वस्थ, स्थितप्रज्ञ, बुद्धिमान अभिभावकों का बच्चा जो सुसंगठित, आनन्दमय घर में उत्पन्न हुआ है, उसने जीवन का सदैव सुन्दर प्रारम्भ किया है।

स्वास्थ्य और शारीरिक योग्यता अपने शरीर की देखभाल करने के प्रति वयस्क व्यक्ति जो रवैया अपनाते हैं, उसका प्रारम्भ उन रवैयों में ही हो जाता है जिनका विकास प्रारम्भिक वर्षों में होता है। समुचित भोजन ग्रहण करने, स्वास्थ्यप्रद समय के अनुसार शयन करने और स्वच्छता सम्बन्धी सरल स्वभाव का विकास करने जैसे मामलो में बच्चे के निर्देशन का विशेष दायित्व माँ पर है।

खेल की गतिविधियाँ वयस्कों को अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के खेल का निरीक्षण करना चाहिए और उनके लिए उचित खिलौनों की व्यवस्था करनी चाहिए। ये खिलौने सादा और सस्ते होने चाहिएँ। इसके अतिरिक्त एक समय में थोड़े ही खिलौने उसे देने चाहिएँ ताकि वह उन्हें पहचान सके और उनके साथ ममता अनुभव कर

सके। जब बच्चे की कुछ खिलौनों में रुचि कम होने लगे तो उनके स्थान पर नये खिलौने दिये जा सकते हैं। उसके शैवशकाल में, उसके खेल उसकी महत्त्वपूर्ण विकास-शैली का परिचय देते हैं। खिलौनों का चुनाव सावधानी से करना चाहिए ताकि वे उसकी माँस-पेशियों के विकास के अनुकूल हों। प्रारम्भ में उसे लकड़ी के बड़े टुकड़े और बड़ी मुलायम गेंदें, कपड़े का भालू, ऊन के जानवर और मुलायम गुड़िया देनी चाहिएँ। शनैः-शनैः अधिक छोटे खिलौने देने चाहिएँ।

छोटा बच्चा खिलौनों से खेलता है और उन्हें इधर-उधर फेंक कर मारता है। वास्तव में वह उन खिलौनों के विषय में अनुसंधान करता है और इस प्रकार अपनी बड़ी-बड़ी माँस-पेशियों का विकास करता है। आगे चलकर वह निर्माण, लेखन और रचना करना चाहता है। प्रारम्भ में वह अकेला खेलना चाहता है, दूसरे बच्चों की उपस्थिति पर वह कोई ध्यान नहीं देता। उसके पश्चात् वह अपने समवयस्क बच्चों के साथ खेलना चाहता है। धीरे-धीरे उसके इस रवैये में परिवर्तन होता है और सब बच्चों के साथ खेलने की उसकी प्रवृत्ति हो जाती है।

कभी-कभी वयस्क व्यक्ति भी बच्चे के साथ खेल सकता है, किन्तु ऐसा अधिक नहीं होना चाहिए अन्यथा बच्चा खेल की प्रेरणाओं पर वयस्क व्यक्ति पर बहुत अधिक निर्भर करने लगेगा। दो वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते बच्चा घर के आस-पास की ऐसी किसी भी वस्तु में रुचि लेने लगता है जिससे वह खेल सके। उसकी छोटी सक्रिय उँगलियों से कोई वस्तु नहीं बच पाती, छोटी चीजें, माँ के बर्तन और कड़ाहियाँ तात्पर्य यह कि ऐसी कोई भी वस्तु जो उठाई जा सके या जो आनन्ददायक आवाज करती हो। जिस घर में सक्रिय, जिज्ञासु बच्चा हो, उसमें उसके लिए सरल, मनोरंजक और समुचित खिलौने होने चाहिएँ ताकि वह भारी-भारी वस्तुओं की खोज करने और उन पर परीक्षण करने का प्रयत्न न करे। यदि बच्चे के खेल की आकांक्षाओं को संतुष्ट करने की दूरदर्शिता माता-पिता में हो तो माता-पिता की प्रवृत्ति और बच्चे की भावनात्मक स्थिति अच्छी दशा में रहेंगी।

मतभेदों को कम करने का दूसरा साधन यह है कि बच्चे को अपने खिलौनों तथा अन्य वस्तुओं की देखभाल के लिए प्रशिक्षित किया जाय। यदि पारिवारिक गतिविधि के केन्द्र के निकट ही उसके लिए खेल के कमरे या खेल के मैदान की व्यवस्था की जा सके तो वह बच्चा वास्तव में भाग्यशाली है। यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो उसके पास एक दराज या संदूक ऐसी होनी चाहिए जिसमें वह खेलने के पश्चात्, अपने खिलौने रख सके। खिलौनों को रखना और निकालना भी उसके लिए खेल हो सकता है।

बच्चे अपने से बड़ों का अनुकरण करते हैं। घर का या स्टोर का खेल वास्तविक या काल्पनिक साथियों के साथ खेलना तीन से पाँच वर्ष तक के बच्चों को अच्छा लगता है। साधारण घरेलू काम-काज में बच्चों की रुचि का निर्देशन करना आनन्द-दायक हो सकता है। वह धूल साफ करने, चाँदी के बर्तन या छोटी वस्तुएँ साफ करने में या छोटी-छोटी वस्तुएँ पिता को देने में माँ की सहायता करता है और घर के चारों

ओर की वस्तुओं की मरम्मत करते हुए उसे आनन्द प्राप्त होता है, यदि माता-पिता इतने धैर्यवान और समझदार हैं कि वे यह अनुभव करते हैं कि छोटी-छोटी अंगुलियाँ कभी-कभी वस्तुएँ गिरा देती हैं और छोटे मस्तिष्क सदैव आदेशों को नहीं समझ सकते।

मानसिक विकास एक सामान्य बच्चे द्वारा निरन्तर पूछे जाने वाले प्रश्न उन परिस्थितियों से उत्पन्न होते हैं जो उसके चारों ओर बिखरी हुई हैं। उसे अपने और अपने वातावरण का सही मूल्यांकन करने की दिशा में निर्देशन देने की आवश्यकता है। अतएव वयस्कों को चाहिए कि बच्चे की जानने और समझने की आकांक्षा का सम्मान करें। उसका उपहास नहीं करना चाहिए, न उसको चिढ़ाना चाहिए और न उसकी उपेक्षा करनी चाहिए। सौभाग्य से बच्चा उत्तर प्राप्त करने की अपेक्षा प्रश्न पूछने में अधिक रुचि रखता है। वह अन्वेषण कर रहा है और संभव है कि उसे आंशिक उत्तर भी प्राप्त हो जाए, किन्तु वह यह जानना चाहता है कि उसके प्रश्न के विषय में वयस्क व्यक्ति क्या करेंगे? लम्बे विस्तृत उत्तर न आवश्यक हैं और न वांछनीय। सचाई और रुचि तथा मुस्कराहट के साथ दिया गया संक्षिप्त-सा साधारण उत्तर उस समय तक बच्चे के लिए बिलकुल पर्याप्त और सन्तोषप्रद होता है जब तक कि कोई नया प्रश्न उत्पन्न न हो जाए और यह क्रम इसी प्रकार चलता रहता है। एक धैर्यवान वयस्क के निर्देशन में बच्चा अपने संसार को अपने मानसिक जीवन का एक भाग बना लेता है।

माता-पिता का एक रवैया है जिसका जन्म बच्चे की सफलता पर बहुत अधिक अभिमान होने के कारण होता है। अभिभावकों को यह विश्वास करना सरल होता है कि उनका बच्चा अन्य बच्चों से श्रेष्ठ है। वे व्यवहार के उस विशेष रूप को प्रदर्शित करने के लिए अपने बच्चे को प्रोत्साहित करते हैं जो उन्हें असाधारण या उच्चकोटि का प्रतीत होता है। धैर्यवान और महत्त्वाकांक्षी माता-पिता द्वारा अपने बच्चे को कविता पाठ करने, चित्र बनाने, पियानो बजाने या सरल शारीरिक व्यायाम या नृत्य करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। फिर बच्चे का "आश्चर्यजनक" कार्य मित्रों और परिचितजनों की वास्तविक या प्रेरित प्रशंसा के लिए प्रदर्शित किया जाता है। कभी-कभी बच्चा ऐसे कार्य करने से इन्कार करके अपने अभिभावक की अपेक्षा अधिक बुद्धिमत्ता का परिचय देता है। क्षुब्ध माता-पिता उसके इन्कार की व्याख्या उसको लज्जाशील या हठी कह कर करते हैं जिससे भावनापूर्ण स्थिति और भी गंभीर हो जाती है।

बच्चे के भावों को निर्देशित करना बच्चा भावनाओं को अनुभव करता है, किन्तु प्रारम्भिक वर्षों में वे सुप्त होती हैं और बाद में व्यक्त किये गये भावनात्मक व्यवहार के निश्चित रूपों का अनुसरण नहीं करतीं। बच्चा भावना और प्रेमपूर्ण सार संभाल पर अनुकूल प्रतिक्रिया करता है। माँ की गोद में, भोजन करने में, आराम से सोने में और अपने प्रिय खिलौनों को तोडने-मरोड़ने में वह सुरक्षा प्राप्त करता है। जोर-जोर की आवाजों, आकस्मिक परिवर्तन अथवा अन्य विचित्र स्थितियों से वह

व्यस्त हो उठता है। वह गुरुजनों की मुखमुद्राओं का भावनात्मक उत्तर देता है। मुसकान के उत्तर में वह प्रेम और मुसकान देता है। क्रोध और स्वर की तीव्रता के उत्तर में वह रोने लगता है या भयभीत होने के लक्षण प्रदर्शित करता है। बच्चे के हाथ या पैर पटकने जैसी शारीरिक बाधाओं के फलस्वरूप वह उस अप्रिय स्थिति में से छूट कर भागने का प्रयत्न करता है।

ज्यों-ज्यों बच्चा बड़ा होता है, उसका भावनापूर्ण व्यवहार उत्तर का एक निश्चित रूप ग्रहण करता जाता है। वह देखभाल और प्रेम चाहता है। वह स्वभावतः अन्धकार, पुलिस वाले या उस "हौवा" से भयभीत नहीं होता जो अन्धेरी कोठरी में से निकल कर उसे पकड़ लेगा। यदि माता-पिता बच्चे के अनुचित कार्यों के लिए दंड की धमकियों के रूप में इनका प्रयोग करते हैं तो भय बच्चे में विकसित होने लगते हैं। शान्त और भावना की दृष्टि से संयमशील अभिभावक अपने बच्चे को उस समय तक निर्भय रहने की शिक्षा दे सकते हैं जब तक कि कोई अप्रत्याशित और भयानक स्थिति उसके मानस को एकदम न झकझोर दे।

चूँकि बच्चे को देखभाल की आवश्यकता होती है, यदि वह यह देखता है कि जो ध्यान उस पर दिया जाना चाहिए था, वह किसी अन्य पर दिया जा रहा है तो वह ईर्ष्या का अनुभव कर सकता है। माता-पिता के सम्मुख यह कठिन परिस्थिति उस समय आती है जबकि ऐसे परिवार में नये बच्चे का जन्म होता है जहाँ तीन वर्ष का या कुछ अधिक बड़ा बच्चा होता है और जो अब तक माता-पिता से पूरी सार-सम्भाल पाता रहा है। जब तक माता-पिता ने बच्चे को अपने नये छोटे भाई या बहिन के स्वागत के लिए तैयार नहीं कर लिया है तब तक बड़ा बच्चा शिशु जैसी निर्भरता को प्राप्त करके नवागंतुक के प्रति ईर्ष्या प्रदर्शित कर सकता है। अचानक उसे भोजन कराने की अथवा वयस्कों द्वारा उसे कपड़े पहिनाने की आवश्यकता हो सकती है—जो कार्य वह स्वयं सीख चुका था और अपने आप किया करता था।

बच्चे के भावनात्मक रवैये को वयस्कों के उदाहरण से भारी प्रेरणा मिलती है। अभिभावकों के पारस्परिक संघर्ष, झगड़े और अनुपयुक्त अथवा अनुचित रूप से दिये गये दण्ड से बच्चों को अत्यन्त मानसिक बाधा पहुँचती है और वे भविष्य में होने वाले असंतुलित तालमेल का सूत्रपात कर सकते हैं। अभिभावकों और परिवार के अन्य सदस्यों का शान्त, तर्कसंगत और भावनात्मक रूप से समन्वित व्यवहार और रवैया पारिवारिक निर्देशन कार्यक्रम के महत्त्वपूर्ण तथ्य हैं जिनका लक्ष्य बच्चों में भावनात्मक स्थायित्व का विकास करना है।

बच्चे को मैत्रीपूर्ण वयस्कों के संसर्ग की आवश्यकता है। सम्बन्धी और मित्र इस योग्य होने चाहिएँ कि वे बच्चे को ऐसा स्नेह और निर्देशन प्रदान कर सकें जिससे वह भावनात्मक रूप से सुरक्षित अनुभव कर सके। अपनत्व की भावना, बच्चे के प्रति किये जाने वाले व्यवहार में रख कर और स्वस्थ हास्य तथा साहस को प्रोत्साहन देकर वे ऐसा कर सकते हैं।

सशक्त भावनात्मक क्षमता रखने वाली एक घटना भी इसी प्रकार की स्थिति में बच्चे के विशिष्ट रवैये का कारण बन सकती है। अतएव ऐसे सामाजिक अवसर प्रदान करने चाहिए जिनके फलस्वरूप संतोषजनक भावनात्मक प्रतिक्रिया हो सके। बच्चे को ऐसी स्थिति में उत्पन्न होने वाली अपनी उन निजी समस्याओं का समाधान करना केवल अल्पायु में सीख ही नहीं लेना चाहिये जिनमें उसके समवयस्क सम्मिलित होते हैं अपितु अन्य व्यक्तियों के प्रति मैत्री एवं प्रसन्नतापूर्ण व्यवहार करना भी सीख लेना चाहिये। यदि अभिभावक उनके साथ हस्तक्षेप करते हैं, उनको अत्यधिक संरक्षण प्रदान करते हैं अथवा इन क्षेत्रों में भावनात्मक विकास प्राप्त करने में उन्हें अवसर प्रदान नहीं करते तो उन्हें उस समय आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब कि बच्चा भावनात्मक अस्थायित्व प्रगट करता है अथवा भावना की दृष्टि से उसका तालमेल ठीक नहीं बैठता। अभिभावकों द्वारा प्रस्तुत किया गया सुन्दर भावनात्मक वातावरण आत्म-निर्भरता और आत्म-संयम के स्वभाव को विकसित होने में सहायता देता है।

घर और समाज के तालमेल में निर्देशन निर्देशन के कार्यक्रम से व्यक्ति में उस समय तक वांछनीय स्थायी रवैये जन्म नहीं लेते जब तक कि उसे चरित्र-सम्बन्धी उन लक्षणों का विकास करने के लिए निर्देशन प्रदान नही किया जाता जिससे वह सत्ता को पहचान सके, दूसरों के साथ सहयोग कर सके और दूसरों की भलाई के लिये अपने निजी स्वार्थों और व्यक्तिगत इच्छापूर्त्ति को त्याग सके।

सम्भवतः वर्तमान शैक्षिक रूप की एक दुर्बलता यह है कि कुछ अभिभावक और अध्यापक इस बात से आशंकित प्रतीत होते हैं कि यदि बच्चे से आज्ञा पालन कराया जायेगा तो वह उपेक्षित, भावनात्मक दृष्टि से व्यस्त या मानसिक संघर्ष का अनुभव करेगा। प्रौढ़ व्यक्तियों का इस प्रकार का रवैया अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसा व्यक्ति मिलना बड़ा दुर्लभ है जिसे सामान्य सुरक्षा और कल्याण के लिए स्थापित नियमों और उप-नियमों का पालन करने की कभी आवश्यकता नहीं होती अथवा जो अपने साथियों के अधिकारों और स्वार्थों का विचार किये बिना अपना जीवन व्यतीत करता है। उसके प्रारम्भिक वर्षों में घर में विकसित हुए व्यक्तित्व सम्बन्धी लक्षण और सामाजिक रवैये का प्रभाव बाद के उन व्यक्तिगत स्वभावजन्य रवैयों पर बहुत अधिक पड़ता है जो वह अपने साथियों तथा अन्य व्यक्तियों के प्रति प्रदर्शित करता है।

बच्चों को अपने अभिभावकों द्वारा गंभीरतापूर्वक दिये गए युक्तिसंगत आदेशों का पालन करना सीखना चाहिए। यह बच्चे की क्षमता में होना चाहिए कि वह व्यवहार के प्रत्याशित रूप के अनुकूल कार्य कर सके। अभिभावकों की इच्छाएँ और आदेश संख्या में कम होने चाहिएँ और साथ ही इस प्रकार की सरल भाषा में दिये जाने चाहिएँ कि बच्चा उन्हें सरलता से समझ सके। बच्चे की समझ में प्रत्याशित व्यवहार का कारण भी आना चाहिए, बच्चे द्वारा कोई विशिष्ट प्रकार का व्यवहार प्रदर्शित किया जाना चाहिए, यह माँग करते समय प्रौढ़ व्यक्तियों को निश्चित होना

चाहिए। एक सामान्य आदेश जैसे "व्यवहार करो !" का उत्तर बच्चे द्वारा दिया जा सकता है बशर्ते कि वह व्यवहार की शुद्ध परिभाषा समझता हो और इन शब्दों में अपने ज्ञान को अभिव्यक्त करने का साहस रखता हो कि "मैं व्यवहार कर तो रहा हूँ। जो कुछ मैं करता हूँ, वह मेरे व्यवहार का अंग है।"

"भले आदमी बनो !" यह दूसरी अस्पष्ट बात है। भलेपन की जो परिभाषा अभिभावकों के लिए होती है, बच्चे की दृष्टि से उसकी परिभाषा बिलकुल भिन्न हो सकती है। अतएव बच्चे के व्यवहार का निर्देशन निश्चित, स्पष्ट, तर्कसंगत होना चाहिए और अभिभावकों को व्यवहार के प्रति निश्चित रवैया रखना चाहिए। थकावट मन की अनिश्चित स्थिति या अन्य कार्यों में व्यस्त होने के कारण अभिभावकों को बच्चे से एक दिन एक, और दूसरे दिन दूसरे व्यवहार की आशा नहीं करनी चाहिए। बच्चा शीघ्र ही अभिभावक के रवैये को समझने लगता है। वह शीघ्र ही समझ जाता है कि किसी समय उसे "उनके कदमों का अनुसरण" करना चाहिए और दूसरे समय दृष्टि बचाकर अंतर्धान हो जाना चाहिए। यदि वे सुदृढ़ चरित्र की ओर बच्चे का निर्देशन करने की आशा करते हैं तो अभिभावकों को अपने निजी रवैये में अपनी सनक और कथनी-करनी में विरोध प्रदर्शित करने वाले कार्यों का परिचय नहीं देना चाहिए।

बचपन के अनुचित कार्यों के लिए दिये जाने वाले दंड का दुष्कृत्यों से विशिष्ट सम्बन्ध होना चाहिए, दंड स्थिति के अनुकूल हो और उसका लक्ष्य अवांछनीय आचरण होना चाहिए ; इसके अतिरिक्त वह इतने विलम्ब से नहीं दिया जाना चाहिए कि उसका उद्देश्य समाप्त हो जाय। उसका प्रभावशाली होना भी आवश्यक है। इतना होने पर भी इस दंड से न तो बच्चे को शारीरिक क्षति पहुँचनी चाहिए और न उसमें असाधारण भय का संचार होना चाहिए। कभी-कभी बच्चे के अनियंत्रित व्यवहार के लिए भारी मारपीट या अन्य प्रकार के दंड से उतना लाभ नहीं होता जितना कि भृकुटि चढ़ाकर आँखों में ही डाँट देने से होता है। बच्चे को अपने अपराध की गुरुता के सम्मुख दी जाने वाली भारी सजा अनुपात से अधिक प्रतीत हो सकती है।

बच्चे को ईमानदारी का मूल्य समझाने की आवश्यकता है। कल्पनाशील बच्चे की "बड़ी-बड़ी कहानियाँ" न तो प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए मनबहलाव का साधन होनी चाहिएँ और न उन्हें इन कहानियों का "जन्मजात झूठा" होने का लक्षण मान लेना चाहिए। सत्य की प्राप्ति की दिशा में बच्चे का निर्देशन करना चाहिए। यदि पिछवाड़े सौ बिल्लियों के बराबर एक बिल्ली पर्याप्त शोर मचा रही है, तो भी वहाँ केवल एक ही बोलने वाली बिल्ली है।

यदि माता-पिता बच्चे से यह आशा करते हैं कि वह सच बोले और अपने रवैये में सच्चा और ईमानदार रहे तो, उन्हें स्वयं इसके लिए सक्रिय उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। बच्चा उपदेश की अपेक्षा उदाहरण से अधिक सीखता है। इसके अतिरिक्त, जब वह यह देखता है कि उसके माता-पिता की कथनी और करनी में भारी अंतर है, तो वह स्वयं कठिनाई में पड़ जाता है और यह निश्चय नहीं कर पाता कि

उसे क्या करना चाहिए। समय की आवश्यकता उसके साथियों के प्रति उसके व्यवहार को प्रभावित करती है न कि उसकी व्यक्तिगत धारणा।

शैशव के दिन व्यतीत हो जाने पर बच्चे को अपनी ही आयु के बच्चों के संसर्ग की आवश्यकता होती है। इन प्रारम्भिक सामाजिक सम्बन्धों में वह अपने अधिकारों और उत्तरदायित्वों को समझ सके इसके लिए उसको निर्देशन देना चाहिए। जैसा कि पारिवारिक रवैयों में बताया गया है अब दूसरे लोगों के साथ सहयोग ऐसी स्थिति में करना पड़ता है, जिसमें घर के बाहर के लड़के-लड़कियाँ सम्मिलित होते हैं। खेल की गतिविधियों, खिलौनों से खेलने और सामाजिक व्यवहार के अन्य रूपों पर यदि माता-पिता का अप्रत्यक्ष किन्तु विशेष निरीक्षण रहे तो सहकारितापूर्ण सामाजिक रवैयों का विकास करने में बच्चे को सहायता मिलती है।

बच्चे को अपनी शक्तियों और दुर्बलताओं को समझने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। जब कुछ बच्चे समाज में घुलने मिलने लगते हैं तो उनकी आंतरिक व्यक्तिगत विशेषताएँ उन्हें सावधान, कायर या भयभीत बना देती हैं। मंद-बुद्धि, शक्ति न्यूनता, अस्वस्थता या समन्वय शक्ति का अभाव जैसी सीमाएँ उनके अच्छे सामाजिक तालमेल प्राप्त करने में बाधक सिद्ध होती हैं। अन्य बच्चे अधिक क्षमता का परिचय देते हैं और नये अनुभवों से लाभान्वित होने की अधिक योग्यता प्रदर्शित करते प्रतीत होते हैं। चाहे उसकी कितनी ही क्षमताएँ और अक्षमताएँ हों, फिर भी प्रत्येक बच्चे को अपने आप कार्य करने और जब वह अपने समवयस्कों से मिलता-जुलता है तो उसे स्वयं अपना निर्णय करने की योग्यता का शनैः-शनैः विकास करने की दिशा में निर्देशन प्रदान करना चाहिए।

आत्म-अनुशासन की दिशा में निर्देशन

यदि किसी व्यक्ति को समाज द्वारा स्वीकार्य व्यवहार को प्रदर्शित करना है तो उसे अपने रवैयों पर नियंत्रण रखना चाहिए। छोटा बच्चा न तो नैतिक विवेक के आधार को समझता है और न विस्तृत नैतिक विचारों का अर्थ समझता है। उसका व्यवहार या तो पसंद किया जाता है या नापसंद। पसंदगी संतोषजनक होती है और नापसंदगी दु.खदायी। आचार-सम्बन्धी और नैतिक कल्पनाएँ जैसे अच्छाई और बुराई, आज्ञापालन और अवहेलना या ईमानदारी और बेईमानी शनैः-शनैः उसके ज्ञान और उसकी शब्दावली में प्रवेश पाते हैं।

शिशु का व्यवहार बच्चे के जीवन के प्रारम्भिक महीनों में उसकी प्रतिक्रिया प्रेरणा-जन्य होती है। किन्तु एक वर्ष समाप्त होते-होते वह ऐसे व्यवहार में लगने लगता है जिससे उसके कार्यों को वयस्कों की स्वीकृति प्राप्त होती है। इसके पश्चात् जो कुछ उसकी पहुँच में होता है, उस पर वह अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न करता है। यद्यपि इस व्यवहार का सम्बन्ध चोरी या बेईमानी से नहीं होता तो भी ऐसी स्थिति में उचित रवैयों के विकास के लिए बच्चे को निर्देशन की आवश्यकता है। जब कि उसका सावधानीपूर्वक निर्देशन किया जाता है तो तीन वर्ष का बच्चा दूसरों

के अधिकारों को समझने लगता है। उसने दूसरों के साथ मिलकर अपने खिलौनों के साथ खेलना सीख लिया है, वह अच्छे और बुरे व्यवहार का अर्थ समझ सकता है। उसकी प्रारम्भिक अहम्मन्यतापूर्ण सनक में शनैः-शनैः सुधार करने के लिए वयस्कों के उदाहरण और धैर्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं।

बढ़ते हुए बच्चे में निहित विविध आकांक्षाओं और इच्छाओं की सम्बन्धित क्षमता के अनुसार उसके प्रत्यक्ष कार्यों को प्रेरणा मिलती है। चूँकि बिना संघर्ष के बच्चा अपनी आन्तरिक क्षमताओं की अभिव्यक्ति का स्वीकार्य नियंत्रण प्राप्त नहीं कर सकता, अतएव वह ऐसे व्यवहार में लीन हो सकता है जो प्रौढ़ व्यक्तियों को भद्दा और स्वयं के लिए हानिकारक प्रतीत हो सकता है। उसकी बहुत-सी व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ उसके आत्म-स्वार्थ से अवांछनीय व्यवहार की नकल करने या संभावित परिणामों से अपरिचित होने के कारण उत्पन्न होती हैं।

अभिभावकों से प्राप्त निर्देशन माता-पिता बच्चे को एक या अन्य प्रकार से व्यवहार करने का कारण समझने के लिए और समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहार में लीन होकर आंतरिक संतोष प्राप्त करने के लिए उत्साहित कर सकते हैं। फिर, जब बच्चे के स्वभाव-जन्य कार्य उसके बाहर की कम वांछनीय शक्तियों से प्रेरित होने की अपेक्षा सुयोग्य आन्तरिक नियंत्रणों से प्रेरित होते हैं, तो उसका व्यवहार आत्म-नियंत्रण और आत्म-अनुशासन के आदर्श को अभिव्यक्त करता है।

अच्छे अनुशासित बच्चे के व्यवहार का निर्देशन कुछ सिद्धान्तों द्वारा होता है जिन्हें वह समझता और कार्यान्वित करता है। अभिभावकों के जो मौलिक रवैये और व्यवहार बच्चे को बुद्धिमत्तापूर्ण आत्म-अनुशासन प्राप्त करने में सहायता देते हैं, उनमें निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं :

१. स्वास्थ्यपूर्ण शारीरिक दिनचर्या की स्थापना।
२. आज्ञापालन में प्रोत्साहन।
३. जब अभिभावक या बच्चा क्रुद्ध न हो तभी समुचित दंड देना।
४. निर्णयात्मक रूप से कार्य करने की तत्परता।
५. अनुशासनात्मक कार्यविधियों में औचित्य का व्यवहार।
६. बच्चों के पारस्परिक मतभेदों की अभिस्वीकृति।
७. अत्यधिक स्वार्थपरता से मुक्ति।
८. निष्पक्ष किन्तु सुदृढ़ व्यवहार।
९. अप्रत्यक्ष रूप से निरीक्षित खेल के अवसरों की व्यवस्था।
१०. खेल खेलने में अच्छे खिलाड़ीपन की भावना को प्रोत्साहन।
११. जब तक बच्चा स्वतंत्र, आत्म-अनुशासित व्यक्ति न बन जाय तब तक निरीक्षण जारी करना।

नर्सरी स्कूल और किंडरगार्टन के कर्त्तव्य

नर्सरी स्कूल में दिया जाने वाला रवैये और व्यवहार का निर्देशन घर में दिये

जाने वाले माता-पिता के निर्देशन का पूरक होना चाहिए न कि स्थानापन्न। अमेरिका के शैक्षिक सोपान में किंडरगार्टन एक निश्चित सीढ़ी बन गया है। नर्सरी स्कूल अब भी स्कूल के लोगों द्वारा केवल आंशिक रूप में स्कूल के व्यक्तिगत अनुभवों का आवश्यक प्रारम्भ माना जाता है। कुछ सार्वजनिक स्कूल प्रणालियों में नर्सरी स्कूल की शिक्षा सम्मिलित की गई है, किन्तु अधिकांश नर्सरी स्कूल व्यक्तिगत रूप से प्रशासित ट्यूशन स्कूल हैं।

नर्सरी स्कूल और किंडरगार्टन के लक्ष्य नर्सरी स्कूल या किंडरगार्टन ऐसा स्थान नहीं है जहाँ बच्चा अपने मन के मुताबिक कार्य करते हुए बहुत समय व्यतीत करता है। जो लक्ष्य स्कूल को प्राप्त करने हैं, यदि सफलतापूर्वक उनकी प्राप्ति करनी है तो बच्चों के अनुभवों का कार्यक्रम ऐसे विशिष्ट लक्ष्यों को लेकर बनाना होगा जिनकी आधारशिला स्कूल दिवस और वर्ष में होने वाले कार्यों पर हो। इन उद्देश्यों या लक्ष्यों द्वारा बच्चे का निर्देशन निम्नलिखित दिशा में होना चाहिए :

१. सरल स्वास्थ्य आदतों का विकास और शारीरिक आवश्यकताओं के प्रति चिन्ता।
२. सरल शुद्ध भाषा में विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा के रूपों का विकास।
३. उसकी परिपक्वता की सीमाओं में स्वतन्त्र रूप से विचार करने की योग्यता और विस्तृत होते हुए वातावरण में रुचि का निरन्तर विकास।
४. वयस्कों और अन्य बच्चों के संदर्भ में भावनात्मक नियन्त्रण और वांछनीय सामाजिक रवैयों की प्राप्ति।
५. रूप, रंग और पंक्ति के सौन्दर्य का गतिशील मूल्यांकन।
६. निश्चित लक्ष्य के लिए सामग्री का उपयोग।
७. उसकी प्रतिक्रियाओं—आत्म-अनुशासन पर नियन्त्रण का विकास।
८. निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन।

नर्सरी स्कूल का दैनिक कार्यक्रम जब तक नर्सरी स्कूल कार्य करने वाली माताओं के बच्चों के लिए दिन भर के आश्रय-स्थल नहीं बन जाते, तब तक उनका दैनिक सत्र—प्रातःकाल या अपराह्न—लगभग तीन घण्टे का होता है। शान्त, आनन्द-दायक वातावरण में ऐसे निश्चित दैनिक कार्यक्रम के पश्चात् अध्यापक द्वारा निर्देशित गतिविधियाँ चलती हैं जिनमें मूलभूत कुशलताओं और रवैयों के विकास के लिए अवसर प्रदान किये जाते हैं। इनमें प्रारम्भिक भोजन कुशलता, साज-शृंगार की आवश्यकताओं की देखभाल, खिलौनों का निर्माण और सामाजिक स्थिति में समुचित खेलों का खेलना सम्मिलित है। भली भाँति प्रशिक्षित अध्यापकों के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष निरीक्षण में व्यक्तिगत रुचियों और योग्यताओं को विकसित करने के अवसर प्रदान किये जाते हैं। बच्चा सामाजिक रूप से सहयोग करना सीखता है।

व्यक्तित्व के विकास में नर्सरी स्कूल और किंडरगार्टन के निर्देशन की सफलता अध्यापक की निजी योग्यताओं और माता-पिता द्वारा उसे मिलने वाले सहयोग की राशि और प्रकार पर बहुत कुछ निर्भर करती है।

सत्र के प्रारम्भ में नर्सरी स्कूल या किंडरगार्टन के अध्यापक को बच्चे की उन आवश्यकताओं से परिचित हो जाना चाहिए जिनकी वह अपने अभिभावक के स्थानापन्न से अपेक्षा करता है। यदि कोई अध्यापिका स्नेह का प्रदर्शन करती है तो वह इस बात का प्रमाण देती है कि वह भावनात्मक दृष्टि से बच्चे को स्वीकार करने की क्षमता रखती है। प्रारम्भ से ही भावनात्मक विकास को प्रोत्साहन देना चाहिए। किन्तु बड़ी शीघ्रता से बच्चे को आत्म-निर्भर बनाने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न इतना ही हानिकारक सिद्ध होता है जितना कि बच्चे को दीर्घकाल तक छोटा बच्चा बनाये रखने का प्रयत्न करना।

यदि बच्चे को अपने साथ खेलने के लिए एक या दो बच्चे मिल जायँ तो समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों के लिए समस्या सरल हो सकती है, हालांकि उनके साथ चलने वाले उसके परिचय की अवधि छोटी ही होती है। छोटा बच्चा एक प्रकार के कार्य में थोड़े ही समय लीन रहना चाहता है। यदि उसके साथ कल्पित साथी हो और उसके माता-पिता द्वारा उसे वे सारी बातें बताने के लिये प्रोत्साहन दिया जाय जो कि नर्सरी स्कूल में होती हैं तो वह अपने काल्पनिक साथी को दीर्घकाल तक जीवित रख सकता है। ऐसा एक उदाहरण उस समय तक चलता रहा, जब कि अकस्मात् यह ज्ञात हुआ कि वह बच्चा ऐसे कल्पित बच्चे के कार्यों का वर्णन किया करता था जो कभी स्कूल नहीं जाता था।

नर्सरी स्कूल या किंडरगार्टन में अभिभावकों की दीक्षा अभिभावकों को यह जानने की आवश्यकता है कि नर्सरी स्कूल या किंडरगार्टन से क्या आशा की जानी चाहिए। जो बच्चे स्कूल में प्रथम बार जाते हैं उनके अभिभावकों का कुछ स्कूल हार्दिक स्वागत करते हैं। अभिभावकों को यह बता देना चाहिये कि जो अनुभव और निर्देशन दिये जाते हैं, उनका उद्देश्य उनके बच्चे को आत्म-विश्वासी बनने, दूसरों के साथ तालमेल बिठाने और भावनात्मक दृष्टि से सुरक्षित बनाने में सहायता देना है।

यद्यपि एकहार्ट इंडियाना में यह तो आवश्यक नहीं है कि बच्चे ने किंडरगार्टन में शिक्षा प्राप्त की हो, किन्तु स्कूल के अधिकारियों का यह विश्वास है कि यदि बच्चा किंडरगार्टन में रह चुका होता तो प्रथम कक्षा के लिए उसे अधिक अच्छी तरह तैयार किया जा सकता। किंडरगार्टन में बच्चे को भर्ती करने से पूर्व अभिभावक, बच्चे और अध्यापक के साथ व्यक्तिगत वार्तालाप किया जाता है। "किंडरगार्टन के लिये तैयारी" नामक एक मुद्रित पुस्तिका द्वारा अध्ययन कार्यों के कार्यक्रम के सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार अभिभावकों को सूचना दी जाती है :

किंडरगार्टन में आपका बच्चा यह चीजें पढ़ेगा :

दूसरों के साथ चलने के लिये

अनुभवों और खिलौनों में हिस्सा बंटाकर

विनम्र होकर
क्रोध को नियन्त्रित करना सीख कर
नेता बनना सीख कर
अनुयायी बनना सीख कर
न्यायपूर्वक खेलकर

निम्नलिखित से स्वयं को अभिव्यक्त करके

अपने हाथों से कार्य करके
बहुत से गीत सीख कर
दूसरों को सुन कर
कहानियों का नाटकीयकरण करके

निम्नलिखित के द्वारा कुछ मूल कुशलताओं को समझ कर

अपने नाम को पहचान कर
अपनी बोली गई शब्दावली का विस्तार करके
दूसरों के साथ खेल कर
गीत गाकर
आदेशों का पालन करके
सरल गिनतियों के खेलों का आनन्द लेकर
कहानी और कविता का आनन्द लेकर

निम्नलिखित के द्वारा उत्तरदायित्व ग्रहण करके

खिलौने हटाकर
कक्षा के बच्चों की देखभाल करके
सामग्रियाँ देकर
अपने निजी वस्त्रों की देखभाल करके

अभिभावकों के लिये मूल्य बहुत से अभिभावक अब भी नर्सरी स्कूलों और किंडरगार्टनों को ऐसे घरों का स्थानापन्न समझते हैं जो छोटे बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते । ये माता-पिता समझते हैं कि उनके बच्चे को छः वर्ष की आयु से पूर्व स्कूल भेजने का तात्पर्य यह है कि वे इस बात को स्वीकार करते हैं कि वे अपने बच्चे को घर पर अपेक्षित वातावरण और निर्देशन प्रदान करने में असमर्थ हैं । शिक्षा और निर्देशन के प्रारम्भिक रूप के उद्देश्य के विषय में यह गलत धारणा है। ज्योंही बच्चा सामाजिक चेतना को अनुभव करता है, उसे अधिक विस्तृत और विभिन्न सामाजिक समूह वाले साथियों की आवश्यकता होती है जो उसे घर के उस सुन्दर वातावरण में भी नहीं मिल सकते जिसमें अन्य बच्चे और पड़ोस के बच्चे भी सम्मिलित हैं । उसे ऐसे प्रौढ़ व्यक्तियों के निर्देशन की आवश्यकता है जिन्हें इस बात का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है कि वे संगठित सामाजिक कार्यों में लीन होने के उसे अवसर प्रदान करें ।

इसके अतिरिक्त अत्यधिक सचेतन और समझदार माता को भी कुछ समय बचा कर बच्चे के कल्याण की दृष्टि से उनसे पृथक् रहना चाहिये। घर के अन्य कर्त्तव्य और आराम देने वाले कार्य में माँ यह समझ कर लग सकती है कि वह और उसका बच्चा थोड़ी देर के लिये पृथक् रह कर प्रतिदिन लाभान्वित होते हैं। आगे चलकर माँ को यह अनुभव करना पड़ेगा कि वह अपने बच्चे के लिये संतोष का प्रमुख स्रोत बनकर नहीं रह सकती। यह पृथक् रहने की प्रक्रिया जितने शीघ्र आरम्भ हो उतना ही वह बच्चे और माता के लिए—माता के लिए तो विशेष रूप से—कम दुःखदायी होगा।

बच्चे के नर्सरी स्कूल या किंडरगार्टन में जाने से माता-पिता को दूसरा लाभ यह होता है कि स्वयं अभिभावकों को बच्चे के निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त होता है। अधिकांश स्कूल अभिभावकों के साथ साप्ताहिक बैठकें करते हैं जिनमें बच्चों की सामान्य और विशिष्ट समस्याओं पर विचार किया जाता है। अध्यापकों और अभिभावकों द्वारा कुछ स्कूलों में यह प्रथा है कि जब स्कूल का सत्र चलता होता है तो वे बच्चों की माताओं को समय-समय पर स्कूलों में आमन्त्रित करते हैं जहाँ वे यह सीखती हैं कि छोटे बच्चे के व्यवहार की विविध समस्याओं को कैसे सुलझाया जाता है और कैसे सुलझाना चाहिये।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. इस तथ्य के पक्ष में अपने विचार व्यक्त कीजिये कि छोटे बच्चों के शैक्षिक अनुभव मुख्यतः निर्देशन कार्य हैं।
२. छोटे बच्चे के स्वास्थ्य और शारीरिक योग्यता को बनाये रखने के लिए ऐसे पांच सुझाव दीजिए जो आप अध्यापक के रूप में बच्चे के अभिभावकों के सन्मुख प्रस्तुत करें।
३. जो बच्चा अपना भोजन नहीं करता उसे एक या दो बार का भोजन छोड़ देने के सम्बन्ध में अपनी सम्मति दीजिए।
४. क्या बच्चे को अपने माता-पिता से पूर्व भोजन कर लेना चाहिये ?
५. अपने परिचितों में से ऐसे बच्चों के उदाहरण दीजिये जिन्हें भोजन करने और सोने में कठिनाई होती है। ऐसे बच्चों के लिए क्या किया जा सकता है ?
६. मूत्र के असंयम के कुछ कारण बताइये। आपके विचार से इनका उपचार कैसे होना चाहिये ?
७. बच्चे को अपनी निजी स्वच्छता और परिधान का उत्तरदायित्व किस आयु में और किन परिस्थितियों में लेना प्रारम्भ कर देना चाहिए ?
८. ऐसे खिलौनों की दुकान या किसी स्टोर के ऐसे खिलौनों के विभाग में जाइये जहाँ खिलौने आयु के हिसाब से जमा कर रखे गये हों। प्रत्येक स्तर के लिए प्रस्तुत किए गये कम से कम पांच प्रकार के खिलौनों की सूची बनाइये।
९. बच्चों की कहानियों की पुस्तकों के लिये ८वें प्रश्न में दी गई कार्यविधि को दुहराइये।

१०. क्या माता-पिता को बच्चे के प्रश्नों का उत्तर देने से हमेशा इन्कार कर देना चाहिये ? क्यों या क्यों नहीं ?
११. बच्चे के भावनात्मक विकास के रूप पर प्रकाश डालिये।
१२. बचपन में आपका सबसे बड़ा भय क्या था ? इस भय का कारण क्या था ?
१३. ऐसी भूलें बताइए जो अच्छे माँ-बाप भी बच्चे के सामाजिक अनुभवों में कर सकते हैं।
१४. क्या बच्चे के रूप में आप से यह आशा की गई थी कि आप अनुचित अनुरोधों का पालन करें ? यदि हाँ, तो आपने उस समय क्या किया ?
१५. प्रौढ़ों के ऐसे कार्यों के उदाहरण दीजिए जो ईमानदारी के मूल्य के प्रति बच्चे के रवैये को प्रभावित कर सकते हैं।

१३ प्रारम्भिक स्कूल में निर्देशन

प्रारम्भिक स्कूलों में निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ करने की उपयोगिता के विषय में अब भी प्रश्न किये जा रहे हैं। किन्तु स्कूलों के अधिकांश व्यक्ति निरोधात्मक निर्देशन का मूल्य समझने लगे हैं। प्रारम्भिक स्कूल का बच्चा एक ओर तो अपनी समृद्धि के लिये अपने गुरुजनों पर पूर्णतया निर्भर करता है और दूसरी ओर वयस्कों के आधिपत्य तथा सत्ता से मुक्ति प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है। इसलिए वह क्या रहा है और क्या होने की आशा करता है, इसके लिए प्रारम्भिक स्कूल के बच्चे को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के निर्देशन की आवश्यकता है ताकि उसे इस अपेक्षाकृत मध्यकालीन अवस्था में उन आधारभूत रवैयों, कुशलताओं और ज्ञान का विकास करने के सिए सहायता प्राप्त हो सके जिसके फलस्वरूप वह न्यूनतम तूफान और दबाव के साथ किशोरावस्था में प्रवेश कर सके।

प्रारम्भिक स्कूल का छात्र

बच्चे के स्कूली जीवन में छः से बारह या चौदह वर्ष की आयु के मध्य की शैक्षिक अवधि अपेक्षाकृत कम अध्यापकों के आधीन व्यतीत होती है। कम से कम प्रारम्भिक छः वर्षों तक वह प्रत्येक अध्यापक से प्रतिदिन, सारे दिन, पाँच मास या एक वर्ष तक मिलता है। प्रारम्भिक स्कूल में बच्चा अधिकांश आवश्यक निर्देशन उस समय अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करता है जब कि वह कक्षा और स्कूल की गतिविधियों में अपने अध्यापक और साथियों के साथ मिल कर भाग लेता है।

बच्चों की मूलभूत आवश्यकताएँ व्यक्ति की कुछ जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं पर तीसरे अध्याय में विचार किया गया है। यहाँ प्रारम्भिक स्कूल के बच्चे की निश्चित आवश्यकताओं पर विचार किया जायेगा। किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रारम्भिक आयु में अनुभव की जाने वाली आवश्यकताओं और जिन

आवश्यकताओं की चलते रहने की आशा है, उनके मध्य में कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती।

मोंटेबेलो कैलीफोर्निया के प्रारम्भिक स्कूलों में चलने वाला निर्देशन कार्यक्रम ऐसी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न कर रहा है जो इस प्रकार है :

(क) अच्छा स्वास्थ्य

१. पर्याप्त संतुलित भोजन

२. अपेक्षित निद्रा और आराम

(ख) आधारभूत निपुणताओं का ज्ञान

१. समझने और सीखने की योग्यता के रूप में

(ग) सुरक्षा और विश्वास की भावनाएँ

१. घर पर

२. स्कूल में

३. स्कूल के समस्त कार्यों में

(घ) मित्रों और सामाजिक स्वीकृति की इच्छा

१. बच्चे

२. वयस्क

(ङ) अनुशासन

१. उदार किन्तु दृढ़

२. आत्म-अनुशासन की दिशा में प्रगति

(च) अवकाशकालीन कार्य

१. व्यक्तिगत अभिरुचियाँ

२. मनोरंजन

(छ) १. सांसारिक कार्य का सामान्य ज्ञान

बच्चे के जीवन का रूप प्रारम्भिक स्कूल का बच्चा तालमेल की या अपने से सम्बन्धित "समस्या" के प्रति जितना ही कम जागरूक होगा, उसका तालमेल उतना अधिक अच्छा होने की संभावना है। प्रारम्भिक स्कूल का औसत छात्र प्रसन्न-चित्त होता है। स्कूल और स्कूल के कार्यों में उसकी अधिक रुचि होती हैं और स्कूल वर्ष में उसका अधिकतर समय उनमें व्यतीत होता है। जब वह स्कूल के अन्य बच्चों के साथ कार्य करता या खेलता है तो उसके विस्तारशील वातावरण में उसके सम्मुख नवीन और प्रेरक तत्त्व आते हैं। कभी-कभी कठिनाई होने पर या उसके उत्साह में बाधा आने पर भी ये तत्त्व उसे आनन्द प्रदान करते हैं।

बच्चों के रवैये और कार्य जब तक बच्चे को यह ज्ञात न हो जाय कि मानवीय ईमानदारी में उसकी आस्था अनुचित स्थान पर है, तब तक वह प्रत्येक

व्यक्ति से मित्रता करने को प्रस्तुत रहता है। यद्यपि बच्चा वयस्कों के प्रति अपने व्यवहार में मित्रतापूर्ण रहता है, फिर भी वृद्धिशील लड़का--लड़की उससे भी कम--उनके प्रति अपना प्रेम कम से कम प्रकट होने देता है और वह इस बात को भी पसन्द नहीं करता कि वयस्क उसके प्रति बहुत अधिक स्नेह का प्रदर्शन करे। वह शुभ-रात्रि के चुम्बन या आलिंगन से विचलित या क्षुब्ध हो सकता है जिनका वह पहले स्वागत या कामना करता था।

बच्चे के उत्साह और रुचि को सरलता से जाग्रत किया जा सकता है। यदि उसके शैशवकालीन अनुभव उसके लिए सुखद रहे हों, तो वह भयभीत नहीं होता और यदि होता भी है तो बहुत कम। वह वयस्कों के "यह करो" और "यह मत करो" आदेशों से अस्थायी रूप से क्रुद्ध हो सकता है, किन्तु वह इस सम्बन्ध में मन में कोई गाँठ नहीं रखता। यह अवस्था अपने साथियों के प्रति सुदृढ़ आस्था की भी है। वह क्षमा कर देता है और भूल जाता है। वह गाना, हँसना, दौड़ना, कूदना, चिल्लाना चाहता है। वह निरन्तर खोज और अनुसंधान करता रहता है, और अपनी खोजों में दूसरों को भागीदार बनाने में उसे आनन्द आता है। वह किसी पहेली को सुलझाने में या किसी यांत्रिक पुर्जे के संचालन का ज्ञान प्राप्त करने में घंटों व्यतीत कर देगा। वह बनाना, निर्माण करना और सृजन करना चाहता है। लड़की "महान् अमेरिकन उपन्यास" प्रारम्भ कर सकती है किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि वह उसे बहुत कम समाप्त कर पाती है।

छोटा लड़का, और कभी-कभी लड़की, अपने इर्द-गिर्द फैली हुई किसी भी वस्तु में सृजनात्मक कार्य की सम्भावना देख सकता है। किन्तु वह अपने सृजनात्मक विचार को सदैव पूर्णता तक नहीं पहुँचाता। एक नौ वर्ष का बच्चा जिसने अपनी चाची-चाचा के घर में अनेक सप्ताह बिताये थे, खाली खाद्यान्नों के बक्से देखकर चकित रह गया। उसने ऐसी व्यवस्था कर ली कि जब भी कोई बक्सा खाली हो, चाची वह बक्सा उसे दे दे। चूँकि वह परिवार अनेक प्रकार के खाद्यान्न का उपयोग करता था, उसने सुझाव दिया कि दो प्रकार का खाद्यान्न मिलाया जाय ताकि उसके स्टाक में बक्से और शीघ्रता से आ सकें। जब उससे पूछा गया कि वह बक्सों का क्या करेगा तो उसने उत्तर दिया कि "यह तो मुझे नहीं मालूम, परन्तु मैं सोच रहा हूँ। आप जानते हैं बक्सों से बहुत सी चीजें बन सकती हैं।" किन्तु जब बच्चा घर लौटा तो वह एक-एक दर्जन या इससे भी अधिक बक्से छोड़ आया था। उसे यह पश्चाताप था कि वह इतना व्यस्त रहा कि वह उन सबको न ला सका (वास्तव में उसके पास बहुत-सा फालतू समय था), उसे यह भी आशंका थी कि उसकी आगामी यात्रा तक उसके चाची-चाचा उन डिब्बों को संभाल कर नहीं रखेंगे। उन्होंने वे डिब्बे संभाल कर नहीं रखे और तीन मास पश्चात् जब वह लौटा तो उसे उनसे इस विषय में पूछने की भी याद नहीं रही।

संग्रह इस आयु में लड़के और लड़कियाँ सब प्रकार की वस्तुएँ संग्रहीत करना चाहते हैं। लड़कों की जेबों और लड़कियों की दराज में बहुत-सी कीमती वस्तुएँ

होती हैं—जिनमें से प्रत्येक विशेष महत्त्व या लगाव की वस्तु होती है। लड़का रस्सी के टुकड़ों, कंकड़ों, मछली पकड़ने के काँटों, टूटे औजारों, आन्दोलन, स्कूल या क्लब के बटनों, पेचों, कीलों, जेबी चाकुओं, खेल की टूटी या साबित बन्दूकों और इस प्रकार की ऐसी अन्य वस्तुओं—जिन्हें उसने इधर-उधर से उठा लिया है—को बहुत संभाल-कर रखता है, यद्यपि उन्हें अपने साथियों को वह प्रसन्नतापूर्वक दिखाता है। लड़कियाँ शुभ कामनाओं के कार्ड और पत्र (विशेषतः अपने प्रिय वयस्कों द्वारा लिखे गये) रिबन के टुकड़े, चित्र, गुड़ियाँ और अन्य छोटे खिलौने तथा चित्रों की पुस्तकें जो शैशवकाल की स्मृतियाँ होती हैं, पहला दाँत, स्कूल की वे रिपोर्टें और परीक्षापत्र जिन पर उन्होंने अपनी अध्यापिकाओं से प्रशंसा प्राप्त की है, और कुछ उस प्रकार की चीजें जिन्हें कि लड़के महत्त्व देते हैं, संग्रह करती हैं।

लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में अपनी किशोरावस्था में बहुमूल्य वस्तुओं के संग्रह की अधिक प्रवृत्ति होती है। एक नवयुवती—जिसका हाल ही विवाह हुआ था—अपने बचपन के घर से दूर रहने के लिए गई। अपना घर छोड़ने से पूर्व उसने वह सब "अटाला" साफ करने की कोशिश की जो कि वह इतने वर्षों तक एकत्रित करती रही थी। एक संदूक भर कर गुड़िया, एक दराज भरी बचपन की पुस्तकें और शैशवकालीन बहुत-सी वस्तुएँ साफ करनी थीं। घंटों तक इन वस्तुओं को साफ करने के पश्चात् उसमें दुर्बलता आई और कुछ वस्तुएँ फिर भी उसने रख ही लीं। इन वस्तुओं को उसने भलीभाँति बाँध कर अपने माँ के भण्डारगृह में रख दिया ताकि उसकी अपनी लड़की इन वस्तुओं से खेलकर आनन्द प्राप्त करे। संभवतः उसका मतलब यही था अथवा यह एक तर्क-मात्र भी हो सकता है।

कुछ स्त्री-पुरुष इस प्रवृत्ति का कभी त्याग नहीं कर पाते। आगे चलकर वे संगठित रीति से असाधारण एवं दुर्लभ वस्तुओं, जैसे प्रथम संस्करण का संग्रह करते हैं। बहुधा उस धन और समय का उपयोग व्यावसायिक हितों पर होता है जिनसे संतोष की प्राप्ति होती है।

व्यावसायिक रुचियाँ एक दृष्टि से इस युग में व्यावसायिक रुचियों को उच्च स्थान प्राप्त है। लड़का जैसे-जैसे बड़ा होता है तो वह बारी-बारी से सोचने लगता है कि वह कैंडी के स्टोर का मालिक बनेगा (ताकि वह जी भर कर कैंडी और बर्फ खा सकेगा), पुलिसमैन बनेगा और भारी डंडा हिलाता हुआ पीतल के बटन लगा-कर घूमा करेगा, फ़ायरमैन बनेगा जिसका जीवन रोमांचकारी अग्नि के साथ व्यतीत होगा, एक साहसी पायलट, वीर सिपाही, उत्साही नाविक, आविष्कारक, अंतरिक्ष यात्री, प्रसिद्ध व्यक्ति (ताकि वह समस्त मनमानी वस्तुएँ प्राप्त कर सके) और सफल उद्योगपति या व्यापारी "जो बहुत-सा धन कमाता है" बनेगा। कभी-कभी वह डाक्टर या दंत-चिकित्सक बनने का भी निर्णय करता है जो बच्चों के लिए दयालु बनेगा और वह उनको ऐसी पीड़ाएँ नहीं पहुँचायेगा, जैसी कि उन्होंने उसे पहुँचाई हैं।

लड़कियों की व्यावसायिक रुचियाँ लड़कों की रुचियों से भिन्न होती हैं, किन्तु जब तक वे बनी रहती हैं तब तक उनमें उत्साह लड़कों के समान ही रहता है।

वास्तव में उसकी रुचि उसके यौवन काल तक चलती रह सकती है और अन्त में वह उसके जीवन का निर्वाचित व्यवसाय बन सकता है। लड़की की इच्छा नर्स, अध्यापिका, वायु-परिचारिका, प्रसिद्ध गायिका, नर्तिका, चलचित्र या टेलीविजन तारिका—या जब वह नवयौवन की देहली पर पग रखती है तो—उसकी यह इच्छा हो सकती है कि वह उसके पिता जैसे किसी व्यक्ति से विवाह करके "ढेर सारे बच्चे" पैदा करे।

व्यवहार की प्रवृत्तियाँ प्रारम्भिक स्कूल के सामान्य जिज्ञासु, उत्साही, व्यस्त, प्रसन्नचित लड़के लड़कियों को पढ़ाने में आनन्द आता है। उनके मजाक और कभी-कभी अनुचित कार्य भी उस वयस्क को आनन्द देते हैं जो उनके साथ काम करता या खेलता है। वे बिना शान पर चढ़ाये हुए हीरे हैं। उनको शान पर चढ़ाने की आवश्यकता है, किन्तु उनकी दृष्टि से जो उचित और तर्कसंगत है, उस व्यवहार का वे प्रसन्नता से अनुकूल उत्तर देते हैं।

दुर्भाग्य से सब नवयुवकों को स्वस्थ शारीरिक गठन और व्यवहार की वे क्षमताएँ प्राप्त नहीं होतीं जिनका निर्देशन मानसिक रूप से स्वस्थ जीवन का विकास करने की दिशा में किया जा सके, और न छोटे बच्चों को घर और पड़ोस की परिस्थितियाँ तथा अभिभावकों का निर्देशन प्राप्त होता है जिससे सोचने और कार्य करने के सुसमन्वित स्वभाव का निर्माण हो सके।

पैतृक रूप में प्राप्त कुसंस्कारों और प्रतिकूल वातावरण के फलस्वरूप प्रारम्भिक स्कूल के कुछ बच्चे यदि निश्चित रूप से उद्दंड नहीं तो कम से कम रूक्ष, असहयोगी और शंकालु होते हैं। १०-११ वर्ष के बच्चे की जेब में खेलने की बन्दूक या पानी की पिस्तौल के स्थान पर बड़े भाइयों या अन्य वयस्कों से झपटे हुए तेज चाकू और असली बन्दूकें हो सकती हैं, और यदि लड़के का अपने ऊपर नियंत्रण न रहे तो वह किसी को घायल करने के इरादे से इनका उपयोग भी कर सकता है। उसकी मुख्य व्यावसायिक रुचि डाकू बनने की हो सकती है। इसी प्रकार एक लड़की जो प्रारम्भिक स्कूल में आती है उसके नये अनुभवों के लिए संभव है तैयार न हो। संभव है, तर्करहित भय उसके मन में हो। वह स्कूल में धोखा देने या मिथ्या भाषण करने का प्रयत्न कर सकती है क्योंकि उसे कभी वास्तविक स्थितियों का सामना करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है। उसमें इस विश्वास का अभाव है कि वह प्रयत्न करके और उदार वयस्क व्यक्तियों को उसके रवैयों और आचरणों का निर्देशन करने देकर तनिक भी सफलता प्राप्त कर सकती है।

ये वे बच्चे हैं, जिन्हें वह शिक्षा और निर्देशन सेवाएँ प्राप्त होती हैं (हमें आशा है कि वे पीड़ित नहीं होते) जिनकी व्यवस्था अमेरिका के प्रारम्भिक स्कूलों में है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, बहुत से बच्चों का निर्देशन अप्रत्यक्ष रीति से उनके स्कूल के दैनिक अनुभव के रूप में होगा। कुछ बच्चों के लिए, यदि उनका सुधार करके उन्हें सुसंस्कृत और उपयोगी नाररिक बनाना है तो बुद्धिमत्ता और धैर्य के साथ उन्हें प्रत्यक्ष निर्देशन देने की आवश्यकता होगी।

प्रारम्भिक स्कूल के निर्देशन के कार्य

जिस बच्चे को घर में आवश्यकता से अधिक संरक्षण प्रदान किया गया है और जिसे प्रारम्भिक स्कूल में प्रवेश करने के लिए अपेक्षित नर्सरी स्कूल या किंडर गार्टन की शिक्षा प्राप्त नहीं हुई है, उसके लिए प्रारम्भिक स्कूल में प्रवेश करने के फलस्वरूप बच्चे का भावनात्मक सन्तुलन और त्रुटिपूर्ण तालमेल बना रह सकता है। अपेक्षाकृत बड़े स्कूल का वातावरण या अपने से अधिक बुद्धिमान लड़के-लड़कियों के साथ होने वाली स्पर्द्धा के फलस्वरूप यह सम्भव है कि बच्चा स्कूल के कार्य में उतनी सफलता प्राप्त न कर सके जितनी कि वह और उसके अभिभावक चाहते हैं। इस स्थिति के कारण बच्चे निराश हो सकते हैं और अभिभावकों में क्षोभ हो सकता है। बच्चे के घर की परिस्थितियों और स्कूल की तथा अन्य बच्चों के घरों की परिस्थितियों में जो अन्तर है, उससे बच्चों में असुरक्षा की भावना विकसित हो सकती है। सौभाग्य से, प्रारम्भिक स्कूल के संचालक आदि अपने छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं को अनुभव करने लगे हैं और स्कूल के कार्यों तथा स्थितियों का तालमेल व्यक्तिगत योग्यता और भावनात्मक परिपक्वता के साथ बिठा रहे हैं।

विचारणीय मूल बातें प्रारम्भिक स्तर पर निर्देशन के कार्यक्रम का मुख्य कार्य स्कूल के साथ बच्चे का और बच्चे के साथ स्कूल का तालमेल बैठाने में सहायता देना है। बच्चे को व्यवहार और कार्य करने की नई विधियों को अपनाना पड़ता है। वह अब ऐसी सामूहिक स्थिति में है जिसका कुछ निर्माण हो चुका है। जब वह दूसरे बच्चों के साथ कार्य करता और खेलता है, तब उसे सामग्रियों में दूसरों को भागीदार बनाना और साधारण उत्तरदायित्व ग्रहण करना सीखना पड़ता है। उसे यह भी समझना चाहिए कि उससे यह आशा की जाती है कि वह अध्यापक के आदेशों का पालन करेगा और वह अध्यापक की पूरी देख-भाल का पात्र नहीं बन सकता। उसे संतोषजनक दिनचर्या बनाकर उसके अनुकूल कार्य करना चाहिए।

यदि बच्चे ने किंडरगार्टन में शिक्षा प्राप्त नहीं की है तो उसे इस स्थिति के लिए सहायता देनी चाहिए कि वह दिन के पर्याप्त भाग तक अपनी माँ और अपने घर से पृथक् रह सके। स्कूल के परामर्शदाता से अभिभावकों के साथ अध्यापक या परामर्शदाता के विचार-विमर्श या सामूहिक स्थितियों में निर्देशन के द्वारा यह सहायता प्रदान की जा सकती है। यदि किसी बच्चे के तालमेल की समस्या गम्भीर है तो उसे मनोवैज्ञानिक या शिशु निर्देशन क्लिनिक में भेजने की आवश्यकता है। किन्तु इस स्थिति में अध्यापक का परामर्श मुख्य है।

स्कूल के अच्छे तालमेल के लिये सम्भवतः सब बच्चों को कुछ सहायता की आवश्यकता होती है। जिन बच्चों को कक्षा में पर्याप्त सहायता नहीं दी जा सकती, उनके लिए निर्देशन विशेषज्ञों की सहायता की व्यवस्था करनी चाहिये। किन्तु यह स्मरण रखना महत्त्वपूर्ण होगा कि निर्देशन विशेषज्ञ का कार्य तभी प्रभावशाली हो सकता है जबकि स्कूल के समस्त कर्मचारी यह समझ लें कि प्रारम्भिक

स्कूल के छात्र को निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक क्षेत्रों में सहायता की आवश्यकता हो सकती है : व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षिक और सम्भवतः कुछ कम मात्रा में व्यावसायिक । इसके अतिरिक्त निर्देशन कार्यों में तब सुविधा हो सकती है जबकि प्रशासक, अध्यापक और निर्देशन विशेषज्ञ एक दृष्टिकोण के रूप में उस विचार को स्वीकार कर लें जो समस्त स्कूल कर्मचारियों में व्याप्त है। इसके अतिरिक्त स्कूल स्तर पर निर्देशन निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है :

१. बच्चों के सम्बन्ध में ज्ञान
२. बच्चों में रुचि और उनके विषय में अध्ययन
३. व्यक्तियों के रूप में बच्चों की अभिस्वीकृति
४. बच्चों की भावना सम्बन्धी आवश्यकताओं में रुचि और उनको पूरा करने की रीतियों का ज्ञान
५. पाठ्यक्रम के उपयुक्त विषयों पर विचार
६. अध्यापन के साथ निर्देशन के सम्बन्ध का ज्ञान
७. असन्तुलित समन्वय के कारणों और उनके लक्षणों पर ध्यान देना
८. प्रभावशाली होने के लिये यह ज्ञान कि किस बच्चे पर उसकी किस समस्या के लिये कौन-सी निर्देशन प्रविधि अपनानी चाहिये
९. स्कूल के मुखिया से प्रारम्भ कर के सामूहिक कार्य में भाग लेना

प्रारम्भिक स्कूल में निर्देशन सेवाओं का प्रचलन स्कूलों के कुछ मुखियाओं के रवैये के कारण मन्द हो गया है। आचार्य स्कूल के स्वर को केवल अनुशासन के मामलों और शैक्षिक सफलता में ही निश्चित नहीं करता, अपितु होने वाली निर्देशन गतिविधियों के प्रकार को भी निश्चित रूप देता है। यदि आचार्य निर्देशन के प्रति एक निश्चित रवैया अपनाता है तो उससे अध्यापक को कक्षा में छात्रों को सहायता देने, अभिभावकों के साथ विचार-विनिमय करने और विशेषता प्राप्त कर्मचारियों को सहायता देने के लिये प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

प्रारम्भिक स्कूल में निर्देशन के लक्ष्य प्रारम्भिक शिक्षा के लक्ष्य में केवल लिखने, पढ़ने और गणित पर ही बल नहीं दिया जाता, अपितु बच्चे के सफल विकास के अवसर प्रदान करने सम्बन्धी स्कूल के लोगों के उत्तरदायित्व का मूल्यांकन भी किया जाता है।

न्यूयार्क नगर में प्रारम्भिक स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम के दो उद्देश्य हैं :

(१) व्यक्तित्व सम्बन्धी असन्तुलित समन्वय के सम्भावित निरोध की दिशा में बच्चे के अध्ययन को बढ़ावा देना, और (२) सफल अध्ययन कार्य को प्रोत्साहन देना। कार्यक्रम का निर्माण निश्चित उद्देश्यों और लक्ष्यों के इर्द-गिर्द होता है। इसका निर्माण निम्नलिखित उद्देश्यों के लिये हुआ है :

१. अध्यापकों, अभिभावकों, निर्देशन कार्यकर्त्ताओं और स्कूल के प्रशासकों के सहकारी प्रयत्नों के द्वारा छोटे बच्चों में भावनात्मक असन्तुलन को विकसित होने से रोकना।

२. उस वच्चे को सहायता प्रदान करना जो किसी अध्ययन क्षेत्र में कमजोर हो और जब इस कमजोरी का कारण भावनात्मक कठिनाई हो।
३. गम्भीर भावनात्मक कठिनाइयों वाले बच्चे को पहचानने में अध्यापकों की सहायता करना ताकि उन्हें उपयुक्त व्यक्तियों के पास भेजा जा सके और स्कूल प्रणाली के अन्दर विशेष व्यूरो को भेजने और सामुदायिक अभिकरणों या अस्पतालों में सहयोग करने में अध्यापकों और प्रशासकों की सहायता करना।
४. घर और स्कूल के मध्य संचार को सुविधाजनक बनाने के साधन के रूप में कार्य करना।
५. बच्चे के विकास के विषय में तथा स्कूल, अध्ययन-प्रक्रिया और पाठ्यक्रम के विषय में अभिभावकों को जानकारी प्रदान करना।
६. निर्देशन सामग्री यथा फिल्मों, फिल्म-पट्टियों, टेप रिकार्डिंग, पुस्तकों और पत्रिकाओं के सम्बन्ध में अध्यापकों को नवीनतम जानकारी देना और स्कूलों में प्रयोग करने के लिए इन सामग्रियों को उपलब्ध करना।
७. बच्चों को स्कूलों में दीक्षित करने में अध्यापकों की सहायता करना, और जब वे उच्चतर श्रेणियों में पहुँचें तो उन्हें उच्चतर स्कूल में पहुँच जाने के हेतु तैयार करने में उनको सहायता देना।
८. उन उपकरणों से अभिभावकों और अध्यापकों को परिचित कराना जो बच्चे के अध्ययन और निर्देशन के लिए प्राप्य हैं तथा जो प्रयोग करने योग्य हैं।
९. सातवीं और आठवीं श्रेणियों के बच्चों को स्कूलों और व्यवसायों के विषय में जानकारी देना।
१०. जाँच के ऐसे कार्यक्रम में अध्यापकों को दीक्षा देना जो कक्षा में संकलित जानकारी के साथ प्रयोग करने के लिये बच्चों के विषय में पूरक सूचना दे सकें।
११. उन बच्चों के लिये व्यक्तिगत परामर्श सत्रों के अवसर प्रदान करना जिन्हें सहायता की आवश्यकता है और जो शैक्षिक तथा व्यावसायिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।
१२. स्कूल प्रणाली के बाहर उपलब्ध विशेष सेवाओं के लिए सम्पर्क अधिकारी का कार्य करना।
१३. निकाय सम्मेलनों के प्रदर्शनों और वादविवादों, निर्देशन कार्यशालाओं, कक्षा के प्रदर्शनों आदि के द्वारा अध्यापकों को जानकारी प्राप्त करने में सहायता देना।
१४. उपयुक्त स्कूलों में बच्चों को भर्ती कराने में सहायता देना।

१५. सुसम्बद्ध मानसिक स्वास्थ्य-शिक्षा के कार्यक्रम में अन्य विभागों और अभिकरणों के साथ कार्य करना ।*

निर्देशन और पाठ्यक्रम

इस बात पर जितना बल दिया जाय, उतना कम है कि स्कूल स्तर पर निर्देशन का मुख्य कार्य अध्यापक को (१) प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं और आवश्यकताओं की खोज करने, और (२) उसके अनुसार पाठ्यक्रम के विषयों और शिक्षा की विधियों में तालमेल बिठाने में सहायता देना है। ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम के विकास में निर्देशन अनिवार्य रूप से सहायक होता है जो बच्चों में विद्यमान पारस्परिक विषमताओं की माँग को पूरा करता हो ।

पाठ्यक्रम की सामग्रियाँ १७०,००० से भी अधिक सार्वजनिक और निजी प्रारम्भिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में विभिन्न राष्ट्रीय, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों के नवयुवक होते हैं, अध्ययन की सामग्रियों को समझने और उनमें कुशलता प्राप्त करने की जिनमें पृथक्-पृथक् योग्यता होती है । बच्चे के विकसमान व्यक्तित्व के समस्त क्षेत्रों में व्यक्ति की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर सामग्री का चुनाव किया जाता है । मानवीय सम्बन्धों में रचनात्मक और संतोषजनक अनुभव प्राप्त कर स्वाभाविक और भौतिक वस्तुओं को समझना और उनका उपयोग करना तथा अपने निजी सृजनात्मक कार्यों में मानवीय प्रयत्न के साहित्यिक, कलात्मक और सौन्दर्य सम्बन्धी रूपों को समझना और प्रतिबिम्बित करना—ये वे लक्ष्य हैं जिनमें वह अध्ययन सामग्री सम्मिलित है जिनके द्वारा प्रारम्भिक स्कूल में बहुत से बच्चों को प्रेरणा दी जाती है । निःसंदेह, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मूलभूत निपुणताओं और ज्ञान की उपेक्षा कर दी जाय ।

व्यक्तिगत आवश्यकताओं से तालमेल कुछ-कुछ समान प्रारम्भिक कार्यक्रम के उपयोग से बच्चे के लिये अध्ययन सम्बन्धी उन कार्यों का महत्त्व समझना सम्भव हो जाता है जिनमें कि वह तल्लीन है । वे उसके जीवन को स्पर्श करते हैं, उसकी रुचि को बढ़ाते हैं । अब गणित उदाहरणों की ऐसी श्रृंखला नहीं रह गया है, जो आवश्यकता पड़ने पर पड़ोसी के कागज में देखकर कोई "करने और शुद्ध उत्तर प्राप्त करने के लिए" प्रयत्न करता है । उदाहरण के लिए, बच्चा ऐसी परियोजना पर कार्य करता है जिसका उसके लिए व्यावहारिक महत्त्व है और उसे यह जानने के लिए संख्याओं को जोड़ना पड़ता है कि उस कार्य में अगला कदम क्या होगा । यदि उसका उत्तर शुद्ध नहीं है तो वह अपनी परियोजना को जारी रखने में असमर्थ हो सकता है । उसके लिए वास्तविक जोड़ कठिन हो सकता है, किन्तु वह अपने ही हित में चाहता है कि उसका उत्तर सही हो, इसलिए नहीं कि अध्यापक उसे निम्न श्रेणी में रखेगा । गणित के नियमों को समझने और उनका सही-सही उपयोग करने में ज्ञान को बढ़ाने की दिशा

* Guidance of Children in Elementary Schools, Curriculum Bulletin, १९५५ ५६ सीराज, सं० १३, पृष्ठ ६-७ से पुनः मुद्रित; न्यूयार्क नगर के शिक्षा बोर्ड की अनुमति से ।

में अध्यापक जो कुछ सहायता दे सकता है, उसे प्राप्त करने के लिए वह प्रस्तुत—बल्कि उत्सुक होता है।

जिन रीतियों से अध्ययन निर्देशनपूर्ण अध्ययन बन सकता है, उसे समझाने के लिए जो बहुत-से उदाहरण दिये जा सकते हैं, यह उनमें से एक है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बच्चा अपनी इच्छा से अपने कार्यों के लिए उस निर्देशन को प्राप्त करना चाहता है, जिसकी वह आवश्यकता अनुभव करता है। अन्य व्यक्तियों द्वारा उसे दी जाने वाली सहायता का मूल्य वह समझने लगता है। निर्देशन के इस रूप का उद्देश्य उसे अधिक आत्म-निर्देशित बनाना है। एक परियोजना में सफलता प्राप्त कर लेने पर उसे अन्य कठिन परियोजनाओं के सम्बन्ध में प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। परिणाम यह होता है कि वह यह समझ जाता है कि जब उसे सहायता की आवश्यकता होगी तभी वह प्राप्त हो जायेगी।

आत्म-अनुशासन का विकास

अभिभावकों, अध्यापकों और निर्देशन परामर्शदाताओं के सहयोग से आत्म-संयम के निरन्तर विकास का उत्तरदायित्व समस्त बच्चों पर है। बच्चे के व्यवहार पर उसकी निहित आकांक्षाओं और क्षमताओं की अपेक्षाकृत शक्ति का प्रभाव पड़ता है। यदि आन्तरिक आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति पर सन्तोपजनक नियन्त्रण करने में वह असफल रहता है तो वह ऐसा व्यवहार कर सकता है जो अपरिपक्व होने के साथ-साथ उसके और समाज के लिये हानिकारक हो।

अध्यापक का कर्त्तव्य बच्चों के कार्यों के निर्देशन के द्वारा अध्यापक से यह आशा की जाती है कि वह बच्चे को अपने आस-पास के संसार का ज्ञान बढ़ाने और महत्त्वपूर्ण कार्यों में अपनी कुशलता बढ़ाने के लिए ही प्रेरित न करे अपितु उसको संसार के कल्याण में केन्द्रित रवैयों और रुचियों के विकास में भी सहायता दे, न कि उसे आत्म-केन्द्रित और उच्छृंखल रहने दे। यहाँ हमारा सम्बन्ध प्रारम्भिक स्कूल के बच्चों में आत्मानुशासन के विकास की मानसिक-स्वास्थ्य-शिक्षा की विधि से है।

कक्षा के भीतर और बाहर प्रदर्शित अपने रवैये के द्वारा अध्यापक विकासशील व्यक्तियों के व्यवहार पर पर्याप्त प्रभाव डालता है। अध्यापक जो कुछ करता है वह उसके उपदेश से अधिक शक्ति रखता है। जो स्त्री-पुरुष अध्यापन कार्य को अपनाना चाहते हैं उनका व्यक्तित्व इतना महत्त्व रखता है कि उन्हें अध्यापन कार्य सौंपने से पूर्व उनके व्यक्तिगत गुणों का मूल्यांकन किया जाता है। अध्यापक को ईमानदार, सच्चा, और सचेत होना चाहिये, उसे नवयुवकों को पसन्द करना और समझना चाहिए, अपने विषय में वह पारंगत हो और विद्यार्थियों को प्रेरणा देने की प्रविधि में चतुर हो।

सत्ता का प्रतिनिधित्व जिस सीमा तक अध्यापक विद्यार्थियों को बिना प्रत्यक्ष निरीक्षण के कार्य करने की अनुमति दे सकता है, वह आत्म-संयम की उस सीमा का संकेत करता है जिस सीमा तक उसका विकास हुआ है। प्रत्येक बच्चे को कार्य करने की उतनी स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिये जितनी स्वतन्त्रता की क्षमता वह दूसरों के

अधिकारों या व्यवहार में हस्तक्षेप किये बिना अपने व्यवहार से प्रदर्शित करता है : क्रियात्मक रूप से इस प्रकार अध्यापक अपनी सत्ता विद्यार्थी को अपने निजी व्यवहार का निर्देशन करने के लिये सौंपता है।

प्रत्येक बच्चे को यह समझने में सहायता देनी चाहिए कि जब तक वह अपनी प्रकृति के सम्बन्ध में ऐसे निर्णय करता है जो कि व्यवहार के स्वीकृत स्तरों के अनुकूल हैं, तब तक उसे कार्य करने की स्वतन्त्रता प्राप्त रहेगी। किन्तु ज्योंही यह स्पष्ट हो जायेगा कि उसने अपनी इच्छाओं को पर्याप्त रूप से समझने और उन पर नियन्त्रण करने की क्षमता प्राप्त नहीं की है और वह व्यवहार के स्वीकृत स्तरों से भ्रष्ट हो गया है, त्योंही अध्यापक उससे इस क्षेत्र में दी गई सत्ता वापस ले लेगा। इस आश्वासन के साथ ऐसा करना चाहिए कि जब बच्चा पुनः अपने अनुशासन की क्षमता का प्रमाण दे देगा तभी यह सत्ता उसे फिर सौंप दी जायेगी। इसका अन्तिम लक्ष्य बच्चे को दूसरों के अधिकार के प्रति सचेत होने और उनका उल्लंघन करने से बचने में सहायता देना है।

व्यवहार सम्बन्धी कठिनाइयों के प्रति अध्यापक का रवैया जब कभी संभव होता है, अध्यापक अवांछनीय व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयत्न करता है। व्यक्तिगत कठिन मामलों में वह अन्य कर्मचारियों की सहायता लेने में भी नहीं सकुचाता। ऐसे बच्चे के व्यवहार को सुधारने में सहायता देने में आचार्य और परामर्शदाता महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं जो स्वीकृत स्तर से बहुत अधिक विचलित हो जाते हैं।

मोन्टेबैलो, कैलीफोर्निया में अनुशासन की समस्या के विषय में जो विचार हैं, वे यहाँ दिये जा रहे हैं :

व्यवहार की समस्याएँ

आधुनिक मनोविज्ञान का विचार है कि हम बहुधा बुरे व्यवहार पर अधिक और अच्छे व्यवहार पर कम पुरस्कार देते हैं।

व्यवहार की समस्या से युक्त बच्चे को दण्ड देने के लिए जो हम समय व्यतीत करते हैं, वह उसको दिये जाने वाले पुरस्कार का एक रूप है और प्रत्येक दंड उस व्यवहार की पुनरावृत्ति को प्रोत्साहन देता है। इसी समय का उपयोग सुरक्षा, प्रशंसा और स्वीकृति प्रदान करने में कीजिए तो बच्चा समझेगा कि अच्छा व्यवहार अधिक लाभदायक होता है।

१. अनुशासन का दर्शन

(अ) आधारभूत कदम

१. अनुशासन शब्द को बहुधा गलत समझा जायेगा
- (क) इसका अर्थ सदैव शारीरिक दण्ड नहीं होता
- (ख) गलती से सही का अध्ययन करना
- (ग) स्वीकार्य व्यवहार के साथ इस ज्ञान के प्रसार की क्षमता

२. कुछ छात्र केवल भौतिक विधि से अधिक अच्छा समझते हैं
(क) दूसरों को केवल बातों से समझाना पर्याप्त होता है
(ख) पृथक्-पृथक् बच्चे की मनोदशा पर अन्तर का आधार होता है
(ग) जो बच्चा अनुशासन से काबू में नहीं आता उसमें बहुधा अभिभावकों और अध्यापकों का कुछ प्रभाव परिलक्षित होता है
३. गलत और सही का अन्तर जाने बिना संसार में प्रवेश करता है।
(क) अनुशासन की अपेक्षा करता है
४. मूलभूत आवश्यकताएँ बच्चे को जीवन-भर पथ-प्रेरणा देती हैं
(क) प्रेम प्राप्त करने और प्रेम करने की आवश्यकता
(ख) उत्साह
(ग) भोजन
(घ) आत्म-संरक्षण
५. अभिभावकों और स्कूल द्वारा नियन्त्रित वातावरण
(क) बच्चे की आवश्यकता की पूर्ति पर्याप्त रूप में हो रही है, इसका निश्चय करता है
(ख) यदि नहीं तो बच्चे को कितनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए
६. अनुशासन का अत्यन्त प्रभावशाली रूप, जब बच्चा समझता है कि
(क) उसे दंड क्यों दिया गया है
(ख) घटना की पुनरावृत्ति न करने के लाभ
७. करने और समझने की योग्यता
(क) मनोवृत्ति पर निर्भर रह कर
(ख) अनुभव पर निर्भर रह कर
८. मन्दबुद्धि बच्चे को
(क) धैर्य की आवश्यकता होती है
(ख) ज्ञान की आवश्यकता होती है
९. अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अनुशासन
(क) बच्चे को सुरक्षा प्रदान करता है
(ख) क्या करना चाहिए—यह बच्चा समझता है।
१०. स्कूल की समस्याएँ
(क) अनुशासन के दर्शन पर अध्यापकों में भारी मतभेद है
(ख) जूनियर और सीनियर हाई स्कूल के उस बच्चे के लिए समस्या जो प्रतिदिन अनेक अध्यापकों के सम्मुख पेश होता है
११. अभिभावकों से वार्तालाप का महत्त्व
(क) घर पर रखे जाने वाले अनुशासन की जानकारी अध्यापक को प्राप्त होती है
(ख) स्कूल और घर के मध्य विचार-विनिमय हो सकता है

१२. अनुशासनात्मक प्रविधियाँ
   (क) वच्चे को समझनी चाहिएँ
   (ख) अनुशासन लाद नहीं सकतीं
   (ग) शनैः शनैः पहुँचती हैं
   (घ) नियमों के अनुकूल होनी चाहिए
   (ङ) आयु और क्षमता के अनुसार हैं

प्रारम्भिक स्कूल में निर्देशन कर्मचारी

जैसा कि हम पहले वता चुके हैं, कक्षा का अध्यापक प्रारम्भिक स्कूल में वच्चे का मित्र और निर्देशक होता है। जिस प्रारम्भिक स्कूल या स्कूल प्रणाली में निर्देशन में रुचि रखने वाले प्रशासक और अध्यापक होते हैं, वहाँ प्रशिक्षित परामर्शदाताओं और अन्य विशेषज्ञों की सेवाओं का भी प्रवन्ध किया जाता है जिनका कार्य वच्चों की तालमेल की समस्याओं को सुलझाने में स्कूल के कर्मचारियों की सहायता करना है। निर्देशन से सम्बन्धित सदस्यों के निश्चित उत्तरदायित्वों का हम यहाँ संक्षेप में वर्णन करेंगे।

प्रारम्भिक स्कूल के परामर्शदाता प्रारम्भिक स्कूल के कर्मचारियों में पूरे समय के परामर्श-कार्य के लिए कम से कम एक योग्यता-प्राप्त भलीभाँति प्रशिक्षित परामर्शदाता को सम्मिलित करने की प्रवृत्ति शनैः शनैः जोर पकड़ती जा रही है। आजकल इस निर्देशन विशेषज्ञ से यह आशा की जाती है कि वह समस्त व्यक्तियों के लिए सर्वस्व बन जाए। उसके कर्त्तव्यों में वच्चों से साक्षात्कार करना, अध्यापकों और अभिभावकों से विचार-विमर्श करना, बाह्य अभिकरणों से सम्पर्क करना, विशेष परीक्षण उपकरणों का प्रयोग करना और परिणामों की व्याख्या करना, प्रश्नावली का निर्माण करना, रिपोर्ट भरना, महत्त्वपूर्ण तथ्यों को तैयार करना, और कागज-पेंसिल के प्रत्येक कार्य में तल्लीन होना सम्मिलित है। पूरे समय काम करने वाला परामर्शदाता बच्चे की प्रगति से भी आचार्य को अवगत रखता है और स्कूल सम्बन्धी आवश्यक तालमेल और भावी योजनाओं पर विचार करता है।

इविंगटन, न्यू जर्सी में स्कूलों (जिनमें प्रारम्भिक स्कूल के निर्देशन कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम प्रभावशाली रीति से सक्रिय है) के सुपरिंटेंडेंट के मतानुसार कुछ परामर्शदाताओं के मुख्य कार्यक्षेत्र निम्नलिखित है:

१. स्कूल के पूर्व होने वाली सभाओं, किंडरगार्टन और किंडरगार्टन जलपानों में भाग लेने के माध्यम से अभिभावकों के लिए दीक्षा कार्यक्रम।
२. किंडरगार्टन में जाकर किंडरगार्टन के छात्रों के लिए नवीनीकरण कार्यक्रम।
३. परामर्शदाता के साथ विशेष वार्तालाप करके स्थानान्तरित विद्यार्थियों के लिए नवीनीकरण कार्यक्रम।
४. पाठ्यक्रमों के चुनाव में सहायता देकर हाई स्कूल के लिए ८वीं कक्षा के छात्रों का नवीनीकरण कार्यक्रम। यह सामूहिक बैठको, बाहर के वक्ताओं

के भाषणों, दौरों और छात्रों तथा अभिभावकों दोनों के साथ व्यक्तिगत रूप से वार्तालाप करके किया जाता है।

५. विशेष समस्याओं से पीड़ित बच्चों को परामर्श देना। और अधिक जानकारी या विशेष सहायता प्राप्त करने के इच्छुक अध्यापकों द्वारा बच्चों को परामर्शदाताओं के पास भेजा जाता है।

६. अध्यापक-छात्र और अभिभावक-शिशु के सम्बन्धों का अधिक अच्छा रूप प्रदान करने के लिए अभिभावकों से वार्तालाप।

७. परीक्षण और अभिभावक के साथ हुए वार्तालापों के परिणाम से अध्यापकों को सूचित करने के लिए उनके साथ वार्तालाप।

८. परीक्षण कार्य का नियोजन और कार्यान्वियन।

९. अभिभावक-अध्यापक संघ के शैक्षिक कार्यक्रम पर अभिभावकों के साथ मिलकर कार्य करना।

१०. प्रत्येक विद्यार्थी का संग्रहात्मक वृत्त रखना।

हमारे स्कूलों में प्रत्येक बच्चे के अधिकतम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास के लिए परामर्शदाता स्कूल के कर्मचारियों और विशेष सेवाओं के निरीक्षकों के साथ मिलकर कार्य करता है।

उत्तरदायित्वों की उपरोक्त सूची पर विचार करने पर कार्य की गुरुता समझ में आ जाती है और उस परामर्शदाता के साथ सहानुभूति होने लगती है जो "गति प्राप्त न कर पने के कारण" निराश हो जाता है। इस स्थिति का कारण सम्भवत: प्रारम्भिक स्कूल स्तर पर विशेष परामर्शदाताओं की अपेक्षाकृत नवीन स्थिति है। परामर्शदाताओं के विशिष्ट कर्त्तव्यों का अभी तक निश्चय नहीं हुआ है।

विशेष निर्देशन कर्मचारी उपस्थिति अधिकारी आधुनिक प्रारम्भिक स्कूल के दैनिक कार्यक्रम में इतनी अधिक सोद्देश्य प्रेरक गतिविधि होती है कि विद्यार्थी कोई भी मनोरंजक कार्यक्रम छोड़ना नहीं चाहते किन्तु फिर भी अनुपस्थिति के मामले होते हैं जिन्हें रोकने की आवश्यकता है। कभी-कभी अभिभावक अपने बच्चे के स्वास्थ्य के विषय में आवश्यकता से अधिक सावधान होते हैं। प्रत्येक स्कूल में ऐसे बच्चे होते हैं जो अपने सहपाठियों के साथ चलने में असमर्थ रहने के कारण इस निरानन्द स्थिति से निकल आना चाहते हैं। कुछ साहस-प्रेमी बच्चे अकेले या अपने साथियों के साथ "गोत मना" जाते हैं।

डाक्टर और नर्स चूँकि प्रारम्भिक स्कूल की अवधि में स्वास्थ्य की देखभाल करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, अतएव अध्यापक द्वारा प्रतिदिन प्रातःकाल आँख, नाक, मुँह, हाथ और स्वच्छता की की जाने वाली जाँच के अतिरिक्त समय-समय पर बच्चों की डाक्टरी जाँच भी होती है। डाक्टर अंशकालीन आधार पर कार्य करता है; और स्कूल यदि बहुत बड़ा न हो तो नर्स भी अंशकालीन आधार पर ही कार्य करती है।

मनोवैज्ञानिक और मानसिक रोग चिकित्सक छोटे प्रारम्भिक स्कूल में एक विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक स्तरीकृत परीक्षणों का निरीक्षण करता है जो कक्षा के अध्या-

पकों द्वारा लिए जाते हैं। जिन बड़े स्कूलों में परीक्षण का विशद कार्यक्रम होता है, मनोवैज्ञानिक की सेवाओं का उपयोग किया जाता है जो सामान्यतः या तो स्कूल प्रणाली के केन्द्र से कार्य करता है या उसे स्कूल मंडल सौंप दिया जाता है। गंभीर रूप में असंतुलित बच्चे की देखभाल के लिए स्कूल प्रणाली द्वारा नियुक्त अथवा समुदाय द्वारा संचालित निर्देशन क्लिनिक के सदस्य मानसिक रोग चिकित्सक की सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिएँ।

सामुदायिक अभिकरण बहुत से नगरों और स्कूल मंडलों में स्कूलों और कल्याण अभिकरणों, निर्देशन क्लिनिकों, वाणिज्य घरों, औद्योगिक संयंत्रों, स्थानीय सरकारी कार्यालयों और सार्वजनिक तथा निजी मनोरंजन संगठनों—वाई० एन० और वाई० डब्ल्यू० सी० ए० तथा वाई० एम० और वाई० डब्ल्यू० एच० ए०, ४ एच० क्लबों—जैसे सामुदायिक संगठनों तथा इसी प्रकार के अन्य अभिकरणों के मध्य निकट सेवा-सम्पर्क होता है। बच्चों को सार्वजनिक मनोरंजन सुविधाओं का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये।

व्यावसायिक परामर्शदाता कुछ ८वीं स्कूलों और उस से भी कम संख्या में ६वीं स्कूलों में एक व्यावसायिक परामर्शदाता होता है जिसका कार्य ऊँची श्रेणी की कक्षाओं के छात्रों को माध्यमिक स्कूलों के चुनाव में सहायता देना होता है। व्यावसायिक परामर्शदाता विद्यार्थियों की व्यावसायिक क्षमताओं और रुचियों की जानकारी प्राप्त करने के लिये उनके साथ मिलकर कार्य करता है और इस जानकारी के आधार पर उन्हें परामर्श देता है कि उन्हें किस स्कूल (जिस नगर में अनेक प्रकार के स्कूल होते हैं) में जाना चाहिये और कौन-सा पाठ्यक्रम अपनाना चाहिये। प्रारम्भिक स्कूलों में व्यावसायिक निर्देशन साधारण कोटि का होना चाहिये न कि किसी विशिष्ट कोटि का, केवल उन छात्रों को निर्देशन दिया जा सकता है जिनका मानसिक स्तर इतना नीचा है कि वे साधारण सरल व्यवसाय के अतिरिक्त और कुछ कर ही नहीं सकते।

अध्यापक प्रारम्भिक स्कूल के स्तर पर निर्देशन सेवाएँ अध्यापक में केन्द्रित होती हैं। बच्चे का अध्ययन करने में, उसके साथ कार्य करने में और मैत्रीपूर्ण विवेक के साथ उसे सहयोगपूर्ण, सु-समन्वित, प्रसन्नचित्त बनाने के लिए अध्यापक जो कुछ प्रेरणा देता है, समस्त निर्देशन कर्मचारी उसके पूरक का कार्य करते हैं। बच्चा अध्यापक के पास ही अपनी शंकाएँ लेकर जा सकता है और वही उसके विचारों, अभिरुचियों, सफलताओं और असफलताओं को ध्यानपूर्वक सुनता है।

नगर के अत्यधिक छात्रों वाले स्कूल में अध्यापक का कर्त्तव्य कठिन हो सकता है। बड़ी-बड़ी कक्षाएँ और निश्चित, भरापूरा पाठ्यक्रम तथा कक्षा का ऐसा कार्यक्रम जो अध्यापक द्वारा ही संचालित होता है, ये सब मिल कर ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं कि जिसमें पाठ्य विधि का अनुसरण करने और विद्यार्थियों को "अनुशासित" रखने से ही इतना अवकाश नहीं मिलता कि व्यक्तिशः निर्देशन दिया जा सके। यह कहना उचित ही होगा कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी ऐसे स्कूलों में बहुत से

अध्यापक अपने छात्रों को भली-भाँति समझते हैं और उनका सुन्दर चरित्र निर्माण करने में उनकी सहायता करते हैं।

जो स्कूल बच्चे के विकास और उसकी गतिविधि पर बल देता है उस स्कूल के अध्यापक को सामूहिक और व्यक्तिगत निर्देशन के रूप में कार्य करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं। जब कि बच्चे अकेले या समितियों में संगठित होकर अनुसंधान या अन्य परियोजनाओं में भाग लेते हैं तो अध्यापक उन्हें देखता है, सुझाव देता है और प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार जो मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं, उनसे स्कूल निर्देशन में सहायता मिलती है।

प्रारंभिक स्कूल में निर्देशन के विशेष रूप

यद्यपि निर्देशन पूरे प्रारम्भिक स्कूल के जीवन तक चलने वाली प्रक्रिया है, फिर भी निर्देशन सेवा के कुछ निश्चित कार्य हैं, जिनका पालन करना चाहिए।

स्कूल में दीक्षा कार्य जो बच्चा सीधा घर से स्कूल में आता है, उसे बहुत से तालमेल करने होते हैं। वह एक नये और विस्तृत वातावरण में प्रवेश कर रहा है, वह दिन के अधिकाँश भाग के लिये माँ-बच्चे के प्रेम की सुरक्षा का परित्याग कर रहा है जिसको उसने अब तक उपभोग किया होगा, उसकी कार्य की स्वतन्त्रता में कटौती की जा रही है और उसे दूसरे—सम्भवतः भिन्न—लड़के-लड़कियों के साथ मिल कर स्कूल के लचीले नियमों का पालन करना पड़ता है और उसे ऐसे कार्यों में भाग लेना पड़ता है जो उसके लिए अपेक्षाकृत कठिन होते हैं।

संकोचशील, अत्यन्त सुरक्षित बच्चा खोया-खोया सा अनुभव करता है और बिगड़ा हुआ अग्रगामी बच्चा विरोध कर सकता है। सबको माँ के प्रेम और देखभाल की आवश्यकता होती है। प्रथम वर्ष की श्रेणी का अध्यापक शनैः-शनैः बच्चों को इस नई स्थिति के अनुकूल बनाने और इसमें रस लेने में सहायता देता है। जो बच्चे नर्सरी स्कूल और किंडरगार्टन में पढ़ चुके होते हैं वे समन्वय की ऐसी कठिनाइयाँ तब तक अनुभव नहीं करते जब तक कि प्रारम्भिक स्कूल नये भवन में न हो और स्कूल से पूर्व के अध्ययन और प्रारम्भिक स्कूल के अध्ययन में बहुत बड़ा अन्तर न हो।

अगले स्कूल स्तर से समीकरण स्कूल में प्रारम्भिक स्कूल के "वरिष्ठ" ने अपने लिए एक स्थान बना लिया है, वह संभवतः नेतृत्व के कार्यों में भाग लेता है, उसके छोटे सहपाठी उसे सम्मान से देखते हैं। अगले उच्चतर स्कूल में "नया-नया" दीखना औसत किशोरों या नवयुवकों को अच्छा नहीं लगता। इस स्थिति के लिए उन्हें तैयार करना चाहिये और माध्यमिक स्कूल तथा उसकी पाठ्य विधि का सर्वश्रेष्ठ चुनाव करने में उनकी सहायता करनी चाहिए। परामर्शदाता (यदि कोई हो तो) की सहायता से स्नातक कक्षा के अध्यापक को एक स्कूल से दूसरे स्कूल में वांछनीय परिवर्तन करने के कार्य में बच्चे को सहायता देने के लिए अगले स्कूल के साथ सहयोग करना चाहिए। नये स्कूल में बच्चों के लिए जाने-आने और प्रारंभिक

स्कूल में माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों और छात्रों के आने से यह कार्य हो सकता है। नये स्कूल के कार्यों का वर्णन करने वाली पुस्तक-पुस्तिकाएँ तथा अन्य मुद्रित या लिखित सामग्री सहायक सिद्ध हो सकती है।

मोंटेवेलो, कैलिफोर्निया के स्कूलों में प्रयोग के लिए जिस समीकरण विधि की सिफारिश की गई है, वह प्रारम्भिक स्कूल से जूनियर हाई स्कूल में विद्यार्थी के स्थानान्तरण को अधिक सरल बनाने की दृष्टि से सुझावों के रूप में यहाँ प्रस्तुत की जा रही है :

समीकरण कार्यक्रम

विद्यार्थी को प्रारम्भिक स्कूल से जूनियर हाई स्कूल में जाने पर एक पूर्णतया नवीन शैक्षिक अनुभव प्राप्त होता है। जूनियर हाई स्कूल के कार्यक्रम से विद्यार्थियों और अभिभावकों को पूर्णतः परिचित कराने का प्रयत्न किया जाता है।

१. प्रस्तावित कार्यविधियाँ

(अ) स्कूल में आवागमन

१. जूनियर हाई स्कूल के आचार्य, उप आचार्य और छात्र-नेता प्रत्येक प्रारम्भिक स्कूल में आते-जाते हैं।

२. छठी श्रेणी के छात्र, उनके अध्यापक और आचार्य जूनियर हाई स्कूल के दौरे पर आधा दिन व्यतीत करते हैं।

३. स्कूल के अंतिम छः सप्ताहों में यह दौरा विशेषतः होता है।
   (अ) तारीख सम्बन्धित आचार्यों द्वारा निश्चित की जाती है।

४. छठी श्रेणी के खेल दिवस।

(ब) तथ्यों का स्थानान्तरण

१. छठी श्रेणी की अध्यापिका अपनी कक्षा के लिए स्तरीकृत सूचना-पत्र तैयार करती है।
   (अ) नवें स्कूल मास के अन्त तक जूनियर हाई स्कूल को भेजे जाते हैं।

२. वर्ष के अन्त में संग्रहात्मक वृत्त की पुस्तिका जूनियर हाई स्कूल को भेजी जाती है।

३. समस्या से सम्बन्धित मामलों पर विशेष रिपोर्ट और पूरक जानकारी।

४. समस्त आलेख्य वृत्त सहकारी अधीक्षक के कार्यालय द्वारा भेजे जाते हैं।

(स) अध्यापकों में विचार-विमर्श

१. छठी या सातवीं कक्षा के अध्यापक उच्चारण की समस्या पर विचार-विनिमय करते हैं।

२. एक-दूसरे के कक्षों में जाते हैं।

३. छठी श्रेणी के अध्यापक को सातवीं श्रेणी के जूनियर हाई स्कूल की निर्देशन समिति में सम्मिलित कर लिया जाता है।

(द) अभिभावकों की गतिविधियाँ

१. सिफारिश की गई है कि जूनियर हाई स्कूल के आचार्य और उप-आचार्य प्रारम्भिक पी० टी० ए० के सम्मुख भाषण देंगे।
   (क) वसंतकालीन सभा में।
   (ख) छठी श्रेणी के अभिभावक विशेष रूप से आमंत्रित किये जाते हैं।
२. जूनियर हाई स्कूल पी० टी० ए० में सातवीं श्रेणी के छात्र होते हैं।
   (क) वसंतकालीन सभा में।
   (ख) छठी श्रेणी के अभिभावक विशेष रूप से आमंत्रित होते हैं।
३. अभिभावक सम्मेलन।

परीक्षण कार्यक्रम प्रारम्भिक स्कूल में बच्चे के प्रवेश से प्रारम्भ करके उसके अध्ययन काल तक समय-समय पर भली-भाँति चुने गये स्तरीकृत परीक्षणों तथा जाँच के अन्य उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। इनमें बुद्धि और अध्ययन तत्परता के परीक्षण, सफलता परीक्षाएँ और व्यक्तिगत तथा रुचि सूचियों की जाँच की जानी चाहिए। अध्यापक के लिखित निरीक्षण और इन परीक्षणों के परिणाम बच्चे के अध्ययन और तालमेल के निर्देशन के लिए आधार का कार्य करते हैं।

संग्रहात्मक वृत्त स्कूल में प्रत्येक बच्चे की पृष्ठभूमि के इतिहास, शारीरिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी इतिहास, व्यक्तित्व की विशेषताएँ और स्कूल में की गई प्रगति का सावधानी और शुद्धता से तैयार किया गया वृत्त रखना चाहिए। यह वृत्त एक कक्षा से दूसरी कक्षा तक संग्रहात्मक होना चाहिए और अगले जिस स्कूल में बच्चा जाता है, उसको सौंप दिया जाना चाहिए। इस वृत्त के तथ्य उन सब लोगों के लिए उपलब्ध होने चाहिएँ जो बच्चे के विकास के लिए उत्तरदायी हैं और उनका अध्ययन किया जाना चाहिए। बच्चे के प्रति ग्रहण किये गये रवैये का निर्देशन उससे सम्बन्धित उस जानकारी के द्वारा किया जाना चाहिए जो उसके वृत्त में होता है।

उपचारात्मक निर्देशन जब बच्चा स्कूल में प्रवेश करता है और उस समय वह शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत है तो उसे अध्ययन सम्बन्धी सफलता प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होगी बशर्ते कि पाठ्यक्रम की सामग्रियों और अध्ययन की कार्यविधियों का तालमेल उसकी योग्यता के अनुसार किया जाय और उसकी लम्बी बीमारी उसकी प्रगति में बाधक न हो। अधिकांश छात्रों के लिए यह आदर्श स्थिति हो सकती है, किन्तु सबके लिए नहीं। जिन बच्चों की अध्ययन स्थिति निश्चित होती है, उनके लिए समुचित उपचारात्मक अवसरों की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि बच्चे अपने अध्ययन में कोई खाई अनुभव न करें या कार्य की आगामी इकाई को समझने और उसमें सफलता प्राप्त करने में असफल होने के फलस्वरूप निराश न हो जायें।

कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ अधिकाधिक प्रारम्भिक स्कूल बच्चों को कक्षा से बाहर की कुछ ऐसी गतिविधियों में तल्लीन होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो हाई स्कूल के जीवन में सामान्य होती हैं। अध्यापक-छात्र के स्कूल-प्रशासन के सरल रूप, अभिरुचि क्लब, नाटक, स्कूल या कक्षा के समाचार-पत्र की तैयारी, व्यक्तिगत विवरण रखने और समुदाय द्वारा परिचालित परियोजनाओं में योग, अथवा कुछ कक्षा के अंदर की और कुछ कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ प्रारम्भिक स्कूल के बच्चे में अपने स्कूल के प्रति ममता का विकास करने में सहायक होती हैं।

अभिभावकों का सहयोग आचार्य और अध्यापक का अभिभावकों के साथ घनिष्ठ सहयोग होना चाहिए और बहुत से प्रारम्भिक स्कूलों में यह प्राप्त किया जा चुका है। प्रारम्भिक स्कूल के स्तर पर अभिभावकों और अध्यापकों की संस्थाएँ बहुत सक्रिय हैं और रचनात्मक कार्य कर रही हैं। इन आयु के वर्षों में भी बच्चे के जीवन पर घर का मुख्य प्रभाव रहता है। अभिभावक-अध्यापक की मासिक सभाएँ, अभिभावकों का स्कूल में आवागमन, स्कूल दिवस में अपने बच्चों की गतिविधियों का निरीक्षण, सम्मेलन ऐसे आवश्यक साधन हैं जो घर और स्कूल में बच्चे के चतुर्मुखी विकास के लिए अनिवार्य हैं।

सक्रिय निर्देशन कार्यक्रम अपने इस वक्तव्य की पुष्टि के लिए कि प्रारम्भिक स्कूल में निर्देशन सेवाएँ अपने लिए महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रही हैं, हम इस स्तर पर सक्रिय कार्यक्रम प्रस्तुत करके इस अध्याय को समाप्त कर रहे हैं। यह विकिटा, कंसास का कार्यक्रम है :

> यह लिखते समय कुछ परामर्शदाता ऐसे हैं जो प्रारम्भिक स्कूलों में सारा समय निर्देशन कार्यों पर लगाते हैं। ऐसी योजना है कि आगामी वर्ष इस संख्या में वृद्धि कर दी जाय। प्रत्येक परामर्शदाता छः से लेकर आठ स्कूलों तक में कार्य करता है। शेष प्रारम्भिक स्कूलों में इंटरमीडियेट स्कूलों के परामर्शदाता अंशकालीन आधार पर कार्य करते हैं। प्रत्येक इंटरमीडिएट परामर्शदाता अनेक प्रारम्भिक स्कूलों में कार्य करता है।
>
> किंडरगार्टन से लेकर प्रारम्भिक कक्षाओं तक निर्देशन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बहुत से व्यक्ति जिनके जीवन में आगे चलकर भावनात्मक असंतुलन उपस्थित होते हैं उनकी समस्याओं की जड़ें शैशवकाल तक जाती हैं। यह आशा की जाती है कि यदि प्रारम्भिक स्कूलों में विद्यार्थियों को निर्देशन सेवाओं का कार्यक्रम उपलब्ध हो सके तो इनमें से बहुत-सी समस्याएँ या तो मिट जायेंगी, या सुलझ जायेंगी।

परामर्श कार्य

सामान्य

१. व्यक्ति के स्कूली जीवन से सम्बन्धित समस्याओं पर विद्यार्थियों, अध्यापक और अभिभावकों से वार्तालाप करना।

२. उन बच्चों से परामर्श करना जो मानसिक और/या सामाजिक रूप से असंतुलित है।
३. बाद के साक्षात्कारों और सामुदायिक अभिकरणों में भेजने की व्यवस्था करना।
४. स्कूल और सामुदायिक-स्रोतों के मध्य सम्पर्क साधना।
५. सम्बन्धित बच्चों की सामाजिक और भावनात्मक समस्याओं के विषय में अध्यापकों, आचार्यों और अभिभावकों से सिफारिश करना।
६. व्यक्तिगत मामलों के विषय में रिपोर्ट और सम्बन्धित सूचना के वृत्त तैयार करना।
७. मामले का अध्ययन करने में अध्यापकों और आचार्यों को सहायता देना। समस्या से सम्बन्धित घर के प्रभावों और वातावरण के तत्त्वों की जाँच करना, रिपोर्ट करना और व्याख्या करना।
८. अध्यापकों और प्रशासकों को व्यवहार के कारण समझाना।

परीक्षण

१. प्रत्यक्ष उद्देश्यों के लिए व्यक्तिगत परीक्षणों जैसे बिनेट, विस्क. वेशलर, कोलम्बिया मानसिक परिपक्वता आदि परीक्षण लेना और उनकी व्याख्या करना।
२. अध्यापकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों को परीक्षण के परिणामों की व्याख्या करके बताना।
३. परीक्षणों और परीक्षणों की सूचना विषयक समस्याओं पर अध्यापकों से बात करना।

यह स्मरण रखना रखना चाहिए कि एक परीक्षा बच्चे की योग्यताओं और कमियों का अचूक प्रमाण नहीं है। बच्चे की क्षमताओं को नापने की यह केवल एक रीति है। असंतुलित बच्चे को ठीक करने के लिए उसका परीक्षण करना अनिवार्य नहीं है, किन्तु परीक्षण करने से पूर्व यथासंभव व्यवहार और वातावरण से सम्बन्धित सब तथ्य एकत्रित कर लेने चाहिएँ। फिर यदि परीक्षण वांछनीय प्रतीत हो तो ले लेना चाहिए। परीक्षण का परिणाम सदैव गोपनीय रखना चाहिए।

शैक्षिक निर्देशन

१. तैयारी करने, रोकने, वृद्धि करने या विशेष कमरे में रखने विषयक मामलों में अध्यापकों, आचार्यों और अभिभावकों से बात करनी चाहिये।

शारीरिक स्वास्थ्य शिक्षा

१. मानसिक शिक्षा के विचार की व्याख्या अध्यापकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों से करते हैं।

२. खिचाव उत्पन्न करने वाली स्कूल की परिस्थिति का विश्लेपण करते हैं।
३. बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अभिभावकों से सामूहिक स्थितियों में बात करते हैं।
४. मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य से सम्बन्धित क्षेत्रों में सामुदायिक कार्यों में भाग लेते हैं।

उपस्थिति की गतिविधियाँ

१. शरारती लड़कों से साक्षात्कार करते हैं और आचार्य के अनुरोध पर कारणों का विश्लेषण करते हैं।
२. कारणों की खोज और अभिभावकों से सम्पर्क करने के लिए घरों पर जाते हैं।
३. ऐसे परिचित और शक्तिशाली छात्रों से—उन्हें रोकने के लिए—कार्य करते हैं जो बीच में ही पढ़ाई बंद कर देते हैं।

नवीनीकरण गतिविधियाँ

१. सातवीं श्रेणी में प्रवेश करने वाले (छठी श्रेणी के) नये विद्यार्थियों के लिए नवीनीकरण कार्यक्रम का नियोजन, संगठन और निरीक्षण।
२. किंडरगार्टन स्तर पर अभिभावकों के नवीनीकरण कार्यक्रम में भाग लेना।

अन्य कर्मचारियों से सम्बन्ध

१. शारीरिक कारणों या कमियों से सम्बन्धित समस्याओं का पता लगाने के लिए स्कूल की स्वास्थ्य-नर्स के साथ मिलकर कार्य करते हैं।
२. स्कूल की नीति की व्याख्या करने और भेजे गये समस्या-पीड़ित बच्चों की सार-संभाल करने में कक्षा और प्रशासन कर्मचारियों में सम्पर्क स्थापित करना।
३. व्यवहार सम्बन्धी कठिनाइयों को जन्म देने वाले लक्षणों की खोज करने में अध्यापक की सहायता करना।

सार्वजनिक सम्पर्क

१. सामुदायिक समूहों में भाषणों के द्वारा समुदायों और स्कूल के मध्य सहमति का विकास करना।
२. अध्ययन गोष्ठियों और पी० टी० ए० के कार्यों द्वारा अभिभावकों की शिक्षा के कार्यक्रम में भाग लेना।

लिपिक सम्बन्धी कर्त्तव्य

१. व्यक्तिगत परीक्षण के तथ्यों को लिपिबद्ध करता है।
२. मामले के अध्ययन के विवरण को लिपिबद्ध करता है।
३. सामुदायिक अभिकरणों को आवश्यक सूचनाएँ भेजता है।

४. सामाजिक सेवा विनिमय में कुछ बच्चों को पंजीकृत करता है।
५. व्यक्तिशः छात्रों के सम्बन्ध में की गई खोजों और सिफारिशों को लिखता है।
६. प्रार्थना के अनुसार केन्द्रीय कार्यालय को रिपोर्ट प्रस्तुत करता है।
७. परामर्श कार्य के सम्बन्ध में निरन्तरता बनाये रखने के लिए साक्षात्कार द्वारा प्राप्त आवश्यक तथ्यों को लिखता है।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. आलोचनात्मक रूप से इस बात पर विचार कीजिए कि प्रारम्भिक स्कूल में संगठित निर्देशन का कोई स्थान नहीं है।
२. प्रारम्भिक स्कूल का आयु के एक लड़के और एक लड़की का चुनाव कीजिए जो आपके परिचित हों। उनके कुछ रवैयों और व्यवहारों का वर्णन कीजिए। इस अध्याय में वर्णित और उनके द्वारा प्रदर्शित कुछ व्यवहार सम्बन्धी लक्षणों के उदाहरण दीजिए।
३. निर्देशन में रुचि रखने वाले अध्यापक द्वारा संग्रह की प्रवृत्ति का उपयोग अध्यापक के रूप में कैसे किया जा सकता है?
४. "गिरोह" प्रवृत्तियों के विषय में क्या किया जाना चाहिए?
५. बच्चे के रूप में आपकी व्यावसायिक अभिरुचियाँ क्या थीं? उनका क्या कारण था? उनका क्या हुआ?
६. प्रारम्भिक स्कूल स्तर पर जिन्हें आप निर्देशन का आधार मानते हैं, उन उद्देश्यों के चार वक्तव्यों को क्रियान्वित कीजिए।
७. जिस प्रारम्भिक स्कूल में आप पढ़ते थे, उसमें की गई निर्देशन सेवाओं का मूल्यांकन कीजिए।
८. प्रारम्भिक स्कूल के अध्यापक के कम से कम दस निर्देशन कार्य बताइये।
९. प्रारम्भिक स्कूल के परम्परागत कार्यक्रमों की तुलना नये कार्यक्रमों से निर्देशन सेवाओं की दृष्टि से कीजिए।
१०. तालमेल की ऐसी चार समस्याएँ बताइये जो घर में उत्पन्न होकर स्कूल की चिन्ता का विषय बन सकती हैं। इनमें से प्रत्येक के विषय में क्या किया जा सकता है?
११. प्रारम्भिक स्कूल के समस्त छात्रों की समय-समय पर स्तरीकृत परीक्षाएँ क्यों की जानी चाहिएं?
१२. कितनी बार बुद्धि की परीक्षा ली जानी चाहिए? क्यों?
१३. बीस मिनट तक एक बच्चे का निरीक्षण कीजिए। अपने निरीक्षण का विवरण लिखिये। इस निरीक्षण के फलस्वरूप आप किस निष्कर्ष पर पहुँचे। एक मास पश्चात् किसी दूसरी स्थिति में उसी बच्चे का निरीक्षण कीजिए। दूसरे निरीक्षण का वृत्त लिखने के पश्चात् दोनों में तुलना कीजिए। दोनों के निष्कर्षों में क्या भेद हैं? इस भेद की व्याख्या आप कैसे करते हैं?
१४. अभिभावक-अध्यापक संघ स्कूल की किस प्रकार सहायता कर सकता है? स्पष्ट रूप से बताइए।

१५. कार्यक्रम के रूप में मामले का अध्ययन :

१ फ़रवरी से एक प्रारम्भिक स्कूल में आपकी नियुक्ति पूरे समय के परामर्शदाता के रूप में हुई है। इस सत्र में आपने स्कूल की नीतियों, निकायों के रवैयों, विद्यार्थियों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं और ऐसी अन्य सम्बन्धित सूचनाओं से परिचित होने का प्रयत्न किया है जिससे आप अपना कार्य अच्छे रूप में प्राप्त कर सकें। आप स्कूल में गये, आचार्य और स्कूल मंडल के समन्वयकर्त्ताओं से वार्तालाप किया, निकाय की सभाओं में सम्मिलित हुए और कुछ अध्यापकों तथा छात्रों से बात की। अपने अध्ययन के फलस्वरूप, आपने कुछ तथ्य इकट्ठे किये और स्थिति के सम्बन्ध में कुछ सामयिक निर्णयों पर पहुँचे।

यह प्रारम्भिक स्कूल किंडरगार्टन ६वीं स्कूल है जिसमें छात्रों की संख्या १५०० लड़के-लड़कियों के लगभग है। यह "किनारे" के क्षेत्र में स्थित है। छात्रों की एक छोटी अल्प-संख्या इन व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है जिनकी दूसरी या तीसरी पीढ़ी पढ़ रही है और वे शैक्षिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवारों के बच्चे हैं। कुछ बच्चे "अच्छे" परिवारों के हैं; उनके माता-पिता अपने पड़ोस में अपेक्षाकृत नये हैं। लगभग एक-तिहाई छात्रों के अभिभावक आर्थिक कठिनाइयों में हैं ; उन्हें शक्षिक लाभ भी कम ही प्राप्त हुए हैं किन्तु अपने बच्चों के विषय में महत्त्वाकांक्षी हैं। छात्रों की अधिक संख्या में ऐसे बच्चे हैं जिनके परिवार नगर-पालिका द्वारा अल्प आय वाले व्यक्तियों के लिए बनाये गये मकानों में रहते हैं। इन बच्चों में से कुछ के अभिभावक अपने बच्चों के कल्याण में नगण्य रुचि लेते हैं। विविध जातियों, राष्ट्रों और समुदायों के बच्चे इस स्कूल में पढ़ते हैं। विद्यार्थियों में योग्यता की दृष्टि से भी भारी अन्तर है, जिनमें से अधिकांश की प्रवृत्ति निम्नतर मानसिक स्तर की ओर है।

वर्तमान स्कूल वर्ष के प्रारम्भ होने तक यह ८वीं स्कूल था। आजकल आचार्य, सहायक आचार्य, पुस्तकालयाध्यक्ष सहित निकाय में ४१ स्त्रियाँ और ४ पुरुष हैं। ४२ अध्यापकों में से आठ स्थानापन्न रूप में कार्य कर रहे हैं, दस नये नियुक्त हुए हैं और नौ की आयु ५७ और ६८ के मध्य है। आधे से अधिक छात्र किंडरगार्टन से लेकर दूसरी श्रेणी तक में हैं। छठी श्रेणी की केवल दो कक्षाएँ हैं। आचार्य, उच्चतर श्रेणी के अनेक अध्यापक और एक किंडरगार्टन का अध्यापक स्कूल के स्नातक हैं। ७वीं और ८वीं श्रेणियों की कमी तथा परिवर्तनशील छात्रों को स्वीकार करना उनके लिए कठिन नहीं है। स्कूल का भवन पुराना है और पंजीकरण में प्रत्याशित वृद्धि के लिए अपर्याप्त है, क्योंकि पड़ोस के निजी मकान शनैः-शनैः भवन-परियोजनाओं में सम्मिलित किये जा रहे हैं और अधिक बड़ी स्कूल भूमि पर नये भवन के निर्माण की योजनाएँ पूरी हो चुकी हैं। किंडरगार्टन की अध्यापिका कुमारी एल० पुराना भवन गिराने के विरुद्ध हैं और भवन-निर्माण की वर्तमान योजनाओं को ठप्प करने में अन्य भूतपूर्व स्नातकों का साथ दे रही हैं। इसके फलस्वरूप अभिभावक-अध्यापक संघ के इन नये सदस्यों और भवन के पक्षपाती सदस्यों के मध्य मतभेद खड़ा हो गया है। अभिभावकों के रवैयों का बच्चों के—विशेषतया उच्चतर श्रेणियों के बच्चों के—पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ रहा है। स्थिति गंभीर होती जा रही है। कुछ नवयुवक अध्यापक उन अभिभावकों और बच्चों का पक्ष ले रहे हैं जो नया भवन चाहते हैं जबकि उनके पुराने और अधिक रूढ़िवादी साथी इनके विरुद्ध हैं। संघर्ष इतना बढ़ गया है कि स्कूल का स्तर, अध्यापन की विधियाँ और विद्यार्थियों का व्यवहार भी इसकी लपेट में आ गये हैं।

आचार्या श्रीमती आर० एक योग्य, न्यायप्रिय महिला हैं। यद्यपि स्कूल में होने वाले अनेक परिवर्तनों पर उन्हें खेद है, वे समझती हैं कि परिवर्तन अनिवार्य थे। निर्देशन में वे रुचि रखती हैं, और सातवीं और आठवीं श्रेणी के छात्रों के लिए परामर्श-सेवाओं के पर्याप्त कार्यक्रम की स्थापना में सक्रिय सहयोग देती रही थीं; इनमें से बहुत से छात्र कालेज के अच्छे छात्र सिद्ध होने वाले थे। किन्तु भूतकाल में निम्नतर श्रेणियों के लिए वे निर्देशन सेवाओं की कोई आवश्यकता नहीं समझती थीं; केवल कक्षा के रुचि रखने वाले विवेकशील अध्यापक द्वारा किये गये कार्य को

ही वे पर्याप्त समझती थीं। अब उनके सामने प्रशासकीय, निरीक्षण सम्बन्धी और निर्देशन की समस्याएँ हैं जिन्हें सुलझाना कठिन हो रहा है।

आचार्या ने अपने स्कूल में आपकी नियुक्ति की माँग की थी और निम्नलिखित क्षेत्रों में अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह के लिए आपकी सहायता पर निर्भर कर रही हैं :

१. निकाय के सदस्यों, अभिभावकों और पुराने छात्रों के तनावपूर्ण सम्बन्धों में।
२. प्रथम और द्वितीय श्रेणियों के बच्चों की अध्ययनतत्परता में बढ़ता हुआ अंतर।
३. कुछ विद्यार्थियों का अनियंत्रित व्यवहार।
४. अधिकाधिक छात्रों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की कठिनाइयाँ।
५. परम्परागत और अधिक आधुनिक अध्यापन विधियों में किये जाने वाले समन्वय की राशि और प्रकार।
६. आचार्या के नव-नियुक्त सहकारी श्री के० का रवैया और शैक्षिक दर्शन, जो श्रीमती आर० के मतानुसार, अपनी निजी व्यावसायिक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अपनी नीतियाँ और कार्यविधियाँ प्रचलित करना चाहता है।

इस मामले की समस्या को भली-भाँति पढ़ने के पश्चात् अपने उत्तर को निम्न प्रकार से सारबद्ध कीजिए :

(१) स्थिति का मूल्यांकन
  (क) प्रमुख निश्चयात्मक और अनिश्चयात्मक तत्त्व
  (ख) नीति के वे मुख्य मुद्दे जो इसमें सम्मिलित हैं
  (ग) स्पष्ट प्रमुख निर्देशन आवश्यकताएं
(२) सुधार के लिए सुझाव
  (क) वर्तमान परिस्थितियों में जो महत्त्वपूर्ण योग दिया जा सके
  (ख) इस स्थिति के प्रति निर्देशन-केन्द्रित कार्यविधि के विकास के विरुद्ध अत्यन्त संभावित तर्क

१४ जूनियर हाई स्कूल में निर्देशन

माध्यमिक स्तर पर स्कूल संगठन का विस्तार शनैः-शनैः निश्चित रूप से जूनियर हाई स्कूलों की वृद्धि की दिशा में हो रहा है और जूनियर हाई स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़ रही है। यदि एक बच्चा चार वर्ष की आयु में प्रविष्ट होता है और बिना रुकावट के पढ़ता रहता है तो लगभग बारह वर्ष की आयु में वह जूनियर हाई स्कूल के स्तर पर पहुँच जाएगा। चूंकि बहुत से बच्चे प्रत्याशित आयु में नर्सरी स्कूल, किंडरगार्टन या प्रारम्भिक स्कूल में भर्ती नहीं होते और बहुत से बच्चे वार्षिक गति से आगे नहीं बढ़ते, इसलिए जूनियर हाई स्कूल में प्रविष्ट होने वाले छात्रों की आयु में भारी अन्तर होता है, अर्थात् कुछ छात्र कम से कम नौ वर्ष के और अधिक से अधिक सोलह या सत्रह वर्ष के होते हैं।

किन्तु छात्रों के अध्ययन की मंद गति के प्रति आजकल जो रवैया है वह एक कक्षा के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े छात्र के मध्य स्थित अन्तर को छोटा कर रहा है। इस प्रक्रिया से कुछ समस्याएँ सुलझ गई हैं किन्तु कुछ नई समस्याएँ भी उत्पन्न हो गई हैं। एक ही आयु के समूह को कोई पाठ्य विषय पढ़ाना बहुत कठिन नहीं होता किन्तु विद्यार्थियों को सर्वांगीण उन्नति लाभ करने में सहायक होता है तो भिन्न-भिन्न आयु के छात्रों को पढ़ाने में अध्यापक की निपुणता और कुशलता तीव्र कसौटी पर आ जाती है। इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए पाठ्य-सामग्री को विस्तृत व समान रुचियों के आधार पर खड़ा करना होगा न कि विषय की श्रेणियों में उनका विभाजन करना होगा। और यह तभी सम्भव है जब कि शिक्षा का इस प्रकार नियोजन हो कि उसमें अध्ययन की खाइयाँ न रह जाएँ।

जूनियर हाई स्कूलों के कर्त्तव्य

जूनियर हाई स्कूलों का संगठन सबसे पहले बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ था। वे बड़े नगरों में प्रारम्भ हुए और शनैः-शनैः छोटे-छोटे क्षेत्रों में फैल गये।

उनकी स्थापना के समर्थन में बहुत से तर्क दिये गये। जिन समुदायों में इन स्कूलों की स्थापना हुई है उनकी विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार स्कूल के इस रूप के द्वारा उनके उद्देश्यों की सिद्धि हुई है।

प्रत्याशित उद्देश्य इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जूनियर हाई स्कूलों की स्थापना की गई थी :

१. ताकि किशोरावस्था और नवयौवन काल के उपयुक्त शैक्षिक वातावरण की स्थापना की जा सके
२. शिक्षा में समय की बचत की जा सके
३. प्रारम्भिक स्कूल से हाई स्कूल के योग्य शनैः शनैः बनाया जा सके
४. इस बात को रोका जा सके कि आठवीं कक्षा के पश्चात् ही विद्यार्थी स्कूल छोड़कर न चले जाएँ
५. योग्यताओं और अभिरुचियों में व्यक्तिगत भेदों को ध्यान में रख कर सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके
६. व्यावसायिक और शैक्षिक निर्देशन के अवसर प्रदान किये जा सकें
७. शैक्षिक और व्यावसायिक खोज के लिए सुविधाएँ प्रदान की जा सकें। उसके घर के निकटवर्ती स्कूल में ये शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध की जा सकें

नवयुवकों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताएँ विद्यार्थियों को अपने शैक्षिक जीवन में किसी अन्य काल की अपेक्षा इस स्कूल स्तर पर निर्देशन की अधिक आवश्यकता होती है। इस स्तर पर उनके भौतिक और शारीरिक विकास में वे अपनी आकांक्षाओं और आन्तरिक क्षुधाओं को अत्यन्त अनियंत्रित रूप में पाते हैं। वे व्यक्तिवादी हो गये हैं। ऐसा क्यों है, इसका कारण वे स्वयं नहीं समझ पाते। वे अपने से विरोधी लिंग के सदस्यों की उपस्थिति से संकोच अनुभव करते हैं, और ऐसा क्यों होता है, यह वे समझ नहीं पाते। वे नहीं जानते कि उनकी व्यग्रता का क्या कारण है, किन्तु वे चाहते हैं कि वे निरन्तर सक्रिय रहें, चलते रहें, दौड़ते रहें, बातें करते रहें और हँसते रहें। उन्हें एक क्षण एक विषय में गहरी रुचि है तो दूसरे ही क्षण दूसरे विषय में। जब तक अध्यापक एक नवयुवक के प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले असहयोग पूर्ण व्यवहार पर ध्यान देता है तभी दूसरा इसी प्रकार की अन्य विघ्नकारी स्थिति उत्पन्न कर देता है। अध्यापक उनसे सोच-विचार करने के लिए अनुरोध करता है, किन्तु उसका कोई लाभ नहीं होता। अध्यापक कठोर कार्यवाही की धमकी देता है। अन्त में, भावनात्मक नियंत्रण का अभाव प्रदर्शित करते हुए अध्यापक अधीर हो उठता है, जिससे स्थिति और बिगड़ जाती है।

एक सत्र या पूरे एक वर्ष तक लड़के और लड़कियाँ तथा उनकी कक्षा का अध्यापक मिल-जुलकर एक साथ रहते हैं। उन्हें एक ऐसी स्वीकार्य व्यवस्था खोज निकालनी चाहिए जिससे अध्यापक उन्हें पढ़ा सके और छात्र तत्कालीन नियम-उप-नियमों के आधीन आराम से पढ़ सकें। निर्देशन व्यवहार की महान् आवश्यकता है।

बुद्धिमान अध्यापक इस प्रकार का नेतृत्व देता है जिससे कि ये सक्रिय, व्यग्र, हठी, सृजनात्मक बच्चे अपने हित में और समस्त समूह के लाभ के लिए काम करने वाले अच्छे विद्यार्थियों का संगठन बन जाएँ। अध्यापक को नेता और विद्यार्थियों को पूर्ण सहयोग देते हुए उसका पक्का अनुयायी बन जाना चाहिए। साथ ही उन्हें आवश्यकता पड़ने पर परिवर्तनशील स्थिति में अपना अभिमत व्यक्त करने का अधिकार रहना चाहिए।

जूनियर हाई स्कूल के छात्रों के रवैये जूनियर हाई स्कूल के लड़के और लड़कियाँ नवजीवन से भरपूर होते हैं और कभी-कभी तो उन पर नियन्त्रण करना कठिन हो जाता है। वे स्वयं को अभिव्यक्त करना चाहते हैं और उन्हें अपने विचारों, अभिरुचियों और भावनाओं को प्रकट करने के अवसर देने चाहिएँ। उनमें ऐसे आन्तरिक्त दबाव का विकास हो रहा है जो उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से सक्रिय रखता है। अधिकांश नवयुवकों और नवयुवतियों में लैंगिक वासना अभी परिपक्व नहीं होती, किन्तु उसमें गहनता आने लगती है। वे विरोधी लिंग के सदस्यों के प्रति अपने सम्बन्धों में नया रवैया अनुभव करने लगते हैं। यदि लड़के के बालों की माँग निकल रही है और लड़की के बालों की संवारने की शैली प्रतिदिन बदल रही है तो स्पष्ट है कि वे दूसरों पर अपनी छाप डालने के सम्बन्ध में जागरूक हैं।

परिधान लड़की के लिए पूर्णतया महत्त्वपूर्ण हो जाता है और वह अपनी घनिष्ठ सहेली के साथ हिलमिल कर चलने लगती है। लड़का अपने लैंगिक व्यवहारों का परिचय उस समय तक नहीं देता जब तक कि वह सीनियर हाई स्कूल में नहीं पहुँच जाता, उस समय वह जीव विज्ञान और शारीरिक प्रक्रिया की दृष्टि से उस अवस्था को पहुँचता है जिस अवस्था को लड़कियाँ जूनियर हाई स्कूल में पहुँच जाती हैं। यही कारण है कि वह यह नहीं समझ सकता कि लड़कियाँ अब इतनी संकोचशील क्यों होती हैं और वे प्रारम्भिक स्कूल की भाँति अब उसके साथ न खेल कर पृथक टोली क्यों बनाती हैं।

जूनियर हाई स्कूल के समस्त अध्यापकों को इन किशोर और नवयुवक छात्रों द्वारा प्रदर्शित रवैयों को समझने की आवश्यकता है। पाठ के घण्टों में यौवनकालीन शक्ति और उत्साह के प्रयोग का उन्हें अवसर दिया जाता है। चतुर अध्यापक अपने विद्यार्थियों को सब के लिए समान समस्याओं पर अपने निर्देशन में मिल कर कार्य करने के लिये प्रेरित कर सकता है। गृह-कक्ष के अध्यापक को आत्म-निर्दिष्ट घण्टों में व्यवहार पर अधिक नियन्त्रण करने के कार्य में उनका निर्देशन करना चाहिये।

आत्म-अनुशासन के लिए निर्देशन छात्र के लिये ऐसे बहुत-से अवसर प्रदान किये जा सकते हैं जब कि वह दूसरों की सहायता के बिना व्यवहार को स्वीकृत रूप से अभिव्यक्त कर सके। स्कूल में अध्यापक नित्य व्यवहार से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करता है और परामर्शदाता इन नवयुवकों का आत्म-अनुशासन के विकास में निर्देशन करने का दायित्व सम्भालते हैं। किन्तु इस बात पर बल दिया

जाना चाहिए कि दंडात्मक उपायों को अपनाने का कार्य परामर्शदाता का नहीं है। उसका कार्य तो केवल निश्चित उपचारात्मक उपायों को अपनाया होता है।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इस स्कूल स्तर पर व्यवहार में सुधार करने के लिये दंड के किसी रूप को अपनाया ही न जाय। जो भी समस्या उत्पन्न होती है, उससे सामान्यतया अध्यापक का सम्बन्ध होता है। यदि व्यवहार की ऐसी समस्याएँ हों जिनका समाधान कक्षा में न हो सके तो स्कूल में परामर्शदाता के अतिरिक्त ऐसा अन्य व्यक्ति होना चाहिये जिसके पास ऐसे छात्र को अनुशासन की कार्रवाई के लिये भेजा जा सके।

अपराध और अपराधी के प्रति अध्यापक के रवैये में उच्चकोटि का भावनात्मक नियन्त्रण और सम्पूर्ण स्थिति को बुद्धिमानी से समझने की क्षमता होनी चाहिए। अध्यापक या स्कूल के अन्य अधिकारी द्वारा की गई अनुशासन की आवश्यक कार्रवाई वस्तुगत और युक्तिसंगत होनी चाहिए। यदि दण्ड दिया जाय तो वह निश्चित हो, अपराधी उसे समझ सके और अपराध से सम्बन्धित हो। इस बात की सावधानी रखनी चाहिये कि एक या कुछ व्यक्तियों के दुराचरण के लिए सारी कक्षा को दंड न दिया जाय और अध्यापन-अध्ययन कार्य में न्यूनतम हस्तक्षेप हो। इसके अतिरिक्त यदि छात्र को अपने व्यवहार पर अधिक नियन्त्रण करने की प्रेरणा प्राप्त नहीं होती तो उस संशोधननात्मक उपाय का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जूनियर हाई स्कूल में निर्देशन कर्मचारी

बहुत से नगरों में जूनियर हाई स्कूलों में छात्रों की संख्या पर्याप्त रूप से बड़ी और बहुरंगी होती है जिसके लिए निर्देशन सेवाओं के अपेक्षाकृत विस्तृत कार्यक्रम की आवश्यकता होती है। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये प्रत्येक—आचार्य और उसके सहकारियों, अध्यापक-परामर्शदाताओं, गृह-कक्ष और विषय अध्यापकों, स्कूल की नर्स और डाक्टर, मनोवैज्ञानिक और मानसिक रोग चिकित्सक, मुख्य परामर्शदाता अथवा निर्देशन के अध्यक्ष, स्कूल के या सार्वजनिक पुस्तकालयाध्यक्ष, अभिभावकों और सामुदायिक अभिकरणों के कार्यकर्त्ताओं—का सहानुभूति और विवेकपूर्ण सहयोग होना चाहिये।

आचार्य और अध्यापक परामर्शदाता इस पहिये की वे धुरी हैं जिसके चारों ओर स्कूल का निर्देशन कार्य चलता है, किन्तु विषय अध्यापक और गृह-कक्ष का प्रमुख (prefect) सर्वकालीन प्रभावशाली व्यक्ति हैं जिनके द्वारा छात्रों पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों, उनकी अभिरुचियों और आवश्यकताओं से पूर्णतया परिचित होना चाहिये, बहुत अधिक असंतुलित छात्रों को सुधार के लिये भेजना चाहिये, उनका संग्रहात्मक वृत्त सब प्रकार से पूर्ण रखना चाहिये। आवश्यकता पड़ने पर अभिभावकों से मिलना चाहिये और कक्षा के प्रत्येक छात्र के स्तर के अनुकूल अपने अध्यापन का समन्वय करना चाहिये।

स्कूल की नर्स, मनोवैज्ञानिक, डाक्टर और मानसिक रोग चिकित्सक विशेषज्ञ का कार्य करते हैं। मुख्य परामर्शदाता या निर्देशन का अध्यक्ष प्रशिक्षित व्यक्ति होता है जो (१) स्कूल के निर्देशन कार्यों का निर्देशन करता है, (२) अध्यापकों द्वारा परामर्श के लिए उपलब्ध होता है, और (३) तालमेल की कठिन समस्याओं से पीड़ित विद्यार्थियों से वार्तालाप करता है। आचार्य और मुख्य परामर्शदाता को समाज में उपलब्ध अभिकरणों की जानकारी होनी चाहिये और उस समय तथा परिस्थितियों से परिचित होना चाहिए जिनमें विचाराधीन व्यक्तियों को उनके पास भेजा जा सकता है। स्कूल की या सार्वजनिक पुस्तकालयाध्यक्षा इस शैक्षिक पहिये की महत्त्वपूर्ण अंग है। जिन मामलों में पुस्तकालय के उपयोग की आवश्यकता होती है, उन पर विचार करते समय उसे भी सम्मिलित कर लेना चाहिये। निर्देशन के समस्त कर्मचारी अभिभावकों से परिचित होने चाहियें और जिस छात्र की समस्या पर विचार किया जाना हो उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का ज्ञान सब लोगों को होना चाहिए।

दीक्षा के रूप में निर्देशन

बहुत से बच्चों को नये स्कूल में प्रवेश करते समय झिझक होती है। अपने पुराने मित्रों के साथ अथवा ऐसी स्थिति में रहने के लिये जिनमें पुराने मित्र हों, वे अनेक विचित्र कार्य करते हैं। जूनियर हाई स्कूल में छात्र एक से अधिक प्रारम्भिक स्कूलों से आते हैं और उनके सम्मुख नवीन तथा विचित्र वातावरण होता है।

स्कूल जाना आनन्दपूर्ण कार्य होना चाहिए। ज्योंही बच्चा एक निश्चित लक्ष्य—उदाहरण के लिए प्रारम्भिक स्कूल से स्नातक होना—पर पहुँचता है तो उसमें यह भावना होती है उसने एक लक्ष्य पूरा कर लिया। किन्तु नये स्कूल स्तर में प्रवेश करने पर आसपास के नये तत्त्वों और पहले से भर्ती किये गये छात्रों द्वारा उसे आभास होता है कि वह बिल्कुल नौसिखुआ है। वह कुछ विचित्र-सा अनुभव करता है, ऊटपटाँग कार्य करता है और सोचता है कि उसे स्कूल में क्यों भर्ती किया गया है (प्रारम्भिक स्कूल तो उसके घर से दूर था ही यह उससे भी दूर है) यदि बच्चे को लड़खड़ाने न दिया जाय तो यह परिवर्तन उसकी परिधि में आ जाता है।

नवीनीकरण कार्यक्रम नवागंतुक का स्वागत करने और उसमें स्कूल के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिये प्रत्येक स्कूल में सुनियोजित कार्यक्रम होता है या होना चाहिये। आचार्य नवागंतुकों से मिलता और उनका स्वागत करता है; निर्देशन का अध्यक्ष उन्हें छोटे-छोटे समूहों में संगठित करके वरिष्ठ (नवीं श्रेणियों के) छात्रों की देख-रेख में सौंप देता है। नये विद्यार्थी शीघ्र ही स्कूल की प्रथाओं को सीख जाते हैं और उस जीवन में आनन्द लेने लगते हैं जिससे कुछ सप्ताह पूर्व वे भयभीत होते थे और संभवतः उसमें भर्ती न होने के लिये आग्रह करते थे।

कुछ स्कूल अनुभव करते हैं कि व्यक्तिगत और व्यक्तिशः तालमेल के लिये बड़ी बहिन और बड़े भाई के रूप में किया गया कार्य अधिक सहायक होता है। जो छात्र वरिष्ठ हो गया है, उसे दूसरों की सहायता करते हुए गर्व का अनुभव होता है,

वह इस बात को समझता है कि नवागंतुक को उसके परामर्श और निर्देशन की आवश्यकता है। इस प्रकार का कार्यक्रम चलाना सरल नहीं है, निर्देशन व्यक्तियों के चातुर्य पर इसकी सफलता निर्भर करती है।

बड़े भाई और बड़ी बहिन के रूप में अपनाया गया रवैया तभी सफल हो सकता है जबकि इससे सम्बन्धित सभी व्यक्ति—अध्यापक, विद्यार्थी और आचार्य—इसमें विश्वास रखते हों और इसके संचालन में सहयोग देते हों। इस कार्यक्रम का विस्तार आगे बढ़ाते रहने की आवश्यकता है। इसके लिए अध्यापकों और वरिष्ठ समूहों की बैटकें दी हुई सहायता के विवरण और मूल्याँकन के लिये होनी चाहियें।

जूनियर हाई स्कूल में नये छात्रों के लिये दीक्षा की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात है उनके प्रारम्भिक स्कूल के अन्तिम वर्षीय जीवन में स्कूल के दौरे कराना। इससे उन्हें नये स्कूल के भौतिक वातावरण, अध्यापकों और कुछ बच्चों से परिचित होने का अवसर मिलता है। जब बाद में वे इस स्कूल में भर्ती होकर आते हैं तो वे उसी स्कूल में अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिये उत्सुक रहते हैं। नये वातावरण में प्रवेश आनन्ददायक भी हो सकता है और अत्यन्त भयप्रद भी। यदि बच्चे को नये स्कूल से तालमेल बिठाने में कठिनाई होती है तो इसका दोष केवल उसी पर नहीं, अपितु उसके लिये जो कुछ किया गया है अथवा जो कुछ नहीं किया गया है, उस पर भी है।

नये छात्रों की दीक्षा का कार्य निर्देशन सेवाओं में एक चरण है जिस पर हमारे अधिकांश जूनियर हाई स्कूलों ने बल दिया है। यहाँ दीक्षा के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये हैं। उदाहरण के लिये, निर्देशक, एम्पोरिया, कंसास ने सातवीं श्रेणी में नये छात्रों को दीक्षा देने के सम्बन्ध में निम्नलिखिन विवरण दिया है :

> जूनियर हाई स्कूल के स्तर पर निर्देशन का एक तत्त्व छात्र की भर्ती है। बसन्त ऋतु में नगर के स्कूलों में छठी श्रेणी की प्रत्येक कक्षा एक दिन जूनियर हाई स्कूल का दौरा करती है। आचार्य या एक परामर्शदाता बताता है कि जूनियर हाई किस प्रकार का होता है और प्रत्येक छात्र सातवीं श्रेणी के छात्र से मिलता है और दिन भर उसका अतिथि रहता है। दिन के अन्त तक वह कक्षाओं में घूम कर अनेक अध्यापकों से मिल चुका है, कैफ्टेरिया में भोजन करता है और भवन को देख चुका होता है, इस प्रकार वह सातवीं श्रेणी में दैनिक दिवस का कार्यकम देख लेता है।

हैगर्स्टाउन, मैरीलैंड में जूनियर हाई स्कूल प्रवेश करने वाले क्षात्रों के लिये विस्तृत नवीनीकरण कार्यक्रम चलाते हैं। उसके उद्देश्य और कार्य-विधियाँ निम्न प्रकार है :

(अ) उद्देश्य	(ब) कार्यविधियाँ
१. नये स्कूल के वातावरण से छात्रों को परिचित होने और तालमेल करने में सहायता देना।	१. छठी श्रेणी के छात्रों को बसन्त—मई में दौरा करने के दिन आमन्त्रित किया जाता है।

(अ) संगठन सम्बन्धी सभा करना
  १. स्कूल के आचार्य, अध्यापकों और परामर्शदाताओं से मिलना
  २. प्राप्त करना
    (क) भवन के फर्श का नक्शा
    (ख) अध्यापकों और विषयों की सूची
    (ग) आगामी वर्ष के लिये सूची कार्ड
    (घ) अन्य सम्बन्धित सूचना-पत्र
(ब) भूतपूर्व छठी श्रेणी के छात्रों के साथ भवन की यात्रा और कक्षाओं का दौरा
(स) छठी श्रेणी के भूतपूर्व छात्र अनौपचारिक कार्यक्रम या गेंद के खेल से मनोरंजन करते हैं
(द) कैफटेरिया में मध्यकालीन भोजन

२. जूनियर हाई स्कूल में छठी श्रेणी के छात्रों के अभिभावकों के लिए अप्रैल में पाठ्यकम, कार्य और निर्देशन की जानकारी प्राप्त करने के लिये खुला भवन ।

३. पी० टी० ए० मई में छठी श्रेणी के छात्रों के अभिभावकों के लिये चाय पान का कार्यक्रम रखता है ।

४. समय-समय पर परामर्शदाता प्रारम्भिक स्कूल को उसके भूतपूर्व छात्रों की स्कूली प्रगति, सामाजिक और व्यक्तिगत तालमेल, महत्त्वपूर्ण सफलताओं और गम्भीर कठिनाइयों के सम्बन्ध में सूचना भेजते हैं ।

५. जूनियर हाई स्कूल को उनके कार्यक्रम के सम्बन्ध में विस्तृत सूचना प्रारम्भिक अध्यापकों को देनी चाहिए ।

६. नये छात्रों के अध्यापकों को स्कूल में आमन्त्रित करते हैं ।

७. जूनियर हाई स्कूल की इकाई के लिये दीक्षा के प्रारम्भ में मई मास में मूनी प्राब्लम चैक लिस्ट का प्रयोग करते हैं । छठी श्रेणी के छात्रों को नये वातावरण से समन्वय करने

में सहायया देने के लिये नये तथ्यों का प्रयोग करते हैं जो वे स्वयं सितम्बर में प्राप्त करेंगे।

२. नये छात्रों को स्कूल की नीतियों, परम्पराओं, कार्य-विधियों, चारित्रिक नियमों, पाठ्यक्रम से बाहर की गतिविधियों से परिचित कराना।

१. सातवीं श्रेणी के नये छात्र को प्रारम्भ में जूनियर हाई हैंड बुक देते हैं।
२. अंग्रेजी में नवीनीकरण इकाई पर या केन्द्रीय कक्षा में स्कूल के प्रारम्भिक तीन सप्ताहों में ये बातें सिखाते हैं।
३. स्कूल के प्रथम दिन स्कूल की पत्रिका का प्रथम अंक नवीनीकरण के सम्बन्ध में तैयार रखते हैं और छात्रों में बाँटते हैं।

३. अधिक प्रभावशाली ढंग से सीखने, अध्ययन करने, पढ़ने के सम्बन्ध में छात्र के ज्ञान में वृद्धि करना।

१. नवीनीकरण इकाई में यह सिखाते हैं।

४. घरेलूपन की भावना प्रदान करना।

१. परामर्शदाता प्रत्येक नये छात्र के लिए एक "बड़ा भाई" या "बड़ी बहन" नियुक्त करते हैं।
२. स्कूल के प्रथम सप्ताह के अन्त में परामर्शदाता सातवीं श्रेणी के छात्रों के सम्मान में आठवीं और नवीं श्रेणी के छात्रों द्वारा एक भोज का आयोजन कराते हैं।
३. व्यक्तिशः छात्रों की सहायता के लिए परामर्शदाता गृह-कक्ष और कक्षा-कक्ष के अध्यापकों के साथ मिल कर कार्य करते हैं।
४. परामर्शदाता और अन्य व्यक्ति विभागों की व्यवस्था करते हैं ताकि
   (क) प्रत्येक विद्यार्थी ऐसे कम से कम दो व्यक्तियों के साथ रखा जाता है जिनसे कि वह परिचित है।
   (ख) लड़के और लड़की की दृष्टि से विभाग संतुलित होते हैं।
   (ग) प्रत्येक प्रेषक स्कूल के छात्रों की समान संख्या लेकर विभागों का संतुलन किया जाता है।

५. वृद्धि और नेतृत्व के लिये अवसर प्रदान करना।

१. योग्यताओं के अनुसार ई० सी० ए० में भाग लेने के लिये अध्यापक प्रोत्साहन देते हैं।

२. समस्त अध्यापक नये अनुभव प्रदान करते हैं जिससे दृश्य साधनों, विषय, परीक्षणों, खेतों की यात्रा या अन्य पद्धति से व्यवसाय का चुनाव किया जा सकता है।

निरन्तर निर्देशन के लिए नियोजन नये स्कूल में प्रवेश लेने के पश्चात् ही जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थी की निर्देशन सेवाएँ समाप्त नहीं हो जातीं। उसे अपने अध्ययन का कार्यक्रम बनाने, अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने, सामाजिक स्थितियों का सामना करने के लिए रुचि और कौशल का विकास करने और शारीरिक खेलों में भाग लेने के लिए सहायता की आवश्यकता पड़ती रहती है। निर्देशन में रुचि रखने वाले अध्यापकों और विशेष रूप से निर्वाचित तथा प्रशिक्षित अध्यापक परामर्शदाताओं की आवश्यकता होती है जो नवयुवक को अपने वर्तमान स्कूल के अनुभवों और भावी शिक्षा की योजनाओं के साथ तालमेल बिठाने में सहायता दे सकें।

लेकिन जूनियर हाई स्कूल, मेरीडन, कनेक्टीकट में निर्देशन कार्यक्रम केवल स्कूल के विद्यार्थी के रूप में नवयुवकों की आवश्यकताएँ पूरी करने में ही सहायता नहीं देता, अपितु स्कूल की और श्रेणियों तथा विषम क्षेत्रों में एकरूपता की दीक्षा पर भी बल देता है। कार्यक्रम इस प्रकार है:

जूनियर हाई स्कूल से पूर्व

छठी श्रेणी के छात्रों पर विचार करने के लिए प्रारम्भिक स्कूल के अध्यापक जूनियर हाई स्कूल के निर्देशन परामर्शदाता से भेंट करते हैं।

छठी श्रेणी के छात्रों को उस नये स्कूल के विषय में दीक्षा दी जाती है, जिसमें वे प्रवेश लेंगे। स्कूल की पुस्तिकाएँ बाँटी जाती हैं:

७वीं श्रेणी

१. पठन-अंक प्राप्ति आइ-क्यू के आधार पर और पिछले वृत्तों तथा छठी श्रेणी के अध्यापक से विचार करके प्राप्त की गई जानकारी के आधार पर छात्रों का मंद, औसत और तीक्ष्ण बुद्धि के समूहों में वर्गीकरण किया जाता है।
२. प्रत्येक विद्यार्थी को एक व्यक्तिगत-तथ्यपत्र दिया जाता है जिसे भरकर उसे निर्देशन परामर्शदाता को लौटाना पड़ता है। प्रत्येक छात्र के साथ एक संक्षिप्त साक्षात्कार होता है ताकि छात्र और परामर्शदाता परस्पर मिलकर एक-दूसरे से परिचित हो जाएँ।
३. जिन छात्रों को ताजा आइ-क्यू या सफलता परीक्षणों के अंक प्राप्त नहीं होते उनकी सामूहिक या व्यक्तिशः परीक्षा ली जाती है। इस प्रणाली के समस्त नये छात्रों की परीक्षा होती है। यह परीक्षा नियमित जूनियर हाई स्कूल परीक्षण कार्यक्रम के अतिरिक्त होती है।

४. समस्यापूर्ण छात्रों के अपवादस्वरूप मामलों का साक्षात्कार पुनः निर्देशन परामर्शदाता द्वारा किया जाता है। अभिभावकों को बहुधा बातचीत के लिए बुलाया जाता है। यदि आवश्यकता हो और अभिभावक स्वीकार करें तो ऐसे बच्चों को नगर के शिशु निर्देशन क्लिनिक में भेज दिया जाता है।

५. जिन विद्यार्थियों का कार्य असंतोषजनक होता है या जिनके असफल होने की आशंका होती है, उनकी स्कूल सम्बन्धी रिपोर्ट उनके अभिभावकों को डाक द्वारा भेज दी जाती है। अंक देने की प्रत्येक अवधि में ये रिपोर्टें भेजी जाती हैं।

६. बहुत से विद्यार्थियों को निर्देशन अधिकारी के पास अन्य समस्याओं—जैसे मंदगति, अत्यधिक अनुपस्थिति, परीक्षा के परिणामों या अध्यापक की सम्मति के अनुकूल क्षमता के अनुसार कार्य न करने, कार्य पूरा करने, उचित आदतों और रवैयों के विकास के लिए भेज दिया जाता है।

७. अभिभावक-अध्यापक-परामर्शदाता सम्मेलन समस्याओं पर विचार करने और ऐसे निश्चयों पर पहुँचने के लिए किये जाते हैं जो छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकें।

८. स्कूल वर्ष की समाप्ति पर विषय के अध्यापकों से कहा जाता है कि वे विकास रवैया, रुचि, योग्यता आदि के सम्बन्ध में अपने विद्यार्थियों का मूल्यांकन करें। आगामी स्कूल वर्ष के लिए विद्यार्थियों का वर्गीकरण करने में इस जानकारी का उपयोग किया जाता है।

८वीं श्रेणी

आठवीं श्रेणी के छात्रों के रूप में निर्देशन कार्यालय विद्यार्थियों से भलीभाँति परिचित होता है, क्योंकि वह उनके साथ एक वर्ष तक कार्य कर चुका होता है।

१. ७वीं श्रेणी के निर्देशन कार्यक्रम की मद ३,४,५,६,७ की कार्यविधि को अपनाया जाता है।

२. विद्यार्थी के "भविष्य" के विषय में निर्देशन परामर्शदाता द्वारा नवीनीकरण वार्ताएँ। पदों, नौकरियों, कालेजों, हाई स्कूल की पाठ्य-विधियों आदि पर वाद-विवाद। ये वाद-विवाद कई दिनों तक अंग्रेजी या सामाजिक अध्ययन की कक्षाओं में चलते रहते हैं।

३. जो विद्यार्थी कालेज की पाठ्य-विधि में रुचि रखते हैं, उन्हें बीजगणित रुचि का परीक्षण देना होता है। इन परीक्षणों के परिणामों पर छात्रों के साथ विचार किया जाता है। कुछ छात्र जो परीक्षा में कम अंक लाते हैं, उन्हें कालेज की पाठ्य-विधि से हटा दिया जाता है। इस अनुत्साह का आधार विद्यार्थी, परीक्षा में प्राप्त अंक, विद्यार्थी का गणित का पिछला

वृत्त और अध्यापक की सम्मति होता है। इस सिफारिश की और सिफारिश के कारण की सूचना साधारणतया अभिभावकों को दे दी जाती है।

४. व्यावसायिक स्कूलों में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों से एक आवेदन-पत्र भरने को कहा जाता है और फिर उनकी एक यांत्रिक परीक्षा ली जाती है। व्यावसायिक स्कूल के छात्रों को विलकौक्स टेकनीकल स्कूल के निर्देशन परामर्शदाता द्वारा दीक्षा दी जाती है। व्यावसायिक स्कूल में छात्र की स्वीकृति परीक्षा के परिणामों और शैक्षिक कार्य में विद्यार्थी की व्यापक योग्यता पर निर्भर करती है।

९वीं श्रेणी

१. वही कार्यविधि जो ७वीं श्रेणी के निर्देशन कार्यक्रम की मद ३-८ में दी गई है।

२. जो विद्यार्थी अपनी पाठ्य-विधि में परिवर्तन करना चाहें वे अंक देने की प्रथम अवधि के अंत में कर सकते हैं।

३. उनके हाई स्कूल का आगामी तीन वर्ष का कार्यक्रम बना लिया जाता है। जिन विद्यार्थियों को कार्यक्रम का निर्माण करने में या अभिभावकों की अपेक्षाओं को समझने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है, वे निर्देशन परामर्शदाता से बातचीत करते हैं।

४. व्यावसायिक स्कूल के आवेदनकर्त्ता उसी कार्यविधि का अनुसरण करते हैं जिसका कि ८वीं श्रेणी के व्यावसायिक स्कूल के आवेदनकर्त्ता।

५. अंकगणित में सफलता परीक्षा अंकगणित के छात्रों की स्कूल वर्ष समाप्त होने के समय ली जाती है जिससे ८वीं श्रेणी की उनकी रुचि से ९वीं श्रेणी में प्राप्त सफलता से तुलना की जा सके।

६. छात्रों का व्यक्तित्व सम्बन्धी मूल्यांकन विविध विषयों के अध्यापकों द्वारा किया जाता है।

७. विद्यार्थी के लिए जो तथ्य महत्त्वपूर्ण होते हैं, वे छात्र से सम्बन्धित लिफाफे में रख दिये जाते हैं जो हाई स्कूल को भेजा जाता है।

परामर्श की विधियाँ

इन वर्षों में नवयुवा अपने, अपने अनुभवों और दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों के विषय में प्रश्न पूछता है। बिना किसी की सहायता के इन प्रश्नों के उत्तर पाने में वह बहुधा अपने आपको असमर्थ पाता है ; वह एक मैत्रीपूर्ण प्रौढ़ की सहायता चाहता है। चाहे यह व्यक्ति अभिभावक हो या अध्यापक। किन्तु जो उसको सर्वश्रेष्ठ सहायता दे सकता है, वह संभवतः स्कूल का परामर्शदाता है जिसके साथ उसने अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिये हैं

जूनियर हाई स्कूल का परामर्शदाता ग्रेट नैक, न्यूयार्क के स्कूलों में प्रयुक्त निर्देशन सेवाओं के विवरण के निम्नलिखित उद्धरण में परामर्शदाता के कार्यों का अच्छा वर्णन किया गया है।

> जूनियर हाई स्कूल के स्तर पर प्रत्येक प्रवेश पाने वाली श्रेणी के लिए एक-एक परामर्शदाता नियुक्त कर दिया जाता है। स्कूल के तीन वर्ष की अवधि तक परामर्शदाता अपनी श्रेणी के साथ प्रगति करता चलता है, उसके पश्चात् वह नये समूह के साथ अपना कार्य प्रारम्भ करता है और पहली बार छठी श्रेणी के स्तर पर नवीनीकरण कार्यक्रम में नये छात्रों से मिलता है। यद्यपि जूनियर हाई स्कूल के परामर्शदाता विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति से निरन्तर सम्बन्धित रहते हैं, तथापि उनका मुख्य उद्देश्य छात्रों का सामाजिक और भावात्मक समन्वय है। समन्वय की प्राप्ति के लिए परामर्शदाता अध्यापकों के साथ मिलकर निरन्तर कार्य करते हैं। व्यक्तिशः अध्यापकों के साथ विचाराधीन मामलों पर बातचीत करता है, कक्षाओं में जाता है और छात्रों के साथ समूह में कार्य करता है। सातवीं श्रेणी में चलते रहने वाले अंग्रेजी और सामाजिक अध्ययन के कार्यक्रमों में अध्यापक और परामर्शदाता को छात्र के श्रेष्ठ तालमेल के हेतु उसके विकास की महत्त्वपूर्ण अवधि में साथ मिलकर कार्य करने का श्रेष्ठ अवसर प्राप्त होता है। परामर्शदाता उन छात्रों से बार-बार मिलते हैं जिन्हें कक्षा में मिलने वाली सहायता से भी अधिक सहायता की आवश्यकता होती है।

जूनियर हाई स्कूल के परामर्शदाताओं के कर्त्तव्य जबकि परामर्शदाता एक स्कूल प्रणाली में कार्य करते हैं तो उनके अनेक उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य होते हैं जिनका वर्णन ऊपर किया गया है। जब निर्देशन और अधिक संगठित हो जाता है, तो उनके निश्चित कर्त्तव्य बता दिये जाते हैं जो उनका और उनसे सम्बन्धित स्कूल के अन्य कर्मचारियों का निर्देशन करते हैं। उदाहरण के लिए लैंसिंग, मिशीगन के निर्देशन परामर्शदाताओं के कर्त्तव्यों को सूची बद्धकर दिया गया है जो प्रत्येक श्रेणी स्तर पर लागू होते हैं। ये कर्त्तव्य इस प्रकार हैं :

परामर्शदाताओं के कर्त्तव्य—जूनियर हाई स्कूल

७वीं श्रेणी

१. ६ ए के नवीनीकरण कार्यक्रम का निर्माण करना और उनके अध्यक्ष के रूप में कार्य करना।

२. नये छात्रों के कुशलता-पत्रों और निर्वाचन के रिक्त पत्रों की समीक्षा करना। उसके अनुसार कार्यवाही करना।

३. सूचना की पूर्णता और शुद्धता के लिए ७वीं श्रेणी की निर्देशन पुस्तिकाओं की जाँच करना। निर्देशन जाँच सूची का प्रयोग करना।

४. छात्रों को भेजने वाले अध्यापक, गृह-कक्ष अध्यापक या प्रशासक के साथ मिलकर सुधार के लिए भेजे गए छात्रों को परामर्श देना।

५. सी० ए० ६ पर श्रेय संख्या (Credit Count) द्वारा उल्लिखित ग्रीष्म-कालीन विद्यालय के संभावित छात्रों से साक्षात्कार करना।
६. प्रथम वर्ष के अन्त में अवनति करने वाले छात्रों की सूची बनाना।
७. सब सम्बन्धित अध्यापकों और निर्देशन के निर्देशक से बातचीत करके आवश्यकता होने पर छात्रों की कार्य सूचियों का तालमेल करना।
८. गृह-कक्ष और कक्षा के अध्यापकों को परीक्षणों के अर्थों से अवगत करना।
९. स्कूल वर्ष में प्रवेश होने वाले छात्रों से साक्षात्कार करना।
१०. असफल होने वाले छात्रों का वर्ष के अंत में पुनः वर्गीकरण करना।
११. सितम्बर में प्रविष्ट होने वाले छात्रों को पंजीकृत और सूचीबद्ध करना।

८वीं श्रेणी

१. सूचना की पूर्णता और शुद्धता के लिए ८ ए निर्देशन पुस्तिका की जाँच करना।
२. सुधार के लिए छात्र को भेजने वाले अध्यापक या गृह-कक्ष अध्यापक के सहयोग से समस्त सम्बन्धित छात्रों पर कार्य करना।
३. सी० ए० ६ की श्रेय संख्या (Credit Count) द्वारा निर्दिष्ट ग्रीष्म स्कूल के संभावित प्रत्याशियों से साक्षात्कार करना।
४. बीजगणित और लैटिन के चुनाव में छात्रों का निर्देशन करने में गृह-कक्ष के अध्यापकों को सहायता देना।
५. द्वितीय वर्ष के अंत में अवनति करने वाले छात्रों की सूची बनाना।
६. समस्त सम्बन्धित अध्यापकों और निर्देशन के निर्देशक से बात करके जब उचित हो छात्र की कार्य सूची का समन्वय करना।
७. गृह-कक्ष और कक्षा के अध्यापकों को परीक्षा के परिणामों से अवगत करना।
८. स्कूल वर्ष में प्रवेश करने वाले छात्रों से साक्षात्कार करना।
९. असफल होने वाले छात्रों का द्वितीय वर्ष के अन्त में पुनः वर्गीकरण करना।
१०. सितम्बर में प्रविष्ट होने वाले छात्रों को पंजीकृत और सूचीबद्ध करना।

९वीं श्रेणी

१. सुधार के लिए छात्र को भेजने वाले अध्यापक और गृह-कक्ष के अध्यापक के सहयोग से परामर्श के लिए भेजे गये समस्त छात्रों पर कार्य करते हैं।
२. सी० ए० ६ के श्रेय अंक (Credit Count) द्वारा निर्दिष्ट ग्रीष्म-स्कूल के संभावित प्रत्याशियों से साक्षात्कार करते हैं।
३. सूचना की पूर्णता और शुद्धता के लिए ९ ए निर्देशन पुस्तिका की जाँच करते हैं।

परामर्श का अवसर दिया जाय, जिसमें वह हाई स्कूल के लिए विषयों का अंतिम निर्णय कर सके। परामर्शदाता को यदि अधिक सहायता की आवश्यकता हो तो रुचि रखने वाले अध्यापकों की सहायता से वह एक-एक व्यक्ति से साक्षात्कार करता है। अधिक "कठिन" मामलों में सहायता देने के लिए अधिकांश अवसरों पर आचार्य उपस्थित रहता है।

१०-बी विषय चुनाव साक्षात्कार में ढूँढी जाने वाली निश्चित सूचना

१. संग्रहात्मक वृत्त में मूलभूत सूचना—पता, फोन, भाई, बहिन आदि—की जाँच करना।

२. पुस्तिका में निहित सामग्री—विवरण, स्तरीकृत परीक्षाओं, श्रेणियों आदि—का समय-समय पर सर्वेक्षण।

३. हाई स्कूल की निर्मित सूची पर पहली ही दृष्टि डालने से जाँच की आवश्यकता, द्विगुणित स्थिति, परम्परा, पूर्वापेक्षा समझ में आ जाती है, इस समय इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि यह प्रभाव न पड़े कि आप विद्यार्थी का किसी व्यावहारिक लक्ष्य की ओर निर्देश कर रहे हैं।

४. किसी संघर्ष पर विचार-विमर्श।

५. १०-बी पंजीकरण कार्ड का स्पष्टीकरण।

६. संग्रहात्मक पुस्तिका के लिए उनकी अनुसूची की छात्रों से नई स्वच्छ कापी तैयार कराते हैं।

७. अभिभावक के हस्ताक्षर के लिए १०-बी विषयों के घर पर अभिभावकों की स्वीकृति के लिए कार्ड भरते हैं।

समूह में परामर्शकार्य परामर्शकार्य में सामूहिक प्रक्रिया को बहुधा सामूहिक निर्देशन या सामूहिक स्थितियों में निर्देशन कार्य (देखिए अध्याय ९) कहते हैं। इसका उपयोग अन्य शैक्षिक स्तरों की अपेक्षा जूनियर हाई स्कूलों में अधिक किया जाता है। सामूहिक विचार-सभाओं का नेतृत्व चाहे परामर्शदाता करें या अध्यापक अथवा अन्य उपयुक्त व्यक्ति, ऐसी बैठकों के निम्नलिखित लक्ष्य या उद्देश्य जूनियर हाई स्कूल के छात्रों के लिए मूल्यवान होते हैं :

१. वृद्धिमान प्रक्रिया के लिए समान रूप से उपस्थित कुछ व्यक्तिगत समन्वय को मान्यता देने और समझने में उन्हें सहायता देना।

२. अपने निजी तथा दूसरों के कल्याण के लिए बढ़ते हुए दायित्व को ग्रहण करने के लिए उन्हें तैयार करना।

३. आगे की शिक्षा के लिए उनकी रुचि को बढ़ाना और सक्रिय बनाना।

४. श्रम के महत्त्व पर बल देते हुए उनके साथ उन अनेक रीतियों का सर्वेक्षण करना जिनसे वे अपनी जीविका कमा सकें।

५. विविध व्यावसायिक क्षेत्रों में उनके अध्ययन का निर्देशन करना जिससे वे अपनी योग्यता और अभिरुचियों के अनुकूल व्यवसाय का चुनाव कर सकें।

६. कुछ ऐसी व्यावसायिक समस्याओं से उन्हें परिचित कराना जो संभवतः उनके सम्मुख बाद में उपस्थित हों।

७. व्यक्तित्व के उन गुणों के विकास की इच्छा को बल प्रदान करना जो रचनात्मक जीवन के लिए आधारभूत हैं।

८. अभिभावकों, अध्यापकों, परामर्शदाताओं और छात्रों के उनके जीवन की वर्तमान और भावी योजनाओं के विषय में सहकारितापूर्वक विचार करने की आवश्यकता पर बल देना।

९. किसी भी अपेक्षित व्यक्तिशः परामर्शकार्य के लिए तत्परता का रवैया सम्मिलित करना।

बहुत से जूनियर हाई स्कूलों का संगठन विभागीय आधार पर हुआ है। विद्यार्थी एक कमरे से दूसरे कमरे में—कभी-कभी अनियमित दैनिक कार्य सूची के अनुसार—जाना सीखते हैं। इससे वे बहुत से भिन्न-भिन्न अध्यापकों के संसर्ग में आते हैं। वे यह अनुभव कर सकते हैं कि व्यक्तिगत रूप से कोई एक अध्यापक न तो उनके लिए उत्तरदायी है और न उनमें रुचि लेता है। विभागीकृत अध्ययन में प्रारम्भ में ही नवयुवकों के सम्मुख जो कठिनाई आती है, उसे दूर करने के लिए सामूहिक स्थितियों में निर्देशन की व्यवस्था की जाती है।

निर्देशन कक्षाएँ बहुत से स्कूलों में इस स्तर पर प्रत्येक छात्र को सप्ताह में कम से कम एक घंटा "समूह निर्देशन" में भाग लेना पड़ता है। पूरे समय का परामर्शदाता अथवा अनेक स्थितियों में अध्यापक-परामर्शदाता (श्रेणी का परामर्शदाता) कक्षा के आकार के निर्धारित समूह में वाद-विवाद का नेतृत्व करता है। साधारणतया एक संगठित योजना के पश्चात् इन विषयों पर विचार किया जाता है। विषयों का चुनाव परामर्शदाता, प्रशासक या निर्देशन परिषद् की विचारधारा के अनुसार होता है। कभी-कभी समुचित विषयों की शृंखला मिल-जुलकर बनाई जाती है, जिसमें सम्बन्धित छात्र भी भाग लेते हैं।

परामर्शदाता अथवा अध्यापक-परामर्शदाता अपने समूह के सदस्यों को जानना और समझना प्रारम्भ करता है। उसे ज्ञात होता है कि समूह के समस्त अथवा बहुत से विद्यार्थियों के लिए कुछ निर्देशन समान रूप से आवश्यक हैं। ये ही विषय तब बिना किसी सदस्य की भावना को आघात पहुँचाये सामान्य वाद-विवाद के विषय बन सकते हैं। कुछ सदस्यों द्वारा पूछे गये प्रश्नों और उनके द्वारा अभिव्यक्त किये गये रवैयों से परामर्शदाता उनको व्यक्तिगत रूप से परामर्श देने की आवश्यकता को समझ लेता है। तालमेल के जिस प्रश्न पर सामूहिक स्थिति में विचार किया गया है, उसके सम्बन्ध में अधिक सहायता प्राप्त करने के लिए किसी विद्यार्थी द्वारा अपनी ओर से अपने परामर्शदाता से साक्षात्कार के लिए अनुरोध करना कोई असाधारण बात नहीं

है। यद्यपि इस आयु में नवयुवक अपने गुरुजनों के नियंत्रण से मुक्त होने के लिए बलवती इच्छा का प्रदर्शन कर सकते हैं, तो भी सैद्धान्तिक दृष्टि से वे इस बात को बहुत अच्छी तरह समझते हैं कि वयस्कों का सच्चा रवैया उनको सहायता देने का है।

गृह-कक्ष में निर्देशन नियमित रूप से निर्धारित निर्देशन कक्षाओं के स्थान पर या उनके अतिरिक्त बहुत-से स्कूल गृह-कक्ष के लम्बे निर्देशन घण्टे रखते हैं। गृह-कक्ष का नेतृत्व करने के लिए जिस अध्यापक को चुना जाय, उसका चुनाव इन बातों को ध्यान में रख कर होना चाहिये, जिस कक्षा को उसको परामर्श देना है वह किस प्रकार की है, छात्रों की अभिरुचि और प्रतिभाएँ और उसकी अपनी विशेष योग्यताएँ।

अध्यापक को विद्यार्थियों के सम्बन्ध में यथासम्भव अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। उसे उनके नामों, बुद्धि-लब्धियों, उनकी पठन-श्रेणियों, स्कूल में उनकी सफलता की स्थिति, उनकी पृष्ठभूमि, उनके अभिभावकों, उनकी अभिरुचियों और कठिनाइयों, उनके शौकों, उनके परिधान की शैली और व्यवहार, उनके भाषण के स्वभावों, उनकी व्यावसायिक महत्त्वाकांक्षाओं, उनकी मनोरंजन की गतिविधियों और रुचियों, उनकी भोजन की रुचियों और अरुचियों, उनकी निद्रा के स्वभावों, अध्ययन सम्बन्धी उनकी सुविधाओं (हस्तक्षेप करने वाली घरेलू स्थितियों सहित) छुट्टी की उनकी योजनाओं और गतिविधियों और उनके माता-पिता, भाई-बहिन और अन्य सम्बन्धियों के कार्य के स्वभाव से परिचित होना चाहिये। संक्षेप में, गृह-कक्ष के अध्यापक को उस विषय में सब कुछ जानना चाहिये जिसका सम्बन्ध वास्तव में उन छात्रों के साथ है जिनका वह निर्देशन करने का प्रयत्न करता है।

गृह-कक्ष के घण्टों में स्कूल के समस्त कार्यक्रम का अध्ययन किया जा सकता है। क्लब, खेल, स्कूल की पत्रिका या वार्षिक ग्रन्थ और कक्षा के बाहर की अन्य विविध गतिविधियाँ जो स्कूल में चलाई जाती हैं उनसे विद्यार्थियों को अवगत किया जा सकता है। वे क्लब के अधिकारियों और छात्र-परिषद् के छात्र-पदाधिकारियों के नाम भी याद कर सकते हैं।

यदि अध्यापक कुछ क्षेत्रों में विद्यार्थियों को अपने अनुभवों का लाभ देने और रूढ़िवाद से बचने का प्रयत्न करता है तो वह उन्हें जिज्ञासा की भावना को ग्रहण करने और शनैः-शनैः स्वयं निर्णय करने में समर्थ बनाता है। धीरे-धीरे वे केवल उन मामलों में ही स्वतन्त्र विचारक नहीं बन जायेंगे जिनका कि स्कूल की स्थितियों से सम्बन्ध है बल्कि उन मामलों पर भी विचार करने लगेंगे जो कि व्यक्तिगत रूप से उनके सम्मुख उपस्थित होते हैं। वास्तव में गृह-कक्ष का निर्देशन प्रशिक्षण की भाँति ही प्रभावशाली होता है और अध्यापक उसमें जितनी अधिक रुचि लेता है, उतना ही वह अधिक प्रभावशाली बनता है। गृह-कक्ष में अध्यापक के केवल उपस्थित रहने से ही कार्यक्रम सफल नहीं हो जाता। जो अध्यापक अपने छात्रों में रुचि रखते हैं और सहकारितापूर्ण सहायता देने के लिये जिन्होंने विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है

उनका महत्त्व उस समय ज्ञात होता है जब उन्हें सक्रिय, उत्साही नवयुवकों के सम्मुख उपस्थित होने वाली समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

जूनियर हाई स्कूलों में सामूहिक कार्य-विधियों में प्रवृत्तियाँ नवयुवकों के लिए सामूहिक स्थितियों में स्वयं अपनी अभिरुचियों, अभिलाषाओं और समस्याओं या विचार-विमर्श करने के अवसरों के महत्त्व को सबसे पहले स्कूल के लोगों में जूनियर हाई स्कूल के स्तर पर स्वीकार किया है। किन्तु बहुत-से स्कूलों में इस प्रकार के विचार-विमर्श बहुत अधिक अनौपचारिक होते हैं। बहुधा उनमें नेतृत्व की योजना का अभाव रहता है, किसी विद्यार्थी द्वारा पूछे गये प्रश्न समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी संवाद, स्कूल में घटी हुई कोई घटना उस दिन के वाद-विवाद का विषय बन जाते हैं। "गर्म लोहे पर आघात करने" का कुछ महत्त्व तो है, किन्तु ऐसी स्थिति में विषयों की व्यर्थ की पुनरावृत्ति हो सकती है और विषय पर गम्भीर वाद-विवाद के स्थान पर ऊपरी बातचीत या थोथा तर्क हो सकता है।

आज की प्रवृत्ति अधिक सुगठित वाद-विवाद की ओर है। यह वांछनीय है कि उपयोग में ली जाने वाली सामग्री को सम्मिलित करके किसी योजना के साथ आगे बढ़ा जाय। किन्तु, बड़ी सीमा तक प्रक्रिया का निश्चय वाद-विवाद में भाग लेने वालों के हितों की पृष्ठभूमि और उनकी व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं से होता है।

अपेक्षाकृत गठित कार्यक्रमों के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। पश्चिमी वर्जीनिया के वुड काउंटी जूनियर हाई स्कूलों की ७वीं और ८वीं कक्षाओं के छात्रों को क्रमशः दी जाने वाली निर्देशन पाठ्य-विधियों की संक्षिप्त रूपरेखा हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें प्रयुक्त की जाने वाली सामग्रियों में उपयुक्त फिल्मों और फिल्मों की पट्टियों के अतिरिक्त नेशनल फोरम पुस्तकें, विकास के सम्बन्ध में (७वीं श्रेणी) और नवयुवा (८वीं श्रेणी) नामक पुस्तकें तथा अन्य पूरक पाठ्य पुस्तकें सम्मिलित होती हैं। वादविवाद का सामान्य क्षेत्र इस प्रकार है :

७वीं कक्षा

इकाई १. नवीनीकरण तालमेल और व्यक्तित्व
इकाई २. अवकाशकालीन बाहर की गतिविधियाँ
इकाई ३. अध्ययन-कार्य
इकाई ४. विकास, स्वास्थ्य और रूप-सज्जा
इकाई ५. शिष्टता और आचार
इकाई ६. सामूहिक व्यवहार और स्वीकृति
इकाई ७. भावनात्मक विकास और परिपक्वता
इकाई ८. सहनशीलता और जनतन्त्री रहन-सहन
इकाई ९. उत्तरदायित्व को स्वीकार अरना और भावी नियोजन।

श्रेणी ८

इकाई १. नवीनीकरण, तालमेल और व्यक्तित्व
इकाई २. अध्ययन की कला

इकाई ३. व्यक्तित्व, विकास, स्वास्थ्य और रूप-सज्जा
इकाई ४. व्यवहार कौशल, शिष्टता, सामान्य आचार और व्यवहार की शैली
इकाई ५. अभिसार
इकाई ६. भावनात्मक विकास और परिपक्वता
इकाई ७. उत्तरदायित्व ग्रहण करना और कार्य प्राप्त करना
इकाई ८. आत्म-मूल्यांकन अध्ययन
इकाई ९. शिक्षा और भविष्य की योजना का निर्माण
इकाई १०. सहनशीलता—जनतन्त्री रहन-सहन।

यह उल्लेखनीय है कि कुछ इकाइयाँ दोनों श्रेणियों में सामान्य हैं। किन्तु विकासशील परिपक्वता की दृष्टि से उप-विषयों मे अन्तर है।

समन्वय के रूप में निर्देशन

बच्चों के समूहों के साथ जूनियर हाई स्कूल की तीन वर्ष की अवधि में कार्य करने की अनेक विधियाँ अपनाई जाती हैं। यदि बच्चे संकोचशील हों अथवा भयभीत प्रतीत होते हों तो उनकी स्कूल के प्रति जो आस्था है, उसे विकसित करने के लिए उन्हें उत्साहवर्द्धक सहायता देने की आवश्यकता है। स्कूल का उद्देश्य क्या है और स्कूल बच्चों के लिये क्या कर सकता है, यह बात यदि बातों की अपेक्षा सक्रिय रूप से बताई जाय तो विद्यार्थी के मन मे रुचि जाग्रत होती है और वह सोचने लगता है कि "मैं इस विशिष्ट स्कूल में पढ़ने के कारण विशेषरूप से भाग्यशाली हूँ।"

संग्रहशील वृत्त का मूल्य केवल गृह-कक्ष के अध्यापक को ही अपने छात्रों के विषय में जानने की आवश्यकता नहीं है अपितु पाठ की कक्षाओं के अध्यापकों को भी अपने छात्रों के सम्बन्ध में अधिकाधिक ज्ञान होना चाहिये। संग्रहशील-वृत्त उनके लिए रुचिकर होंगे। इस वृत्त-पत्र के द्वारा अध्यापक अपने विद्यार्थी की योग्यताओं, अभिरुचियों, बाधाओं और अध्ययन की प्रगति के विषय में कुछ अनुमान लगा सकता है। कक्षा की अपनी गतिविधियों में छात्र नाम और व्यक्तित्व की दृष्टि से एक इकाई हो जाता है। यद्यपि संग्रहशील-वृत से प्राप्त की गई सूचनाएँ अन्य अध्यापकों के विचारों और विवरणों का परिचय देती हैं, फिर भी वे ऐसे जागरूक प्रगतिशील अध्यापक के लिए सहायक सिद्ध होती हैं जो अपने छात्रों से पहली बार मिल रहा है।

स्कूल की कार्यविधियों का ज्ञान लिखित सामग्री और पुस्तिकाओं द्वारा छात्र को स्कूल के दैनिक कार्यों से परिचित कराया जा सकता है। इनसे उसे स्कूल के उन नियमों का ज्ञान होता है जिनका सम्बन्ध भोजन-कक्ष, कक्षाओं और अन्य कमरों की स्थिति, अनुपस्थिति के नियमों, पुस्तकालय की कार्यशैली, क्लब की गतिविधियों, पाठ्यक्रम के विषयों और उसकी रुचि की अन्य बातों से है।

तालमेल की पद्धतियाँ कक्षा या गृह-कक्ष के अन्य सदस्यों के नाम छात्र और अध्यापक दोनों ही जानना चाहते हैं। जब कि कक्षा प्रथम बार लगती है तो

अध्यापक को प्रत्येक छात्र का एक-दूसरे से परिचय कराना चाहिए। इससे केवल अध्यापक को ही सहायता नहीं मिलती अपितु समूह के समस्त छात्रों में परस्पर सद्भावना की वृद्धि होती है। परिचय के पश्चात् प्रत्येक छात्र का चित्र मंगवाकर बुलेटिन बोर्ड पर लगवाया जा सकता है जिससे सब विद्यार्थी एक-दूसरे को पहचान सकें। तत्काल वे स्कूल में रुचि लेने लगेंगे जिससे छात्रों और अध्यापक दोनों को लाभ होगा।

यदि कक्षा के सारे सदस्य चित्र को मढ़कर उस पर नाम की पट्टी न लगा सकें तो इसके लिए एक समिति का चुनाव किया जा सकता है। कुछ प्रकार के कार्यों के लिए समग्रियों का चुनाव करने के महत्त्व को विद्यार्थी तत्काल समझ जायेंगे। बुलेटिन-बोर्ड समिति प्रति सप्ताह बदली जा सकती है और तात्कालिक रुचि की अन्य समितियाँ प्रदर्शित की जा सकती हैं। यदि निकाय के प्रत्येक सदस्य का चित्र और उसका संक्षिप्त इतिहास किसी केन्द्रीय स्थान में प्रदर्शित किये जाएँ तो विद्यार्थियों को समस्त अध्यापकों से परिचित होने का अवसर मिल सकता है।

यदि स्कूल का भवन बड़ा है तो विशेष रूप से नये विद्यार्थी गृह-कक्ष के घंटे में लिये गये भवन के विविध स्थलों की काल्पनिक यात्रा करके लाभान्वित हो सकते हैं। कुछ स्कूलों में छात्रों की पुस्तिका में स्कूल का नक्शा भी सम्मिलित कर लिया जाता है। स्कूल को भी अपने पूरे नवीनीकरण कार्यक्रम का इस प्रकार निर्माण करना चाहिए कि प्रत्येक नया विद्यार्थी स्कूल के प्रत्येक भाग में ले जाया जा सके। बहुधा हम यह समझ बैठते हैं कि बच्चे बिना सहायता के ही उस विशाल स्कूल के विविध कमरों और सेवाओं से परिचित हो जायेंगे। कालेज स्तर पर भी कुछ अध्यापक और छात्र गतिविधियों के बहुत से केन्द्रों को कभी नहीं खोज पाते, और न उन्हें कुछ उन महत्त्वपूर्ण सेवाओं का ज्ञान होता है जो उस संस्था द्वारा प्रदान की जाती हैं। प्रत्येक छात्र इस योग्य होना चाहिए कि वह नर्स का कार्यालय, बैंड के कमरे, कला या संगीत स्टूडियो, छात्रों की गतिविधियों के कार्यालयों और इस प्रकार के अन्य विशेष कमरों को खोज सके।

जिस प्रश्न का उत्तर वह पहले अनेक बार दे चुका है, उसे बार-बार पूछने पर जूनियर हाई स्कूल के अध्यापक को अशिष्ट नहीं हो जाना चाण्हि। सम्भव है कि नवयुवक ने उसके अर्थ को भली-भाँति न समझा हो अथवा उस उत्तर को बच्चे ने अपने विगत स्कूल के अनुभव के संदर्भ में समझा हो और वह नवीन संदर्भ में उसे भली-भाँति न समझ पा रहा हो। यदि स्कूल के कुछ संकल्प हों तो उसकी एक-एक प्रति गृह-कक्ष के प्रत्येक समूह को दे देनी चाहिए। सबको उसके अनुकूल अपने आपको ढालने का प्रयास करना चाहिए।

स्कूल के अध्ययन का विभागीकरण करने से तालमेल की अनेक विशेष समस्याएँ उपस्थित हो जाती हैं। पढ़ाने वाले अध्यापक और गृह-कक्षा का अध्यापक दोनों ही छात्रों से इस बात पर विचार-विमर्श कर सकते हैं कि इन अनुभवों का सर्वश्रेष्ठ तालमेल कैसे किया जाय, और वे अध्ययन के वाछनीय स्वभाव का विकास करने

और पुस्तकालय का उपयोग करने में उनकी सहायता कर सकते हैं। यदि इस बात पर शीघ्र ध्यान दे दिया गया तो जूनियर हाई स्कूल के छात्रों के लिए ये बातें अत्यन्त मूल्यवान सिद्ध होती हैं।

आत्म-चिन्तन और खोज किशोर और नवयुवक जिज्ञासु होता है। वह यह जानना चाहता है कि वस्तुएँ अपने दीखने वाले रूप में क्यों हैं। वस्तुओं को पृथक्-पृथक् करके, पुस्तकों और अन्य मुद्रित रूप में विचारों की खोज करके और यात्राओं के द्वारा वह अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करना चाहता है। उसकी अभिरुचियाँ अनेक और भिन्न-भिन्न होती हैं और जो भी शैक्षिक या व्यावसायिक रुचियाँ उभरी हुई प्रतीत होती हैं, उनके संतोष के लिए उनका निर्देशन किया जा सकता है।

विशेषतया इन वर्षों में उसे प्रगति और सफलता की भावना को अनुभव करने की आवश्यकता है। विद्यार्थी को इस विश्वास से ओत-प्रोत रखने की आवश्यकता है कि वह किसी परियोजना को भली-भाँति और उत्साहपूर्वक कर सकता है, यह बात दूसरी है कि वह एक दिन में समाप्त न हो। इस आयु में प्रत्येक नवयुवक दूसरे की आलोचना करता है। अपने छात्रों को ऐसी सुरक्षा की भावना प्राप्त करने में अनेक बार अध्यापक की बुद्धि कसौटी पर कस जाती है, जब प्रत्येक छात्र अपने अध्यापक या स्वयं द्वारा निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करने में स्वयं को लगा देना चाहता है।

अनेक जूनियर हाई स्कूलों में विशेष अल्पकालीन पाठ्य-विधियाँ (साधारणतया छः सप्ताह की अवधि की) दुकान के कार्य और घरेलू अर्थशास्त्र जैसे विषयों में दी जाती हैं। इन अनुसंधानात्मक पाठ्य-विधियों में भाग लेने से उन छात्रों को अपनी विशेष आकांक्षाओं को खोज निकालने का अवसर प्राप्त होता है जिनकी रुचि और प्रदर्शित योग्यता शैक्षिक क्षेत्र में नकारात्मक है।

सीनियर हाई स्कूल से एकीकरण

नगर के जूनियर हाई स्कूल के छात्रों को उन विविध सीनियर हाई स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले पाठ्य-विषयों से अवगत कराना चाहिए जिनमें वे प्रवेश पा सकते हैं। जिन छोटे समुदायों में केवल एक ही हाई स्कूल है, उसके छात्रों को भी समय से पूर्व यह जानना उतना ही महत्त्वपूर्ण है कि उस स्कूल की गतिविधियाँ और पाठ्य-क्रम क्या हैं। जिस हाई स्कूल में वे पढ़ेंगे, उसमें जाने का भी उन्हें अवसर प्राप्त होना चाहिए ताकि वे उसके भवन, अध्यापकों और कुछ छात्रों से परिचित हो सकें। जूनियर हाई स्कूल से सीनियर हाई स्कूल में जाने पर अधिकांश छात्रों के सम्मुख ऐसी समस्याएँ आती हैं जिनका सम्बन्ध प्रवेश करने वाले नये सामाजिक समूहों से, अपने छात्रों से अधिक अपने विषय में रुचि रखने वाले अध्यापकों से मिलने से, पूर्व पठित विषय से भिन्न विषयों के अध्ययन से, नये और भिन्न प्रकार के स्कूल संगठन से तालमेल बिठाने से, नये प्रकार की अध्यापन प्रणाली का सामना करने से, प्रमुख आन्तरिक दबाव से संघर्ष करने से, व्यावसायिक रुचियों के संघर्ष और चुनाव से है; यद्यपि व्यवहार की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की ओर अनेक स्कूल परियोजनाओं, जैसे

क्लब, छात्र सरकार तथा कक्षा के बाहर की अन्य गतिविधियों में भाग लेने की उन्हें अनुमति होती है। एम्पोरिया, कंसास में एकीकरण के कार्यों की योजना इस प्रकार है :

हाई स्कूल का आचार्य अपेक्षाओं, निर्वाचित विषयों, कालेज के लिए तैयार किये जाने वाले विषयों के सम्बन्ध की सिफारिशों आदि पर विचार-विमर्श करने के लिए जूनियर हाई स्कूल के अध्यापकों से भेंट करता है। सम्भवतः उसी संध्या को वह नवीं श्रेणी के छात्रों के अभिभावकों से परामर्शदाता के रूप में मिलता है। इसके पश्चात् नवीं श्रेणी के सामाजिक अध्ययन के अध्यापक दूसरे अध्यापकों की सहायता से विद्यार्थियों को आगामी तीन वर्ष के लिए अपना शैक्षिक कार्यक्रम बनाने में मदद देते हैं। अन्त में, अभिभावक प्रविष्टि कार्ड पर स्वीकृति देकर हस्ताक्षर कर देते हैं।

दिन भर इस दौड़धूप के पश्चात् जूनियर हाई स्कूल का आचार्य छठी श्रेणी के छात्रों से उनके अपने भवन में भेंट करता है ; उसके पश्चात् वे जूनियर हाई स्कूल में प्रवेश पाते हैं। वह उनके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देता है और आगामी कार्यक्रम के विषय में उनका पथ-प्रदर्शन करता है।

आठवीं और नवीं श्रेणी में छात्रों के प्रवेश करने से पूर्व आचार्य उस समय सातवीं और आठवीं श्रेणी में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों से भी भेंट करता है।

जिन छोटे समुदायों में छः वर्षीय स्कूल के रूप में जूनियर और सीनियर हाई स्कूल एक ही भवन में स्थित होते हैं, वहाँ विद्यार्थी के सीनियर हाई स्कूल में पहुँचने के साथ-साथ कुछ समस्याएँ भी सामने आती हैं जिनका सम्बन्ध नये स्कूल की स्थिति के साथ तालमेल बिठाने से है। किन्तु जूनियर हाई स्कूल के जो विद्यार्थी एक प्रकार के संगठन से दूसरे प्रकार के संगठन में प्रवेश करते हैं, उन्हें दूसरे स्कूल के स्तर के विषय में ज्ञान होना चाहिए। इस समस्या पर बहुत कुछ कहा गया है परन्तु परिणाम बहुत कम हुआ है। इस एकीकरण के अधिक कार्यकारी और महत्त्वपूर्ण रूपों का भविष्य श्रेष्ठ है।

सक्रिय निर्देशन के कार्यक्रम

संयुक्त राज्य के बहुत से भागों में जूनियर हाई स्कूल में निर्देशन के लक्ष्य और कार्य विविध प्रकार से सम्पादित किये जाते हैं। निःसंदेह किसी भी जूनियर हाई स्कूल में चलाये जाने वाले अध्ययन कार्य छात्रों की योग्यताओं और अभिरुचियों के अनुकूल तथा निश्चित समुदाय में प्रदान किये जाने वाले शैक्षिक अवसरों को आगे बढ़ाने की दृष्टि से किये जाने चाहिएँ। शैरों, पेनसिल्वानिया के लिए चलाये जाने वाले

निर्देशन कार्यक्रम में अनेक महत्त्वपूर्ण बातें हैं, जो इस प्रकार हैं :

शैरों जूनियर हाई स्कूल—शैरों, पेनसिल्वानिया

जूनियर हाई स्कूल में निर्देशन का कार्यक्रम निम्नलिखित से सम्बन्धित है :

१. व्यावसायिक और सामाजिक निर्देशन तथा शैक्षिक काम दिलाने के उद्देश्य से परीक्षण कार्यक्रम।
२. व्यक्तिशः छात्रों को परामर्श देना और साक्षात्कार करना।
३. नवीनीकरण, सूचीकरण और व्यावसायिक योजना में सामूहिक प्रविधियाँ।
४. स्रोत विशेषज्ञ जैसे परामर्शदाता, स्कूल मनोवैज्ञानिक, श्रवण और पठन सलाहकार।
५. शैक्षिक सफलता और व्यावसायिक तैयारी के सम्बन्ध में अभिभावकों से वार्तालाप।
६. सम्बन्धित व्यक्तिगत तथ्यों का वृत्त रखना।

छात्र के अनुरोध, अभिभावकों के आवेदन, अध्यापक या प्रशासक द्वारा भेजे गये छात्र की स्थिति, सामुदायिक अभिकरण द्वारा भेजे गये व्यक्ति की स्थिति, न्यायालय द्वारा अस्थायी रूप से भेजे गये व्यक्ति, शैक्षिक सफलता या असफलता शैक्षिक कार्यक्रम की आवश्यकताओं और व्यावसायिक हित की दृष्टि से सामूहिक प्रविधियों का उपयोग किया जाता है।

जूनियर हाई स्कूल में प्रविष्ट होने से पूर्व स्कूल सत्र के बसंत में प्रत्येक छठी श्रेणी के गृह-कक्ष का नवीनीकरण करने के लिए सामूहिक प्रविधियों का उपयोग किया जाता है। गृह-कक्ष निर्देशन का साप्ताहिक दिवस गृह-कक्ष के अध्यापक द्वारा स्कूल नवीनीकरण, शैक्षिक सफलता, सामाजिक समस्याओं और व्यावसायिक चुनाव तथा छात्र क्लब के कार्यों के विस्तृत कार्यक्रम में सत्रों में बाँट दिया जाता है। सामूहिक गतिविधियाँ अधिकांश निर्धारण कार्यविधियों की अंग हैं। व्यावसायिक जानकारी और शैक्षिक कार्यक्रम के निर्धारण में सामुदायिक स्रोत कर्मचारियों का भी उपयोग किया जाता है।

छात्र की विशेष समस्याओं के अध्ययन के लिए स्कूल का मनोवैज्ञानिक, स्कूल की नर्स, पठन सलाहकार, दो वाणी उपचारक, एक लड़कों का परामर्शदाता और एक लड़कियों की परामर्शदात्री होती है जो स्कूल के ही कर्मचारी होते हैं। ये सब पूरे समय के आधार पर अपनी विशेषताओं के कारण नियुक्त किये जाते हैं।

अभिभावक सम्मेलन अनुरोध पर या आवश्यकता के अनुसार किये जाते हैं।

छात्र के वृत्तों में स्कूल के कार्यक्रम की श्रेष्ठता और कमजोरी तथा छात्र की आवश्यकताओं का निश्चय करने की दृष्टि से समस्त परीक्षा-परिणामों का वार्षिक अध्ययन और संग्रह रखा जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए संग्रहशील पुस्तिका और स्थायी वृत्त कार्ड रखा जाता है।

जब बच्चा किंडरगार्टन में प्रवेश करता है उसी समय उससे सम्बन्धित पुस्तिका और कार्ड प्रारम्भ हो जाते हैं और जैसे-जैसे वह मंडल से आगे बढ़ता हुआ स्कूल छोड़ता है या स्नातक हो जाता है, तैसे-तैसे वे उसके साथ बढ़ते जाते हैं। वे उन समस्त सूचनाओं के आगार होते हैं जो उसके स्कूल जीवन में एकत्रित होती हैं; जैसे परीक्षा में प्राप्त अंक, स्वास्थ्य-वृत्त, आत्म-कथाएँ, साक्षात्कारों के परिणाम, व्यावसायिक अभिरुचियाँ, व्यक्तित्व-मूल्यांकन, पारिवारिक विवरण, और वह प्रत्येक बात जो उसके सम्बन्ध में जानकारी देती हो। ये वृत्त सटीक होते हैं और अनिश्चित काल तक रखे जाते हैं।

चूंकि समस्त स्कूल प्रणालियाँ ६-३-३ के आधार पर संगठित नहीं हुई हैं, हम ८-४ के आधार पर संगठित स्कूल प्रणाली में आठवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिये निर्देशन का एक श्रेष्ठ कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। यद्यपि कैंटन, ओहियो में १२०,००० से अधिक लोग रहते हैं, तो भी वहाँ कोई जूनियर हाई स्कूल नहीं है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि विद्यार्थी आठवीं श्रेणी से सीधे चार-वर्षीय हाई स्कूल में पहुँच जाते हैं। उनके हाई स्कूल से पूर्व के निर्देशन के सिद्धान्त और कार्यविधियाँ यहाँ प्रस्तुत की जा रही हैं :

आठवीं श्रेणी के छात्रों के लिए हाई स्कूल से पूर्व का निर्देशन

कैंटन, ओहियो

हाई स्कूल से पूर्व के निर्देशन के सिद्धान्त*

हाई स्कूल से पूर्व के निर्देशन कार्यक्रम की प्रमुख समस्या आठवीं श्रेणी के छात्रों को उस स्कूल के जिसमें कि उन्हें पढ़ना है और उन विषयों के जिन्हें उनको हाई स्कूल में लेना है, श्रेष्ठतम चुनाव में सहायता देने की है। जिस आधार पर वे अपना चुनाव करते हैं, वह सुदृढ़ होना चाहिए, क्योंकि इन चुनावों के परिणाम उनके समस्त जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। यही कारण है कि हाई स्कूल से पूर्व का काल विद्यार्थी के सार्वजनिक स्कूल के जीवन में अत्यन्त चिन्तनीय समझा जाता है। इस समय छात्र को दिया जाने वाला निर्देशन यथासंभव श्रेष्ठ होना चाहिए ताकि वह सर्वश्रेष्ठ चुनाव करने में समर्थ हो सके।

आधारभूत सिद्धान्त—आत्म-विश्लेषण

हाई स्कूल से पूर्व के निर्देशन कार्यक्रम का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विचार यह है कि उसका आधार विद्यार्थी के आत्म-विश्लेषण पर होना चाहिए। कोई भी विद्यार्थी अपने आपको भली-भाँति समझे बिना हाई स्कूल की पाठ्य-विधियों का बुद्धिमत्तापूर्वक चुनाव नहीं कर सकता। चाहे वह हाई स्कूल के पाठ्य-विषयों को कितनी ही भली प्रकार से समझता हो, वह उस समय तक अपने लिए सर्वश्रेष्ठ विषयों का चुनाव नहीं कर सकता जब तक कि वह अपनी प्रकृति, योग्यता, अभिरुचियों

*राबर्ट बाकर और लायड एम० स्वान द्वारा प्रस्तुत।

और व्यक्तित्व से परिचित न हो। अतएव हाई स्कूल से पूर्व के निर्देशन में वे गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण हैं जो विद्यार्थियों को आत्म-विश्लेषण करने और अपनी उच्चतम सीमा को समझने में सहायता देती हैं।

व्यवसाय का चुनाव और हाई स्कूल के विषय

किसी निश्चित व्यवसाय को ध्यान में रखकर विद्यार्थी हाई स्कूल के विषयों का जो चुनाव करता है उसका महत्त्व संदिग्ध होता है और यह दूसरा सिद्धान्त है जिस पर आठवीं श्रेणी के निर्देशन का विकास होता है। आठवीं श्रेणी के विद्यार्थी जो व्यावसायिक चुनाव करते हैं उसमें स्थायित्व नहीं होता। आठवीं श्रेणी के अधिकांश छात्रों का व्यावसायिक जगत् से कोई सम्पर्क नहीं होता, और कुछ छात्र ऐसे होते हैं जिन्होंने उसके विषय में अप्रत्यक्ष रूप से कुछ ज्ञान प्राप्त किया हुआ होता है। अनुसंधान करने से ज्ञात हुआ है कि तीन से लेकर पाँच बार तक एक विद्यार्थी हाई स्कूल में अध्ययन करते समय अपने व्यावसायिक चुनाव में परिवर्तन करता है। इतना ही नहीं प्रौढ़ कर्मचारी भी अपने जीवन भर के कार्य में लगने से पूर्व औसतन तीन विभिन्न कार्य करता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए आठवीं श्रेणी के छात्र से विशेष रूप से निश्चित व्यावसायिक चुनाव करने के लिए कहना और फिर केवल उसी एक व्यवसाय के लिए उसे तैयार करने की दृष्टि से हाई स्कूल के कार्य की योजना बनाना वास्तव में मूर्खतापूर्ण होगा।

संभव है कि आठवीं श्रेणी के विद्यार्थी अपनी हाई स्कूल की योजना बनाते समय विस्तृत व्यायसायिक क्षेत्रों के विषय में सोच रहे हों। उदाहरण के लिए वे निश्चय कर रहे हों कि वे शारीरिक श्रम के कार्य में जाएँ या मानसिक श्रम के कार्य में, वे अकेले कार्य करना चाहते हैं या लोगों के साथ मिलकर, वे बाहर का कार्य पसंद करते हैं या अंदर का, कार्यतत्परता का कार्य चाहते हैं या निष्क्रियता का, इत्यादि। वे कुछ सीमा तक ऐसी पाठ्यविधियों के विषय में सोच सकते हैं जिनका सम्बन्ध कुछ ऐसे विस्तृत व्यावसायिक क्षेत्रों से हो जो उनकी रुचियों के समानान्तर हों। किन्तु बहुत ही परिपक्व विद्यार्थियों के मामलों को छोड़कर हाई स्कूल की पाठ्य-विधि के चुनाव के आधार के रूप में एक ही व्यवसाय के चुनाव को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

सम्भवतः इस समय छात्र के निर्णय से सम्बन्धित केवल एक ही व्यावसायिक चुनाव करना चाहिए और वह यह कि उसे टिंकन (व्यावसायिक स्कूल) में भर्ती होने के लिये आवेदन करना चाहिये या नहीं। इस मामले में भी इस समय निश्चित व्यवसाय का चुनाव करने की आवश्यकता नहीं है, अपितु जब तक टिंकन में प्रथम वर्ष की व्यावसायिक खोज सम्बन्धी गतिविधियाँ समाप्त न हो जायें तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। यदि अभिरुचियों, आकांक्षाओं और योग्यताओं से इस बात की साक्षी मिले कि टिंकन में पढ़ाये जाने वाले व्यवसाय

कुल मिलाकर विद्यार्थी के लिये अत्यन्त तर्क-संगत चुनाव हैं तभी टिकन का चुनाव करना चाहिये।

रुचियों, रुझानों और योग्यताओं को दिशा का संकेत करने दें

यद्यपि विद्यार्थियों के परिपक्व होने पर व्यावसायिक अभिरुचियों में पर्याप्त अन्तर पड़ जाता है, तो भी अन्य लक्षण ऐसे हैं जो अधिक स्थायी होते हैं और जिन पर पाठ्य-विधियों का चुनाव अधिक सही रीति से किया जा सकता है। यह विदित है कि बच्चों की विस्तृत मूल अभिरुचियाँ उनकी योग्यता और निश्चित रुझान के स्तरों के अनुसार अपरिवर्तित रहती हैं। इन तथ्यों का बुद्धिमत्तापूर्ण विश्लेषण करके हाई स्कूल की पाठ्य-विधियों का जो चुनाव किया जाता है, वह छात्र के लिए सर्वश्रेष्ठ हो सकता है। हाई स्कूल से पूर्व के निर्देशन के कार्यक्रम का बल छात्रों को ऐसी सहायता देने पर होना चाहिये जिससे वे अपनी निजी रुझानों, योग्यताओं और अभिरुचियों का विश्लेषण कर सकें तथा उन्हें समझ सकें और हाई स्कूल के विषयों के सम्बन्ध में उन्होंने जो कुछ ज्ञान प्राप्त किया है, उसका विश्लेषण कर सकें।

यदि ऐसी पाठ्य-विधियों का चुनाव किया जाय जो कि छात्र की रुझानों और योग्यताओं का विकास कर सकें और उसकी रुचियों को आकर्षित कर सकें तो वे उसे व्यावसायिक रूप से सफलता प्राप्त करने के लिये भी तैयार कर सकेंगी। जब आगे किसी दिन वह विशेष व्यवसाय का चुनाव करता है तो वह उसकी रुझानों, योग्यताओं और अभिरुचियों के अनुकूल होना चाहिये। ये बातें वे ही हैं, जिनका उपयोग वह अपनी शैक्षिक योजना के आधार के रूप में करता है। तब उसका शैक्षिक कार्यक्रम उसे तर्क-संगत रूप से उसके व्यावसायिक जीवन के लिये तैयार करता रहा है। निःसंदेह शैक्षिक और व्यावसायिक योजना की ऐसी कार्यविधि का आधार उच्चतर पाँच श्रेणियों में निरन्तर चलता रहने वाला सफल निर्देशन है।

जहाँ अध्यापक सहायता कर सकते हैं

अध्यापकों से पूर्णतया आग्रह किया जाता है कि वे आवश्यकता पड़ने पर अपने भवन के परामर्शदाता अथवा छात्र कर्मचारी कार्यालय की सहायता करें। इस कार्यालय में टेलीफोन पर भी सूचना मिलने पर जो भी व्यक्ति अत्यन्त उपयोगी हो सकता है, उसकी सेवा उपलब्ध होगी।

आत्म-विश्लेषण में विद्यार्थी का निर्देशन

जैसा कि बताया जा चुका है आठवीं श्रेणी के निर्देशन कार्यक्रम का मुख्य सिद्धान्त विद्यार्थियों को अपने आपको भली-भाँति समझने में सहायता देना है।

आत्म-विश्लेषण के लिये कुछ सुझाव यहाँ दिये जा रहे हैं। निर्देशन कार्य में आत्म-विश्लेषण के तीन मुख्य चरण हैं :

१. विद्यार्थी को विविध स्रोतों से ऐसी साक्षी का विकास करने में सहायता देना जिससे वह अपने विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त कर सके और उस साक्षी की व्याख्या करना।

२. हाई स्कूल के पाठ्य-विषयों को अधिक भली प्रकार से समझने और विविध स्कूलों तथा पाठ्य-विधियों में से चुनाव करने के महत्त्व को जानने में सहायता देना। उन्हें यह समझाने में भी सहायक बनना कि इन पाठ्य-विधियों और अन्य व्यावसायिक या शैक्षिक योजनाओं में क्या सम्बन्ध है।

३. आत्म-विश्लेषण के कार्यों में उसने जो वस्तुगत साक्षी प्राप्त की है, उसका यथासंभव उपयोग करते हुए उस बात का वर्णन करने में छात्र की सहायता करना जिसकी जानकारी उसने अपने तथा हाई स्कूल के विषय में प्राप्त की है।

इनमें से बहुत-सी गतिविधियाँ कक्षा के साथ सामूहिक रूप में की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए सामूहिक परीक्षणों का अर्थ सारी कक्षा को समझाया जा सकता है। कक्षा सामूहिक रूप से व्यावसायिक सूचना परियोजना पर कार्य कर सकती है, अथवा एक हाई स्कूल की तुलना में दूसरे हाई स्कूल में पढ़ने के मूल्यों पर वाद-विवाद कर सकती है, इत्यादि, इत्यादि। मौखिक अंग्रेजी की कक्षा में किये गये कार्य से ऐसी परियोजनाएँ भली-भाँति सम्बन्धित की जा सकती हैं और गणित का जो कार्य परीक्षाओं में अंक प्राप्त करने और उनकी व्याख्या करने के साथ चलता है, उसका सम्बन्ध गणित में होने वाले कक्षा के कार्य के साथ जोड़ा जा सकता है।

निःसंदेह व्यक्तिगत साक्षात्कारों में अधिकांश की व्याख्या की जा सकती है। इन साक्षात्कारों में विद्यार्थी और अध्यापक बैठकर वह वस्तुगत साक्षी अपने सम्मुख रख सकते हैं जिसे विद्यार्थी अपने विषय में एकत्रित करता रहा है। इस साक्षी के अर्थ पर विचार किया जा सकता है और छात्र के प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है। जहाँ सम्भव हो, यह सिफारिश की जाती है कि इन साक्षात्कारों के लिए कुछ समय निश्चित कर दिया जाय अन्यथा अनौपचारिक रूप से यह कार्य किया जाय।

रुझानों के विश्लेषण के लिये प्रस्तावित अभ्यास

रुझानों की खोज करने के अभ्यास के रूप में अध्यापक छात्रों से ऐसी चीजों की सूची बनाने को कह सकता है जिन्हें वे स्कूल या स्कूलों के बाहर अत्यन्त श्रेष्ठ रूप में कर सकता है। फिर वाद-विवाद या साक्षात्कार में छात्रों को यह निर्णय करने में सहायता दे सकता है कि आया इन स्पष्ट रुझानों का उनकी

शैक्षिक योजना में कोई महत्त्व है। व्यापक रूप से विद्यार्थियों को ऐसी पाठ्य विधियों का चुनाव करना चाहिये जिनकी सामग्री उनकी उच्च या 'श्रेष्ठ' रुझानों के समानान्तर है, और उन्हें ऐसी पाठ्य-विधियों से बचना चाहिये जिनकी सामग्री के अध्ययन ने यह बता दिया है कि विद्यार्थी उन पाठ्य-विधियों को ग्रहण करने की पूरी क्षमता नहीं रखता।

अभिरुचियाँ

अनेक कारणों से व्यावसायिक और शैक्षिक निर्देशन में अभिरुचियों का होना महत्त्वपूर्ण है:

१. यदि विद्यार्थी अपनी रुचियों के समानान्तर विषयों का चुनाव करते हैं तो उन्हें अपने कार्य में बहुत अधिक प्रेरणा मिलती है।
२. जो पाठ्य-विधियाँ विद्यार्थियों की रुचियों के समानान्तर हैं, उनमें उन्होंने उच्चकोटि की वास्तविक सफलताएँ प्रदर्शित की हैं।
३. जिन व्यक्तियों का कार्य उनकी रुचियों के अनुकूल होता है, उनका व्यावसायिक तालमेल अपेक्षाकृत उच्चकोटि का होता है।

आठवीं श्रेणी के निर्देशन में बच्चों की उन अभिरुचियों की खोज करने का प्रयास किया जाता है जिनका शैक्षिक महत्त्व होता है और इन रुचियों का उनकी हाई स्कूल की पाठ्य विधियों से सम्बन्ध जोड़ने का यत्न किया जाता है। इस कार्य में जिन प्रमुख उपकरणों का प्रयोग किया जाता है वे हैं अभिरुचि सूची या व्यावसायिक रुचि की सूची। ये परीक्षाएँ कैंटन की आठवीं श्रेणी के समस्त छात्रों की उस समय से पूर्व ली जाती हैं जबकि वे हाई स्कूल की पाठ्य-विधियों का चुनाव करते हैं।

साधारणतया अध्यापक यह संकेत कर सकते हैं कि परीक्षा से जिन विषयों में उनकी गहरी रुचि प्रतीत होती है उसमें विद्यार्थी अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सामान्यत: जो लड़के गणित में, औद्योगिक कक्षाओं में गहरी रुचि लेते हैं, वे उन लड़कों में से होते हैं जो व्यावसायिक हाई स्कूल के चुनाव में रुचि रखते हैं। वाणिज्य पाठ्य-विधि, गृह अर्थशास्त्र और रचनात्मक क्षेत्रों में गहरी रुचि प्रदर्शित करने वाली लड़कियाँ व्यावसायिक हाई स्कूल के सम्बन्ध में गम्भीरता से विचार कर सकती हैं। जिन छात्रों की रुचियाँ पारस्परिक शैक्षिक विषयों के अधिक अनुकूल हैं, वे संभवत: जिला हाई स्कूल के विषय में विचार करते हैं।

योग्यताओं और अभिरुचियों का सम्बन्ध

अध्यापकों को चाहिये कि वे छात्रों को इस बात के लिये सावधान कर दें कि रुचि सम्बन्धी परीक्षाओं से योग्यताओं का वास्तविक अनुमान नहीं होता; ऐसा हो सकता है कि किसी विषय में किसी व्यक्ति को बहुत अधिक रुचि हो, किन्तु

योग्यता बिल्कुल न हो। उदाहरण के लिए किसी विद्यार्थी को संगीत में गहरी रुचि हो, परन्तु वह बिल्कुल बहरा हो या किसी अन्य कारणवश संगीत में सफलता प्राप्त करने में असमर्थ हो। ऐसी स्थिति में उसकी गहरी रुचि के आधार पर संगीत का चुनाव करना मूर्खतापूर्ण होगा। अन्य अभिरुचि में उच्च अंक प्राप्त होने पर पाठ्य-विधि का चुनाव करते समय उसका मूल्यांकन इसी प्रकार करना चाहिये। केवल रुचि होना ही पर्याप्त नहीं है, इस बात की भी साक्षी मिलनी चाहिये कि उस क्षेत्र के लिए उसमें योग्यता भी विद्यमान है। रुचि परीक्षण में प्राप्त अंक सम्पूर्ण चित्र का केवल एक अंश है जिसमें अनेक बातें सम्मिलित हैं और सम्पूर्ण चित्र को ध्यान में रख कर ही उसका अर्थ लगाना चाहिये।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. निर्देशन की वे सर्वाधिक कठिन समस्याएँ कौन-सी हैं, जिनका सामना जूनियर हाई स्कूल के कर्मचारियों को करना पड़ता है ?
२. आठवीं श्रेणी वाले प्रारम्भिक स्कूल में पढ़ने वालों छात्रों की अपेक्षा जूनियर हाई स्कूल के छात्रों को क्या लाभ हैं ?
३. आपके विचार से जूनियर हाई स्कूल के वर्षों में व्यावसायिक निर्देशन पर कितना ध्यान दिया जाना चाहिए ?
४. ऐसे सुझाव दीजिए जिनके द्वारा जूनियर हाई स्कूल में नवीनीकरण और एकीकरण अधिक अच्छे रूप में प्राप्त किये जा सकें।
५. वार्षिक उत्तीर्ण योजना का निर्देशन की दृष्टि से क्या मूल्य है : १०० प्रतिशत उत्तीर्ण योजना में ? इन योजनाओं में क्या खतरे हैं ?
६. जिस उद्देश्य के लिए जूनियर हाई स्कूल की स्थापना हुई थी, उसकी वह कहाँ तक पूर्ति कर रहा है ?
७. ऐसे जूनियर हाई स्कूल के लिए निर्देशन की रूपरेखा बनाइये जिसमें ५०० छात्र हों, १००० छात्र हों, २००० छात्र हों।
८. निर्देशन कार्यक्रम में सम्बन्धित स्कूल कर्मचारियों के महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए।
९. ऐसे सुझाव दीजिए जिनसे नये प्रवेश करने वाले छात्रों को जूनियर हाई स्कूल में आकर्षित किया जा सके।
१०. हैगर्सटाउन और मैरीडन निर्देशन कार्यक्रमों में जूनियर हाई स्कूलों के लिए निर्धारित उद्देश्यों (पृष्ठ २७६-२७१ और २७१-२८१) का मूल्यांकन कीजिए।
११ स्कूल के निर्देशन कार्यक्रमों में गृह-कक्ष के अध्यापक का क्या महत्त्व है ?
१२. वे रीतियाँ बताइये जिनसे आप एक नये छात्र का अपने गृह-कक्ष में स्वागत करेंगे, अपनी कक्षा में स्वागत करेंगे।
१३. शैरों, पेनसिलवानिया और कैंटन, ओहियो, (पृष्ठ २९३-२९९) की निर्देशन योजनाओं का तुलनात्मक अध्ययन कीजिये।
१४. कार्यक्रम-मय मामले का अध्ययन :

१९५३ से १९६० तक आप लैंसिंग जूनियर हाई स्कूल में अध्यापक और क्लब के सलाहकार थे। फिर आपको मुख्य केन्द्रीय कार्यालय में पाठ्य-क्रम के निर्माण का विशेष कार्य सौंपा गया

अब आप निर्देशन कार्यक्रम का पूरे समय का दायित्व लेकर लाइसेंस प्राप्त शैक्षिक और व्यावसायिक परामर्शदाता के रूप में लैंसिंग जूनियर हाई स्कूल में लौट रहे हैं।

गत तीन वर्षों में इस स्कूल के छात्रों की संख्या १५०० से बढ़ कर लगभग ३००० लड़के-लड़कियों तक पहुँच गई है जिसमें मिली-जुली राष्ट्रीय, जातीय, धार्मिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले छात्र हैं; इनमें कम सुविधा प्राप्त परिवारों से आने वाले छात्रों की संख्या बढ़ रही है, यद्यपि "वर्ग" विभाजन की सांख्या लगभग नहीं के बराबर है। कालेज में प्रवेश के लिए तैयार करने वाले पाठ्यक्रम में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों की संख्या का प्रतिशत घटता जा रहा है, यद्यपि २० प्रतिशत विद्यार्थी उच्च प्रगति कक्षाओं में हैं। चार सी० आर० एम० डी० और दो अवसर कक्षाएँ हैं।

तीव्र गति से बढ़ी हुई भर्ती के कारण जब तक भवन का विस्तार समाप्त नहीं हो जाता, तब तक स्कूल दो सत्र चला रहा है। निकाय के वर्तमान सदस्यों में ९७ स्त्री-पुरुष हैं, जिनमें से लगभग ५० प्रतिशत व्यक्त माध्यमिक स्कूल स्थानापन्न लाइसेंस अथवा प्रारम्भिक स्कूल लाइसेंस पर कार्य कर रहे हैं। सन् १९५४ में अवकाश प्राप्त करने वाला स्कूल का भूतपूर्व आचार्य "पुरानी पद्धति" का शिक्षक था जो शैक्षिक सफलता पर विशेष बल देता था। कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ विषय क्षेत्र की गोष्ठियों तक सीमित थीं। विद्यार्थियों का एक संगठन था, किन्तु इस पर अध्यापक का आधिपत्य था। अध्यापक द्वारा परिचालित गृह-कक्ष के निर्देशन घंटों में अच्छे व्यवहारों के विकास पर बल दिया जाता था। श्रेणी के सलाहकारों का मुख्य कार्य विद्यार्थियों को अपने पाठ्यक्रमों की योजना बनाने और सीनियर हाई स्कूल के अपने कार्यक्रमों का चुनाव करने में सहायता देना है। व्यक्तिगत परामर्श की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का दायित्व माता-पिता का था। सामाजिक दृष्टि से अभिभावक-अध्यापक संघ अत्यन्त सक्रिय था।

नव-नियुक्त आचार्य श्री एस० ने निर्देशन और स्कूल के परामर्श कार्य में पृष्ठभूमि का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अतएव उन्होंने तीव्रगति से बढ़ने और परिवर्तित होने वाली छात्र संख्या के लिए उपलब्ध करने के हेतु निर्देशन सेवाओं के सक्रिय एवं पूरे कर्मचारियों से युक्त कार्यक्रम की स्थापना की आवश्यकता को तत्काल समझ लिया। निकाय के बहुत कम सदस्य ऐसे थे जिन्होंने न्यूनतम विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त किया था। निकाय के अधिकांश सदस्य संगठित निर्देशन सेवाओं के प्रति या तो उदासीन हैं अथवा विध्वंसात्मक आलोचक हैं। कुछ पुरानी अध्यापिकाएँ भावुकता के साथ अपने छात्रों से सलग्न हैं।

रुचि रखने वाले लगभग एक दर्जन सहयोगी अध्यापकों के प्रोत्साहन और सहायता से श्री एस० एक अस्थायी निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ करने में सफल हुए हैं। तीनों श्रेणी स्तरों में प्रत्येक की कक्षाएं चार अध्यापकों में बाँट दी गई हैं, जिनमें से एक अध्यापक श्रेणी परामर्शदात्री सेवाओं के अध्यक्ष के रूप में कार्य करता है। गृह-कक्ष के समूह निर्देशन के स्थान में प्रत्येक कक्षा को उपयुक्त निर्देशन परामर्शदाता के साथ सामूहिक निर्देशन के लिए प्रत्येक सप्ताह कार्यक्रम का एक घंटा दिया जाता है। आज तक इस घंटे में विद्यार्थियों के हितों को ध्यान में रखकर निर्धारित विषयों या समस्याओं पर अनौपचारिक वाद-विवाद होता है।

आचार्य प्रत्येक सत्र में निकाय की बैठक में विद्यार्थियों की समस्याओं, श्रेणी परामर्शदाताओं के कार्य और कक्षा के अध्यापक द्वारा किये जाने वाले निर्देशन कार्य पर विचार-विमर्श करके निर्देशन सेवाओं में सामान्य अध्यापक का ज्ञान और रुचि जगाने का यत्न करता रहा है। अध्यापकों को परामर्शदात्री समिति पर कार्य करने के लिए और श्रेणियों के परामर्शदाताओं को ऐसे छात्रों को भेजने के लिए— जिन्हें विशेष सहायता की आवश्यकता है—प्रोत्साहन दिया गया है। समिति के कार्य के लिए अपेक्षाकृत कम ही अध्यापकों ने स्वयं को प्रस्तुत किया है और भेजे जाने वाले छात्रों में से अधिकांश मामले अनुशासन सम्बन्धी हैं। कुछ अध्यापक निर्देशन कार्य

का मौखिक विरोध करते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि से ऐसे कुछ अध्यापकों का काय कम हो जाता है जो आचार्य के प्रिय-पात्र हैं और दूसरे इससे उनकी कक्षाओं का आकार बढ़ जाता है।

संग्रहशील वृत्त अपने पारम्परिक रूप में ही उपयोगी हैं; नगरव्यापी स्तरीकृत परीक्षाएँ होती हैं और उनके परिणाम संग्रहशील वृत्त कार्डों में लिखे जाते हैं। आचार्य, उसके सहकारी और श्रेणियों के परामर्शदाताओं के अतिरिक्त और कोई भी इन परिणामों का उपयोग नहीं करता। जब यह सुझाव दिया जाता है कि व्यवहार की विशेष अनुचित घटनाओं या विशेष रूप से प्रशंसनीय व्यवहारों की विवरणात्मक रिपोर्ट दी जाय तो निकाय के कुछ सदस्य इसे अतिरिक्त भार समझते हैं।

कुछ थोड़े से व्यक्तियों को छोड़कर जो अपनी विगत सामाजिक गतिविधियों में लगे रहते हैं, अभिभावक अध्यापक संघ लगभग निष्क्रिय हो गया है। स्कूल समुदाय के कुछ पुराने निवासी और अध्यापक कुछ विद्यार्थियों के "बुरे आचरण" से स्तब्ध हो गये हैं और स्कूल प्रशासन की "नरम शिक्षा पद्धति" पर इसका दोष मढ़ते हैं। श्री एस० इन आलोचनाओं से परिचित हैं। आचार्य का सहकारी और श्रेणियों के परामर्शदाता सामुदायिक अभिकरणों, शिशु निर्देशन ब्यूरो, धार्मिक तथा अन्य सामुदायिक नेताओं और ऐसे अभिभावकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए आचार्य के साथ मिल-जुल कर कार्य कर रहे हैं जो छात्रों को उनकी समस्याओं को सुलझाने और उनके स्कूल के अध्ययन तथा उत्तरदायित्वों में अधिक रुचि और सामाजिक रवैयों के विकास में सहायता देना चाहते हैं।

स्कूल में निर्देशन सेवाओं के सफल कार्यक्रम का विकास करने के लिए आचार्य शनैः-शनैः प्रयत्न कर रहा है। वह धीरे-धीरे अध्यापकों को अपने दृष्टिकोण का अनुयायी बना रहा है। आपको स्कूल में मुख्य परामर्शदाता का कार्य दिलाने के लिए उसने विशेष प्रार्थना की थी क्योंकि उसे आपकी योग्यता में विश्वास है और उसे आशा है कि आप वर्तमान स्थिति को कुशलतापूर्वक और रचनात्मक दृष्टि से सँभाल ले जाएँगे।

इस समस्या को सावधानी से पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित के अनुसार अपने उत्तरों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कीजिए :

(१) स्थिति का मूल्यांकन कीजिये—मुख्य स्वीकारात्मक और नकारात्मक बातें।
- (क) नीति के वे मुख्य मुद्दे जो इसमें निहित हैं।
- (ख) वे मुख्य निर्देशन आवश्यकताएँ जो स्पष्ट हैं।

(२) सुधार के लिए सुझाव :
- (क) वर्तमान स्थितियों में कौन-से महत्त्वपूर्ण योग दिये जा सकते हैं।
- (ख) इस स्थिति से सम्बन्धित निर्देशन-केन्द्रित विधि के विकास के लिए कौन-सी आलोचनाएँ होने की संभावना है।

१५ सीनियर हाई स्कूल में निर्देशन

निर्देशन सेवाओं के जिन समस्त चरणों का प्रारम्भ जूनियर हाई स्कूल में होता है, वे सीनियर हाई स्कूल के स्तर तक चलते रहते हैं। हाई स्कूल के जो छात्र आठ-वर्षीय प्रारम्भिक स्कूल से सीधे आते हैं उनके लिए नवीनीकरण कार्यक्रम और एकीकरण कार्यविधि की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि दोनों स्कूलों के मध्य की खाई को पाटने में सहायता मिल सके। इस अध्याय में हम यह मान कर चलते हैं कि जूनियर हाई स्कूल इसका पूर्ववर्ती स्कूल है।

बड़े नगरों में स्थापित विशेष शिक्षा देने वाले विद्यालय विद्यार्थी के जूनियर हाई स्कूल के जीवनकाल में या प्रारम्भिक स्कूल के अंतिम वर्षों में निर्देशन की आवश्यकता उत्पन्न करते हैं ताकि वे सही प्रकार के सीनियर हाई स्कूल का चुनाव कर सकें। यद्यपि व्यवसाय का चुनाव करने के लिए यह आयु बहुत छोटी है, तो भी बच्चों को अपनी रुचि, क्षमता और अध्ययन में निश्चित रुझान की दृष्टि से स्कूल का चुनाव करने की योग्यता होनी चाहिये। मध्यवर्ती नवयुवा अवस्था में विद्यार्थी की रुचियाँ प्रतिवर्ष और कभी-कभी प्रतिमास बदलती रहती हैं। अतएव अपनी पसंद के हाई स्कूल में प्रवेश प्राप्त करने के पश्चात् विद्यार्थी को अधिकाधिक विशेष निर्देशन प्राप्त होना चाहिए।

हाई स्कूल का छात्र

हाई स्कूल के वर्षों में नवयुवक के व्यक्तित्व के प्रत्येक चरण में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होता है। साधारणतया वह स्कूल में अपेक्षाकृत अपरिपक्व और अविकसित व्यक्ति के रूप में प्रविष्ट होता है। हाई स्कूल से स्नातक होते-होते उसमें संभवतः प्रौढ़ों के अनेक गुण आ जाते हैं।

हाई स्कूल के छात्र के लक्षण यदि किसी नवयुवक की शिक्षा सामान्य रीति से होती है तो १३ और १५ वर्ष के मध्य (जो इस बात पर निर्भर करता है कि वह

आरम्भिक स्कूल का छात्र है या जनियर हाई स्कूल का स्नातक) हाई स्कूल में प्रवेश करता है और जब वह लगभग १८ का होता है, तब वह हाई स्कूल की पाठ्य-विधि समाप्त कर लेता है। हाई स्कूल में विद्यार्थी कद और शारीरिक ढांचे में प्रौढ़ता प्राप्त कर रहा है। लैंगिक अवयवों के विकास और गौण लैंगिक विशेषताओं से सम्बन्धित समस्त आकाँक्षाओं और रुचियों को वह अनुभव करता है। स्वतन्त्र रूप से कार्य और निर्णय करने की मनोदशा के कारण उसके व्यवहारों को प्रेरणा मिलती है। इसके अतिरिक्त वह अपने गुरुजनों से स्नेह और सुरक्षा भी चाहता है। वह साहसिक कार्य करता है, नई और भिन्न बात की खोज में रहता है, किन्तु उसे यह भय भी रहता है कि कहीं उसके प्रयत्नों के असंतोषजनक परिणाम न हों।

विरोधी लिंग के प्रति अपने सम्बन्धों में वह शनैः-शनैः ऐसे रवैयों का विकास करता है जो विवाह और पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित प्रौढ़ दायित्वों को ग्रहण करने के लिए उसे तैयार करते हैं। इस अवधि में वह किसी व्यवसाय का चुनाव करने और उसके लिए तैयारी में भी अधिकाधिक व्यस्त हो जाता है। उसके अपने निजी मामले और सांसारिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थितियाँ औसत नवयुवक के लिए चिन्ता के विषय होते हैं। अतएव स्कूल की पढ़ाई की नियमित दिनचर्या के बाहर की उसकी अनेक अभिरुचियाँ और गतिविधियाँ, यदि उसे पर्याप्त निर्देशन और परामर्श प्राप्त न हो तो, उसके सफल अध्ययन में हस्तक्षेप कर सकती हैं।

समवयस्कों की स्वीकृति की कामना १४ से १८ वर्ष तक का नवयुवा, हाई स्कूल का विद्यार्थी, ऐसी स्थिति में प्रवेश कर रहा है जिसमें प्रारम्भिक स्कूल की अपेक्षा समान आयु के समूह अधिक अनौपचारिक हैं। दूसरों के द्वारा उसकी स्वीकृति अब अधिक व्यक्तिगत हो जाती है। यदि वह किसी समूह में सम्मिलित होना चाहता है तो उसे सामाजिक रूप ग्रहण करना होगा। उसे उस समूह के लिए कुछ करने को प्रस्तुत होना पड़ेगा अथवा उसे व्यक्तित्व सम्बन्धी वे गुण अपनाने पड़ेंगे जो कि उस समूह के सदस्य चाहते हैं।

नवयुवक को समवयस्कों के रवैयों की चिन्ता होती है। अपनी शारीरिक सज्जा और परिधान पर जो वह अकस्मात् ध्यान देने लगता है, वह इस बात का परिचायक है कि उसे अपने समवयस्कों और कभी-कभी उन गुरुजनों द्वारा व्यक्त की गई पसंद और नापसंदगी के रवैयों की चिन्ता होने लगी है जो कि उसके निकट रहते हैं। उसका मुख्य लक्ष्य यह होता है कि उसके समवयस्कों की सम्मति उसके अनुकूल हो, और इसके लिए वह कभी-कभी प्रौढ़ों की सम्मति की भी उपेक्षा कर जाता है। परिधान और भाषण का अतिरेक उसकी आयु के छात्र द्वारा प्रेरित होता है। ये परिवर्तन आते हैं और जाते हैं. किन्तु जब तक ये टिके रहते हैं तब तक इनसे अभिभावकों और स्कूल के अधिकारियों में पर्याप्त क्षोभ और परेशानी रहती है। किसी का "बन जाने" के लिए नवयुवक को समूह की अनेक प्रकार की माँगों को संतुष्ट करना पड़ता है। यद्यपि वह चाहता है कि उसका व्यक्तित्व पृथक् रहे, तो भी वह अपने प्रत्यक्ष व्यवहार को अपने समवयस्कों के समूह की अपेक्षाओं के अनुकूल ढालता है।

हाई स्कूल के निर्देशन के क्षत्र

हाई स्कूल के स्तर पर निर्देशन सेवाओं का सम्बन्ध विकासशील प्रक्रिया के प्रत्येक रूप से है। चूंकि नवयुवकों में विकास की स्थितियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं और चूंकि प्रत्येक लड़के या लड़की की वृद्धि समानान्तर गति से नहीं होती, इसलिए वांछनीय निर्देशन की व्यवस्था करने में अधिक कठिनाई होती है। सुयोग्य निर्देशन अध्यापकों द्वारा अनेक प्रकार के सामूहिक निर्देशन कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाने चाहिएँ। व्यक्तिशः परामर्श कार्य के लिए भी अवसर निरन्तर प्रदान करने चाहिएँ। कक्षा के बाहर के कार्यों में भाग लेने के अवसर अनेक और विविध होने चाहिएँ। व्यक्ति की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर और उसके अनुकूल पाठ्यक्रम का चुनाव करना चाहिये। अध्यापन के अतिरिक्त हाई स्कूल के अध्यापकों को निर्देशन भी देना चाहिए। जिन स्कूलों में विविध प्रकार के सम्बन्धित अथवा केन्द्रित पाठ्यक्रम पर परीक्षण किये जा रहे हैं, वहाँ इन प्रयोगात्मक कक्षाओं के अध्यापकों पर संभवतः "नियमित" कक्षाओं के अध्यापकों की अपेक्षा निर्देशन कार्य का अधिक उत्तरदायित्व होता है।

निर्देशन कार्यों का संगठन हाई स्कूल के समस्त विद्यार्थियों की सारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रत्येक प्रकार के निर्देशन कर्मचारी की आवश्यकता होती है, और पूर्ववर्णित निर्देशन की समस्त कार्यविधियाँ स्कूल में अपनानी चाहिएं। पूर्ण और शुद्ध संग्रहशील वृत्त रखने चाहिएँ और उनका उपयोग करना चाहिए। आर्थिक दृष्टि से जहाँ तक संभव हो सके, कार्यों के मूल्यांकन और प्रगति-माप के सम्पूर्ण कार्यक्रम संगठित करने चाहिएँ और अध्यापकों तथा परामर्शदाताओं को इसके परिणामों का उपयोग करना चाहिए।

विद्यार्थी के प्रत्येक रवैये और व्यवहार पर प्रत्येक निर्देशन स्थिति में ध्यान देना चाहिए, चाहे नवयुवक की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताएँ किसी एक क्षेत्र से ही सम्बन्धित क्यों न प्रतीत हों। अतएव समन्वय और अनुभव के क्षेत्रों से सम्बन्धित हाई स्कूल की निर्देशन-गतिविधियाँ यहाँ यह मानकर प्रस्तुत की जा रही हैं कि दो क्षेत्रों के मध्य में कोई स्पष्ट रेखा नहीं खींची जा सकती। निर्देशन के अनुभव-क्षेत्र इस प्रकार हैं :

शैक्षिक निर्देशन
व्यावसायिक निर्देशन
व्यक्तिगत तालमेल के लिए निर्देशन
स्वास्थ्य निर्देशन
सामाजिक और नागरिक निर्देशन

समस्त छात्रों का सामान्य नवीनीकरण

जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों के नवीनीकरण पर जो विचार किया गया है। (पृष्ठ २७५-२८१) उसमें ब्यौरेबार यह बताया गया है कि गृह-कक्ष अध्यापक, पाठ-अध्यापक और निर्देशन कर्मचारियों द्वारा क्या किया जा सकता है। सीनियर

हाई स्कूल के लिए इस कार्यक्रम का यहाँ पुनः वर्णन करने की अपेक्षा लॉरेन, ओहियो और हाईलैंड पार्क, मिशीगन में प्रयुक्त होने वाली नवीनीकरण की कार्यविधियाँ प्रस्तुत करना अधिक उपयोगी होगा।

छात्र का नवीनीकरण—लौरेन, ओहियो

हाई स्कूल के छात्रों का परामर्शदाता हाई स्कूल के लिए नवीं श्रेणी के छात्रों को तैयार करने में जूनियर हाई स्कूल के परामर्शदाताओं के साथ मिलकर कार्य करता है। प्रत्येक जूनियर हाई स्कूल की प्रत्येक ९-ए कक्षा में दसवीं श्रेणी का डीन जाता है। वह "छात्र और अभिभावक पुस्तिका"—जो हाई स्कूल की पाठ्य-विधियों का चुनाव करने में निर्देशन का कार्य करती है और जिसका सम्पादन हाई स्कूल के निर्देशन विभाग द्वारा होता है—प्रत्येक छात्र को बाँटता है। फिर वह उस समूह के साथ स्नातक की अपेक्षाओं पर विचार-विमर्श करता है अर्थात् नवीन छात्रों से क्या आशा की जाती है, पाठ्यक्रम के बाहर की गतिविधियाँ क्या हैं आदि। इसके अतिरिक्त हाई स्कूल के विषय में पूछे जाने वाले प्रश्नों का भी वह उत्तर देता है। आमंत्रित किये जाने पर वह अभिभावकों के समूहों से भी वार्तालाप करने के लिए प्रस्तुत रहता है।

प्रत्येक छमाही के प्रारम्भ होने से पूर्व जो वृहस्पतिवार आता है, उसको हाई स्कूल में प्रविष्ट होने वाले समस्त नवीन छात्रों को हाई स्कूल में प्रदर्शन-भवन में नवीनीकरण कार्यक्रम में भाग लेने में लिए आमंत्रित किया जाता है, आधारभूत नियम समझाये जाते हैं, प्रत्येक विद्यार्थी को हाई स्कूल हैंड बुक की एक प्रति दी जाती है और गृह-कक्ष समूहों के रूप में उन्हें स्कूल भवन का घूम-घूम कर परिचय कराया जाता है।

अंग्रेजी विभाग नये विद्यार्थियों को अपने स्कूल के वातावरण से तालमेल बिठाने में सहायता देता है। इस छमाही के प्रथम सप्ताहों में अंग्रेजी की ३ कक्षाएँ हाई स्कूल हैंड बुक का अध्ययन निर्देशन के रूप में उपयोग करती हैं। विगत सामूहिक बैठकों की अपेक्षा यहाँ स्कूल जीवन के समस्त चरणों पर अधिक विस्तार से विचार किया जाता है। उदाहरण के लिए, प्रत्येक कक्षा पुस्तकालय की कार्यविधि का अध्ययन करने के लिए कम-से-कम एक घंटा पुस्तकालय में व्यतीत करती है। इस कार्यविधि का परिचय पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा कराया जाता है।

हाईलैंड पार्क, मिशीगन

गृह-कक्ष वादविवाद के लिए प्रस्तावित विषय—१०वीं श्रेणी के गृह-कक्ष अध्यापक

गृह कक्ष के उद्देश्य की व्याख्या करते हैं

नवीनीकरण :	क्लब	शारीरिक व्यायाम	शौक
	अंक प्रणाली	कार्य	सम्मान

अध्ययन विधि : समय का विभाजन करना, परीक्षा की तैयारी, नोट तैयार करना।

शिक्षा के लाभ, शैक्षिक, व्यावसायिक।

कार्य विभाजन मुख्य—कालेज की तैयारी के लिए गौण।

आपके परामर्शदाता से वार्तालाप। परिचित होना।

दूसरों के साथ मिलकर कार्य करना सीखिये।

क्या मैं स्कूल छोड़कर धंधे में लगूँ?

स्कूल की गतिविधियों में भाग लेना, नाटक, वाद-विवाद, दर्शक, व्यायाम। लाभ—हानियाँ।

अपने परामर्शदाता से परिचय कीजिये। क्यों?

व्यायाम प्रतियोगिता में खेल भावना।

स्कूल के प्रति मेरा दायित्व।

प्रदर्शन कक्ष में—कक्षा में आचरण। जब स्थानापन्न अध्यापक आता है तो क्या कोई परिवर्तन होता है।

गृह-कक्ष में मेरा उत्तरदायित्व क्या है?

हाई स्कूल में मैं सर्वश्रेष्ठ सफलता कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

मेरी व्यक्तिगत, स्थायी, संग्रहशील फाइल में क्या है? उसका क्या मूल्य है?

मेरी व्यावसायिक रुचि क्या है? मैं अपने व्यवसाय के लिए सर्वश्रेष्ठ तैयारी कैसे कर सकता हूँ?

जीवन-स्तर से क्या तात्पर्य है?

व्यवसायों के सम्बन्ध में सूचना मुझे कहाँ मिलेगी?

व्यक्तिगत योग्यताओं का मूल्यांकन कीजिये। मूल्यांकन-पत्र परादर्शदाता से ले लीजिये।

अपने कालेज की बड़ी और छोटी अपेक्षाओं की जाँच करने के लिए अपने परामर्शदाता से भेंट कीजिए।

नागरिकता।

गृह-कक्ष के वाद-विवाद के लिए सुझाव—११वीं श्रेणी के गृह-कक्ष अध्यापक

गृह-कक्ष के उद्देश्य की व्याख्या कीजिये।

१. विद्यार्थी स्नातक होने से पूर्व ही स्कूल क्यों छोड़ देते हैं? उनका भविष्य क्या होता है?
२. जो विद्यार्थी हाई स्कूल का अध्ययन समाप्त करना चाहते हैं उनकी सहायता के लिए स्कूल क्या कर सकता है? अपने सुझाव श्री हैंडले को भेजिये।
३. यदि विद्यार्थी कालेज में न पढ़ना चाहें तो भी क्या उनको कालेज की तैयारी कराने वाली पाठ्य-विधि का अध्ययन करना चाहिए?

४. कक्षा के लिए स्कूल की अच्छी श्रेणियों का क्या महत्त्व है ?
५. कालेज के लिए छात्रों की सिफारिश कौन करता है ? क्या स्नातक होने के पश्चात् मैं किसी भी कालेज में भर्ती हो सकता हूँ ?
६. क्या कालेज के लिए सिफारिश प्राप्त करने में अच्छी श्रेणियाँ, उपस्थिति, नागरिकता सहायक हो सकती हैं ?
७. क्या कालेज में प्रवेश पाने के लिए अथवा स्नातक होने के पश्चात् किसी नौकरी के लिए आवेदन करने की दृष्टि से मुझ में उपयुक्त योग्यताएँ हैं ?
८. हाई स्कूल शिक्षा के साथ मुझे मालिक को क्या देना होगा ?
९. मेरी भावी योजनाएँ क्या हैं ?
१०. इन योजनाओं में सहायता देने के लिए स्कूल क्या कर सकता है ?
११. क्या इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मैं यथाशक्ति कार्य कर रहा हूँ ? यदि नहीं, तो क्यों ? क्या मैं अध्ययन करना जानता हूँ।
१२. जीवनचर्या दिवस क्या है ? जीवनचर्या दिवस से मैं अधिकांश मूल्य कैसे प्राप्त कर सकता हूँ ?
१३. नौकरी के लिए आवेदन करते समय आवेदन-पत्र कैसे भरा जाता है ? एक आवेदन-पत्र प्राप्त कीजिये। उस पर विचार कीजिये।
१४. नौकरी के लिए आवेदन करने के हेतु किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिये ?
१५. क्या आप सामाजिक रूप से प्रस्तुत हैं ? लोगों से कैसे मिलना चाहिए, उनसे कैसे सरलता से व्यवहार करना चाहिए और एक-दूसरे से परिचय कैसे कराना चाहिए ? उचित आचरण। क्या मुझे भोज में उपयुक्त रूप में उपस्थित नहीं होना चाहिए ? वस्त्र कैसे पहनने चाहिएँ, आदि।
१६. आप अपना विश्लेषण कैसे करते हैं ? क्या आप परिपक्व हैं—अपरिपक्व हैं ?
१७. अपनी व्यक्तिगत योग्यताओं का मूल्यांकन कीजिये। मूल्यांकन-पत्र परामर्शदाता से प्राप्त कीजिये।

छात्र पुस्तिका माध्यमिक स्कूल और कालेज के स्तर पर निर्देशन कर्मचारी विद्यार्थियों के लिए—विशेषतः स्कूल में उनके प्रथम वर्ष में—निर्देशन पुस्तिका के महत्त्व को समझते हैं। ये पुस्तिकाएँ नवागन्तुकों को स्कूल से परिचित होने में ही सहायता नहीं देतीं अपितु अन्य विद्यार्थियों को भी उनके स्कूल के उत्तरदायित्वों और उन विविध कार्यों का स्मरण कराती हैं जिनमें वे भाग ले सकते हैं। उपयोगी होने के लिए यह आवश्यक है कि पुस्तिका निर्देशात्मक हो। इस निर्देशन नियमावली की तैयारी और आवश्यक पुनरावृत्ति में कनिष्ठों और वरिष्ठों को सहायता देने से इसका मूल्य बढ़ जाता है।

मध्य-पश्चिमी राज्य की ११४ हाई स्कूलों की पुस्तिकाओं का अध्ययन करके

उनकी विषय सामग्रियों के सम्बन्ध में राबर्ट एम० ह्वाइट ने निम्नलिखित रिपोर्ट तैयार की है :

सरिणी २. कुछ विशिष्ट मदों से युक्त पुस्तिकाओं की श्रेणी और प्रतिशत*

श्रेणी	प्रतिशत	मद
१	८६	नियम और उपनियम
२	७७	कार्य और संगठन
३	७१	दैनिक सूची
४	६६	स्कूल सेवाएँ
५	६२	निकाय कार्यकर्त्ताओं की सूची
६	६१	रिपोर्ट और सूचना
७	५६	पाठ्यक्रम, अपेक्षित
८	५४	घटनाओं की सूची
९·५	५२	पाठ्यक्रम, वैकल्पिक
९·५	५२	पुरस्कार और सम्मान
११	५०	स्कूल के गीत, हर्ष-भावना
१२·५	४६	भूमिका
१२·५	४६	श्रेणी प्रणाली
१४	४४	स्नातक अपेक्षाएँ
१५·५	४३	स्कूल दर्शन
१५·५	४३	स्वागत
१७	४०	छात्र शुल्क
१८	३१	पाठ्य-सामग्रियों की सारिणी
१९	२८	प्रस्तावना
२०	२३	फर्श के नक्शे
२१	२१	अध्ययन के सुझाव
२२	२०	पाठ्य-विधि के विवरण
२३	१६	स्कूल की परम्पराएँ
२४	१४	सूची
२५·५	१२	कालेज की अपेक्षाएँ
२५·५	१२	छात्र परिषद् विधान
२७	०	विज्ञापन

* आर० एम० ह्वाइट "Student Handbooks : Observations and Recommendations." The Personnel and Guidance Journa . पृष्ठ १३, जिल्द ३७, सं० १, सितम्बर १९५८; अनुमति से प्रयुक्त ।

शैक्षिक निर्देशन

हाई स्कूल स्तर पर जिन निश्चित उद्देश्यों की ओर शिक्षा का लक्ष्य है उनमें माध्यमिक शिक्षा के वे सात महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त सम्मिलित हैं जिनकी सिफारिश राष्ट्रीय शिक्षा संघ के माध्यमिक शिक्षा पुनर्गठन आयोग ने १६१८ में की थी और जिनकी सूची पहले अध्याय में दी गई है। स्वास्थ्य व मौलिक कुशलताओं के मामले में व्यक्ति की विविध आवश्यकताएँ और घर, व्यावसायिक, नागरिकता तथा मनोरंजन के कार्य हाई स्कूल के निर्देशन कर्मचारियों और कक्षा के अध्यापक की चिन्ता के विषय बन जाते हैं। अतएव निर्देशन सेवाएँ निश्चित रीतियों से स्कूल के शैक्षिक कार्यक्रम की पूरक बन जानी चाहियें। निर्देशन परामर्शदाता ही हाई स्कूल के छात्र को उसकी योग्यताओं और अभिरुचियों के अनुसार पाठ्यक्रम का तालमेल बिठाने में सहायता दे सकता है।

शैक्षिक निर्देशन के लक्ष्य और उद्देश्य हाई स्कूल का शैक्षिक निर्देशन पाठ्यक्रम के साथ अपने सम्बन्ध की दृष्टि से निर्देशन के अन्य रूपों से भिन्न है। इसमें अध्ययन की पाठ्य-विधियाँ, उच्च स्तर पर शिक्षा की प्रगति अथवा व्यावसायिक क्षेत्र में अध्ययन के शैक्षिक रूप सम्मिलित हैं। हाई स्कूल स्तर पर निर्देशन का उद्देश्य निश्चित रूप से निम्नलिखित कार्य करने में विद्यार्थी की सहायता करना है :

१. उस पाठ्यक्रम का चुनाव करने में जो उसकी योग्यताओं, रुचियों और भावी आवश्यकताओं के सर्वाधिक अनुकूल हो
२. ऐसे कार्य और अध्ययन का स्वभाव विकसित करने में जिससे वह अपने अध्ययन में संतोषजनक सफलता प्राप्त कर सके
३. अपनी विशेष रुचियों और प्रतिभाओं के विशिष्ट क्षेत्रों के बाहर के अध्ययन में कुछ अनुभव प्राप्त करने में
४. अपनी आवश्यकताओं के संदर्भ में स्कूल का उद्देश्य और कार्य समझने में
५. अपने स्कूल में पढ़ाये जाने वाले विषयों का ज्ञान प्राप्त करने और उसके अनुसार अपने अध्ययन का कार्यक्रम बनाने में
६. बाद में वह जिस कालेज या स्कूल में भर्ती होने का इच्छुक हो, उसके लक्ष्य और कार्य की जानकारी प्राप्त करने में
७. आगे किये जाने वाले अध्ययन की अभिज्ञता प्राप्त करने के लिये परीक्षणात्मक अथवा अनुसंधानात्मक पाठ्य-विधियों का चुनाव करने में
८. कक्षा के बाहर की उन गतिविधियों में भाग लेने में जिनमें कि सशक्त नेतृत्व के गुणों का विकास कर सकता है
९. कालेज या अन्य स्कूल में चलने वाले उसके अध्ययन पर किसी विशेष व्यवसाय के लिए अपनी योग्यता का मूल्यांकन करने में
१०. ऐसे रवैये का विकास करने में जिससे उसे ऐसे स्कूल में अध्ययन करने

की प्रेरणा मिल सके जो उसकी प्रतिभा और प्रशिक्षण की दृष्टि से चुना गया हो

११. स्कूल के पाठ्क्रम और जीवन से तालमेल बिठाने में

ऐसा प्रतीत हो सकता है कि इन लक्ष्यों की सूची इस मान्यता पर आधारित है कि हाई स्कूल के समस्त अथवा अधिकांश स्नातक अपना अध्ययन उच्चतर स्तर तक जारी रखेंगे। आजकल अमेरिका के हाई स्कूल के ३५ प्रतिशत स्नातक कालेजों में अध्ययन करने के लिये प्रविष्ट होते हैं। यद्यपि १८ वर्ष से अधिक आयु के पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही है, तो भी प्रतिशत फिर भी कम है।

अतएव अमेरिकन हाई स्कूल उन नवयुवकों की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न कर रहा है जिनकी शिक्षा हाई स्कूल का स्नातक होने के पश्चात् समाप्त हो जाती है। जिन निर्देशन कार्यों का उद्देश्य नवयुवकों को व्यवसाय में सीधे प्रवेश करने में सहायता देना है, उनका वर्णन इस अध्याय में आगे चलकर किया जायेगा।

मूल सिद्धान्त समस्त छात्रों के लिये शैक्षिक निर्देशन को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि कुछ मूल सिद्धान्तों का पालन किया जाय :

१. हाई स्कूल में प्रवेश करने पर अथवा उसके पश्चात् छात्रों की स्तरीकृत परीक्षाएँ ली जानी चाहियें जो एक या दूसरे पाठ्यक्रम में सफलता का संकेत करती हैं। प्रयोग किये जाने वाले मापक उपकरणों में साधारणतया बुद्धि परीक्षा और पाठ की योग्यताओं तथा गणित की योग्यता की परीक्षाएँ सम्मिलित हैं। कुछ स्कूल "हाई स्कूल में प्रवेशार्थियों के लिये परीक्षा"* जैसी अधिक व्यापक परीक्षाएँ लेते हैं।

२. पाठ्यक्रम के चुनाव में निर्देशन का निर्णय परीक्षा के परिणामों, विगत स्कूल स्तर में प्राप्त सफलता की स्थिति और छात्र तथा अभिभावक की रुचि को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिये।

३. अध्ययन के प्रत्येक विषय में प्रत्येक सत्र या वर्ष में छात्र द्वारा प्राप्त सफलता का परीक्षण परामर्शदाता को निकट से करना चाहिये।

४. यदि किसी छात्र को अपने निर्वाचित अध्ययन-कार्यक्रम में कठिनाई प्रतीत हो तो यह बात परामर्शदाता, विद्यार्थी और उसके अभिभावक को शीघ्र समझ लेनी चाहिए। कार्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करने के लिए तत्काल कार्यवाही करनी चाहिए ताकि छात्र का बहुत अधिक समय नष्ट न हो अथवा वह इतना हताश न हो जाय कि पढ़ाई ही छोड़ बैठने को तैयार हो जाय।

५. जिस विषय में विद्यार्थी अनुत्तीर्ण होता है, उस विद्यार्थी को वह विषय उसी अध्यापक द्वारा पुनः नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। कभी-कभी अध्या-

* लेस्टर डी० क्रो और एलाइस क्रो "A Test for High School Parents" दि अकोर्न पब्लिशिंग कं०, राकविले सेंटर, न्यूयार्क, १९४५ और १९५९।

पक और छात्र के व्यक्तित्व सम्बन्धी भेद अध्ययन की प्रगति में बाधक होते हैं।

लौरेन (ओहियो) हाई स्कूल में कार्यान्वित होने वाले शैक्षिक निर्देशन का स्पष्ट रूप से इस प्रकार चित्रण किया गया है :

शैक्षिक परामर्श-कार्य

शैक्षिक परामर्श-कार्य गतिशील प्रक्रिया है। प्रत्येक लड़के और लड़की को अपनी योग्यता, रुचि और भावी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सावधानी से अपने पाठ्यक्रम का चुनाव करना चाहिए। प्रत्येक छमाही के तृतीय सप्ताह में जब परामर्शदाता प्रत्येक अंग्रेजी, अमेरिकन इतिहास और नागरिक शास्त्र की कक्षा में जाता है तब सामूहिक परामर्श प्रविधि का प्रयोग किया जाता है। इस घण्टे में स्नातक होने के लिये आवश्यक अपेक्षाओं की समीक्षा की जाती है, पंजीकरण कार्ड वितरित किये जाते हैं और आगामी छमाही की योजनाएँ प्रारम्भ होती हैं। यहाँ प्रत्येक छात्र को प्रश्न पूछने का अवसर प्राप्त होता है।

जब सामूहिक परामर्श-कार्य समाप्त हो जाता है, तब प्रत्येक छात्र को व्यक्तिशः वार्तालाप के लिए बुलाया जाता है। छात्र के सम्बन्ध में उपलब्ध (योग्यता, रुचि, रुझान, विगत कार्य की) जानकारी का उपयोग करते हुए विद्यार्थी को उसका कार्यक्रम बनाने में सहायता दी जाती है। फिर अस्थायी कार्यक्रम की एक प्रतिलिपि अभिभावकों के पास उनकी स्वीकृति के लिए भेज दी जाती है। यदि वे इसे अस्वीकार कर देते हैं तो अभिभावक और परामर्शदाता के आपस में मिलने की व्यवस्था की जाती है।

विद्यार्थी की असफलता निर्देशन के लिए चिन्ता का विषय है। अध्यापक कार्य में सुधार करने और भावी असफलता को रोकने की दृष्टि से बहुधा उन विद्यार्थियों को जाँच के लिए भेजते हैं जिनका कार्य असंतोषजनक होता है। कठिनाई का पता लगाने के लिए छात्र से भेंट की जाती है और आवश्यकता होने पर अभिभावकों को परामर्शदाता तथा अध्यापक से विचार-विनिमय करने के लिए बुलाया जाता है।

समस्त विद्यार्थियों को अपनी योग्यताओं का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, चाहे, ये योग्यताएँ किसी भी क्षेत्र में हों। चूँकि उनकी यह अवस्था है जो औपचारिक शिक्षा पर अधिक बल देती है, इसलिए अधिकांश लड़कों और लड़कियों को अपना हाई स्कूल प्रशिक्षण समाप्त करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए और दिया जाता है। जो योग्य छात्र बीच में स्कूल छोड़ देते हैं उन्हें परामर्शदाता स्कूल में बने रहने की उपयोगिता समझाते हैं। जब तक अभिभावक और परामर्शदाता के मध्य होने वाली बातचीत से यह निश्चित नहीं हो जाता कि स्कूल का परित्याग विद्यार्थी के सर्वश्रेष्ठ हित में है तब तक उसे स्कूल छोड़ने की अनुमति नहीं दी जाती।

जिनमें हाई स्कूल के पश्चात् अपनी पढ़ाई जारी रखने की योग्यता होती है, उनके लिए अनेक प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध की जाती हैं।

चूँकि अनेक कालेज मानसिक योग्यता की कुछ स्तरीकृत परीक्षाओं में प्राप्तांक चाहते हैं, अतएव निर्देशन विभाग समस्त वरिष्ठों को अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं। अभिभावकों और विद्यार्थियों को इस अवसर की सूचना व्यक्तिगत पत्र लिख कर दी जाती है जिससे वे एक या अधिक कालेजों में आने-जाने की परेशानी से बच जाते हैं। परीक्षा के इच्छुक समस्त वरिष्ठ ए की प्रत्येक छमाही में ओहियो राज्य मनोवैज्ञानिक परीक्षा ली जाती है।

प्रत्येक डीन के कार्यालय में स्कूलों के सम्बन्ध में जानकारी की एक फाइल स्कूल के समस्त छात्रों के उपयोग के लिए और अभिभावकों को घर ले जाकर देखने के लिए मिल सकती है। स्नातक होने के पश्चात् प्रशिक्षण प्राप्त करने के सम्बन्ध में जो व्यक्ति परामर्श करना चाहें, उनके लिए प्रत्येक श्रेणी स्तर पर परामर्शदाता उपलब्ध होते हैं। निर्देशन विभाग से पत्र-व्यवहार के पश्चात् अभिभावकों से अनेक मुलाकातें होती हैं। जो कनिष्ठ विद्यार्थी हाई स्कूल के पश्चात् प्रशिक्षण प्राप्त करने के योग्य होते हैं उनके अभिभावकों को डीन द्वारा एक पत्र भेजा जाता है। यह पत्र अभिभावकों को कालेज की योजना को वरिष्ठ वर्ष में शीघ्र समाप्त कराने के लिए प्रोत्साहन देता है।

इस अंतिम वर्ष में प्रत्येक वरिष्ठ और उसके डीन के मध्य व्यक्तिगत रूप से अनेक मुलाकातें होती हैं। प्रवेश-विधि, कालेज का चुनाव, उपलब्ध वित्तीय सहायता, आदि ऐसी समस्याएँ हैं जिनमें डीन सहायता देता है। जिस स्कूल में छात्र भर्ती होना चाहता है, उसको विद्यार्थी के व्यक्तित्व और चरित्र आदि का पूरा विवरण भेज दिया जाता है। समस्त योग्य और उपयुक्त विद्यार्थियों के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने के हेतु विशेष यत्न किये जाते हैं। इससे बहुधा यह आवश्यक हो जाता है कि छात्रवृत्ति के लिए अपेक्षित परीक्षा ली जाय अथवा नगर के बाहर स्थित परीक्षण केन्द्रों में होने वाली छात्रवृत्ति प्रतियोगिता में छात्रों को बिठाने की व्यवस्था की जाय। कालेज प्रवेश परीक्षा बोर्ड और नेवल रिजर्व आफीसर्स ट्रेनिंग कोर एक्जामिनेशन ऐसी परीक्षाओं में से हैं जो इस श्रेणी में आते हैं। निर्देशन विभाग वरिष्ठों के लिए ओहियो जनरल स्कालरशिप टेस्ट अथवा ऐसी अन्य नियमित संस्था जैसे नेशनल मेरिट फाउण्डेशन, जनरल मोटर इंस्टीच्यूट, नेशनल ऑनर सोसायटी, ए० ए० यू० डब्ल्यू०, नेशनल ट्यूब कं०, थ्यू शावल की परीक्षाओं में सरकारी विभाग को सहयोग देते हैं। विगत परीक्षाओं के नमूनों की प्रतिलिपियाँ और समीक्षा के लिए प्रस्तावित अध्ययन निर्देशन पुस्तकालय और उनके निर्देशन कार्यालयों में मिल सकते हैं।

इस वर्ष के पतझड़ के मौसम में निर्देशन विभाग केवल एल० एच० एस० छात्रों के लिए ही नहीं अपितु लौरेन के समस्त लड़कों और लड़कियों तथा उनके अभिभावकों के लिए एक संध्याकालीन कार्यक्रम आरम्भ करता है। जो व्यक्ति

विविध स्कूलों के विषय में ताजा जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए कालेज नाइट की व्यवस्था होती है। ओहियो के समस्त कालेजों और विश्वविद्यालयों तथा ओहियो के बाहर के उन समस्त कालेजों और विश्वविद्यालयों को निमंत्रित किया जाता है जिनके विषयों में छात्र अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा प्रगट करते हैं। इस संध्याकालीन कार्यक्रम में ६० से अधिक प्रतिनिधि भाग लेते हैं।

हाई स्कूलोत्तर शिक्षा के लिए निर्देशन प्रत्येक विद्यार्थी के पास इस प्रकार के कालेज अथवा हाई स्कूल के पश्चात् की संस्था के सम्बन्ध में विवरण प्राप्त करने के साधन होने चाहिएँ जिसमें वह भरती होना चाहता है। उसे इस प्रकार की सूचनाएँ उपलब्ध होनी चाहिएँ :

१. आगे पढ़ने का व्यक्ति और समाज के लिए मूल्य।
२. विद्यार्थी के हित को बढ़ाने के लिए उपलब्ध स्कूलों के प्रकार।
३. प्रवेश की अपेक्षाएँ, लागत और प्रत्येक प्रकार की पाठ्य-विधि की अवधि।
४. स्कूल के उद्देश्यों और कार्यक्रमों का मूल्यांकन।
५. उच्च स्कूल में अध्ययन की पाठ्य-विधि समाप्त करने के पश्चात् रचनात्मक कार्य के अवसर।

जूनियर हाई स्कूल के कार्यक्रम की सफलता सीनियर हाई स्कूल में विद्यार्थी के रवैये में परिलक्षित होगी। एकीकरण के कार्यक्रम का शैक्षिक मूल्य है, परन्तु इस पर केवल सभारम्भ के रूप में ही विचार किया जा सकता है। तालमेल का जैसा कार्यक्रम पिछले अध्याय में जूनियर हाई के लिए सुझाया गया है वैसा ही कार्यक्रम सीनियर हाई स्कूल में अपनाना चाहिये, किन्तु अधिक गहनता के साथ। कालेज के विषय में—उनकी प्रवेश सम्बन्धी अपेक्षाओं और उनके पाठ्य-विषयों के सम्बन्ध में—निर्देशन कार्यालय में पर्याप्त तथ्य होने चाहिएँ ताकि उनमें रुचि रखने वाले विद्यार्थी इन बुलेटिनों का अध्ययन करके इस बारे में परामर्शदाता से बात कर सकें। यदि कालेज के उपलब्ध साहित्य में विद्यार्थी की रुचि की सामग्री नहीं मिलती तो यह निर्देशन परामर्शदाता का उत्तरदायित्व है कि वह छात्र के लिए वांछनीय सूचना प्राप्त करे। कालेजों के सम्बन्ध में पत्रकों और पुस्तकों का एक ऐसा विभाग कालेज में होना चाहिए, जहाँ तक छात्र पहुँच सकें।* कालेज किसी भी इच्छुक हाई स्कूल के पास अपना सूची-पत्र और अन्य सामग्रियाँ भेज देंगे। जिन कालेजों की सूची में जिन हाई स्कूलों का नाम होता है, वे उन्हें प्रतिवर्ष अपने सूची-पत्र भेजते हैं ताकि स्कूल निर्देशन पुस्तकालय में उनके सम्बन्ध में नवीनतम जानकारी रहे। कालेज के वार्षिक अंक और पुस्तिकाएँ भी होती हैं जो आवेदन करके प्राप्त किए जा सकते हैं। इनमें

* दो अच्छी पुस्तकें हैं "American Universities and Colleges", ए० जे० ब्रमबाघ द्वारा सम्पादित, अमेरिकन शिक्षा परिषद्, वाशिंगटन डी० सी० और क्लेरेंस ई० लवजॉय की Complete Guidance to American Colleges and Universities, साइमन और शुस्टर इनको०, न्यूयार्क, १९५८।

वे सूचनाएँ भी होती हैं जो सूची-पत्र में नहीं होतीं, वे कालेज की शैक्षिक पाठ्य-विधि का वर्णन नहीं करते, किन्तु वे स्कूल के सामाजिक जीवन का चित्र प्रस्तुत करते हैं जो कालेज का चुनाव करने में बहुधा निर्णायक तत्त्व होता है।

किन्तु हाई स्कूल के परामर्शदाताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि नवयुवक कालेज की पुस्तिका की तड़क-भड़क से बहुत अधिक प्रभावित न हो जाएँ। यह सावधानी भी परामर्शदाताओं के लिए इतनी ही महत्त्वपूर्ण है कि वे कालेज के उन कार्यक्रमों के प्रति सतर्क रहें जिनमें हाई स्कूल के वरिष्ठों को इसलिए आमंत्रित किया जाता है कि वे उस कालेज में प्रवेश पाने के लिए उन्हें आकर्षित कर सकें। निःसन्देह इन सभाओं को प्रोत्साहन तो देना चाहिए किन्तु छात्रों का कालेज का चुनाव केवल इसलिए ही नहीं कर लेना चाहिए कि उनके आगमन पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। हाई स्कूल के निर्देशन कर्मचारियों का कर्त्तव्य है कि वे छात्रों को कालेज के शैक्षिक और सामाजिक लाभों को पहचानने में सहायता दें और उनके निजी हित में सर्वश्रेष्ठ कालेज का चुनाव करने लिए उन्हें प्रोत्साहन दें।

यदि कोई नवयुवक कालेज के लिए तैयारी कराने वाले किसी निजी स्कूल में एक या अधिक वर्ष व्यतीत करना चाहता है तो परामर्शदाता इन स्कूलों के अपेक्षाकृत स्थायित्व की तुलना करने में उसकी सहायता कर सकता है। निम्नलिखित मान्यता-प्राप्त संस्थाएँ वास्तविक सूचना देंगी :

न्यू इंग्लैण्ड एसोसिएशन ऑफ कालेजेज एण्ड सैकेण्डरी स्कूल्स
हार्वर्ड ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एजुकेशन, कैम्ब्रिज, मैसाचूसेट्स
मिडिल स्टेट्स एसोसिएशन ऑफ कालेजेज एण्ड सैकेण्डरी स्कूल्स
फिल्डेल्फिया, पेनसिल्वानिया
सदर्न एसोसिएशन ऑफ कालेजेज एण्ड सैकेण्डरी स्कूल्स
एटलांटा, जार्जिया
नार्थ सेंट्रल एसोसिएशन ऑफ कालेजेज एण्ड सैकेण्डरी स्कूल्स
यूनीवर्सिटी आफ नेबरास्का, लिंकन, नेबरास्का
नार्थवेस्ट एसोसिएशन ऑफ सैकेण्डरी एण्ड हायर स्कूल्स
यूनीवर्सिटी ऑफ आरेगन, यूजिन, आरेगन।

बहुत से निजी स्कूलों ने दीर्घकाल से और सुचारु रूप से देश की सेवा की है और देश के प्रमुख कालेजों में योग्य नवयुवकों का प्रवेश संभव बनाने में सहायता दी है। किन्तु कालेज-प्रवेश की अपेक्षाओं में परिवर्तन हो रहे हैं, इसलिए इस प्रकार के स्कूलों में पढ़ाई करके हाई स्कूल शिक्षा की पूर्ति करने की प्रथा कम होती जा रही है।

कालेज के चुनाव का आधार कालेज का चुनाव करने में अनेक बातों पर विचार किया जाता है। जब तक कि विद्यार्थी के मस्तिष्क में कोई निश्चित लक्ष्य न हो, कालेज की सुविधाजनक स्थिति संभवतः सबसे अधिक महत्त्व रखती है। प्रवेश के लिए आवश्यक अपेक्षाओं, अध्ययन व्ययों और अवसरों की दृष्टि से कालेजों में परस्पर भारी अन्तर होता है। इन बातों के अतिरिक्त विद्यार्थी द्वारा किये गये चुनाव पर

इस बात का भी प्रभाव पड़ सकता है कि माता-पिता में से कोई एक या दोनों उस कालेज के स्नातक रहे हों अथवा परामर्शदाता, प्रिय अध्यापक या मित्र उस कालेज का छात्र रहा हो। यदि विद्यार्थी होनहार है तो यह समझ में आ सकता है कि कोई कालेज उसे अपने यहाँ क्यों चाहता है। कालेज के प्रशासकीय अधिकारी निरन्तर अपने छात्रों के द्वारा यह प्रयत्न करते हैं कि प्रतिभासम्पन्न छात्रों को उनके कालेज में भर्ती होने के लिये प्रेरित करें।

कुछ कालेजों में प्रवेश के लिये आवश्यक अपेक्षाएँ निश्चित होती हैं, अभिभावकों और बच्चों को इनका ज्ञान हाई स्कूल के प्रारम्भ में ही प्राप्त कर लेना चाहिये ताकि इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिये सही पाठ्यक्रम का चुनाव किया जा सके। अनेक बार विद्यार्थी पाठ्यक्रम का सही चुनाव करने में असफल रहता है, इसका दोष सदैव अध्यापक, निर्देशन परामर्शदाता या अभिभावकों पर ही नहीं होता, स्वयं छात्र पर भी हो सकता है। जो वह पढ़ना चाहता है, उसके विषय में उसकी निजी धारणाएँ हो सकती हैं और वह उचित सलाह को अस्वीकार कर सकता है और जब वह स्वीकार करने को प्रस्तुत होता भी है, तब बहुत देर हो चुकी होती है। ऐसा बहुत बार होता है। फिर भी बुद्धिमान छात्र के लिये अपेक्षा की समस्त पाठ्य-विधियाँ समाप्त न करने पर भी कालेज में अनेक बार प्रवेश पाना संभव हो जाता है।

राष्ट्रीय, राजकीय और निजी रूप से दी गई छात्रवृत्तियों ने बहुत-से बुद्धिमान छात्रों के लिये कालेज में प्रवेश पाना सम्भव कर दिया है। पिछली दशाब्दि में इन छात्रवृत्तियों के अतिरिक्त बड़े व्यापारिक और औद्योगिक संगठन भी विशिष्ट क्षेत्रों में कुछ छात्रवृत्तियाँ प्रदान कर रहे हैं। अब चूँकि अधिक से अधिक सुयोग्य हाई स्कूल स्नातकों के लिए कालेज शिक्षा के हेतु धन उपलब्ध हो रहा है, इसलिए नवयुवकों और उनके अभिभावकों को उचित निर्देशन प्रदान करने का उत्तर-दायित्व स्कूल के लोगों पर जितना आज है, उतना पहले कभी नहीं था।

डा० कौनैन्ट ने हाई स्कूलों का जो अभी हाल ही अध्ययन किया है उससे प्रशिक्षित निर्देशन -कर्मचारियों की आवश्यकता का भान होता है। विद्यार्थी के लिए जो सर्वश्रेष्ठ है उसके सम्बन्ध में की गई उनकी सिफारिशें क्रियान्वित हो सकती हैं जबकि विविध स्कूल स्तरों पर पर्याप्त निर्देशन की व्यवस्था की जा सके। हाई स्कूल के परामर्शदाता के लिए यह विशेष रूप से भारी चुनौती है।

डाक्टर कौनेन्ट ब्यौरेवार सिफारिश करते हैं :

१. छात्रों को परामर्श देने या निर्देशन का कार्य प्रारम्भिक स्कूल में प्रारम्भ होता है।
२. कम से कम आंशिक रूप में निर्देशन की प्रगति स्कूल के स्तरों में अच्छे एकीकरण के द्वारा बनाई रखी जा सकती है।
३. हाई स्कूल स्तर पर एक निर्देशन कार्यकर्त्ता के पास २५० से लेकर ३०० तक परामर्शपात्र होते हैं।

४. यद्यपि परामर्शदाता को अध्यापन का अनुभव होना चाहिए तो भी वह व्यावहारिक रूप से अपना सारा समय परामर्शदाता के रूप में ही लगाता है।
५. छात्रों के रुझानों और सफलताओं की खोज करने के हेतु मापक साधनों का उपयोग और उनकी व्याख्या करने के कार्य में परामर्शदाता को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।
६. परामर्शदाता का कार्य नवयुवकों को अभिभावकीय निर्देशन देना नहीं अपितु उसके पूरक के रूप में कार्य करना है।
७. परामर्शदाता का एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व यह है कि वह विद्यार्थी के अध्ययन के कार्यक्रम को इस प्रकार नियोजित करने में उसके साथ घुल-मिल कर कार्य करे कि उसके वैकल्पिक विषय उसकी रुचियों और योग्यताओं के अनुकूल हों—चाहे उसकी योग्यता उच्चकोटि की हो या मन्द।
८. विद्यार्थी के अध्ययन कार्यक्रमों को नियोजित और क्रियान्वित करने में परामर्शदाता अध्यापक के साथ सहयोग करता है।*

व्यावसायिक निर्देशन के लक्ष्य और कार्य

छात्रों की मंदगति पर कम बल देते हुए विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने की नई नीति ने बहुत-से नवयुवकों को पहले की अपेक्षा कम आयु में सीनियर हाई स्कूल में पहुँचा दिया है। सीनियर हाई स्कूल की अपने अन्दर बनाये रखने की बढ़ती हुई शक्ति के साथ-साथ उन युवकों का व्यावसायिक निर्देशन करने का दायित्व भी उस पर आ गया है जो शीघ्र ही किसी व्यवसाय में प्रवेश करने के लिए स्कूल का परित्याग करेंगे। पिछले कुछ वर्षों में कालेज के छात्रों की संख्या दुगनी हो जाने पर भी यह सत्य है कि बहुत-से विद्यार्थी अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी नहीं करते और यदि करते भी हैं तो वे पढ़ाई की अपेक्षा नौकरी पर अधिक ध्यान देते हैं।

विचार की सुविधा के लिये शैक्षिक निर्देशन और व्यावसायिक परामर्श-कार्य पर यहाँ पृथक्-पृथक् विचार किया गया है, किन्तु किसी अध्यापक या परामर्शदाता को उन्हें पृथक् करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये। वे दोनों साथ-साथ चलने चाहियें।

व्यावसायिक निर्देशन से तात्पर्य साधारणतया विद्यार्थियों को किसी व्यवसाय का चुनाव करने, उसके लिए तैयार करने और उसमें प्रगति करने से लिया जाता है। लगभग समस्त तथाकथित शैक्षिक निर्देशन में यह व्यावसायिक सहायता निहित होती थी। बहुधा भावनात्मक रूप निर्देशन पर हावी हो जाता है, फिर भी यह शैक्षिक, व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से अनिवार्यतः सम्बद्ध है।

*. देखिए जेम्स बी० कौनेन्ट "The American High School Today" पृष्ठ ४४-४५ मैकग्राहिल बुक कं०, न्यूयार्क, १९५९।

व्यावसायिक चुनाव का प्रारम्भ घर, समाज और स्कूल में दृश्य सहायक कार्य-क्रमों के द्वारा और समुदाय के बाहर किये जाने वाले अनुसंधानात्मक भ्रमणों से होता है। व्यावसाय का चुनाव करके उसे प्राप्त करना चाहिये और फिर उस कार्य के साथ तालमेल बिठाना चाहिए। ये सारे कार्य व्यावसायिक निर्देशन के अन्तर्गत आते हैं।

व्यावसायिक निर्देशन में विशेष रूप से निम्नलिखित लक्ष्य सम्मिलित हैं :—

१. विद्यार्थी द्वारा चुने गये व्यवसाय के कार्यो, कर्त्तव्यों, दायित्वों और पुरस्कारों का ज्ञान प्राप्त करने में विद्यार्थी की सहायता करना।

२. विद्यार्थी को अपनी निजी योग्यताओं और कुशलताओं से परिचित होने तथा विचाराधीन व्यवसाय के साथ उसका तालमेल बिठाने में उसकी सहायता करना।

३. उसे अपने और समाज के लिए उपलब्ध महत्त्व का ध्यान रखते हुए विद्यार्थी को अपनी क्षमताओं और रुचियों का मूल्यांकन करने में सहायता देना।

४. कार्य के प्रति व्यक्ति के रवैये को विकसित करने में सहायता देना जिससे वह चाहे जिस व्यवसाय में जाय, उसका सम्मान करे। चुनाव का महत्त्वपूर्ण आधार स्वयं को मिलने वाला संतोष और उसके द्वारा की जाने वाली सेवा होनी चाहिए।

५. स्कूल की शिक्षा और व्यावसायिक अनुसन्धान के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे अन्वेषणात्मक अवसर प्रदान करना जिनसे विद्यार्थी अनेक प्रकार के कार्यों से परिचित हो सके।

६. विविध प्रकार के व्यवसायों पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करने और व्यवसायों के सम्बन्ध में प्राप्त सूचना के विश्लेषण की प्रविधि को सीखने में सहायता देना।

७. मानसिक, शारीरिक और आर्थिक दृष्टि से पंगु छात्रों को ऐसे तालमेल में सहायता देना जिससे वे अपने भावी जीवन और व्यक्तिगत तथा सामाजिक कल्याण के लिये सफलतापूर्नक संघर्ष कर सकते हैं।

८. अध्यापकों तथा अन्य निर्देशन कर्मचारियों के प्रति ऐसा विश्वास उत्पन्न करना जिससे उन्हें व्यक्तिगत और व्यावसायिक समस्याओं पर उनसे बात करने के लिए प्रोत्साहन मिल सके।

९. व्यावसायिक प्रशिक्षण में रत विविध शैक्षिक संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत की गई सुविधाओं के विषय में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने में छात्र की सहायता करना।

१०. व्यावसायिक तैयारी को जारी रखने के लिए हाई स्कूल का स्नातक होने के पश्चात् विद्यार्थी जिस उच्चतर शैक्षिक संस्था में जाना चाहता हो,

उसकी प्रवेश सम्बन्धी अपेक्षाओं, प्रशिक्षण की अवधि और शिक्षा पर आने वाली लागत आदि के सम्बन्ध में जानकारी देना।

११. स्कूल वर्ष में सहायता देना ताकि वह व्यक्ति कार्य की स्थितियों और अन्य कर्मचारियों के साथ मिलकर कार्य कर सके।

१२. कर्मचारियों के समूह में अपने उचित स्थान को समझने और उस दल का एक सक्रिय सदस्य बनने में प्रत्येक छात्र को सहायता देना।

१३. अनेक प्रयास भरे कार्यों में कुशल होने के लिए आवश्यक दीर्घकालीन प्रशिक्षण के सम्बन्ध में छात्र को सावधान करना।

१४. व्यावसायिक कुशलता में आने वाली धुन और मिथ्या वैज्ञानिक रास्तों से प्रत्येक विद्यार्थी को सचेत करना।

१५. विद्यार्थी को यह समझने में सहायता देना कि सफलता प्रयत्न से खरीदी जाती है और हार्दिक रूप से तथा दक्षतापूर्वक कार्य करने से संतोष की प्राप्ति होती है।

व्यावसायिक तालमेल के विविध रूप से सम्वन्धित निर्देशन केवल हाई स्कूल तक सीमित नहीं रहता। सामान्य निर्देशन प्रारम्भिक स्कूल में प्रारम्भ होता है और वास्तविक समस्याएँ स्कूल की औपचारिक पढ़ाई समाप्त होने के पश्चात् उत्पन्न होती हैं। इस क्षेत्र में निर्देशन की निरन्तरता पर २०वें अध्याय "व्यावसायिक तालमेल की दिशा में निर्देशन" में विचार किया जायेगा।

व्यक्तिगत तालमेल के लिए निर्देशन के लक्ष्य और उद्देश्य

नवयुवकों का पथ-प्रदर्शन किया जा सकता है, किन्तु उन्हें हाँका नहीं जा सकता। उनकी न तो उपेक्षा की जा सकती है और न उन्हें पूर्णतया उनके पैरों पर खड़ा किया जा सकता है। इन दोनों में से किसी भी रवैये का प्रदर्शन करने पर उनमें असंतोष, निराशा और आत्म-ग्लानि की भावना उत्पन्न हो सकती है। यह सम्भव हो सकता है कि जो व्यक्ति—अभिभावक या अध्यापक—तात्कालिक सत्ता प्राप्त है, वह नवयुवक के लिये उस बाहरी व्यक्ति की अपेक्षा कम महत्त्वपूर्ण प्रतीत हो जो विशालतर स्थिति का एक अंग मालूम होता हो। वे सत्ता का प्रतिनिधित्व करने वालों से पीछा छुड़ाकर भागना चाहते हैं। वयस्कों के प्रति नवयुवकों के इन रवैयों को हाई स्कूल के अध्यापकों और परामर्शदाताओं को समझना चाहिए। उन्हें धैर्य रख कर यह बात समझनी चाहिये कि नवयुवकों को दी जाने वाली अधिकांश सहायता अप्रत्यक्ष होनी चाहिए और उदाहरणों के द्वारा दी जानी चाहिए। इतना होने पर भी प्रत्येक हाई स्कूल में ऐसे कर्मचारी होते हैं जो बड़ी सीमा तक अपने छात्रों का विश्वास अर्जित करने में सफल होते हैं। ये पुरुष और महिलाएँ ऐसी महत्त्वपूर्ण स्थिति में हैं कि वे उन लोगों के रवैयों और व्यवहारों का निर्देशन कर सकें जो उनसे परामर्श करते हैं।

हाई स्कूल के वर्षों में व्यक्तिगत तालमेल के लिए जो निर्देशन दिया जाता है, उसके लक्ष्यों और उद्देश्यों में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं :

१. विद्यार्थी को यह समझने में सहायता देना कि मानसिक अव्यवस्था की कुछ अवधियाँ उपस्थित होना स्वाभाविक है ।

२. व्यक्ति को ऐसी सहायता देना जिससे वह शारीरिक विकास के अनुपयुक्त वर्षों पर विजय प्राप्त कर सके ।

३. विद्यार्थी के परिपक्व होने पर नवीन उत्साह और रुचि के साथ मानसिक कार्यों में संलग्न होने के हेतु उनकी सहायता करना ।

४. अपने नागरिक और सामाजिक सम्बन्धों में स्कूल का अच्छा नागरिक बनने में छात्रों को सहायता देना ।

५. पहले प्रारम्भ किये गये स्वास्थ्य, सुरक्षा और शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों को जारी रखने के लिये विद्यार्थी को प्रोत्साहन देना ।

६. चिढ़ाये जाने पर सहिष्णु होने में छात्र की सहायता करना ।

७. उसे प्रस्तुत की गई मित्रता का लाभ उठाने के लिए छात्र को प्रोत्साहित करना ।

८. विद्यार्थी को शनैः-शनैः परावलम्बन से हटकर स्वतन्त्र निर्णय और कार्य करने में सहायता देना ।

९. विद्यार्थी को अपनी पूरी क्षमता से यह जानकर कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देना कि संभवतः वह अन्य छात्रों के समान योग्यता न रखता हो ।

१०. भावात्मक नियन्त्रण के अभ्यास से लाभ उठाने में छात्र की सहायता करना ।

११. क्लबों में सम्मिलित होकर और स्कूल की अन्य गतिविधियों में भाग लेने के फलस्वरूप सामाजिक जीवन से प्राप्त होने वाले लाभों को पूर्णतया प्राप्त करने में विद्यार्थी की सहायता करना ।

१२. लड़के-लड़कियों के पारस्परिक सम्बन्धों को और सेक्स के कार्य को बुद्धिमत्तापूर्वक तथा नियन्त्रित भावना से समझने के फलस्वरूप उपलब्ध होने वाले मूल्य से प्रत्येक छात्र को परिचित करना ।

निर्देशन कर्मचारी ऐसे सामाजिक रवैयों का विकास करने में हाई स्कूल के विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं जो उनके और समूह के लिये उपयोगी होंगे । स्कूल के कार्यक्रम के पश्चात् आयोजित किन्तु स्कूल भवन में की गई गृह-कक्षा की गतिविधियाँ, क्लब की योजनाएँ और सामाजिक घटनाएँ विद्यार्थी का सामाजिक विकास और जीवन का आनन्द बढ़ाने में बहुत कुछ कार्य कर सकती हैं । हाई स्कूल द्वारा निर्देशन का जो कार्य किया जा सकता है वह है रवैये के विकास का कार्यक्रम बनाना और उसे क्रियान्वित करना । चूँकि शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य उचित रवैयों का विकास करना है अतएव अप्रत्यक्ष रूप से संचालित निश्चित योजना के द्वारा

वाँछनीय रवैयों का विकास करने के लिये हाई स्कूल पूर्णतया उपयुक्त स्थान हैं। सहयोगपूर्वक बनाई गई योजना किसी भी स्कूल में अत्यन्त प्रभावशाली हो सकती है।

कुछ विचाराधीन रवैये निम्नलिखित मिलती-जुलती योजना में सम्मिलित किये जा सकते हैं। प्रारम्भिक वर्ष में कार्यक्रम निम्नलिखित के मूल्य पर बल देता है: (१) स्कूल के रवैये: उचित परिधान और सज्जा, स्कूल में शिष्टता, अध्ययन का अच्छा स्वभाव, अध्यापकों और सहपाठियों से सहयोग, स्कूल सेवाएँ और व्यवहार के ऐसे ही रूप, और (२) घर के रवैये: सहायता और शिष्टता, सम्बन्धियों और मित्रों का सम्मान, साप्ताहिक भत्ते का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग और खाने, सोने तथा व्यक्तिगत वस्तुओं की देखभाल करने जैसे मामलों में अच्छे स्वभाव का विकास।

कनिष्ठ वर्ष में स्वीकार्य सामाजिक और नागरिक रवैयों के विकास पर ध्यान दिया जा सकता है। निम्नलिखित में सामाजिक रूप से स्वीकृत रीतियों और व्यवहार के प्रदर्शन का महत्त्व जानने में विद्यार्थियों की सहायता करनी चाहिए: (१) सार्वजनिक स्थानों में यथा सिनेमाघरों, बसों या रेलों में, सड़कों पर, बड़ी सामूहिक सभाओं में, (२) समवयस्क लड़के-लड़कियों में, (३) अपने मित्रों के घर में, (३) किसी अन्य सामूहिक स्थिति में। नवयुवकों को सामाजिक सफलता के तत्त्वों को समझना चाहिए। रचनात्मक और सम्मानित नगरिकों के रूप में उन्हें अपने उत्तरदायित्वों को जानना और ग्रहण भी करना चाहिये।

वरिष्ठ स्तर पर व्यावसायिक और व्यापारिक सम्बन्धों की दिशा में होने वाले रचनात्मक रवैयों के विकास में रुचि केन्द्रित हो सकती है। किसी व्यवसाय का चुनाव और उसकी तैयारी, किसी पद का उपयोग, व्यापार का वाँछनीय परिधान मालिक और सहकर्मियों के प्रति रवैया इस स्तर पर परामर्शदाता के लिए विशेष रूप से विचारणीय हैं।

समन्वय की व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याएँ नवयुवकों की व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याएँ अनेक दृष्टियों से वैसी ही होती हैं, जैसी कि उन्होंने बचपन में अनुभव की थीं। किन्तु समाज के सदस्य के रूप में अपने स्थान के महत्त्व को समझदार नवयुवक अपने बचपन की अपेक्षा अधिक भली प्रकार से समझता है, अतएव उसके सामाजिक सम्बन्धों को लेकर उत्पन्न होने वाली समस्या अधिक गंभीर होती है।

सम्भवतः समस्यापूर्ण स्थितियों का अत्यन्त समान आधार नवयुवक की अन्य व्यक्तियों के संसर्ग से होने वाली असुरक्षा की भावना है। सुरक्षा की भावना का अभाव अध्यापकों, सहपाठियों, पारिवारिक सदस्यों या परिचितों के सम्बन्धों को प्रभावित करता है। अरक्षित और भयभीत नवयुवक अत्यन्त असंगत और ढीठ व्यवहार प्रदर्शित करता है या वह संकोची और एकान्तप्रिय बन सकता है। उसके अपनाये हुए व्यवहार के रूप पर ध्यान दिये बिना उसे स्कूल के समझदार और सहानुभूतिपूर्ण परामर्शदाता की सेवाओं की आवश्यकता होती है जो नवयुवक की मौलिक समस्या को समझता है और उसे अपनी विचारशैली को स्पष्ट करने तथा

उसकी समस्या को समझने में सहायता देता है। परामर्शदाता को विद्यार्थी के परिजनों और उसके अध्यापकों से भी विचार-विमर्श करने की आवश्यकता प्रतीत हो सकती है ताकि आत्म-विश्वास को बढ़ाने और व्यक्तिगत तथा सामजिक रवैयों का अधिक वास्तविक मूल्यांकन करने में उनका सहयोग प्राप्त कर सके।

अरक्षित नवयुवक की समस्या निर्देशन कर्मचारियों के लिए बहुधा भारी चुनौती बन जाती है। ऐसे मामलों में—विशेपतः जब लड़के-लड़की के पारस्परिक सम्बन्धों की समस्या हो—विशेषज्ञों के परामर्श की आवश्यकता होती है। भावनात्मक अव्यवस्था का कारण लैंगिक परिपक्वता की शारीरिक क्रिया और मनोविज्ञान हो सकता है जो हाई स्कूल के विद्यार्थी को अपने स्कूल के कार्य में ध्यान में असमर्थ कर देते हैं, विशेपतः जब कि लड़का या लड़की अपने प्रिय पात्र की दृष्टि में स्वयं को अनाकर्षक समझती हो। इस प्रकार की स्थिति में परामर्शदाता यही सहायता दे सकता है कि वह उस नवयुवा की रुचियों और कार्यों को उस निराशाजनक समस्या से विलग कर दे।

परामर्शदाताओं और अध्यापकों को इस प्रकार के व्यक्तिगत असन्तुलन के लक्षणों के प्रति सावधान रहना चाहिए: जिन बातों में पहले वह आनन्द लेता था उनमें अरुचि हो जाना, दिवा स्वप्नों में व्यस्त रहना, नई अग्रगामिता, अथवा स्कूल के कार्य में जो सफलता मिलती रही है उसमें कमी हो जाना। चाहे कोई भी समस्या या लक्षण हों, परमर्शदाता उसे अपनी समस्या को समझने में, उसके सम्भावित कारण की खोज करने में सहायता देने का प्रयत्न करता है; साथ ही उसकी विचार-शैली और व्यवहार में अधिक उपयुक्त तालमेल बिठाने का प्रयास करता है। ऐसा बहुत कम होता है कि एक ही सत्र में किसी गंभीर व्यक्तिगत या सामाजिक समस्या का समाधान हो जाय। अन्य प्रविधियों के उपयोग के अतिरिक्त संभवतः परामर्शदाता साक्षात्कारों की एक शृंखला की आवश्यकता होगी। परामर्शदाताओं, अभिभावकों और स्वयं छात्र का धैर्यपूर्ण और समझदारी का सहयोग लाभदायक होते हैं।

अनुशासनात्मक समस्याएँ नवयौवन में पैर रखते-रखते बहुत से लड़के और लड़कियाँ स्वार्थपूर्ण रुचियों और अभिलाषाओं पर सराहनीय नियन्त्रण प्राप्त कर लेते हैं। वे दूसरों के अधिकारों को समझते और अपने साथ दूसरों के कल्याण के लिए समीचीन दायित्व ग्रहण करते हैं। नवयुवक के आत्म-संयम का घनिष्ठ सम्बन्ध उसके घर, स्कूल और धर्म के प्रारम्भिक अनुभवों से है।

दुर्भाग्य से कुछ हाई स्कूल में प्रवेश करने वाले छात्रों ने अभी तक आत्मानुशासित व्यवहार और रवैये नहीं अपनाये हैं। वे नये शैक्षिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों के अनुकूल स्वयं को ढालने में असमर्थ होते हैं। अतएव या तो वे अस्वीकार्य सामूहिक कार्यों में संलग्न हो जाते हैं या फिर वे सत्ता का विरोध करने का प्रयत्न करते हैं और सामाजिक दृष्टि से घातक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। यह स्कूल का उत्तरदायित्व है कि वह असहयोगी छात्रों के रवैये में सुधार करने का यथासम्भव प्रयत्न करे। इसके लिए अनुशासनात्मक उपायों की आवश्यकता हो सकती

है। गंभीर असंतुलन की स्थिति में सरकारी अधिकारियों की सहायता ली जा सकती है।

रवैये का विकास करने के क्षेत्र में स्कूल के परामर्शदाता बहुत कुछ कर सकते हैं। किन्तु दंड देने का कार्य उनका नहीं है। टकसन, एरीज़ोना के स्कूलों के नेताओं ने अनुशासन के मामले में परामर्शदाता के कर्त्तव्यों का इस प्रकार वर्णन किया है :

(क) यद्यपि परामर्शदाताओं का सम्बन्ध हाई स्कूल के विद्यार्थियों में अनुशासन और उच्च नैतिकता बनाये रखने से है, फिर भी उन्हें अनुशासनकर्त्ता नहीं समझना चाहिए। यदि किसी अनुशासन सम्बन्धी कार्यवाही के समय परामर्शदाता को उपस्थित रहना पड़ता है तो वह विद्यार्थी के पक्ष की बातें ही सदैव बताता है।

(ख) चाहे कोई भी स्थिति हो, परामर्शदाताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि वे ऐसा कोई कार्य न करें जिससे परामर्शदाता और विद्यार्थी के मध्य का सौहार्द कम हो। ऐसी ही स्थिति में विद्यार्थी परामर्शदाता से वार्तालाप करने और उसे सब कुछ बता देने की मनःस्थिति में होता है, तभी वह सारी बात समझ कर विद्यार्थी की सहायता कर सकता है। अनुशासन ऐसे सम्बन्धों को नष्ट करने वाला होता है।

(ग) अनेक परामर्शपात्रों के विरुद्ध जो अनुशासन की कार्यवाही की जाती है, उसकी सूचना परामर्शदाताओं को (उप-आचार्यों या डीनों से) प्राप्त होती है और वे इन अनुशासन-अधिकारियों से बहुधा वार्तालाप करते हैं।

(घ) प्रोबेशन विभाग को आचार्य या परामर्शदाता द्वारा लिखित रूप में दी जाने वाली सूचना केवल तथ्यों तक सीमित होनी चाहिए; जैसे श्रेणियाँ, उपस्थिति वृत्त, परीक्षा वृत्त, आदि। यदि व्यक्तिगत उपस्थिति या साक्षी वाँछनीय हो तो स्कूल कर्मचारी बाल-अपराध न्यायालयों में उपस्थित हो सकते हैं। ऐसी सब पेशियाँ गोपनीय रहती हैं और इन कार्यवाहियों का कोई आलेख नहीं होता। ऐसी साक्षी सार्वजनिक वृत्त का अंग नहीं होगी। स्कूल के कर्मचारी किसी भी बच्चे के किसी भी मामले में प्रोबेशन विभाग के कर्मचारियों से दिल खोलकर बात कर सकते हैं। ऐसी बातचीत में दी गई सूचना बच्चे के किसी भी सार्वजनिक आलेख का भाग नहीं बनेगी और वह गोपनीय रखी जायेगी।

मनोरंजन सम्बन्धी निर्देशन के लक्ष्य और उद्देश्य

अवकाश के समय के लिए योजना बनाना हाई स्कूल का एक प्रमुख उत्तरदायित्व बन गया है। भूतकाल में, बहुत से व्यक्ति उत्पादक कार्यों में पर्याप्त समय

व्यतीत किया करते थे। आज आधुनिक प्रविधियों और यन्त्रों की सहायता से मनुष्य का कार्य हल्का हो गया है, उसके कार्य के दिन और सप्ताह छोटे होते हैं। अतएव उसके पास अधिक अवकाश होता है। यह आवश्यक है कि उस अवकाश में उसके पास करने के लिए कोई महत्त्वपूर्ण कार्य हो और उस कार्य में उसकी रुचि हो। खेल, मैदानी व्यायाम, शौक, चलचित्र और टेलीविजन देखना और विविध प्रकार की गतिविधियाँ आज उपलब्ध हैं, जिनका व्यक्ति अपने अवकाश के समय में आनन्द और लाभ उठा सकता है।

जब दिलबहलाव के लिये समय का व्यवस्था होती है तो कार्य भी अधिक अच्छा हो सकता है। फिर भी, व्यक्ति को इतना सावधान होने की आवश्यकता है कि वह अवकाश के समय में इतनी शक्ति का व्यय न कर दे कि अपने कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न न कर सके। यदि व्यक्ति को इस अवकाश का बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग करने में सहायता दी जाय तो इस स्वागत-योग्य घड़ी में जीवन सम्पन्न हो सकता है।

मनोरंजन सम्बन्धी निर्देशन के कुछ लक्ष्य और उद्देश्य इस प्रकार हैं :

१. स्वस्थ मनोरंजन कार्यों में भाग लेने के कार्य में छात्रों को तैयार करना।
२. मनोरंजन सम्बन्धी कार्यों की योजना बनाना और उसे क्रियान्वित करने में विद्यार्थियों की सहायता करना।
३. अवकाशकालीन कार्यों में अपनी क्षमताओं और रुचियों का मूल्यांकन करने में छात्रों को सहायता देना।
४. नवयुवकों और प्रौढ़ों को समाज में जो वाँछनीय सुविधाएँ उपलब्ध हैं उनका ज्ञान प्राप्त करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना।
५. अपने अवकाश का बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग करने में विद्यार्थियों को सहायता देना जो बाद के अवकाशकालीन जीवन में उसके लिए मूल्यवान हो सके।

स्वास्थ्य-निर्देशन के लक्ष्य और उद्देश्य

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम देश-भर में विस्तार पा रहे हैं। स्वस्थ जीवन के लिए इन कार्यक्रमों का क्या मूल्य है, इस पर अमेरिका के लोगों—विशेषतया शैक्षिक नेताओं—का ध्यान पिछले महायुद्ध ने आकर्षित किया था। स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम अपने कार्यों का विस्तार कर रहे हैं और हाई स्कूल के पाठ्यक्रम के अनेक क्षेत्रों में पहुँच रहे हैं। जीव-विज्ञान, शरीर-विज्ञान, स्वास्थ्य-शिक्षा, शारीरिक कार्य, सामाजिक स्वास्थ्य शिक्षा तथा अध्ययन की अन्य बातों पर स्वास्थ्य शिक्षा के कुछ कार्यक्रमों पर विचार किया जाता है। मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य परस्पर सम्बन्धित हैं; स्वास्थ्य के किसी पर्याप्त कार्यक्रम में इन पर एक साथ विचार किया जाना चाहिए।

स्वास्थ्य निर्देशन में जो लक्ष्य और उद्देश्य विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं, वे संक्षेप में इस प्रकार हैं :

१. स्वस्थ जीवन की तैयारी में विद्यार्थियों की सहायता करना।
२. शारीरिक गतिविधियों के संतुलित कार्यक्रम का अनुसरण करने में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना।
३. स्वस्थ जीवन की तैयारी के कार्यक्रम का महत्त्व समझने में छात्रों की सहायता करना।
४. अपनी निजी शारीरिक क्षमताओं और अल्पताओं का मूल्यांकन करने में छात्रों को सहायता देना।
५. जिस रोग की चिकित्सा हो सके उस पर विजय प्राप्त करने के अलावा डाक्टरी चिकित्सा के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना।
६. अच्छे स्वास्थ्यवर्द्धक विषयों और कार्यों के सम्बन्ध में विद्यार्थियों को जानकारी देना।
७. स्कूल और समुदाय में प्रचलित स्वास्थ्य सेवाओं के विषय में छात्रों के लिए जानकारी उपलब्ध करना।
८. स्वास्थ्यपूर्ण रहन-सहन में योग देने वाली कार्य और खेल की गतिविधियों का संतुलित कार्यक्रम अपनाने के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना।

सामाजिक-नागरिक निर्देशन के लक्ष्य और उद्देश्य

हमारी सामाजिक संस्थाओं ने जनतंत्र की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रयत्न किये हैं; और इस प्रयत्न के फलस्वरूप उनमें प्रयत्न हुए हैं और हो रहे हैं। ये परिवर्तन कुछ लोगों को बहुत अधिक प्रतीत होते हैं और कुछ को बहुत कम। निर्देशन परामर्शदाताओं को उनसे परिचित कराना चाहिए और उन्हें उनके साथ कदम मिला कर चलना चाहिए ताकि वे नवयुवकों को इन सामाजिक परिवर्तनों की व्याख्या करने में सहायता दे सकें। सामाजिक-नागरिक-निर्देशन का व्यक्तिगत समन्वय और निर्देशन के अन्य रूपों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। निम्नलिखित बाह्य-रूपों के द्वारा इस पर बल दिया जा सकता है :

१. प्रभावशाली सामाजिक-नागरिक प्रशिक्षण प्राप्त करने में विद्यार्थियों को सहायता देना।
२. विद्यार्थियों को अपने सामाजिक और नागरिक उत्तरदायित्यों को समझने और सामाजिक कार्य की योजना का विकास करने में सहायता देना।
३. विद्यार्थियों को अपनी सामाजिक-नागरिक क्षमताओं और अभिरुचियों का सही मूल्यांकन करने में छात्रों की सहायता करना।
४. कक्षा के बाहर की गतिविधियों में भाग लेने के लिये छात्रों का नेतृत्व करना।

५. सामाजिक व्यवस्था को समझने के अपने प्रयत्नों में छात्रों की सहायता करना।
६. इन लक्ष्यों की प्राप्ति और सामाजिक रहन-सहन के लिये विद्यार्थियों की सहायता करना।
७. अन्य व्यक्ति से अपना तालमेल बिठाने में विद्यार्थियों की सहायता करना।
८. विशालतर सामाजिक उपयोगिता के लिए सतत योजना को क्रियान्वित करने के लिये छात्रों को उत्साहित करना।

एकीकरण की समस्याओं का समाधान करना

पहले बताये गये शैक्षिक और व्यक्तिगत निर्देशन की प्रविधियों के उपयोग के द्वारा जूनियर हाई स्कूल या प्रारम्भिक स्कूल और हाई स्कूल के मध्य की बहुत-सी एकीकरण की कठिनाइयाँ दूर की जा सकती हैं। अध्ययन की आगामी उच्चतर संस्था में प्रवेश पाने के लिए व्यक्तियों को भावनात्मक और मानसिक दृष्टि से तैयार करने का उत्तरदायित्व अब भी हाई स्कूल का है।

कालेज के नवागंतुक वर्ष में दीर्घ काल से विद्यार्थी भारी मात्रा में असफल होते रहे हैं। सम्भवतः इस स्थिति के लिए केवल छात्र ही उत्तरदायी नहीं हैं। सम्भवतः एक स्कूल से दूसरे स्कूल का तालमेल इतना कठिन है कि जब लड़के और लड़कियां हाई स्कूल में होते हैं, तभी उनको अधिक सहायता दी जानी चाहिये। यह देखा गया है कि जो विद्यार्थी हाई स्कूल के वरिष्ठ वर्ष में प्रशंसनीय अंक प्राप्त करता रहा है, वही बहुधा कालेज के प्रारम्भिक वर्ष में अनुत्तीर्ण रह जाता है। हाई स्कूल को चाहिये कि वह वरिष्ठ छात्र को कालेज जीवन के सामान्य रूप से परिचित होने में सहायता दे, चाहे उस कालेज को जाकर देखना उसके लिए सम्भव न हो जिसमें कि आगे चलकर उसे अध्ययन करना है।

यदि कोई व्यक्ति कालेज में पढ़ने के लिये घर से दूर जाता है तो उसकी तालमेल की समस्याएँ और भी अधिक होती हैं क्योंकि अब वह पूर्णतया अपने ऊपर निर्भर करता है और वह नहीं जानता कि अवकाश के फालतू समय का वह क्या करे। इसका परिणाम यह हो सकता है कि वह अपना अधिक समय व्यर्थ नष्ट कर दे और फिर सोचने लगे कि उसके पास अध्ययन के लिये पर्याप्त समय क्यों नहीं है। कालेज जीवन के और अधिक नवीनीकरण पर १७ वें अध्याय में विचार किया गया है।

प्रतिनिध्यात्मक निर्देशन कार्यक्रम

हाई स्कूल स्तर पर आवश्यक निर्देशन सेवाओं का अच्छा सार वह कार्यक्रम है जो शेनेक्टेडी, न्यूयार्क में हाई स्कूल के दसवें, ग्यारहवें और बारहवें वर्ष में क्रियान्वित होता है।

१. निर्देशन विभाग का वर्तमान संगठन

दो वरिष्ठ हाई स्कूलों में निर्देशन विभागों का संगठन समान नहीं होता। संगठन निम्न प्रकार के हैं :

(क) मौंट प्लेजेंट हाई स्कूल

१. पूरे समय का लड़कों का परामर्शदाता
२. पूरे समय की लड़कियों की परामर्शदात्री
३. १०वें वर्ष की कक्षा के लिये अंशकालीन निर्देशन परामर्शदाता (२ घण्टे)
४. गृह-कक्ष अध्यापक
५. प्रत्येक कक्षा के लिये सामाजिक डीन—कक्षा अध्यापक
६. अंशकालीन सचिव

(ख) नॉट टेरेस हाई स्कूल

१. पूर्ण समय का लड़कों का परामर्शदाता
२. पूर्ण समय की लड़कियों की परामर्शदात्री
३. प्रत्येक कक्षा के लिये अंशकालीन निर्देशन परामर्शदाता (३ घंटे)
४. व्यवसाय की पाठ्यविधि का अंशकालीन परामर्शदाता
५. प्रत्येक श्रेणी के लिये सामाजिक डीन—कक्षा का अध्यापक
६. पूरे समय का सचिव

२. निर्देशन कार्यक्रम का क्षेत्र और उसके कार्य

(क) सामूहिक निर्देशन

व्यापक जानकारी के प्रचार के लिये सामूहिक निर्देशन पाठ्यविधि का उपयोग करके परामर्श के समय का प्रयोग अत्यन्त प्रभावशाली रीति से किया जा सकता है। इस प्रकार की जाने वाली विविध गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं :

१. १०वें वर्ष की दीक्षा
   (क) प्रत्येक वर्ष के प्रारम्भ में सामान्य दीक्षा-सभा
   (ख) अन्य नवीनीकरण-कार्य
      (१) अंग्रेजी की कक्षाएँ
      (२) शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य कक्षाएँ
      (३) गृह-कक्ष के सत्र।
२. ११वीं और १२वीं कक्षाओं के लिए अस्थायी कार्यक्रम
३. अंग्रेजी कक्षाओं के ११वें वर्ष में व्यावसायिक अध्ययन की इकाई
४. व्यावसायिक जानकारी का प्रस्तुतीकरण
   (क) जीवनचर्या दिवस
   (ख) सूची पर विचार

(ग) वाणिज्य और उद्योग से आने वाले वक्ता
(घ) दृश्य साधन
५. कालेज में प्रवेश पाने वाले छात्रों की दीक्षा
(क) सामान्य सभाएँ
(१) प्रवेश की अपेक्षाएँ, लागत, वित्तीय सहायता और उच्चतर अध्ययन की संस्थाओं के लिये आवेदन करने की विधि
(२) कालेज एंट्रेंस परीक्षा बोर्ड की परीक्षाओं पर विचार
(ख) नेशनल मैरिट स्कालरशिप और स्टेट यूनीवर्सिटी स्कालरशिप परीक्षाओं की तैयारी में छात्रवृत्ति की सभाएँ
(ग) कालेज, वाणिज्य स्कूल और प्राविधिक स्कूल के प्रतिनिधियों के साथ सभाएँ
६. सशस्त्र सेनाओं में उपलब्ध अवसरों का प्रस्तुतीकरण और सैनिक दायित्वों की व्याख्या।

(ख) व्यक्तिगत निर्देशन

प्रत्येक विद्यार्थी के सम्मुख समस्याएँ आती हैं जिनका समाधान समूह के साथ नहीं किया जा सकता। इस स्थिति का मुकाबला करने के लिए परामर्शदाता को छात्र के साथ व्यक्तिगत आधार पर कार्य करना चाहिये। केवल छात्र को ही व्यक्तिगत ध्यान की आवश्यकता नहीं है, अपितु स्कूल के बाहर के नवयुवक और वयस्क भी अपनी समस्याओं के समाधान के लिए सहायता की माँग करते हैं। व्यक्तिगत निर्देशन का सम्बन्ध निम्नलिखित से है :

१. शैक्षिक
(क) आयोजन सूची
(ख) समन्वय सूची
(ग) लक्ष्य के चुनाव में सहायता देना
(घ) असफलता के कारण की खोज और उसका निदान
(ङ) योग्य और महत्त्वाकांक्षी छात्र के लिये सम्पन्न कार्यक्रम
(च) उच्च अध्ययन या प्रशिक्षण को प्रोत्साहन देना
(छ) छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता के सम्बन्ध में सूचना देना
(ज) कालेज बोर्ड के अंकों और स्तरीकृत परीक्षा के परिणामों की व्याख्या करना
(झ) स्कूल के बाहर के नवयुवकों को सहायता देना
(ञ) बड़े लोगों को सहायता देना
(ट) वयस्कों को सलाह देना—परीक्षण कार्यक्रम
२. व्यावसायिक
(क) अंशकालीन और पूरे समय की नौकरी
(ख) नौकरी के अवसर

३. व्यक्तिगत समस्याएँ
   (क) स्कूल के जीवन में तालमेल
   (ख) गृह-समस्याओं का तालमेल
   (ग) सामाजिक जीवन से तालमेल

(ग) अन्य कार्य

समूहों और व्यक्तियों के साथ कार्य करने के अतिरिक्त ऐसे अनेक कार्य हैं जो परामर्शदाता को करने चाहिए

१. सम्मेलन
   (क) अध्यापकों से
   (ख) शिशु निर्देशन ब्यूरो से
   (ग) अभिभावकों से (एक-एक करके या सामूहिक रूप से)
   (घ) वरिष्ठ हाई स्कूल में पढ़ाये जाने वाले विषयों के सम्बन्ध में ९वीं श्रेणी के छात्रों से
   (ङ) शिशु-न्यायालयों और कल्याण-अभिकरणों से
   (च) न्यूयार्क स्टेट एप्लायमेंट सर्विस से
   (छ) उच्चतर शिक्षा संस्थाओं के प्रतिनिधियों से

२. अभिभावकों और अध्यापकों के मध्य सम्पर्क

३. सामाजिक अभिकरणों और पी० टी० ए० जैसे सामुदायिक संगठनों से सहयोग

४. वृत्त और रिपोर्ट
   (क) स्थायी वृत्त कार्डों और जूनियर हाई स्कूलों से व्यक्तिगत पुस्तिकाओं का संग्रह और प्रयोग करना
   (ख) छात्रों की व्यक्तिगत पुस्तिकाओं में पूर्ण जानकारी रखते हैं
      (१) सम्मेलनों और साक्षात्कारों का विवरण
      (२) अध्यापकों से व्यक्तित्व की रिपोर्टें
      (३) छात्र से कार्य की सूची—जिसमें शैक्षिक और व्यावसायिक योजनाएँ सम्मिलित हैं।
      (४) व्यक्तिगत या विशेष परीक्षाओं के परिणाम
   (ग) स्थायी वृत्त कार्ड पर मानसिक परिपक्वता, शैक्षिक रुझान और अध्ययन ज्ञान की परीक्षाओं के परिणाम लिखते हैं
   (घ) प्रत्येक छात्र के लिए संग्रहशील वृत्त कार्ड रखते हैं
   (ङ) नवीन छात्रों की प्रत्येक कक्षा के लिये परीक्षा बुलेटिन तैयार करके अध्यापकों में वितरित करते हैं जिसमें प्रत्येक छात्र के मानसिक परिपक्वता और पठन ज्ञान की परीक्षा में प्राप्त अंक होते हैं

(च) कालेजों, वाणिज्य स्कूलों, प्राविधिक स्कूलों, निजी स्कूल, संयुक्त राज्य सशत्र सेनाओं और मालिकों के लिए वृत्त और सिफारिशें तैयार करते हैं

(छ) शिशु निर्देशन ब्यूरो के लिये विचाराधीन छात्रों को भेजने से सम्बन्धित रिक्त पत्रों को तैयार करते हैं

(ज) असफल होने वाले छात्रों के रिपोर्ट कार्डों की जाँच करते हैं

(झ) फ्रेशमैन रिपोर्टों के द्वारा अभिभावकों को विद्यार्थी के कार्य की स्थिति से अवगत कराते हैं

(ञ) छात्रों के असन्तोषजनक अथवा उच्चकोटि का कार्य करने पर अभिभावकों को सूचित करते हैं

(ट) स्नातक-परीक्षा में अंतिम क्षण की असफलता से बचाने के लिये वरिष्ठ वर्ष में अतिरिक्त आलेख रखते हैं

(ठ) जिनके असफल होने की आशंका हो उनके सम्बन्ध में अभिभावकों या वरिष्ठों को सूचना देते हैं

(ड) प्रत्येक स्नातक-कक्षा की रिपोर्ट तैयार करते हैं जिसमें उन छात्रों की संख्या होती है जो उच्चतर शिक्षा के लिये विविध संस्थाओं में जाते हैं और उनके द्वारा लिये गये विषयों का निर्देश होता है

(ढ) प्रत्येक स्नातक-कक्षा के लिये छात्रवृत्ति पाने वालों की उनके नामों सहित रिपोर्ट तैयार करते हैं और उनके जोड़ों को प्रकाशित करते हैं

(ण) प्रत्येक-कक्षा के उन स्नातकों की गतिविधियों का स्मरणात्मक सर्वेक्षण करते हैं जो उच्चतर शिक्षा के लिये नहीं गये हैं

(त) कक्षा के सदस्यों के स्वभाव का वर्णन करते हुए प्रत्येक कक्षा के लिये नियामक साराँश तैयार करते हैं

(थ) विविध संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा माँगा गया विवरण तैयार करते हैं

(द) नौकरी की फाइलें रखते हैं—कार्य के लिए प्रार्थी और उपलब्ध स्थान

५. विविध

(क) इंजीनियरिंग दिवस रैली, जूनियर सफलता, नागरिक सुरक्षा दल और कालेजों के दौरे जैसी गतिविधियों में छात्रों को भर्ती करना

(ख) जूनियर हाई स्कूलों और अन्य रुचि रखने वाले अभिकरणों को बाँटने के लिए प्रतिवर्ष "अध्ययन की पाठ्य विधियाँ" नामक पुस्तिका प्रकाशित करना

(ग) निर्देशन पुस्तकालय चलाना जिसमें नवीनतम सामग्री हो

(१) कालेज और स्कूल के सूची-पत्र

(२) छात्रवृत्ति और आर्थिक सहायता सम्बन्धी जानकारी

(३) शैक्षिक संदर्भ पुस्तकें
(४) व्यावसायिक सूचना की फाइलें

(घ) कालेज एंट्रेंस एक्जामिनेशन बोर्ड की परीक्षाओं के लिए आवेदन प्रपत्र प्रदान करना

(ङ) स्टेट यूनीवर्सिटी स्कालरशिप और नेशनल मैरिट स्कालरशिप परीक्षाओं के आवेदन-पत्रों को आगे भेजना

(च) ग्रीष्म में नवीन छात्रों को कक्षाओं में भेजना

(छ) छात्रों को कार्यपत्र जारी करना

(घ) परीक्षाएँ

छात्रों की योग्यताओं को भलीभाँति समझने के लिए परामर्शदाता के पास स्तरीकृत परीक्षाएँ एक महत्त्वपूर्ण साधन हैं। इस साधन के महत्त्व के कारण एक विशाल परीक्षा कार्यक्रम चलाया जाता है।

१. १०वाँ वर्ष

(क) जिनकी परीक्षा ९वीं श्रेणी में नहीं हुई है उन छात्रों की बुद्धि परिपक्वता समूह परीक्षा

(ख) प्रतिभासम्पन्न और कठिनाई में पड़े छात्रों की बुद्धि परिपक्वता की व्यक्तिगत परीक्षा

(ग) भेदात्मक रुझान परीक्षा (जब आवश्यक हो)

(घ) तुलनात्मक अंग्रेजी परीक्षा प्रणाली

२. ११वाँ वर्ष

(क) बुद्धि परिपक्वता समूह परीक्षा का उच्चतर रूप

(ख) शैक्षिक रुझान परीक्षा

(ग) कुडर वोकेशनल इंटरेस्ट इनवेंटरी

(घ) तुलनात्मक अंग्रेजी परीक्षा प्रणाली

३. १२वाँ वर्ष

(क) ११वें वर्ष की परीक्षा न देने वाले छात्रों के लिए क्षतिपूरक परीक्षाएँ

(ख) राज्य छात्रवृत्ति परीक्षाएँ

(ग) नेशनल मेरिट स्कालरशिप परीक्षा

(घ) कालेजों के अनुरोध पर व्यक्तिशः छात्रवृत्ति और प्रवेश के लिए परीक्षाएँ

(ङ) कई परीक्षाओं जैसे न्यूयार्क स्टेट स्कोलैस्टिक एबिलिटी परीक्षा-एजुकेशनल टेस्टिंग सर्विस की स्कोलैस्टिक एप्टीट्यूड परीक्षा और वेटेरन्स टेस्टिंग सर्विस के हाई स्कूल इक्वीवेलेंसी टेस्ट को वैध बनाने में सहायता देना

(च) कालेज एंट्रेंस एक्जामिनेशन बोर्ड की परीक्षाएँ वर्ष भर तक चलती रहती हैं

(छ) जो वरिष्ठ छात्र परीक्षा देना चाहें, उनके लिये न्यूयार्क स्टेट ऐम्प्लायमेंट सर्विस की रुझान-परीक्षाएँ ली जाती हैं

४. विविध परीक्षाएँ

(क) नागरिक शिक्षा, गणित और वाणिज्य विभागों में भी स्तरीकृत परीक्षाएँ ली जाती हैं।

(ख) हाई स्कूल एक्वीवेलेंसी परीक्षाएँ साल में पाँच बार होती हैं।

३. आवश्यकताएँ

वर्तमान निर्देशन कार्यक्रम पर्याप्त रूप से विस्तृत समझा जाता है। किन्तु उस में कुछ कमियाँ भी हैं जो आवश्यकताओं की निम्नलिखित सूची में दी जा रही हैं।

(क) कर्मचारी

(१) निर्देशन-सेवा का विस्तार करने के लिए छात्र-परामर्शदाता का निम्नतम अनुपात

(२) क्लर्क के दैनिक कार्य से परामर्शदाताओं को मुक्त करने के लिये अतिरिक्त सचिव सम्बन्धी सहायता।

(ख) निर्देशन सेवाएँ

(१) प्रत्येक छात्र से निश्चित अवधि के पश्चात् साक्षात्कार

(२) परीक्षा के उपलब्ध तथ्यों का अधिकाधिक प्रयोग

(३) वर्तमान परीक्षा-कार्यक्रम का विस्तार

(क) उन छात्रों के लिए अतिरिक्त परीक्षा की व्यवस्था करना जिनकी सफलता परीक्षा के परिणामों से भिन्न हो

(ख) समस्त भर्ती होने वाले नवीन छात्रों की परीक्षा लेना

(ग) अधिक व्यक्तिशः परीक्षाएँ लेना

(४) निम्न उद्देश्यों के लिए, बीच में स्कूल छोड़ देने वाले छात्रों की समस्याओं का अतिरिक्त अध्ययन करना

(क) पढ़ाई छोड़ने के मूल कारणों का निश्चय करने के लिये

(ख) पढ़ाई छोड़ने वाले योग्य छात्रों की पूर्व सूचना देने के लिए

(ग) जो स्नातक होने तक अपनी पढ़ाई जारी नहीं रखना चाहते उनके लिए यथासंभव शिक्षा प्रदान करने के लिए

(घ) यह ज्ञात करने के लिये कि पढ़ाई छोड़ने वाले इन छात्रों के हेतु अंशकालीन या सायंकालीन स्कूल के रूप में क्या किया जा सकता है

(५) अनुशासन के मामलों का विस्तृत अध्ययन

(६) उपस्थिति की स्थिति का और अधिक अध्ययन
(७) परीक्षा और मूल्यांकन की नवीन प्रविधियों का अतिरिक्त अध्ययन
(८) स्कूल, समुदाय और तालमेल की समस्या वाले नवयुवकों को सहायता देने वाले अभिकरणों के साथ अधिक अच्छा सम्पर्क

(ग) कार्यक्रम

(१) साभिप्राय पाठ्य-विधियाँ जो मंद छात्रों (आई० क्यू० ७५·९) और अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को भी पूरा करेंगी
(२) प्रतिभावान छात्रों के लिए अधिक समन्वय और/या पाठ्य-विधियाँ और उनका समन्वय
(३) पाठ्यक्रम का निरन्तर मूल्यांकन और सिफारिशों का क्रियान्वयन

(घ) परामर्शदाताओं का नौकरी में रहते प्रशिक्षण

(१) वर्तमान निर्देशन कार्य का निरन्तर और वृद्धिमान ज्ञान
(२) वर्तमान निर्देशन कार्यक्रम का सतत मूल्यांकन, परिवर्तन और विस्तार
(३) नवयुवकों की शैक्षिक और व्यावसायिक सम्भावनाओं का अध्ययन करने के लिये परामर्शदाताओं के लिए अधिक समय
(४) उच्चतर शिक्षा और प्रशिक्षण की संस्थाओं में जाने का आयोजित कार्यक्रम
(५) युवकों को व्यावसायिक अवसर प्रदान करने वाले उद्योगों के विषय में विस्तृत ज्ञान ।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. सीनियर हाई स्कल के अध्यापकों के निर्देशन-कार्यों की तुलना जूनियर हाई स्कूल के अध्यापकों के निर्देशन-कार्यों से कीजिए ।
२. जूनियर हाई स्कूल और सीनियर हाई स्कूल के उन व्यक्तियों के निर्देशन कार्यक्रमों की पारस्परिक तुलना कीजिए जो निर्देशन कार्यक्रमों का संचालन करते हैं ।
३. जूनियर हाई स्कूल और सीनियर हाई स्कूल के मध्य अथवा प्रारम्भिक स्कूल और हाई स्कूल के मध्य समीकरण का उत्तरदायित्व किसे ग्रहण करना चाहिए ? इसके विषय में क्या करना चाहिए ?
४. बड़े और छोटे हाई स्कूलों की निर्देशन सम्बन्धी समस्याओं में क्या अन्तर है ?
५. सीनियर हाई स्कूल के स्तर पर शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत निर्देशन में अन्तर बताइये ।
६. जूनियर हाई स्कूल और सीनियर हाई स्कूल के मध्य ऐसा एकीकरण कार्यक्रम बनाइए जिससे प्रवेश करने वाले छात्रों का श्रेष्ठ व्यक्तिगत तालमेल बैठ सके ।
७. कालेजों की लागत, प्रवेश की अपेक्षाओं और कार्यक्रमों के सम्बन्ध में निर्देशन कार्यालय को किस प्रकार जानकारी देनी चाहिए ।

८. कालेज में प्रवेश करने के लिए प्रवेश सम्बन्धी अपेक्षाओं की सूचनाओं से अध्यापक कितना परिचित होना चाहिए ?
९. आपकी दृष्टि से अध्यापक का निर्देशन सम्बन्धी सबसे बड़ा कार्य क्या है ?
१०. कालेज के अन्तिम चुनाव करते समय किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?
११. व्यावसायिक खोज में टेलीविजन किस प्रकार सहायक हो सकते हैं ?
१२. यह क्यों आवश्यक है कि अध्यापक अपनी कक्षा के छात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं और आकांक्षाओं से परिचित हो ?
१३. बताइये आप समस्त स्कूल के लिए हाई स्कूल निर्देशन योजना में रवैये के विकास का कार्यक्रम कैसे प्रारम्भ कर सकते हैं ?
१४. शेनेक्टेडी, न्यूयार्क की सीनियर हाई स्कूलों में प्रयुक्त होने वाली निर्देशन योजनाओं का मूल्यांकन करें ।
१५. सीनियर हाई स्कूल और कालेजों के मध्य की एकीकरण की समस्याएँ किस सीमा तक हाई स्कूल निर्देशन कर्मचारियों का उत्तरदायित्व हैं ?
१६. कार्यक्रममय मामले का अध्ययन :

आप सहशिक्षा प्रदान करने वाले हाई स्कूल में—जिसके छात्रों की संख्या २५०० से अधिक है—एक अनुभवी अध्यापक हैं । आप एक कक्षा को पढाते हैं और विद्यार्थियों के डीन के रूप में आपको सप्ताह में २० घण्टे दिए गए हैं । निर्देशन और स्कूल परामर्श-कार्य के स्थाई प्रमाण-पत्र के लिए आप न्यूयार्क राज्य की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं । स्कूल की स्थापना ऐसे पड़ोस में हुए लगभग ४० वर्ष बीत चुके हैं जहाँ पर परिश्रमी, कानून का पालन करने वाले अमेरिकन नागरिक रहते थे जो अपने बच्चों के पालन-पोषण के प्रति सावधान थे और जो स्कूल के साथ पूरा सहयोग करते थे । कुछ अल्पसंख्यक छात्र कालेज-प्रवेश के लिए तैयारी कर रहे थे ।

आजकल विद्यार्थियों के गठन में परिवर्तन हो गया है और मिली-जुली राष्ट्रीय जातीय और धार्मिक पृष्ठभूमियों वाले विद्यार्थी उसमें सम्मिलित हो गए हैं । बौद्धिक योग्यता का औसत स्तर—विशेषतः नीचे की श्रेणियों में—गिर गया हैं; अधिकांश अभिभावक न तो अपने बच्चों का समीचीन रीति से लालन-पालन कर रहे हैं और न स्कूल के कर्मचारियों को सहयोग दे रहे हैं, इसका कुछ कारण यह है कि उनकी अपनी शैक्षिक पृष्ठभूमि महत्त्वहीन है और वे माध्यमिक स्कूलों के लक्ष्यों को नहीं समझते । उनकी मुख्य अभिलाषा यह है कि किताबों के साथ इतने वर्षों तक "खिलवाड़" करने के पश्चात् उनके बच्चों को अच्छी नौकरी मिल जाय और वे अच्छा वेतन प्राप्त कर सकें । कुछ अभिभावक अनिवार्य शिक्षा के उस कानून पर आपत्ति करते हैं जो उनके बच्चों को नौकरी पर जाने से रोकता है जिससे वे १६ वर्ष की आयु से पूर्व ही परिवार का पालन-पोषण करने में सहायक हो सकें । बहुत से लड़के अंशकालिक नौकरी करते हैं जिसमें वे स्कूल के बाद का अधिकांश समय खपा देते हैं । अंशकालीन नौकरी दिलाने के लिए स्कलों से निरन्तर माँग की जा रही है । कुछ लड़के और लड़कियाँ—जिन पर अभिभावकों का निरीक्षण बहुत कम है—स्कूल की पढ़ाई में कोई रुचि नहीं लेते, वे निकटवर्ती गिरोह के सदस्य बन गए हैं । वे आवारा हैं, सत्ता का विरोध करते हैं और गुण्डागर्दी तथा समाजविरोधी कार्यों में रत रहते हैं ।

यद्यपि स्कूल शैक्षिक, व्यापारिक और व्यापक पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है तथापि अधिकांश विद्यार्थी व्यापक पाठ्यक्रम लिये हैं । स्कूल के कर्मचारियों में आचार्य (जिसकी नियुक्ति इस स्कूल में लगभग ६ वर्ष पूर्व हुई है) एक नव-नियुक्त प्रशासकीय सहकारी, एक पुस्तकालयाध्यक्ष (जो गत ३० वर्षों से स्कूल में है), और लगभग ६५ अध्यापक हैं, जिनमें से अधिकांश पुराने विचारों के हैं, आचार्य निर्देशन सेवाओं के सक्रिय सुसंगठित कार्य की आवश्यकता को अनुभव करता है, किन्तु इस क्षेत्र में उसका प्रशिक्षण या अनुभव नगण्य है । प्रशासकीय सहकारी—जिसको निर्देशन में प्रिशक्षण प्राप्त नहीं है—अपने अन्य प्रशासकीय कर्त्तव्यों के अतिरिक्त निर्देशन के "मुखिया"

का भी कार्य करता है। आठ श्रेणी सलाहकार हैं, जो पुराने अध्यापकों में से हैं और १० साल से अधिक समय से यह कार्य कर रहे हैं। उन्हें इस कार्य के लिये प्रति सप्ताह एक घण्टा दिया जाता है, और उनका मुख्य कार्य विद्यार्थियों को अपनी पाठ्य-विधि का कार्यक्रम बनाने में सहायता देना है। प्रत्येक सलाहकार दूसरे से स्वतन्त्र होकर कार्य करता है और उसे प्रशासकीय सहकारी से सीधे आदेश प्राप्त होते हैं। इस सहकारी ने—जो हाई स्कूल का आचार्य बनना चाहता है—निर्देशन सेवाओं का एक लिखित कार्यक्रम तैयार किया है जिसमें विशेष रुझान और रुचि का मूल्यांकन करने वाली प्रविधियों, छात्रों के डीन के पास अध्यापकों द्वारा भेजे गये विचारणीय छात्रों और व्यक्तिशः परामर्श के प्रशासन को सम्मिलित किया है। श्रेणी सलाहकारों सहित अध्यापक व्यक्तिगत छात्रों के कल्याण की अपेक्षा मंदबुद्धि छात्रों सहित कक्षाओं को अपने विषय पढ़ाने का अधिक प्रयत्न करते हैं।

छात्रों के डीन के रूप में, इस स्कूल में आप एक मात्र प्रशिक्षित परामर्शदाता होते हुए भी अनुशासक से कुछ अधिक हैं। जो छात्र आपके पास अनुशासन के लिये भेजे जाते हैं, यद्यपि आप उन्हें सहायता देने का प्रयत्न करते हैं, फिर भी आप पर इतना अधिक भार है कि आप अधिक से अधिक उन छात्रों के लिए सामुदायिक अभिकरणों का सहयोग प्राप्त कर सकते हैं जिनके मामले अभी न्यायालयों में नहीं पहुंचे हैं। आपके दृष्टिकोण से आचार्य को सहानुभूति है और आपके कार्य के विषय में—विशेषतः कुछ अभिभावकों को प्रशिक्षित करने और कक्षा के बाहर के अध्यापक-अभिभावक के सहयोग के लिये आपके द्वारा किये जाने वाले प्रयत्नों के बारे में—उसकी राय बहुत अच्छी है। उसने आपको वचन दिया है कि जब वर्तमान प्रशासकीय सहकारी आचार्य बन कर चला जायेगा (जिसकी एक वर्ष के अन्दर सम्भावना है) तो वह आपको स्थानापन्न प्रशासकीय सहकारी बना देगा और वह प्रशासकीय सहकारी परीक्षा के लिये आपकी सिफारिश कर देगा। इस बीच में वह चाहता है कि आप एक प्रभावशाली कार्यक्रम बनायें और निर्देशन सेवाओं में सक्रिय भाग लेने पर अध्यापक जो विरोध करते हैं उसे तोड़ने के सम्बन्ध में उससे बातचीत करें। उसने यह भी सुझाव दिया है कि आप इस क्षेत्र में औपचारिक प्रशिक्षण के लिये ऐसे कुछ अध्यापकों का चुनाव कर लें जिन्होंने शक्तिशाली रुचि और योग्यता का परिचय दिया है।

इस मामले की समस्या को सावधानी से पढ़कर नीचे लिखे अनुसार अपने उत्तर को सारबद्ध कीजिये :

(१) स्थिति का मूल्यांकन—पक्ष और विपक्ष के प्रमुख तत्त्व।
  (क) नीति की मुख्य बातें जो उसमें निहित हैं
  (ख) निर्देशन की मुख्य आवश्यकताएँ जो स्पष्ट हैं।
(२) सुधार के लिये सुझाव :
  (क) वर्तमान स्थितियों में क्या महत्त्वपूर्ण योग दिये जा सकते हैं?
  (ख) इस स्थिति के लिये निर्देशन-केन्द्रित विधि के विकास के विरोध में कौन-सी बातें कही जाने की अधिक सम्भावना है?

१६ जूनियर कालेजों में निर्देशन

पुस्तकों और व्यवसाय की शिक्षा देने के लिए जूनियर कालेजों अथवा सामुदायिक कालेजों की स्थापना की गई है। वे या तो सत्रीय संस्थाओं के रूप में कार्य करते हैं अथवा नियमित चार-वर्षीय कालेजों के पोपकों के रूप में।

जूनियर कालेज के कार्यकारी रूप

दो-वर्षीय जूनियर या सामुदायिक कालेज की कल्पना कुछ जूनियर हाई स्कूलों से मिलती-जुलती है। स्मरण रहे कि सन् १९०० की प्रारम्भिक दशाब्दि में जूनियर हाई स्कूलों की स्थापना के मूल उद्देश्य इस प्रकार थे : (१) नवयुवकों को प्रारम्भिक स्कूल और सीनियर हाई स्कूल की अध्यापन-विधियों के बीच का अन्तर दूर करने में सहायता देना, जिससे सीनियर हाई स्कूल के प्रथम वर्ष में स्कूल छोड़ने वालों की भारी संख्या में कमी हो सके, और (२) व्यावसायिक पदों की खोज के लिए अवसर प्रदान करना। जूनियर या सामुदायिक कालेजों की स्थापना में निम्नलिखित प्रयत्न निहित हैं : (१) उन हाई स्कूल स्नातकों के लिए कालेज की शिक्षा के प्रारम्भ की व्यवस्था करना जो अपनी अल्पायु या अन्य कारण से अपने घर की निकटवर्ती संस्था में उस चार-वर्षीय कालेज की अपेक्षा अधिक अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं जो उनके घर से काफी दूर है, (२) हाई स्कूल में प्रारम्भ किये गए उस विशिष्ट व्यावसायिक प्रशिक्षण को जारी रखना जो दो वर्ष में संतोषजनक रीति से समाप्त किया जा सकता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि जूनियर कालेज का विचार शिकागो विश्वविद्यालय से प्रारम्भ हुआ था, जहाँ १८९६ में चार-वर्षीय कालेज और जूनियर कालेज दोनों की स्थापना की गई थी। छः वर्ष पश्चात् सन् १९०२ में जोलियट, इलीनोइस में एक सार्वजनिक जूनियर कालेज स्थापित किया गया था। सन् १९०७ में केलिफोर्निया में

जनियर कालेज स्थापित करने के लिए उस राज्य में एक कानून बनाया गया। उसके पश्चात् जूनियर कालेज का विचार कैलिफोर्निया में गहरी जड़ पकड़कर सारे राष्ट्र में फैलता गया। वास्तव में सीनियर और जूनियर कालेज दोनों एक ही आधार पर स्थापित किए गए हैं। किन्तु संगठन का यह रूप दुर्लभ है।

सन् १९५० तक सार्वजनिक और निजी जूनियर कालेजों की संख्या लगभग समान थी। तब से राज्य या समुदाय द्वारा समर्थित दो-वर्षीय हाई स्कूलोत्तर संस्थाओं ने नेतृत्व दिया है।

शैक्षिक उद्देश्य जूनियर कालेज दो व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। प्रथम, जो विद्यार्थी अपनी शिक्षा कालेज के कम से कम चार-वर्षीय अध्ययन द्वारा आगे जारी रखने की योजना बनाते हैं, उनके लिए पाठ्यक्रम का उपयोग आधारभूत शैक्षिक तैयारी करने में किया जाता है। दूसरे, चूँकि जूनियर कालेज के बहुत से स्नातक इस बिन्दु से आगे औपचारिक शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते अथवा नहीं करना चाहते, इसलिए कार्यक्रम का सम्बन्ध समुदाय की व्यावसायिक गतिविधियों से है; पाठ्यक्रम के विषयों और नौकरी के अवसरों के समीकरण पर पर्याप्त बल दिया जाता है। स्मरण रहे कि जो कुशलताएँ निम्नतर स्कूल स्तर पर प्रारम्भ की गई थीं; उनमें निखार लाने के लिए व्यावसायिक हाई स्कूलों के साथ सम्बद्ध कुछ एक या दो-वर्षीय संस्थाएँ भी स्थापित की गई हैं।

कालेज की अपेक्षाओं को पूरा करने और समाज की आवश्यकताओं की पूर्त्ति करने की आवश्यकताएँ जूनियर कालेज के निकायों के सदस्यों को पाठ्यक्रम नियोजन, अध्यापन और परामर्श की चुनौती देती हैं। इनमें से अधिकाँश संस्थाएँ सावधानी-पूर्वक ऐसी पाठ्य-विधियाँ प्रस्तुत करती हैं जो पोष्य कालेजों के लिए उपयोगी होती हैं। कुछ मामलों में तो एक नियमित कालेज और उसके "पोषक" जूनियर कालेजों में बहुत अच्छे कार्यकारी सम्बन्ध हैं। सत्रीय स्कूलों के रूप में जूनियर कालेजों का यह दायित्व है कि वे अपने छात्रों के लिए व्यावसायिक कुशलता और सामान्य शिक्षा के मिले-जुले रूप के प्रशिक्षण की व्यवस्था करें।

भिन्न-भिन्न जूनियर कालेजों में भिन्न-भिन्न बातों पर बल दिया जाता है। बहुत से कालेज मूलतः कालेज के श्रेय स्तरों को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं; सफलता का मूल्याँकन उन छात्रों की संख्या से किया जाता है जो चार-वर्षीय कालेज में स्वीकार किए गए हैं और जो वहाँ अच्छे विद्यार्थी सिद्ध होते हैं। किन्तु, कुछ कालेज ऐसे हैं जो अपने उन विद्यार्थियों की कुशलताओं के विकास में सहायता देने पर गर्व अनुभव करते हैं जो अपनी दो वर्ष की पाठ्य-विधि को पूरा करने के पश्चात् बाजार में स्थान पा सकते हैं।

जूनियर कालेज के लक्ष्य और लाभों का वर्णन फ्लिट, मिशीगन, जूनियर कालेज के सूचीपत्र में भली-भाँति किया गया है, जो भावी विद्यार्थियों के लिए सुझाव के रूप में है।

समुदाय—जैसे कालेज उस क्षेत्र के नागरिकों को निम्नलिखित सेवाएँ प्रस्तुत करते हैं :

उच्चतर शैक्षिक कार्य या व्यावसायिक प्रशिक्षण में हाई स्कूल से आगे शिक्षा की उपलब्धि ।

पाठ्य-विधियों की लचीली व्यवस्था जिससे अध्ययन का कार्यक्रम दो वर्ष में समाप्त हो सके ।

उन विद्यार्थियों के लिए कालेज स्तर पर "परीक्षा" अवधि का निर्धारण जो उच्चतर शिक्षा के कार्यक्रम में अपनी योग्यता या रुचि में सन्देह रखते हों ।

घर पर रहने के कारण वित्तीय व्यय में महत्त्वपूर्ण कमी ।

कालेज के प्रथम दो वर्षों में घरेलू वातावरण ।

अंशकालीन नौकरी के द्वारा अपना व्यय स्वयं सम्भालने के अनेक अवसर ।

एक और दो वर्ष की पाठ्य-विधियाँ जो समुदाय में नौकरी के लिए प्रत्यक्ष रूप से तैयारी कराती हैं ।

निकाय और छात्रों में निकट सम्पर्क ।

जूनियर कालेजों को सार्वजनिक सहायता जैसा कि हम पहले सुझाव दे चुके हैं बहुत से जूनियर हाई स्कूलों का संगठन सामुदायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया है । यद्यपि कुछ उच्चतर अध्ययन की संस्थाएँ—जिनका प्रारम्भ जूनियर कालेजों के रूप में हुआ है—सरकार द्वारा अभिस्वीकृत चार-वर्षीय कालेज बन गए हैं, बहुत से शिक्षक और राज्य अधिकारी जूनियर कालेज के आदर्श के महत्त्व में विश्वास रखते हैं और इसीलिए वे उनके हेतु सार्वजनिक धन प्रदान करते हैं । समुदाय के बहुत से हाई स्कूल स्नातकों के लिए होने वाले सांस्कृतिक और शैक्षिक लाभ सार्वजनिक धन के व्यय का औचित्य सिद्ध करते हैं । वास्तव में, समाज में जूनियर कालेजों के समर्थन का मुख्य उद्देश्य चार-वर्षीय कालेज के कार्यक्रम की पूर्ति करने वाले पाठ्यक्रम का अनिवार्य रूप से अनुसरण किए बिना माध्यमिक स्तर से आगे शैक्षिक अवसरों का विस्तार करना हो सकता है । सार्वजनिक रूप से सहायता प्राप्त कुछ दो-वर्षीय कालेज अभिरुचि रखने वाले विद्यार्थियों को ऐसी आगामी शिक्षा के लिए तैयार करने की आवश्यकता को अनुभव करते हैं जो चार-वर्षीय कालेज में स्नातक होने तक चलती है । किन्तु उनका सम्बन्ध विशेषतया इस प्रकार का कार्यक्रम प्रस्तुत करने से है जो उनके स्नातकों को सामुदायिक नेतृत्व के उत्तरदायित्व को संभालने और अपनी पसन्द के व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करता है ।

अभी हाल ही यूनाइटेड स्टेट्स आफिस ऑफ एजुकेशन के आठ प्रतिनिधियों और दो-वर्षीय कालेज के बीस व्यावसायिक कार्यकर्ताओं ने वाशिंगटन डी० सी० में एक सम्मेलन में भाग लिया था, जिसका उद्देश्य दो-वर्षीय कालेजों का राज्य शिक्षा प्रणालियों में समीकरण करना था । इस सम्मेलन के समय समस्त उपाधि-श्रेय छात्रों में लगभग $\frac{1}{6}$ भाग को दो-वर्षीय कालेजों में भर्ती किया गया था । उस समय लोगों

का ध्यान इस संभावना की ओर आकर्षित किया गया था कि लगभग दस वर्षों में प्रत्याशित दुगुने या अधिक छात्रों के कालेजों में भर्ती होने के फलस्वरूप दो-वर्षीय कालेज अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण हो जायेंगे।

इस सम्मेलन की रिपोर्ट के अनुसार बहुत से राज्यों को स्थानीय सर्वेक्षण की आवश्यकता है जिसमें व्यावसायिक शिक्षक और साधारण नागरिक सम्मिलित होते हैं और जो नये दो-वर्षीय सामुदायिक कालेज की स्थापना के लिए राज्य द्वारा दी जाने वाली स्वीकृति से पूर्व शैक्षिक आवश्यकताओं के लिए किया जाता है। इन सर्वेक्षणों में जिन बातों पर ध्यान दिया जाता है, वे हैं भर्ती होने वाले क्षमता-सम्पन्न विद्यार्थियों की संख्या और विशेषता, पाठ्यक्रम की आवश्यकताएं, निवास की सुविधाएँ और कार्यक्रम के क्रियान्वयन की संभावना, सुयोग्य अध्यापकों का उपलब्ध होना और, निसन्देह, अपेक्षित तथा उपलब्ध बजट की व्यवस्था।

यदि दो-वर्षीय कालेजों को इस प्रकार कार्य करना है जिससे कि सम्बन्धित समुदायों की सर्वश्रेष्ठ सेवा हो सके, तो इन संस्थाओं के लक्ष्यों और संगठित शैक्षिक कार्यों को समन्वित करना होगा। सम्मेलन में भाग लेने वाले इस बात पर एकमत थे कि राज्य के निर्देशकों अथवा दो-वर्षीय कालेजों के निरीक्षकों के कर्त्तव्य वे होने चाहिएँ जो संक्षेप में निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए हैं :

१. कानून के आदेशों का पालन करना और सरकारी राजकीय शैक्षिक अभिकरणों के नियमों को क्रियान्वित करना।
२. जिन राज्य और समुदायों में दो-वर्षीय कालेज स्थित हैं उनकी निश्चित आवश्यकताओं के अनुसार कार्यक्रम का विकास और सुधार करने में परामर्श सेवाओं और नेतृत्व की व्यवस्था करना।
३. नई संस्थाओं की स्थापना से सम्बन्धित कार्य-विधियों के लिए परामर्श देना और उन्हें क्रियान्वित करना।
४. निम्नलिखित दो क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए अन्य अभिकरणों के साथ २-वर्षीय कालेजों के कार्य का समन्वय करना :
    (क) कार्यक्रम, ताकि शिक्षा के माध्यमिक और उच्चतर स्तरों पर प्रभावशाली एकीकरण हो सके।
    (ख) कानून सम्बन्धी कार्य, ताकि २-वर्षीय कालेजों की रुचियों और विचारों से राज्य के अन्य प्रशासकीय अभिकरण परिचित हो सकें।
५. २-वर्षीय कालेजों और उनके संचालन के समस्त रूपों से सम्बन्धित आँकड़ों और अनुसंधान के विवरणों को एकत्रित करना तथा प्रकाशित करना।
६. पूर्ववर्णित अन्य कार्यों के अनुकूल रीति से राज्य में प्रत्येक २-वर्षीय कालेज की संस्था सम्बन्धी विशेषता और एकीकरण का प्रसार करना।*

* Co-ordinating 2-year College in State Education Services, स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण का संयुक्त राज्य का विभाग, वाशिंगटन डी.सी., १९५७।

२-वर्षीय कालेज की विकासशील कल्पना पर हमने पर्याप्त विचार कर लिया है। संभवतः अत्यन्त निकट भविष्य में स्कूल के लोगों—विशेषतः माध्यमिक स्कूल के परामर्शदाताओं को अधिक से अधिक नवयुवकों की अपनी शिक्षा—पुस्तकीय या व्यावसायिक—हाई स्कूल से आगे जारी रखने के अवसरों की खोज में सहायता देने की समस्या का सामना करना पड़ेगा। अनेक कारणों से—चार-वर्षीय कालेजों पर पड़ने वाला प्रत्याशित दबाव भी जिनमें से एक है—विस्तृत सेवा के लिए विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली माँग का उत्तर जूनियर कालेज है। अतएव हाई स्कूल के निर्देशन कर्मचारी इन संस्थाओं, उनकी भौगोलिक उपलब्धियों, पाठ्यक्रम के विषयों और व्यक्तिगत परामर्शदाताओं की उपयुक्तता से परिचित होकर उनके लिए सहायक हो सकते हैं।

निर्देशन का दर्शन जूनियर कालेज स्तर पर संस्था की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार निर्देशन की नीतियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। निर्देशन और सुविचारित कार्यक्रम की आवश्यकता को व्यापक रूप से स्वीकार कर लिया गया है। स्टीफन्स कालेज, मिसूरी जैसी कुछ संस्थाओं ने उन सब के लिए जो कि उनके विस्तृत निर्देशन कार्यक्रम में भाग लेते हैं, एक आधारभूत दर्शन प्रस्तुत किया है। स्टीफन्स कालेज के निर्देशन के कार्यकारी रूप यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं :

> स्टीफन्स कालेज में परामर्शदाता महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। निकाय का प्रत्येक सदस्य दो कार्य करता है। वह केवल अध्यापक के रूप में ही कार्य नहीं करता, अपितु परामर्शदाता का भी कार्य करता है। इस प्रकार प्रत्येक परामर्शदाता अपने दुहरे कार्य के अनुकूल दो प्रकार से प्रशासन से सम्बन्धित है। अध्यापक के रूप में वह शिक्षा के डीन के कार्यालय के प्रति उत्तरदायी है और परामर्शदाता के रूप में विद्यार्थियों के डीन के प्रति। जबकि प्रशासन की दृष्टि से इन दोनों में भेद किया जा सकता है, परन्तु वास्तविक व्यवहार और शैक्षिक उद्देश्य की दृष्टि से दोनों में निकटतम सहयोग है और वे परस्पर सहायक हैं।
>
> परामर्शदाता अध्यक्ष परिषद्—जो निकाय के अनुभवी सदस्यों का चुना हुआ सदस्य है और जिसका अध्यक्ष परामर्शदात्री सेवाओं का निर्देशक होता है—का कार्य है सेवारत व्यक्तियों को परामर्श देना और सलाह तथा परामर्श देने की कार्यविधियों में सुधार करने के लिए उनका सतत मूल्यांकन। प्रत्येक परामर्शदाता अध्यक्ष फाल कान्फ्रेंस (Fall Conference) में निकाय सलाहकारों के छोटे समूह से भेंट करता है और पूरा निकाय पूरे साल भर तक कार्यक्रम को अधिक सक्रिय बनाने के लिये अपना योग दे सकता है।
>
> परामर्श के कार्यक्रम के ढाँचे में परामर्शपात्र के कल्याण से छात्रों के डीन, सलाहकार, परामर्श सेवा, आवास परामर्शदाता और भर्ती परामर्शदाता परस्पर सम्बन्धित हैं। सलाह पाने वाले विद्यार्थी से सम्बन्धित कार्यों के केन्द्र में सलाहकार होता है, किन्तु यह सम्भव है कि किसी दी हुई स्थिति में कोई अन्य व्यक्ति अधिक तत्परता से स्थिति को सुधारने में योग दे सके। ऐसी स्थिति में

सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए पारस्परिक सम्मान, व्यावसायिक ईमानदारी और समस्त सम्बन्धित दलों में संचार की स्वतंत्रता का वातावरण तैयार करना पड़ेगा।

इस कार्यक्रम में आधारभूत सम्बन्ध परामर्शदाता और परामर्शपात्र का है। यह एक प्रमुख साधन है जिसके द्वारा परामर्शपात्र की शिक्षा का व्यक्तिकरण होता है। इस सम्बन्ध की प्रकृति और उद्देश्य को समझना परामर्शदाता और परामर्शपात्र दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस कल्पना का सार इस बात में है कि निकाय के सदस्य प्रत्येक परामर्शपात्र में निरन्तर व्यक्तिगत रुचि लें। मैत्री और विश्वास का वातावरण होना चाहिये और प्रत्येक को एक-दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान करना चाहिए।

जिस परामर्श-स्थिति में निकाय का सदस्य अनौपचारिक रूप से छात्र को परामर्श देता है, वह व्यावसायिक परामर्श-स्थिति से भिन्न होती है। सलाहकार की मुख्य रुचि परामर्शपात्र को अध्ययन-प्रक्रिया में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने में सहायता देने में होती है। परामर्शदाता कुछ रूपों में प्रौढ़ मित्र होता है जिसका अनुभव, ज्ञान और समर्थन विद्यार्थी को वाँछनीय निर्देशन और प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। परामर्श के सम्बन्धों को किस सीमा तक विकसित होने दिया जाय यह परामर्शपात्र की परिपक्वता और परामर्शदाता के प्रशिक्षण और अनुभव पर निर्भर करता है। सलाहकार को अपने परामर्शपात्र से प्रारम्भ में मिलकर सामान्य सीमाओं की रूप-रेखा बना लेनी चाहिए जिसमें परामर्श-कार्य सम्पन्न होता है। इन सीमाओं में परामर्श की स्थिति एक गोपनीय स्थिति होती है। परामर्शदाता को उसी समय अपनी स्थिति स्पष्ट कर देनी चाहिए कि वह विद्यार्थी के लिए ऐसे वातावरण की व्यवस्था करता है जिससे अत्यन्त सफल सम्बन्ध स्थापित हो सके।

स्टीफन्स के परामर्श कार्यक्रम में निम्नलिखित मूलभूत धारणाएँ निहित हैं :

१. परामर्श का कार्यक्रम सफलतापूर्वक चल सके, इसके लिए उसे शक्तिशाली (स्वयं शक्ति प्राप्त करने वाला) और लचीला होना चाहिए। वह निकाय के सदस्य और विद्यार्थी दोनों के लिए उपयुक्त हो। चूंकि उसकी सम्भावनाएँ मानवीय सम्बन्धों के लिए असीमित हैं, वे एक ढाँचे का अनुसरण नहीं कर सकतीं।

२. कार्य की प्रभविष्णुता उस सीमा पर निर्भर करती है जहाँ तक छात्र को वृद्धि और विकास की समस्या को समझने, स्वीकार करने, उसकी परिभाषा करने और उसको सुलझाने में सहायता दी जाती है।

३. इस बात पर बल दिया जाता है कि विद्यार्थी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को समझे और उसकी पूर्ति के लिए अपनी निजी बुद्धि का प्रयोग करे न कि उन व्यक्त और अव्यक्त समस्याओं पर जो लक्षण मात्र भी हो सकती हैं।

४. यद्यपि यह विद्यार्थी का दायित्व है कि यह अपनी निजी समस्या के समाधान के लिए निर्णय ले, तो भी उसे तथ्यों की खोज करने और उन प्रविधियों का विकास करने में सहायता देने का उत्तरदायित्व परामर्शदाता का है जो निर्णय करने और समस्या का समाधान करने के लिए आवश्यक हैं।

५. विद्यार्थी पर सम्पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में विचार करना चाहिए और उसे अपनी अभिरुचि और योग्यता के अनुकूल कार्यक्रम बनाने में सहायता देनी चाहिए।

६. अध्ययन और विकास तभी सम्भव है जबकि अध्ययन करने की इच्छा हो। अतएव अपने अध्ययन का उत्तरदायित्व स्वयं छात्र को ग्रहण करना चाहिए।

७. अभिभावक का विवेकपूर्ण, वस्तुगत, तटस्थ रवैया संरक्षण, अभिभावकता और नैतिकतापूर्ण रवैये की अपेक्षा अधिक सहायक होता है।

८. विद्यार्थियों को "निर्देश" देने, उसका मूल्यांकन करने अथवा उस पर दया दिखाने या उससे तर्क करने से उसकी समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

९. जो समय विद्यार्थी को अपना दायित्व समझने और स्वीकार करने में लगाया जाता है, वही उसका सदुपयोग है।

१०. अपने परामर्श-कार्य को पूरा करने में निकाय का सदस्य तुलनात्मक रूप से कितना ही सफल क्यों न हो, विवेक और चातुर्य में विकास के लिए सदैव गुंजाइश रहती है।

यद्यपि प्रणाली का महत्त्वपूर्ण स्थान है, फिर भी परामर्शदाता अध्यापक की सूक्ष्म दृष्टि स्टीफन्स के परामर्श कार्यक्रम में अपना विशेष स्थान रखती है। यह ठीक है कि वहाँ कोई निश्चित प्रणाली नहीं है और न स्वीकृत कार्यविधि जो सच्चे अर्थों में जनतंत्री मानव का विकास कर सके। यह विचार और कार्य की एक विशिष्ट शैली है जो व्यक्तित्व को एक विशेष रूप प्रदान करती है। इस शैली में दूसरों को वास्तविक रूप से "स्वीकार" किया जाता है और बुद्धिमान व्यक्तियों के रूप में उनके सोचने और कार्य करने के अधिकार को तथा सामूहिक रवैयों और कार्यों के लिए उत्तरदायित्व की भावना को मान्यता दी जाती है।

जूनियर कालेज के छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताएँ

संभव है कि जूनियर सामुदायिक कालेज में प्रवेश पाने वाले छात्र को ऐसे निर्देशन की आवश्यकता हो जैसी कि अपने ही नगर में चारवर्षीय कालेज में पढ़ने वाले नवयुवक को होती है, किन्तु उसकी कुछ समस्याएँ उस छात्र से भिन्न हो सकती हैं जो अपने घर से दूर किसी रिहायशी कालेज में पढ़ता हो।

सामान्य-निर्देशन आवश्यकताएँ अपने नगर के दो या चार-वर्षीय कालेज की दीक्षा में संभवतया वे गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न नहीं होतीं जो घर से दूर स्थित रिहायशी कालेज में दीक्षा लेने पर होती हैं। तो भी प्रत्येक विद्यार्थी को अपने कालेज के निवास में अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकने और अपने गुणों का पूर्ण उपयोग करने की शिक्षा प्राप्त करने के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है। दीक्षा, अध्ययन का स्वभाव और कालेज-जीवन की सामाजिक गतिविधियों के सम्बन्ध में जो सुझाव दिये गये हैं, वे जूनियर या सामुदायिक कालेज पर भी लागू होते हैं। १७वें अध्याय में इन पर विचार किया गया है। कुछ सामुदायिक कालेज के छात्र ऐसे निर्देशन की आवश्यकता अनुभव करते हैं जो उनकी शैक्षिक और व्यक्तिगत स्थिति के अनुकूल हों।

समस्या की विशिष्टता उदाहरणार्थ, एक प्रतिभावान विद्यार्थी छोटी ही आयु में हाई स्कूल का स्नातक हो जाता है। उसका शैक्षिक-वृत्त उसके बहुत से सहपाठियों से बहुत श्रेष्ठ है। किन्तु भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से वह चार-वर्षीय रिहायशी कालेज में अध्ययन प्रारम्भ करने के विचार से बहुत अपरिपक्व हो सकता है। उसके "विकास" की अवधि में अच्छे सामुदायिक कालेज की देखभाल उपयोगी प्रतीत हो सकती है।

चूंकि इसका तात्पर्य यह है कि वह रिहायशी कालेज में अपने कनिष्ठ वर्ष के प्रारम्भ में प्रवेश करेगा, इस स्थिति में एक गम्भीर समस्या उत्पन्न हो सकती है। उसे अपने ऐसे सहपाठियों में स्थान बनाने की आवश्यकता होगी जो नवयुवक के रूप में कालेज में प्रविष्ट हुए हैं और एक-दूसरे से भली-भाँति परिचित हैं तथा वे इस नव-आगन्तुक को अपने विविध समूहों में अपने साथ न लेना चाहें। अतएव जूनियर कालेज के परामर्शदाताओं का कर्त्तव्य है कि वे इस छात्र के सामाजिक रवैयों और कार्यों का इस प्रकार निर्देशन करें कि उच्चतर स्कूल के सहपाठियों द्वारा वह स्वीकार कर लिया जाय।

कभी-कभी तालमेल की जो दूसरी समस्या हाई स्कूल के स्नातकों के सम्मुख आती है, वह है जीवन-कार्य का चुनाव। कुछ व्यक्ति अपने प्रौढ़ जीवन का अधिकांश समय एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय को बदलते हुए अपनी समस्या को सुलझाने का प्रयत्न करते हैं; कुछ लोग अपनी रुचियों की उपेक्षा करके अपने माता-पिता की इच्छा पूरी करने का प्रयत्न करते हैं, जिसका परिणाम कभी-कभी बड़ा भयंकर होता है। व्यावसायिक चुनाव के सम्बन्ध में हाई स्कूल के स्नातक की अनिश्चितता या संघर्ष की जड़ इन दोनों में से एक कारण में निहित होती है : (१) स्नातक ने अपने हाई स्कूल के अध्ययन में सफलता प्राप्त कर ली है, और वह अनेक व्यावसायिक क्षेत्रों में समान रूप से रुचि रखता है—वह कोई अन्तिम निर्णय करने के लिए प्रस्तुत नहीं है; (२) स्नातक की हाई स्कूल की सफलता सामान्य रही है, किन्तु वह अपने व्यवसाय के चुनाव में अत्यधिक महत्त्वाकाँक्षी है।

इन दोनों प्रकार के छात्रों को परामर्श देने की विधियों में भेद है। उच्चकोटि का व्यक्ति व्यवसाय का ऐसा क्षेत्र चाहता है जिसमें उसे अपनी विशिष्ट प्रतिभा का

उपयोग करने के लिए सर्वश्रेष्ठ अवसर प्राप्त हो सके। यहाँ प्रयुक्त होने वाले निर्देशन कार्य में निम्नलिखित बातें सम्मिलित होंगी : (१) रुझान और रुचि की समुचित परीक्षाएँ लेना, (२) विद्यार्थियों और परामर्शदाताओं के साथ अध्यापक का सहयोग, (३) अस्थायी रूप से चुने गये नेताओं और विद्यार्थी में वार्ताएँ, (४) उपलब्ध प्रशिक्षण संस्थाओं और अध्ययन के समुचित कार्यक्रमों पर विचार, और (५) सम्भव प्रयोगात्मक अनुभव। परामर्शदाता और परामर्शपात्र के सम्बन्ध साधारणतया सुन्दर और लाभदायक होते हैं।

एक सामान्य नवयुवक या अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी विद्यार्थी को परामर्श देने का कार्य भिन्न होता है, और बहुधा प्रभावहीन होता है। वह सम्भवत: जूनियर कालेज में पढ़ रहा है, क्योंकि हाई स्कूल में उसका शैक्षिक वृत्त ऐसा नहीं था जिसके आधार पर वह चार-वर्षीय कालेज में प्रवेश पा सकता। इसके अतिरिक्त, उसकी इस निम्न श्रेणी का कारण संभवत: वह और उसके माता-पिता यह कह कर बतायेंगे कि वहाँ पढ़ाई ठीक नहीं होती और निम्न स्तर के स्कूल ने उसकी योग्यता को समझा नहीं।

इस प्रकार का व्यक्ति कठिन पाठ्य-विधियों की माँग कर सकता है जिसमें वह अपनी कमियों को दूर करने की आशा करता है। चूँकि वह अपनी बौद्धिक सीमाओं से अपरिचित होता है, इसलिए वह कार्यक्रम के सम्बन्ध में परामर्शदाता द्वारा की गई सिफारिशों का अनुसरण करने से इन्कार कर देता है। इसलिए इस प्रकार की स्थिति में परामर्शदाता इससे अधिक कुछ नहीं कर सकता कि वह उसे स्कूल के स्तर के सम्बन्ध में सूचना दे दे और इस विषय में सावधान कर दे कि जिस विषय का वह चुनाव करने जा रहा है, उसमें बहुत ध्यानपूर्वक अध्ययन करने की ही आवश्यकता नहीं होगी अपितु विगत अध्ययन में उसने जिस योग्यता का परिचय दिया है उससे कहीं अधिक योग्यता की आवश्यकता होगी।

यदि अब भी विद्यार्थी अध्ययन की अपनी ही योजना पर चलना चाहता है तो उसे ऐसा करने की अनुमति दे देनी चाहिए। इस विश्वास के होते हुए भी कि विद्यार्थी सफलता प्राप्त नहीं करेगा, अनुभवी परामर्शदाता यह जानता है कि विद्यार्थी यह समझने से पूर्व कि उसकी शैक्षिक आकांक्षाओं का स्तर इतना ऊँचा होगा कि नवयुवक अपनी अपर्याप्तता को शीघ्र पहचान लेगा।

व्यक्तिगत तालमेल जूनियर समुदाय के कालेज के परामर्शदाता के सम्मुख निरन्तर ऐसी समस्याएँ आती हैं जिनका सम्बन्ध विद्यार्थी की तालमेल सम्बन्धी कठिनाइयाँ होती हैं। यद्यपि ये समस्त या अधिकांश नवयुवक अपने घरों पर रहते हैं, वे शीघ्र ही समझ जाते हैं कि स्कूल उनसे जिस समय और शक्ति की माँग करते हैं, ये माँगें उन माँगों से भिन्न हैं जो उन्होंने हाई स्कूल में अनुभव की थीं। किन्तु किसी विशिष्ट व्यक्ति के तालमेल की समस्या उसके प्रकार और गम्भीरता, उसके व्यक्तिगत रवैयों और ग्राह्य शक्ति पर निर्भर करती है। अतएव परामर्शदाता को दूरदर्शिता और विवेक की आवश्यकता है।

बुद्धिमान किन्तु अपरिपक्व बच्चा शैक्षिक सफलता प्राप्त करने के लिए उत्सुक होता है, किन्तु वह कालेज के मामलों में भी सक्रिय भाग लेना चाहता है। इसके अतिरिक्त उसके कुछ घरेलू स्वार्थ और कुछ पारिवारिक उत्तरदायित्व भी होते हैं। अतएव वह यह अनुभव कर सकता है कि वह बहुत से दायित्वों के भार से दबा जा रहा है। चूंकि अभी वह अपनी तालमेल की समस्याओं को सुलझाने के लिए अवरोधात्मक दृष्टि से बहुत अपरिपक्व है, इसलिये कालेज और घर के कार्यों का संतुलित कार्यक्रम बनाने के लिये उसे समझदार परामर्शदाता की सहायता की आवश्यकता होती है।

कालेज की अपनी चुनी गई पाठ्य-विधियों में असफलता अनुभव करने वाले अत्यधिक महत्त्वाकाँक्षी छात्र को अपने मनोबल के निर्माण के लिए सहायता की आवश्यकता हो सकती है। किसी नवयुवक को यह ज्ञात करना सरल नहीं है कि उसकी योग्यताएँ उसकी शैक्षिक और व्यावसायिक रुचियों के अनुकूल चलने में असमर्थ हैं। इस प्रकार की स्थिति में यह परामर्शदाता का कर्त्तव्य है कि वह उसके रवैये में परिवर्तन करने का प्रयत्न करे, उसकी विचारधारा को अधिक यथार्थवादी बनाये और ऐसे लक्ष्यों को स्वीकार करने के लिये उसके साथ कार्य करे जो निम्नतर हों और जिनमें सफलता प्राप्त की जा सके।

हाई स्कूल के कुछ स्नातकों को अपनी शिक्षा की प्रगति में नगण्य-सी रुचि होती है। यदि परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी है कि व्यक्ति को कार्य करने की आवश्यकता नहीं है, तो वह सामुदायिक कालेज में केवल इसलिये भर्ती हो सकता है कि "कालेज जाने से" सम्मान में वृद्धि होती है। ऐसे छात्र को खोज निकालना परामर्शदाता के लिए कठिन नहीं होता है। सामाजिक कार्यों या खेल-कूद में बहुत अधिक भाग लेना, कक्षा से गोत मनाना, परीक्षाओं में जालसाजी करना और कालेज के कार्य में बहुत कम तैयारी करना, ये कुछ ऐसे लक्षण हैं जिनसे ज्ञात होता है कि विद्यार्थी की पढ़ने में रुचि नहीं है और परामर्शदाता इन लक्षणों को सरलता से पहचान सकता है। तालमेल की अन्य समस्याएँ युवकों में प्रायः समान होती हैं; और वे हैं : शारीरिक दुर्बलता, प्रेम-प्रपंचों में अधिक उलझना और धार्मिक संघर्ष।

जिन व्यक्तिगत कठिनाइयों पर इस अध्याय में विचार किया गया है उनमें से अधिकतर हाई स्कूल के छात्रों द्वारा उच्चतर श्रेणियों में और चार-वर्षीय कालेज के छात्रों द्वारा प्रथम वर्ष में अनुभव की जाती हैं। इन समस्याओं की समीचीनता के कारण यहाँ इन पर विशेष ध्यान दिया गया है। अधिकांश जूनियर सामुदायिक कालेजों में—जहाँ छात्रों की संख्या कम होती है—परामर्शदाताओं को युवकों को अपना जीवन कार्यक्रम बनाने में सहायता देने के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं जितना कि बड़ी संस्थाओं में सम्भव नहीं होता जो सम्भवतः अधिक अवैयक्तिक होती हैं।

जूनियर कालेज में निर्देशन कार्यक्रम

सामुदायिक कालेज के निर्देशन कर्मचारियों को चाहिए कि वे निम्नतर स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों को उपलब्ध होने वाली सेवाओं को जारी रखें और उनका

विस्तार करें। दो-वर्षीय कार्यक्रम चाहे सत्रीय शिक्षा का हो चाहे उच्च शिक्षा का प्रारम्भ हो, उसका अंतिम लक्ष्य छात्र का व्यावसायिक उद्देश्य और नागरिक दायित्व है।

निर्देशन कार्यों के विशेष रूप जूनियर कालेज में प्रस्तुत की जाने वाली बहुत सी निर्देशन सेवाएँ उन से मिलती जुलती होती हैं जो स्कूलों में अन्य शैक्षिक स्तरों पर प्रस्तुत की गई थीं। किन्तु सेवा पर दिये जाने बल में अन्तर हो सकता है। इन अधिकांश दो-वर्षीय स्कूलों में पोषक स्कूलों और चार-वर्षीय स्कूलों में सहयोग, छात्र की क्षमताओं के अध्ययन, जीवन-चर्या के नियोजन और स्नातकों से सम्पर्क बनाये रखने के कार्यों पर बल दिया जा सकता है। जूनियर कालेज अपने विशेष निर्देशन और परामर्श सम्बन्धी उत्तरदायित्वों को पहचान रहे हैं, यह बात उन अधिकाधिक सुसंगठित कार्यक्रमों से स्पष्ट हो रही है जिनका वे विकास कर रहे हैं। उनके द्वारा की जाने वाली कुछ सेवाओं को हम यहाँ प्रस्तुत करेंगे।

माध्यमिक स्कूल से दो-वर्षीय कालेजों का समन्वय हाई स्कूलों और जूनियर कालेजों में कार्यकारी सम्बन्धों को प्रोत्साहन देने के लिये राज्य स्तर पर प्रयत्न किये जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, कोलोरेडो में एक माध्यमिक स्कूल कालेज सम्बन्ध समिति है, जिसकी नियमित बैठक हाई स्कूल से छात्रों की समस्याओं पर विचार करने के लिये होती है; इनमें इस बात पर भी विचार किया जाता है कि हाई स्कूल के अध्ययन के परिणामों का सर्वश्रेष्ठ सम्बन्ध जूनियर कालेजों और उच्चतर अध्ययन की अन्य संस्थाओं से कैसे स्थापित किया जा सकता है। समिति अपने अनुसंधानों की रिपोर्ट माध्यमिक स्कूलों के आचार्यों, राज्य जूनियर कालेज एसोसियेशन के सदस्यों और उच्चतर शिक्षा की अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्रस्तुत करती है।

मिशीगन में सामुदायिक कालेजों सहित ४५ कालेज और १६३ माध्यमिक स्कूल "कालेज समझौता योजना" में सम्मिलित हुए हैं। इसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं : (१) जो माध्यमिक स्कूल इस योजना के सदस्य हैं, उनके स्नातकों को कालेज की पूर्वापेक्षाओं के बिना किसी भी सहयोगी कालेज में प्रवेश की अनुमति देना बशर्ते कि माध्यमिक स्कूल के आचार्य को कोई आपत्ति न हो और ऐसी कार्यशालाओं को प्रतिवर्ष चलाना जहाँ समान समस्याओं पर विचार-विमर्श होता है। इस प्रकार हाई स्कूल के स्नातक अपने आचार्य की सिफारिश पर इस बात पर ध्यान दिये बिना कालेज में भर्ती किये जा सकते हैं कि उन्होंने अपने माध्यमिक स्कूलों में क्या पाठ्य-विधियाँ पढ़ी हैं और आँचलिक प्रदेश में स्कूल की क्या स्थिति है।

कैलिफोर्निया एजुकेशन कोड यह व्यवस्था करता है कि सार्वजनिक जूनियर कालेज का प्रशासक हाई स्कूल के किसी भी ऐसे छात्र को भर्ती कर सकता है जो स्नातक न भी हो किन्तु जिसकी आयु १७ वर्ष हो चुकी है और ऐसा प्रतीत होता हो कि वह उस कालेज के शैक्षिक कार्यक्रम से लाभान्वित हो सकेगा। व्यावहारिक रूप में प्रवेश करने वाले छात्रों को मुख्य अध्ययन के लिए अपने कार्यक्रम का चुनाव करने की अनुमति देकर इस योजना को क्रियान्वित किया जाता है। यदि वह इस

पाठ्यक्रम को लेने की योग्यता प्राप्त नहीं करता तो उसकी तैयारी के लिये उसे आधारभूत कार्य का अध्ययन करना पड़ता है। फिर भी वह जूनियर कालेज के छात्रों की संस्था का एक सदस्य है और ऐसी सदस्यता से सम्बद्ध समस्त अधिकार उसे प्रदान किये जाते हैं।

नवीनीकरण कार्यक्रम टैलर, टैक्सास, जूनियर कालेज में परामर्शकार्य में प्रयुक्त होने वाला "गतिशील व्यवहार" बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ है। उसके क्रम का संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है :

१. बसन्त ऋतु में होने वाले "जीवन चर्या दिवस" के साथ इस कार्यक्रम का प्रथम चरण प्रारम्भ होता है। इस क्षेत्र के समस्त हाई स्कूलों के सिनेटर इसमें आमन्त्रित किये जाते हैं और लगभग १०० प्रतिशत सिनेटर इसमें सम्मिलित होते हैं। वे जल्दी आ जाते हैं, वहाँ छात्रों की सत्कार समिति उनका स्वागत करती है, उन्हें भवन और टी० आई० सी० का कैम्पस दिखाती है। फिर कार्यक्रम प्रारम्भ होता है, कक्षाओं में सम्मेलन चलते हैं, जहाँ विविध प्रमुख क्षेत्रों से महत्त्वपूर्ण वक्ता इन क्षेत्रों के सम्बन्ध में जानकारी देते हैं और फिर प्रश्नोत्तर का घण्टा चलता है। कालेज द्वारा मध्यकालीन भोजन की व्यवस्था होती है, और अपराह्न में अन्य कार्यक्रम होते हैं।

२. "जीवनचर्या दिवस" (Career Day) के पश्चात् ये लोग पृथक्-पृथक् स्कूलों में जाते हैं। वरिष्ठ कक्षा के छात्रों से उनके कालेज के कार्यक्रम के विषयों में परामर्श करने के लिए टी० आई० सी० अंचल के प्रत्येक हाई स्कूल में निकाय के सदस्यों और प्रशासकों के दौरों के लिए कई वर्षों से अनुमति दी हुई है। दौरा करने वाले "काफिलों" में समय-समय पर भिन्न-भिन्न सदस्य होते हैं जिनमें डीन, रजिस्ट्रार और परामर्श समिति के दो-एक सदस्य होते हैं जिनका कार्यक्रम कभी-कभी बहुत व्यस्त होता है। उन्हें परामर्श दिया जाता है कि सीनियर कालेजों के चुनाव में टी० आई० सी० में उनके भविष्य का निर्माण कैसे हो सकता है। पृथक्-पृथक् कार्यक्रम बनाये जाते हैं और उनके प्रश्नों के उत्तर दिये जाते हैं।

३. भावी सदस्यों को यह सुविधा होती है कि वे कालेज में गर्मियों-भर अपना पंजीकरण करा सकते हैं। यहाँ उन्हें पुनः परामर्श दिया जाता है। यदि वे प्रमुख क्षेत्रों के विषय में अपना विचार बदल देते हैं—जैसा कि बहुत से विद्यार्थी करते हैं—तो टी० आई० सी० समाप्त करने के पश्चात् वे जिस वरिष्ठ कालेज में भर्ती होने का विचार करते हैं उसी के अनुसार उनका कार्यक्रम बना दिया जाता है।

४. समस्त नवीन छात्रों के लिये पंजीकरण के तुरन्त पश्चात्—जो साधारणतया सितम्बर का प्रथम सप्ताह होता है—नवीनीकरण सप्ताह मनाया जाता है। पहले एक सभा होती है, पुस्तिकाएँ वितरित की जाती हैं और फिर

कुछ परीक्षाएँ होती हैं। इन परीक्षाओं में अंग्रेजी, संख्या सम्बन्धी योग्यता, मनोवैज्ञानिक अध्ययन का स्वभाव और रवैये आदि सम्मिलित होते हैं। अंग्रेजी में प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थियों को मूल अंग्रेजी (जिसके सप्ताह में ५ घण्टे होते हैं), कालेज की नियमित अंग्रेजी (तीन बार प्रति सप्ताह), अथवा उच्च अंग्रेजी—जिसके प्रति सप्ताह ३ घंटे होते हैं—में प्रविष्ट किया जाता है।

५. ये परीक्षाएँ आस्टिन में मशीनों से ली जाती हैं और शीघ्र ही कालेज को लौटा दी जाती हैं। श्रेणीबद्ध परीक्षाओं की प्राप्ति पर नये प्रविष्ट होने वाले छात्रों को उनके प्रमुख क्षेत्रों के अनुसार २० से २५ छात्रों के समूहों में विभक्त कर दिया जाता है। परीक्षा के अंक मध्यवर्त्ती रेखाओं के अनुसार चलते हैं, प्रथम और तृतीय चौथाई, और परीक्षा-पत्र बाँटे जाते हैं। निकाय के सदस्यों को समस्त सूचनाएँ दी जाती हैं, जिसके बदले में वे छात्रों को विचार-विमर्श के लिए बुलाते हैं। पहले परीक्षा के परिणाम समझाये जाते हैं, विद्यार्थी को उसकी दुर्बलताएँ बताई जाती हैं और इसी आधार पर उन्हें परामर्श दिया जाता है और बताया जाता है कि वे अपने अध्ययन के स्वभाव में कैसे सुधार कर सकते हैं। इसके पश्चात् साधारण शैक्षिक कार्य पर—जो प्रगति कर रहे होते हैं—परामर्श चलता है और कालेज जीवन के समस्त चरणों से उसका तालमेल और भविष्य के लिये उसकी योजनाओं का निर्माण होता हैं।

६. प्रथम नौ सप्ताह की रिपोर्ट बाहर जाने से पूर्व यह सब कुछ होता है और यदि उन प्रथम रिपोर्टों पर छात्रों की श्रेणियाँ नीची रहती हैं, तो आगामी नौ सप्ताह में भी परामर्श-कार्य चलता रहता है।

७. जो छात्र पंजीकरण के पश्चात् अपना क्षेत्र बदल देते हैं और जिन विद्यार्थियों को अन्य कार्यों में और परामर्श की आवश्यकता होती है, उनके लिए परामर्शदाता का कार्यालय अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है।

८. बसन्तकालीन परामर्श का कार्य भी पतझड़ के कार्यक्रम के सदृश होता है। प्रारम्भ करने वाले नवीन छात्रों को अध्ययन के स्वभाव और रवैयों, अंग्रेजी तथा मनोविज्ञान में परीक्षाएँ देनी पड़ती हैं। फिर इन छात्रों को पतझड़कालीन छात्रों की भाँति ही परामर्श दिया जाता है। द्वितीय छमाही के लिये नये छात्रों के पंजीकरण कार्डों का अध्ययन किया जाता है, प्रमुख क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार उन्हें पुनः समूहबद्ध किया जाता है और छात्रों को परामर्श के लिए बुलाया जाता है। परिवर्तन के कारणों की जाँच की जाती है, प्रथम छमाही में असफल होने के कारणों और प्रथम छमाही में उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर विचार किया जाता है।

९. पुराने छात्र भी अपनी समस्याओं पर विचार कर सकते हैं, परन्तु शैक्षिक कार्य से सम्बन्ध रखने वाली अनेक समस्याएँ उस समय सुलझा दी जाती

हैं जब वे बसन्त में स्नातक होने के लिये तैयारी करने के हेतु स्वयं को पंजीकृत कराते हैं। यह सर्वतोमुखी परामर्शकार्य है, और इस सम्मेलन में प्राप्त होने वाली सूचना से छात्र और निकाय के सदस्य दोनों लाभान्वित होते हैं।

१०. नये प्रवेश होने वाले छात्रों की नवीनीकरण पाठ्य-विधि पतझड़ की ऋतु में प्रारम्भ होकर प्रथम छमाही में प्रति सप्ताह एक घण्टा पढ़ाई जाती है। विद्यार्थियों को चार बड़ी कक्षाओं में बाँट दिया जाता है और फिर परामर्शदाता उन्हें प्रशिक्षण देता है। प्रगति की रिपोर्ट समय-समय पर भेजी जाती है और जब उत्तर संदिग्ध प्रतीत होते हैं तो मिलकर विचार-विमर्श किया जाता है।

इस पाठ्य-विधि में निम्नलिखित बातें सम्मिलित होती हैं : टी० जे० सी० का नवीनीकरण, अध्ययन की विधि, पुस्तकालय का उपयोग, व्यवसाय, सुदृढ़ जीवन-दर्शन का विकास, अभिसार-प्रणय-विवाह।

जीवनचर्या-नियोजन जीवनचर्या का नियोजन दोमुखी परियोजना है। छात्र की अभिरुचियों और क्षमताओं के विषय में परामर्शदाता यथासम्भव अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करता है। परामर्शदाता तथा अन्य योग्य व्यक्ति परामर्शपात्र को उसकी रुचि के क्षेत्र में उपलब्ध शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों से अवगत कराते हैं। साक्षात्कारों की श्रृंखला में निर्णय करने के उद्देश्य से विचारों का आदान-प्रदान होता है। दोनों मिलकर योजना बनाते हैं, किन्तु अन्तिम निर्णय विद्यार्थी ही करता है।

काम्पटन कालेज, कैलिफोर्निया में जीवन-चर्या की योजना निर्देशन का एक निश्चित रूप है। काम्पटन कार्यक्रम में से लिये गये निम्नलिखित उद्धरण में इस क्षेत्र में बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श-कार्य की आवश्यकता का स्पष्ट वर्णन किया गया है। व्यावसायिक चुनाव जिन विभिन्न आधारों पर किया जाता है उनको इस सूची में दिया गया है और ये केवल जूनियर कालेज के छात्रों पर ही लागू नहीं होते अपितु अनेक नवयुवकों पर भी लागू होते हैं।

आवश्यकता के समय विद्यार्थी जीवन-चर्या के चुनाव की समस्या पर योजनापूर्वक और बुद्धिमता से विचार करता है। अधिकांश मामलों में छात्र अव्यवस्थित ढंग से ऊपरी तौर पर चुनाव कर लेता है। चूँकि परामर्शदाता का लक्ष्य निर्देशन के आधार के रूप में उन कारणों की खोज करना है अतएव अनुपयुक्त चुनावों के कुछ सामान्य कारणों की समीक्षा करना सहायक हो सकता है।

(क) अभिभावकों की दमित आकांक्षा

अभिभावक—विशेषतः जो स्वयं को समझते हैं—बहुधा अपने लड़के-लड़कियों के लिए श्रेष्ठ वस्तुओं की कामना करते हैं। श्रमिक लोग बहुधा चाहते हैं कि उनके बच्चे बाबू बनें और बाबू लोग अपने बच्चों को किसी धन्धे में लगा देखना चाहते हैं।

(ख) पारिवारिक परम्परा

कुछ परिवारों के बच्चों को उसी धन्धे में लगे रहने के लिए विवश किया जाता है जो उनके पूर्वज पीढ़ियों से करते चले आ रहे हैं।

(ग) तड़क-भड़क

स्पष्ट है कि बहुत से मामलों में विद्यार्थी किसी धन्धे के कार्य से आर्कषित न होकर उसकी बाहरी तड़क-भड़क से आर्कषित हो जाता है जो वह यदा-कदा देखता है, जैसे डाक्टर अपनी मोटरगाड़ी में घूमते हैं, सफल अभिनेत्रियाँ विलासिता में रहती हैं, वायुयान के इंजीनियर का जीवन घटनापूर्ण होता है इत्यादि।

(घ) धन-प्राप्ति के सरल नुस्खे

धन और शक्ति संचय करने के लिये नवयुवक किसी द्रुतगामी मार्ग को पाने की आशा करेंगे जिससे उन्हें मनोनुकूल वस्तुओं का उपभोग करने, अपने अधिकार में रखने और मनचाहा कार्य करने का अवसर मिल सके। अब जबकि ऐसे बहुत-से पद उपलब्ध होते हैं जिन पर अच्छा वेतन मिलता है तो यह स्वाभाविक है कि विद्यार्थी ऐसा ही कार्य करना चाहेंगे जिसमें धन सरलता से और खूब मिल सके और वे इस बात को भूल जायेंगे कि उन्नति, व्यक्तिगत चुनौती, सुरक्षा और आत्म-सम्मान की दृष्टि से ये पद सीमित होते हैं।

(ङ) व्यक्तित्व का प्रभाव

जो विद्यार्थी किसी विशेष अध्यापक और विषय की सराहना करता है तथा कार्य भी समुचित रूप से करता है, उसके किसी विशिष्ट क्षेत्र की ओर अनजाने ही आर्कषित हो जाने की सम्भावना है; इसका कारण उसकी अपनी योग्यता की प्रकृति न होकर अध्यापक का व्यक्तित्व होता है। इसी प्रकार जो नवयुवक किसी ऐसे व्यक्ति का मित्र है जिसने किसी क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है अथवा उसकी तैयारी कर रहा है तो वह उसका अन्धानुकरण कर सकता है।

(च) भ्रामक सफलताएँ

स्कूल के समाचार-पत्र के संवाददाता के रूप में शीघ्र मिलने वाली सफलता वरिष्ठ नाटक में मुख्य भूमिका और नवीन छात्रों का अध्यक्ष-पद प्राप्त हो जाने पर विद्यार्थियों को ऐसा प्रतीत होता है कि वे क्रमशः पत्रकारिता, नाटक और राजनीति में सरलता से सफलता प्राप्त कर लेंगे।

ये विचारशैली के कुछ थोड़े से विशिष्ट रूप हैं जिनके आधार पर व्यवसायों का चुनाव किया जाता है। परामर्शदाता के लिये सर्वाधिक उचित यह होगा कि वह बताये गये लक्ष्य को केवल प्रारम्भिक बिन्दु मानकर विद्यार्थियों को किसी नौकरी की अपेक्षाओं का अध्ययन करने, उसकी अपनी योग्यताओं से उसकी तुलना करने

और सम्बन्धित क्षेत्र में सफल धन्धे की तैयारी करने में सहायता दे। यद्यपि परामर्शदाता किसी निश्चित व्यवसाय का चुनाव नहीं कर सकता, फिर भी उसे यह प्रयत्न करना चाहिए कि वह विद्यार्थी को उस क्षेत्र से दूर रखे जिसमें वह निश्चित रूप से अयोग्य है अथवा अपनी क्षमताओं के कारण वह उनके दायित्वों को निभाने में असमर्थ है।

परामर्शदाता के कर्त्तव्य जूनियर कालेज के परामर्शदाता के कार्य अनेक और भिन्न-भिन्न होते हैं। हमने इस अध्याय में कुछ की चर्चा की है। व्यक्तिगत और सामूहिक रूपों में परामर्शदाता के जो कर्त्तव्य हैं, उनका सुन्दर सारांश बाल्टीमोर, मेरीलैंड, जूनियर कालेज की सूची में दिया गया है।

सामूहिक मुलाकातें

१. पंजीकरण के लिये प्रवेश करने वाले छात्रों से
२. निर्धारित कक्षाओं में नये छात्रों से उनके नवीनीकरण के लिये
३. जूनियर कालेज में जाने में रुचि रखने वाले हाई स्कूल के छात्रों के समूहों से
४. बाल्टीमोर जूनियर कालेज में अवसर प्रदान करने की दृष्टि से हाई स्कूल के वरिष्ठ से
५. शैक्षिक और व्यवसायिक जानकारी देने के लिये विद्यार्थियों से
६. पंजीकरण कार्य-विधि में निकाय के सदस्यों को शिक्षा देने के लिए उनसे
७. रुचि रखने वाले छात्रों के लिए चार-वर्षीय कालेजों के प्रतिनिधियों से।

साक्षात्कार करता है

१. विद्यार्थियों से निम्नलिखित के विचारार्थ :
    (क) जूनियर कालेज में प्रवेश
    (ख) शैक्षिक और व्यावसायिक योजनाएँ तथा अवसर
    (ग) प्रत्येक भावी स्नातक की स्नातक सम्बन्धी अपेक्षाएँ
    (घ) स्कूली सफलता के संदर्भ में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ
    (ङ) निम्नलिखित के सम्बन्ध में सूचना
        (१) चुनी हुई सेवा
        (२) अवकाश-प्राप्त सैनिक सम्बन्धी नियम
        (३) कालेज स्थानान्तरण
    (च) व्यक्तिगत समस्याएँ
    (छ) अनुसूची-निर्माण और अनुसूची में परिवर्तन
    (ज) सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ
    (झ) परीक्षाधीन अथवा शर्त पर होने की दशा में स्थिति
    (ञ) विषय सम्बन्धी कठिनाइयाँ

(ट) परीक्षा के परिणाम और उनके भावार्थ
(ठ) स्कूल से हटाना

२. अभिभावकों से निम्नलिखित विषयों पर
(क) जूनियर कालेज के विषय
(ख) छात्रों की प्रविष्टि
(ग) छात्रों का तालमेल
(घ) छात्र के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक योजनाएँ
(ङ) छात्रों की व्यक्तिगत समस्याएँ

३. निकाय के सदस्यों से :
(क) पाठ्य-सामग्री से भलीभाँति परिचित होने के लिए
(ख) छात्रों की समस्याओं पर विचार करने के लिये
(ग) व्यक्तिशः छात्रों को सूचना देने और उनसे प्राप्त करने के लिए
(घ) पाठ्य-विधियों का निर्माण करने के लिये
(ङ) विषय-क्षेत्र से सम्बन्धित शैक्षिक या व्यावसायिक जानकारी में भाग लेने के लिए

कार्य दिलाना

१. जो विद्यार्थी स्नातक हो चाते हैं या पढ़ाई छोड़ देते हैं, उनको शिक्षा विभाग की नौकरी दिलाऊ सेवा के पास भेजता है
२ स्थानान्तरण के लिये विद्यार्थियों को दूसरे कालेजों में भेजता है

परीक्षा

१. नौकरी सम्बन्धी परीक्षा लेता है : अंग्रेजी, गणित और पठन
२. राष्ट्रीय कालेज की पढ़ाई की परीक्षा लेता है
३. शिक्षा विभाग रुझानके परीक्षा विभाग द्वारा प्रयुक्त रुझान और रुचि परीक्षाएँ लेता है।

आलेख और अनुसन्धान

१. शैक्षिक और व्यावसायिक जानकारी एकत्रित करके फाइल करता है
२. छात्रों के चरित्र सम्बन्धी मूल्यांकनों का वितरण, संग्रह और फाइल करता है
३. स्नातकों और स्कूल छोड़ देने वालों से सम्पर्क रखता है
४. विद्यार्थियों के संग्रहशील वृत्तों को सम्भाल कर रखता है
५. विशेष परीक्षाओं के परिणामों को लिपिबद्ध करता है
६. विद्यार्थियों के सम्बन्ध में मालिकों तथा अन्य व्यक्तियों को जानकारी देता है
७. स्नातक होने के लिए छात्रों की प्रत्याशिता की जाँच करता है

विविध

१. कालेज के सामान्य नियोजन और कार्य में सहायता देता है
२. विद्यार्थियों के शुल्कों के सम्बन्ध में कोषाध्यक्ष से सहयोग करता है
३. कालेज के मूलभूत दर्शन से परामर्श कार्यक्रम के दर्शन का समन्वय करता है
४. प्रवेश, पाठ्यक्रम के विषयों, शाखाओं आदि के सम्बन्ध में छात्रों, अभिभावकों और अन्य व्यक्तियों से परामर्श करता है
५. वार्षिक सूची-पत्र जारी करता है
६. प्रचार के लिए संवाद तैयार करता है
७. जूनियर कालेज के कार्यक्रम का स्थानीय कालेजों से समन्वय करने के लिये स्थानीय कालेजों में जाता है।*

निर्देशन का कुल कार्यक्रम यद्यपि निर्देशन के विविध क्षेत्रों की वर्तमान कार्यविधियों के उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं, तो भी पाठक कुल कार्यक्रम की समीक्षा से लाभ उठा सकता है। इस उद्देश्य के लिए फिनिक्स, एरीज़ोना जूनियर कालेज में निर्देशन सेवाओं के लिए संगटित योजना का चुनाव किया गया है।

छात्रों का डीन छात्र-कर्मचारियों और निर्देशन सेवाओं के निर्देशन के रूप में कार्य करता है।

सेवा के क्षेत्र इस प्रकार बाँट दिये गये हैं :

१. निर्देशन

(क) परामर्श

(१) एक पूरे समय का परामर्शदाता जो रजिस्ट्रार के कार्यालय में रहता है। कालेज में प्रवेश करते समय छात्रों से सम्पर्क रखा जाता है।

(ख) परीक्षा और नौकरी

(ग) नवीनीकरण।

२. पाठ्य-क्रम सम्बन्धी परामर्श :

(क) निकाय के समस्त सदस्य

३. सह-पाठ्यक्रम की गतिविधियाँ :

(क) वित्तीय सहायता देना

(ख) सेवाएँ और संगठन।

अन्य सेवाओं और क्षेत्रों के साथ कर्मचारी और निर्देशन सेवाओं का समन्वय।

विद्यार्थी के बहुत अधिक अनुपस्थित रहने के सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाओं की जाँच कर्मचारी और निर्देशन कार्यालय द्वारा की जाती है और आवश्यकतानुसार इसके सम्बन्ध में कार्यवाही की जाती है।

* 'The Program of Guidance and Placement''. बाल्टीमोर सार्वजनिक स्कूलों के सौजन्य से।

कालेज का डीन, शिक्षा का डीन, संध्याकालीन कालेज का निर्देशक और निकाय के पाँच सदस्य पाठ्यक्रम समिति के सदस्यों के रूप में कार्य करते हैं। पाठ्यक्रम के समस्त परिवर्तन इस समिति की स्वीकृति पर निर्भर करते हैं।

जिले के मनोवैज्ञानिक के पास भेजे जाने वाले विद्यार्थियों की स्वीकृति छात्रों का डीन देता है। विद्यार्थियों को पठन-क्लिनिक द्वारा जाँच कराने के लिए पाठ्यक्रम के सलाहकार निर्देशन परीक्षा के परिणामों के आधार पर भेजते हैं जो कालेज के समस्त कर्मचारियों और पृथक्-पृथक् छात्रों के लिए उपलब्ध होते हैं।

छात्र के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्त मामलों का स्वास्थ्य-समिति समन्वय करती है। जो अभिभावक कालेज से सम्पर्क करते हैं वे छात्र-कर्मचारी और निर्देशन कार्यालय को भेज दिये जाते हैं।

छात्र संगठनों को चलाने वाले गिर्जाघर और सामुदायिक समूह के लिए छात्र कर्मचारी और निर्देशन कार्यालय सम्पर्क-स्थल होता है।

विद्यार्थियों में रुचि रखने वाले कल्याण अभिकरणों का सम्पर्क छात्र कर्मचारी और निर्देशन कार्यालय से करा दिया जाता है।

राज्य की उच्च शिक्षा संस्थाओं के छात्र कर्मचारियों की अर्द्धवार्षिक बैठक होती है। परीक्षा के समन्वय पर विचार होता है, विद्यार्थियों के स्थानांतरण के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया जाता है, इत्यादि।

फिनिक्स कालेज नगरपालिका द्वारा चलाये जाने वाला जूनियर कालेज है। कालेज अनेक नवीनीकरण कार्यक्रम चलाता है। राज्य के अन्य कालेजों के प्रतिनिधियों से निर्मित एक समिति में इस कालेज का प्रतिनिधि भी सम्मिलित होता है और जिले के प्रत्येक हाई स्कूल में जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हाई स्कूल के वरिष्ठ छात्रों को सामान्यतया कालेज के विषय में जानकारी देना और प्रत्येक कालेज में रुचि रखने वाले छात्रों के निश्चित प्रश्नों का उत्तर देना होता है। इस सम्पर्क के पश्चात् प्रत्येक हाई स्कूल के वरिष्ठ छात्र फिनिक्स कालेज में एक दिन व्यतीत करते हैं जब वे अपनी पसन्द की कक्षाओं में जाते हैं, नवीनीकरण सभा में सम्मिलित होते हैं और स्कैट (SCAT) प्राप्त करते हैं।

पंजीकरण के समय दीक्षा सभा होती है जब कालेज में विद्यार्थियों के सन्तोषजनक तालमेल में सहायता देने के लिये उन्हें जानकारी दी जाती है। कम से कम प्रत्येक छमाही में एक बार दीक्षा-कार्यक्रम होता है जो कक्षा में उपस्थिति, बौद्धिक और आत्मिक विकास से सम्बन्धित मूल्यों का ज्ञान कराता है।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी परामर्श अध्यापकों द्वारा कालेज के पूरे जीवन में दिया जाता है। पंजीकरण के समय प्रत्येक छात्र के साथ पाठ्यक्रम का एक परामर्शदाता संलग्न कर दिया जाता है। यह पाठ्यक्रम-सलाहकार विद्यार्थी के कार्यक्रम में होने वाले परिवर्तनों पर स्वीकृति देता है, सत्र के मध्य की और श्रेणी की अन्तिम सूचनाओं का वितरण करता है और आवश्यकता तथा समय के अनुसार सत्र की अवधि में छात्रों को परामर्श देता है। पाठ्यक्रम-सलाहकार विद्यार्थियों को छात्र-कर्मचारी कार्यालय के

पास या तो छात्र को सहायता लेने के लिए भेज देते हैं या कार्यालय में उनके नाम का उल्लेख कर देते हैं।

कर्मचारी सेवा के समस्त सदस्य निकाय और प्रशासन के प्रतिनिधियों के साथ निर्देशन समिति में कार्य करते हैं। यह समिति नीतियों, कार्यविधियों और समस्त कर्मचारियों तथा निर्देशन कार्यों के समन्वय पर विचार करती है। आवश्यकता होने पर सिफारिश करती है।

फिनिक्स कालेज में पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कार्यों को वित्तीय सहायता एसोसियेटेड स्टुडेंट एक्टिविटी फंड द्वारा दी जाती है, जो विद्यार्थियों से उनके प्रवेश के समय एकत्रित किया जाता है। परामर्शदात्री समिति इस निधि पर नियंत्रण रखती है। परामर्शदात्री समिति में सहायक छात्र अधिकारी, सहायक स्त्री छात्र अधिकारी, सहायक पुरुष छात्र अधिकारी, सात विद्यार्थी आयुक्त, निकाय के पाँच सदस्य, विद्यार्थियों का डीन और स्त्रियों की डीन होते हैं। परामर्शदात्री समिति का यह कर्त्तव्य है कि वह सहायक छात्र निधियों के लिए बजट बनाये। यह कार्यक्रम प्रशासन में छात्रों को सम्मिलित करता है और निधि के वितरण के संदर्भ में कालेज की विविध गतिविधियों के कार्यक्रम का मूल्यांकन अनिवार्य कर देता है।

छात्र कल्याण आयुक्त छात्र निकाय स्वास्थ्य समिति में कार्य करता है जो कालेज के स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम की नीति की सिफारिश और उसे क्रियान्वित करने के लिए उत्तरदायी होती है। स्वास्थ्य के कार्यक्रम और नई नीति की सिफारिश के मूल्यांकन द्वारा मूल्यों की शिक्षा दी जाती है।

फोरम कमेटी द्वारा अनेक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की जाती है। इस समिति का यह लक्ष्य है कि वह वर्तमान अभिरुचि की महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर कार्यक्रम प्रस्तुत करे। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को विवादास्पद प्रश्नों पर सोच-समझ कर विचार करने और यदि मूल्यों की परिभाषा करने में नहीं तो, कम से कम उपस्थित विषय के सम्बन्ध में कुछ सोचने में सहायता देने का प्रयत्न करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क क्लब माडल यूनाइटेड नेशन्स में भाग लेता है और अन्तर्राष्ट्रीय वार्ता को समझने में सहायता देता है।

फिनिक्स कालेज के स्त्रियों और पुरुषों के सामाजिक क्लब, सामाजिक, शैक्षिक और सामुदायिक मूल्यों के सम्बन्धों की शिक्षा देने का यत्न करते हैं। अन्तरभ्रातृ परिषद् भ्रातृत्व के कार्यों का समन्वय करती है और इन्टर-सोरोरिटी कौंसिल भगिनीत्व के कार्यों का तालमेल करती है। विशिष्ट अभिरुचियों की पूर्ण खोज और विकास के विद्यार्थियों को अवसर देने के लिये कालेज द्वारा विशेष अभिरुचि क्लब चलाये जा रहे हैं।

सहायक छात्र और सहायक छात्राएँ अपने सदस्यों के लिए पृथक्-पृथक विशेष रुचियों के कार्यक्रम चलाते हैं। कालेज के समस्त सदस्यों के व्यापक कल्याण के लिये संस्था के मूल्यांकन की शिक्षा देने के प्रयत्न ये कार्यक्रम करते हैं।

आनर बोर्ड (Honour Board) जिसमें श्रेष्ठ ग्यारह छात्राएँ होती हैं और तेरह क्लब (Thirteen Club) जिसमें बारह श्रेष्ठ छात्र होते हैं, उत्तरदायी नेतृत्व और शैक्षिक सफलता का मूल्य सिखाने तथा मित्रतापूर्ण कालेज के समुदाय के निर्माण का प्रयत्न करते हैं।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. ५०,००० नागरिकों/२०,००० नागरिकों के समुदाय के लिए जूनियर कालेज के लाभ बताइये।
२. जूनियर कालेज की कमियाँ बताइये।
३. पिछले आठ वर्ष में जूनियर कालेजों का जो विकास हुआ है उसका अध्ययन कीजिए। आप किन परिणामों पर पहुँचे हैं, बताइये।
४. जूनियर कालेज में पढ़ने पर कौन-सी विशेष समस्याएँ आती हैं?
५. जूनियर कालेज के छात्र की निर्देशन सम्बन्धी समस्याओं की सीनियर स्कूल के छात्र की समस्याओं से तुलना कीजिए।
६. जूनियर कालेज के विद्यार्थी के नवीनीकरण की समस्याओं की तुलना नियमित कालेज के विद्यार्थी का नवीनीकरण की समस्याओं से कीजिए।
७. इस अध्याय में वर्णित जूनियर कालेज के विद्यार्थियों की नवीनीकरण सम्बन्धी समस्याओं का मूल्यांकन कीजिये।
८. जिन जूनियर कालेजों के विषय में आप जानते हैं उनके छात्रों के नवीनीकरण के कार्यक्रम का मूल्यांकन कीजिये।
९. मिशीगन की "कालेज समझौता योजना" के मूल्य पर विचार कीजिये।
१०. जूनियर कालेज में जीवन-चर्या से सम्बन्धित मूल्यों का संकेत कीजिये।
११. बाल्टीमोर, मेरीलैंड के जूनियर कालेज में परामर्शदाता के कर्त्तव्यों का विवेचन कीजिये।
१२. फ़ीनिक्स, एरीज़ोना में प्रदान की जाने वाली निर्देशक सेवाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।

१७ चार-वर्षीय कालेज में निर्देशन

विस्तार और गहनता की दृष्टि से जूनियर कालेज और चार-वर्षीय कालेज के छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं में अन्तर होता है। फिर भी निर्देशन के कुछ रूप अथवा कर्मचारियों की सेवाएँ दोनों प्रकार की संस्थाओं में समान हैं। उदाहरण के लिये, कालेज और विश्वविद्यालय के जीवन के अनुकूल छात्र का नवीनीकरण सारे यूनाइटेड स्टेट्स भर के स्कूलों में निर्देशन कार्य के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। १६२० की प्रारम्भिक दशाब्दि में 'सम्मान पाठ्य-विधियाँ (honour courses) प्रारम्भ कर के उसके शीघ्र ही पश्चात् "नवीन छात्रों का सप्ताह" मना कर बड़े और छोटे दोनों ही कालेज अपने संगठन के ढांचे में निर्देशन कार्यक्रम का समावेश कर रहे हैं। कालेज जाने वाले छात्रों की संख्या में वर्तमान काल में जो वृद्धि हो रही है, उसी के अनुसार उस संगठित निर्देशन की आवश्यकता में वृद्धि हो रही है जिसका लक्ष्य छात्र को कालेज के लिए दीक्षित करना ही नहीं होता अपितु कालेज की समस्त पाठ्य-विधि के साथ उसका तालमेल करना भी होता है। इस अध्याय में उन निर्देशन कार्यों का वर्णन किया गया है जो जनियर कालेजों के निर्देशन कार्यों से भिन्न और उनसे बहुत आगे बढ़े हुए हैं।

उच्चतर शिक्षा के उद्देश्य

उच्चतर शिक्षा संस्था में शिक्षा का उद्देश्य उस लक्ष्य से सम्बन्धित होता है, जिसके लिए उसकी स्थापना की गई है। इस वादविवाद में हमारा सम्बन्ध सामान्य शिक्षा की उन उदार कलाओं के रूप से है जो कालेज या विश्वविद्यालय स्तर पर दी जानी चाहिएँ और उनमें आवश्यक विशिष्टताएँ होनी चाहियें। उच्चतर शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य जिनकी सूची उच्चतर शिक्षा पर राष्ट्रपति आयोग (President's Commission on Higher Education) ने बनाई है, विचारणीय है :

१. मनुष्य के व्यक्तित्व और नागरिक जीवन को नियमित करने के लिए ऐसी आचार-संहिता का विकास करना जिसका आधार उन नैतिक सिद्धान्तों पर है जो जनतंत्रीय विचारों के अनुकूल हैं।
२. अपने समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं को सुलझाने में अभिज्ञ और उत्तरदायी नागरिक के रूप में तत्परता से भाग लेना।
३. संसार के विभिन्न प्रजाजनों की पारस्परिक निर्भरता को जानना और अन्तर्राष्ट्रीय अनुभूति तथा शान्ति के प्रचार में अपने उत्तरदायित्व को समझना।
४. अपने भौतिक वातावरण में निहित समान स्थिति को समझना, नागरिक और व्यक्तिगत दोनों समस्याओं पर वैज्ञानिक रीति से विचार करने का स्वभाव डालना और मानव-कल्याण के लिए होने वाले वैज्ञानिक अनुसंधानों की जानकारी प्राप्त करना।
५. दूसरों के विचारों को समझना और अपने विचारों को प्रभावशाली रीति से व्यक्त करना।
६. संतोषजनक भावात्मक और सामाजिक तालमेल करना।
७. अपने निजी स्वास्थ्य को बनाये रखना तथा उसमें सुधार करना और सामुदायिक स्वास्थ्य समस्याओं को सुलझाने में तत्परता और बुद्धिमत्ता से सहयोग देना।
८. व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभव की अभिव्यक्तियों के रूप में साहित्य, कला, संगीत और अन्य साँस्कृतिक गतिविधियों को समझना तथा उनमें रस लेना और रचनात्मक कार्य के किसी रूप में कुछ सीमा तक भाग लेना।
९. संतोषजनक पारिवारिक जीवन के आधार के रूप में ज्ञान और रवैयों को प्राप्त करना।
१०. सामाजिक रूप से उपयोगी और व्यक्तिगत दृष्टि से संतोषजनक व्यवसाय का चुनाव करना जिस से उसकी विशेष अभिरुचियों और योग्यताओं का पूर्ण उपयोग हो सके।
११. विवेचनात्मक एवं रचनात्मक विचारधारा में निहित निपुणताओं और स्वभावों को अपनाना तथा उनका उपयोग करना।*

कालेज का कर्मचारी कार्यक्रम

निर्देशन या कर्मचारी कार्यक्रम पर कालेज के कर्मचारियों को सक्रिय सहयोग देना चाहिए। विद्यार्थी के लाभार्थ कार्य होना है इसलिए कालेज से सम्बन्धित प्रत्येक

* उच्चतर शिक्षा पर अमेरिकन राष्ट्रपति का आयोग, Higher Education for American Democracy. जिल्द-१, पृष्ठ ५०-५७ हार्पर एण्ड ब्रादर्स, न्यूयार्क १९४९. अनुमति से उद्धृत।

व्यक्ति को इसके कल्याण पर ध्यान देना चाहिए। बड़े कालेज या विश्वविद्यालय में निर्देशन विशेषज्ञ होने चाहिएँ जो विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और संस्था के विशेष शैक्षिक उद्देश्यों के अनुकूल निर्देशन का कार्यक्रम बनाते और उसका संगठन करते हैं। इन विशेषज्ञों के अतिरिक्त निर्देशन में रुचि रखने वाले अध्यापक भी होने चाहिएँ जिन्हें अपने नियमित कार्य के अंग के रूप में निर्देशन के विशेष उत्तरदायित्व सौंपे जा सकते हैं। अन्य समस्त अध्यापकों को भी निर्देशन कार्यक्रम के लक्ष्यों और कार्यों के महत्त्व से परिचित करा देना चाहिये ताकि वे छात्रों का निर्देशन करने में उनकी सहायता और उनके साथ सहयोग कर सकें। इससे छात्र अपने अध्ययन क्षेत्र में निर्देशन के विशेष परिणामों से लाभान्वित होंगे।

निर्देशन के निश्चित क्षेत्र सुविचारित निर्देशन कार्यक्रम को विद्यार्थी की रुचि और कल्याण के प्रत्येक रूप पर ध्यान देना चाहिये। उसके महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य इस प्रकार हैं :

१. भावी छात्रों, उनके अभिभावकों और पोषक माध्यमिक स्कूलों को संस्था के बाह्य रूपों और अवसरों से अवगत कराना।
२. माध्यमिक स्कूलों के सहयोग से छात्रों का चुनाव करना और उन्हें भर्ती करना।
३. जब विद्यार्थी कालेज जीवन के प्रत्येक नवीन चरण में प्रवेश करते हैं तब से उनका निरन्तर नवीनीकरण करना।
४. विद्यार्थियों को अपनी योग्यताओं, प्रवृत्तियों और अभिरुचियों की खोज में सहायता देने के लिए प्रत्यक्ष सेवा प्रदान करना।
५. (अ) विगत सफलताओं, व्यक्तिगत और व्यावसायिक अभिरुचियों और प्रत्यक्ष अनुसंधानों को दृष्टि में रख कर शिक्षा की पाठ्य-विधियों का चुनाव करने, और (ब) लक्ष्यों के निरन्तर स्पष्टीकरण, अध्ययन विधियों, भाषण स्वभाव, व्यक्तिगत सज्जा, आचार आदि में सुधार, और धार्मिक, भावनात्मक व सामाजिक विकास में वाँछनीय प्रगति तथा अन्य अ-शैक्षिक और सामूहिक सम्बन्ध द्वारा अधिकतम कुशलता प्राप्त करने में विद्यार्थियों को उनके पूरे कालेज जीवन में सहायता देना।
६. छात्र की शैक्षिक सफलता और व्यक्तित्व के विकास के हित में उसके परिवार का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना।
७. समुचित उपचारात्मक उपायों की व्यवस्था, छात्र के स्वास्थ्य के निरीक्षण और स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाले वातावरण के नियंत्रण के साथ-साथ विद्यार्थी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति का निश्चय करना।
८. पर्याप्त खाद्य सेवा का निरीक्षण करना।
९. विद्यार्थी के सामाजिक जीवन और पाठ्यक्रम के बाहर की गतिविधियों

का निरीक्षण, मूल्यांकन और विकास करना तथा विद्यार्थी के इन विविध अंगों का पाठ्यक्रम के विषयों के साथ समन्वय करना।

१०. विद्यार्थियों के वित्तीय साधन और अंशकालीन नौकरी में तालमेल रखना और जो विद्यार्थी इस प्रकार की सहायता चाहता हो उसे सहायता देना।
११. प्रत्येक छात्र के विषय में जानकारी का संग्रहशील वृत्त रखना और समुचित व्यक्तियों के लिए उसे उपलब्ध करना।
१२. छात्रों में अनुशासन रखना ताकि व्यक्ति को शक्ति प्राप्त हो सके और सारे कालेज के कल्याण में वृद्धि हो सके और यह कार्य निरन्तर चलता रह सके।
१३. छात्रों के स्तरों के ज्ञान, मूल्यांकन और विकास के द्वारा कालेज में मनोबल का प्रसार करना और उसे बनाये रखना।
१४. जब विद्यार्थी कालेज छोड़ कर जाता है तो उसे समुचित नौकरी प्राप्त करने अथवा व्यावसायिक अध्ययन के अधिक अवसर प्राप्त करने में और कालेज तथा कालेजोत्तर अनुभवों का समन्वय करने में सहायता देना।
१५. समुदाय और शिक्षा संस्था के प्रति भक्ति और सहायता प्राप्त करना।
१६. एक सफल कार्यक्रम में इन समस्त सेवाओं को सम्मिलित करना।
१७. इन कार्यों और सेवाओं के मूल्यांकन तथा सुधार के लिए निर्मित अध्ययन को चलाना।

व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकताएँ किसी कालेज में प्रवेश प्राप्त करने का निर्णय करने से पूर्व विद्यार्थी यह निश्चय करना चाहता है कि कालेज के कार्य के प्रति उसमें रुझान है या नहीं; कौन-सा कालेज उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुकूल है; उस कालेज की योजना और कार्यक्रम के अनुकूल होने की उसकी संभावना; और यदि उसे अपनी पसंद के कालेज में प्रवेश न मिले तो वह क्या कर सकता है। उसे अपनी अभिरुचियों और योग्यताओं तथा अपने सामाजिक, भौतिक और वित्तीय लेने-पावने के मूल्यांकन में सहायता देने के लिए कुशल परामर्शदाता की सहायता की आवश्यकता होती है। उसकी रुचि के कालेज के लक्ष्यों और उद्देश्यों का स्पष्ट विवरण उसे उपलब्ध करना चाहिए ताकि वह जान सके कि वह कालेज उसे वांछनीय प्रशिक्षण दे सकेगा अथवा नहीं। उसे उस कालेज के छात्र-संगठन, उसकी परम्पराओं तथा रिवाजों के विषय में भी कुछ जानकानी होनी चाहिए ताकि वह उस संस्था के सामाजिक जीवन में खप सकने की तैयारी कर सके। यदि उसे चुने हुए कालेज में प्रवेश प्राप्त नहीं होता तो उसे समान उद्देश्य वाले ऐसे दूसरे कालेज की खोज करने में सहायता उपलब्ध होनी चाहिए, जिसमें वह भर्ती होकर अपना अध्ययन जारी रख सके अथवा कनिष्ठ सामुदायिक कालेज में प्रवेश प्राप्त करने के लिए उसे प्रोत्साहन देना चाहिए।

कालेज में प्रवेश प्राप्त कर लेने से ही निर्णय करने सम्बन्धी समस्त समस्याओं का समाधान नहीं हो जाता। किन्तु यदि कालेज जीवन के अनेक रूपों को समझने

की दिशा में छात्र का निर्देशन किया जाय तो परामर्शदाताओं से न्यूनतम सहायता मिलने पर भी अपना निर्णय कर सकता है। सावधानी से बनाये गये समूह-निर्देशन कार्यक्रम और उसकी परिवर्तनशील व्यक्तिगत अभिरुचियों पर ध्यान रखकर उसके चुनाव में समुचित परिवर्तन करके उसके बाद के तालमेल को बिठाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उन उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने के लिए की जाने वाली तैयारी में सहायता शीघ्र दी जानी चाहिए जो या तो उसके अपने निजी व्यक्तित्व में उत्पन्न होती हैं या उस शैक्षिक अथवा सामाजिक स्थिति से उत्पन्न होती हैं जिनमें कि वह स्वयं को पाता है।

निकाय के परामर्शदाता निकाय का प्रत्येक सदस्य विद्यार्थियों के निर्देशन में योग दे सकता है। किन्तु यह नहीं समझ लेना चाहिए कि प्रत्येक अध्यापक परामर्शदाता होता है अथवा विद्यार्थियों को अधिकाधिक आत्मबोध प्राप्त करने की दिशा में सहायता देने के लिए उसे प्रशिक्षित किया जा सकता है। कुछ अध्यापक उनके पंजीकरण के समय सामान्य सहायता प्रदान कर सकते हैं अथवा अपने विशेष क्षेत्र में उपयोगी जानकारी दे सकते हैं। और कुछ अध्यापक अपने प्रशिक्षण, स्वभाव और रुचि के कारण विद्यार्थियों को उनकी समन्वय सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में सहायक हो सकते हैं।

कुछ प्रकार का—औपचारिक या अनौपचारिक—निर्देशन समस्त कालेजों में चलता है। स्टेटसन विश्वविद्यालय, फ्लोरिडा जैसे कुछ कालेजों में निर्देशन कार्यक्रम में भाग लेने वाले समस्त व्यक्तियों के लिये एक निश्चित दर्शन का संगठन किया जाता है। स्टेटसन विश्वविद्यालय के परामर्श के कार्यक्रम में केवल निकाय के सदस्यों और विशेषज्ञों की ही सेवाएँ सम्मिलित नहीं होतीं अपितु चुने हुए विद्यार्थी भी नवागंतुकों को कालेज जीवन में दीक्षित होने में सहायता देते हैं :

> स्टेटसन में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए निकाय का एक परामर्शदाता होता है—निकाय का ऐसा सदस्य जो विद्यार्थी को अपने शैक्षिक कार्यक्रम, व्यावसायिक चुनाव और अन्य व्यक्तिगत योजनाओं के सम्बन्ध में गम्भीर निर्णय करने में सहायता देने के लिए चुना गया हो। अधिकांश मामलों में परामर्शदाता शिक्षा के उस विषय का अध्यापक होता है जिसमें छात्र विशेषता प्राप्त करना चाहता है।
>
> नये प्रविष्ट होने वाले छात्र को नवीनीकरण कार्यक्रम में भाग लेने के कारण कालेज में प्रारम्भ के कुछ समूहों में ही अपने परामर्शदाता से परिचित होने के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। अपनी स्वयं की रुचियों, रुझानों और योग्यताओं के सम्बन्ध में परीक्षाओं और व्यक्तिगत मुलाकातों के माध्यम से वह और अधिक ज्ञान प्राप्त करता है। पढ़कर और अधिक वार्तालाप करके वह शैक्षिक अपेक्षाओं और व्यावसायिक अवसरों के विषय में जानकारी प्राप्त करता है। उच्चतर श्रेणी के स्तर पर भी वह अपने सलाहकार को उपयोगी ही पाता है। प्रत्येक सत्र में उसका शैक्षिक कार्यक्रम बनाने में परार्शदाता सहायता देता है, जब किसी पाठ्य-विधि में विद्यार्थी को कोई कठिनाई होती है तो वह उपयोगी

सुझाव देता है और आवश्यकता के समय हार्दिक मित्र के रूप में उसकी सहायता करता है।

निर्देशन कार्यालय परामर्श-प्रणाली का तालमेल करता है जो सलाहकार को ऐसा कार्य सौंपने का प्रयत्न करता है जो विद्यार्थी और सलाहकार दोनों के लिए संतोषप्रद है। इस कार्यालय को मनोवैज्ञानिक परीक्षण, पठन और अध्ययन में उपचारात्मक कार्य तथा व्यक्तिगत परामर्श देने की सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। पुरुषों के डीन, स्त्रियों के डीन और अन्य प्रशासन-अधिकारी विद्यार्थियों को सहायता देते हैं जो परामर्शदात्री प्रणाली की पूरक होती है।

प्रत्येक बसन्त ऋतु में पुरुषों के डीन और स्त्रियों के डीन ऐसे छात्रों के समूह चुन लेते हैं जो आगामी पतझड़ ऋतु में नवागंतुक छात्रों के परार्शदाता का कार्य करते हैं। इन विद्यार्थियों का चुनाव उनकी उच्च शिक्षा के औसत या कार्यक्रम से बाहर की बहुत-सी गतिविधियों में भाग लेने के कारण नहीं होता, अपितु कालेज जीवन के समस्त चरणों को प्रस्तुत करने की उनकी योग्यता और इससे भी बढ़कर प्रत्येक नये छात्र को यथाशीघ्र स्टेटसन परिवार का सदस्य बन जाने में सहायता देने पर होता है।

नये छात्र से परामर्शदाता ग्रीष्म ऋतु में पत्र-व्यवहार के द्वारा अपना सम्पर्क प्रारम्भ क ता है और इस प्रकार का सम्पर्क परामर्शदाताओं और परामर्श-पात्र दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। छात्र परामर्शदाताओं के कार्य का समन्वय छात्रों की नवीनीकरण समिति के सदस्यों द्वारा होता है। यह समिति नवीनीकरण सप्ताह की गतिविधियों की योजना बनाने में सहायता देती है। प्रत्येक परामर्शदाता का यह आनन्दपूर्ण कर्त्तव्य होता है कि जब तक नवीन छात्र कालेज जीवन में भलीभाँति न जम जायं, समूह में अपना स्थान न बना लें और सामाजिक तथा मानसिक रूप से कालेज के जीवन के साथ समन्वय न कर लें, तब तक अपने परामर्श पात्र के साथ रहे।

निर्देशन कार्यक्रम का संगठन कालेज जीवन के ऐसे बहुत-से रूप होते हैं जिन्हें निकाय समितियों द्वारा सम्भाला जा सकता है; इन समितियों में छात्र-संगठन का भी उचित प्रतिनिधित्व होता है। समिति के आकार और लक्ष्यों के अनुसार समिति के छात्र-सदस्यों की संख्या भिन्न-भिन्न होती है। प्रत्येक समिति में कम से कम एक छात्र सदस्य होना चाहिए किन्तु किसी भी समिति में विद्यार्थियों की संख्या निकाय के सदस्यों से अधिक नहीं होनी चाहिए। बहुत-से शैक्षिक नेता इस पक्ष में नहीं हैं कि विद्यार्थियों को समिति में मताधिकार दिया जाय क्योंकि वे अपने निर्णय का कानूनी उत्तरदायित्व वहन नहीं कर सकते। ऐसे मामलों में निर्णय करने का उत्तरयित्व निकाय का है जिसका सम्बन्ध सम्पूर्ण स्कूल के कल्याण से है। अतएव विद्यार्थियों को इन समितियों में केवल परामर्शदाता के रूप में लेना चाहिए।

आगे चित्र २२ में जिस योजना का सुझाव दिया गया है वह बड़े कालेजों में प्रयोग के लिए है, किन्तु छोटे कालेज की सुविधाओं के लिए भी उसका प्रयोग किया

चित्र २२. कालेज में निर्देशन सेवा के संगठन की योजना
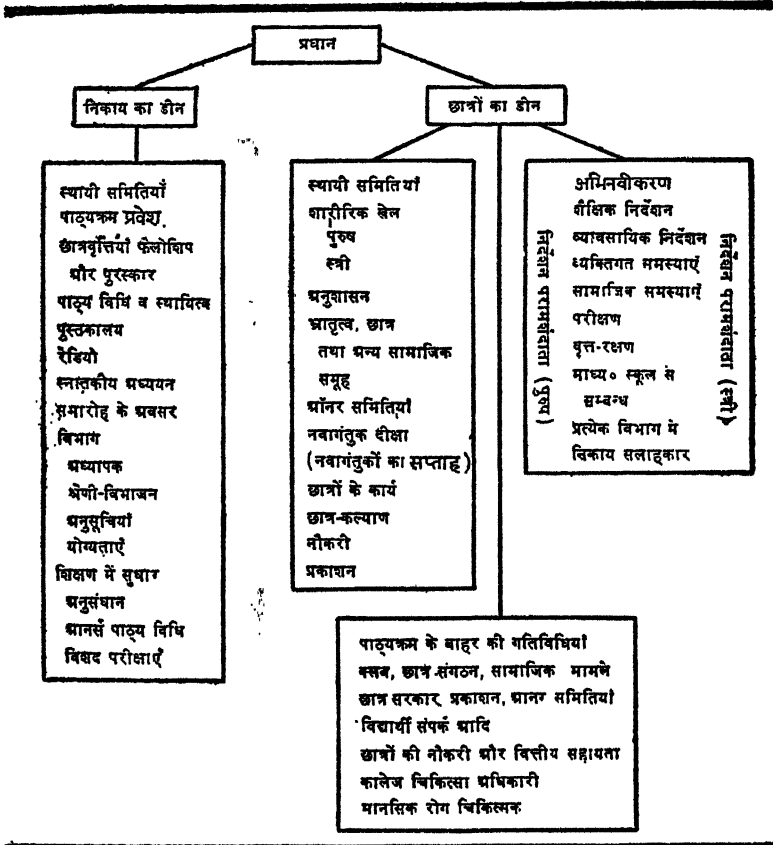
जा सकता है। किसी भी निर्देशन कार्यक्रम के लिए स्थायी समिति की स्थापना अनिवार्य है। छात्रों के डीन के निरीक्षण में निर्देशन विभाग द्वारा की जाने वाली अन्य विशेष सेवाएँ किसी भी ऐसी संस्था के लिए उपयोगी हैं जिसमें सह-शिक्षा दी जाती हो। छोटे कालेजों में निकाय के डीन के निर्देशन के आधीन सारे कार्यक्रम का संगठन करना वांछनीय हो सकता है। किसी भी रूप में सेवाओं का संगठन किया जाय, किन्तु इस सूची में सम्मिलित की गई किसी भी सेवा का बहिष्कार नहीं करना चाहिए।

नवीनीकरण कार्यक्रम

भूतकाल में, बहुत से कालेज बैठे रह कर ऐसे छात्रों की प्रतीक्षा करना पसंद करते थे जो उनके यहाँ भर्ती होना चाहते हों। कालेज के प्रशासक न तो हाई स्कूल

के छात्रों को अपने कालेज की ओर आकर्षित करने में रुचि लेते थे और न इन छात्रों के कालेज में आने पर उनके नवीनीकरण पर ध्यान देते थे। किन्तु अभी हाल ही कालेजों ने हाई स्कूलों में जाकर छात्रों की भर्ती करना प्रारम्भ कर दिया है ताकि अध्ययन करने के लिए उन्हें प्रोत्साहन मिल सके। जो छात्र माध्यमिक स्तर से आगे अध्ययन करना चाहते हैं, उनकी संख्या में जो आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है, उसका उच्च-तर अध्ययन की संस्थाओं पर भारी प्रभाव पड़ रहा है। जूनियर कालेजों सहित बहुत से कालेजों में उन समस्त छात्रों को भर्ती करने की सुविधाएँ नहीं होतीं, जो उनमें भर्ती होना चाहते हैं। विभिन्न कालेजों और विश्वविद्यालयों के कर्मचारी आवेदन-कर्त्ता छात्रों में से योग्यतम छात्रों को ही भर्ती करने का प्रयत्न करते हैं।

कालेज का चुनाव अभिभावकों और छात्रों ने निरन्तर अध्ययन करने के मूल्य को तो समझ लिया है, किन्तु इससे उनके और कालेजों के सम्मुख नई समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। विद्यार्थी के सामने ऐसे कालेज के चुनाव की समस्या होती है जो उसकी शैक्षिक रुचियों की सर्वाधिक पूर्त्ति करने के साथ-साथ उसे अपने यहाँ भर्ती भी कर सके। बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय करने का उत्तरदायित्व हाई स्कूल के छात्र, उसके अभिभावकों, उसके परामर्शदाता और कालेज के प्रतिनिधि पर है।

कालेज से पूर्व की दीक्षा कालेज के अस्थायी चुनाव के साथ हाई स्कूल के अन्तिम वर्ष में ही कालेज जीवन की दीक्षा प्रारम्भ हो जानी चाहिए, यदि इससे पूर्व यह कार्य प्रारम्भ हो सके तो और भी अच्छा है। किन्तु चूँकि यह नहीं माना जा सकता कि प्रवेश प्राप्त करने वाले समस्त छात्रों को प्रारम्भिक अनुभव होगा, इसलिए समस्त नये छात्रों के लिए कालेज को एक सम्पूर्ण कार्यक्रम बनाना चाहिए। कुछ शैक्षिक नेताओं के लिए यह समझना कठिन हो गया है कि इस प्रकार के दीक्षा कार्य पर लगाई गई शक्ति और समय का सम्बन्धित संस्था और व्यक्ति के लिए मूल्य होता है। उनका विश्वास है कि कालेज के छात्र, नवीन विद्यार्थी या पुराने विद्यार्थी को प्यार से बिगाड़ना नहीं चाहिए ; अब वह इतना बड़ा हो चुका होता है कि वह प्रत्येक बात को स्वयं समझ सके और अपने कालेज जीवन के कार्यक्रम का स्वयं निर्माण कर सके किन्तु बहुत-से कालेज नये छात्रों के नवीनीकरण का पाठ्यक्रम बनाते हैं।

कालेज के कर्मचारी, हाई स्कूल के सहयोग से, इन छात्रों को कालेज जीवन की तैयारी में सहायता देते हैं। इस प्रकार के शैक्षिक परामर्श क्लिनिक का एक मनो-रंजक उदाहरण वह क्लिनिक है जो भविष्य में पंजीकृत होने वाले छात्रों और उनके अभिभावकों के लिए ओकलाहामा राज्य विश्वविद्यालय चलाता है। विश्वविद्यालय में छात्रों की भर्ती से पूर्व जून और जुलाई के महीनों में दो-दिवसीय क्लिनिक सत्र होते हैं। यह कार्यक्रम हाई स्कूल के छात्र की निम्नलिखित बातों की सहायतार्थ बनाया गया है:

कालेज के कार्य में अपनी रुचि बनाये रखने में कालेज के प्रमुख विषयों और सम्बन्धित जीवनचर्याओं के विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करने में

उन अभिरुचियों की खोज के लिए जिनका सम्बन्ध शैक्षिक और व्यावसायिक लक्ष्यों से है

अपने शैक्षिक लक्ष्यों और योजनाओं को क्रियान्वित करने में

कालेज की स्थिति, कालेज की सामान्य अपेक्षाओं, अनुसूचियों और गतिविधियों से परिचित होने में

पतझड़कालीन सत्र की नवीनीकरण की अनेक अपेक्षाओं को समय से पूर्व समाप्त कर लेने में और यदि वह ओकलाहामा राज्य विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने की योजना बनाता है तो पहले से भर्ती होने में

यद्यपि भर्ती होने के लिए क्लिनिक में उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है, तो भी नवीन छात्रों के लिए दो-दिवसीय सत्रों में से एक में भाग लेना लाभदायक समझा जाता है

क्लिनिक में उपस्थित होने वाले छात्रों को उनके हाई स्कूल के लेखन और संक्षिप्त जीवन सम्बन्धी वक्तव्य की एक प्रति अपने साथ लाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है

क्लिनिक का शुल्क ४ डालर है, जिसमें परीक्षण सामग्रियों का मूल्य भी सम्मिलित होता है। विश्वविद्यालय के निवास हॉल में रहने के लिए प्रति व्यक्ति प्रति रात्रि २ डालर लगता है। भोजन का मूल्य औसतन ५० से ७५ सेंट प्रति भोजन है

अभिभावकों को नवयुवकों के साथ जाने के लिए उत्साहित किया जाता है। विश्वविद्यालयों के निवास हॉल में अभिभावकों के रहने की व्यवस्था की जाती है।

कालेज से पूर्व के क्लिनिक, कालेज की अनौपचारिक यात्राएँ, छात्र पुस्तिकाओं तथा अन्य मनोरंजक सामग्री का विवरण, भविष्य में पंजीकृत होने वाले छात्रों के नाम, उच्च श्रेणियों के उन विद्यार्थियों के पत्र जो नवागंतुक छात्रों के सलाहकार नियुक्त हुए हैं, और अन्य उपयोगी पद्धतियाँ कालेज के कर्मचारियों द्वारा अपनाई जाती हैं। इसका उद्देश्य यह है कि नये भर्ती होने वाले विद्यार्थी कालेज में (१) अधिक आत्म-विश्वास, (२) कालेज जीवन से अधिक परिचय, और (३) गंभीर अध्ययन के लिए अधिक प्रेरणा के साथ प्रवेश कर सकें।

विभिन्न कालेजों में कालेज से पूर्व की दीक्षा की परियोजना के लिए प्रयत्न किये गए हैं, जिनमें उन्हें विभिन्न मात्रा में सफलता प्राप्त हुई है। उनकी प्रभविष्णुता विविध बातों पर निर्भर करती है, जैसे; इस परियोजना में भाग लेने वाले कालेज के सदस्यों द्वारा प्रदर्शित रुचि और उत्साह (कुछ विद्यार्थियों के लिए यह एक प्रकार का घरेलू कार्य ही हो सकता है) ; हाई स्कूल के सलाहकारों द्वारा दिया गया सहयोग (एक दर्जन या अधिक कालेजों में प्रवेश की दृष्टि से स्नातकों की तैयारी में सहायता देने में बहुत समय और प्रयत्न की आवश्यकता होती है) ; पंजीकृत होने वाले छात्रों का कालेज के प्रति रवैया विशेषत: जब कि वह उनका सर्वश्रेष्ठ चुनाव न हो ; अभिभावकों द्वारा किये गए निर्देशन कार्यों से संशोधित हो सकता है। जब कि इन बातों का निश्चित प्रभाव होता है, कालेज से पूर्व की दीक्षा का सावधानी से निर्मित कार्य-

क्रम कालेज के अध्ययन की सफल पूर्ति के लिए अपेक्षित लक्ष्यों, रवैयों और कुशलताओं का अच्छा आधारभूत ज्ञान प्राप्त करने में कालेज के भावी छात्रों के लिए पर्याप्त उपयोगी हो सकता है।

नवीन छात्रों की दीक्षा हाई स्कूल के विद्यार्थी को कालेज में प्रवेश के लिए चाहे कितनी ही अच्छी तैयारी कराई गई हो, किन्तु उसकी दीक्षा की प्रक्रिया उस समय तक पूर्ण नहीं हो सकती जब तक कि वह वास्तव में पूर्णतया मैट्रीकुलेट न हो जाय। तब कालेज और मनोरंजन के कार्यों में भाग लेने और कालेज की अपेक्षाओं को निभाने तथा अध्यापकों और सहपाठियों के साथ अपने व्यवहार का उचित नियंत्रण करने के उसके दायित्व में उसे सहायता देनी चाहिए। नई स्थितियों और वातावरणों के अनुकूल स्वयं को सरलता और शीघ्रता से ढालने की क्षमता कालेज में प्रवेश प्राप्त करने वाले नवीन छात्रों में एक-दूसरे से भिन्न होती है।

नवागंतुकों की दीक्षा का विचार जब कालेज के प्रशासकों ने स्वीकार किया तो नये छात्रों के लिए एक तैयारी कराने वाला सत्र प्रारम्भ किया गया जिसे सामान्यतः 'नवागंतुक सप्ताह' कहा जाता है। नियमित कालेज वर्ष प्रारम्भ होने से पूर्व इस सप्ताह में नवीन छात्र एक दूसरे के सम्पर्क में आते थे जिसमें उच्च श्रेणी के छात्र बाधा डालने के लिए उपस्थित नहीं होते थे (केवल छात्र निर्देशक रहते थे), और उन्हें शैक्षिक, व्यक्तिगत, सामाजिक तथा नागरिक निर्देशन प्रदान किया जाता था। कालेज भवन के ढाँचे, विशेष कमरों, विभागीय कार्यालयों और छात्र के विविध संगठनों से परिचित होने के लिए वे घूम फिर कर कालेज भवन का चक्कर लगाते थे। लेक्चर हॉल के सत्रों में उन्हें पाठ्यक्रम के विषयों, विषय सूचियों और कालेज के नियम-उपनियमों का बोध कराया जाता था। इस कालेज के छात्र संगठनों और पाठ्यक्रम के बाहर की गतिविधियों में दीक्षा देने के लिए वे छोटे-छोटे समूहों में भी एकत्रित किये जाते थे।

इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि कालेज में भर्ती होने वाले छात्र को कालेज जीवन के विभिन्न रूपों से परिचित कराना आवश्यक है। किन्तु सप्ताह भर तक प्रतिदिन उस पर सूचनाओं और निर्देशों की बौछार करने से संभव है, वह चकित और भयभीत हो जाय। कुछ कालेजों ने 'नवागंतुक सप्ताह' का परित्याग करके अधिक शनैः-शनैः कालेज की गतिविधियों से उन्हें परिचित कराने की नीति को अपनाया है। ऐसी संस्थाओं में नवीन छात्र एक निश्चित सलाहकार से प्रारम्भिक निर्देशन प्राप्त करता है। फिर कालेज जीवन की दीक्षा उसके परामर्शदाता की सहायता से पूरी छमाही तक चलती रहती है। रौलिन्स कालेज, फ्लोरिडा के दीक्षा कार्यक्रम में दोनों विधियाँ सम्मिलित हैं :

> ऊँची श्रेणियों के विद्यार्थियों के प्रभाव से बचकर परस्पर और अपने छात्र तथा निकाय परामर्शदाताओं से परिचित होने के लिए नये छात्र कालेज में जल्दी आ जाते हैं। इस दीक्षा-काल में वे अनेक परीक्षाएँ देते हैं जिनके परिणाम बाद में निर्देशन में लाभदायक होते हैं। एक निकाय-परामर्शदाता के निर्देशन में प्रत्येक

छात्र अपनी अभिरुचि और प्रमुख विषयों के संतुलन को ध्यान में रखकर अध्ययन का प्रारम्भिक कार्यक्रम बनाता है। वे विषय हैं : प्राकृतिक विज्ञान, मानव-विज्ञान और सामाजिक विज्ञान। परामर्शदाता अपने छात्र से बार-बार विचार-विमर्श करके उसे अधिकाधिक उत्तरदायित्व संभालने के लिए प्रोत्साहन देता है।

यह मानी हुई बात है कि कुछ विद्यार्थी उनकी सलाह खूब मानते हैं जिनकी वे प्रशंसा करते हैं। दूसरे शब्दों में, विद्यार्थी बहुधा अपना सलाहकार स्वयं चुनना पसंद करते हैं। इस प्रक्रिया में उसकी सहायता देने के लिए, उसे किसी सलाह-कार को सौंपने से पूर्व विद्यार्थी के वृत्त का सावधानी से अध्ययन किया जाता है। चूंकि परामर्शदाता विद्यार्थी के अध्ययन की पाठ्य-विधि पर केवल प्रारंभिक स्वीकृति ही नहीं देता अपितु उससे यह आशा की जाती है कि वह कालेज की पाठ्य-विधि और जीवन की योजनाओं से भी सम्बन्धित सब प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देगा, इसलिए परामर्शदाता या परामर्शपात्र के अनुरोध पर डीन वांछनीय होने पर परामर्शदाता में परिवर्तन कर देता है। जहाँ कहीं संभव होता है विद्यार्थी उस अध्यापक को परामर्शदाता के रूप में प्राप्त करता है, जिसकी कक्षा में वह पंजीकृत होता है।

नवागंतुक छात्र प्रति सप्ताह एक बार मिलकर प्रथम सत्र में अपना नवीनी-करण जारी रखते हैं। इन बैठकों में छात्र-सरकार, प्रकाशन, समाजों, विद्यार्थियों के चुनावों, कालेज का इतिहास, उदार शिक्षा का आज महत्त्व, अध्ययन-विधि और नवीन छात्रों से सम्बन्धित अन्य विषयों पर विचार किया जाता है। नवीन-छात्रों की कक्षा की बैठक मास में एक बार होती है।

जैसा कि रौलिन्स कालेज के नवीनीकरण कार्यक्रम में वर्णन किया गया है नवागंतुक के सलाहकार का व्यक्तित्व अत्यन्त महत्त्व रखता है। परामर्शदाता और परामर्शपात्र के मध्य अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, साक्षात्कारों का निर्धारण तथा अन्य सम्मिलित कार्य लचीले होने चाहिएँ। अन्य परामर्श कार्यों की भाँति नवीनीकरण प्रक्रिया की प्रभविष्णुता भी आंशिक रूप से परामर्शदाता की इस योग्यता पर निर्भर करती है कि वह नवयुवक की रुचियों, योग्य-ताओं, प्रवृत्तियों और घरेलू तथा सामाजिक पृष्ठभूमियों का ज्ञान प्राप्त कर ले और साथ ही विद्यार्थी को यह आभास भी न हो कि वह उसके व्यक्तिगत जीवन में हस्त-क्षेप कर रहा है। मिलर्स विले टीचर्स कालेज, पेनसिल्वानिया में नवीन छात्रों के परामर्श-दाताओं के उपयोग के लिए निर्मित आत्म-मूल्यांकन सूची में वे प्रश्न सम्मिलित होते हैं, जिनका उत्तर यदि ईमानदारी से दिया जाय तो वे समस्त परामर्शदाताओं के लिए मूल्यवान सिद्ध होंगे।

नवीन छात्रों के परामर्शदाताओं के लिए आत्म-मूल्यांकन सूची

निम्नलिखित प्रश्न नवीन छात्र के परामर्शदाता के कर्त्तव्य ही नहीं बताते अपितु वे इस बात की जाँच-सूची का भी कार्य करते हैं कि कौन से महत्त्वपूर्ण कार्यों की हमने उपेक्षा कर दी है।

चूँकि प्रत्येक परामर्श कार्य अद्वितीय होता है, इसलिए यहाँ सुझाई गई विधि से उसमें पर्याप्त अंतर हो सकता है। हममें से कुछ लोग यह पसंद कर सकते हैं कि प्रथम नौ मास या छमाही में परामर्शपात्र के साथ कड़ाई हो और फिर धीरे-धीरे सम्बन्धों में शिथिलता आने दी जाय, जब कि दूसरे लोगों का मत है कि प्रारम्भ में सम्बन्ध शिथिल हों किन्तु धीरे-धीरे उनमें कसाव आना चाहिए।

जब कि हम प्रत्येक विद्यार्थी के लिए एक ऐसे समझदार परामर्शदाता की व्यवस्था कर देते हैं जो छात्र में आवश्यकतानुसार रुचि लेता है तो यह बात विशेष महत्त्व नहीं रखती कि हम परामर्श के सम्बन्धों को किधर से प्रारम्भ करते हैं।

यह आशा की जाती है कि निम्नलिखित प्रश्न अधिक एकरूप विधि को अपनाने में हमारे निर्देशन के लिए आपकी सहायता करेंगे :

हाँ	नहीं	
—	—	हमारे साक्षात्कारों के लिए मैं और परामर्शपात्र किसी एक समय पर एकमत हैं ?
—	—	क्या मैंने उसके साथ परीक्षा के प्राप्तांकों पर विचार किया है ?
—	—	क्या मैंने पाठ्यक्रम पर विचार कर लिया है और यह देखने के लिए कि वह सतोषजनक रीति से आगे बढ़ रहा है या नहीं, मैंने प्रगति की जाँच कर ली है ?
—	—	क्या हमने गुण बिन्दुओं के औसतों पर विचार कर लिया है, डीन की सूची, परीक्षाधीन सूची, उपस्थिति के नियमों आदि के निर्णय पर कैसे पहुँचे ?
—	—	क्या अध्यापक की शिक्षा के अंग के रूप में मैंने सह-पाठ्यक्रम गति-विधियों के मामलों और उनके मूल्यों पर उसका ध्यान दिला दिया है ?
—	—	क्या मैंने परामर्शपात्र को सह-पाठ्यक्रम की ऐसी विविध गतिविधियों की योजना बनाने में सहायता दी है जो उसे बहुमुखी ज्ञान प्रदान कर सकेगी ?
—	—	क्या मैंने उसकी रहन-सहन की स्थिति, कमरे के साथी, समस्याओं आदि के विषय में पूछताछ की है ?
—	—	क्या मैंने उसके नौ सप्ताहों की श्रेणियों का अध्ययन किया है ?
—	—	क्या मैंने अध्ययन-प्रविधियों पर विचार किया है और उसके कार्य के सुधार के लिए सुझाव दिए हैं ?
—	—	यदि वह भेंट के लिए निश्चित किये गये समयों को बहुत अधिक चूक जाता तो क्या मैं उसे स्मरण दिलाता रहता और उसे यह समझाता कि परस्पर निश्चित किए गये समय पर पहुँचना क्यों आवश्यक है ?

हाँ नहीं

— — क्या मैंने प्रत्येक परामर्शपात्र से एक छमाही में चार बार से अधिक भेंट की है ?

— — क्या मैंने पठन, भाषण या श्रवण की समस्याओं को समझ लिया है और उनके सुधार के लिए सम्बन्धित व्यक्ति को उपयुक्त क्लिनिक को भेज दिया है ?

— — क्या मैंने यह निश्चय कर लिया है कि उसे वित्तीय सहायता चाहिए अथवा नौकरी और क्या श्रेणियाँ उसे कार्य करने देंगी अथवा उसे ऋण प्रदान करेंगी ?

— — क्या मैंने यह जानने का प्रयत्न किया है कि वह यहाँ प्रसन्न है या नहीं, और यदि नहीं है तो क्यों नहीं ?

— — यदि परामर्शपात्र के सम्बन्ध में अभिभावक पूछताछ करें तो क्या मैं उसे इतना भली-भाँति समझ गया हूँ कि उचित उत्तर दे सकूँ ?

— — जब जब मैंने उससे बात की है या जब कोई महत्त्वपूर्ण घटना हुई है क्या तब मैंने उसके वृत्त में उसकी प्रविष्टि की है ?

छात्र-पुस्तिका कालेज के छात्रों के साथ रहने से अनुभव हुआ है कि जिन नियम-उपनियमों के पालन की छात्रों से आशा की जाती है उन्हें लिखित रूप दे देना अच्छा है और साथ ही उसे इस बात के लिए भी तैयार रहना चाहिए कि वह इन नियमों की मौखिक रूप से व्यक्तियों तथा समूहों के सम्मुख व्याख्या कर सके। कालेज की सुविधाओं, कर्मचारियों, निकाय के सदस्यों के नामों और वर्तमान नियमों-उपनियमों से सुसम्पादित पुस्तिका के द्वारा नए छात्रों को अवगत करा देना चाहिए। इस पुस्तक में पाठ्यक्रम सम्बन्धी परामर्श सेवाएँ, अध्यापन विभाग और उन कर्मचारियों के नाम भी होने चाहिएँ जिनसे विद्यार्थी अपनी समस्या पर बात कर सकें।

विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति की सामान्य शर्तों, उपस्थिति के नियमों, अपेक्षित परीक्षणों और परीक्षाओं—जैसे स्वास्थ्य-परीक्षण और विशद परीक्षाएँ (यदि कोई हो), पाठ्य-विधि या कालेज को छोड़ने की रीतियों और अंतिम परीक्षाओं में अनुपस्थित रहने के मामलों से परिचित होना चाहिए। उन्हें जानना चाहिए कि सामान्य परामर्श, व्यावसायिक परामर्श, पठन और अध्ययन में सुधार सम्बन्धी सहायता तथा नौकरी दिलाने वाली सेवा जैसी कौन-कौन सी सुविधाएँ उनके लिए उपलब्ध हैं।

यदि छात्र-पुस्तिका में वे अनिवार्य बातें सम्मिलित कर ली जायँ जिनके विषय में विद्यार्थी सामान्यतः प्रश्न किया करते हैं तो वह अत्यन्त उपयोगी हो सकती है। इस सामग्री को सरलता से संगठित करके संक्षेप में और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। यदि कहीं कहीं विनोदात्मक या चलते हुए रूप में किसी विषय की चर्चा कर ली जाय तो उससे छात्रों की रुचि और आकर्षण बढ़ सकते हैं। उदाहरण के लिए बरियन मावर कालेज, पेनसिल्वानिया में छात्रों द्वारा लिखित और प्रकाशित छात्र-पुस्तिका में कुछ नवीनीकरण बड़े सुन्दर ढंग से दिया गया है :

नये छात्रों के लिए संकेत

१. समस्त आवश्यक मुलाकातें निश्चित करें और ठीक समय पर पहुँचें।

२. नवागंतुक सप्ताह में पाठ्यक्रम समिति द्वारा आयोजित चायपान में अवश्य सम्मिलित हों, जहाँ उन उच्च कक्षा के छात्रों द्वारा आपके प्रश्नों के उत्तर दिये जायेंगे जिन्होंने आपकी रुचि की पाठ्य-विधियों का अध्ययन किया है।

३. स्नान-परिधान कालेज देता है किन्तु तैराकी परीक्षण के लिए टोपी लाइये; यह परीक्षण शारीरिक परीक्षा के साथ होता है।

४. यदि आप अपनी साइकिल यहाँ चाहते हैं तो अपने टिकट पर भेजिये। वह आपके हाल में जमा करके रखी जायेगी।

५. अपने साथ बहुत से भरे-पूरे जानवर आदि न लाइये। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि आप एक वर्ष में यहाँ कितने सारे इकट्ठे कर लेंगे।

६. वेतन दिवस के लिए बहुत अधिक ऋण जमा न कर लीजिए। प्रारम्भ में बहुत कुछ मिल जाता है, और ऋण बढ़ता जाता है।

७. जब आप संगीत आदि के टिकट खरीदें यो यह न भूलिये कि शुक्रवार के अपराह्ण ४-०० बजे तक आपकी कक्षाएँ चलती हैं।

८. सुविधा के लिए बरियन मावर को "सदन" और फिलेडलफिया को "नगर" कहा गया है।

९. कालेज केवल कक्षाओं का पुंज ही नहीं है पाठ्यक्रम के बाहर की कम से कम एक गतिविधि अवश्य बनाइये।

सतत प्रक्रिया के रूप में नवीनीकरण श्रेष्ठ मानसिक प्रतिभा, उद्देश्य की गम्भीरता और उनके अच्छे इरादों के बावजूद कालेज के बहुत-से विद्यार्थियों को समय-समय पर कालेज के आदर्शों, लक्ष्यों या उद्देश्यों के सम्बन्ध में और इन स्तरों को बनाये रखने के विद्यार्थियों के उत्तरदायित्व के विषय में स्मरण कराते रहने की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थी को व्यक्तिगत शैक्षिक और सामाजिक लाभ प्राप्त हो सके।

उच्चतर शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य युवकों और युवतियों को नेतृत्व के पदों के योग्य बनाना है। समुचित ज्ञान और कौशल की श्रेष्ठता में पारंगत होना जितना महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत ईमानदारी और आत्मानुशासन का रवैया अपनाने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के पूर्ण व्यक्तित्व, अच्छे चरित्र और सामाजिक रूप से स्वीकृत बर्तावों का विद्यार्थियों में विकास करने के लिए कालेज के निर्देशन कर्मचारी और निकाय के परामर्शदाता विविध विधियों को अपनाते हैं। इनमें से अनेक विधियों का चित्रण विविध कालेजों में किये जाने वाले कार्यों के संदर्भ में होता है।

इस मान्यता के आधार पर कि अन्य अध्ययन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने जैसी व्यक्तिगत क्षमता का श्रेष्ठ विकास समुचित व्यावहारिक स्थितियों में भाग लेकर

किया जा सकता है, कुछ संस्थाओं ने लगभग वैसी ही प्रतिष्ठा प्रणाली (honour system) प्रारम्भ की है जैसी कि रिचमौंड सिश्वविद्यालय, वर्जीनिया में प्रचलित है।

सम्मान प्रणाली

आनर प्रणाली यह अपेक्षा करती है कि मनुष्य विद्यार्थी जीवन के समस्त सम्बन्धों में सम्मानजनक रूप से कार्य करेगा। सम्मान-संहिता (Honour Code) के उल्लंघन में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं: विश्वासघात, हस्ताक्षरित प्रतिज्ञा का उल्लंघन, चोरी, मिथ्या भाषण, सम्मान-संहिता के उल्लंघन की सूचना न देना और मोटे तौर पर किसी भी स्थिति में अपने वचन का पालन न करना।

क्रियान्वयन के नियम

१. परिषद् का संगठन: सम्मान-परिषद् में आठ सदस्य होंगे जो छात्र प्रशासन संघ के अध्यक्ष द्वारा नियुक्त और छात्र सीनेट द्वारा स्वीकृत होंगे। छात्र प्रशासन संघ का अध्यक्ष पदेन सदस्य होगा और परिषद् के किसी भी सदस्य की अनुपस्थिति में उसे मत देने का अधिकार होगा। सचिव इस परिषद् की कार्रवाई एक पुस्तिका में लिखेगा जो सुरक्षित रखी जायेगी।

२. कार्य विधि: (अ) कोई भी व्यक्ति जिसे ऐसे कार्य की जानकारी है अथवा उस कार्य का साक्षी है जो सम्मान-संहिता का उल्लंघन हो, तो वह व्यक्तिगत रूप से उस कार्य के साक्षियों की सूची सहित सम्मान परिषद् के सदस्य या रिचमौंड कालेज के छात्रों के डीन को उस घटना की सूचना चौबीस घंटे के अन्दर—रविवार के अतिरिक्त—देगा। परिषद् का सदस्य या छात्रों का डीन साक्षियों की सूची सहित आरोपों को सम्मान-परिषद् के अध्यक्ष के सम्मुख प्रस्तुत करेगा। जिन व्यक्तियों को जाँच में सम्मिलित होने के लिए विज्ञप्ति भेजी जायेगी, वे जाँच होने तक आरोपों के विवरण को गुप्त रखने के लिये बाध्य होंगे।

(ब) सम्मान परिषद् के समस्त अधिवेशन केवल उन लोगों को छोड़ कर जिनका मामले से सीधा सम्बन्ध है, शेष सब के लिए गुप्त रहेंगे, केवल अभियुक्त की इच्छा पर ही जाँच खुले रूप से हो सकेगी। जबकि मामले की सुनवाई बन्द कमरे में होगी तो उपस्थित लोगों को प्रत्येक विवरण गुप्त रखना होगा, वे केवल उतना ही विवरण किसी को बता सकेंगे जितना कि परिषद् अपनी सरकारी रिपोर्ट में प्रकाशित करेगी। परिषद् की कार्रवाई बन्द कमरे में होगी और गोपनीय रहेगी। सारे मत बैलट द्वारा लिये जायेंगे।

३. दंड: सम्मान-संहिता का उल्लंघन सिद्ध हो जाने पर परिषद् इनमें से एक दण्ड का चुनाव करेगी: (अ) छोटा अपराध—विचाराधीन विषय

में साख की क्षति सम्मिलित करना और भर्त्सना, (ब) मध्यवर्ती अपराध—रिचमौंड विश्वविद्यालय से कम से कम एक छमाही और अधिक से अधिक तीन कालेज वर्षों के लिए मुअत्तिल करना और जिन पाठ्य-विधियों में अपराध करने के समय हो, उनमें से किसी एक या सब में साख की क्षति करना। (स) बड़ा अपराध—रिचमौंड विश्वविद्यालय से पृथक् कर देना और अपराध के समय जिन पाठ्य-विधियों में हो, उन सब में साख की क्षति।

सब मामलों में परिषद् का निर्णय घोषित कर दिया जाएगा किन्तु अभियुक्त का नाम सार्वजनिक रूप से घोषित नहीं किया जायेगा।

परिषद् के समस्त निर्णय क्रियान्वित होने से पूर्व छात्रों के डीन, डीन और अध्यक्ष द्वारा स्वीकार किये जायेंगे।

सामान्य व्याख्या

१. प्रतिज्ञा : एक सज्जन व्यक्ति के रूप में मैं शपथ लेता हूँ, न मैंने किसी को सहायता दी है न प्राप्त की है।

२. प्रतिज्ञा का अर्थ : पहेलियों, परीक्षाओं, लिखित समस्याओं और अभ्यासों पर दिये जाने वाले आश्वासन का अर्थ है कि विद्यार्थी अपने प्रोफेसर को जो रचना दे रहा है वह उसकी अपनी है और जो उसने निकाय द्वारा बनाये गये निम्नलिखित नियमों के अनुसार तैयार की है।

३. सावधानी रखिये : यह भी महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को बुराई की आशंका से बचाने के लिए बहुत अधिक सावधानी से काम ले। बिना किसी को साथ लिए या बार-बार परीक्षा-कक्ष से बाहर जाने या अकेले परीक्षा देने अथवा परीक्षा-कक्ष में पाठ्य-सामग्री और नोटबुक लाने अथवा दूसरे विद्यार्थी के कागज पर असावधानी से देखने को सम्मान परिषद् निरुत्साहित करती है। वे स्वयं तो सम्मान-संहिता का उल्लंघन नहीं करते, परन्तु इस प्रकार के कार्य व्यक्ति और स्वयं सम्मान-प्रणाली के लिए हानिकारक हैं।

समस्त विद्यार्थियों को चाहिए कि वे सम्मान प्रणाली की कार्य-विधि और इन सामान्य सिद्धान्तों से स्वयं को परिचित कराने का निरन्तर प्रयत्न करें।

निम्नतर स्कूलों की भाँति कालेज में विद्यार्थियों को अधिकार है कि वे स्वीकार्य कार्य और व्यवहार से विचलित होने वाले को दिये जाने वाले दण्डों से परिचित हों। अनुशासन के उपायों पर बरती जाने वाली कड़ाई भिन्न-भिन्न कालेजों में भिन्न-भिन्न होती है। यद्यपि कालेजों की सामान्य नीति नवीन छात्रों को जीवन की नई रीति से परिचित होने में अधिक से अधिक सहायता देने की होती है फिर भी उनकी शैक्षिक और अन्य प्रकार की प्रगति पर प्रथम वर्ष में सावधानी से दृष्टि रखी जाती है। जो विद्यार्थी कार्य या आचार के प्रत्याशित स्तर को बनाये रखने मे असमर्थ प्रतीत

होता है उसे पृथक् कर दिया जाता है या परीक्षाधीन रख दिया जाता है। उच्चतर शिक्षा की अन्य बहुत-सी संस्थाओं में प्रचलित कार्य-विधियों का उदाहरण डार्टमाउथ कालेज, न्यू हैम्पशायर की छात्र पुस्तिका में निहित अनुशासन सम्बन्धी निम्नलिखित वक्तव्य से मिलता है :

डार्टमाउथ में अनुशासन

दंड : प्रशासन समिति पृथक्-पृथक् मामले में उसकी परिस्थितियों के अनुसार निश्चय करती है। साधारणतया, पढ़ाई, उपस्थिति या आचार सम्बन्धी असंतोष-जनक मामलों में निम्नलिखित नीति अपनाई जाती है :

चेतावनी : जब विद्यार्थी की पढ़ाई, उपस्थिति या आचार असंतोषजनक होते हैं तो चेतावनी दी जाती है।

अग्राह्यता : पाठ्यक्रम के बाहर की विद्यार्थी की उन गतिविधियों को रोक दिया जाता है जो उसकी शिक्षा में हस्तक्षेप करती हैं। यह सावधानी या दंड के रूप में किया जा सकता है।

परीक्षाधीन : जब कार्य या आचार असंतोषजनक होता है तो विद्यार्थी को परीक्षा के लिए अन्तिम अवधि दी जाती है। परीक्षाधीन छात्र अग्राह्य होता है, यदि डीन द्वारा पहले से अनुमति न दी गई हो तो उसे कक्षा के समस्त निर्धारित अभ्यासों में भाग लेना पड़ता है और वह किसी सभा-सोसाइटी में भाग नहीं ले सकता। परीक्षाधीन रखने का दंड सामान्यतया तीन पाठ्य-विधियों में अनुत्तीर्ण होने पर, सी-अपेक्षाओं को तीन घंटे से अधिक समय तक पूरा न करने पर, तीन चेतावनियों पर, निरंतर दो चेतावनियों पर या गम्भीर दुर्व्यवहार पर दिया जाता है।

मुअत्तिल करना : कालेज में उपस्थित होने से उस समय तक रोक देना जब तक कि निश्चित शर्तें पूरी न हो जायँ। अनुशासन के मामलों में कालेज का डीन या नवीन छात्रों का डीन किसी छात्र को प्रशासन समिति की कार्रवाई होने तक मुअत्तिल कर सकता है।

पृथक्करण : डार्टमाउथ में विद्यार्थी के रूप में पढ़ाई जारी रखने से रोक देना। पृथक्करण का दंड एक छमाही में चार पाठ्य-विधियों में अनुत्तीर्ण होने, विचारा-धीन रहने के पश्चात् चेतावनी मिलने अथवा चेतावनी के पश्चात् विचाराधीन होने और बहुत गम्भीर दुराचरण पर दिया जाता है।

यह आशा की जाती है कि कालेज में बारह वर्ष तक रहने के पश्चात् विद्यार्थी शिष्टता और सहयोग की भावना को अपना लेता है। दुर्भाग्य से कुछ नवयुवक व्यक्तिगत असावधानी, स्वार्थ और दूसरों की उपेक्षा की प्रवृत्ति पर अड़े रहते हैं। "जीवन की कला" में उन्हें निरन्तर निर्देशन की आवश्यकता होती है। क्लार्क कालेज, वाशिंगटन में तथाकथित "कालेज आचार" (Campus Ettiquette) के सम्बन्ध में छात्रों को विस्तृत सुझाव दिये जाते हैं।

कालेज आचार

केवल कक्षा की पढ़ाई से ही कालेज की शिक्षा पूरी नहीं हो जाती। कालेज की वास्तविक शिक्षा का अर्थ है सामाजिक जीवन, सामूहिक स्थिति, सामुदायिक गतिविधि में कुशलता और कक्षा का औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करना। हम यह कहना चाहते हैं कि क्लार्क कालेज विद्यार्थी को जीवन की कला में आत्म-शिक्षण प्राप्त करने के विविध अवसर प्रदान करता है। हम लोग किसी विधान से नहीं अपितु पारस्परिक सहमति से मिलजुल कर रहते हैं। सारे नियम सब के लाभ के लिए बनाये गये हैं।

हम इस बात पर आग्रह करते हैं कि हमारे छात्र पूर्ण सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना के साथ कार्य करें। हमारी धूम्रपान की सुविधाएँ केवल छात्र संघ के भवन, कैफ्टेरिया और अस्थायी रूप से इस कार्य के लिए निर्धारित स्थान तक सीमित हैं। हम अनुभव करते हैं कि हमें राज्य के कानून का पालन करना चाहिए और वह कालेज में मद्यपान करने अथवा जुआ खेलने की अनुमति नहीं देता। हमारा आग्रह है कि जो विद्यार्थी मदिरापान करते हैं, वे हमारी सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित न हों।

हम सार्वजनिक सम्पत्ति का नित्य उपयोग करते हैं किन्तु हम अपने उत्तरदायित्व को बहुधा भूल जाते हैं। कैफ्टेरिया में यह हमारी प्रथा है कि हम खाने के पश्चात् हाथ-मुँह साफ करें, गंदी प्लेटें साफ करने को दे दें और जो व्यक्ति वहाँ हमारी सहायता के लिए हैं, उनके साथ शिष्टता कर व्यवहार करें।

छात्र संघ के भवन में, अपनी कक्षा के कमरों में, और हमारे कैफ्टेरिया में हम सदैव इस विषय में जागरूक रहते हैं कि इस समुदाय में अच्छे नागरिक बनने के लिए हमें सामुदायिक सम्पत्ति और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। कालेज में कक्षाएँ पढ़ाई के लिए होती हैं, गपशप के लिए नहीं। छात्र संघ समय-समय पर बात करने और शान्तिपूर्वक पढ़ाई करने के लिए होते हैं न कि अवांछनीय व्यवहार या अनुचित कार्यों के लिए। कैफ्टेरिया आनन्दपूर्वक जलपान करने के लिये है, न कि खाकर बीमार होने के लिए।

हम चाहते हैं कि क्लार्क कालेज में हमारे छात्र बहुत से ऐसे सामाजिक कार्यों में भाग लें जिनका व्यावहारिक मूल्य होता है और उससे ज्ञान प्राप्त करें। हमारे यहाँ औपचारिक नृत्य, कॉफ़ी के घंटे, दीक्षान्त समारोह, खेल-कूद और सभाएँ होती हैं—जिन सब के लिए कुछ साज-सज्जा और निश्चित रवैये की आवश्यकता होती है। सामाजिक व्यवहार, समुचित परिधान और चाल-ढाल सीखने के लिए औपचारिक नृत्य से अच्छा और कोई स्थान नहीं है। निःसंदेह उस समय हमें पीड़ा होती है, जब हम दम्पति को नृत्य प्राँगण में धूम्रपान के लिए आग्रह करते या बहुत अधिक सटकर चलते देखते हैं।

मनुष्य का अधिकांश व्यवहार किसी न किसी रूप में दूसरों के व्यवहार से सम्बन्धित होता है। हम कैसे कार्य करते हैं, हम क्या पहनते हैं, क्या करते हैं,

उसका कुल मिला कर समूह पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं, अनेक प्रकार से निरन्तर हमारा सार्वजनिक प्रदर्शन होता रहता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हम कालेज के शिष्टाचार पर आगे विचार करेंगे।

भली-भाँति परिधान पहने हुए छात्र की हम सराहना करते हैं। इससे हमारा तात्पर्य बहुमूल्य वस्त्र धारण करने वाले विद्यार्थी से नहीं है। सुरुचिपूर्ण वस्त्र-सज्जा की ही प्रशंसा हम करते हैं। ऐसे वस्त्रों में वे भली-भाँति इस्त्री किये हुए, स्वच्छ वस्त्र होते हैं जिनका चुनाव रंग की एक-लयता को ध्यान में रख कर किया गया हो। ऐसे वस्त्रों में पुरुषों या स्त्रियों के लिए नीली जीन नहीं होती (जब तक कि समयानुसार उसकी आवश्यकता न आ पड़े) और न इनमें अलकों के लच्छे होते हैं, महिलाओं के रेशमी रूमाल से बंधे या पुरुषों की बढ़ी हुई दाढ़ी और बिखरे हुए बालों से आच्छादित होने पर भी नहीं। तो फिर कालेज में पहनने योग्य अच्छा परिधान क्या है ? नित्य पहनने के परिधान मे हमारा सुझाव है कि महिलाएँ स्कर्ट और ब्लाउज या स्वेटर पहनें तथा पुरुष ढीले कपड़े और टाई सहित खेल की कमीज या नियमित कमीज या सुरुचिपूर्ण स्वेटर या जाकिट पहनें। जूतों पर पालिश की हुई हो और अन्य वस्त्र जो भी हों, वे ऋतु के अनुकूल हों।

परिधान से सम्बन्धित कुछ शब्दावली के अर्थों के सम्बन्ध में समस्त कालेजों की निश्चित परम्पराएँ होती हैं। क्लार्क में जब नृत्य के औपचारिक होने की घोषणा की जाती है तो लड़कियाँ औपचारिक गाउन पहनती हैं और पुरुष सूट या कमीज पहनते हैं। अनौपचारिक का अर्थ है कि लड़कियाँ ऊँची एड़ी (heels) के जूते और जाँघिया (hose) तथा अभिसार के वस्त्र पहनें, पुरुष सूट पहनें। क्रीड़ा-नृत्य में लड़कियाँ सूती या अन्य किसी प्रकार का सामयिक फ्रॉक या स्कर्ट और स्वेटर पहनती हैं; तथा पुरुष ढीले वस्त्र (slacks) और जाकिट पहनते हैं। टाई समस्त सामाजिक अवसरों पर पहनी जा सकती है।

हमारे कालेज के अनेक समारोहों में हम समान शिष्टाचार का व्यवहार देखना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, काफी के घंटे में यदि पुरुष किसी खड़ी हुई महिला से बात करते समय खड़ा हो जाता है तो यह समझदारी का लक्षण समझा जाता है। कॉफी के घंटों में हमें यह अच्छा नहीं लगता कि हमारी बारी आने तक हम लाइन बनाकर चुपचाप खड़े रहें। इसकी अपेक्षा यह अच्छा है कि लोगों की बारी आने तक वे आपस में गपशप करते हुए प्रतीक्षा करें। कॉफी के घंटे में जब कार्यक्रम चल रहा हो तो बातचीत करना निःसंदेह अशिष्टता है। यहाँ हम औपचारिक कार्यक्रम का उल्लेख कर रहे हैं, पार्श्व-संगीत का नहीं।

इसी प्रकार दीक्षान्त समारोह में एक प्रत्याशित व्यवहार होता है। कार्य के संचालकों के प्रति पूर्ण शिष्टता का व्यवहार करना चाहिए और उनके कार्य के महत्त्व को उचित स्वीकृति देनी चाहिए। हम उन छात्रों के कार्यों को क्षमा नहीं कर सकते जो कार्यवाही के मध्य में उठ कर चले जाते हैं और न ऐसे छात्रों के

व्यवहार को उचित समझते हैं जो विलम्ब से आते हैं और फिर उपलब्ध स्थानों की खोज करते फिरते हैं।

विद्यार्थियों की पुस्तिका की सीमाएँ इस बात की अनुमति नहीं देतीं कि कालेज के आचार के नियम-उपनियमों पर विस्तार से विचार किया जाय। हमने मानव व्यवहार के कुछ विशिष्ट क्षेत्रों की चर्चा की है और आशा करते हैं कि इनके फलितार्थ से बहुत से अनेक क्षेत्र इनमें सम्मिलित हो जायेंगे। स्पष्ट है कि सामाजिक जीवन के साथ कुछ उत्तरदायित्व सम्बद्ध होते हैं। यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति इन उत्तरदायित्वों में भाग ले और अच्छे सामुदायिक जीवन के आधार का विकास करने में पहल करे। अन्त में, सार रूप में हम कालेज के "करो और न करो" की सूची प्रस्तुत कर रहे हैं।

करो

१. नियमों का पालन करो, वे तुम्हारे लाभ के लिए हैं।
२. गंदी प्लेटें कैफ्टेरिया में साफ करने वाले स्थान पर लौटाओ।
३. कैफ्टेरिया के कर्मचारियों को सहयोग दो।
४. कालेज के विविध सामाजिक समारोहों में भाग लो।
५. स्वच्छ परिधान धारण करो।
६. दूसरों का ध्यान रखो।
७. यदि किसी खड़ी हुई स्त्री से बात करनी हो तो खड़े होकर बात करो।
८. जो तुम्हारे लाभ के लिए कार्य कर रहे हों उनके प्रति विनम्र और विचारवान बनो।

मत करो

१. कालेज में मदिरापान न करो और न जुआ खेलो।
२. ऐसे स्थान पर धूम्रपान न करो जो धूम्रपान के लिए न हो।
३. छात्र संघ के भवन में अनुचित व्यवहार न करो।
४. लड़कियो, अपनी अलकों को पिन डाल कर घुंघराली न बनाओ।
५. लड़को, बढ़ी हुई दाढ़ी और बिखरे बालों से कालेज न आओ।
६. कॉफी की प्रतीक्षा में कॉफी के समय लम्बी लाइन न बनाओ।
७. कार्यक्रम, कॉफी के समय, दीक्षान्त समारोह आदि में बातें न करो।
८. समारोह के मध्य में बाहर न जाओ।

कालेज छात्रों की व्यावसायिक दीक्षा

व्यावसायिक दीक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

१. प्रत्येक छात्र की रुझानों, रुचियों, प्रेरणाओं, रवैयों, सामाजिक परिपक्वता आदि का मूल्यांकन करना।
२. किसी विशिष्ट व्यवसाय में सफलता के लिए आवश्यक प्राविधिक ज्ञान और कुशलता उसके लिए उपलब्ध करना।

३. विद्यार्थी के अध्ययन के फलस्वरूप अभिव्यक्त होने वाले तथ्यों की व्याख्या करना ।
४. विद्यार्थी के साथ मिलकर तथ्यों की समीक्षा करना, उनके अर्थों पर विचार करना और अपना निर्णय करने में उसे सहायता देना ।
५. ऐसे अध्ययन की योजना बनाना जिससे विद्यार्थी सामान्य शिक्षा और उसके निर्वाचित कार्य के लिए अपेक्षित विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कर सके।
६. उसकी सफलता की संभावना का पुनः मूल्यांकन करने में सहायता देने के हेतु समय-समय पर विद्यार्थी से वार्तालाप करना ।
७. उस कार्य पर विद्यार्थी को नियुक्त होने में सहायता देना जो उसके और समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी हो ।

व्यावसायिक नवीनीकरण की पद्धतियाँ बहुत से कालेज वैसे ही व्यवसाय सम्मेलन करते हैं जैसे कि हाई स्कूल स्तर पर किये जाते हैं । दूसरी पद्धति में जिसके लिए एंटियोक कालेज, ओहियो, विख्यात है, अध्ययन और कार्य दोनों मिले-जुले होते हैं । कुछ कालेज-छात्र जो विज्ञान और इंजीनियरिंग जैसे विषयों में प्रमुखता प्राप्त किए होते हैं, स्कूल वर्ष में अध्ययन किए गये पाठ्य-विषय और सिद्धान्त का उपयोग किसी विशेष कार्य पर ग्रीष्मकालीन अवकाश में करते हैं ।

उदार कला के कालेजों में भी विभागीय व्यावसायिक निर्देशन प्रदान किया जाता है । एक कालेज में प्रत्येक विभाग वह परामर्श कार्य जारी रखता है जो कालेज के दूसरे क्षेत्र में चालू किया जा चुका होता है । नवीन छात्रों की दीक्षा और पाठ्यक्रम सम्बन्धी परामर्श इसी प्रकार के कार्य हैं । एक कालेज के दो विभिन्न विभागों में छात्रों को जिस प्रकार का निर्देशन प्राप्त होता है, उसका दिग्दर्शन निम्नलिखित उदाहरणों में कराया गया है :

अ. इतिहास विभाग

उद्देश्य

(क) केवल इतिहास के प्रमुख क्षेत्र में ही नहीं अपितु सरकार, अर्थशास्त्र समाज विज्ञान आदि के विस्तृत ज्ञान में योग देने के लिए भी सुगठित कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्येक सदस्य को सहायता देना ।

(ख) यह खोज करना कि विद्यार्थी किस उद्देश्य को लेकर अध्ययन कर रहा है या स्नातक होने के पश्चात् उसका क्या उद्देश्य है । यह समिति आशा करती है कि वह विद्यार्थी को ऐसी सलाह देगी जिससे विद्यार्थी के अध्ययनोत्तर जीवन में कालेज का कार्य सहायक बन सके । उदाहरण के लिए, समिति ने उच्चतर अध्ययन के लिए अपेक्षित आवश्यक भाषाओं के सम्बन्ध में छात्रों को परामर्श दिया है ।

(ग) विद्यार्थी के समस्त कालेज जीवन में परामर्श देना और उसके प्रमुख कार्य में होने वाली उसकी प्रगति की समय-समय पर जाँच करना ।

(घ) प्रमुख विषय के रूप में इतिहास का चुनाव करने वाले उच्चतर कक्षा के प्रत्येक नवागंतुक को यह निर्देश देना कि आगामी तीन वर्षों के लिए इतिहास और सम्बन्धित क्षेत्रों में संयुक्त कार्यक्रम बनाने के लिए समिति के किसी सदस्य से परामर्श ले।

(ङ) प्रत्येक पुराने छात्र को (जो प्रथम वर्ष से अगली कक्षा में हो) निर्देश देना कि वह कार्य के अपने तात्कालिक कार्यक्रम के लिए प्रत्येक सत्र में विचार-विनिमय करे।

(च) प्रमुख विषय के रूप में इतिहास का चुनाव करने वाले प्रत्येक छात्र के लिए वृत्त प्रणाली निर्धारित करना जिसमें कार्य का आयोजित कार्यक्रम हो और उसमें वे संशोधन हों जो प्रत्येक छमाही में किए जायँ। उपरोक्त योजना और संशोधन की प्रतिलिपि सहित एक कार्ड प्रत्येक छात्र को दे देना चाहिए जिससे उसे अपना कार्यक्रम बनाने में सहायता मिल सके।

ब. शिक्षा का विभाग

१. उद्देश्य : यह विभाग निम्नलिखित के विषय में सूचना देने का कार्य करता है :

(क) इस नगर के शिक्षा बोर्ड के आधीन अध्यापन-कार्य के लिए लाइसेंस की अपेक्षाओं के सम्बन्ध में।

(ख) चूँकि हमारे स्नातक पर्याप्त संख्या में न्यूयार्क नगर की सार्वजनिक स्कूल प्रणाली में अध्यापक बनना चाहते हैं और अंत में बनते हैं। अतएव उन स्तरों के सम्बन्ध में, जिनका उपयोग विविध पदों के लिए अध्यापकों का चुनाव करते समय परीक्षक-परिषद् द्वारा किया जाता है। (इन स्तरों से स्वयं को परिचित रखने और उनके प्रयोग में सहायता देने के लिए यह विभाग एक सरकारी समिति—समन्वय समिति—की अपनी सदस्यता के द्वारा परीक्षक परिषद् के साथ निरन्तर सम्पर्क बनाये रखता है)।

(ग) न्यूयार्क राज्य और पड़ोसी राज्यों में प्रमाणीकरण अपेक्षाओं के सम्बन्ध में।

(घ) स्थानीय स्कूलों में और अन्य बड़े केन्द्रों में विविध प्रमाण-पत्रों के आधीन नियुक्ति के अवसरों के सम्बन्ध में।

(ङ) निजी स्कूलों में नियुक्ति के अवसरों के सम्बन्ध में।

अध्यापन कार्य में नौकरी प्राप्त कराने की संभावनाओं के संदर्भ में उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक साधनों के मूल्यांकन द्वारा भी यह विभाग छात्रों को पृथक्-पृथक् परामर्श देता है।

२. पद्धतियाँ : इस विभाग में कुछ पाठ्य-विधियों का अध्ययन करने वाले समस्त छात्रों के लिए विशेष रूप से निर्मित परिपत्रों द्वारा बहुत सी जानकारी उपलब्ध की जाती है। इस प्रकार संग्रह किए गये तथ्यों को मौखिक व्याख्या के द्वारा समझाया जाता है।

इस सामान्य शिक्षा के पूरक के रूप में वह व्यक्तिगत निर्देशन कार्य है जो विद्यार्थी के व्यावहारिक अध्यापन की समस्त पाठ्य-विधियों का अभिन्न अंग है। ऐसी पाठ्य-विधियों में भर्ती होने वाले छात्रों पर इस विभाग के सदस्यों द्वारा उन स्कूलों में दृष्टि रखी जाती है जिनमें कि वे भेजे जाते हैं। निरीक्षण के पश्चात् सदैव व्यक्तिगत विचार-विनिमय होता है। विचार-विनिमय उन सब मामलों पर होता है जिनका सम्बन्ध अध्यापन के गुणों से होता है। भाषण, रवैया, व्यक्तिगत योग्यता व्यावसायिक कुशलता—इन पर और ऐसे ही अन्य मामलों पर विचार किया जाता है।

कालेज में सामाजिक निर्देशन

विद्यार्थी के विकास और कल्याण के सम्बन्ध में संस्था के जो उत्तरदायित्व हैं, उनमें सामाजिक कुशलता का विकास भी सम्मिलित है। कालेज के अन्य रूपों से अनुभव के इस क्षेत्र पर इसे पृथक् करके विचार नहीं किया जा सकता, क्योंकि निर्देशन का सार उन कार्यों के सम्मिश्रण और एकीकरण में है जो जीवन के समस्त क्षेत्रों में व्याप्त हैं।

उद्देश्य और लक्ष्य राजनैतिक जीवन और सामाजिक संगठन प्राविधिक विकास के पहले नहीं पीछे चलते हैं। आज संसार में अकस्मात् वैज्ञानिक ज्ञान का व्यापक प्रसार हो गया है, किन्तु उस ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग करने के लिए बहुत से क्षेत्रों में अत्यल्प कुशलता दिखाई देती है। एक ओर विज्ञान और आविष्कार के मध्य और दूसरी ओर सामाजिक प्रथाओं तथा व्यवहार के मध्य भारी खाई है; किन्तु आधे से अधिक संसार एक साथ मिलकर चलने की साक्षी देता है। जो बातें मनुष्य को ज्ञात हैं, उनका काफी अधिक उपयोग किया जा सकता है। स्पष्टतः कालेजों और विश्वविद्यालयों को सामाजिक समस्याओं, इन समस्याओं को समझने के लिए स्त्री-पुरुषों के ज्ञान के विकास और इन्हें सुलझाने की कुशलता पर भारी ध्यान देने की आवश्यकता है। सामाजिक कुशलता के लिए दिये जाने वाले निर्देशन का उद्देश्य विद्यार्थियों को निम्नलिखित में सहायता देना है :

१. स्वस्थ भावनात्मक जीवन और उचित रवैये का विकास
२. अच्छे आचार और व्यवहार का विकास।
३. मैत्री और सहकारितापूर्ण व्यवहार।
४. छोटे घनिष्ठ समूहों में भ्रातृत्व की भावना को जन्म देना और उसे बनाए रखना।
५. आर्थिक दृष्टि से समाज का कमाऊ अंग बनना।
६. समुदाय का उत्तरदायी सदस्य बनना।

७. वर्तमान सामाजिक शक्तियों से लिये जाने वाले निर्देशनों के निश्चय में भाग लेना।

सामाजिक योग्यता के विकास का कार्यक्रम कालेज में प्रवेश करते समय औसत छात्र अपनी युवावस्था के उत्तर काल में होता है। इस अवधि में वह साधारणतया चाहता है कि वह उन स्त्री-पुरुषों के संसर्ग में रहे और उनके द्वारा स्वीकृत हो, जो उससे बहुत भिन्न नहीं हैं। कालेज ऐसे व्यक्तियों को भाई-चारे के वातावरण में लाता है जिनकी अभिरुचियाँ, पृष्ठभूमियाँ और महत्त्वाकाँक्षाएँ कुछ-कुछ मिलती-जुलती होती हैं। ये सुसम्पन्न छात्र कक्षा में और कालेज की अन्य गतिविधियों में एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में आते हैं।

प्रत्येक विद्यार्थी को इतनी अधिक-से-अधिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जितनी में भाग लेने से उसके अध्ययन के कार्यक्रम में बाधा न पड़े। किन्तु किसी भी छात्र को उसकी इच्छा के विरुद्ध किसी परियोजना में भाग लेने के लिए विवश नहीं करना चाहिए। कालेज के छात्र सामान्यतः अपने साथियों के साथ सामाजिक कार्यों में भाग लेने के लिए इच्छुक होते हैं। संकोचशील अथवा झेंपू व्यक्ति को कक्षा के बाहर की ऐसी गतिविधियों की खोज करने में बुद्धिमान परामर्शदाता की सहानुभूतिपूर्ण सहायता की आवश्यकता हो सकती है जिसमें वह संतोष और सामाजिक स्वीकृति प्राप्त कर सके। सामाजिक कार्यों का कोई भी कार्यक्रम—चाहे वह कितना ही वांछनीय या सुनियोजित क्यों न हो—किसी भी दशा मे छात्रों पर परामर्शदाताओं को नहीं लादना चाहिए।

छात्र नेतृत्व कालेज के समस्त कार्य छात्रों द्वारा संचालित होने चाहिएँ। निर्देशन सलाहकारों को विद्यार्थियों में अपने क्लबों, भाई-चारे और छात्रों के तथा छात्र-समूहों द्वारा नियोजित सामाजिक गतिविधियों में नेतृत्व के गुणों के विकास को प्रोत्साहन देना चाहिए। बहुधा इन समूहों में होने वाली प्रतियोगिता नेतृत्व के गुणों को विकसित करने में सहायता देती है। यदि इस कार्यक्रम से सामाजिक मूल्य प्राप्त करने हैं तो समूहों में से नेताओं का उद्भव होना चाहिए, कालेज के अधिकारियों द्वारा उनका चुनाव नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों द्वारा चुने गये नेताओं के माध्यम से ही डीन और परामर्शदाता छात्रों तक पहुँच सकते हैं।

कालेज और उसकी सुविधाओं को सामाजिक प्रयोगशाला के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। रहने के क्वार्टर, भोजन कक्ष, आराम की सुविधाएँ और कालेज के बाहर का समुदाय विद्यार्थी के सामाजिक जीवन का निर्माण करते हैं। विद्यार्थी किस सीमा तक बासकेट बाल, बेसबाल के मैदानों और टेनिस कोर्टों, पढ़ाई के बाहर के कार्यक्रमों और अवकाशकालीन कार्यों के अवसरों का उपयोग करते हैं? क्या विद्यार्थी समुदाय में कल्याणकारी कार्यों के लिए समय देते हैं? जब कालेज के बाहर के नेता कालेज में आते हैं तो क्या छात्र नेताओं को उनसे मिलने का अवसर दिया जाता है? क्या विद्यार्थियों को स्थानीय समाचारपत्र के अध्ययन के द्वारा समुदाय से

परिचित होने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है ? इन प्रश्नों के उत्तरों से सामाजिक कार्यक्रम की सफलता का अनुमान लगाया जा सकता है ।

सहयोगकर्त्ता कर्मचारी सामाजिक विकास की ओर प्रेरित करने वाले सामाजिक कार्यक्रम के निर्माण के लिए विषय के अध्यापकों, विशेष निर्देशन परामर्श-दाताओं, डीनों और अध्यक्ष की सहायता की आवश्यकता होती है। निकाय के इन सदस्यों को पारस्परिक सहयोग के साथ कार्य करते हुए ऐसी योजना का निर्माण और क्रियान्वयन करना चाहिए जो कालेज के समस्त व्यक्तियों पर निश्चित प्रभाव डाल सके ।

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध जो व्यक्ति प्रथम बार अपने घर से दूर होते हैं, उनमें से बहुत-से व्यक्तियों के मन में ऐसी इच्छा बलवती होती है कि वे घर के वातावरण से भिन्न बनें और जो कुछ वे घर पर करते रहे हैं उससे भिन्न कार्य करें । जो विद्यार्थी घर पर रहते हुए कालेज में पढ़ते हैं, उनके लिए नियन्त्रण के अभाव का खतरा कम होता है, क्योंकि वे अपने घरों से शारीरिक और भावनात्मक रूप से पृथक् नहीं होते। अतएव वे विरोधी लिंग के व्यक्तियों के साथ तालमेल बिठाने में उतनी अधिक कठि-नाई अनुभव नहीं करते जितनी कठिनाई घर से दूर रहने वाले विद्यार्थी अनुभव करते हैं। किन्तु स्थानीय विद्यार्थियों के सम्मुख एक दूसरे प्रकार की समस्या आती है, कालेज के क्षेत्र में या उसके निकट रहने वाले विद्यार्थी जितनी सामाजिक गतिविधियों में भाग ले सकते हैं, उतनी में भाग लेने के अवसर उन्हें प्राप्त नहीं होते । विवाहित छात्रों को कालेज में पढ़ने देने की जो सुविधा आजकल कालेजों द्वारा दी जा रही है, वह कालेज में वर्तमान कठिन लैंगिक समस्या का एक समाधान है ।

भ्रातृत्व और भगिनीत्व पुराने कालेजों में सामाजिक क्लब का जीवन भली-भाँति स्थापित हो चुका है, और साधारणतया प्रत्येक विद्यार्थी की यह आन्तरिक इच्छा होती है कि वह इन संगठनों में से किसी एक का सदस्य बन जाय । हमें सूत्रपात करने वाले समूहों की विचित्र बातों का अध्ययन करने की आवश्यकता है जिससे हम जान सकें कि इनमें से किसी एक का सदस्य बनने के लिए कोई व्यक्ति कितना त्याग कर सकता है । कभी-कभी वह संगठन का सदस्य इसलिए बनता है कि उसके मित्र उसके सदस्य हैं, कभी वह सदस्यता से प्राप्त होने वाली वास्तविक या काल्पनिक प्रतिष्ठा के कारण ऐसी संस्थाओं का सदस्य बनता है ।

ये संगठन कभी अच्छाई के लिए प्रभाव डाल सकते हैं और कभी कालेज के अधिकारियों के लिए सिरदर्द बन जाते हैं। इस संस्था के प्रशासकीय नेता यह निश्चित करते हैं कि उसका प्रभाव क्या मोड़ लेता है। क्लब के सदस्यों को प्राप्त होने वाले लाभों में एक लाभ है, सामाजिक तालमेल । वे हिलमिल कर रहने में ही प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करते अपितु अपने आय-व्यय का बजट बनाने और आय की सीमा में रहने का भी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। यद्यपि कुछ व्यक्तियों को क्षति हो सकती है, तो भी क्लब के जीवन से प्राप्त होने वाला अनुभव पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध में बहुत-ही अच्छी परीक्षाएँ दे सकता है। घर चलाने और मेज जमाने में कितना व्यय

होता है, यह सदस्यों को ज्ञात हो जाता है। वे सीखते हैं कि मिल कर कैसे योजना बनाई जाती है और किसी उत्तरदायित्व में हाथ बँटाया जाता है।

कुछ लोग भ्रातृत्व को पसन्द नहीं करते। इसका मुख्य कारण है उसके कुछ कम वांछनीय रूप। भ्रातृत्व-आवासों में जो भोज दिये जाते हैं और जो व्यक्ति इनमें भाग लेते हैं वे सदैव ही संस्था की प्रतिष्ठा की रक्षा नहीं करते। विद्यार्थी और उनके अतिथि मदिरापान में अति कर सकते हैं और कभी स्त्री-पुरुष प्रसंग में तल्लीन हो सकते हैं। केवल विद्यार्थियों की रक्षा के लिए ही नहीं अपितु कालेज की प्रतिष्ठा को भी सुरक्षित रखने के लिए गुप्त सभाओं की गतिविधियों पर सदैव विशेष दृष्टि रखने की आवश्यकता है।

इन समाजों की एक आलोचना यह की जाती है कि वे जनतन्त्री नहीं हैं। कालेज का उच्च स्तर प्राप्त करने की प्रतियोगिता के फलस्वरूप भारी धनराशि का व्यय हो सकता है; क्योंकि ऐसी प्रतियोगिता में आकर सदस्यता का आधार विद्यार्थियों के अभिभावकों की धनाढ्यता को बनाया जा सकता है, और उसमें केवल उन छात्रों को ही सम्मिलित किया जाता है जो पारिवारिक पृष्ठभूमि, स्कूली सफलता या खेल-सम्बन्धी निपुणता के कारण कालेज में ख्याति रखते हों। किन्तु कालेज की जिन सभाओं पर बुद्धिमत्तापूर्ण निरीक्षण रखा जाता है वे कालेज के सामाजिक जीवन में बहुत योग दे सकती हैं।

कालेज का सक्रिय परामर्श कार्य

कालेज या विश्वविद्यालय स्तर पर समुचित रूप से संगठित और भलीभाँति प्रयुक्त निर्देशन कार्यक्रम बहुत-सी विविध सेवाओं की व्यवस्था करता है। कार्यक्रम विशद और प्रगतिशील होना चाहिए। यह (१) जो कुछ निर्देशन कालेज के छात्र ने निम्नतर स्कूल स्तर पर प्राप्त किया है उसके ज्ञान का, और (२) वयस्कों के दायित्वों का निर्वाह करने में रचनात्मक आत्म-निर्देशन के प्रारम्भ का परिचय देता है। परामर्श की पद्धतियों और निर्देशन पर दिये जाने वाले बल की दृष्टि से कालेजों में भिन्नता होती है। कालेजों के परामर्श कार्यों के उदाहरणों के रूप में यहाँ टस्कीजी इंस्टीट्यूट, एलाबामा, वालपारेसो विश्वविद्यालय, इंडियाना और ब्रूकलिन कालेज, न्यूयार्क के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

टस्कीजी इंस्टीट्यूट प्रधान परामर्शदाता का पद अभी हाल में ही बनाया गया है जिस पर एक पूरे समय का परामर्शदाता नियुक्त किया गया है, जिसका कार्य नवागंतुक छात्रों के लिए निर्मित, निर्देशन कार्यक्रम के समस्त रूपों की देखभाल करना होता है। इसमें नवीन छात्रों के आवास-कक्षों के छात्र-सलाहकारों के लिए प्रशिक्षण का कार्यक्रम, नवागंतुकों के निकाय सलाहकारों के लिए नौकरी में रहते हुए भी शिक्षा प्राप्त करने, निकाय के सलाहकारों को नवीन छात्र सौंपने, कार्यक्रम की योजना बनाने और कार्यक्रम से सम्बन्धित वृत्तों को रखने के कार्य सम्मिलित हैं। चूंकि आजकल निर्देशन के निर्मित कार्यक्रम में केवल नवीन छात्र ही शामिल होते हैं, परामर्शपात्रों

की संख्या ५०० से ६०० तक होती है। टस्कीजी इंस्टीट्यूट में नवीन छात्रों के नवीनी-करण के उद्देश्य और उनसे सम्बन्धित गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं :

१. नवीन छात्रों को अपनी शक्तियों और दुर्बलताओं की खोज करने में सहायता देना।
२. ऐसा अनुभव प्रदान करना जो जीव विज्ञान, मानसिक और सामाजिक दृष्टि से स्वस्थ व्यक्तियों के विकास में योग दे सके।
३. ऐसी सलाह देना जो उन समस्त नवीन छात्रों के लिए सहायक हो सके जिन्हें अपने शैक्षिक कार्य और रहन-सहन के अन्य रूपों के लिए ऐसी सलाह की आवश्यकता होती है।
४. उन नये छात्रों को सहायता देना जिनमें शैक्षिक और सामाजिक कमियाँ हों ताकि वे उन कमियों को दूर कर सकें और योग्य छात्र अपने विकास में प्रगति कर सकें।
५. जिस समाज में वे रहते हैं, उसे अधिक अच्छी तरह समझने में नवीन विद्यार्थियों की सहायता करना।
६. छात्रों को अपनी व्यावसायिक और आजीविका सम्बन्धी अभिरुचियों और निपुणताओं को समझने तथा उनका विकास करने में सहायता देना।

ये सब कार्य करने के लिए परामर्श कार्यक्रम में आवास-कक्षों के छात्र सलाह-कारों, निकाय परामर्शदाताओं, कर्मचारियों, पठन-क्लिनिक की सेवाओं, मानसिक स्वास्थ्य क्लिनिक परीक्षण सेवा का उपयोग किया जाता है ताकि प्रत्येक नवीन छात्र का अधिकतम विकास हो सके।

विशिष्ट कार्य :

१. चूँकि मूल अध्ययन निकाय और कला तथा विज्ञान के कालेज के अधि-कांश निकायो का नवीन छात्रों से अत्यन्त दृढ़ सम्बन्ध होता है (वे पहले वर्ष में उन्हें पढ़ाते हैं); इन निकायों से परामर्शदाता के रूप में कार्य करने के लिए कहा गया था। अन्य स्कूलों और विभागों के निकायों के जिन सदस्यों ने ऐसे कार्य के लिए रुचि, उपलब्धता और अनुमति व्यक्त की थी, उन्हें भी इस रूप में कार्य करने के लिए कहा जाता था।
२. जिन पुस्तिकाओं (folders) में व्यक्तिगत विवरण पत्र, छात्रों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने का उपयुक्त माध्यम समझा जाता था, प्रधान परामर्शदाता के कार्यालय से निकाय सलाहकारों को भेज दिया जाता था। नये छात्रों को इस आशय की सूचना भेज दी जाती थी कि उनको परामर्श देने के लिए अमुक निकाय सदस्यों को नियुक्त किया गया है।
३. ऐसा कार्यक्रम बनाया गया है जो निकाय के सदस्यों को इन परामर्श पात्रों के साथ अपने कार्य में प्रभविष्णुता को विकसित करने के अवसर

प्रदान करता है। परामर्श की सामान्य प्रविधियों पर केन्द्रित सामूहिक विचार-विमर्श परामर्शदाताओं द्वारा छात्रों के साथ प्रारम्भ हो गया है। इनका उद्देश्य टस्कीजी छात्रों के शैक्षिक अनुभवों का व्यक्तिकरण और एकीकरण के प्रयत्नों में निकाय परामर्शदाताओं को सहायता देना है।

चित्र २३. बहुत-से कालेजों और विश्वविद्यालयों में छात्रों के लिए उपलब्ध कर्मचारी और निर्देशन सेवाएँ
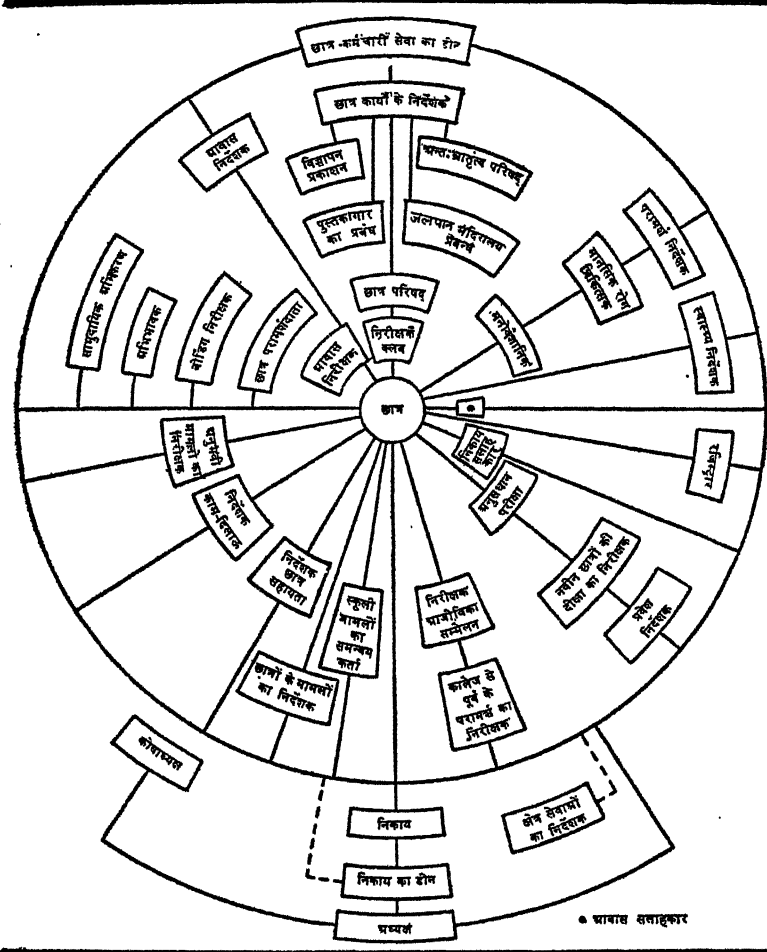
वाल्पारैसो विश्वविद्यालय वाल्पारैसो विश्वविद्यालय में परामर्श कार्य प्रशासक और छात्र दोनों के लिए सेवा के रूप में होता है। परामर्शदाता प्रशासक और छात्र के मध्य पारस्परिक परिचय को बढ़ाने का कार्य करता है

छात्र सेवाओं का डीन

छात्रों का डीन कर्मचारियों के उस कार्यक्रम का निरीक्षण करता है जो छात्रों के कल्याण और विकास के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत की गई विविध सेवाओं में से अनेक का समन्वय करता है। इसका उद्देश्य प्रत्येक छात्र को शैक्षिक, व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक स्थितियों में यथासम्भव अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करने में सहायता देना है। महिलाओं की डीन भी उसके साथ मिलकर कार्य करती है।

छात्रों का डीन (१) छात्रावासों के परामर्श सम्बन्धी कार्यक्रम का अधिपति होता है, (२) विश्वविद्यालय के नवीनीकरण कार्यक्रम का संगठन करता है, (३) विविध शैक्षिक परीक्षाएँ निर्धारित करता है, (४) छात्र की व्यक्तिगत फाइल रखता है, (५) अनुभवी और विशिष्ट सेवा सलाहकार के रूप में कार्य करता है, और (६) शैक्षिक परामर्श कार्यक्रम में भाग लेता है।

छात्रावासों में परामर्श कार्यक्रम :

पुरुषों के सामूहिक शयनागार निर्देशक छात्रों के डीन के प्रति प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी होते हैं और महिला आवासों की निर्देशिकाएँ महिलाओं की डीन के प्रति और उसके द्वारा छात्रों के डीन के प्रति उत्तरदायी होती हैं। सामूहिक शायनागार निर्देशक प्रत्येक शयनागार के निवासियों की छात्र परामर्श प्रणाली में भाग लेते हैं। चुने हुए छात्रों द्वारा प्रत्येक निवासी के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रखा जाता है जो सहपाठियों के लिये छोटे समूहों के व्यक्तिगत परामर्शदाता के रूप में कार्य करते हैं। प्रत्येक छात्र के लिए छात्रों का डीन, महिलाओं की डीन और आवास निर्देशक व्यक्तिगत परामर्श के हेतु उपलब्ध होते हैं।

दीक्षा-कार्यक्रम :

दीक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया समझी जाती है, परन्तु प्रत्येक स्कूल सत्र के प्रारम्भ में नवीनीकरण की अवधि में इस पर विशेष बल दिया जाता है। इस सप्ताह में सारा ध्यान नये छात्रों पर केन्द्रित कर दिया जाता है। सम्मेलनों, लेक्चरों, भ्रमणों, स्वागत-कार्यों और विविध सामाजिक समारोहों की व्यवस्था की जाती है। प्रशासक, निकाय के सदस्य और प्रमुख विद्यार्थी इनमें भाग लेते हैं।

नियोजित कार्यों के द्वारा नये छात्रों को निम्नलिखित से परिचित कराया जाता है :

१. विश्वविद्यालय के लक्ष्य और उद्देश्य
२. विश्वविद्यालय के प्रशासकीय कर्मचारी
३. कालेज का सामाजिक जीवन
४. कालेज में प्राप्त भौतिक सुविधाएँ

काम-दिलाऊ परीक्षाएँ :

विश्वविद्यालय की समान कक्षाओं को श्रेणियों में विभाजित करने के आधार-स्वरूप काम-दिलाऊ परीक्षाएँ अनेक विभागों द्वारा ली जाती हैं। अंग्रेजी और गणित में विशेष परिचयात्मक साधारण पाठ्य-विधियों के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की आवश्यकता का निश्चय करने के लिए भी परीक्षाएँ ली जाती हैं। सन् १९५७ में पठन-परीक्षा प्रारम्भ की गई थी। आज तक पढ़ने में सुधार करने वाली निरन्तर कक्षाएँ नहीं चलाई जा रही हैं किन्तु शुल्क के आधार पर कुछ निजी अध्ययन कार्य किया जा रहा है।

विद्यार्थी की व्यक्तिगत फाइलें :

परामर्श के सफल कार्यक्रम के लिए छात्रों के अच्छे वृत्त संग्रह अनिवार्य समझे जाते हैं। वाल्पारेसो विश्वविद्यालय में प्रत्येक व्यक्ति की निजी फाइल रखी जाती है। ये फाइलें छात्रों के डीन के कार्यालय में रखी जाती हैं। जो व्यक्ति छात्रों को परामर्श देने के लिए उत्तरदायी हैं, उनके लिए ये तत्काल उपलब्ध हो जाती हैं।

अनुभवी व्यक्ति और विशिष्ट सेवा परामर्श कार्य :

विद्यार्थियों का डीन भी अनुभवी व्यक्तियों के मामलों और विशिष्ट सेवा परिषद् से सम्बन्धित समस्त सामग्री की देखभाल करता है।

शैक्षिक परामर्श कार्यक्रम :

(छात्रों का डीन जिस शैक्षिक परामर्श कार्यक्रम में भाग लेता है, उसकी चर्चा आगे की गई है।)

शैक्षिक परामर्श सेवा

संगठन :

शैक्षिक परामर्श का कार्यक्रम शैक्षिक डीन (स्कूल आफ लॉ के डीन, इंजीनियरिंग कालेज के डीन और कला तथा विज्ञानों के कालेज के डीन) द्वारा छात्रों के डीन के सहयोग से संचालित होते हैं।

सामान्य परामर्शदाता :

छात्रों का डीन प्रत्येक अवयस्क छात्र को एक सामान्य सलाहकार के हाथों में सौंप देता है। सामान्य सलाहकार निकाय का सदस्य होता है जिसका चुनाव शैक्षिक डीन द्वारा व्यक्तित्व के अनुभव और शैक्षिक तथा व्यक्ति दोनों क्षेत्रों में परामर्श सेवा प्रदान करने की प्रत्यक्ष योग्यता के आधार पर किया जाता है। सामान्य सलाहकार यथासम्भव उन विभागों में से चुने जाते हैं जिनमें वयस्क छात्रों की संख्या अधिक नहीं होती। छमाही के प्रारम्भ में प्रत्येक सामान्य परामर्शदाता को पच्चीस छात्र सौंपे जाते हैं। जब विद्यार्थी अपने प्रमुखों का चुनाव

कर लेते हैं और वे नये परामर्शदाताओं के लिए अपने प्रमुख विभागों के मुखियाओं को स्थानान्तरित कर दिये जाते हैं तो छात्रों की संख्या कम हो जाती है ।

प्रमुख परामर्शदाता :

साधारणतया विभाग का मुखिया प्रमुख परामर्शदाता होता है । भारी प्रमुख भार वाले विभागों में—उदाहरणार्थ ४०० प्रमुखों वाले वाणिज्य विभाग में—विभाग का मुखिया परामर्श देने का कार्य विभाग के चुने हुए निकाय सदस्यों को सौंप देता है ।

व्यवसाय से पूर्व के परामर्शदाता :

व्यवसाय में जाने वाले छात्रों के लिए उनके सहायतार्थ एक अतिरिक्त परामर्शदाता होता है जो व्यावसायिक प्रशिक्षण की अपेक्षाओं को समझने में उनकी सहायता करता है । इसके उदाहरण वे छात्र हैं जो माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और कानूनी, डाक्टरी, दंत-चिकित्सा तथा नर्स के कार्य के स्कूलों के लिए तैयारी कर रहे हैं ।

सहकारी कार्यविधि :

कला और विज्ञानों के कालेजों तथा इंजीनियरिंग कालेज में अध्यापक परामर्शदाता, छात्रों के डीन तथा विद्यार्थी शैक्षिक परामर्श पद्धति में सहयोग देते हैं । ऐसे सहयोग की आवश्यकता विशेषतया शैक्षिक कमियों के मामलों में होती है । जब किसी छात्र की श्रेणी किसी विषय में "सी" से गिर जाती है तो उसके शिक्षक से यह आशा की जाती है कि वह ऐसी न्यूनता की सूचना छात्रों के डीन को दे । डीन इसकी सूचना परामर्शदाता को देता है, जो बातचीत करने के लिए छात्र को लिखित निमंत्रण देता है । परामर्शदाता इस भेंट के परिणाम की—और यदि भेंट के लिए छात्र उपस्थित नहीं होता है तो इस बात की—सूचना लिखित रूप में छात्रों के डीन को देता है ।

जो विद्यार्थी परामर्शदाता के निमंत्रण की परवाह नहीं करते, उनके पास छात्रों के डीन से इस आशय की लिखित सूचना भेजी जाती है कि वे डीन के कार्यालय में उपस्थित हों । इस सूचना की अवहेलना करने पर उसके विरुद्ध अनुशासन की कार्रवाई की जाती है ।

कानून के स्कूल में छात्र की न्यूनता के सम्बन्ध में छात्रों के डीन के पास कोई शिकायत नहीं भेजी जाती । कानून के स्कूल का डीन और निकाय समिति प्रथम वर्ष और दूसरे वर्ष के विद्यार्थियों को चुने हुए परामर्शदाताओं के पास भेज देते हैं । प्रथम वर्ष के प्रत्येक विद्यार्थी को अपने परामर्शदाता से साक्षात्कार करने के लिए कम से कम एक बार बुलाया जाता है । अन्तिम दो वर्षों में ऐसे साक्षात्कार कम हो जाते हैं । तीसरे वर्ष के कानून के छात्रों के लिए डीन ही

परामर्शदाता का कार्य करता है। कानून के स्कूल में एक कक्षा में छात्रों की संस्था पच्चीस तक होती है। प्रत्येक अध्यापक से आशा की जाती है कि वह अपने छात्र और छात्र के परामर्शदाता से अच्छा सम्पर्क रखेगा।

मूल्यांकन :

साधारणतया परामर्श कार्यक्रम के सम्बन्ध में डीनों और विभाग के मुखियाओं की टिप्पणियाँ छात्र के पक्ष में होती हैं। जहाँ न्यूनताओं का उल्लेख होता है तो उसका दोष इस बात पर लगाया जाता है कि अध्यापक ने न्यूनताओं की सूचना जल्दी नहीं दी जिससे परामर्शदाता को छात्र की सहायता करने का अवसर मिल सकता। ऐसी असफलता के दो संभावित कारण दिये जाते हैं : (१) अध्यापक को छात्र की प्रगति का अनुमान नहीं लग पाता और इसलिए उसके पास सूचना देने को कुछ नहीं होता, (२) अध्यापक विश्वास करता है कि कोई अल्प-अवकाश-कालीन श्रेणी छात्र की प्रगति का भली-भाँति अनुमान नहीं लगा सकती। ऐसी स्थिति तब उत्पन्न हो सकती है जब कि अध्ययन संग्रहात्मक होता है और वह अध्ययन इस स्थिति का एक अंश होता है। हो सकता है कि विद्यार्थी का कार्यक्रम प्रारम्भ में मंद और परिश्रमसाध्य हो, परन्तु छमाही के अंत में विकसित सूक्ष्म-दर्शिता के फलस्वरूप उसे संतोषजनक सफलता प्राप्त हो सकती है। अतएव यह अनुभव किया जाता है कि निम्न श्रेणी की प्रारंभिक रिपोर्ट से कोई उपयोगी उद्देश्य सिद्ध नहीं होगा। यह अध्ययन में भी बाधक हो सकता है।

डीन इस बात से सहमत हैं कि रिपोर्ट न करने के दोनों कारणों की खोज करनी चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को यह जानने का अधिकार है कि वह कैसी प्रगति कर रहा है। यह अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह उसे व्यक्तिगत संचार या सामूहिक परीक्षण पद्धतियों द्वारा समय-समय पर अपनी सफलता या असफलता का मूल्यांकन करने में सहायता दे। जब कभी उसे छात्र के असंतोषजनक कार्य का संकेत मिले तभी उसे परामर्शदाता को सूचित कर देना चाहिए।

यह उचित है कि अध्यापक को अपने निजी निर्णय के प्रयोग में छूट मिलनी चाहिए। इसलिए सावधानी से नियोजित विभागीय निकाय सम्मेलनों की सिफारिश की जाती है, जिनमें विद्यार्थियों के सर्वश्रेष्ठ हित में अध्यापक और परामर्शदाता के मध्य अधिकतम सहयोग बनाये रखने की रीतियों और विधियों पर विचार किया जा सके।

विश्वविद्यालय मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवा

विश्वविद्यालय मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवा का प्रारम्भ अगस्त १९५५ में हुआ था। प्रशासन की दृष्टि से यह अन्य कर्मचारियों अथवा सेवा कार्यालयों से स्वतंत्र थी। आज तक इसमें एक पूरे समय का व्यावसायिक-मनोवैज्ञानिक सम्मिलित होता है।

मनोवैज्ञानिक की सेवाएँ विश्वविद्यालय से सम्बन्धित ऐसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध होती हैं जो (१) अधिक गोपनीय, (२) अधिक विस्तृत, और (३) ऐसी विशिष्ट सेवाएँ चाहता है जो निकाय, डीनों, परामर्शदाताओं, गृह निर्देशकों और सामूहिक शयनागार के सलाहकारों द्वारा उपलब्ध नहीं होतीं। व्यक्तिगत परामर्श केवल परामर्शपात्र की प्रार्थना पर ही दिया जाता है।

समस्त साक्षात्कार और विश्वविद्यालय परामर्श कार्यालय के वृत्त गोपनीय रखे जाते हैं। किन्तु जब परामर्शपात्र संकेत और प्रार्थना करता है तो मनोवैज्ञानिक निकाय, डीनों, अभिभावकों, चिकित्सक या अन्य सहायक व्यक्ति को सहयोग देता है।

मनोवैज्ञानिक का अधिकांश समय व्यक्तिगत साक्षात्कारों में बीत जाता है। सामान्यतः साक्षात्कारों का सम्बन्ध अस्थायी और परिवर्तनशील समस्याओं से होता है। इनमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण सम्मिलित हो भी सकते हैं और नहीं भी हो सकते। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के लिए प्रति सप्ताह एक घंटे का समय दिया जाता है। जब इस सहायक चिकित्सा के लिए अधिक समय की आवश्यकता होती है तो सम्बन्धित व्यक्ति को ऐसी सेवाओं के पास भेजने की व्यवस्था की जाती है जो विश्वविद्यालय से बाहर होती हैं।

मनोवैज्ञानिक भी समूहों के साथ मिल कर कुछ कार्य करता है। इस कार्य में अध्ययन की प्रविधियों, व्यवसाय का चुनाव, अभिसार की गतिविधियों और छात्र सेवाओं के उपयोग जैसे विषयों पर विचार-विमर्श सम्मिलित होता है।

मूल्यांकन :

अन्य परामर्श सेवाओं के पूरक के रूप में उपलब्ध विशेष मनोवैज्ञानिक सेवाओं की व्यवस्था ने निर्देशन के समस्त कार्यक्रम को निश्चित रूप से लाभान्वित किया है।

आंकड़ों सम्बन्धी पर्याप्त सेवा का अभाव मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवा की एक कमी का संकेत करता है। परामर्शदाताओं को साधारण छात्रों और विशिष्ट स्थितियों में उलझे हुए छात्रों के विषय में अधिक जानकारी होनी चाहिए। बहुत से कार्यालय इन क्षेत्रों का अध्ययन करने का प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु किसी के पास इतने प्रशिक्षित कर्मचारी नहीं हैं कि वे समस्त वांछनीय कार्य कर सकें। किसी आंकड़ा-शास्त्री (statistician) की सेवाएँ प्राप्त होने पर यह अध्ययन पूरा हो सकता है।

ब्रुकलिन कालेज ब्रुकलिन कालेज में—जो निर्देशन में रुचि रखने वाली संस्था है—परामर्शकार्य की गतिविधियों का कार्यक्रम विस्तृत और गहन रूप में कर्मचारी सेवा विभाग की छत्रछाया में चलता है।

दीक्षा :

विविध हाई स्कूलों और ब्रुकलिन कालेज के मध्य समीकरण पर बल दिया

जाता है। कालेज और उसके पाठ्य-विषयों के सम्बन्ध में हाई स्कूलों की सभाओं और अभिभावकों की संस्थाओं के सम्मुख भाषण देने के लिए यह कालेज वक्ताओं को भेजता है।

किसी आवेदनकर्त्ता को कालेज में भर्ती के लिए स्वीकार कर लेने के पश्चात् हाई स्कूल से प्रार्थना की जाती है कि वह कालेज के परामर्शदाता के उपयोग के लिए उस छात्र की मूल्यांकन रिपोर्ट प्रस्तुत करे। प्रत्येक भर्ती होने वाले छात्र को कालेज बोर्ड परीक्षा और स्कूली रुचि परीक्षा देनी पड़ती है जिसके परिणाम परामर्शदाता को सौंप दिये जाते हैं। प्रत्येक नये छात्र के लिए कालेज के परामर्शदाता नियुक्त कर दिये जाते हैं। उदाहरण के लिए सितम्बर में भर्ती होने वाले छात्र को परामर्शदाता का नाम पूर्ववर्ती अगस्त मास में बता दिया जाता है। इसके अतिरिक्त चूंकि परामर्शदाता को हाई स्कूल से प्राप्त रिपोर्टों और परीक्षाओं से सम्बन्धित विद्यार्थी के सम्बन्ध में पर्याप्त पृष्ठभूमि का ज्ञान हो जाता है, वह विद्यार्थी के लिए वास्तव में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

ब्रुकलिन कालेज अनेक प्रकार से नवीन छात्रों को कालेज के जीवन से परिचित कराने का प्रयत्न करता है। कक्षाएँ चालू होने से पूर्व प्रारम्भ होने वाला नवीनीकरण कार्यक्रम नये छात्र के लिए पूरे वर्ष भर तक चलता रहता है। कालेज में होने वाले नवीनीकरण सम्मेलनों में उच्च कक्षा के छात्र सहायता देते हैं। ये सहायक विद्यार्थी भवन का भ्रमण कराते हैं, कालेज की कार्यविधियाँ समझाते हैं और पंजीकरण की अवधि में नवीन छात्रों की सहायता करते हैं। नवागंतुक सभा में अध्यक्ष नये छात्रों का स्वागत करता है। छमाही के प्रारम्भ में एक 'अभिभावक-दिवस' कार्यक्रम भी होता है, जिसका उद्देश्य अभिभावकों को कालेज में उपलब्ध अवसरों और सेवाओं से परिचित कराना तथा निकाय और प्रशासन के सदस्यों से मिलने का अवसर प्रदान करना है।

नवीन छात्रों की प्रथम छमाही के प्रारम्भ में कालेज के विविध क्लब और संगठन एक समारोह करके अपनी विविध गतिविधियों का आकर्षक प्रदर्शन करते हैं। इस समय प्रत्येक नवागंतुक छात्र—यदि वह चाहे तो—किसी एक या अधिक गतिविधियों में सम्मिलित हो सकता है। फिर नवीन छात्रों को सामाजिक कार्य परिषद् द्वारा दिये गये जलपान पर आमंत्रित किया जाता है।

व्यापक और विभागीय परामर्श कार्य

प्रत्येक छात्र को अपने परामर्शदाता से दो बार भेंट करनी पड़ती है—एक बार तो प्रथम छमाही में नवीनीकरण के सम्बन्ध में साक्षात्कार के लिए और फिर द्वितीय वर्ष में अपने शेष अध्ययन की योजना बनाने के लिए। वह अपने परामर्शदाता से आवश्यकतानुसार जब चाहे तब भी भेंट कर सकता है। व्यक्तिगत और भावनात्मक समस्याओं को सुलझाने वाली विशेष सेवाएँ भी छात्रों के लिए उपलब्ध होती हैं। छात्र का सामान्य परामर्शदाता इस सहायता की प्राप्ति

के लिए किसी छात्र को भेज सकता है, छात्र इसके लिए प्रार्थना कर सकता है अथवा अध्यापक इसके विषय में परामर्शदाता को सुझाव दे सकता है। इस फाइल में (१) छात्र द्वारा भरा हुआ व्यक्तिगत विवरण का प्रपत्र, (२) परीक्षा के परिणाम, (३) सामान्य परामर्श के समस्त साक्षात्कारों का आलेख, (४) अध्यापकों से प्राप्त व्यक्तित्व सम्बन्धी विवरण, और (५) विषय-श्रेणियों के विवरण होने चाहिएँ। अपने प्रथम वर्ष में, प्रत्येक छात्र को अपने सामान्य सलाहकार से परामर्श करने के अतिरिक्त अपने विभागीय परामर्शदाता से भी अपने प्रमुख विषय में पाठ्य-विधियों की योजना बनाने के लिए सलाह करनी चाहिए।

जीवन के कार्य के सम्बन्ध में परामर्श देने के लिए विशेष परामर्शदाता होते हैं। उदाहरण के लिए, नौकरी पाने में रुचि रखने वाले सारे विद्यार्थियों को नवीनीकरण सभाओं में भाग लेना पड़ता है, जहाँ उन्हें साक्षात्कार की प्रविधियों, परिधान और व्यवहार तथा नौकरी प्राप्त करने में सहायता देने वाली अन्य सहायक बातों पर परामर्श दिया जाता है। नौकरी दिलाने सम्बन्धी सेवाओं का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों को अपने और नौकरी के आवेदन के सम्बन्ध में आवश्यक सूचनाओं का सारांश तैयार करने में सहायता दी जाती है।

प्रत्येक छमाही में एक वरिष्ठ जीवनचर्या दिवस और वरिष्ठ भर्ती दिवस मनाया जाता है। वरिष्ठ जीवनचर्या दिवस में छात्र पहले सामान्य अधिवेशन में मिलते हैं। फिर वे छोटी सामूहिक सभाओं में बँट जाते हैं जो उनमें से उस प्रत्येक क्षेत्र पर ब्यौरेवार विचार करते हैं जो सामान्य बैठक में उपस्थित किया गया था। वाद-विवाद का नेतृत्व कार्य-स्रोत के विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। वरिष्ठ भर्ती दिवस पर विविध नौकरियों के प्रतिनिधि निश्चित कार्यों के लिए छात्रों से साक्षात्कार करने के हेतु कालेज में आते हैं।

कानून, इंजीनियरिंग, डाक्टरी, अध्यापन तथा सामाजिक कार्य से पूर्व की सलाह भी दी जाती है।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. जिस प्रकार के कालेज में आप पढ़ रहे हैं उसके उद्देश्यों का विवरण दीजिए। अन्य प्रकार के कालेजों से उसके लक्ष्यों और उद्देश्यों में कैसा अंतर होना चाहिए?
२. कालेज में निर्देशन के कार्यक्रम के लिए लक्ष्यों और उद्देश्यों का क्रियान्वयन क्यों महत्त्व-पूर्ण है?
३. उदार कला के कालेज में, अध्यापकों के कालेज में, प्राविधिक कालेज में शैक्षिक निर्देशन के कुछ अनिवार्य तत्त्व बताइये।
४. कालेज में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों में विद्यमान योग्यता सम्बन्धी अंतर का अध्ययन कीजिये और उन समस्याओं की चर्चा कीजिये जो निर्देशन कर्मचारियों के सम्मुख आती हैं।
५. जब कि वे सब स्कूल एक ही नगर में होते हैं जिनसे कालेज अपने छात्र प्राप्त करता है,

तो फिर आपकी दृष्टि से विविध स्कूलों में इतनी विषमता क्यों होती है ?

६. टस्कीजी इंस्टीट्यूट; वाल्पारेसो विश्वविद्यालय, ब्रुकलिन कालेज के निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन कीजिए ।

७. किसी बड़े कालेज के निर्देशन कार्यक्रम के नक्शे के गठन में आप किन परिवर्तनों का सुझाव देंगे ? (देखिए पृष्ठ ३८३)

८. जिस कालेज में आप पढ़े हैं या पढ़ रहे हैं, उसके नवीन छात्र सप्ताह के कार्यक्रम की रूपरेखा बताइये ।

९. जिस कालेज में आप आजकल पढ़ रहे हैं, उसके निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन कीजिए ।

१०. अपने कालेज के कालेजी जीवन के लिए नवीनीकरण कार्यक्रम प्रस्तुत कीजिए ।

११. नवीन छात्र सप्ताह का एक ऐसा कार्यक्रम बताइये जिसे आप १००० छात्रों के उदार कला कालेज के लिए आदर्श समझते हैं ।

१२. हाई स्कूलों और कालेज के मध्य समीकरण करने में कालेज का क्या दायित्व होना चाहिए ?

१३. जो व्यावसायिक दीक्षा माध्यमिक स्कूल के स्तर पर दी गई थी, वह कालेज स्तर पर किस प्रकार भिन्न होनी चाहिए ?

१४. दोनों में से अधिक महत्त्वपूर्ण क्या है—छात्रों का कालेज में रहते हुए नौकरी प्राप्त करना अथवा स्नातक हो जाने के पश्चात् ? क्यों ?

१५. विषय के विभागों को किस सीमा तक छात्र निर्देशन का उत्तरदायित्व ग्रहण करना चाहिए ?

१६. कालेजों को अपने विद्यार्थियों के सामाजिक निर्देशन से क्यों सम्बन्ध रखना चाहिए ?

१७. भ्रातृत्व और भगिनीत्व कालेज में कौन-सी विशेष समस्याओं को जन्म देते हैं ? गुप्त संस्थाएँ अपने सदस्यों को कैसे लाभ पहुँचा सकती हैं ?

१८. नैतिक औमूर आध्यात्मिक ल्यों के विस्तार का दायित्व कालेज पर किस सीमा तक है ?

१८ वयस्क का निर्देशन

निर्देशन का विचार हाई स्कूल स्तर पर प्रारम्भ होकर एक ओर निम्नतर स्कूलों में चला गया है और दूसरी ओर कालेजों तथा उच्चतर शिक्षा की संस्थाओं तक पहुँच गया है। अभी बहुत हाल ही वयस्क स्तर पर शिक्षा और निर्देशन की एक उल्लेखनीय लहर उठी है जो बड़े नगरों से छोटे कस्बों तक पहुँच गई है और जो बहुत सी तथा विविध रीतियों से क्रियान्वित की गई है।

वयस्क शिक्षा में वे पाठ्यक्रम और पाठ्य-विधियाँ निहित हैं जिनका उद्देश्य सब प्रकार के और सब स्थितियों के स्त्री-पुरुषों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना है। वयस्क व्यक्ति उन निरन्तर परिवर्तनशील दशाओं और अवसरों के विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं जिनका आधार हमारी सभ्यता की आधुनिक और जटिल स्थिति है। वयस्क शिक्षा उनकी इस बढ़ती हुई चाह का एक उत्तर है। इस परिवर्तनशील स्थिति के अधिक अनुकूल बनने के लिए एक आयु के वयस्कों को उनके जीवन के विविध कार्यों में आत्मबोध प्राप्त करने और तालमेल बिठाने के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है।

वयस्क समन्वय के क्षेत्र

युवक वयस्क, प्रौढ़ स्त्री-पुरुष और वृद्ध व्यक्ति तालमेल की ऐसी समस्याओं का अनुभव करते हैं जो उनकी आयु, उनकी आशाओं और उनकी महत्त्वाकांक्षाओं के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं।

युवक वयस्क युवक वयस्कों के सम्मुख तालमेल के कुछ प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैं: उच्च औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता, प्रणय की समस्याएँ और वैवाहिक तथा पारिवारिक तालमेल; नौकरी और नौकरी में कुशलता तथा सन्तोष; अवकाशकालीन तथा मनोरंजन की गतिविधियाँ।

अठारह और पच्चीस वर्ष के मध्य के नवयुवक साधारणतया आशावादी और भविष्य में विश्वास रखने वाले होते हैं। यदि शैशव और किशोरावस्था में प्राप्त शिक्षा और निर्देशन उसकी विकासशील आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त थे, तो वह वयस्कावस्था में उत्तरदायित्व ग्रहण करने के लिए अपेक्षाकृत भली-भाँति तैयार होकर प्रवेश करता है। उसके सम्मुख कोई भी स्थिति आये, उसका सामना करने के लिए वह स्वयं को योग्य समझता है।

किन्तु वयस्क स्थिति के लिए अनिवार्य उत्तरदायित्वों को ग्रहण करने के लिए समस्त युवक प्रस्तुत नहीं होते। उनकी शैक्षिक सफलताएँ और जिस प्रकार का तथा जितना निर्देशन उन्होंने अपने नवयौवन में प्राप्त किया है वह इतना पर्याप्त नहीं था कि उनमें अपने और अपनी क्षमताओं में इतना विश्वास उत्पन्न करा रुके जिससे वे अपनी वयस्क अवस्था के विविध क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकें।

विकास की एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्रवेश करने की इस अवधि में नवयुवक में किसी का "हो जाने" की चाह अनुभव होती है। वह आर्थिक और सामाजिक दोनों दृष्टियों से सफलता प्राप्त करना चाहता है, किन्तु सम्भव है कि वह कार्य की किसी निश्चित योजना का अभाव अनुभव करे। यदि वह अविवाहित है, तो उपयुक्त जीवन साथी पाने की समस्या आती है। यदि वह विवाहित है तो जीवन साथी के साथ तालमेल और संतान की समस्या उत्पन्न होती है। सामाजिक दृष्टि से वह स्कूल के साथियों से बिछुड़ कर समाज में स्वयं को अकेला पाता है। यह भी संभव है कि वह समुदाय द्वारा संचालित सामाजिक और मनोरंजन के संगठनों में भाग न लेता हो जिससे उसका समवयस्क व्यक्तियों से मेलजोल समाप्त हो गया हो। इस अवधि में ही युवक विशिष्ट नागरिक उत्तरदायित्व ग्रहण करना प्रारम्भ करता है क्योंकि इसी समय वह सर्वप्रथम मताधिकार का प्रयोग करता है। अतएव वह ऐसी राजनैतिक विचारधाराओं का शिकार हो सकता है जो उसके यौवनकालीन उत्साह को आकर्षित कर लें किन्तु जो आगे चल कर उसके मन में सन्देह उत्पन्न कर दें और विचार-शृंखला को उलझा दें।

व्यावसायिक कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए प्रस्तुत कोई नवयुवक या नवयुवती व्यावसायिक दृष्टि से चाहे कितना ही तैयार क्यों न हो फिर भी कार्य सम्बन्धी अनेक तालमेल करने की आवश्यकता होती है। सही प्रकार के कार्य की खोज करके उसे प्राप्त कर लेना, नये साथियों, प्रशासकों और कार्य की गतिविधियों से तालमेल बिठा लेना सदैव सरल नहीं होता। इन से गम्भीर भावनात्मक उथल-पुथल उत्पन्न हो सकती है। जब नवयुवक कार्य की स्थितियों और गतिविधियों से भली-भाँति परिचित हो जाता है, तो उसे यह अनुभव हो सकता है कि वह उनसे संतुष्ट नहीं है और परिवर्तन चाहता है अथवा वह अपने कार्य में इतनी रुचि लेने लगता है कि उस में अपनी कुशलता को बढ़ाने अथवा अपनी पदोन्नति करने की महत्त्वाकाँक्षा जाग्रत हो जाती है। दोनों स्थितियों में, उसे अपनी औपचारिक शिक्षा से आगे पढ़ाई करने के लिए प्रेरणा मिल सकती है।

प्रौढ़ व्यक्ति साधारणतया जब कोई स्त्री-पुरुष चालीस की आयु को पार करते हैं, तब तक वे जीवन का एक निश्चित ढाँचा बना चुके होते हैं। संभव है कि वह व्यक्ति ऐसे दैनिक कार्यों और रुचिकर बातों में अधिकाधिक लीन हो चुका हो जिससे उसकी आवश्यकताओं और उसके तथा उसके परिवार के लिए कुछ सुख-सुविधाओं की उपलब्धि होती हो। संभव है कि उसने घर, समाज और व्यावसायिक कार्यों तथा राजनैतिक स्थितियों में विद्यमान परिस्थितियों से संतोषजनक तालमेल बिठाने के लिए अपने रवैये और व्यवहार को उसी प्रकार ढाल लिया हो।

कुछ मामलों में प्रौढ़ व्यक्ति बेचैन हो उठता है, वह अनुभव करता है कि उसके जीवन के कुछ अच्छे अवसर व्यर्थ चूक गये हैं। साहस और सफलता के तथा बहुत से विविध कार्यों में भाग लेने के उसके युवावस्था के स्वप्न पूरे नहीं हुए हैं। वह यह अनुभव कर सकता है कि उसका जीवन लगभग पूर्णतया असफल रहा है। वह नवयुवक-नवयुवतियों को उन आनन्दमय कार्यों में व्यस्त पाता है जिनका अवसर उसे कभी उपलब्ध नहीं हुआ है।

उस प्रौढ़ व्यक्ति को भी जिसने सामान्यतः स्वीकृत आर्थिक स्तरों की दृष्टि से उच्चकोटि की सफलता प्राप्त कर ली हैं—अपनी सफलता तुच्छ प्रतीत हो सकती है। जब कि वह किसी एक क्षेत्र में सुरक्षा प्राप्त करने का प्रयास करता है तो अनजाने में वह अन्य क्षेत्रों से विलग हो जाता है, और फिर एक समय ऐसा आता है जब पुरानी रुचियों के सूत्र को पकड़ कर संतोषजनक ताना-बाना बुनने का समय व्यतीत हो चुका होता है।

बहुत से स्त्री-पुरुषों के जीवन में यह खतरनाक आयु होती है। जब वे यह अनुभव करते हैं कि अब वे युवा नहीं बन सकते तो उनमें बीते हुए समय की क्षति को पूरा करने की लालसा जाग्रत हो जाती है। उन्हें अपना बुढ़ापा निकट ही अनुभव होता है। अतएव वे स्वयं को ऐसे नवीन कार्य में झोंक देने का प्रयत्न करते हैं जिसके द्वारा उन्हें यौवन की शक्ति और उत्साह पुनः प्राप्त होते प्रतीत होते हैं। इस प्रकार के कार्य से प्रत्याशित संतोष प्राप्त नहीं होता। जो स्वभाव अपेक्षाकृत स्थायी बन गये हैं वे अकस्मात् और निश्चित रूप से परिवर्तित नहीं हो सकते। इसके अतिरिक्त, प्रौढ़ और वृद्ध व्यक्तियों के शरीर में युवावस्था की धड़कनें फिर पैदा नहीं हो सकतीं।

वृद्ध व्यक्ति वृद्धावस्था की ओर साधारणतया विकसित होने वाला जीवन और परिवर्तित रवैये; ये दोनों ऐसी बातें हैं जिनमें मनुष्य को उसी समय समन्वय कर लेना चाहिए जब कि उसमें यौवन और शक्ति होती है। बड़े बच्चों का अपनी निजी पारिवारिक और वयस्क गतिविधियों में व्यस्त होना, अपने व्यवसाय से बलात् अथवा स्वेच्छापूर्वक अवकाश ग्रहण करना, इस अवस्था में होने वाली शारीरिक व्याधियाँ, विगत साथियों की मृत्यु और प्राप्त की हुई वित्तीय सुरक्षा की मात्रा; ये कुछ बातें हैं जो तालमेल की ऐसी समस्याएँ उत्पन्न कर सकती हैं जिनको वृद्ध व्यक्ति बिना किसी सहायता के नहीं सुलझा सकते।

किन्तु यह ऐसी अवस्था है जिसमें वे स्त्री-पुरुष जिन्होंने अपने प्रारम्भिक वर्षों में समृद्धि और सम्पन्नता का जीवन व्यतीत किया है, अब बहुत-सी संतोषप्रद और महत्त्वपूर्ण गतिविधियों में भाग लेने के लिए अवसर प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तकें पढ़ने, सैर-सपाटे करने, कल्याणकारी और सामुदायिक परियोजनाओं में भाग लेने और सामाजिक सम्बन्धों का उपभोग करने का यह अवसर है जिसके लिये "व्यस्त" वर्षों में उनके पास समय का अभाव था।

वयस्कों के निर्देशन के कार्य

कोई वयस्क व्यक्ति कितना ही स्वतंत्र और आत्म-निर्भर क्यों न हो, प्रत्येक आयु की अवधि में ऐसे अवसर आते हैं जब वह किसी ऐसे परामर्शदाता द्वारा दी गई किसी प्रकार के निर्देशन की सहायता से लाभान्वित हो सकता है जो उसकी समस्या को समझता है और आवश्यकतानुसार उसको सहायता देता है। हम वयस्क व्यक्ति की इन आवश्यकताओं को पहचानने लगे हैं।

आवश्यकता की तात्कालिकता यद्यपि शैशव और किशोरावस्था में दी जाने वाली शिक्षा और निर्देशन का उद्देश्य नवयुवक को अपने जीवन के अनुभव क्षेत्रों में तालमेल करने में सहायता देना है, तो भी इस बात को स्वीकार किया जाता है कि वयस्कता से पूर्व मनुष्य को ऐसी सहायता की आवश्यकता होती है और वह उसे मिलनी चाहिए जिसके द्वारा वह शिक्षा सोपान के अगले कदम या भावी घरेलू सामाजिक तथा व्यावसायिक कार्यों में भाग लेने के लिए स्वयं को तैयार कर सके।

किसी नवयुवक की आवश्यकताओं और रुचियों का सम्बन्ध साधारणतया भविष्य से इतना नहीं होता जितना कि वर्तमान काल से। निःसंदेह जो कुछ वह अब करता है उसका प्रभाव उसके भावी कार्यों पर पड़ सकता है, परन्तु 'वर्तमान' ही उसके लिए मुख्य रूप से महत्त्वपूर्ण है। वयस्क की निर्देशन सेवाओं में उसकी वर्तमान स्थितियों और उनकी पृष्ठ भूमियों पर विचार करना चाहिए और उसे ऐसी सहायता प्रदान करनी चाहिए जिसका तात्कालिक महत्त्व है।

जो वयस्क शैक्षिक अवसरों में भाग लेने के लिए निर्देशित किये जाते हैं उनके लिए उपलब्ध बहुत से शैक्षिक अवसर इस बात के प्रमाण हैं कि नवयौवन काल से वृद्धावस्था तक समस्त क्षेत्रों—घर, नौकरी और सामाजिक तथा नागरिक सम्बन्धों में स्त्री-पुरुष के कल्याण के लिए तेजी से रुचि बढ़ती जा रही है।

निर्देशन के प्रकार किसी वयस्क के लिए उपलब्ध की जाने वाली निर्देशन सेवाएँ निम्नतर आयु स्तर की भाँति—उसके जीवन के प्रत्येक रूप से सम्बन्धित होनी चाहिएँ। वयस्क को सुसमन्वित वैवाहिक और पारिवारिक सम्बन्धों में सफलता प्राप्त करने के लिए निर्देशन की आवश्यकता हो सकती है। उसके सेक्स-प्रेरित विचार और व्यवहार का सम्पूर्ण ढाँचा गम्भीर भावनात्मक संघर्ष उत्पन्न कर सकता है, अतएव उसे शैशवकाल से ही स्वस्थ रवैयों और आचार-व्यवहार के विकास में सहायता

मिलनी चाहिए। निर्देशन के इस महत्त्वपूर्ण रूप पर २१ वें अध्याय में विशेष रूप से विचार किया गया है।

किसी व्यक्ति द्वारा अपनी सामान्य या विशेष शिक्षा का जारी रखा जाना ऐसी परियोजना है जिसमें वह उन प्रश्नों पर विचार किये बिना भाग नहीं ले सकता जिनका सम्बन्ध आगे किये जाने वाले अध्ययन के प्रकार और राशि से है तथा उपलब्ध शैक्षिक केन्द्रों, पाठ्य-विधि की अवधि, समय और प्रयास की दृष्टि से आने वाली लागत और प्रत्याशित परिणामों से है। जब तक मनुष्य को सही सलाह और बुद्धिमत्तापूर्ण प्रोत्साहन न मिले, सम्भव है कि वह गलत चुनाव कर ले अथवा अपने अध्ययन में रुचि गंवा बैठे। वयस्क निर्देशन से पृथक् कर के वयस्क शिक्षा पर विचार नहीं किया जा सकता।

मालिक और नौकर दोनों के लिए कर्मचारी का सन्तोषजनक समन्वय महत्त्व-पूर्ण होता है, किन्तु कभी-कभी यह समन्वय प्राप्त करना कठिन होता है। अतएव बहुत से व्यापारिक और औद्योगिक संगठन कार्य के नवीनीकरण के लिए और उन कर्मचारियों को तालमेल सम्बन्धी सेवाएँ प्रस्तुत करने के लिए जो तालमेल की व्याव-सायिक या व्यक्तिगत समस्याओं से पीड़ित होते हैं एक सुसंगठित कर्मचारी विभाग रखते हैं। व्यावसायिक तालमेल के निर्देशन पर २०वें अध्याय में विचार किया गया है।

प्रत्येक वयस्क को, चाहे वह अपने व्यावसायिक कार्य में कितनी ही रुचि क्यों न रखता हो, खेल के लिए अवकाश चाहिए। श्रमिक की कुशलता को बढ़ाने का एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन स्वस्थ सामाजिक और मनोरंजन के कार्यों में भाग लेना है। बड़े नगरों में रहने वालों को मनोरंजन का चुनाव भी एक समस्या बन जाती है क्योंकि उनके सामने मनोरंजन के ऐसे बहुत से अवसर होते हैं जिनमें वे भाग ले सकते हैं। छोटे कस्बे में रहने वाले व्यक्ति के सम्मुख मनोरंजन के अवसर बहुत कम होते हैं, अतएव ऐसे अवसरों का निर्माण उसे स्वयं करना पड़ता है। समुदाय द्वारा संचालित मनोरंजन की परियोजनाएँ प्रकार और राशि की दृष्टि से देश भर में भिन्न-भिन्न होती हैं। जिन समुदायों में अवकाशकालीन कार्य बड़ी संख्या में व अत्यन्त मनोरंजक और महत्त्वपूर्ण होते हैं, उनमें बहुत से व्यक्ति या तो उनके विषय में अन-भिज्ञ होते हैं या उनमें भाग लेने में संकोच करते हैं। समुदाय-केन्द्रित निर्देशन सेवाएँ लोगों को ऐसे क्षेत्रों में आकर्षित करने के लिए बहुत कुछ कर सकती हैं जो आनन्दप्रद भी हैं और शिक्षाप्रद भी।

यदि पुरुषों और स्त्रियों को सरकारी मामले में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेने के नागरिक अधिकारों का प्रयोग करना है तो उन्हें नित्यप्रति घटने वाली घटनाओं और अपने नागरिक दायित्वों से परिचित रहना चाहिए। उन्हें वस्तुगत दृष्टि से न्यायशील और निष्पक्ष शिक्षा तथा निर्देशन की आवश्यकता है। इस दिशा में श्रीगणेश किया जा चुका है, किन्तु अभी हमें दलगत राजनीति से ऊपर उठने की आवश्यकता है।

अन्तिम किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि समस्त वयस्क व्यक्तियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर स्वयं व्यक्ति और पूरा समाज सर्वांगीण ध्यान दे। शारीरिक या मानसिक रोगियों के अस्पतालों में बहुत अधिक भीड़ होती है। शारीरिक स्वास्थ्य निर्देशन अधिकाधिक सक्रिय हो रहा है। चिकित्सा-सम्बन्धी अनुसंधान, रोगों के सम्बन्ध में सूचनाओं का प्रसार और निषेधात्मक उपायों का प्रयोग तथा स्वास्थ्य क्लिनिक के कार्य अमेरिकन जनता के शारीरिक स्वास्थ्य में प्रशंसनीय सुधार कर रहे हैं।

किन्तु मानसिक स्वास्थ्य निर्देशन का कार्यक्रम अभी संतोषजनक स्थिति पर नहीं पहुँचा है; भावनात्मक अव्यवस्था और मानसिक असन्तुलन के मामले बहुत बड़ी संख्या में आते हैं। वर्तमान स्थिति का सामना करने के लिए समस्त अमेरिकनों के संगठित प्रयास की आवश्यकता है। भावनात्मक नियंत्रणों के विकास और वातावरण में विद्यमान गलत तालमेल की स्थितियों की वृद्धि के विषय में निर्देशन की आवश्यकता है। स्त्री-पुरुषों को अपना जीवन नियमित बनाने और दूसरे लोगों की वातावरण-जन्य स्थितियों को सुधारने के लिए सहायता देनी चाहिए ताकि मानसिक रोगों को रोका जा सके, मानसिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखा जा सके और मानसिक रोगियों की चिकित्सा के लिए अधिक सुविधाएँ उपलब्ध की जा सकें। उच्चतर आत्म-निर्भरता और आत्म-प्राप्ति के विकास के माध्यम से वयस्कों के तालमेल के लिए निर्देशन सेवाओं का एक कार्यक्रम में समन्वय करना चाहिए।

शैक्षिक अध्ययन की एक अमेरिकन परिषद्, मानसिक स्वास्थ्य के लिए परामर्श कार्य (Counselling for Mental Health) जीवन के उन संतुलनों का विशेषण करती है जिन पर मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए निर्देशन सेवाओं की स्थापना करते समय विचार करना चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य कोई स्थायी स्थिति नहीं है, एक बार अस्वस्थता आ जाने पर स्वास्थ्यप्रद स्थिति बिना प्रयत्न के नहीं रखी जा सकती। मानसिक स्वास्थ्य में शक्तिशाली संतुलन होता है, और है। बल और दबाव के मध्य रहने वाला यह भावनात्मक संतुलन है जिसके विषय में हमें निरन्तर तालमेल को खोज करनी चाहिए।

जीवन के कुछ निम्नलिखित रूप हैं जिनके सम्बन्ध में हम में से प्रत्येक को अपना संतुलन निरन्तर बनाये रखना चाहिए :

एक ओर है	जिनके विरुद्ध संतुलन रखना चाहिए
१. किसी की सम्पत्ति	१. किसी की देनदारी
२. किसी की सम्पत्ति	२. दूसरे की सम्पत्ति
३. प्रेम, सहानुभूति और ज्ञान का दान	३. प्रेम, सहानुभूति और ज्ञान की प्राप्ति
४. कार्य का आनन्द	४. खेल का आनन्द
५. गतिविधि का आनन्द	५. आराम और मौन का आनन्द

एक ओर है	जिनके विरुद्ध संतुलन रखना चाहिए
६. सहयोगपूर्वक कार्य करने का आनन्द	६. अकेले कार्य करने का आनन्द
७. सफलता का आनन्द	७. असफलता को स्वीकार करने की योग्यता
८. कभी-कभी अपनी निजी असमर्थताओं को असफलता का कारण मानना	८. कभी-कभी असफलता का कारण, वातावरणजन्य कठिनाइयों को मानना
९. सोचने की योग्यता	९. अनुभव करने की योग्यता
१०. नेता बनने की योग्यता	१०. अनुयायी बनने की योग्यता
११. अपनी योग्यताओं का अधिकतम उपयोग करने की क्षमता	११. इस बात को समझने की क्षमता कि कुछ शक्तियाँ हमारे नियन्त्रण के बाहर हैं
१२. हमारी प्रेरणा में चेतनापूर्ण तत्त्वों के महत्त्व को समझने की योग्यता	१२. हमारी प्रेरणा में अचेतन तत्त्वों के महत्त्व को समझने की योग्यता
१३. मस्तिष्क का सम्मान	१३. शरीर का सम्मान
१४. अपनी निजी लैंगिक जाति	१४. विपरीत लैंगिक जाति
१५. केवल व्यक्ति होने के नाते किसी का मूल्य	१५. विश्व की विशालता
१६. आयु का महत्त्व	१६. जन्म से पूर्व का भूतकाल और मृत्यु के पश्चात् आने वाले वर्ष

ऊपर दिये गये बलों में सफलतापूर्वक स्थापित (अथवा पुनस्स्थापित) संतुलन से केवल मानसिक स्वास्थ्य ही नहीं अपितु उसके लिए भावी मानसिक स्वास्थ्य का भी आश्वासन प्राप्त होता है जो उसे सुरक्षित रख सके।*

वयस्क निर्देशन के लिए परामर्श-कर्मचारी

वयस्क निर्देशन सेवा के लिए सामान्य चतुर्मुखी प्रतिभासम्पन्न परामर्शदाता और मानसिक रोग चिकित्सक, डाक्टर, मनोवैज्ञानिक और क्लिनिक-अधिकारी जैसे विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। अभी हाल तक वयस्कों के लिए ऐसे विशेष निर्देशन परामर्शदाताओं की व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी, जैसी कि प्रारम्भिक स्कूल और माध्यमिक स्कूल के छात्रों के लिए और यहाँ तक कि कालेज के छात्रों के लिए समझी जाती थी। स्पष्ट रूप से यह विश्वास किया जाता कि स्त्री-पुरुष अपने लिए समन्वय कर सकते थे। किन्तु उपलब्ध साक्षी से ज्ञात होता

* के० एच० मूलर तथा अन्य, Counselling for Mental Health, ऐसे अध्ययनमाला ६, संख्या ८, पृष्ठ २५-२६। शिक्षा पर अमेरिकन परिषद्, वाशिंगटन डी०सी०, १९४७ अनुमति लेकर उद्धृत।

है कि स्कूलों में न पढ़ने वाले नवयुवकों और वयस्कों को व्यक्तिगत, शैक्षिक, व्यावसायिक और गैर-व्यावसायिक निर्देशन की बहुत अधिक आवश्यकता होती है।

सम्भव है कि मुख्य परामर्शदाता ऐसा व्यक्ति हो जो वयस्क केन्द्र का अधिकारी हो। यदि वह भली-भाँति प्रशिक्षित है और उसका चुनाव इसलिए किया गया है कि वह वयस्कों के तालमेल की समस्याओं से निबटने और उसका समाधान करने की क्षमता सिद्ध कर चुका है तो यह आशा की जा सकती है कि केन्द्र सहायता चाहने वाले व्यक्तियों की भली-भाँति सेवा कर सकेगा। प्रमुख परामर्शदाता को ऐसे कर्मचारियों की सहायता प्राप्त होनी चाहिए जो निर्देशन और सम्बन्धित क्षेत्रों में रुचि रखते हैं तथा उनके विषय में कुछ जानते हैं। वयस्कों को परामर्श देने के कार्य से सम्बन्धित व्यक्तियों को ऐसा प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए जिससे वे उपलब्ध स्रोतों का उपयोग कर सकें और निम्नलिखित क्षेत्रों में निर्देशन प्राप्त कर सकें :

छात्रों का नवीनीकरण	छात्रों की गतिविधियाँ
शैक्षिक परामर्श	कल्याण कार्यक्रम
व्यक्तिगत परामर्श	अन्य शिक्षा संस्थाओं या
व्यावसायिक परामर्श	निर्देशन सेवाओं में समीकरण
पाठ्यक्रम व शैक्षणिक परामर्श परीक्षण	अनुसंधान और प्रयोगकार्य
	सामुदायिक सम्बन्ध

वयस्कों के लिए अध्यापक परामर्शदाता वयस्कों का प्रत्येक अध्यापक परामर्शदाता होता है, चाहे वह कक्षा के शिक्षण पर पूरा समय लगाये या नहीं। नवयुवक की अपेक्षा वयस्क द्वारा ऐसे अध्यापक से प्रश्न पूछे जाने की अधिक संभावना है जिसमें उनका विश्वास होता है। चूँकि प्रौढ़ व्यक्तियों को पढ़ाने वाले बहुत से व्यक्ति अंशकालीन कर्मचारी होते हैं और चूँकि ये पाठ्य-विधियाँ ऐसे समय में पढ़ाई जाती हैं जो व्यस्त व्यक्तियों के लिए सुविधाजनक होता है, अतएव चुने हुए अध्यापक वे ही व्यक्ति हो सकते हैं जो केवल अध्यापकों के रूप में ही योग्य नहीं होते अपितु जो दूसरे व्यक्तियों में भी रुचि लेते हैं और जिनमें परामर्श कार्य की क्षमता होती है।

अध्यापक को व्यक्तिगत तालमेल की समस्याओं; विषय; कक्षा और कार्यक्रम; उपचारात्मक शिक्षण; पृष्ठभूमि रखने वाली पाठ्य-विधि को सम्पन्न बनाने के लिए कक्षा तथा कक्षा के बाहर की गतिविधियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। कक्षाएँ इतनी छोटी होनी चाहिएँ कि प्रत्येक छात्र को अध्यापक विशेष सहायता प्रदान कर सके। वयस्क शिक्षार्थी सामान्यतया सहयोग करते हैं क्योंकि वे अध्ययन कार्यों में भाग लेकर सफलता प्राप्त करने की अपेक्षा कुछ और प्राप्त करना चाहते हैं।

वयस्क छात्रों द्वारा जो समस्याएँ अध्यापक के विचारार्थ प्रस्तुत की जाती हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार की होती हैं :

१. समुदाय में आने वाला नया व्यक्ति अपने पड़ोसियों से कैसे परिचित हो सकता है ?

२. क्या ऐसे व्यक्ति में अपने सामाजिक जीवन को केन्द्रित करना वाँछनीय है जो उसी व्यवसाय या कार्य में हो ?
३. स्त्री-पुरुष दोनों समुदायों में मित्र बनाना क्यों महत्त्वपूर्ण है ?
४. क्या लोकप्रिय होने के लिए यह आवश्यक है कि वह व्यक्तिगत स्वार्थों को समूह के स्वार्थों के सम्मुख गौण कर दे ?
५. क्या बच्चों को अपने अभिभावकों की समस्त सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित किया जाना चाहिए ?
६. क्या गृहिणियों के हेतु सामुदायिक सेवा के लिए कोई केन्द्रीय अभिकरण हो सकता है ?
७. क्या विवाहित व्यक्तियों को अपने से बड़े सम्बन्धियों को अपने सामाजिक कार्यों में सम्मिलित करना चाहिए ?
८. समुदाय में ऐसे अवकाश-कालीन कार्य कौन से हैं जिनमें आनन्दपूर्वक भाग लिया जा सकता है ?

यदि वयस्क व्यक्ति अविवाहित होता है तो वह इस प्रकार के प्रश्नों पर अध्यापक या सलाहकार से बातचीत करना चाहता है :

१. क्या विवाह से पहले यह जाना जा सकता है कि दूसरा व्यक्ति अच्छा पति या पत्नी सिद्ध होगा ?
२. यदि चुने हुए जीवन-साथी को परिवार की स्वीकृति न मिले तो नवयुवक या नवयुवती को क्या करना चाहिए ?
३. क्या बीस-वर्षीया लड़की को ४० वर्ष के पुरुष से विवाह करना चाहिए ?
४. विगत प्रेम-प्रसंगों के विषय में क्या किसी पुरुष या स्त्री को अपने साथी से कुछ कहना चाहिए ?
५. क्या अभिभावकों को नव-दम्पति की आर्थिक सहायता करनी चाहिए ?
६. क्या विवाह करने के पश्चात् स्त्री या पुरुष को पुरानी मित्रताएँ तोड़ देनी चाहिएँ ?

यदि दम्पति विवाह के प्रारम्भिक वर्षों में होते हैं तो वे इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तरों में रुचि रखते हैं :

१. संतोषजनक और स्वस्थ दाम्पत्य जीवन कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?
२. क्या संतान हो जाने के पश्चात् दम्पति से यह आशा की जा सकती है कि वे सामाजिक कार्यों का परित्याग कर दें ?
३. पत्नी को किस सीमा तक अपने पति के व्यावसायिक कार्य में रुचि प्रदर्शित करनी चाहिए ?
४. क्या पति को घरेलू कार्यों में योग देना चाहिए ?
५. क्या यह वाँछनीय है कि जीवन-साथी के सम्बन्धी दम्पति के साथ रहें ?
६. दूसरे व्यक्ति की भूलों को सुधारने के लिए क्या करना चाहिए ?

विवाहित जीवन के मध्यकाल में दम्पति में से कोई न कोई व्यक्ति इन मामलों के सम्बन्ध में सलाह माँग सकते हैं :

१. पति-पत्नी का झगड़ा कैसे कम किया जा सकता है ?
२. आनन्दपूर्ण वैवाहिक जीवन के लिए क्या बच्चे आवश्यक हैं ?
३. क्या वैवाहिक जीवन में इस तथ्य को हस्तक्षेप करना चाहिए कि स्त्री अपने प्रौढ़त्व पर पहुँच चुकी है ?
४. यदि यह ज्ञात हो जाय कि उसका जीवन साथी अब उससे प्रेम नहीं करता तो उसे क्या करना चाहिए ?
५. प्रौढ़ दम्पति को किस सीमा तक सामाजिक कार्यों में संयुक्त रूप से भाग लेना चाहिए ?

अधिक वयोवृद्ध व्यक्ति अथवा उनके तालमेल के विषय में किसी भी आयु में ये प्रश्न पूछे जा सकते हैं :

१. क्या वयोवृद्ध व्यक्तियों को अपने बच्चों के साथ रहना चाहिए ?
२. वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल का दायित्व उनके परिवार पर होना चाहिए या समाज पर ?
३. वृद्धावस्था की समस्याएँ पुरुष के लिए अधिक कठिन होती हैं या स्त्री के लिए ?
४. वृद्ध स्त्री-पुरुषों के लिए किस प्रकार के मनोरंजन वांछनीय हैं ?
५. मनुष्य अपनी वृद्धावस्था के लिए सर्वश्रेष्ठ तैयारी कैसे कर सकता है ?

जब स्त्री-पुरुष अपने व्यावसायिक कल्याण की बात सोचते हैं तो वे अपने अध्यापक या परामर्शदाता से ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं :

१. अधिक महत्त्वपूर्ण क्या है—आर्थिक सुरक्षा या कार्य का आनन्द ?
२. अच्छे पदों की खोज के लिए विश्वसनीय माध्यम कौन-से हैं ?
३. भावी मालिक को अपने आपको बेचने की सर्वश्रेष्ठ रीति क्या है ?
४. यदि परिषद् और मित्रों को छोड़ना आवश्यक हो जाय तो क्या किसी व्यक्ति को घर से दूर नौकरी कर लेनी चाहिए ?
५. यदि किसी व्यक्ति को परिवार का भरण-पोषण करना पड़ता है तो क्या उसे ऐसी स्थायी नौकरी में लगे रहना चाहिए जिसमें कि उसे कोई आनन्द नहीं है अथवा उसे नया प्रयास करना चाहिए ?
६. नौकर को अपने मालिक के साथ कैसे मैत्रीपूर्ण होना चाहिए ?
७. जिस मालिक को वह पसन्द नहीं करता, उसके साथ वह कैसे समन्वय कर सकता है ?
८. मालिक के रूप में कुशल किन्तु असंतुष्ट कर्मचारी के साथ क्या करना चाहिए ?

सामाजिक कार्यों के सम्बन्ध में निम्न प्रकार के प्रश्न होते हैं जिनके विषय में वयस्क व्यक्ति निर्देशन की इच्छा कर सकते हैं :

१. क्या प्रत्येक वयस्क को सामाजिक या राजनैतिक क्लब का सदस्य बनना चाहिए ?
२. समूह में लोकप्रिय होने के लिए किस सीमा तक किसी व्यक्ति को समूह के हितों के सम्मुख अपने हितों को गौण कर देना चाहिए ?
३. रात्रि में काम करने वालों को किस प्रकार के अवकाशकालीन कार्य उपलब्ध हैं ?
४. परिवार के समस्त सदस्यों को किस प्रकार की अवकाशकालीन गतिविधियों में भाग लेना चाहिए ?
५. क्या गृहिणियों के सामाजिक कल्याण के लिए केन्द्रीय सामुदायिक सेवा की स्थापना करनी चाहिए ?
६. क्या सामुदायिक और नागरिक कार्यों का अधिक प्रचार होना चाहिए ताकि अधिक वयस्क व्यक्ति उनके विषय में जान सकें ?

सामुदायिक निर्देशन सेवाएँ

निर्देशन केन्द्र का मूल्य स्कूलों में न पढ़ने वाले नवयुवकों और वयस्कों को व्यक्तिगत और व्यावसायिक निर्देशन देने के लिए सामुदायिक निर्देशन केन्द्र संगठित किये जा सकते हैं। ऐसे अनेक संगठन वेटेरन्स एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा प्रारम्भ किये गये थे और अब ऐसी सेवाओं के आधार के रूप में कार्य कर रहे हैं जो आजकल प्रदान की जा रही हैं, इससे अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकताओं में भी कमी हुई है। ये केन्द्र सामुदायिक सेवा कार्यक्रम के अविभाज्य अंग बन रहे हैं। समुदाय में ये सेवाएँ स्कूल में पढ़ने वाले समस्त नागरिकों के लिए उपलब्ध हो रही हैं। इस प्रकार के निर्देशन कार्यक्रम की सेवाओं का अन्य सामुदायिक अभिकरणों की गतिविधियों के साथ तालमेल होना चाहिए। किन्तु प्रत्येक अभिकरण को दूसरों के सहयोग के साथ अपनी विशिष्ट सेवाएँ जारी रखने की अनुमति होनी चाहिए।

उन विशिष्ट आवश्यकताओं पर—जिनकी पूर्ति सामुदायिक निर्देशन सेवाओं द्वारा की जा सकती है—विचार करते हुए आर० एच० मैथ्यूसन कहता है :

> वयस्क व्यक्तियों द्वारा अभिव्यक्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्देशन केन्द्र जो विशिष्ट सेवाएँ प्रदान कर सकता है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :
>
> समुदाय में विद्यमान शैक्षिक, व्यावसायिक, आर्थिक और अन्य अवसरों अथवा सेवाओं के विषय में उपयोगी जानकारी
>
> अपनी निजी आवश्यकताओं के संदर्भ में अवसरों और सेवाओं का अधिकतम उपयोग करने में व्यक्ति को सहायता
>
> पंगु और असमर्थ व्यक्तियों से लिए विशिष्ट सहायता

भावनात्मक बाधाओं या असंतुलन की समस्या से पीड़ित व्यक्ति को व्यावसायिक सहायता

उपयुक्त नौकरी की खोज

आर्थिक, वित्तीय और वैधानिक कठिनाइयों से निपटने के लिए सहायता

घर व पारिवारिक जीवन; वैवाहिक समस्याओं की कठिनाइयों के साथ तालमेल करने में सहायता।*

निर्देशन केन्द्र के कर्मचारियों के पास ऐसे साधन होने चाहिएँ जिनके द्वारा वे वयस्कों और उनकी समस्याओं के समाधान में विशेष रूप से सहायता दे सकें। ऐसा न हो कि कोई निर्देशन सलाहकार अपने आपको ऐसी स्थिति में अनुभव करे जिसकी सूचना एक स्नातक छात्र ने कालेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षण का सुधार करने के सम्बन्ध में दी थी। निर्देशन में दो अपर्याप्त पाठ्य-विधियों का अध्ययन करने के पश्चात् उसे अन्य वयस्कों को उनकी व्यक्तिगत समस्या के समाधान के कार्य में सहायता देने का कार्य सौंपा गया। जब उसने प्रथम परामर्शपात्र से साक्षात्कार किया तो वह भयभीत हो गया क्योंकि उसे प्रतीत हुआ कि वह प्रस्तुत की गई तालमेल की समस्या को सुलझाने में असमर्थ था और उसे स्पष्ट रूप से यह स्वीकार करना पड़ा। निर्देशन को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि परामर्शदाता को अधिक अच्छी तैयारी करनी चाहिए। व्यक्तियों को तब तक उत्तरदायी पदों पर नियुक्त नहीं करना चाहिए जब तक कि वे प्रशिक्षण और अनुभव द्वारा इतने योग्य न हो जाएँ कि वयस्क स्तर पर उठने वाली समस्याओं का समाधान कर सकें। समुचित अभिकरणों में विशेषज्ञ होने चाहिएँ और गंभीर मामलों को निर्णय के लिए आगे भेजने की अनुमति होनी चाहिए।

वयस्कों के लिए परामर्श सेवा

जैसा कि हम जानते हैं, वयस्कों के लिए परामर्श सेवाओं की स्थापना द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् युद्ध से लौटने वाले सैनिकों को शैक्षिक और व्यावसायिक परामर्श देने के लिए हुई थी। जब परामर्श-कार्य के लिए सैनिकों की माँग कम हुई तो इन सेवाओं का विस्तार सामान्य वयस्कों के लाभार्थ किया गया। प्रारम्भ में ऐसे कार्यक्रम कालेजों, स्कूल प्रणालियों अथवा सामुदायिक अभिकरणों से संबद्ध थे। उसके पश्चात् इनमें से अनेक कार्यक्रम स्थापित संस्थाओं से पृथक् कर दिये गये, किन्तु कम शुल्क लेने वाले निजी अभिकरणों के रूप में उन्होंने अपना परामर्श-कार्य जारी रखा। दुर्भाग्य से, अब भी हमारे यहाँ वयस्कों को परामर्श देने वाले केन्द्रों की संख्या काफी कम है जो उन बहुत से वयस्कों और स्कूलों में न पढ़ने वाले नवयुवकों की सेवा कर सकें जिन्होंने अपनी शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने के लिए विशेषज्ञों की सहायता के व्यावहारिक मूल्य को समझना प्रारम्भ कर दिया है।

* आर० एच० मैथ्यूसन, Guidance Policy and Practice, संशोधित संस्करण, पृ० ३३१, हार्पर एण्ड ब्रादर्स, न्यूयार्क, १९५५। अनुमति से उद्धृत।

अनौपचारिक बनाम संगठित निर्देशन वयस्कों के अधिकांश अध्यापक अपने छात्रों की व्यावसायिक योजनाओं में रुचि लेते हैं और उन पर ध्यान देते हैं। कुछ लोग तो अपेक्षाकृत सरल निर्णयों के क्षेत्र में अनौपचारिक किन्तु श्रेष्ठ परामर्श दे सकते हैं। किन्तु अधिक गंभीर समस्याओं को सुलझाने की स्थिति में छात्र की पर्याप्त निर्देशन सम्बन्धी माँग को पूरा करने के लिए स्कूल-चालित वयस्क शिक्षा के कार्यक्रम में उन संगठित परामर्श सेवाओं को सम्मिलित कर लेना चाहिए जिनका संचालन प्रशिक्षित कर्मचारी करते हैं।

वयस्कों के लिए सुनियोजित और पर्याप्त निर्देशन कार्यक्रम नई से नई व्यावसायिक जानकारी प्रस्तुत करता है, व्यक्तियों को अपनी अभिरुचियों और क्षमताओं का मूल्यांकन करने में सहायता देता है, प्रशिक्षित परामर्श सेवाएँ प्रस्तुत करता है, उपयुक्त व्यावसायिक तैयारी की व्यवस्था करता है, नौकरी दिलाने वाली सेवाएँ बनाये रखता है और ऐसी निरन्तर सम्बन्ध बनाये रखने वाली सेवाओं का प्रबन्ध करता है जो व्यक्ति को अपने कार्य से तालमेल करने में सहायता देती हैं। इसके अतिरिक्त, निर्देशन कर्मचारी नौकरी के तत्कालीन अवसरों, वैज्ञानिक उन्नति के लिए अपेक्षित प्रशिक्षण में होने वाले सुधारों और व्यावसायिक परिवर्तन के अन्य क्षेत्रों की जानकारी देते हैं।

साक्षात्कार बच्चों और किशोरों के निर्देशन की भाँति वयस्कों के परामर्श-कार्य का केन्द्रीय बिन्दु व्यक्तिगत विचार-विनिमय अथवा साक्षात्कार है। वयस्क स्तर पर होने वाली बहुत-सी शैक्षिक और व्यावसायिक समस्याएँ समान होती हैं। फिर भी व्यक्ति की विशिष्ट समस्या के संतोषजनक समाधान के लिए महत्त्व रखने वाले सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत तत्त्व अनेक और भिन्न-भिन्न होते हैं। अतएव सफल सहायता प्रदान करने के लिए परामर्शदाता को परामर्शपात्र के सम्बन्ध में जानकारी की संचित पृष्ठभूमि होनी चाहिए, इसके साथ ही उसे साक्षात्कार या सम्मेलनों की श्रृंखला में उसके बारे में सम्बन्धित तथ्यों का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

परामर्शदाता की साक्षात्कार की विधि चतुराई और सावधानी के युक्त होनी चाहिए। वयस्क परामर्शपात्र सहायता के लिए चाहे कितना ही उत्सुक क्यों न हो, किन्तु वह परामर्शदाता का वास्तविक या काल्पनिक हस्तक्षेप सहन नहीं कर सकता, वह अपने मानस को दूसरे वयस्क, संभवतः उससे कम आयु के व्यक्ति के सम्मुख नंगा करना नहीं चाहता। कभी-कभी समस्या जितनी ही अधिक गंभीर होती है, उतना ही अधिक व्यक्ति के असहयोगी होने की आशंका रहती है। तभी अनुभवी शैक्षिक या व्यावसायिक परामर्शदाता उस मामले को उपयुक्त विशेषज्ञ या सामुदायिक अभिकरण के पास भेज देता है।

सतत शिक्षा के लिए निर्देशन अमेरिका में लगभग तीन-चौथाई लड़के और लड़कियाँ कालेज की शिक्षा प्राप्त नहीं करते। इन नवयुवकों और नवयुवतियों की शैक्षिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और व्यावसायिक अभिरुचियों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। उन्होंने अपने प्राथमिक और हाई स्कूल के वर्षों में संभवतः कुछ

सहायता प्राप्त की हो, किन्तु जो कालेज जाते हैं उनसे कहीं अधिक इन नययुवकों को निरन्तर निर्देशन की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षित व्यक्ति जानते हैं कि इन वयस्क किशोरों और युवक वयस्कों को अपने सर्वश्रेष्ठ हितों को आगे बढ़ाने और परिपक्व व्यक्तियों के रूप में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के लिए कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है।

जब कि वयस्क व्यक्तियों ने अपनी दृष्टि से अपनी औपचारिक स्कूली शिक्षा समाप्त कर ली है और उत्पादक-कार्य के क्षेत्र में प्रविष्ट हो गये हैं तब उनके निरन्तर अध्ययन के लिए केवल बहुत से अवसर ही प्रदान नहीं किए गये, अपितु वे अधिकाधिक संख्या में इन अवसरों से लाभान्वित हो रहे हैं। वयस्क शिक्षा के कार्यक्रमों में इतने अधिक विषय होते हैं कि उसके स्कूल के प्रारम्भिक अनुभवों के विपरीत अब वयस्क छात्र स्नातक परीक्षाओं की अपेक्षाओं की पूर्ति करने के स्थान पर अपनी तात्कालिक रुचियों को दृष्टि में रखकर पाठ्य-विधियों का चुनाव कर सकता है।

यदि कोई वयस्क व्यक्ति ऐसी पाठ्य-विधि लेता है जो उसकी विद्यमान अभिरुचियों और उत्तरदायित्वों से व्यावहारिक रूप मे संबद्ध है तो उस पर पूरा ध्यान देने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती। जो अभिभावक बच्चों की देखभाल की कक्षा में अध्ययन करते हैं, वे कक्षा में पढ़े हुए सिद्धान्तों अथवा व्यावहारिक बातों को अभिभावक-शिशु सम्बन्धों में अपनी दैनिक दिनचर्या में क्रियान्वित करने का प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार वह कर्मचारी जिसके अध्ययन का उद्देश्य उस कार्य में सुधार करना होता है जिसे कि वह दिन में करता है, अपने अध्ययन की सामग्री को अपने कार्यों में प्रयुक्त करने का प्रयत्न करता है।

संगीत, कला, साहित्य, सामाजिक अध्ययन और सम्बन्धित विषय जैसे सामान्य सांस्कृतिक विषय बीच-बीच में आराम देने का कार्य कर सकते हैं। पाठ्य-विधि में विद्यार्थी जो रुचि लेता है, वह उसे आनन्दपूर्वक अध्ययन करने की प्रेरणा देती है। अध्ययन से सम्बन्धित पढ़ाई के अतिरिक्त कोई भी गतिविधि मनोरंजन मानी जा सकती है; संगीत समारोह में भाग लेना, संग्रहालयों में जाना; पुस्तकें पढ़ना; आर्थिक, राजनैतिक या सामाजिक मामलों से सम्बन्धित सामूहिक वाद-विवादों को सुनना या उनमें भाग लेना, आदि।

वयस्क स्तर पर अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयाँ उन प्रयत्नों के साथ प्रायः अधिक होती हैं जो ऐसे विषय में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए किये जाते हैं जिनका उस व्यक्ति के दैनिक जीवन या सांस्कृतिक अभिरुचियों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। वयस्क के लिए प्रणालीबद्ध अध्ययन करना सदैव सरल नहीं होता। भावी या प्रत्याशित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विषय सामग्री का अध्ययन करना जिसका वर्तमान जीवन या अभिरुचियों से तो कोई सम्बन्ध नहीं है किन्तु जिसमें कुशलता प्राप्त करना आवश्यक है, उसके लिए भारी प्रयत्न की आवश्यकता होती है। छात्र को यह अनुभव हो सकता है कि वह सामग्री का उपयोग करना नहीं जानता; किसी विषय पर विचार करने वाले अध्यापक के विचारों को वह नहीं समझ पाता; पढ़ाई में वह

एकाग्र चित्त नहीं हो पाता और (सबसे अधिक गंभीर बात यह है कि) वह हतोत्साह होकर यह निर्णय कर ले कि उसके प्रयत्नों का समुचित फल नहीं निकल रहा है। ऐसे मामलों में रुचि रखने वाले परामर्शदाता द्वारा दिये गये प्रोत्साहन में निर्देशन की महत्त्वपूर्ण संभावनाएँ निहित होती हैं।

शिक्षा के प्रति वयस्कों की रुचि और रवैया वयस्क शिक्षा की एक पाठ्य-विधि में भी विद्यार्थियों में अनेक प्रकार से परस्पर भेद होता है : आयु, व्यवसाय, शैक्षिक पृष्ठभूमि, मानसिक योग्यता, महत्त्वाकांक्षा और रवैया। फिर भी उनमें एक बात समान होती है, और वह यह कि वे अपना ज्ञान, कुशलता और रुचि के किसी क्षेत्र में, यथा श्रेष्ठ पारिवारिक रहन-सहन, व्यावसायिक उन्नति, अधिक सांस्कृतिक बोध, किसी कला के विकसित मूल्यांकन या किसी खेल या मनोरंजन के कार्य में विकसित कुशलता में प्रवृत्ति का सुधार करने के लिए उत्सुक होते हैं।

इन वयस्क छात्रों के पास पार्श्व ज्ञान या अनुभव से प्राप्त प्राविधिक जानकारी पर्याप्त हो सकती है; वे आलोचक होते हैं; वे विशेषताओं (credits) का संग्रह न करके शीघ्रता से और भलीभाँति सीख लेना चाहते हैं। वे ऐसे प्रेरक अध्यापक चाहते हैं जो पाठ्य सामग्री में पूर्णतः पारंगत हों और जिनकी शिक्षण-पद्धति उन्हें न्यूनतम प्रयत्न से सीखने में सहायता देती है। वे कक्षा के वाद-विवाद या कार्यों के फलस्वरूप नया ज्ञान या कुशलता प्राप्त करना चाहते हैं। वे कार्य-व्यस्त व्यक्ति होते हैं, अतएव वे नहीं चाहते कि कक्षा के समय के पश्चात् उन्हें कठोर पढ़ाई करनी पड़े।

अधिकांश नययुवकों की भाँति वयस्क व्यक्ति भी यह नहीं चाहते कि अध्यापक उनके साथ ऐसा व्यवहार करें जैसा कि बच्चों के साथ किया जाता है। जो वयस्क अंग्रेजी नहीं बोलते, उनकी कक्षा में यह बात विशेष रूप से देखने योग्य है। फिर भी वयस्क नवयुवक अध्यापक पर अधिक निर्भर करते हैं। कुछ लोगों की तो ऐसी प्रवृत्ति होती है कि वे उस समुदाय के अन्य सदस्यों को क्षति पहुँचा कर उसके समय और सहायता पर अपना एकाधिकार जमा लेते हैं। आत्म-बोध के किसी न किसी रूप के प्रति सशक्त प्रेरणा होने के कारण अध्यापक उस शिक्षा और निर्देशन का केन्द्र-बिन्दु बन जाता है जिसकी वयस्कों को खोज होती है। वयस्क व्यक्ति सामाजिक सम्पर्कों के लिए कक्षा द्वारा प्रदान किए गये अवसरों का भी स्वागत करते हैं। वास्तव में, कभी-कभी शैक्षिक-कक्षाओं में पढ़ने का वयस्कों का सबसे शक्तिशाली कारण यह होता है कि वे दैनिक घर के या काम के झंझट से आराम के रूप में कोई सामाजिक हलचल चाहते हैं।

समूह के नेता के गुण समूह का नेता एक पथ-प्रदर्शक और निर्देशक के रूप में कार्य कर सके, इसके लिए यह आवश्यक है कि उसमें कुछ विश्वास पैदा करने वाले गुण हों। अन्य गुणों के साथ उसमें ये गुण होने चाहिएँ : (१) उसे अपने छात्रों में सच्ची रुचि हो, (२) उन्हें और उनकी रुचियों तथा विचारधाराओं को जाने, (३) अपने छात्रों के साथ सहयोग करके कार्य करने का यत्न करे, (४) कक्षा के प्रत्येक सत्र में प्रत्येक छात्र पर ध्यान दे, (५) अपनी पाठ्य-सामग्री में इतना कुशल

हो कि उसकी विधि उपयोगी हो और छात्रों को उसके उत्साह और रुचि में भाग लेने के लिए प्रेरित कर सके, (६) पाठ्य-सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत करे कि उसका अधिकांश कक्षा के घण्टे में ही याद हो सके, (७) मानसिक रूप से मंद छात्रों के मन में लज्जा, अपर्याप्तता या असफलता की भावना को जन्म न लेने दे, (८) हास-परिहास की तीव्र भावना प्रदान करे, (९) अपने छात्रों के स्वास्थ्य और सुरक्षा में रुचि ले, (१०) अवनति की ओर ले जाने वाले वाद-विवाद को हतोत्साह करे और महत्त्वपूर्ण विचार-विमर्श को प्रेरणा दे, और (११) पाठ्य-विधि के अधिवेशनों द्वारा विद्यार्थियों की रुचि और उनकी भाग लेने की प्रवृत्ति का उच्च स्तर बनाए रखे। जो अध्यापक अपने कार्य में इन रवैयों और व्यवहारों का समन्वय करता है, उसे प्रत्येक प्रयत्न में संतोष प्राप्त होता है और विद्यार्थी उसकी तात्कालिक और स्थायी हार्दिक सराहना करते हैं।

वयस्क शिक्षा में निर्देशन

क्लीवलैंड, ओहियो नगर में वयस्क शिक्षा का कार्यक्रम एक शताब्दी से अधिक समय से चल रहा है। अभी तक वह शिक्षा परिषद् के अधीन था। अब नगर के कालेज वयस्कों के लिए विशेष (credit) और साधारण दोनों आधारों पर शिक्षा प्रदान करते हैं। अभी हाल ही वेस्टर्न रिजर्व यूनीवर्सिटी ने ऐसा कार्यक्रम प्रारम्भ किया है जो ६० स्वीकृत श्रेय (credit) प्राप्त कर लेने पर एसोसियेट इन फिलॉसफी की उपाधि प्राप्त करने की अनुमति प्रदान करता है।

स्कूलों के अधीक्षक को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए क्लीवलैंड में वयस्क शिक्षा के निर्देशक डा० राल्फ ई० क्रो ने इस तथ्य की चर्चा करते हुए कहा था कि यद्यपि यह कार्यक्रम छात्रों के छोटे से समूह के साथ सन् १८५० में प्रारम्भ हुआ था तथापि सन् १९५० तक छात्रों की संख्या बढ़कर १५००० से अधिक तक पहुँच गई थी। सन् १९५९ में लगभग २००० कक्षाएँ थीं जिनमें ४०,००० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते थे। इन कक्षाओं में योग्य अध्यापक अंशकालीन आधार पर अध्यापन कार्य करते थे। वयस्कों की ये कक्षाएँ स्कूल भवनों में, औद्योगिक संयंत्रों में, निवास स्थानों में और अन्य सुविधाजनक स्थानों पर लगा करती थीं। टेलीविजन का प्रयोग सन् १९५० में बहुत से वयस्कों को पढ़ाने के माध्यम के रूप में प्रारम्भ हुआ था। क्लीवलैंड के वयस्क शिक्षा के कार्यक्रम में निम्नलिखित क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है : आवश्यकता होने पर मूल प्रारम्भिक विषय : बाहर से आने वालों के लिए अंग्रेजी, हाई स्कूल की पाठ्य विधियाँ, अभिभावक प्रशिक्षण; गृह-निर्माण, व्यवसाय और उद्योग में सुधार ; वितरणात्मक पद्धतियाँ; दृश्य-श्रव्य शिक्षा; सिविल सर्विस की तैयारी और रेडियो तथा टेलीविजन के सिद्धान्त और व्यावहारिक कार्य। क्लीवलैंड स्कूलों का कार्यक्रम पाठ्य-विषयों पर विशेष ध्यान देता है, यद्यपि निर्देशन सेवाएँ भी इसमें सम्मिलित कर ली जाती हैं। यह कार्यक्रम केवल छात्रों के शुल्क से

चलता है। किन्तु इस राशि के पूरक के रूप में संघीय सरकार और राज्य द्वारा व्यावसायिक तथा सेवानिवृत्त सैनिकों की शिक्षा के लिए दिया जाने वाला धन होता है।

आगामी कुछ पृष्ठों में वयस्कों के उस सामुदायिक निर्देशन कार्यक्रम का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जायेगा जिसका विकास शैनक्टेडी, न्यूयार्क में हो रहा है।

शैनेक्टेडी, न्यूयार्क में वयस्कों के लिए निर्देशन सेवाएँ

लक्ष्य और उद्देश्य

शैनेक्टेडी सिविल यूथ कौंसिल का निर्माण मूल रूप में "हाई स्कूलोत्तर कमी की पूर्ति" करने की दृष्टि से ही किया गया था। इसका एक मुख्य कार्य यह था कि समुदाय के युवक वयस्कों पर पढ़ने में हानिकारक प्रभावों को रोकने के लिए यथासम्भव प्रयत्न करे। युद्ध के अन्त तक धीरे-धीरे जब हानिकारक चिन्ताएँ कुछ कम हुई तो यह परिषद् नागरिक कार्यों पर बल देते हुए शिक्षा पर विशेष ध्यान देने लगी और सलाहकर लगभग व्यक्तिगत परामर्शदाता बन गये। समूह की औसत आयु १९ से बढ़कर लगभग २२ या २३ हो गई, और आज भी यही है।

जो व्यक्ति युवक वयस्कों की शिक्षा के अधिकारी हैं उनका आजकल एक तिहाई से अधिक समय निर्देशन कार्य में लग जाता है; एक-तिहाई युवा वयस्क नागरिक परिषद् के कार्यक्रम में व्यतीत हो जाता है और शेष समय बहुत से कार्यों में लग जाता है जिनमें स्कूल छोड़ देने वाले छात्रों से साक्षात्कार करना, कम्युनिटी एम्बेसेडर प्रोजेक्ट के लिए कार्यकारी सचिव के रूप में कार्य करना, स्कूल छोड़ने वाले और हाई स्कूल के स्नातकों के साथ सम्पर्क बनाये रखना तथा इस विषय में अनुसन्धान कार्य करना और युवा वयस्कों की शिक्षा से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सम्बन्धित अन्य मामले सम्मिलित हैं।

शैनेक्टेडी (Schenectady) सार्वजनिक स्कूलों ने उस समय स्कूल के बाहर की शिक्षा और निर्देशन का उत्तरदायित्व आधिकारिक रूप से ग्रहण किया था जब युवा वयस्कों की शिक्षा का कार्यालय स्थापित हुआ था और नॉट टैरेस हाई स्कूल में खोला गया था। यह समिति जिस पर वर्तमान स्थिति का अध्ययन करने और भविष्य के लिए संतोषजनक निर्देशन कार्यक्रम के हेतु सिफारिश करने का दायित्व है, यह रिपोर्ट इस पूर्ण विश्वास के साथ प्रस्तुत करती है कि युवा वयस्कों का निर्देशन हमारे सार्वजनिक स्कूलों की स्वीकृत नीति है। आजकल लगभग २५० युवा वयस्क प्रतिवर्ष लाभान्वित होते हैं जिनमें से बहुत-से सम्पर्क बनाये रखने की नीति से लाभ उठा सकते थे। आवश्यकताओं और सिफारिशों का निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है :

I. स्कूल से बाहर के युवकों के लिए निर्देशन कार्यक्रम

इस समुदाय में स्कूल से बाहर के नवयुवकों के लिए निर्देशन का उपयुक्त वांछनीय और संभव कार्यक्रम क्या हो सकता है ?

(क) स्कूल के बाहर के युवक और युवा वयस्कों में ये सम्मिलित हैं :

१. जल्दी स्कूल छोड़ देने वाले
२. कालेज न जाने वाले हाई स्कूल के स्नातक
३. कालेज छोड़ देने वाले
४. कालेज के वे स्नातक जिन्हें अब भी निर्देशन की आवश्यकता है

स्कूल के बाहर के युवाओं के निर्देशन के लिए कुछ वर्ग-विभाजन होने चाहिएँ : किसे यह शिक्षा दी जाय, कितना निर्देशन उनके लिए उचित रूप से उपलब्ध किया जा सकता है, उन युवकों तक कैसे पहुँचा जाय और वर्तमान स्कूल अभिकरण ऐसे कार्यक्रम में कैसे सर्वाधिक योग दे सकते हैं।

यह विश्वास किया जाता है कि युवा वयस्कों के लिए अधिक और श्रेष्ठ निर्देशन सेवाएँ उपलब्ध करनी चाहिएँ और इन सेवाएँ को प्रदान करने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति यह है कि स्कूल के बाहर के युवकों को परामर्श देने का कार्य हाई स्कूल की नियमित परामर्श सेवाओं का एक अंग बना दिया जाय ।

सफल कार्यक्रम के लिए यह आवश्यक है कि स्कूल के आचार्य और अन्य स्कूल कर्मचारी इसे भलीभाँति समझें और स्वीकार करें। प्रस्तावित कार्यक्रम न्यूयार्क स्टेट ऐप्लायमेंट सर्विस, उद्योगों, कार्यालयों, स्टोरों तथा अन्य नौकरी के स्थानों का सहयोग मान कर चलता है।

अनुसंधान और सम्पर्क बनाये रखने के कार्य के अध्ययन के लिए और अधिक व्यवस्था करने की आवश्यकता है। सोलह वर्ष के लड़के-लड़कियों को या तो स्कूल में होना चाहिये या किसी वैधानिक नौकरी में । इन लड़कों और लड़कियों की स्कूल में रहने की स्थिति का निश्चय करने के लिए आवश्यकता होने पर उन्हें सहायता देने के लिए उनके साथ सम्पर्क बनाये रखना चाहिए । यदि और जब समय मिले तो जल्दी स्कूल छोड़ देने वालों से सम्पर्क साधना चाहिए और जब संभव हो उन्हें सहायता देनी चाहिए ।

(ख) परामर्श सम्बन्धी आवश्यकताएँ

परामर्श सम्बन्धी आवश्यकताओं में सूचना देना, वांछनीय स्वतन्त्रता प्राप्त करने में युवा वयस्कों की सहायता करना, पारिवारिक सम्बन्धों पर विचार करना और शैक्षिक तथा सामाजिक वृद्धि के अवसर प्रदान करना सम्मिलित है।

१. नौकरी

(क) नौकरी से पूर्व
(ख) नौकरी की खोज
(ग) उच्च श्रेणी दिलाना
(घ) पुनः सलाह देना और पुनः काम दिलाना

२. शिक्षा
  (क) व्यक्तिगत सुधार
  (ख) व्यावसायिक उन्नति
  (ग) स्कूल या कालेज में लौटना
  (घ) सांस्कृतिक उन्नति
३. सामाजिक एकीकरण
  (क) अभिसार और विवाह से पूर्व
  (ख) विवाह तथा पारिवारिक समस्याएँ
  (ग) मित्र कैसे बनायें
  (घ) समूह की सदस्यता
  (ङ) समुदाय में भाग लेना
४. वित्तीय तथा आर्थिक समस्याएँ
  (क) बजट बनाना
  (ख) रहन-सहन का व्यय
  (ग) शिक्षा
  (घ) मनोरंजन
  (ङ) पारिवारिक उत्तरदायित्व

II. आवश्यकताएँ

स्कूल से बाहर के युवकों का निर्देशन कार्यक्रम सामान्य निर्देशन की अपेक्षा कुछ अधिक होना चाहिए। यह स्कूल के जीवन और वयस्क काल के रहन-सहन के मध्य खाई पाटने का कार्य करता है। युवा वयस्क शिक्षा का कार्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो नवयुवकों द्वारा बहुधा व्यक्त की गई आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हो सके। वे आवश्यकताएँ इस प्रकार हैं :

  (क) व्यावसायिक प्रगति
  (ख) सामुदायिक नेतृत्व
  (ग) पारिवारिक जीवन
  (घ) अवकाश का लाभप्रद उपयोग
  (ङ) आत्मबोध की विकसित योग्यता
  (च) भावनात्मक समन्वय
  (छ) सतत शिक्षा

III. सिफारिशें

यह सिफारिश की जाती है कि सीनियर हाई स्कूल की वर्तमान परामर्श सेवा का इतना विस्तार कर दिया जाय कि उसमें स्कूल के बाहर के युवक के लिए निम्नलिखित के द्वारा परामर्श सेवाएँ सम्मिलित की जा सकें :

(क) समस्त युवा वयस्कों को निर्देशन और सहायता के द्वारा
(ख) समुदाय में प्रचलित अन्य युवा वयस्कों के कार्यक्रमों से सहयोग के द्वारा
(ग) नवयुवकों की नौकरी में व्यवसाय, उद्योग और स्कूल कार्यालयों के साथ सहयोग के द्वारा
(घ) काउंटी प्रोबेशन डिपार्टमेंट, कानून लागू करने वाले अभिकरणों और समाज सेवा अभिकरणों द्वारा
(ङ) स्कूल में न पढ़ने वाले युवकों के सर्वेक्षण और सम्पर्क साध कर किये जाने वाले अध्ययन द्वारा।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. वयस्कों की निर्देशन आवश्यकताओं की नवयुवकों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं से तुलना कीजिए।
२. वयस्क निर्देशन के कार्यों की सूची बनाइये।
३. वयस्कों द्वारा परामर्शदाताओं से बहुधा पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर दीजिए (पृष्ठ ३९९-४०२)।
४. आपके समुदाय में वयस्क शिक्षा और निर्देशन के कौन-कौन से अवसर प्रदान किये जाते हैं?
५. आपके समाज में वयस्क किस सीमा तक उनके लिए प्रदान की जाने वाली शैक्षिक और निर्देशन सेवाओं से लाभ उठाते हैं?
६. प्रदान की जाने वाली निर्देशन सहायता की इनमें से कौन अधिक कामना करते हैं: युवा वयस्क, प्रौढ़ या वृद्ध।
७. समाज-प्रदत्त निर्देशन सेवाएँ किस प्रकार वयस्कों की निर्देशन विषयक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हो सकती हैं? स्पष्ट रूप से बताइये।
८. सामुदायिक निर्देशन सेवाओं के अधिकारी परामर्शदाताओं के लिए कैसा प्रशिक्षण और अनुभव अपेक्षित है?
९. व्यवसाय को चुनने में किसी व्यक्ति को क्या सहायता दी जानी चाहिए?
१०. अपने साथी श्रमिकों के प्रति श्रमिक को अपने काम पर क्या रवैया अपनाना चाहिए?
११. अपने उस अधिकारी के प्रति श्रमिक को क्या रवैया अपनाना चाहिए जो उसका व्यक्तिगत मित्र है?
१२. मालिक चाहते हैं कि उनके नौकरों में परस्पर अच्छे सम्बन्ध रहें? क्यों? समझाकर बताइये।
१३. माध्यमिक स्कूल, कालेज और वयस्क शिक्षा संस्था जैसे स्कूलों के निर्देशन कर्मचारियों द्वारा किस प्रकार सम्पर्क साधने का कार्य करना चाहिए।
१४. शेनेक्टेडी के वयस्क शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन कीजिए।

१९ पथ-भ्रष्ट का निर्देशन

सामान्य और औसत शब्दों का प्रयोग—जिनका उपयोग मानवीय विकास अथवा व्यवहार के लिए किया जाता है—साधारणतया उन व्यक्तियों का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो ऐसे व्यक्तिगत लक्षण प्रदर्शित करते हैं जो उसी आयु के अधिकांश व्यक्तियों में समान होते हैं। कुछ व्यक्ति अपने किसी न किसी लक्षण की दृष्टि से एक दूसरे से इतने अधिक भिन्न होते हैं कि उन्हें असाधारण समझा जाता है या स्वीकृत स्तर से पृथक् (भ्रष्ट) होने की भाँति असाधारणता भी एक साधारण कल्पना है जिसका अर्थ है साधारण स्थिति से पृथक् होना। जिस व्यक्ति के लक्षण या गुण औसत या सामान्य व्यक्ति से कम होते हैं, उसे असाधारण समझा जाता है, जिसकी विशेषताएँ सामान्य व्यक्ति से अधिक होती हैं उसे महामानव कहा जाता है।

सामान्य स्थिति का निर्णय करने में जिस समूह का अध्ययन किया गया है उसके निर्माण का आकार एक महत्त्वपूर्ण विचारणीय तत्त्व है किन्तु बहुत अधिक पार्थक्य समस्त गुणों में पाया जाता है, चाहे समूह का संगठन कैसा ही क्यों न हो। उदाहरण के लिए ऊँचाई के अध्ययन परिणामों से ज्ञात होता है कि औसत पुरुष औसत स्त्री से अधिक लम्बा होता है। ऊँचाई से पार्थक्य प्रत्येक समूह में होता है अर्थात् अत्यन्त लम्बे (सामान्य से महान्) और अत्यन्त बौने (सामान्य से कम) पुरुष और स्त्री होते हैं।

अपवाद का प्रकार और सीमा

किसी बच्चे को उस समय अपवादस्वरूप, असाधारण, विशिष्ट या पृथक् कहा जाता है जब कि उसकी योग्यता या व्यवहार उस स्तर से विशेष रूप से भिन्न होते

हैं जो उसके समूह के लिए स्वीकार कर लिया गया है। प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्ति से उतना भिन्न होता है जितना कि पैतृक रूप से प्राप्त क्षमता में और उनके विशिष्ट वातावरणजन्य अनुभवों में पले विकासशील और परिपक्व व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभाव में अन्तर होता है।

अपवाद का अर्थ अपवाद या विशिष्ट उस व्यक्ति को कहा जा सकता है जिसे देख कर एक अनभिज्ञ व्यक्ति भी उसे उस समूह के अन्य व्यक्तियों से पृथक् अनुभव करे। स्कूल के दृष्टिकोण से अपवादस्वरूप बच्चा वह होता है जो सामान्य प्रतीत होने वाले बच्चों से शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक या सामाजिक स्थिति में इतना पृथक् हो कि वह "औसत" सामूहिक स्थितियों में अध्ययन से कोई लाभ न उठा सके, वह अपनी पृथक् स्थिति के बावजूद "सामान्य" व्यक्तियों में निर्माणात्मक रूप से रह सके, इसके लिए उसे विशेष शैक्षिक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।

ये पृथकताएँ निम्न प्रकार की हैं जिनके लिए उपयुक्त शिक्षण सुविधाओं की आवश्यकता है :

- शारीरिक और स्वास्थ्य की स्थितियाँ
  - पंगु : दृश्य, श्रव्य, चाल, वाणी
  - लूला या लंगड़ापन
  - हृदय या फेफड़ों की खराबी
  - दुर्बलताएँ
- मानसिक योग्यता
  - प्रतिभासम्पन्न
  - मन्द बुद्धि
- व्यक्तित्व का ढाँचा
  - भावनात्मक असंतुलन
  - सामाजिक गलत तालमेल

यदि स्कूल में पढ़ने की आयु के किसी व्यक्ति को उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में पर्याप्त निर्देशन देना है तो उसके द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली सेवाएँ उसके पार्थक्य के विशेष रूप के अनुकूल होनी चाहिएँ।

पार्थक्य की सीमा वास्तव में कितने व्यक्ति कार्य सम्बन्धी कितनाधिक भेद रखते हैं, इसके सम्बन्ध में सही संख्या उपलब्ध नहीं है। किन्तु यह अनुमान लगाया गया है कि स्कूल-आयु के १०-१५ प्रतिशत बच्चे नियमित अध्यापन-अध्ययन स्थितियों में भाग लेकर अत्यन्त सक्रिय पार्थक्य के कारण अपनी शक्तियों का सफलतापूर्वक विकास करने से रोक दिये जाते हैं। प्रत्येक प्रकार की पृथक्ता या असाधारणता के लिए लगभग प्रतिशत सारिणी ३ में प्रदर्शित किये गये हैं।

सारिणी ३. स्कूल-आयु की जनसंख्या में पार्थक्य की घटनाएँ

अत्यन्त पार्थक्य के रूप	स्कूल-आयु जनसंख्या का लगभग प्रतिशत	
प्रतिभावान (१२० आई क्यू से अधिक)	१.००	
(१२०-१३० आई क्यू)		६.००
मानसिक रूप से मन्द (७० आई क्यू से कम)	१.००	
(७०-८० आई क्यू,)		६.००
गति पंगु	१.००	
वाणी पंगु	५.००	
श्रव्य पंगु	१.२०	
दृश्य पंगु	.२३	
शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएँ	.५०	
व्यक्तिगत समस्याएँ और/या सामाजिक गलत तालमेल	१.००	
योग	१०.६३	१२.००

शारीरिक रूप से पंगु व्यक्तियों की निर्देशन समस्याएँ

साधारण बच्चे में आन्तरिक आकांक्षाओं, चाह और रुचियों का अनुभव होता है, ऐसी आशा की जाती है। ये बातें उसके समवयस्क साथियों की विशेषताएँ हैं। चूंकि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति बहुधा उसकी साधारण स्थिति द्वारा सीमित कर दी जाती है, अतएव यह सम्भव है कि वह निराशाजनक स्थितियों या दशाओं का सामना करे। उदासीन स्थितियों का प्रभाव व्यक्ति पर (१) [विशेष प्रकार के पार्थक्य, (२) उसके प्रति दूसरों के व्यवहार और (३) अपने प्रति, अपनी साधारण स्थिति और अपने साथियों के प्रति, उसमें जिन रवैयों का विकास होता है, के कारण भिन्न-भिन्न होता है।

दृश्य-पंगु स्कूल में पढ़ने वाले लगभग ०.३ प्रतिशत छात्र अन्धे होते हैं और .२ प्रतिशत मन्द दृष्टि होते हैं। जब कि सम्भावित सुधार के सारे प्रयत्न हो चुके होते हैं तो नवयुवक की दृष्टि अच्छी आँख में घटकर २०/७० और २०/२०० के मध्य आ जाती है, उसकी समस्याएँ पूर्ण अन्धे व्यक्ति से भिन्न होती हैं। जो व्यक्ति मंद दृष्टि लेकर उत्पन्न होता है, वह निरन्तर अपने द्वारा देखी जाने वीली वस्तुओं की तुलना उस बात से करता है जो दूसरे व्यक्ति उसी वस्तु के विषय में कहते हैं। यह कठिनाई उस समय बढ़ जाती है जब कि वह और दूसरे व्यक्ति इस बात को नहीं

समझते कि उसमें दृष्टि-दोष है। उससे जो देखने की आशा की जाती है उसके सम्बन्ध में उसका त्रुटिपूर्ण विवरण उसके सम्बन्ध में भ्रामक धारणाएँ उत्पन्न कर देता है और यह समझा जाता है वह रुचि नहीं लेता, ध्यान नहीं देता और कभी-कभी उसे मूर्ख भी समझ लिया जाता है।

बच्चे की दृष्टि चिकित्सा के सम्बन्ध में चिकित्सक, अभिभावक और स्कूल के लोग अधिकाधिक सावधान हो गये हैं। सम्भावित प्रसूतिजन्य संक्रामक रोग को रोकने के लिए चिकित्सक नवप्रसूत शिशु की आँखों की चिकित्सा करते हैं। बढ़ने वाले बच्चे के दृष्टि विकास को चक्षु-चिकित्सक सावधानी से देखता है। अभिभावकों को यह चिन्ता रहती है कि यदि दृष्टि दोषपूर्ण है तो इसके लक्षणों से वे शीघ्र अवगत हो जाएँ। बहुत-सी स्कूल प्रणालियों में एक निश्चित अवधि पर समस्त छात्रों की दृष्टि-परीक्षा अनिवार्य रूप से की जाती है; जिन्हें आवश्यकता होती है उनके लिए उपयुक्त चश्मों की सिफारिश की जाती है।

स्कूल में पढ़ने वाले अन्धे और मंद दृष्टि बच्चों की एक गम्भीर समस्या यह है कि वे अच्छे सामाजिक रवैयों का विकास नहीं कर पाते। वे दृष्टि-दोष रहित समवयस्क साथियों में अपने लिए स्थान प्राप्त करना चाहते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति तभी हो सकती है जब कि वे स्कूल की गतिविधियों में इतना अधिक भाग लें जितना कि वे अपनी असमर्थता के बावजूद ले सकते हैं। अतएव यह उचित होगा कि वे अपनी शिक्षा नियमित कक्षाओं में प्राप्त करें। माध्यमिक और कालेज स्तरों पर यह अनिवार्य बात होनी चाहिए क्योंकि ब्रेल में अध्ययन सम्बन्धी साधन उपलब्ध हैं। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि पंगु छात्र—चाहे वह स्कूल के किसी भी स्तर पर हो—अपने समवयस्क समूह का स्वीकृत सदस्य होना चाहिए। उसके प्रति दूसरों का जो व्यवहार होता है, उसे वह समझता है। यदि उसकी बहुत अधिक सहायता की जाय या उसकी उपेक्षा की जाय तो उसे बुरा लगता है।

श्रव्य-पंगु निपट बहरापन—जो स्कूल के लगभग '०१ प्रतिशत छात्रों को प्रभावित करता है—साधारणतया बच्चे की प्रारम्भिक शैशवावस्था में जाना जा सकता है। चूँकि दृष्टि-दोष की अपेक्षा श्रवण-दोष का ज्ञान कम हो पाता है, बच्चा अपने इस दोष को दीर्घकाल तक छिपा कर रख सकता है। श्रवण-यंत्र के अनेक दोषों के कारण बहरापन हो सकता है। इसलिए शल्य चिकित्सा द्वारा श्रवण-शक्ति को पुनः प्राप्त किया जा सकता है, अथवा श्रवण-उपकरण द्वारा उसमें सुधार किया जा सकता है। साधारणतया ऐसे निपट बहरे बच्चे को शीघ्र सहायता पहुँचाने की आवश्यकता है जिसकी श्रवण-शक्ति पुनः प्राप्त नहीं हो सकती, ताकि वह अपने निःशब्द वातावरण के साथ तालमेल कर सके। लोगों और वस्तुओं को चलते फिरते देखना अथवा किसी व्यक्ति के अधरों को हिलते हुए देखना, किन्तु कुछ सुन न पाना एक दुःखदायी अनुभव होता है।

जन्म से बहरे बच्चे की एक दूसरी कठिनाई यह है कि वह स्पष्ट रूप से बोल नहीं सकता; वह दूसरों की वाणी की नकल नहीं कर सकता और इसलिए ऐसी

भाषा बोलना नहीं सीख सकता जो दूसरे बच्चे सीखते हैं। भूतकाल में निपट बहरों के मध्य बातचीत के लिए संकेतों की एक विशद प्रणाली चलती थी। आजकल जो यह तथ्य स्वीकार कर लिया गया है कि मौखिक वाणी के साथ गले का स्पंदन होता है जो स्पष्ट मौखिक भाषण से भिन्न होता है, वह बहरे बच्चों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। अब उन्हें बोलने वाले व्यक्ति के "अधरों" को पढ़ने के साथ-साथ बोलना भी सिखाया जा सकता है। किन्तु बहरे बच्चे को बोलना सिखाने के लिए अध्यापक के महान् धैर्यपूर्ण प्रयत्न की आवश्यकता होती है। इसके लिए विशिष्ट अध्यापन प्रविधियों की ही आवश्यकता नहीं होती अपितु उस ज्ञानपूर्ण रवैये की भी आवश्यकता होती है जो बच्चे का मनोबल बढ़ाने में सहायता देती है।

श्रवण-दोष-युक्त बच्चे के व्यवहार को अभिभावक और अध्यापक बहुधा गलत समझ बैठते हैं। अतएव वे इस विषय में कुछ नहीं करते। इसका परिणाम यह होता है कि यदि बच्चे के नवयुवावस्था में पहुँचने तक कोई उपचार नहीं किया जाता तो इसका इलाज नहीं हो सकता और अच्छे श्रवण-सहायक का उपयोग आवश्यक हो जाता है। यद्यपि इस यान्त्रिक साधन का मूल्य नवयुवक और वयस्क व्यक्ति समझने लगे हैं, तो भी यह उस सामान्य श्रवण-क्षमता का स्थान नहीं ले सका जो कि उसे बचपन में प्रदान की जा सकती थी। परामर्शदाताओं, अध्यापकों और अभिभावकों पर यह उत्तरदायित्व डाल दिया जाता है कि वे बच्चों के श्रवण सम्बन्धी दोषों की खोज करें और फिर उस दोष के उपचार के लिए तत्काल व्यवस्था करें।

वाणी का दोष वाणी के दोषों का साधारणतया दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकरण किया जाता है: इन्द्रिय-सम्बन्धी और कार्य सम्बन्धी। वाणी की कुछ कठिनाइयाँ रचना या इन्द्रिय-जन्य असाधारणता के कारण होती हैं। इन दोषों में फटा हुआ तालु (cleft palate), कुत्तौष्ठ (harelip), दाँतों की त्रुटिपूर्ण बनावट, वाणी की इन्द्रियों की दोषपूर्ण रचना या मस्तिष्क की चोट सम्मिलित की जा सकती है। यदि स्कूल का परामर्शदाता यह विश्वास करता है कि बच्चे की कठिनाई इन्द्रिय-जन्य है तो बच्चे को समुचित अभिकरण के पास परीक्षार्थ भेज देना चाहिए।

शैशवावस्था में ऐसे वयस्कों का अनुकरण करने से भी वाणी में दोष आ जाता है जो स्वयं वाणी दोष से पीड़ित हैं। इन दोषों में से कुछ हैं; अटपटी वाणी, वाणी पर अपर्याप्त नियन्त्रण और विदेशी स्वराघात। विकासशील व्यक्ति के लिए उस अनाकर्षक वाणी या बोलने के स्वभाव को बदलना या उसका परित्याग करना कठिन हो जाता है जिसका विकास पहले हो चुका है और जो घर और पड़ोस में स्वीकार हो चुका है।

यदि कोई व्यक्ति आगे चलकर यह अनुभव करता है कि उसकी वर्तमान स्थिति में उसकी वाणी असाधारण है, तो उसे धक्का-सा लगता है और भावनात्मक दृष्टि से वह स्वयं को अरक्षित समझता है। अवांछनीय आकार या स्वर के दोष बढ़ जाने पर वह स्वयं को अप्रिय स्थिति में अनुभव कर सकता है। वह समूह का परित्याग कर सकता है, उस समय तक बोलने से इन्कार कर सकता है जब तक कि इसके

लिए उसे विवश न किया जाय अथवा इस आशा से वह कृत्रिम भाषा अपना लेता है कि लोग इस भाषा को पसंद करेंगे।

हकलाने या तुतलाने का कारण बहुधा भारी आघात या गहरा भावनात्मक संघर्ष होता है। कभी-कभी व्यक्ति अनुभव करता है कि जिस गति से वह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है उससे कहीं अधिक तीव्र गति से उसकी विचार-धारा प्रवाहित होती है। इससे भावनात्मक उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है। भावनात्मक दृष्टि से जितना ही उत्तेजित वह होता जाता है, उतना ही बिना संकोच के शब्दों के प्रयोग में उसे कठिनाई होती है। इसके द्वारा भाषा के सामान्य विकास में हस्तक्षेप करने वाली भावनात्मक बाधाएँ घर कर लेती हैं। कक्षा में, विद्यार्थी को ऐसी संघर्षपूर्ण स्थिति से छुटकारा दिलाने के लिए अध्यापक काफी सहायता दे सकता है। हकलाने या तुतलाने वाले व्यक्ति से साक्षात्कार करके परामर्शदाता इस भावनात्मक स्थिति की पृष्ठभूमि में निहित कारण का पता लगा कर उसके रवैयों के परिवर्तन में सहायक हो सकता है। यदि यह कठिनाई गम्भीर हो तो मानसिक रोग चिकित्सक की सहायता ली जा सकती है।

गति-दोष जैसा कि पार्थक्य रखने वाले अधिकांश व्यक्तियों के विषय में सत्य है, चाल की दृष्टि से पंगु व्यक्तियों (गति दोष वाले व्यक्तियों) में वे ही इच्छाएँ और कामनाएँ होती हैं, जो शारीरिक दृष्टि से सामान्य जनों में होती हैं। यदि उनका दोष इतना गम्भीर होता है कि वे उन गतिविधियों में भाग नहीं ले पाते जिनमें उनके साथी भाग लेते हैं तो वे उदासी और निराशा अनुभव करते हैं और अपनी असमर्थता पर क्षुब्ध हो जाते हैं क्योंकि वे मनोरंजक महबहलाव और सामाजिक कार्यों में भाग लेने से वंचित रह जाते हैं। किन्तु अभिभावकों और स्कूल के लोगों के लिए यह संभव होता है कि वे उन्हें अपने दोष को स्वीकार करने और उपयुक्त कार्यों में संतोषजनक सफलता प्राप्त करने में उनकी सहायता करें। इस प्रकार वे नवयुवक अपने साथियों से सम्मान और उनकी मित्रता प्राप्त कर सकेंगे।

कुछ दोषपूर्ण चाल वाले (motor handicaps) व्यक्ति किसी विशेष अंग से पंगु होते हैं। संभव है कि किसी दुर्घटना में उनका कोई अंग नष्ट हो गया हो। इससे उस व्यक्ति की शारीरिक गतिविधियाँ सीमित तो हो सकती हैं, किन्तु व्यापक शारीरिक रचना या मानसिक जागरूकता को कोई क्षति नहीं पहुँचती। उचित निर्देशन प्राप्त होने पर ऐसे पंगु बहुधा अपने स्कूल के कार्य या व्यावसायिक गतिविधि में उच्च कोटि की कुशलता प्राप्त कर सकते हैं और उनमें आनन्दपूर्ण रवैयों का विकास हो जाता है। यदि वे अपनी शारीरिक पंगुता से अपना ध्यान हटा सकें तो वे अपने सम-वयस्कों में सम्मानित व्यक्ति माने जाते हैं।

पंगु व्यक्ति के प्रति अभिभावकों और अध्यापकों का रवैयों अत्यन्त महत्त्व रखता है। या तो पिता आवश्यकता से अधिक समर्पित हो जाता है अथवा बच्चे की शारीरिक क्षति के लिए अपने वास्तविक या काल्पनिक उत्तरदायित्व का बखान करके निरन्तर अपने आपको दोषी बताता रहता है। इस प्रकार का शक्तिशाली व्यवहार

एक ऐसे वातावरण का निर्माण करता है जिसमें पंगु व्यक्ति में आत्म-ग्लानि, आवश्यकता से अधिक परावलम्बन या संभवतः गहरा क्षोभ उत्पन्न हो जाता है। स्वीकृति समझदारी और सहायता का अभिभावकों का रवैया साधारणतया पंगु बच्चे को रचनात्मक, आत्म-दीक्षा के रवैये और व्यवहार का विकास करने के लिए प्रेरित करता है। स्कूल का परामर्शदाता या अध्यापक पंगु व्यक्तियों के रवैयों पर भी शक्तिशाली प्रभाव डालता है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष समस्याएँ कुछ व्यक्तियों को अस्थि रोग, क्षय या मिरगी सम्बन्धी कठिनाइयाँ होती हैं। बहुत से कोमल बच्चे शारीरिक दृष्टि से बहुत दुर्बल होते हैं। किन्तु यदि कोमल बच्चे के स्वास्थ्य पर तीक्ष्ण दृष्टि न रखी जाय तो वह गंभीर रोगों का शिकार हो सकता है। नियमित शारीरिक परीक्षा द्वारा डाक्टर या नर्स यह जान सकती है कि बच्चे में कोई रोग जन्म ले रहा है या नहीं। यदि ऐसे लक्षण प्रतीत हों तो इसमें सुधार करने के लिए चिकित्सक, अभिभावक, स्कूल के लोग और स्ववं नवयुवक आवश्यक कदम उठा सकते हैं।

कोमल या दुर्बल बच्चा घर में हाथों-हाथों पर रखा जाता है और उसे कोई उत्तरदायित्व नहीं सौंपा जाता। कभी-कभी स्कूल के लोग भी उसकी आवश्यकता से अधिक रक्षा करते हैं। यद्यपि प्राथमिक स्कूल का अध्यापक बच्चे की दुर्बल स्थिति के प्रति सहानुभूतिपूर्ण हो सकता है, तो भी उसे वे सुविधाएँ न देकर जो अधिक स्वस्थ बच्चों को नहीं दी जातीं, उसकी सहायता कर सकता है। यदि वयस्क लोग उसकी दुर्बलता पर बहुत अधिक बल देते हैं, तो बच्चा इतना आत्म-केन्द्रित हो सकता है कि वह अन्य बच्चों से आशा करने लगे कि वे उसकी प्रत्येक सनक को पूरा करें, जिसका परिणाम यह होता है कि वे बच्चे उसे नापसंद करने लगते हैं अथवा उससे असंतुष्ट हो जाते हैं। जिस बच्चे की अस्वस्थता स्कूल की उपस्थिति में बाधक नहीं होती, उसे विवेकपूर्ण निर्देशन द्वारा पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम की गतिविधियों में उसके स्वास्थ्य और बौद्धिक योग्यता की सीमा में रहते हुए भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। ऐसा बच्चा इस प्रकार के बाह्य और समाज द्वारा स्वीकृत रवैयों का विकास करे जिनसे वह समाज के किसी भी समूह का लोकप्रिय सदस्य बन सके, इस कार्य में बहुत से अभिभावक और स्कूल के लोग उसको सहायता देने में सहयोग करते हैं।

शारीरिक रूप से पंगु व्यवितयों के लिए निर्देशन सेवाएँ

स्वयं को शारीरिक रूप से पंगु व्यक्ति की स्थिति में रखना कठिन होता है। अंधे, बहरे, लंगड़े-लूले या अन्यथा पंगु व्यक्ति तालमेल की विशिष्ट समस्याओं का सामना करते हैं। इनमें से किसी भी व्यवित के साथ हमारा सम्पर्क केवल दया या सहानुभूति का नहीं होना चाहिए ; वह तो सामान्य, सहयोगपूर्ण सम्बन्ध होना चाहिए। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम पंगु व्यक्तियों को बेकार व्यक्तियों के रूप में न पड़े रहने दें। उसे यह समझने में सहायता देनी चाहिए कि वह अपने

परिवार और अपने समुदाय का एक अविभाज्य अंग बन सकता है और उसे बनना चाहिए।

पुनस्स्थापन पुर्ननिर्माण की प्रक्रिया है। जब हम घर को नया रूप देते हैं तो हम सावधानी से योजना बनाते हैं। जब किसी सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल या पुनः अनुकूल होने के लिए किसी व्यक्ति का पुर्ननिर्माण किया जाता है तो हमें उस प्रतिभा, यंत्र और अवसर की व्यवस्था करनी चाहिए जो उस व्यक्ति को अपनी स्थिति में सुधार करने का अवसर दे सके, और हमें उसको वह भावनात्मक संतोष प्रदान करना चाहिए जो वह अपनी पंगु स्थिति के अनुकूल कार्यों में भाग लेकर प्राप्त कर सके।

पंगु व्यक्ति को अनेक आशंकाएँ होती हैं : सम्मान की क्षति, जीवन-यापन की योग्यता का ह्रास, जिस कार्य को करने में वह निपुण हो गया हो उसका परित्याग करके ऐसे व्यवसाय को अपनाने की आवश्यकता जिसमें वह कम कुशल हो। यदि उसे अपने कार्य में कुशलता प्राप्त करनी है तो उसे आत्म-विश्वास प्राप्त करने तथा बनाये रखने के लिए प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। यदि उसे सहायता नहीं दी गई तो संघर्ष उत्पन्न हो सकते हैं। वह आत्म-चिन्तन करने लगता है और अपने निजी रवैयों से भयभीत हो उठता है। वह नहीं चाहता कि लोग उसे अयोग्य, पंगु या बेकार समझें। वह उसी प्रकार का व्यवहार चाहता है जिस प्रकार का व्यवहार शारीरिक दृष्टि से योग्य व्यक्तियों को दिया जाता है।

शारीरिक रूप से पृथक् स्थिति रखने वाला व्यक्ति ऐसा विश्वस्त मित्र चाहता है, जिससे वह अपनी स्थिति के सम्बन्ध में अपने भावनात्मक रवैयों की निःसंकोच चर्चा कर सके। सहानुभूतिपूर्ण किन्तु वस्तुगत परामर्शदाता या अध्यापक वह व्यक्ति हो सकता है। किन्तु मनोबल के निर्माण का अर्थ केवल विवेक ही नहीं है। पंगु व्यक्ति को (१) स्वतंत्र होने, (२) अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की देखभाल करने, (३) उपयुक्त व्यावसायिक क्षेत्र में कुशल होने, और (४) समुचित पारिवारिक, सामाजिक तथा नागरिक दायित्वों को ग्रहण करने की शिक्षा प्राप्त करने में सहायता देनी चाहिए।

शारीरिक दृष्टि से पृथक् व्यक्ति स्कूल में बहुत-सी स्कूल प्रणालियों की यह नीति है कि वे शारीरिक रूप से पंगु व्यक्ति को यथासंभव नियमित कक्षाओं में शिक्षा प्रदान करती हैं। अभिभावकों, स्कूलों या सामुदायिक अभिकरणों द्वारा की जाने वाली व्यावसायिक देखभाल के अतिरिक्त उन्हें अनेक उपयुक्त सुविधाएँ प्रदान की गई हैं। उनमें से कुछ अत्यन्त समान सुविधाएँ इस प्रकार हैं :

१. जिन छात्रों में कुछ दृष्टि दोष होता है—चाहे वे चश्मा ही क्यों न लगाते हों—उन्हें श्यामपट, नक्शे, सूचनापटों को पढ़ने के लिए कक्षा में स्वतंत्रतापूर्वक घूमने की अनुमति होती है।

२. आंशिक दृष्टि दोष वाले छात्रा के लिए पाठकों के रूप में कुछ चुने हुए सहपाठियों की सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

३. कम सुनने वाले छात्रों को कक्षा में आगे बिठाया जाता है और उन्हें अनुमति होती है कि कक्षा के दूसरे सदस्यों की बात सुनने के लिए वे अपना स्थान बदल लें।

४. लंगड़े या गतिशील कुर्सी पर ही बैठने वाले विद्यार्थी विशेष बसों द्वारा स्कूल को पहुँचाये और वहाँ से वापस लाये जाते हैं, और संभव होने पर उन्हें पहले खंड के कमरे में बिठाया जाता है, या उन्हें 'लिफ्ट' वाले स्कूलों में भर्ती होने की अनुमति दे दी जाती है, चाहे ऐसे स्कूल विद्यार्थी के स्कूल-मंडल से बाहर ही क्यों न हों।

५. माध्यमिक स्कूल के शारीरिक रूप से पंगु विद्यार्थी को रास्ते की भीड़ से बचाने के लिए अपनी कक्षाओं को नियमित समय से पहले ही छोड़ देने की अनुमति दे दी जाती है।

शारीरिक रूप से पंगु व्यक्तियों के लिए इन सुविधाओं के अतिरिक्त बहुत से स्कूल उपयुक्त सुविधाओं या विशेष कक्षाओं की भी व्यवस्था करते हैं। जब कभी और जहाँ कहीं संभव होता है, पंगु विद्यार्थी का कार्यक्रम इस प्रकार बनाया जाता है कि प्रत्येक स्कूल दिवस के कम से कम कुछ अंश में वह नियमित कक्षा में बैठकर अध्ययन कर सके। अनेक स्कूल प्रणालियों में पंगु व्यक्तियों के लिए जो कुछ किया जा रहा है, उसकी रिपोर्ट हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं, देश-भर में इसी प्रकार के बहुत से कार्यक्रम चल रहे हैं।

ग्रेट नैक (Great Neck) स्कूलों में पंगु छात्रों के लिए अनेक अतिरिक्त सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। उदाहरणार्थ, बहुत दुर्बल दृष्टि वाले विद्यार्थियों को बड़े टाइप में छपी पुस्तकें और विशेष लेखन-सामग्री दी जाती है। स्कूल में पढ़ने वाले अंधे छात्र सम्बन्धित अध्यापकों से महत्त्वपूर्ण सहायता पाते हैं। बहरे छात्रों के लिए भी यह सेवा उपलब्ध है। दमे या हृदय रोग (cardiac) वाले छात्रों के लिए स्कूल की सीमित गतिविधियाँ होती हैं।

ग्रेट नैक, न्यूयार्क के स्कूल में वाणी की शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम भी प्रारम्भ किया गया है।

स्कूल वर्ष के प्रारम्भ में प्राथमिक स्कूलों में, प्रवेश करने वाले प्रत्येक छात्र की उच्चारण सम्बन्धी परीक्षा ली जाती है। इन परीक्षाओं के परिणामों से और जिन बच्चों को पिछले वर्ष वाणी सम्बन्धी कठिनाइयाँ रही थीं उनकी पुनर्परीक्षा लेकर रिपोर्ट तैयार की जाती है। प्रत्येक अध्यापक को अपनी कक्षा के छात्र के विषय में रिपोर्ट दे दी जाती है। जिनके दोष भारी नहीं होते, उन्हें बता दिया जाता है कि वे उन दोषों को कैसे दूर कर सकते हैं, और जिनमें भारी दोष होते हैं उन्हें विशेष वाणी-उपचार के लिए भेज दिया जाता है। सेवा-रत अध्यापकों के लिए आयोजित कक्षाओं और सम्मेलनों द्वारा प्रशासकों को वाणी विषयक समस्याओं की प्रकृति, कारणों और परिणामों से परिचित कराया जाता है और वे सब ऐसे कार्य में लगा दिये जाते हैं जिसका उद्देश्य सम्बन्धित बच्चों की वाणी

में सुधार करना होता है। वाणी के अध्यापक द्वारा कक्षा में शैक्षिक कार्यक्रम अपनाया जाता है। कविता और गद्य की मौखिक व्याख्या, वाद-विवाद, रचनात्मक नाटकों और सहगान व भाषण द्वारा श्रेष्ठ वाणी की कुशलता और धारणा के सम्बन्ध में व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है।

जूनियर हाई स्कूल में सातवीं श्रेणी के समस्त छात्रों का वाणी के प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा अपेक्षित सामाजिक कल्याण के घंटे में यह निश्चय करने के लिए निरीक्षण किया जाता है कि उन्हें वाणी में सुधार करने की आवश्यकता है या नहीं। अभिभावक और अध्यापक बच्चों को सुधार कार्यक्रम में भर्ती करने की सिफारिश कर सकते हैं। प्रत्येक छात्र अपने वाणी अध्यापक से सप्ताह में एक घंटे के लिए भेंट करता है। यह शिक्षण चार से छः बच्चों के समूह को दिया जाता है। बच्चा भिन्न-भिन्न स्थितियों में व्यक्तिगत देखभाल और छोटे समूहों में शिक्षा प्राप्त करता है।

सीनियर हाई स्कूल स्तर पर वाणी सुधार का कार्यक्रम चलता रहता है। समस्त गौण कक्षाओं के छात्रों का मूल वाणी-पाठ्यविधि में निरीक्षण किया जाता है। वाणी-संशोधकों द्वारा समस्त नये छात्रों की परीक्षा ली जाती है। जूनियर हाई स्कूल, कक्षा के अध्यापकों, परामर्शदाताओं और अभिभावकों द्वारा भी इस कार्यक्रम के लिए पंगु बच्चे भेजे जा सकते हैं।

विल्मिगटन, डेलावेर (Wilmington, Delaware) की स्कूल प्रणाली ने शारीरिक रूप से पंगु बच्चों के लिए एक विशद कार्यक्रम बनाया है।

शारीरिक रूप से पंगु बच्चों को उनकी विशिष्ट असमर्थता के प्रकाश में यथासम्भव पूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती है और यह शिक्षा ऐसी होती है जिसके फलस्वरूप वे स्वतंत्र और आत्म-निर्भर हो सकें। स्कूल के चिकित्सक, मानसिक रोग चिकित्सक और अध्यापक ऐसे बच्चों को अपनी असमर्थता की प्रकृति का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने और उस असमर्थता के साथ यथार्थ जीवन व्यतीत करने में सहायता देने का प्रयत्न करते हैं।

१. बहरा

बहरे बच्चों के लिए पृथक् कक्षाएँ होती हैं। ऐसी व्यवस्था होती है कि ये बच्चे कुछ समय सामान्य विद्यार्थियों के साथ रहकर अधरों की भाषा पढ़ने और बोलने की योग्यताओं को समझने का अवसर प्राप्त कर सकें। ये बहरे बच्चे नियमित श्रेणियों में जो समय व्यतीत करते हैं, उसमें उनकी आयु बढ़ने के साथ-साथ वृद्धि होती जाती है। इससे उनमें विचार-विनिमय करने की क्षमता बढ़ती है। जब बहरे बच्चे माध्यमिक स्कूल में पहुँच जाते हैं तो उन्हें साधारण बच्चों के साथ गृह-कक्ष की कक्षाओं में भेज दिया जाता है किन्तु स्रोत-अध्यापक से वाणी और भाषा में सहायता प्राप्त करने के नियमित निश्चित अवसर उसे प्राप्त होते रहते हैं।

२. अन्धा

छोटे अन्धे बच्चों की कक्षाएँ लगती हैं। जबकि ऐसे बच्चे स्कूल दिवस का अधिकांश भाग अन्धों के प्रशिक्षित अध्यापक के साथ व्यतीत करते हैं, फिर भी ऐसी व्यवस्था की जाती है कि उन्हें सूझते बच्चों के साथ मिलने और खेलने का अवसर प्राप्त हो सके।

बड़े होने और किताबी शिक्षा प्राप्त कर लेने पर अन्धे बच्चे अपना अधिकाधिक समय सामान्य अथवा सूझते बच्चों के साथ व्यतीत करेंगे और विशेष कार्यों, परामर्श या अन्य प्रकार की सहायता के लिए ब्रेल के साथ स्रोत अध्यापक के पास आयेंगे।

३. आंशिक दृष्टि युक्त

जब तक आंशिक दृष्टि युक्त बच्चे इतनी संख्या में उपलब्ध नहीं हो जाते कि उनके लिए पृथक् कक्षा की व्यवस्था करना सम्भव और वांछनीय हो जाय, तब तक नियमित कक्षाओं में उनकी दृष्टि को बनाये रखने के लिए दृष्टि-संरक्षक उपकरण (पुस्तकें, डेस्कें और विविध साधन) प्रयोग में लाये जाते हैं।

४. व्यंजना की दृष्टि से पंगु

मस्तिष्क के रोगी बच्चों अथवा अन्य प्रकार के गम्भीर नाड़ी के रोगियों को विल्मिगटन स्कूलों में अच्छी शिक्षा प्राप्त करने देने के लिए सुविधा प्रदान की जाती है।

जब तक ऐसी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होतीं तब तक गौण नाड़ी सम्बन्धी रोग वालों से आग्रह किया जाता है कि वे नियमित श्रेणियों में अध्ययन करें और उपस्थित चिकित्सक के सहयोग और परामर्श से आचार्य, अध्यापक और नर्स द्वारा आयोजित शिक्षा तथा आराम के कार्यक्रम का अनुसरण करें।

५. स्वास्थ्य की विशेष समस्या युक्त बच्चे

चिकित्सक की सिफारिश पर दुर्बल शक्ति वाले बच्चों, हृदयरोगियों (cardiac) और अन्य प्रकार के शारीरिक रोगों से युक्त अथवा पंगु बच्चों के लिए अंशकालीन कार्यक्रम बनाया जाता है। सिफारिश किये जाने पर स्कूल दिवस में आराम के घण्टों की व्यवस्था की जाएगी।

६. गूँगे और बहरे

बहरे और गूँगे बच्चों के लिए प्रशिक्षित-अध्यापक-चिकित्सकों द्वारा (जो एक स्कूल से दूसरे स्कूल में भ्रमण करने के लिए जाते हैं) प्रति सप्ताह दो घण्टे विशेष शिक्षा या उपचार के लिए दिये जाते हैं। श्रेणी के अध्यापकों से बैठने के उपयुक्त स्थान, विशेष व्यायाम और जिनके आधीन बच्चों को कक्षा में पढ़ाने के लिए बुलाया जाता है उन दशाओं आदि के सम्बन्ध में इन विशेषज्ञों द्वारा की गई निश्चित सिफारिशों का अनुकरण करने के लिए कहा जाता है।

७. गृह-प्रविष्ट या अस्पताल में भर्ती छात्र

घर अथवा अस्पताल की शिक्षा उन सब बच्चों को दी जाती है जिनके लिए उनकी देखभाल करने वाला चिकित्सक यह प्रमाणित कर देता है कि वे बच्चे शारीरिक दृष्टि से इस योग्य नहीं हैं कि स्कूल जा सकें किन्तु वे मानसिक दृष्टि से इस योग्य हैं कि ऐसी शिक्षा से लाभान्वित हो सकें। ऐसे छात्रों को घर या अस्पताल में प्रति सप्ताह तीन या अधिक घण्टे ऐसी शिक्षा दी जाती है।

८. मिरगी

जब देखभाल करने वाला चिकित्सक और स्कूल का चिकित्सक इस बात पर सहमत हो जाते हैं कि दी जाने वाली औषधि रोग को नियन्त्रित कर रही है तो मिरगी के रोगी को नियमित या विशेष कक्षाओं में अध्ययन के लिए स्वीकार कर लिया जाता है।

टिप्पणी : अनुसरणशील शारीरिक शिक्षा

स्कूल में शारीरिक रूप से पंगु समस्त बच्चों के लिए अवकाश के कार्यक्रम के अतिरिक्त उनका उपचार करने वाले चिकित्सकों के सहयोग और परामर्श से शारीरिक शिक्षा निरीक्षक, डाक्टरों आदि की सहायता से उनकी विशिष्ट समस्याओं के उपयुक्त शारीरिक शिक्षा का कार्यक्रम बनाया जाता है।

फिनिक्स, एरीजोना के प्राथमिक स्कूल में उन बच्चों के लिए विशेष कक्षाओं और अन्य सेवाओं की व्यवस्था की जाती है जिन्हें कम दीखता या कम सुनाई देता है या जिन्हें बोलने में कठिनाई होती है।

मंद दृष्टि

कार्य

हमारे स्कूलों में एक कक्षा मंद दृष्टि वाले बच्चों के लिए होती है। जिले भर के बच्चे बस द्वारा इस स्कूल को भेज दिये जाते हैं। कभी-कभी एक नं० जिले के बाहर के बच्चे भी स्वीकार कर लिये जाते हैं। उनकी फीस उनके अभिभावक देते हैं या उनके जिले के स्कूल।

परीक्षा के लिए बच्चों को भेजना

स्कूल के कर्मचारी, अभिभावक और चिकित्सक ऐसे बच्चों को शिशु अध्ययन सेवा के निर्देशक के पास परीक्षा के लिए भेज देते हैं जिनकी दृष्टि इतनी दूषित हो चुकी होती है कि वे नियमित कक्षा में पढ़ कर लाभ नहीं उठा सकते। आँखों का डाक्टर बच्चे की परीक्षा के लिए सिफारिश करता है। उसकी शैक्षिक क्षमता का निश्चय करने के लिए उसकी मनोवैज्ञानिक परीक्षा ली जाती है।

नवीनीकरण

इस कक्षा में पहली से लेकर छठी श्रेणी तक के बच्चे स्वीकार किये जाते हैं। किन्तु बच्चों की कुल संख्या कम रखी जाती है। शिक्षा का कार्यक्रम नियमित

कक्षाओं से मिला दिया जाता है और मंद दृष्टि बच्चों की विशिष्ट आवश्यकता को पूरा करने की दृष्टि से निर्मित विशेष सामग्री और कार्य पूरक का काम करते हैं।

बहरे

कार्य

बहरे बच्चों के लिए एक कक्षा की व्यवस्था की जाती है जिसमें ऐसे बच्चे बस द्वारा लाये जाते हैं।

परीक्षा के लिए भेजना

जो बच्चे इस कक्षा में प्रवेश प्राप्त करने के लिए आवेदन करते हैं, उनकी क्षमता की चिकित्सा और मनोविज्ञान सम्बन्धी परीक्षा ली गयी है ताकि यह निश्चय हो सके कि वे इस शिक्षा से लाभ उठा सकते हैं या नहीं। ऐसे बच्चे अभिभावक या अध्यापक द्वारा परीक्षार्थ भेजे जाते हैं अथवा जिले भर की श्रवण शक्ति परीक्षा कार्यक्रम में उनकी जानकारी प्राप्त कर ली जाती है।

नवीनीकरण

इस कक्षा का उद्देश्य बहरे बच्चों को अपनी क्षमता के स्तर पर प्रगति प्रारम्भ करने और ज्योंही वे पर्याप्त तालमेल कर सकें त्योंही नियमित कक्षा को लौटने में सहायता देना है। इन बच्चों को सहायता देने के लिए मौखिक प्रशिक्षण, अधरों को पढ़ना, वाणी उपचार आदि पद्धतियों को अपनाया जाता है।

वाणी सम्बन्धी कठिनाइयाँ

कार्य

जिले भर में वाणी-कार्यकर्त्ता वाणी और श्रवण कार्य के दोमुखी कार्यक्रम चलाता है। सप्ताह में आधा दिन प्रशासन भवन में कार्यालय चलाया जाता है, कार्यकर्त्ता शेष सप्ताह स्कूल में रहते हैं।

परीक्षा के लिए भेजना

उन बच्चों के लिए वाणी सुधार सेवाएँ होती हैं जिनकी बोलने की शक्ति इतनी विचलित होती है कि उससे वार्तालाप में बाधा पड़ती है, लोगों का अनावश्यक ध्यान आकृष्ट होना है या बच्चे के सामान्य तालमेल में बाधा होती है।

प्रत्येक एकान्तर वर्ष में उसकी श्रवण शक्ति की भी परीक्षा ली जाती है और इस सम्बन्ध में एक नियमित कार्यक्रम चलाया जाता है जिसमें डाक्टरी परीक्षा, कक्षा में बैठने का विशेष प्रबन्ध, व्यक्तिगत श्रवण-साधन आदि वाणी-कार्यकर्त्ताओं के निर्देशन में चलाये जाते हैं। जब कि श्रवण शक्ति पर्याप्त नष्ट हो चुकी होती है तो बच्चे को बहरों की कक्षा में भेज दिया जाता है।

नवीनीकरण

वाणी कार्यकर्त्ता बच्चे के विशिष्ट वाणी या श्रवण दोष को सुधारने या दूर करने का प्रयत्न करते हैं। घर और स्कूल दोनों स्थानों में उपचार, स्वीकृति और विकास का वातावरण बनाने के लिए अभिभावकों, पारिवारिक चिकित्सक और अध्यापक के साथ मिल कर कार्य करने पर भी बल दिया जाता है।

स्कूल में न पढ़ने वाले शारीरिक दृष्टि से भ्रष्ट स्कूल जाने वाली आयु के कुछ व्यक्ति इतने अधिक विकलाँग होते हैं कि उनके लिए नियमित स्कूल में पढ़ना अवाँछनीय ही नहीं होता अपितु विपत्तिजनक भी होता है। उनकी शिक्षा और निर्देशन के लिए अनेक व्यवस्थाएँ की गई हैं। न्यूयार्क सिटी जैसी कुछ बड़ी स्कूल प्रणालियों में निपट बहरे बच्चे ऐसे विशेष स्कूलों में पुनस्स्थापन की और सामान्य शिक्षा प्राप्त करते हैं जो केवल उन्हीं के लिए स्थापित किये गये हैं। अन्य विकलांग बच्चों को उनके घरों या अस्पतालों में अस्थायी या स्थायी रूप से ऐसे अध्यापकों द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है जो नियमित रूप से नियुक्ति प्राप्त होते हैं। ऐसे अध्यापकों को कक्षा में पढ़ाने का ही अनुभव नहीं होता अपितु इस प्रकार के कार्य के लिये वे तैयार किये गये होते हैं।

विशेष स्कूल का एक अन्य उदाहरण रूजवेल्ट, लाँग आइलैंड, न्यूयार्क स्थित नासाऊ काउंटी सैरीब्रल पाल्सी स्कूल है। इस स्कूल में शिक्षा के लिए स्वीकार किये गये मस्तिष्क सम्बन्धी (cerebral palsy) रोगियों की शिक्षा और यातायात पर जो व्यय होता है, उसे राज्य और स्थानीय स्कूल मण्डल दोनों मिलकर वहन करते हैं। किन्तु जब कभी सम्भव होता है मस्तिष्क रोग के शिकार विद्यार्थियों को नियमित स्कूल में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है चाहे वे पहियेदार गाड़ियों में बैठ कर ही क्यों न चलते हों।

इन नवयुवकों को अपने समवयस्क स्वस्थ नवयुवकों के साथ घुलमिल कर सामाजिक लाभ प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त नहीं होती। अतएव जब शारीरिक दृष्टि से पंगु व्यक्ति अपने गम्भीर कष्ट से मुक्ति लाभ करता है, तो वह पुनः नियमित स्कूल को भेज दिया जाता है। किन्तु यह प्रक्रिया शनैः शनैः ही हो सकती है। उदाहरणार्थ, न्यूयार्क नगर में जो बच्चे अस्पताल के बिस्तरों पर पड़े रहते हैं उनके लिए लाइसेंस प्राप्त अध्यापकों की व्यवस्था की गई है। इसके अतिरिक्त, कुछ अस्पताल तथाकथित "बाहरी रोगियों" के लिए या उन नवयुवकों के लिए कक्षाएँ चलाते हैं जो घर पर रहते हैं, किन्तु अपनी अस्वस्थता के कारण नियमित स्कूलों की गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रस्तुत नहीं होते। जब कोई बच्चा या नवयुवक अस्पताल से छुट्टी लेने के लिए तैयार प्रतीत होता है तो एक सम्पर्क सलाहकार उसके निवास-स्थान के निकट स्थित प्राथमिक या माध्यमिक स्कूल में उसके प्रवेश की व्यवस्था कर देता है और उस स्कूल में उसके तालमेल और उसकी प्रगति पर दृष्टि रखता है।

ग्रेट नैक का कार्यक्रम इस प्रकार है :

यदि बच्चा कम से कम साठ सप्ताह तक रोग शैया पर पड़ा रहे तो उसके लिए उसके घर पर शिक्षा की व्यवस्था कर दी जाती है। यदि घर पर दी जाने वाली शिक्षा उचित प्रतीत होती है तो बच्चे के अभिभावक को उपचार करने वाले चिकित्सक के वक्तव्य के साथ अधीक्षक को औपचारिक आवेदन-पत्र देना होता है। इस पर एक अध्पापक उसे बच्चे को घर पर पढ़ाने के लिए नियुक्त कर दिया जाता है। प्राथमिक स्कूल के बच्चों को एक घण्टा प्रति दिन, जूनियर हाई स्कूल के बच्चों को डेढ़ घण्टा प्रति दिन और सीनियर हाई स्कूल के बच्चों को दो घण्टा प्रति दिन के हिसाब से शिक्षा दी जाती है।

घर की पढ़ाई का कार्यक्रम इसलिए बनाया जाता है कि विद्यार्थी बिना किसी हस्तक्षेप के स्कूल की गतिविधियों को जारी रख सके। सार्वजनिक स्कूल के छात्र और उसकी कक्षा के बीच सम्पर्क घर पर पढ़ाने वाले अध्यापक द्वारा रखा जाता है जो बच्चे का नियमित अध्यापकों के साथ संसर्ग बनाये रखता है। घर की शिक्षा के फलस्वरूप बच्चा जब स्कूल को लौटता है तो तालमेल की समस्या सुलझ जाती है।

किसी व्यक्ति के लिए घर की शिक्षा के कार्यक्रम का क्या अर्थ हो सकता है, इसका ज्वलंत उदाहरण माध्यमिक स्कूल की एक छात्रा ने हाल ही दिया था जो यद्यपि पूरे वर्ष भर तक रोगिणी बन कर घर पर ही रही—फिर भी उसने समस्त नियमित परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं, अपनी कक्षा के साथ वह स्नातक बनी और कालेज में भर्ती हुई।

फिनिक्स में घर पर रहने वाले प्राथमिक स्कूल के छात्रों के लिए अपनाई जाने वाली पद्धति में निम्नलिखित बातें सम्मिलित होती हैं :

कार्य

कानून के अनुसार घर पर रहने वाले समस्त बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करने का वित्तीय उत्तरदायित्व राज्य पर डाला गया है। प्रत्येक बच्चे को प्रति मास १६ घंटे पढ़ाने का कार्य अध्यापकों को सौंपा जाता है।

नवीनीकरण

यह कार्यक्रम बच्चों को अपनी कक्षा के साथ चलने में सहायता देता है ताकि जब वे स्कूल को लौटें तो पर्याप्त तालमेल बिठा सकें। घर पर दी जाने वाली शिक्षा इन नवयुवकों की रुचि को नष्ट नहीं होने देती, साथ ही उनमें अपनी रुग्णावस्था के प्रति रचनात्मक रवैये का भी विकास करती है।

परीक्षार्थ भेजे जाने वाले व्यक्ति

घर पर दी जाने वाली शिक्षा के लिए शिशु अध्ययन सेवा के निर्देशक को आवेदन किया जाता है। वह इस बात का निर्णय करता है कि बच्चा इस प्रकार की शिक्षा के लिए ग्राह्य है या नहीं। बच्चे की आयु छः और इक्कीस वर्ष के

मध्य होनी चाहिए; उसमें ऐसा शारीरिक दोष हो जिसके कारण कम से कम तीन स्कूल मास तक वह स्कूल जाने में असमर्थ हो, कोई संक्रामक रोग न हो और शिक्षा से लाभ उठाने के लिये आवश्यक पर्याप्त मानसिक क्षमता रखता हो।

शारीरिक दृष्टि से विकलांग का व्यावसायिक पुनस्स्थापन

शारीरिक रूप से विकलांगों, विशेषतया अन्धों को व्यवसाय में भाग लेने में सहायता देने के लिए भूतकाल में कुछ प्रयत्न किये गये थे। द्वितीय विश्वयुद्ध में और उसके पश्चात् घायल सैनिकों के उपचार के लिए जो उत्साहपूर्ण कार्य किया गया था, कम से कम उसमें उनके कल्याण के प्रति हमारी चिन्ता देखी जा सकती है।

अनौपचारिक चिकित्सा चूंकि युद्ध और समुद्री विभाग इस बात पर विश्वास नहीं करते कि किसी मनुष्य को पूर्ण स्वाथ्य-लाभ करने से पूर्व सेवा से मुक्त कर दिया जाय, इसलिए सेवा से पृथक् करने से बहुत पहले से क्षत या घायल सैनिक की चिकित्सा और शल्य सम्बन्धी देखभाल प्रारम्भ हो जाती है। विकलांग सैनिकों के पुनस्स्थापन के लिए सशस्त्र सेवाओं की चिकित्सा टुकड़ी ने बड़ा उत्तम कार्य किया है।

कुल मिलाकर, वेटरन्स एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा संचालित सैनिक अस्पतालों में की जाने वाली चिकित्सा-सेवा में लोगों का विश्वास बढ़ा है। जहाँ स्थिति बहुत आशाप्रद नहीं होती, वहाँ भी सैनिकों के शारीरिक पुनस्स्थापन के लिए प्रत्येक आधुनिक वैज्ञानिक उपाय को अपनाया जाता है। किन्तु एक ही अस्पताल में बहुत से विकलाँगों को भर्ती कर लेना उचित नहीं है क्योंकि यह सम्भव हो सकता है कि कोई रोगी अपने चारों ओर अपने से अधिक बुरी दशा के रोगियों को देख कर हताश हो जाय। कभी-कभी ऐसे रोगियों के प्रति सचेष्ट रहने की प्रवृत्ति होती है जिन्हें उपचार से लाभ नहीं होता, और वे ऐसे रोगियों पर ध्यान नहीं देते जिन्हें निश्चित रूप से लाभ हो रहा होता है और जो शीघ्र ही अस्पताल से मुक्त होने वाले होते हैं।

व्यावसायिक उपचार का मूल्य यदि शारीरिक क्षति गम्भीर हो—जैसे किसी अवयव का टूट जाना—और उसी समय इस आशय के मानसिक स्वास्थ्य के सिद्धान्तों का रोगी पर प्रयोग न किया जाय कि शारीरिक विकलांगता पर ध्यान दिया जा रहा है तो रोगी के अन्तःकरण पर गम्भीर मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया हो सकती है। हाथ या टाँग टूट जाने पर पुनस्स्थापन कभी पूर्ण नहीं हो सकता, किन्तु बहुधा भावनात्मक तालमेल बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। यह वास्तव में उल्लेखनीय है कि बहुत से विकलाँग व्यक्तियों ने नकली अवयवों का सरलता से उपयोग करना सीख लिया है और उन्हें यह भी स्मरण नहीं रहता कि उनके वे अवयव असली नहीं हैं।

व्यावसायिक उपचार के सफल प्रयोग के लिए भारी प्रयास किये गये हैं। व्यावसायिक हस्तकलाओं और व्यवसायों में भाग लेने के फलस्वरूप मानसिक या शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों ने सामान्य कार्यों में कुशलता और निपुणता पुनः प्राप्त की है। इन उपचारात्मक उपायों की सफलता अधिकांश में व्यावसायिक चिकि-

त्सकों की उत्तम भावना और समझदारी तथा मानव शरीर और हस्तकला के सम्बन्ध में उनके ज्ञान के कारण संभव हो सकी है।

विकसित शल्य-चिकित्सा, मानवीय तत्त्वों की विस्तृत जानकारी और व्यावसायिक उपचार के अधिकाधिक उपयोग ने मिलकर द्वितीय विश्वयुद्ध और कोरिया के विकलांग सैनिकों के भविष्य को अधिक उज्ज्वल बना दिया है। यह सुविधा प्रथम विश्वयुद्ध के घायल सैनिकों को उपलब्ध नहीं थी। नकली अवयवों और प्लास्टिक की शल्य चिकित्सा ने आश्चर्यजनक कार्य किया है और विकलांगों तथा उनके साथियों के रवैयों का ऐसा निर्देशन किया गया है कि उन्होंने अपनी असमर्थता को बुद्धिमत्तापूर्वक और यथारूप स्वीकार कर लिया है।

मानसिक रूप से असामान्य व्यक्तियों की निर्देशन समस्याएं

यदि कोई व्यक्ति अपने मानसिक कार्यों को इस प्रकार करता है कि वह सामान्य रूप से स्वीकृत व्यवहारों से किसी भी दिशा में इतना दूर जा पड़े कि उसके लिए अपने समूह के अधिकांश व्यक्तियों की विचार-शैली का अनुसरण करना कठिन या असम्भव हो जाय तो उसे मानसिक रूप से असामान्य व्यक्ति कहा जायेगा। जो व्यक्ति मानसिक रूप से असामान्य होते हैं, वे या तो अत्यन्त उच्चकोटि के या प्रतिभावान होते हैं या अत्यन्त मंद अथवा पिछड़े हुए होते हैं। अपने जीवन की गतिविधियों और अपने साथियों से किये जाने वाले व्यवहारों में प्रतिभासम्पन्न और मंदबुद्धि दोनों प्रकार के व्यक्तियों के सम्मुख तालमेल की ऐसी समस्याएँ उपस्थित होने की संभावना रहती है जो औसत बुद्धि के लोगों के सम्मुख नहीं आतीं। यद्यपि बहुत बुद्धिमान व्यक्ति के सम्मुख आने वाली समस्याएँ अत्यन्त मंद बुद्धि वाले व्यक्ति की समस्याओं से भिन्न हो सकती हैं, तथापि तालमेल की कठिनाई दोनों के सम्मुख गंभीर होती है।

मानसिक भ्रष्ट की पहचान बहुत छोटे बच्चे की मानसिक स्थिति का मूल्यांकन अभिभावकों या अध्यापक द्वारा सदैव सही रूप में नहीं किया जा सकता। संभव है कि वह धीरे-धीरे विकास करने वाला हो या अपने प्रारम्भिक वर्षों में वह "बुद्धिमान" प्रतीत होता हो किन्तु आगे चल कर उसके विकासशील व्यक्तित्व का यह लक्षण स्थायी न रह सके। किसी व्यक्ति के उत्तर-शैशवकाल या प्रारम्भिक किशोरावस्था में भी यह निर्णय करना कठिन होता है कि उसमें औसत मानसिक योग्यता है या वह साधारण स्तर से विचलित है। कुछ अभिभावक अपने बच्चे को उसके समवयस्कों से श्रेष्ठ समझते हैं हालांकि उसका व्यवहार इस धारणा के विरुद्ध होता है। कभी-कभी मंद बुद्धि बच्चों के अभिभावकों को यह समझना लगभग असंभव हो जाता है कि वे बच्चे साधारण कार्य भी भली-भाँति नहीं कर सकते।

स्कूल के लोगों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दायित्व यह है कि वे बच्चे के स्कूल के जीवन में यथासम्भव शीघ्र और सही रूप में उसकी अध्ययन-क्षमता का पता लगायें। आन्तरिक मानसिक क्षमता के अतिरिक्त अन्य बातें अध्ययन की सफलता की

सीमा पर प्रभाव डाल सकती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि परामर्शदाता और अध्यापक किसी व्यक्ति की प्राकृतिक प्रतिभा के प्रदर्शित व्यवहार और वातावरण-जन्य प्रभाव से सम्बन्धित महत्त्व को समझें।

बौद्धिक दृष्टि से असाधारण विद्यार्थी किस प्रकार और किस सीमा तक औसत व्यक्तियों की कार्यशैली को अपनाता है, इसका ज्ञान अनेक प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है: (१) बुद्धि की वैध और विश्वसनीय परीक्षाएँ लेकर, (२) अध्यापक के निरीक्षण द्वारा, (३) परामर्शपूर्ण साक्षात्कार, और (४) मामले के इतिहास का निर्माण करके। स्कूल के जो लोग मानसिक दृष्टि से भ्रष्ट छात्र के लाभ के लिए पाठ्यक्रम सम्बन्धी सामग्री और अध्यापन विधियों की खोज करने और उनका उपयोग करने के लिए आतुर होते हैं, वे कभी-कभी उनकी पहचान करके उनका वर्गीकरण करने में बहुत अधिक जल्दबाजी करते हैं। किन्तु इस क्षेत्र में पर्याप्त अनुसंधान करने के फलस्वरूप ज्ञात हुआ है कि बौद्धिक रूप से उच्च कोटि के अथवा अत्यन्त मंद बुद्धि छात्र में कुछ गुण या लक्षण होते हैं जिनका वे प्रदर्शन करते हैं।

प्रतिभावान के लक्षण यदि शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता हस्तक्षेप न करे तो संभवतया प्रतिभासम्पन्न नवयुवक अपने अध्ययन कार्य में निम्नलिखित लक्षणों का परिचय देता है: तीव्र निरीक्षण, अध्ययन-सामग्री में शीघ्रता और शुद्धता से प्रवीणता प्राप्त करना; अच्छी स्मरण शक्ति; तत्काल उत्तर; अच्छा ज्ञान; स्पष्ट, बहुधा मौलिक विचार और तर्कसंगत बात; बुद्धिमत्तापूर्ण जिज्ञासा और अनौपचारिक रूप से अर्जित विशद ज्ञान; विस्तृत शब्दावली और ऐसी विशाल पठन-रुचि जो बड़े बच्चों में उच्च वयस्क स्तर पर होती है। प्रतिभावान छात्र संभवतया अपने निजी अध्ययन की कमी को पहचान कर उन्हें अनुसंधानात्मक प्रश्न पूछ कर या व्यक्तिगत अनुसंधान द्वारा दूर करने का प्रयास करते हैं।

लोकप्रिय विशेषतः प्राचीन काल की, धारणा के विरुद्ध अपवादस्वरूप प्रतिभावान नवयुवकों की शारीरिक रचना और स्वास्थ्य साधारणतया उनसे कम बुद्धि रखने वाले छात्रों से उत्तम होते हैं। सामान्यतः प्रतिभावान व्यक्ति उनसे कम बुद्धि रखने वाले समवयस्क लोगों से कद, भार, बल और चिरायु में श्रेष्ठ होते हैं। जब तक उन्हें अत्यन्त हानिकारक वातावरण में न रखा जाय, वे भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से भी सुसमन्वित रहते हैं।

किन्तु शारीरिक और भावनात्मक श्रेष्ठता अनिवार्यतः प्रत्येक बौद्धिक दृष्टि से श्रेष्ठ व्यक्ति के लक्षण नहीं हैं। यदि किसी प्रतिभासम्पन्न वयस्क ने अच्छा स्वास्थ्य, भावनात्मक स्थायित्व और सामाजिक संतुलन अपनी नवयुवावस्था में प्राप्त किया है तो इसका श्रेय अधिकतर उसके अभिभावकों के उस रवैये को है जो उन्होंने उसकी असामान्य बौद्धिक स्थिति के प्रति प्रदर्शित किया है, कुछ अंशों में इसका श्रेय स्कूल में अर्जित उसके अनुभवों और उसके अपने समवयस्कों के साथ स्थापित सम्बन्धों को भी है। यदि प्रतिभावान बच्चे को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने को प्रोत्साहित किया जाय तो उसका विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। ऐसा बच्चा अग्रगामी हो सकता है,

अपनी आयु के अनुपात से अत्यन्त दूषित हो सकता है अथवा वह बहुत अधिक परावलम्बी हो सकता है। यह भी सम्भव है कि भावुक या संकोचशील बच्चा अपने गुरुजनों के "अनुरोध" पर कार्य न करे और वे उसे हठी या असहयोगी समझ बैठें। अग्रगामी बच्चे के कार्यों से उसमें रुचि लेने वाले व्यक्ति ऊब जाते हैं और संकोचशील बच्चे के व्यवहार से उसके अभिभावकों और उनके मित्रों को आघात पहुँचता है।

यद्यपि इस मामले में सबसे अधिक त्रुटि अभिभावकों की होती है, स्कूल के लोग भी सदैव निर्दोष नहीं होते हैं। कुशाग्र बुद्धि छात्रो को कक्षा के वाद-विवाद पर एकाधिपत्य जमाने की अनुमति दे दी जाती है, उसके श्रेष्ठ कार्य की बहुत अधिक सराहना हो सकती है अथवा वह कम योग्य छात्रों के लिए आदर्श हो सकता है; उसे उसकी तीक्ष्ण बुद्धि के कारण वे सुविधाएँ दी जा सकती हैं जो दूसरों को अप्राप्य हैं। परन्तु यह व्यवहार उस प्रतिभावान छात्र के रचनात्मक सहयोगपूर्ण व्यवहार के विकास में सहायक नहीं होता। इसके अतिरिक्त उसके सहपाठी उसे अध्यापक का "पिट्ठू" समझने लगते हैं, जिसके फलस्वरूप वह अपने साथियों का नेतृत्व करने का अवसर गँवा बैठता है।

मंदबुद्धि और मंद छात्र के लक्षण 'मंदबुद्धि' और 'मंद छात्र' शब्दों का प्रयोग यहाँ जान बूझ कर किया गया है। प्राविधिक दृष्टि से मंदबुद्धि व्यक्ति की बुद्धि लब्धि ७५ से कम होती है और मंद छात्र की ७५ और ९० के मध्य। मंदबुद्धि की शिक्षा विशेष कक्षाओं में होती है, अथवा यदि बौद्धिक स्थिति अत्यन्त नीचे स्तर की है तो उसे संस्था में भर्ती कर दिया जाता है, जबकि मंद छात्र को नियमित कक्षाओं में रखा जाता है, किन्तु उससे ऐसे अच्छे कार्य की आशा नहीं की जाती जैसा कि उस से अधिक योग्य सहपाठी करते हैं।

मंदबुद्धि और उससे कम मात्रा में मंद छात्र—का ध्यान और रुचि विस्तृत रूप में नहीं होतीं और उससे एकाग्रचित होने में कठिनाई होती है; वह शैक्षिक और सामाजिक कार्यों में सम्यक् रीति से भाग नहीं ले सकता; सरलता से भ्रमित हो जाता है; गंभीरता से सोच नहीं सकता; स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य नहीं कर सकता अथवा निर्देशनों का पालन नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त, मंदबुद्धि व्यक्ति बड़ी मंदगति से कार्य करता है; साधारण नियम-उपनियमों को भी नहीं समझ पाता, इसलिए अस्वीकार्य—और कभी-कभी विपत्तिजनक—कार्य कर बैठता है।

मंदबुद्धि छात्र के प्रति अन्य व्यक्ति जो रवैया प्रदर्शित करते हैं, वह उसके जीवन में विशेष महत्त्व रखता है। कोई अभिभावक यह स्वीकार नहीं करना चाहता कि उसका बच्चा मंदबुद्धि है, अध्यापक कुशाग्रबुद्धि छात्रों को पढ़ाना चाहता है, अन्य बच्चे या तो उसे अस्वीकार कर देते हैं या उसे चिढ़ाते हैं, कभी-कभी यह चिढ़ाना निर्दयता की सीमा तक पहुँच जाता है। किन्तु यदि उसे चारों ओर बहुत अधिक धकेला न जाय तो वह स्नेह प्रदर्शित करता है और अपनी सहज रीति से सबके साथ सहयोग करता है। अत्यन्त मंद व्यक्ति अपने वातावरण के अनुकूल नहीं बन सकता, उसके प्रति अन्य व्यक्ति जो रवैया प्रदर्शित करते हैं, उसे वह समझता है। यदि वह

यह अनुभव करता है कि उसकी उपेक्षा की जा रही है अथवा वह अपने सहपाठियों के साथ नहीं चल पा रहा है तो उसमें निराशा की भावना घर कर लेती है और यदि वह शारीरिक रूप से बलवान हुआ तो वह ऐसे किसी भी व्यक्ति से लड़ बैठता है जो उसकी दृष्टि में अवांछनीय प्रतीत होता है।

बौद्धिक दृष्टि से मंद व्यक्ति और उसके बुद्धिमान साथियों में महत्त्वपूर्ण अंतर उनके घरेलू सम्बन्धों, समवयस्क साथियों और मनोरंजनात्मक तथा सामाजिक कार्यों के प्रति प्रदर्शित रवैयों में देखा जा सकता है। संभवतया घर पर वह मिल-जुलकर और सहायक बनकर रहता है, इसलिए जब स्कूल से यह सूचना मिलती है कि वह पढ़ने में कमजोर है और उसका रवैया असहयोगपूर्ण है तो उसके अभिभावक चकित रह जाते हैं। किन्तु जब उसके माता-पिता उसकी तुलना उसके बुद्धिमान भाई-बहनों से करते हैं तो वह क्षुब्ध हो जाता है। या तो वह अपने आप में सिकुड़ कर रह जाता है या परिवार के अन्य बच्चों से झगड़ा करने लगता है। जो बच्चा कक्षा में पढ़ने में मंद होता है, वह सर्वाधिक कुशाग्रबुद्धि सहपाठियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करता है। वह उन्हें अपनी बहुमूल्य वस्तुएँ देकर उनकी मित्रता प्राप्त करने का प्रयास करता है, कभी-कभी इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए उसे बेईमानी करके या अनुचित कार्यों द्वारा धन प्राप्त करना पड़ता है। वह ऐसे खेल खेलना चाहता है जिनके नियम तो थोड़े हों किन्तु दौड़-धूप या उछल-कूद खूब करनी पड़ती हो। वह नृत्य करना भी पसंद करता है। वह टेलीविजन का कार्यक्रम और सिनेमा बड़े चाव से देखता है। यहाँ भी वह उछल-कूद चाहता है। गंभीर मुद्रा या वार्तालाप युक्त चित्र उसे पसंद नहीं आते, शान्त मनोरंजक कार्यों से वह ऊब जाता है। संभव है कि यौवन काल में उसमें लैंगिक भावना जाग्रत हो जाय और वह असामान्य लैंगिक प्रवृत्तियों में संलग्न हो जाय।

जब तक उसकी सरल इच्छाएँ और अभिरुचियाँ दैनिक किन्तु संतोषप्रद कार्यों में भाग लेने से संतुष्ट होती हैं, वह प्रसन्न रहता है और ऐसे लक्ष्यों को प्राप्त करने की चिन्ता नहीं करता जो उसकी पहुँच के बाहर हैं। यह रवैया संस्थाबद्ध अत्यन्त मंद व्यक्तियों, बहुत मंद विद्यार्थियों और नियमित कक्षा में पढ़ने वाले मंद छात्र का लक्षण है, परन्तु अंतिम मामले में यह लक्षण कुछ मात्रा में पाया जाता है।

बौद्धिक अपवाद के लिए विशेष निर्देशन सेवाएँ

प्रारम्भिक अध्यायों में हमने (१) विविध व्यक्तियों की शैक्षिक आवश्यकताओं और अभिरुचियों के अनुकूल पाठ्य-विषयों और अध्यापन-अध्ययन की विधियों और (२) जब कभी विशिष्ट सहायता की माँग की जाय या आवश्यकता समझी जाय, उस समय प्रत्येक छोटे या बड़े व्यक्ति को निर्देशन सेवाएँ प्रदान करने के महत्त्व पर बल दिया है। मानसिक रूप से असामान्य व्यक्तियों—विशेषतः स्कूल आयु के व्यक्तियों को वह शैक्षिक अवसर और परामर्शपूर्ण सहायता प्रदान की जानी चाहिए जो उनकी आवश्यकताओं को पूरा कर सके। कुशाग्रबुद्धि और मंदबुद्धि दोनों प्रकार के अध्ययन

के लिए बहुत कुछ मनोवैज्ञानिक अनुसंधान किया जा चुका है, उसके साथ-साथ उनके लिए शैक्षिक प्रयोग और निर्देशन नियोजन के कार्य भी किये जा चुके हैं। मानसिक भ्रष्ट व्यक्तियों की शिक्षा पर इतना अधिक बल दिया गया है कि कुछ स्कूलों के लोग मानसिक दृष्टि से औसत या सामान्य छात्रों को "विस्तृत" समूह कहने लगे हैं। ऐसे दावों की सचाई पर ध्यान दिये बिना, यह सत्य है कि मानसिक रूप से भ्रष्ट विद्यार्थी स्कूल के लोगों के लिए एक भारी समस्या है।

सामान्य निर्देशन पद्धतियाँ साधारणतया अत्यन्त मंद बुद्धि (मूर्ख) व्यक्ति को संस्था में भर्ती कर लिया जाता है, क्योंकि यदि उसे खुला छोड़ दिया जाय तो वह स्वयं को और दूसरों को हानि पहुँचा सकता है। संस्था में उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए और सरल कार्यों में प्रशिक्षण देने की व्यवस्था होती है। अपवादस्वरूप श्रेष्ठ या प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियों के लिए ऐसी कोई पृथक् व्यवस्था नहीं की जाती (और न करने की आवश्यकता होती है)। अतएव यह शिक्षकों का दायित्व है कि वे स्कूल की पाठ्य-विधियों का इस प्रकार संगठन करें कि प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षिक आवश्यकताएँ पूरी हो सकें। इसके लिए संगठन सम्बन्धी विविध योजनाएँ बनाई गई हैं। संभवत: दो अत्यन्त समान रूप हैं : समान छात्रों का समूहीकरण और सामाजिक हेल-मेल।

समान छात्रों का समूहीकरण शैक्षिक उद्देश्यों के लिए बौद्धिक स्तर के अनुसार छात्रों के समूहीकरण पर अब भी भारी मतभेद है। समान छात्रों के पूर्ण समूहीकरण का अर्थ है, मंद, औसत और श्रेष्ठ छात्रों को प्राथमिक स्तर पर विभिन्न वर्ग-समूहों और माध्यमिक स्तर पर पाठ्य-विषय के विभिन्न कार्यक्रमों या पाठ की कक्षाओं में विभाजित करना। इस योजना से लाभ भी है और हानि भी। समान आधार पर संगठित कक्षाओं या विद्यालयों में अध्यापक अपने छात्रों की अध्ययन सम्बन्धी आवश्यकताओं और अभिरुचियों के अनुकूल पाठ्य-सामग्रियों की व्यवस्था और अध्यापन-विधियों का उपयोग कर सकता है। किन्तु विद्यार्थियों को इस अवस्था में अथवा आगे चलकर वयस्कों के रूप में विभिन्न बौद्धिक योग्यता वाले व्यक्तियों को समझने और उनके साथ मिल कर कार्य करने का अवसर प्राप्त नहीं होता।

समान आधार पर संगठित विविध वर्गों की पहचान के लिए चाहे कोई भी योजना काम में ली जाय, किन्तु बच्चे और उसके अभिभावकों को छला नहीं जा सकता। वे शीघ्र ही उस वर्ग के विषय में परिचित हो जाते हैं। जब तक कि निर्देशन कार्यकर्त्ता इस प्रकार के वर्गीकरण का मूल्य उन्हें भली-भाँति नहीं समझा देते तब तक कक्षा का "श्रेष्ठतम" विद्यार्थी इन कम भाग्यवान छात्रों के प्रति अहंकार और सर्वांगीण श्रेष्ठता का रवैया अपनाये बिना नहीं रहता, मंद कक्षा के छात्र अपने साथियों द्वारा तिरस्कृत होने पर क्षुब्ध हो जाते हैं।

विविध स्तर वालों का समूहीकरण विविध स्तर वाली कक्षा या स्कूल के समूहीकरण का अर्थ है एक ही श्रेणी या एक ही विषय स्तर के छात्रों का क्रमवर्ण या अन्य योजनानुसार किन्तु सम्बन्धित बौद्धिक स्तर पर ध्यान दिये बिना वर्गीकरण

करना। अतएव एक कक्षा की बौद्धिक लब्धि ७५ या ८० से १६० या अधिक तक हो सकती है।

इस प्रकार के संगठन से छात्र को निम्नलिखित लाभ हैं : (१) उसे अपने से भिन्न प्रकार के व्यक्तियों को समझने का अवसर मिलता है, (२) उनकी मानसिक क्षमताओं और दुर्बलताओं, उनके भावनात्मक रवैयों, उनकी सामाजिक योग्यताओं, विशेष अभिरुचियों और अभिलाषाओं को समझने का अवसर मिलता है, तथा (३) वह अपने सहपाठियों द्वारा प्रदर्शित रवैयों और व्यवहार के साथ अपने निजी रवैयों और व्यवहार का समन्वय तथा मूल्यांकन करना सीख जाता है। वयस्क आयु के आंतरिक सम्बन्धों के एिल तैयार करने का यह श्रेष्ठ क्षेत्र हो सकता है।

विविध स्तर वाले छात्रों के समूहीकरण से गंभीर हानियाँ होती हैं। अपने समस्त छात्रों—मंद, औसत और कुशाग्र बुद्धि—को सफलतापूर्वक पढ़ाना किसी भी अध्यापक के लिए यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। वह दूसरों की अपेक्षा किसी एक समूह पर अधिक ध्यान देने लगता है। यदि वह औसत बुद्धि वाले छात्रों पर (जो साधारणतया सबसे बड़ा समूह होता है) ध्यान देता है तो अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि छात्र ऊबने लगते हैं, और व्यक्तिगत अभिरुचि की योजनाओं में लग जाते हैं, जिससे उनके सहपाठियों का ध्यान कक्षा में होने वाली पढ़ाई से उचट जाता है। मंदबुद्धिछात्र जो यह नहीं समझ पाता कि पाठ का विषय क्या है, बेचैन हो जाता है और बार-बार पुकार कर या अन्य प्रकार से कक्षा और अध्यापक दोनों को परेशान करता है।

विविध स्तर वाले छात्रों की कक्षा का कोई भी अध्यापक इस स्थिति में निहित कठिनाइयों के बहुत से उदाहरण दे सकता है। अनेक वर्षों के पश्चात् एक लेखक अब भी प्राथमिक स्कूल की पाँचवीं श्रेणी की एक मंद छात्रा की अद्भुत बात को स्मरण करता है जो अपने सहपाठियों के साथ कक्षा में न चल पाती थी, कक्षा के प्रत्येक वाद-विवाद में प्रतिदिन वह अपनी सचल कुर्सी पर ऊँची उठकर आगे के किनारे पर बैठ जाती थी और बड़े जोर की आवाज के साथ कुर्सी को पीछे गिर जाने देती थी। आचार्य द्वारा उसे समझाने के, झिड़कने के, माँ का साक्षात्कार, और उसे सरल कार्य सौंपने के सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। एक घंटे के लगभग वह उसे रोकने का प्रयत्न करता किन्तु वह फिर आरम्भ हो जाता, साधारणतया अधिक अंतर के साथ और निरर्थक ध्वनियों व चिढ़ाने वाली मुस्कानों के साथ। इस स्कूल में एक चीज का अभाव था जिसकी उसे आवश्यकता थी—और वह थी ऐसी कक्षा जिसमें वह प्रतियोगिता का कुछ अवसर प्राप्त कर सके।

इसके विपरीत बौद्धिक दृष्टि से जो श्रेष्ठ नवयुवक होते हैं, वे मौन रहते हैं किन्तु नियमित कार्य के घंटों में अपनी अभिरुचि के कार्यों में व्यस्त रहते हैं। उदाहरणार्थ ; हाई स्कूल के श्रेष्ठ छात्रों का एक छोटा सा समूह कक्षा की पिछली कुर्सियों पर ब्रिज (ताश का एक खेल) खेला करता था; कालेज का एक विद्यार्थी आधुनिक साहित्य की पूरी जानकारी रखता था और दूसरा विद्यार्थी कालेज के घंटे में पत्र-लेखन का कार्य करता था। इन समस्त छात्रों को अपनी पाठ्य-विधियों में 'ए'

श्रेणी प्राप्त होती थी। एक उदाहरण ऐसा था जब कि अध्यापक को यह विदित था कि छात्रा क्या कर रही है, किन्तु वह जानता था कि वह छात्रा अपना कार्य भली-भाँति कर लेती है और परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होती है।

बौद्धिक लब्धि के आधार पर निर्मित समूहीकरण की पूर्ण एकरूपता और विविध स्तर वालों के वर्गीकरण की हानियों से बचने के लिए कुछ प्राथमिक स्कूल संगठन के दोनों रूपों में कुछ सुधार कर रहे हैं। उदाहरणार्थ, ए योजना के अनुसार एकरूपता पर बल दिया जाता है। एक समान श्रेणी में समस्त बच्चों की स्थितियाँ :

समस्त अन्य बच्चों के अनुपात में क्रमानुसार श्रेणी-ग्राफ में दिखाई जाती हैं। किसी बच्चे के कुल व्यक्तित्व का अनुमान लगाने के लिए जिन बातों पर विचार किया जाता है उनमें ऐसी स्कूली सफलताएँ सम्मिलित की जाती हैं : पढ़ने की योग्यता, गणित में कुशलता, सामाजिक अध्ययन और भाषा की कलाओं में निपुणता, कलात्मक और संगीत कार्य में रुचि, विज्ञान में आंतरिक अभिरुचि और स्तरीकृत बुद्धि-परीक्षाओं में प्राप्तांक, सामाजिक सम्बन्धों और शारीरिक तथा भावनात्मक विकास में परिपक्वता की साक्षी।

जब कि इस प्रमुख श्रेणी-ग्राफ पर प्रत्येक बच्चे का विवरण अंकित कर दिया जाता है, तब शिक्षा परिषद् द्वारा प्रदत्त कक्षाओं की संख्या में बच्चों की कुल संख्या को बाँटने के लिए विभाजक रेखाएँ खींची जाती हैं जो ग्राफ के सिरे से प्रारम्भ होकर इस प्रकार जाती हैं कि चौथाई भाग श्रेणी १ के लिए, अगला चौथाई भाग श्रेणी २ के लिए, उससे अगला चौथाई भाग श्रेणी ३ के लिए और शेष चौथाई भाग श्रेणी ४ के लिए होता है जहाँ एक श्रेणी को चार कक्षाएँ दी जाती हैं। यह बात महत्त्वपूर्ण है कि इस प्रकार के वर्गीकरण (एकरूप समूही-करण) के पक्षपाती इस बात पर बल देते हैं कि इस विधि का अनुसरण करने से प्रत्येक कक्षा में ऐसे छात्र एक साथ समूहबद्ध हो जाते हैं जिनकी रुचियाँ और क्षमताएँ समान होती हैं तथा अध्ययन के लिए जिनकी गतियाँ भी समान होती हैं।

बी योजना में वर्गीकरण की अपेक्षाकृत विविध स्तर वाली प्रणाली होती है :

उपरोक्त की भाँति ही ग्राफ बनाया जाता है किन्तु इस बार स्थापित की जाने वाली कक्षाओं की सही संख्या में कुल समूह को बाँटने के स्थान पर सम्पूर्ण समूह को इकाइयों की दूनी संख्या में बाँट दिया जाता है जिसके फलस्वरूप ४ कक्षाओं के लिए ८ समूह या ५ कक्षाओं के लिए १० समूह आदि बन जाते हैं। इस संगठन में इस स्थल पर हमें ऐसी श्रेणी की कल्पना करनी चाहिए जिसमें ४ कक्षाएँ हों। आचार्य "१" श्रेणी के लिए समूह १ और ५ को, "२" श्रेणी के लिए समूह २ और ६ को, "३" श्रेणी के लिए ३ और ७ को, और "४" श्रेणी के लिए समूह ४ और ८ को संयुक्त कर देता है। यह जानना भी समान रूप से वैध है कि इस प्रणाली के कट्टर समर्थक इस बात पर दृढ़ हैं; चूंकि बच्चों को ऐसी वयस्कता के लिए तैयार करना पड़ता है कि जिसमें उन्हें विविध योग्यता वाले व्यक्तियों

(कुछ श्रेष्ठ और संभवतः कुछ निकृष्ट) के साथ रहना और सफल होना पड़ता है, यह अधिक वाँछनीय व्यवस्था है।

सामाजिक उन्नति कुछ स्कूल प्रणालियों में सामाजिक उन्नति की नीति प्रयोग के रूप में जारी की गई है। इस पद्धति के अनुसार बच्चों को वर्ष में एक कक्षा से दूसरी कक्षा में आयु के वर्ष के अनुसार चढ़ा दिया जाता है चाहे पिछली कक्षा में उसने अपने अध्ययन में सफलता प्राप्त की हो या असफलता। इसके अतिरिक्त, न्यूयार्क नगर में इस प्रयोग के प्रारम्भ में कक्षाएँ विविध बुद्धि स्तरों के आधार पर निर्मित समूहों के रूप में संगठित की गई थीं। सामाजिक उन्नति का मौलिक उद्देश्य एक ही कक्षा में विभिन्न बौद्धिक स्तर और शैक्षिक सफलता के विभिन्न परिमाण वाले समवयस्क बच्चों को एकत्रित करना है ताकि शारीरिक विकास के एक ही मंच पर बच्चों के श्रेष्ठ मानवीय सम्बन्धों को प्रोत्साहन दिया जा सके।

चूँकि, विशेषतया श्रेणी चार और ऊपर की कक्षाओं में, पृथक्-पृथक् बच्चों की बुद्धि-लब्धि ७५ के नीचे से १३० के ऊपर तक होती है और पढ़ने की योग्यता श्रेणी दो या नीचे के स्तर से श्रेणी आठ या उसके ऊपर तक होती है, अतएव यह आवश्यक है कि कक्षा के सदस्यों को तीन या कभी-कभी अधिक समूहों में बाँटा जाता, जिनमें से प्रत्येक समूह किसी भी अन्य समूह से भिन्न मात्रा में अध्ययन की तत्परता दिखाता है।

चाहे सामाजिक बुद्धि का अन्तर्निहित दर्शन सैद्धान्तिक दृष्टि से सुदृढ़ प्रतीत होता हो, परन्तु देखा गया है कि वास्तविक रूप में इसमें लाभ की अपेक्षा हानियाँ अधिक हैं। कुछ स्पष्ट हानियाँ इस प्रकार हैं :

१. अध्यापक एक समय में विशेषतः पठन और गणित में एक समूह के साथ कार्य करता है जबकि अन्य समूह ऐसे कार्यों में लगे रहते हैं जो केवल "व्यस्त" रखने के लिए सौंपे जाते हैं।

२. छोटे समूहों को पढ़ाने से अध्यापक की कुशलता पर भार पड़ता है और उससे यह आशा की जाती है कि वह कक्षा पर अच्छा नियन्त्रण रखे ताकि कुछ लड़के शीघ्रता से कार्य समाप्त करके या कार्य में रुचि न लेकर पढ़ाई में विघ्न न डाल सकें।

३. चाहे अध्यापक अपनी पाठ्य-विधि को कितनी ही कुशलता से तैयार करे, कुशाग्र और मन्द बुद्धि दोनों का ही सत्र का कार्य भलीभाँति पूरा नहीं हो सकता।

४. कुछ मंद छात्र अपनी सीमित योग्यता के अन्दर भी अपना कार्य पूरा नहीं करते क्योंकि जो अध्यापक उन्हें पढ़ने के लिए तिकतिकाता है, उसे वे स्मरण कराते हैं कि यदि वे अपनी पढ़ाई में असफल रहेंगे तो भी आगामी कक्षा में चढ़ा दिये जायेंगे।

५. यद्यपि सामाजिक वृद्धि से यह आशा की जाती है कि वह श्रेष्ठ मानवीय

सम्बन्धों को बढ़ावा देगी, तो भी छात्र अपने सहपाठियों का चुनाव अभिरुचियों और योग्यताओं की समानता के आधार पर करते हैं।

एक सिद्धान्त के अनुसार न्यूयार्क नगर में सामाजिक वृद्धि की नीति में संशोधन किया जा रहा है जिसके द्वारा प्राथमिक से जूनियर या सीनियर हाई स्कूल को छात्रों का स्थानान्तर या कक्षा-वृद्धि कुछ बातों पर निर्भर करती है; इन बातों में तिथि क्रमानुसार आयु, मानसिक स्थिति, साधारण सफलता और प्राप्त किया गया पठन-स्तर सम्मिलित है। जिन स्कूलों में छात्र वर्ष में एक बार उत्तीर्ण किये जाते हैं उनमें एक कठिनाई यह होती है कि असंतोषजनक वृत्त होने पर विद्यार्थी को पूरे वर्ष का कार्य पुनः करना पड़ता है।

बौद्धिक दृष्टि से भ्रष्ट छात्र के निर्देशन के फलितार्थ अध्ययन तत्परता की मात्रा की खोज करने की आवश्यकता पर हम पहले चर्चा कर चुके हैं। प्रतिभावान और मंदबुद्धि या मंद छात्र का परिचय सही आंकड़ों में प्राप्त करने के लिए पृथक्-पृथक् प्रयुक्त, भलीभाँति स्तरीकृत मापक उपकरणों की श्रृंखला के प्रयोग की आवश्यकता है। मूल्यांकन के कार्यक्रम का दायित्व मनोवैज्ञानिक या पूर्णतः प्रशिक्षित और अनुभवी निर्देशन कार्यकर्त्ता पर है। इसके अतिरिक्त, बौद्धिक दृष्टि से असामान्य छात्र चाहे समान स्तर वाले छात्रों के समूह में रहे या असमान स्तर वाले छात्रों के समूह में, या सामाजिक वृद्धि की योजना के अधीन प्राथमिक श्रेणियों से होकर आगे बढ़े, उसके सलाहकार का कर्त्तव्य है कि उसके कार्यक्रम का अनुसरण करे और आवश्यक प्रतीत होने वाले कक्षा सम्बन्धी परिवर्तनों की सिफारिश करे।

इस अध्याय में आगे चलकर हम परामर्शदाता और उसके विशिष्ट परामर्शपात्र के मध्य स्थित निश्चित सम्बन्धों की चर्चा करेंगे। केवल मानसिक स्थिति से सम्बद्ध व्यक्ति के, तालमेल के अतिरिक्त, अन्य रूपों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है। उदाहरण के लिए, निर्देशन के दृष्टिकोण से एक असफल होने वाले छात्र से यदि वर्ष भर का पूरा कार्य पुनः कराया जाय तो उसे अत्यन्त निराशा होगी और उसके मनोबल पर इतना बुरा प्रभाव पड़ेगा कि उसे बहुत अधिक परामर्श सम्बन्धी सहायता देनी पड़ेगी।

साल में एक बार उत्तीर्ण करने का अध्यापकों और छात्र के लिए जो मूल्य है, निर्देशन कार्यकर्त्ता उसे जानते हैं। इसके द्वारा उनमें से प्रत्येक एक दूसरे के विषय में अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है, अध्यापक नवयुवक की योग्यताओं, अभिरुचियों, महत्त्वाकांक्षाओं और पारिवारिक पृष्ठभूमि के विषय में अच्छी सूचनाएँ पा सकता है, विद्यार्थी अध्यापक द्वारा किये गये कक्षा के दैनिक प्रबन्ध और अध्ययन विषयक अपेक्षाओं का आदी हो जाता है और एक स्कूल वर्ष में विभिन्न अध्यापकों के साथ दो बार तालमेल करने की संभावित कठिनाई से बच जाता है।

किन्तु निर्देशन में रुचि रखने वाले स्कूल के लोग यह विश्वास करते हैं कि जो विद्यार्थी आगामी श्रेणी में उत्तीर्ण होने में असमर्थ रहते हैं उनके लिए वर्ष में एक बार उत्तीर्ण करने की नीति में संशोधन होना चाहिए। इस स्थिति में, (१) बच्चों को

सितम्बर या फरवरी में प्रथम श्रेणी में भर्त्ती करके, (२) अध्यापक और उसकी कक्षा को एक वर्ष तक साथ-साथ चला कर, और (३) असफल होने वाले छात्र को पूरे वर्ष के स्थान पर अर्द्धवार्षिक सत्र के लिए उसी कक्षा में रोक कर सुधार किया जा सकता है।

प्रतिभासम्पन्न का निर्देशन

प्रतिभासम्पन्न छात्रों की परामर्श सम्बन्धी आवश्यकताओं पर देश भर में केवल शिक्षक ही पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहे हैं, अपितु संघीय, राजकीय और स्थानीय सामुदायिक सरकार के अधिकारी भी ध्यान दे रहे हैं। समुचित शैक्षिक गतिविधियों में गम्भीरतापूर्वक भाग लेकर उच्च कोटि की कुशलता और विशेष नेतृत्व क्षमताओं का विकास करने की दिशा में श्रेष्ठ बुद्धिमान युवकों को निर्देशन देने की रीतियों के निर्माण के लिए पर्याप्त रचनात्मक विचारधारा को अपनाया जा रहा है।

समस्या की सीमा बीच में स्कूल छोड़ देने वाले छात्रों के अनेक अध्ययनों के परिणाम से ज्ञात हुआ है कि बहुत से योग्य वैज्ञानिक अध्यापक और अन्य व्यावसायिक नेता या तो स्नातक होने से पहले हाई स्कूल छोड़ चुके थे अथवा माध्यमिक स्कूल से आगे अपनी शिक्षा जारी रखने में असमर्थ रहे थे। देश भर के आंकड़ों से ज्ञात होता है कि राष्ट्र के उच्च स्तर के ३० प्रतिशत हाई स्कूल स्नातक कालेज में बिल्कुल नहीं जाते। कालेज की शिक्षा पर व्यय होने वाला धन इतना अधिक होता है कि कुशाग्र बुद्धि वाले १५ प्रतिशत नवयुवकों की औपचारिक शिक्षा हाई स्कूल स्तर से आगे नहीं हो पाती।

स्वास्थ्य की खराबी या ऐसे कारण जो नियन्त्रण के बाहर हों, हाई स्कूल के सुयोग्य स्नातकों को अल्प संख्या में ही कालेज जाने से रोकते हैं। हाई स्कूल में सफलता प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्रों के १५ प्रतिशत में से जो अधिकांश छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते, उसके कारणों में से कुछ इस प्रकार हैं: (१) स्कूल के बाहर की अभिरुचियों का दबाव, (२) अच्छी प्रतीत होने वाली नौकरी की प्राप्ति, (३) बहुत-सी व्यावसायिक अभिरुचियों में से एक का चुनाव करने में असमर्थता, जिसमें भाग लेने के लिए उसे तैयारी करनी चाहिए, और (४) कालेज की शिक्षा के व्यावसायिक और सामाजिक मूल्य से पूर्णतया परिचित न होने के कारण प्रेरणा का अभाव। यह स्पष्ट है कि इन बच्चों को रवैये के सम्बन्ध में निर्देशन की आवश्यकता है। हाई स्कूल के परामर्शदाता और अध्यापक (१) उच्च बौद्धिक स्तर वाले छात्रों में माध्यमिक स्कूल के स्तर से आगे अपनी शिक्षा जारी रखने की इच्छा को बढ़ावा देने, (२) उपयुक्त अध्ययन क्षेत्र का चुनाव करने में उनको सहायता देने, और (३) उन प्रतिभा-सम्पन्न छात्रों के लिए जो बिना आर्थिक सहायता के कालेज की शिक्षा का भार नहीं उठा सकते, कालेज की छात्रवृत्ति या अन्य प्रकार से आर्थिक सहायता का प्रबन्ध करने के लिए समान रूप से उत्तरदायी हैं।

निर्देशन की विशेष रीतियाँ समस्त बच्चों की विकासोन्मुख प्रगति के सम्बन्ध में अपने उत्तरदायित्वों की उपेक्षा किये बिना अमेरिकन स्कूलों के प्रबन्धकर्त्ता आदि उन बच्चों के लिए उपयुक्त शैक्षिक अवसरों की व्यवस्था सम्बन्धी अपने उत्तरदायित्वों पर उचित ही बल दे रहे हैं जो अपवाद रूप से कुशाग्र बुद्धि या विशेष प्रतिभा रखते हैं। मोटे रूप से देखने पर स्कूल के कर्मचारियों और सामुदायिक नेताओं के कर्त्तव्य में शैक्षिक विकास की खोज और श्रेष्ठ क्षमताओं का उपयोग भी सम्मिलित है। कोई व्यक्ति अपने कार्यों के विविध क्षेत्रों में से किसी एक में असाधारण प्रतिभा का परिचय दे सकता है, उसकी विशेष योग्यता या कुशलता संगीत, कला, नाटक, यंत्र, भौतिकता, साहित्य, नेतृत्व या विज्ञान में हो सकती है। किन्तु हमें किसी अन्य क्षमता सम्पन्न प्रतिभा के पूर्ण विकास की प्राप्ति के आधार के रूप में बौद्धिक श्रेष्ठता पर विचार करना है। हमारा विश्वास है कि किसी भी प्रयास में प्रशंसनीय सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में असाधारण कुशाग्र बुद्धि, सूक्ष्मदर्शिता, तीक्ष्ण निर्णय, दूरवर्ती लक्ष्यों का ज्ञान और मधुर सम्बन्धों की पहचान होनी चाहिए।

प्रतिभावान से व्यवहार प्रतिभावान के जीवन में इन गुणों की खोज और श्रेष्ठ कार्य के उत्पादन के लिए विस्तृत रचनात्मक विधि का प्रारम्भ बहुत अल्पायु में नहीं हो सकता। प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों और परामर्शदाताओं को जब यह ज्ञात हो जाय कि अमुक बच्चे में विशेष गुण या प्रतिभा है तो उन्हें उसके विकास को बढ़ावा देना चाहिए किन्तु बचपन की अन्य अभिरुचियों और गतिविधियों की बलि चढ़ा कर नहीं। मानसिक श्रेष्ठता के बावजूद वह बच्चों में बच्चा है—वह काम और खेल में अपने समवयस्कों के साथ घुलना-मिलना चाहता है और इसकी उसे आवश्यकता है।

स्कूल के परामर्शदाताओं और अध्यापकों को प्रतिभावान बच्चे के अभिभावकों को यह समझाने में बहुधा कठिनाई होती है कि उसे "धकेलना" नहीं चाहिए। लेखकों को एक अत्यन्त तीक्ष्ण बुद्धि लड़के की माँ का अस्वस्थ रवैया अब भी स्मरण है। वह एक ऐसे निजी स्कूल में पढ़ रहा था जो कुशाग्रबुद्धि छात्रों के लिए सावधानी से संगठित और संचालित होता था। यद्यपि उसके सहपाठी बुद्धि में उसके समकक्ष ही थे, तथापि उसकी माँ ने पढ़ाई के घंटों को छोड़ कर शेष समय में अपने लड़के को उसके सहपाठियों से मिलने से रोक दिया।

बच्चा स्कूल को ले जाया जाता और स्कूल की छुट्टी होते ही तत्काल घर वापस बुला लिया जाता, उसकी माँ मध्याह्न का भोजन ले जाती और आग्रह करती कि वह अपना भोजन उसकी देख-रेख में एक खाली कमरे में करे, जब दूसरे बच्चे अपने मनोरंजन में लगे होते तो उससे आशा की जाती थी कि वह कक्षा में अकेला रह कर अपने अध्ययन में लीन रहे। मुख्याध्यापक और परामर्शदाता उसकी माँ के रवैये को परिवर्तित नहीं कर सके, लड़का माँ के अतिरंजित संरक्षण से असंतुष्ट था किन्तु अपने परामर्शदाता के उदार किन्तु वस्तुगत व्यवहार का बुद्धिमान लड़के की भाँति स्वागत करता था जो उसके सहपाठियों से किसी भी प्रकार से भिन्न नहीं था।

इस लड़के के माता-पिता ने उस पर दबाव डाला कि वह अल्पायु में डाक्टरेट प्राप्त करने के लिए अपना अध्ययन जारी रखे। उसने इस व्यवसाय में प्रवेश करने से इन्कार करके घर का परित्याग कर दिया। उसने एक क्लर्क के रूप में कार्य प्रारम्भ किया और सदैव अधीनस्थ पदों पर रहा। वह सफल व्यापारिक अधिकारी हो सकता था, किन्तु उसका कथन था कि वह सामान्य व्यक्तियों में रह कर स्वस्थ सामान्य जीवन व्यतीत करना चाहता था।

प्रतिभासम्पन्न की पहचान प्रतिभासम्पन्न की पहचान की जानी चाहिए, उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए और उनके लिए उपयुक्त निर्देशन सेवाएँ उपलब्ध की जानी चाहिएँ। बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ बच्चे की पहचान के लिए किये जाने वाले स्तरीकृत परीक्षण अचूक साधन नहीं हैं। परीक्षा के परिणामों और अध्ययन कार्य के बीच जो सम्बन्ध हैं उसके अध्ययन से विविध परिणाम प्राप्त होते हैं। साधारणतया परीक्षा से निश्चित होने वाली बौद्धिक क्षमता और अध्ययन की सफलता का सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण है। कालेज के छात्रों की अध्ययन सम्बन्धी सफलता के विषय में शैक्षिक परीक्षण सेवा के अध्यक्ष हेनरी चौंसे कहते हैं:

> परीक्षा (AGCT) में ३० प्रतिशत छात्र सर्वाधिक अंक पाते हैं, लगभग ४५ प्रतिशत सम्मानपूर्ण परिणाम प्रदर्शित करते हैं, ५२ प्रतिशत अतिरिक्त छात्रों का कार्य संतोषप्रद होता है और केवल ३ प्रतिशत छात्र असफल होते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक असफल होने वाले छात्र के पीछे १५ सम्मान-परीक्षा उत्तीर्ण छात्र होते हैं और १७ पर्याप्त कार्य करने वाले। अब अन्त में रहने वाले २० प्रतिशत छात्रों पर हमें विचार करना चाहिए। इनमें से केवल लगभग ३ प्रतिशत सम्मान-परीक्षा उत्तीर्ण करेंगे, ५२ प्रतिशत और उत्तीर्ण हो जायेंगे, ४५ प्रतिशत असफल होंगे। प्रत्येक सम्मान-छात्र के पीछे १५ असफल*

यदि हम इस बात को स्वीकार कर लें कि वैध और विश्वसनीय परीक्षाओं का भावी सूचना सम्बन्धी मूल्य होता है तो उच्च अध्ययन में नवयुवक की संभावित सफलता के अवसरों का निश्चय करने के लिए स्तरीकृत परीक्षा लेने के कार्यक्रम की अत्यन्त उपयुक्त स्कूल श्रेणी के सम्बन्ध में प्रश्न उठता है। बहुत से मनोवैज्ञानिकों और शिक्षकों का मत है कि जूनियर हाई स्कूल के वर्षों में ली गई परीक्षाओं के परिणामों से कालेज की सफलता की सूचना उतने ही सही रूप में दी जा सकती है जितने सही रूप में सीनियर हाई स्कूल के बारहवें वर्ष की परीक्षा से दी जाती है।

प्रतिभावान बच्चे के विकास में सहायक होना बच्चा अपनी किशोरावस्था से पूर्व या प्रारम्भिक किशोरावस्था के विकासकाल में अपने भविष्य के विषय में गम्भीरता से विचार करने लगता है। यह वह समय है जब प्राथमिक स्तर से आगे शिक्षा के हमारे विभागीकृत संगठन में उसे अपने हित और योग्यताओं को ध्यान में

* जेम्स बी० कौनेंट, The Identification of the Academically Talented Students in the American Secondary School, पृष्ठ ३३, नेशनल एजुकेशन एसोसियेशन, वाशिंगटन ६, डी० सी०, १९५८। अनुमति प्राप्त कर उद्धृत।

रखते हुए पाठ्यक्रम या पाठ्य-विधियों का चुनाव करना पड़ता है। नवयुवकों की शैक्षिक और व्यावसायिक योजना में जूनियर हाई स्कूल या आठवीं श्रेणी के परामर्शदाता का महत्त्वपूर्ण हाथ रहता है।

प्रारम्भिक किशोरावस्था से आगे तक प्रतिभासम्पन्न छात्र का निर्देशन एक नाजुक कार्य है। कुशाग्रबुद्धि छात्र परामर्शदाता और अध्यापक के रवैयों और व्यवहार के प्रति सचेत रहता है। वह तीक्ष्ण निरीक्षक है। जिस अध्यापक को वह अयोग्य या व्यक्तिगत रूप से अवाँछनीय समझता है उसका वह कटु आलोचक हो सकता है; उसका अपना व्यवहार या महत्त्वाकांक्षा का स्तर प्रशंसित और सम्मानित परामर्शदाता या अध्यापक से प्रभावित हो सकता है। अपने स्कूल के अनुभवों के द्वारा उसकी अपनी शक्तिशाली योग्यताओं का पूर्ण विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि :

१. उसकी सक्षम शक्तियों, शैक्षिक सफलता और व्यक्तिगत रवैयों तथा रुचियों के सम्बन्ध में उसके परामर्शदाता और अध्यापक यथासंभव अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करें।
२. आत्म-बोध और अपने नेतृत्व के उत्तरदायित्वों का मूल्यांकन करने में उसे सहायता दी जाय।
३. केवल ज्ञान का संचय करने के लिए ही नहीं अपितु जो कुछ उसने सीखा है उसका अपने निजी लाभ के लिए और दूसरे के कल्याण के लिए उपयोग करने, अपने जीवन भर बौद्धिक जिज्ञासा का रवैया बनाये रखने और व्यावहारिक अनुसंधान में व्यस्त रहने के लिए उसे प्रेरित करना चाहिए।
४. उसकी शैक्षिक प्रगति संगठित शिक्षा की सामान्य सीमा में बंद नहीं हो जाती, अपितु उसे शैक्षिक विकास और ज्ञान के भंडार की प्राप्ति के लिए अवसर दिये जाते हैं।

कुशाग्रबुद्धि छात्रों के लिए उपयुक्त निर्देशन के मूल्य को कैंटरबरी विश्वविद्यालय, न्यूजीलैंड के जे० जे० स्माल ने भली-भाँति सारबद्ध किया है :

> परामर्शदाताओं और अध्यापकों की अपेक्षाकृत कुशलता और मुख्य उत्तरदायित्वों के अनुसार विभाजित और समस्त छात्रों को उपयोगी और रचनात्मक सहायता देने के उद्देश्य से निर्मित निर्देशन कार्यक्रम नवयुवकों को यथासम्भव शीघ्र अपनी क्षमताओं को जानने और वास्तविकता के साथ भावी योजना को बनाने में महत्त्वपूर्ण योग देना।*

श्रेष्ठ बुद्धि वालों के लिए शैक्षिक व्यवस्थाएँ प्रतिभावान छात्रों की आवश्यकताओं को मान लेने के फलस्वरूप विविध प्रयोगात्मक विधियों का विकास हुआ है। उच्च अध्ययन और विस्तृत शिक्षा के अपेक्षाकृत मूल्य के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों और शिक्षकों में परस्पर मतभेद हैं। भूतकाल में जिस पद्धति का बहुत

* जे० जे० स्माल, "Developing Superior Talent" स्कूल और सोसाइटी, मई १९५८, पृष्ठ २२०-२१। अनुमति लेकर उद्धृत।

अधिक उपयोग होता था, वह थी प्राथमिक स्कूल के प्रतिभावान छात्रों को आगे "लाँघने" (skip) की अनुमति देना। कुछ स्कूल प्रणालियों में यह पद्धति अब भी चलती है। दुर्भाग्य से, कुशाग्र बुद्धि छात्रों को बहुधा इसलिए श्रेणियों को लाँघने की अनुमति दी जाती है कि कक्षा के रजिस्टर संतुलित बने रहें।

माध्यमिक स्कूलों और कालेजों में श्रेष्ठ छात्रों के शैक्षिक अवसरों का सुधार करने के साधन के रूप में उच्च और विस्तृत शिक्षा को अधिकाधिक स्वीकार किया जा रहा है। किन्तु प्राथमिक स्कूल स्तर पर अपेक्षाकृत कुछ स्कूल समुदायों को छोड़ कर श्रेष्ठ बुद्धि वाले विद्यार्थियों के लिए संगठित रूप से कुछ नहीं किया जा रहा। पिट्सबर्ग के एक प्राथमिक स्कूल में आंशिक सुझाव दिये जाते हैं: प्रतिभावान छात्र आधा स्कूल दिवस स्कूल वर्कशाप में व्यतीत करते हैं जिसमें महत्त्वपूर्ण अभिरुचियों और शैक्षिक उपलब्धि को प्रोत्साहन दिया जाता है। बहुत वर्षों तक कार्य की प्रमुख कक्षाएँ क्लीवलैंड में प्राथमिक स्कूल और उच्चतर स्तरों पर चलती रही हैं। चुने हुए "प्रतिभावान" छात्रों को स्कूल के भीतर और बाहर मनोरंजक तथा अनौपचारिक ढंग से परिचालित परियोजनाओं में भाग लेने के अवसर प्रदान किये जाते हैं। हंटर कालेज प्राथमिक स्कूल केवल प्रतिभासम्पन्न छात्रों को लेता है। क्लीवलैंड और हंटर दोनों के कार्यक्रमों में मौलिक अध्ययन के अतिरिक्त सामाजिक विकास और तालमेल पर बल दिया जाता है।

अध्ययन में वृद्धि प्रतिभावान व्यक्ति के अध्ययन का कार्यक्रम इस प्रकार बनाया जाना चाहिए जिससे कि उसके ज्ञान, शक्ति, कौशल और निपुणता में औसत व्यक्ति से कहीं अधिक वृद्धि हो सके। जबकि छात्र शिक्षा के एक स्तर से दूसरे स्तर तक उससे कम योग्य सहपाठियों की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से उस सामग्री में—जिस में उसे प्रवीणता प्राप्त करनी है—कोई खाई छोड़े बिना प्रगति करता है तो समझना चाहिए कि वृद्धि का सिद्धान्त क्रियान्वित हो रहा है। यदि उस विद्यार्थी को सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से श्रेणियों को लाँघते हुए बढ़ने दिया जाय तो संभव है कि वह बहुमूल्य अनुभवों या सूचनाओं से वंचित रह जाय। गतिपूर्ण विशद शिक्षा और लाँघने की क्रिया को मिला कर भ्रम में नहीं पड़ जाना चाहिए। विशद शिक्षा में समस्त श्रेणियों की पूर्ण सामग्री पर ज्ञान समाहित है, किन्तु उसमें कम योग्य छात्रों की अपेक्षा अधिक गति होती है। उदाहरण के लिए, जूनियर हाई स्कूल का बहुत अधिक बुद्धिमान छात्र सामूहिक रूप से प्रगति करते हुए तीन वर्ष का कार्य दो वर्ष में पूरा कर सकता है।

इस तीव्र प्रगतिपूर्ण अध्ययन के हानि-लाभ पर असहमति अधिकाँश में सामाजिक और भावनात्मक तालमेल की उन समस्याओं को लेकर होती है जो उनके इतनी अल्पायु में स्कूल का अध्ययन समाप्त कर लेने के फलस्वरूप होती हैं, उस अवस्था में वे सामाजिक और भावनात्मक दृष्टि से इतने अपरिपक्व होते हैं कि समवयस्कों के साथ उनके कार्यों में भाग नहीं ले सकते। जो कालेज प्रतिभावान छात्रों को अल्पायु में भर्ती कर लेते हैं, वे यह महसूस करने लगे हैं कि सावधानीपूर्वक

निर्देशन करने से ये व्यक्ति कालेज जीवन के समस्त चरणों में भली-भाँति समन्वित हो सकते हैं।

कालेजों द्वारा अपनाई जाने वाली गतिपूर्ण अध्ययन की कुछ विधियाँ इस प्रकार हैं : (१) हाई स्कूल के प्रतिभावान छात्रों को उनके वरिष्ठ वर्ष के प्रारम्भ में पूर्णतया मैट्रिक पास नये छात्र के रूप में भर्ती करना, (२) इन विषयों की परीक्षाओं के परिणामों के आधार पर प्रवेश पाने वाले नवागंतुकों की "योग्यता परीक्षा" लेना और उच्च स्थिति प्रदान करना, (३) इसी प्रकार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए छूट देने के हेतु परीक्षा लेना, और (४) जब कि वे संस्था में स्वयं को सिद्ध कर चुके होते हैं तो प्रतिभावान छात्रों को सम्मान परीक्षा (Honour) की पाठ्य-विधियाँ प्रदान करना। प्रगतिपूर्ण शिक्षा की इन पद्धतियों से मानसिक रूप से श्रेष्ठ बच्चों को पहचानने, उनका वर्गीकरण करने और शिक्षा देने के कार्य का श्रीगणेश होता है। राष्ट्रीय विज्ञान छात्रवृत्ति परीक्षाओं, कालेज परिषद् परीक्षाओं जैसे मूल्यांकन करने के उप-करण और इसी प्रकार की अन्य परीक्षण प्रविधियाँ जो राजकीय या राष्ट्रीय आधार पर प्रयोग की जाती हैं, कालेज में प्रवेश करने वाले प्रतिभासम्पन्न छात्रों की रीतियों के रूप में लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं।

शिक्षा की भण्डार-वृद्धि यद्यपि बहुत वर्षों से शिक्षकों द्वारा शिक्षा के भण्डार में वृद्धि की जा रही है, तथापि इसके भावार्थ के विषयों में अब भी कुछ भ्रम है। प्रारम्भिक प्रस्ताव के रूप में नियमित पाठ्यक्रम में कुछ विषय और सम्मिलित किये गये। आज भण्डार-वृद्धि का अर्थ है किसी भी एक श्रेणी स्तर पर मानसिक दृष्टि से श्रेष्ठ छात्रों के लिए इतनी अधिक शिक्षा सामग्री प्रस्तुत कर देना जिसमें निपुणता पाने की औसत छात्र से आशा नहीं की जा सकती। दुर्भाग्य से अध्ययन की कुछ स्थितियों में भण्डार-वृद्धि शक्ति या अनुभव को नहीं बढ़ाती, किन्तु उसमें केवल अतिरिक्त "व्यस्त रखने वाला कार्य" होता है जो एक ही प्रकार के कार्य को अधिक मात्रा में करने से सम्बन्ध रखता है।

अध्ययन की भण्डार-वृद्धि की व्यवस्था करने वाला कक्षा का अध्यापक जिसकी कक्षा में उदाहरणार्थ ८० से १७० तक की बुद्धि लब्धि वाले छात्र होते हैं, अपने कार्य को महत्त्वपूर्ण समझने लगता है पूरे स्कूल वर्ष में प्रतिभावान विद्यार्थियों की भण्डार वृद्धि सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिस शक्ति और सूक्ष्म दृष्टि की अध्यापक को आवश्यकता होती है, संभवतः अधि-कांश अध्यापकों के लिए वे बहुत महान् वस्तुएँ हैं। अध्ययन के भण्डार-वृद्धि कार्यक्रम उस समय अधिक सरलता और कुशलता से बनाये जा सकते हैं जबकि कक्षा में केवल प्रतिभावान छात्र ही हों। बड़े नगरों में, प्रतिभावान छात्रों के लिए कक्षाएँ साधारण-तया चलाई जा सकती हैं, किन्तु छोटे समुदायों में यह पद्धति सदैव सम्भव नहीं होती। छोटे समुदायों में जब प्रतिभावान छात्र नियमित कक्षाओं में पढ़ता है तो उसके लिए भण्डार-वृद्धि के कार्यक्रम की व्यवस्था करने की आवश्यकता हो सकती है। निःसन्देह

इसका अर्थ है अध्यापकों और निर्देशन कर्मचारियों के लिए बहुत अधिक अतिरिक्त कार्य।

बड़े नगरों में भी एक ही आधार पर संगठित करने की प्रणाली की कुछ हानियाँ हैं किन्तु नियमित कक्षाओं में बुद्धिमान छात्रों को रखने के कार्य में पुनः रुचि ली जाने लगी है। प्राथमिक स्कूल के स्तर पर पठन-योग्यताओं की पूर्ति नियमित कक्षा में भेदात्मक पठन कार्य देकर की जाती है। हाई स्कूल स्तर पर प्रतिभासम्पन्न छात्रों के लिए उच्च शिक्षा और भण्डार-वृद्धि दोनों की व्यवस्था ऐसे स्कूलों की स्थापना करके की जा सकती है जिनमें विशेष प्रतिभाओं के विकास पर बल दिया जाता है। न्यूयार्क नगर का संगीत और कला हाई स्कूल, विज्ञान का ब्रौंक्स हाई स्कूल, हाई स्कूल आफ परफार्मिङ्ग आर्ट्स, और ब्रुकलिन टेकनिकल हाई स्कूल इसके उदाहरण हैं।

मनरो हाई स्कूल, रोचेस्टर, न्यूयार्क जैसे बहुत से अन्य स्कूल प्रतिभावान छात्रों के लिए विविध विषयों का अध्यमन करने के ऐसे ही अनेक अवसर प्रदान करते हैं। मनरो, लुइसियाना के एक प्रयोगात्मक कार्यक्रम में प्रतिभावान छात्रों की कक्षा को रसायन शास्त्र पढ़ाने के लिए एक पारंगत अध्यापक (जिसने पिट्स वर्ग, पा० में सफलतापूर्वक बहुत-से अध्यापकों को प्रशिक्षित किया था) रखा गया था। इस कक्षा के लिए छात्रों का चुनाव रसायन शास्त्र में ली गई परीक्षा के आधार पर नहीं किया गया था, किन्तु बहुत-से विषयों में प्रदर्शित श्रेष्ठता के आधार पर किया गया था। यह परियोजना कक्षा के सदस्यों को ही लाभान्वित नहीं कर रही है, अपितु इसने स्कूल में अध्ययन के प्रति एक नया सम्मान उत्पन्न कर दिया है।

जो शैक्षिक नेता प्रतिभासम्पन्न छात्रों के लिए योजना बना रहे हैं वे विश्वास करते हैं कि सामान्य हाई स्कूल शैक्षिक दृष्टि से श्रेष्ठ और कुछ पिछड़े हुए विद्यार्थियों— दोनों की शैक्षिक आवश्यकताओं और रुचियों की पूर्ति के लिए मिला-जुला कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते हैं। कौनैंट के अनुसार हाई स्कूल के प्रतिभावान छात्रों की पहचान करके अध्यापक को चुनौती देने वाले ऐसे कार्यक्रम को अपनाने के लिए उनका निर्देशन (आग्रह) करना चाहिए जो कालेज स्तर पर चलने वाली शिक्षा का ठोस आधार बन सके।

सम्मान पाठ्य-विधि बहुत-से हाई स्कूलों में प्रस्तुत की जाने वाली सम्मान पाठ्य-विधि (honours course) तीव्रगति से पढ़ने वाले छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्कूल के अन्दर विशेष कक्षा का समूहीकरण है। ये पाठ्य-विधियाँ न्यूयार्क नगर में बहुत वर्षों से चल रही हैं। इन समूहों को पढ़ाने के लिए विशेष योग्यता प्राप्त अध्यापकों की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्य से कभी-कभी विद्यार्थियों को सफलता श्रेणियों में भेजकर दण्डित किया जाता है। चूँकि सम्मान-कक्षा के छात्रों में भी विविध योग्यता वाले छात्र होते हैं, इसलिए अध्यापक में ऐसी प्रवृत्ति हो सकती है कि वह श्रेणियों को वितरण के संशोधित सामान्य घुमाव के अनु-सार व्यवस्थित कर दे। जिन विद्यार्थियों के अंक वितरण की निम्नतर श्रेणी में आते हैं, वे इसका विरोध करते हैं; यदि वे नियमित कक्षाओं में रहते तो सम्भवतः वे १०

प्रशिशत कक्षा की चोटी पर होते। इन छात्रों के लिए संख्या सम्बन्धी श्रेणियाँ महत्त्व-पूर्ण होती हैं, क्योंकि ये छात्र कालेज में जाना चाहते हैं और उन्हें जाना चाहिए। जब सांख्यिकी श्रेणियों को सौंपने की यह समस्या सुलझ सकती है तब सम्मान पाठ्य-विधि का यह विचार चुने हुए छात्रों के लिए अत्यन्त मूल्यवान् होगा, इस प्रकार कक्षा का समूहीकरण करने से व्यक्तियों को भण्डार-वृद्धि का पूर्णतम अवसर मिलेगा। प्रयोग की गई सामग्री और उपलब्ध सत्ता की राशि पर केवल वे ही प्रतिबन्ध हैं जो स्वयं अध्यापकों और छात्रों द्वारा लगाये गये हैं। यदि "सम्मान-कक्षाएँ" इस प्रकार संगठित की जाएँ कि एक छात्र उनमें से केवल कुछ में ही प्रविष्ट हो सके और अन्य विषय नियमित कक्षाओं में पढ़ते रहें तो उनके स्कूल के छात्रों से पृथक् हो जाने की आशंका नहीं रहती।

वह प्रयोगात्मक कार्यक्रम जिसने हाल ही राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया है, हूरों, ओहियो में सातवीं श्रेणी में प्रतिभासम्पन्न छात्रों की पहिचान करने और उन्हें प्रतिवर्ष पारम्परिक चार विषय के स्थान पर पाँच प्रमुख विषयों को पढ़ने या कार्य की इकाइयों को करने की अनुमति देने के लिए प्रयुक्त होता है। सातवीं श्रेणी में विदेशी भाषा का अध्ययन प्रारम्भ करके प्रतिभावान छात्र एक भाषा का लगातार छः वर्ष तक अध्ययन कर सकते हैं जिससे वे वास्तविक पटुता प्राप्त कर सकते हैं। सातवीं श्रेणी में वे बीजगणित और सरल गणित भी प्रारम्भ करते हैं और सामान्य विज्ञान की पूर्ण पाठ्य-विधि का अध्ययन करते हैं। स्कूल दिवस को छः से सात घंटे तक बढ़ा कर ही प्रतिभासम्पन्न छात्रों के लिए यह विस्तृत कार्यक्रम संभव किया जा सका है।

विज्ञान के अध्ययन की एक अतिरिक्त बात का सम्बन्ध उस सहायता से है जो सुयोग्य सामुदायिक स्वयंसेवकों द्वारा दी जाती है; ये स्वयंसेवक स्कूल में पढ़ाये जाने वाले वैज्ञानिक सिद्धान्तों का व्यावहारिक प्रदर्शन करने के लिए आते हैं। इस परियोजना में स्वयंसेवकों ने अध्ययन के अन्य क्षेत्रों में भी सहायता की है।

सामाजिक नेतृत्व और प्रतिभावान छात्र

सामाजिक या अर्द्ध-सामाजिक स्थितियों में प्रतिभावान छात्र किस सीमा तक नेतृत्व प्रदान करते हैं, इसकी खोज करने के लिए कोई अनुसंधान कार्य नहीं किया गया है। लेखकों ने प्राथमिक स्कूल के स्तर पर चार चतुर्थ-श्रेणी कक्षाओं में नेतृत्व का एक छोटा-सा अध्ययन प्रारम्भ किया था। जब कोई बच्चा कक्षा के सहपाठियों द्वारा कक्षा का प्रधान चुना गया तो नेतृत्व का निश्चय कर लिया गया। यह मालूम हुआ कि इसी स्कूल प्रणाली की चतुर्थ श्रेणी में ठोस योग्यता के अतिरिक्त अन्य विशेष-ताओं ने उसे नेतृत्व प्रदान किया है।

वयस्क कार्यों के समस्त क्षेत्र—शासकीय, व्यावसायिक और सामाजिक—ईमान-दारी का उच्च स्तर रखने वाले योग्य और प्रशिक्षित स्त्री-पुरुषों के नेतृत्व से लाभा-न्वित हो सकते हैं। यह माध्यमिक स्कूल और कालेज के परामर्शदाताओं का उत्तर-

दायित्व है कि वे प्रतिभावान छात्रों को नेतृत्व के अवसर प्रदान करें और इन युवकों को ऐसे गुणों और अभिरुचियों का विकास करने में सहायता दें जो उनसे कम योग्य छात्रों को उन्हें अपना नेता मानने की प्रेरणा दे सकें। नेतृत्व की क्षमताओं का विकास करने के लिए स्कूल के अंदर और बाहर छात्र परिषदें, स्कूल क्लब और सेवा संगठन उत्तम माध्यम हैं। यद्यपि बहुत से स्कूल ये अवसर प्रदान कर रहे हैं, फिर भी नियोजित निर्देशन कार्यक्रमों के रूप में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है।

प्रतिभावान का अध्ययन इस बढ़ते हुए विश्वास को ध्यान में रखते हुए कि नवयुवक की बहुत सी शक्तिशाली क्षमता व्यर्थ नष्ट हो जाती है, इस समूह की विशेष योग्यताओं का विकास और उपयोग करने के लिए कार्यकारी योजनाओं के निर्माणार्थ पर्याप्त समय और धन व्यय किया जा रहा है। क्लीवलैंड में मेजर वर्क क्लासेज, विशेषता प्राप्त हाई स्कूल और प्रगति कालेज कार्यक्रम जैसी अनेक परियोजनाओं की हमने चर्चा की है। कुछ अन्य परियोजनाएँ यहाँ प्रस्तुत की जा रही हैं।

सन् १९५८ में कालेजों और माध्यमिक स्कूलों के उत्तर-मध्य संघ ने "माध्यमिक स्कूलों के श्रेष्ठ और प्रतिभासम्पन्न छात्रों के निर्देशन और प्रेरणा" से सम्बन्धित एक अध्ययन का सूत्रपात किया था। इस अध्ययन को वित्तीय सहायता कार्नेगी निगम से मिल रही है और इसका संचालन डा० जे० डब्ल्यू० बरियान कर रहे हैं। इस परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

१. उच्च कोटि का कालेज कार्य करने की क्षमता रखने वाले माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों के पहचानने, निर्देशित और प्रेरित करने के लिए अत्यन्त प्रभावशाली प्रविधियों की खोज करना।

२. इन श्रेष्ठ और प्रतिभासम्पन्न छात्रों को कालेज के लिए योजना बनाने और प्रभावशाली ढंग से तैयारी करने तथा स्कूल में अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करने की प्रभावशाली रीतियों का विकास करना।

३. पहचान, निर्देशन और प्रेरणा की ऐसी प्रविधियाँ जिस सीमा तक ऐसे छात्रों को भारी अनुपात में कालेज जाने के लिए प्रेरित कर सकें, उनका निश्चय करना।

४. श्रेष्ठ और प्रतिभावान छात्रों को निर्देशित और प्रेरित करने के लिए कार्यविधियों के गहन अध्ययन, अभिस्वीकृति और मूल्यांकन में आचार्यों, अध्यापकों और परामर्शदाताओं के महत्त्वपूर्ण समूह को सम्मिलित करना।

५. श्रेष्ठ और प्रतिभासम्पन्न छात्रों की शिक्षा से सम्बन्धित ताजे अध्ययनों और परियोजनाओं की खोजों और परिणामों का विश्लेषण, समन्वय और उपयोग करना।

६. उन विविध योजनाओं के लिए कार्यविधियों और सामग्रियों का विकास करना जो माध्यमिक स्कूल अपने उन श्रेष्ठ और प्रतिभासम्पन्न छात्रों

को पहचानने, प्रेरित और शिक्षित करने के लिए प्रयोग में ला सकते हैं जो आजकल कालेज में पढ़ने की योजना नहीं बना रहे हैं।

७. ऐसे व्यावहारिक उपायों का विकास करना जिनके द्वारा अमेरिका समस्त क्षेत्रों में शिक्षित और प्रशिक्षित जन-बल की भारी वृद्धि कर सके जिसकी हमारे देश की रक्षा के लिए और उसकी जीवन-पद्धति को बनाये रखने के लिए आवश्यकता है।

जेम्स कौनेंट द्वारा किये गये अध्ययन की वित्तीय सहायता फोर्ड फाउंडेशन ने की थी। उसके उद्देश्य थे : (१) प्रतिभासम्पन्न छात्रों के लिए जो कुछ किया जा रहा था उसकी खोज करना, और (२) उनकी शैक्षिक प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक परिवर्तनों और सुधारों का निश्चय करना। ३०,००० डालर की आर्थिक सहायता प्राप्त करके न्यूयार्क स्कूल प्रणाली ने सन् १९५८ में जो दूसरा अध्ययन प्रारम्भ किया था, उसका लक्ष्य था : (१) हाई स्कूल के बौद्धिक दृष्टि से श्रेष्ठ छात्रों द्वारा कम प्राप्त की गई सफलताओं के निहित कारणों की खोज करना, और (२) उन रीतियों का निश्चय करना जिनके द्वारा इन विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं का अधिक प्रभावशाली विकास करने की दिशा में प्रेरित किया जा सके। उदाहरण के लिए कम सफलता प्राप्त करने वाले अनेक विद्यार्थी कोलम्बिया विश्व-विद्यालय में सामाजिक शिक्षा की रक्षा में अध्ययन कर रहे हैं।

मंदबुद्धि और मंद छात्रों का निर्देशन

बीसवीं शताब्दी से पूर्व जो बच्चा अपने अध्ययन में निरन्तर असफल होता था, उसे उसके अध्यापक आलसी समझा करते थे। जब एल्फ्रेड बिनेट ने बच्चे की योग्यता सम्बन्धी जाँच करने के लिए कुछ परीक्षण किये, उसके पश्चात् से स्कूल के लोगों ने बुद्धि की दृष्टि से तथा अन्य प्रकार से मंद छात्र कीअध्ययन-विषयक समस्याओं पर ध्यान देना प्रारम्भ किया।

मंदबुद्धि की विशेष समस्याएँ यदि कोई व्यक्ति शिक्षा से इस सीमा तक लाभ उठाने में प्रत्यक्ष रूप से असमर्थ रहे कि उसे मंदबुद्धि समझा जाने लगे तो उसके मूल में निम्नलिखित बातें हो सकती हैं : (१) धीमा और अपर्याप्त शारीरिक विकास (शारीरिक गठन की दृष्टि से पिछड़ा हुआ) या (२) भावनात्मक अस्थायित्व अथवा बाधाएँ (कार्य की दृष्टि से पिछड़ा हुआ)। यहाँ हमारा सम्बन्ध शारीरिक गठन की दृष्टि से पिछड़े हुए बच्चे से है जो संस्था के स्थान पर घर में रहता है और नियमित स्कूल में पढ़ता है।

मंद छात्र की तालमेल की समस्याएँ पिछड़ेपन, उसकी विचलित स्थिति के प्रति घर वालों का रवैया, उपलब्ध शैक्षिक अवसरों के प्रकार और राशि तथा समवयस्क लोगों के समूह के सदस्यों के साथ उसके सम्बन्ध की मात्रा के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं। सम्भव है कि उसके कारण उसके माता-पिता लज्जा अनुभव करते हों अथवा उसकी बौद्धिक कमी को अनुभव करने में असमर्थ हों। वह केवल अपनी नियमित कक्षा में ही असफल नहीं होता अपितु वह अत्यन्त कठिन पाठ्य सामग्री में निपु-

णता प्राप्त करने के लिए अध्यापक द्वारा दबाव डाले जाने के प्रयत्न का भी विरोध करता है। वह अधिक योग्य विद्यार्थियों के व्यवहार का अनुकरण करता है, जिसके परिणाम कभी-कभी उसके लिए दुःखदायी होते हैं।

मंदबुद्धि बालक या किशोर उन इच्छाओं, चाह और कामनाओं को प्रगट करता है जो समस्त विकासशील व्यक्तियों के लक्षण हैं। अपनी निजी मर्यादाएँ समझना उसके लिए कठिन है। अतएव वह उन आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में असमर्थ रहता है, जिन्हें वह अनुभव करता है, जिनसे उसमें भावनात्मक उथल-पुथल मच जाती है और उसकी व्यक्तिगत निष्प्रभता की भावनाएँ तथा समाज-विरोधी रवैये जोर पकड़ जाते हैं। फिर वह स्वच्छन्द नवयुवकों या वयस्कों के पंजे में फँस सकता है। चापलूसी या अहंकार को बढ़ाने वाली रीतियों से अपना उल्लू सीधा करने के लिए ऐसे लोग उसे अपने हाथों की कठपुतली बना लेते हैं।

विशेष निर्देशन विधियाँ विशाल दृष्टि से देखने पर मंदबुद्धि बालक के निर्देशन में ये बातें आती हैं: (१) उसकी शिक्षा के स्तर के अनुसार उसके लिए अध्ययन के समुचित अवसरों की व्यवस्था करना, (२) अपनी मानसिक-च्युति को स्वीकार कर उसके अनुसार तालमेल करने में उसकी सहायता करना, (३) उपयुक्त व्यवसाय के लिए प्रशिक्षण देना, और (४) घर, समाज और नागरिक कार्यों के प्रति स्वस्थ और रचनात्मक रवैयों का विकास करने के लिए उसे प्रोत्साहन देना।

यह स्कूल के परामर्शदाताओं का उत्तरदायित्व है कि वे स्कूल के अध्यापकों के सहयोग से ऐसे छात्रों की खोज करें जो मंदबुद्धि प्रतीत होते हों। मूल्यांकन की विविध प्रविधियों के प्रयोग से मन्द बच्चों को उनकी प्रत्याशित परिपक्व शक्ति के अनुसार समूहों में बाँट दिया जाता है। यह इसलिए किया जाता है कि प्रत्येक बच्चे को इस प्रकार शिक्षा दी जा सके कि वह अपने समाज के उस समूह के—जहाँ वह रहेगा—अनुकूल बन सके।

मंद बच्चे की शिक्षा-क्षमता के मूल्यांकन के लिए व्यक्तित्व के जिन रूपों पर सामान्यतया विचार किया जाता है, वे हैं बुद्धि स्तर, शारीरिक और स्वास्थ्य की स्थिति, शारीरिक कुशलता, भावनात्मक स्थायित्व और सामाजिक परिपक्वता। यद्यपि विविध समूहों में कोई निश्चित विभाजक रेखा नहीं हो सकती, मोटे रूप से मंदबुद्धि छात्रों का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है:

१. परावलम्बी—बुद्धि लब्धि ५० से कम
२. अर्द्ध-परावलम्बी—५० से ६० बुद्धि लब्धियाँ। इस समूह के कुछ मानसिक कौशल रखने वाले भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से अधिक परिपक्व व्यक्ति प्रत्यक्ष निरीक्षण में अकुशल कार्यों में लग सकते हैं। इस समूह का निम्नतर भाग घर में सहायक हो सकता है।
३. अधिक परावलम्बी—६५ से ७५ या ८० बुद्धि लब्धियाँ। ऊपरी सीमाओं में बहुत से छात्रों को पूर्णतया स्वावलम्बी बनाने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। अन्य अर्द्धकुशल कारीगर होते हैं। शारीरिक कौशल,

भावनात्मक स्थायित्व और परिपक्वता या शारीरिक दोष की मात्रा पर सीमावर्ती स्थिति निर्भर करती है।

निर्देशन कर्मचारी (१) मन्द छात्रों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण करते, (२) छात्रों को उपयुक्त कक्षाओं में रखते, और (३) शैक्षणिक कार्य-विधियों में सहायता देते हैं। परामर्शदाता अपने परामर्शपात्रों की प्रगति का अनुसरण करते हैं और जहाँ कहीं भी उन्हें तालमेल सम्बन्धी कठिनाई होती है, उसके प्रति सतर्क रहते हैं। मनोबल के निर्माण की ओर वे विशेष रूप से ध्यान देते हैं। अतएव उनके परामर्शपात्रों को स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने के लिए उनसे प्रोत्साहन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अधिक योग्य छात्रों को परामर्शदाता प्रेरित करते हैं कि वे अपने समूह की परियोजनाओं में मंदबुद्धि छात्रों को भी सम्मिलित कर लें। व्यावसायिक परामर्शदाता उनके लिए उस समय अंशकालीन नौकरी खोजने का प्रयत्न करते हैं जबकि वे स्कूल में पढ़ रहे होते हैं, और आगे चल कर उन्हें उनके उपयुक्त पूरे समय के कार्य में लगाने का यत्न करते हैं।

मंदबुद्धि छात्रों के साथ कार्य करने वाले परामर्शदाताओं का एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व यह है कि वे उनके अभिभावकों का निर्देशन करें। अभिभावकों को यह समझाने की आवश्यकता है कि उनके बच्चे के लिए पढ़ाई का भार सम्भालना कठिन है। मन्दबुद्धि बच्चों के अभिभावकों के संघ जैसे संगठित समूह अभिभावकों को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि भ्रष्ट बच्चे के साथ उसकी विशिष्ट कठिनाई को ध्यान में रखते हुए व्यवहार करने की आवश्यकता है। इस समस्या का वास्तविकता के साथ सामना करने में निर्देशन कर्मचारी और विशेष रूप से प्रशिक्षित अध्यापक अभिभावकों की बहुत सहायता कर रहे हैं।

मंदबुद्धि छात्रों के लिए शैक्षिक व्यवस्था किसी भी बात पर भलीभाँति ध्यान न दे सकने और अर्थों तथा विचारों को समझने में असमर्थ होने के कारण मंदबुद्धि या मंद छात्र व्यक्तिगत शिक्षा से अधिक लाभान्वित हो सकता है। चूँकि वह सैद्धान्तिक बातों को समझने में असमर्थ होता है, उसे ठोस व्यावहारिक उदाहरण देकर समझाना चाहिए। यदि वह पढ़ाई के साधारण कार्य में तनिक-सी भी सफलता दिखाता है तो उसकी जी खोलकर प्रशंसा करनी चाहिए। रचनात्मक अध्ययन कार्यों में उसकी रुचि बनाये रखना और उसे इसके लिए प्रेरित करना अध्यापक के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है।

बहुत से बड़े नगरों में ऐसे मंद छात्रों (५० से ७५ बुद्धि लब्धि वाले) के लिए विशेष कक्षाएँ चलाई जा रही हैं, जिन्हें प्रशिक्षण के योग्य समझा जाता है। जिन मंदबुद्धि छात्रों की बुद्धि लब्धि २५ और ५० के मध्य होती है, उन्हें प्रशिक्षण के योग्य तो समझा जाता है, किन्तु शिक्षा के योग्य नहीं। नौकरी के लिए तैयारी करने की दिशा में इस समूह के लिए बहुत कम कार्य किया गया है; व्यक्तिगत आवश्यकताओं की देखभाल करने की योग्यता के विकास और अच्छे सामाजिक सम्बन्धों के प्रोत्साहन पर बल दिया जा रहा है। वर्तमान प्रवृत्ति मंदबुद्धि, शिक्षा योग्य, या केवल प्रशिक्षण योग्य

व्यक्तियों को विशेष रूप से तैयार किये गये और व्यक्तिगत रूप से योग्यता प्राप्त स्त्री-पुरुषों द्वारा पढ़ाई जाने वाली कक्षाओं में रखने की ओर है।

प्रारम्भ में इन विशेष कक्षाओं का संगठन मुख्यतः प्राथमिक स्कूल के स्तर पर हुआ था। किन्तु जब बहुत-से राज्यों में स्कूल छोड़ने की आयु में शनैः-शनैः वृद्धि हुई तो मंदबुद्धि छात्रों की कक्षाएँ माध्यमिक स्कूलों—विशेषतः जूनियर हाई स्कूलों—में लगने लगीं। शिक्षा और निर्देशन के नियोजित कार्यक्रम प्रारम्भिक बचपन से लेकर नवयौवन तक शिक्षा की निर्माण-प्रक्रिया के द्योतक हैं। यद्यपि भिन्न-भिन्न स्कूल प्रणालियों में पाठ्यक्रम भिन्न-भिन्न होते हैं, तथापि शिक्षा के व्यापक बाह्य रूप अपेक्षाकृत समान होते हैं। स्मरण रहे, शिक्षण से लाभान्वित होने की व्यक्तिगत योग्यता के अनुसार व्यक्तिगत कार्यक्रम संशोधित किये जाते हैं।

प्रारम्भिक स्कूल स्तर पर पाठ्यक्रम का सम्बन्ध गति नियन्त्रण के विकास और सरल ज्ञान प्रदान करने से होता है, जिसमें भाषण, व्यक्तिगत सफाई, सामाजिक रहन-सहन, भावनात्मक नियन्त्रण और घर तथा समाज से तालमेल पर बल दिया जाता है। माध्यमिक स्कूल के कार्यक्रम में मौलिक शिक्षाओं पर यथावत् ध्यान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त ऐसी परियोजनाएँ इसमें सम्मिलित कर ली जाती हैं जिनका सम्बन्ध नौकरी के लिए तैयारी करने और उसे प्राप्त करने, पारिवारिक जीवन, आय का बजट बनाने और इसी प्रकार के कार्यों से है। कुल मिलाकर मंद-बुद्धि छात्रों की शिक्षा के जिन लक्ष्यों पर बल दिया जाता है, उनमें निम्नलिखित शिक्षाएँ सम्मिलित हैं :

१. सामाजिक और नागरिक कार्यों को समझना और उनमें भाग लेना।
२. स्वास्थ्यप्रद खेल-कूद में भाग लेना।
३. स्वास्थ्य की अच्छी आदत डालना।
४. घर का रचनात्मक प्रबन्ध (लड़के और लड़कियों दोनों के लिए) जिसमें घर का बजट बनाना, बच्चे की देखभाल, भोजन की तैयारी तथा अन्य वैवाहिक और अभिभावकों के उत्तरदायित्व सम्मिलित हैं।
५. दक्षता और कार्यकर्त्ताओं के रवैयों सहित समुचित नौकरी प्राप्त करने और उनमें भाग लेने की पर्याप्त तैयारी।
६. १७ और २१ वर्ष की आयु के मध्य के उन मंद छात्रों के लिए निरन्तर शिक्षा जो अभी नौकरी प्राप्त करने के योग्य नहीं हैं।

व्यक्तित्व-भ्रष्ट का निर्देशन

कभी-कभी जब भावनाएँ असंतुलित हो जाती हैं तब भावनात्मक स्थायित्व रखने वाले व्यक्ति भी उद्दंड, विद्रोही या उदासीन हो जाते हैं। यह भावनात्मक स्थिति अस्थायी होती है। जब विघ्नकारक तत्त्व हट जाते हैं या जब मनुष्य उनकी निरर्थकता को समझ लेता है तो वह अपने स्वाभाविक आत्म-संयम को प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक

अभिभावक, स्कूल के परामर्शदाता या अध्यापक को इस प्रकार की भावनापूर्ण स्थिति पर विजय प्राप्त करने में नवयुवकों को सहायता देने का अनुभव होना चाहिए।

त्रुटिपूर्ण भावना सम्बन्धी और सामाजिक समन्वय कभी-कभी अपवाद-स्वरूप या असाधारण व्यवहार का कारण बड़ा गहरा होता है। उदाहरण के लिए वयस्कों की सत्ता के विरुद्ध नवयुवक में असन्तोष, अ-रक्षा या विद्रोह की भावना शनैः-शनैः विकसित होती है। अन्त में समाजविरोधी रवैया इतना सबल हो जाता है कि उसकी अभिव्यक्ति भ्रष्ट व्यवहार के किसी न किसी रूप में होकर रहती है। यदि किसी व्यक्ति के व्यवहार से दीर्घकालीन या बार-बार उद्दंड या विद्रोही कार्यों या अत्यन्त संकोच अथवा उदासीनता का परिचय मिलता है तो इस मार्ग-च्युति के सम्भावित कारण की खोज करने और सम्भवतः उसका उपचार करने की आवश्यकता है।

गम्भीर भावनात्मक अस्थायित्व या असामाजिक रवैयों के जो लक्षण व्यवहार के रूप में परिलक्षित होते हैं, वे हैं : स्वाभाविक रूप से मिथ्या भाषण, चोरी, आवारागर्दी या शारीरिक क्षति पहुँचाना। इस प्रकार के व्यवहार की प्रतिक्रियाओं से समाज के साथ-साथ स्वयं व्यक्ति का हित भी विपत्ति में पड़ जाता है। अतएव उनसे किसी भी प्रकार प्रभावित व्यक्ति के लिए वे चिन्ता के विषय बन जाते हैं। चूंकि प्रतिकूल वातावरण पहले से ही विकसित व्यक्तित्व सम्बन्धी दोष को गम्भीर रूप दे सकता है, इसलिए यह आवश्यक है कि नवयुवक की त्रुटिपूर्ण स्थितियों में सुधार किया जाय अथवा उसे श्रेष्ठतर वातावरण में स्थानान्तरित कर दिया जाय। यदि इस प्रकार के व्यक्ति के व्यवहार का कारण गम्भीर हो तो मानसिक रोग चिकित्सक की सेवाओं की आवश्यकता हो सकती है।

त्रुटिपूर्ण भावनात्मक और सामाजिक समन्वय वाले व्यक्तियों का निर्देशन सारी किताब में बच्चों के व्यवितत्व सम्बन्धी दोषों में निहित और भावनात्मक तथा सामाजिक गलत समन्वय से सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाने के लिए किये गए यत्नों के विषय में स्कूल के लोगों—विशेषतः निर्देशन कर्मचारियों—के कार्यों पर विचार किया गया है। इसलिए यहाँ हम सेवा के इस क्षेत्र में निर्देशन की विधियों के मूल रूपों को केवल सार रूप में प्रस्तुत करेंगे :

१. वृद्धि और विकास में निहित विभिन्नताओं का ज्ञान।
२. व्यक्ति पर उसकी सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के महत्त्वपूर्ण प्रभावों को समझना।
३. अध्ययन की कठिनाइयों और भावनात्मक गलत तालमेल के मध्य स्थित सम्बन्ध का ज्ञान।
४. भावनात्मक असन्तुलन के लक्षणों के प्रति जागरूकता।
५. असाधारण व्यवहार में निहित कारणों की पहचान।
६. गम्भीर रूप से असंतुलित छात्रों के साथ व्यवहार करने में अपनी निजी मर्यादाओं के सम्बन्ध में स्कूल के परामर्शदाता की सूक्ष्मदर्शिता।

७. वहाँ भावनात्मक अथवा सामाजिक दृष्टि से च्युत व्यक्तियों को निदान और उपचार के लिए भेजा जा सकता है उन उपयुक्त सामुदायिक अभिकरणों का ज्ञान ।

८. घर, स्कूल कर्मचारियों और अभिकरण के कर्मचारियों के साथ सहयोग ।

गलत तालमेल रखने वाले नवयुवक की समस्याएँ एक दूसरे से भिन्न होती हैं, यह निर्विवाद है। इसलिए भावनात्मक दृष्टि से असन्तुलित छात्र के परामर्शदाता और अध्यापक का यह कर्त्तव्य है कि जब वे व्यक्तित्व की दृष्टि से विचलित छात्र को पुनस्स्संथापन में सहायता देने का प्रयत्न करें तो अपनी निर्देशन विधियों को सम्बन्धित छात्र के अनुकूल बना लें ।

चूँकि गम्भीर भावनात्मक और सामाजिक कठिनाइयों के साथ ही बहुधा अपराध वृद्धि आ जाती है, इसलिए स्कूल के लोग उन नवयुवकों के व्यक्तिगत गलत तालमेल को प्रारम्भ में ही रोकने और उपयुक्त उपचार की व्यवस्था करने के कार्यक्रम के निर्माण के प्रति अधिकाधिक सक्रिय होते जा रहे हैं, जो इतने असंतुलित होते हैं कि समाजविरोधी व्यवहार में व्यस्त हो जाते हैं। न्यूयार्क नगर में, वास्तविक या शक्तिशाली उपद्रवकारियों के पुनस्स्संथापन के लिए विशेष स्कूल स्थापित किये गये हैं। कक्षाएँ छोटी हैं, शिक्षण सावधानी से निर्वाचित और सुयोग्य अध्यापक देते हैं; निर्देशन, मनोवैज्ञानिक और मानसिक रोग चिकित्सा सम्बन्धी सेवाएँ उपलब्ध हैं। इसका उदाहरण ब्लूमफील्ड (एन० जे०) पब्लिक स्कूलों के शिशु निर्देशन विभाग का कार्यक्रम है। उन्होंने निम्नलिखित कार्य-विधियों की सिफारिश की है :

जिन रीतियों से स्कूल (बाल अपराधियों की) सहायता कर सकता है, उनमें से सम्भवतः एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रीति है एक लचीला कार्यक्रम प्रस्तुत करना जिसमें दृढ़ किन्तु मैत्रीपूर्ण अनुशासन, पढ़ने में कुशलता का अभाव जैसी महत्त्वपूर्ण शैक्षिक कमी के उपचार के अवसर होते हैं। स्कूलों की विशेष सेवाएँ—मनोवैज्ञानिक, भ्रमणशील अध्यापक, स्कूल नर्सें, निर्देशन परामर्शदाता—इन बच्चों को भी उसी प्रकार उपलब्ध हैं जिस प्रकार वे समस्त बच्चों के लिए उपलब्ध हैं। स्कूल में प्राप्त समस्त स्रोतों का पूर्ण उपयोग आवश्यक है।

स्कूल का यह भी उत्तरदायित्व है कि वह सामुदायिक स्रोतों का उपयोग करे। ब्लूमफील्ड स्कूलों की यह नीति रही है कि वे विविध सामुदायिक अभिकरणों से सम्पर्क रखें। सामुदायिक अभिकरणों के प्रयोग के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक सुझाव निम्नलिखित हैं :

१. शिशु और अभिभावक के मामले को विचारार्थ भेजने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए, इससे पूर्व कि उनकी सेवाएँ प्रभावपूर्ण हो सकें उन्हें इन अभिकरणों से सहायता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। मामलों को विचारार्थ भेजने से पूर्व स्कूल कर्मचारियों को सहायता लेने से बहुधा परहेज करना चाहिए ।

२. अभिकरणों के विचारार्थ व्यक्तियों को "उचित अधिकारियों" द्वारा नियमित रीति से भेजना चाहिए। यदि किसी एक व्यक्ति के लिए अव्यवस्थित ढंग से अनेक अभिकरणों से सम्पर्क किया जाय तो वास्तव में हानि होने की संभावना हो सकती है।

३. किसी एक बच्चे पर कार्य करने वाले समस्त अभिकरणों के प्रयत्नों का समीकरण करना चाहिए।

४. किसी को समुचित रीति से विचारार्थ भेजने के लिए यह आवश्यक है कि समस्या का और अभिकरण के कार्य का सावधानी से विश्लेषण किया जाय।

५. कुछ विशिष्ट अपवादों को छोड़कर स्कूल द्वारा किसी अभिकरण के पास किसी बच्चे को दंड दिलाने की दृष्टि से नहीं भेजना चाहिए।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. बच्चों और नवयुवकों के लिए प्रयुक्त होने वाले "अपवादस्वरूप" शब्द की व्याख्या कीजिए।

२. भ्रष्टता की समस्या के सिलसिले में निर्देशन के महत्त्व पर विचार कीजिए।

३. श्रवण दोष/दृष्टि दोष/भाषण दोष रखने वाले बच्चों या नवयुवकों को क्या विशेष सहायता दी जा सकती है?

४. स्कूल में पढ़ने वाले शारीरिक दृष्टि से विकलांगों के सम्मुख उपस्थित तालमेल के प्रश्न पर विचार कीजिए।

५. वाशिंगटन, डेलावेयर और फिनिक्स, एरिजाना में विकलांगों के लिए की जाने वाली व्यवस्थाओं का मूल्यांकन कीजिए।

६. मानसिक दृष्टि से मंद व्यक्ति के लक्षण बताइये।

७. मंदबुद्धि व्यक्ति के सामने तालमेल की कौन-सी समस्याएँ आती हैं?

८. मंदबुद्धि और मंद छात्र के लिए निर्देशन सेवाएँ किस प्रकार उपयोगी हो सकती हैं?

९. बौद्धिक दृष्टि से प्रतिभावान बच्चे और नवयुवक के लक्षणों पर विचार कीजिए।

१०. प्रतिभावान बच्चों के सम्मुख तालमेल की कैसी समस्याएँ आती हैं?

११. प्रतिभावान की खोज करने के लिए क्या उपाय करने चाहिएँ और कब करने चाहिएँ?

१२. वे उपाय बताइये जिनसे निर्देशन सेवाएँ प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियों के लिए सहायक हो सकें।

१३. बौद्धिक दृष्टि से प्रतिभावान छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्त्ति की पद्धति के रूप में मण्डार वृद्धि, उच्च अध्ययन या दोनों के समीकरण के मूल्य पर विचार कीजिए।

१४. प्रतिभासम्पन्न छात्रों के शैक्षिक और सामाजिक कल्याण की वृद्धि के लिए प्रयुक्त ऐसी योजना बताइये (इस अध्याय में जिनका वर्णन किया गया है, उनके अतिरिक्त) जो आपको ज्ञात हो।

१५. (१) मंदबुद्धि बच्चे (२) प्रतिभावान युवक के व्यवहार, पारिवारिक पृष्ठभूमि, हितों और सामाजिक तथा बौद्धिक विकास का अध्ययन कीजिए। जिस परिणाम पर आप पहुँचे हैं, उसका वर्णन कीजिए।

२०

व्यावसायिक तालमेल के लिए निर्देशन

व्यवसाय का चुनाव निर्णय करने का एक प्रमुख रूप है। किस समय व्यक्ति अपना अंतिम निर्णय करता है और अपने व्यवसाय की तैयारी किस प्रकार और कितनी करता है, यह अनेक बातों पर निर्भर करता है। इन बातों में व्यक्तिगत रुचि और क्षमता, व्यवसाय के उपलब्ध अवसर और प्रशिक्षण की अपेक्षाएँ सम्मिलित हैं।

यद्यपि कुछ व्यक्ति बचपन में ही व्यवसाय के सम्बन्ध में स्थायी निर्णय कर लेते हैं, कुछ नवयुवक अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में निर्णय करने से पूर्व ही हाई स्कूल से अथवा कालेज से भी स्नातक हो जाते हैं। फिर भी बच्चा प्राथमिक स्कूल के स्तर पर जो अध्ययन करता है और वहाँ जो निर्देशन प्राप्त करता है वे उसके भावी जीवन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। स्कूल में अध्ययन करते हुए उसमें जिन रवैयों, विचार-शैली और व्यवहार-पद्धति का विकास हुआ है, उनका प्रभाव उसकी कुशलता पर उस समय पड़ता है, जब वह वयस्क कर्मचारी के रूप में कार्य करता है। इसी समय उसे व्यवसाय के बुद्धिमत्तापूर्ण व्यावसायिक चुनाव, व्यवसाय के लिए पर्याप्त तैयारी और नौकरी में संतोषजनक तालमेल करने के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है।

व्यवसाय का चुनाव

विचारणीय तथ्य व्यक्तिगत रुचि का सर्वाधिक महत्त्व है, किन्तु किसी विशेष व्यावसायिक रुचि का विकास अन्य बातों पर निर्भर करता है। शारीरिक दशा और स्वास्थ्य की स्थिति, बौद्धिक तीक्ष्णता की मात्रा, प्रमुख आकांक्षाएँ और वातावरण-जन्य स्थितियाँ, ऐसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं जिनके आधार पर कोई व्यक्ति व्यवसाय का अंतिम चुनाव करता है।

व्यक्तिगत योग्यता और क्षमताओं के अतिरिक्त, व्यावसायिक चुनाव साधारणतया प्रत्याशित अर्थ और प्रतिष्ठा की प्राप्ति को ध्यान में रखकर किया जाता

है। यथार्थवादी अभिभावक और उनके बच्चे स्वभावतः पूछा करते हैं, "कितना वेतन मिलेगा ?" या "उन्नति के क्या अवसर हैं ?" यह व्यावहारिक दृष्टिकोण है जिसे निर्देशन कार्यकर्त्ताओं को समझना चाहिए। किन्तु अत्यधिक भौतिकवाद से पूर्ण संतोष की प्राप्ति नहीं होती। हम जानते हैं कि केवल धन की प्राप्ति से ही आनन्द प्राप्त नहीं होता, किन्तु जब हम वित्तीय असमर्थता के कारण अपने और परिवार के लिए आराम और आनन्द देने वाली वस्तुएँ नहीं खरीद पाते तो मन में असंतोष की भावना उत्पन्न होती है। आर्थिक सुरक्षा की प्राप्ति ही व्यवसाय का योग्य लक्ष्य होता है। इसलिए अन्य बातें समान होने पर आर्थिक लाभ ही नौकरी के चुनाव में मुख्य तत्त्व होता है।

कुछ लोगों के लिए नौकरी से प्राप्त होने वाली प्रतिष्ठा विशेष रूप से विचारणीय होती है। यह रवैया महत्त्वाकांक्षी अभिभावकों में बहुत होता है। नौकरी का निश्चय करने में परामर्शदाता के सम्मुख सब से बड़ी कठिनाई यह आती है कि माता-पिता अपने बच्चे के लिए ऐसी नौकरी चाहते हैं जो सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य हो। साधारणतया इन अभिभावकों की यह अभिलाषा होती है कि उनके बच्चे सामाजिक दृष्टि से उनसे भी ऊँचा स्थान प्राप्त करें और यह उनके द्वारा की जाने वाली नौकरी के फलस्वरूप हो। लड़कों के लिए वकालत, डाक्टरी और इंजीनियरिंग जैसे व्यवसायों पर बल दिया जाता है। लड़कियों को अध्यापिका या नर्स बनने के लिए उनके माता-पिता उत्साहित करते हैं। किस कार्य के लिए नवयुवकों की क्या योग्यता है या उनकी क्या अभिरुचियाँ हैं, इन बातों पर ध्यान दिये बिना ही माता-पिता उनकी नौकरी के विषय में निर्णय कर लेते हैं।

स्वयं कर्मचारी भी किसी विशेष प्रकार के कार्य को उसकी सामाजिक स्थिति के कारण उसके आर्थिक पहलू को गौण स्थान दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह विदित है कि उच्च स्तर की कुछ संस्थाओं को छोड़कर कालेज के निकायों में मिलने वाला वेतन बड़े नगरों के माध्यमिक स्कूलों के वेतन-क्रम की अपेक्षा बहुत कम है। फिर भी यह संभावना है कि कालेज के अध्यापक हाई स्कूल में अध्यापकी करने से इन्कार कर दें, क्योंकि सर्वसाधारण में "स्कूल मास्टर" की अपेक्षा "कालेज के प्रोफेसर" का अधिक मान है।

समय-समय पर निर्देशन परामर्शदाता ऐसे नवयुवक से मिलता है जो विशेष प्रकार के व्यवसाय की गतिविधि में इतनी गहरी रुचि रखता है कि वह उसमें प्रवेश करने के लिए तैयारी करने को कृत-संकल्प होता है, चाहे वह कार्य सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य हो या नहीं या उसमें पर्याप्त वेतन मिलता हो या नहीं। उदाहरण के लिए, हाई स्कूल की एक छात्रा ने अपनी माँ का सहायक बनने का आग्रह किया था। वह बच्चे की प्रशिक्षित धाय नहीं बनना चाहती थी और वह जानती थी कि माँ की सहायिकाओं को अपर्याप्त वेतन मिलता है, किन्तु उसकी अभिलाषा ऐसी पारिवारिक स्थिति में कार्य करने की थी जहाँ वह छोटे शिशु से लेकर बच्चे तक की देखभाल करने में सहायता दे सके, वे सब छोटे-छोटे घरेलू कार्य कर सके जो उसने अपने निजी

छोटे भाई-बहिनों के लिए किये थे और छोटे बच्चों को विकसित होता देख सके जैसा कि उसने अपने घर में देखा था। लड़की के अभिभावकों और स्कूल के परामर्शदाता के विश्वास के अनुसार वह इतनी विदुषी थी कि अधिक ठोस व्यवसाय के लिए तैयारी कर सकती थी, किन्तु यह लड़की अपने हठ पर अड़ी रही इसलिए उसे अपनी इच्छानुसार कार्य का चुनाव करने की अनुमति दे दी गई। हाई स्कूल से स्नातक होने के पाँच वर्ष पश्चात् भी वह ऐसे परिवार में कार्य कर रही थी जिसमें छः बच्चे थे और जहाँ उसने चार वर्ष पूर्व कार्य प्रारम्भ किया था। वह अपने कार्य से पूर्णतया संतुष्ट प्रतीत होती थी और उसका मालिक भी उससे प्रसन्न था।

चुनाव की दिशा में निर्देशन व्यवसाय का चुनाव करने की रीति यथासंभव वैज्ञानिक होनी चाहिए। व्यक्ति के भविष्य के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों सहित कुछ जानकारी के आधार पर सुदृढ़ निर्णय करने में सहायता दी जानी चाहिए :

१. अपने सम्बन्ध में यथासंभव पूर्ण जानकारी
२. विविध व्यवसायों के तत्त्वों की जानकारी
३. किसी विशिष्ट व्यवसाय की अपेक्षाओं के अनुकूल उसके लक्षण कहाँ तक हैं, इसका ज्ञान
४. विविध व्यावसायिक क्षेत्रों में अवसर और उनसे लाभ व हानियाँ
५. कार्य के प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध शैक्षिक सुविधाएँ।

व्यक्तित्व का मूल्यांकन और पद का विश्लेषण ऐसे निर्देशन कार्य हैं जो शीघ्रता या पूर्णता से पूरे नहीं किये जा सकते। निःसंदेह, पद पर कार्यकर्त्ता के रूप में अनुभव कार्य की अपेक्षाओं की व्यावहारिक परीक्षा और उस पद के लिए उसकी उचित योग्यता है। बहुत से व्यक्ति उस समय तक अपना अंतिम निर्णय नहीं करते जब तक कि वे कालेज से स्नातक नहीं हो जाते अथवा व्यावसायिक कार्यों के विविध प्रकार के प्रयोग नहीं कर लेते।

विशिष्ट प्रविधियाँ आत्म-मूल्यांकन प्राथमिक स्कूल के स्तर पर उस समय प्रारम्भ हो सकता है जब अध्यापक बच्चे को कुछ वाँछनीय रवैयों और व्यवहार के गुणों को रखने के मूल्य को समझने, और जिस सीमा तक वह इन गुणों को रखता है उसे जानने, और अपने घर तथा स्कूल के साथियों के साथ विकसित सम्बन्ध बनाने के लिए जिन परिवर्तनों की आवश्यकता है उन्हें करने के प्रयत्न में सहायता देता है। जबकि व्यक्ति अपना अध्ययन हाई स्कूल या संभवतः कालेज तक जारी रखता है तो उसके अध्यापकों और परामर्शदाताओं को चाहिए कि वे उसे व्यक्ति के रूप में और किसी विशेष व्यवसाय के संभावित कार्यकर्त्ता के रूप में आत्मचिन्तन करने के लिए प्रोत्साहन दें। आत्म-मूल्यांकन की विधियों में निम्नलिखित परिणामों पर विचार करना भी सम्मिलित है :

१. ईमानदारी से आत्म-विश्लेषण, प्रश्नों की तैयार की गई सूची की सहायता से हो तो उत्तम।

२. व्यक्तियों के व्यवहार का निरीक्षण करने के परिणामस्वरूप अध्यापकों और अभिभावकों द्वारा व्यक्ति का वस्तुगत विश्लेषण।
३. उपयुक्त परीक्षाओं, तुलाओं या साक्षात्कार के माध्यम से विशेषज्ञों द्वारा व्यक्ति का वैज्ञानिक या अर्द्धवैज्ञानिक विश्लेषण।

व्यवसाय का बुद्धिमत्तापूर्वक और संतोपजनक चुनाव करने के लिए व्यावसायिक अवसरों और पद की अपेक्षाओं तथा स्थितियों के सम्बन्ध में यथासंभव पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है। इस सूचना को उपलब्ध करने और नवयुवकों की उन व्यवसायों में रुचि का विकास करने के लिए वे व्यक्तिगत रूप से उपयुक्त हैं और जिस कार्य के लिए आवश्यकता है या आवश्यकता होगी, वे सब मिलकर इस क्षेत्र में निर्देशन के महत्त्वपूर्ण रूपों का निर्माण करते हैं। परामर्शदाताओं को निम्नलिखित से पूर्णतया परिचित होना चाहिए: (१) उन व्यावसायिक अवसरों से जो लगभग स्थायी हैं, (२) वे व्यवसाय जिनमें परामर्श कार्य के अवसर हो सकते हैं किन्तु जिनकी आवश्यकता कम होती जा रही है, (३) वे व्यवसाय जो भविष्य में सुयोग्य व्यक्ति के लिए अधिकाधिक श्रेष्ठ अवसर प्रदान कर सकें।

व्यवसायों के विषय में जानकारी नवयुवकों को अनेक प्रकार से दी जा सकती है, सामुदायिक या व्यक्तिगत स्थितियों में। इन रीतियों में ये भी हैं:

१. नौकरी के स्थानों का भ्रमण।
२. चल चित्र और फिल्मों की पट्टियाँ।
३. रेडियो और टेलीविजन।
४. ग्राफ सम्बन्धी सामग्रियों का उपयोग।
५. व्यावसायिक शीर्षकों का कोष, संयुक्त राष्ट्र की जनगणना और अन्य सरकारी साधनों का उपयोग।
६. गृह-कक्ष की गतिविधियाँ, पहेली-प्रतियोगिताएँ और अनुमान के खेल।
७. स्कूल की सभाएँ और नाटक।
८. कक्षा के बाहर की गतिविधियों, जैसे स्कूल का प्रबन्ध और स्कूल या सामुदायिक क्लब में भाग लेना।
९. पेशे सम्बन्धी सम्मेलन।
१०. सफल व्यापारियों की जीवनियों का अध्ययन
११. उपन्यासों में मिलने वाले व्यवसायों का विवरण
१२. विशिष्ट व्यवसायों के सम्बन्ध में मुद्रित सूचना
१३. व्यावसायिक प्रयत्न।

सूचना के स्रोत परामर्शदाता और विद्यार्थियों द्वारा प्रयोग के लिए अनेक प्रकार की स्रोत सामग्रियाँ उपलब्ध हैं। संयुक्त राष्ट्र के सरकारी मुद्रण कार्यालय द्वारा प्रस्तुत किया गया व्यावसायिक शीर्षकों का कोष (Dictionary of Occupational Titles) सही और विश्वसनीय सूचना देता है जिसका निर्माण ३०,००० पृथक्-पृथक् व्यवसायों से भी अधिक का प्रत्यक्ष निरीक्षण और पद के विश्लेषण के

फलस्वरूप हुआ है। "संयुक्त राष्ट्र जनगणना" (The United States Census) देश के प्रत्येक नगर, राज्य, अंचल के व्यवसायों पर और प्रत्येक व्यवसाय में लगे कर्मचारियों के सम्बन्ध में सूचना देती है। संयुक्त राष्ट्र शिक्षा कार्यालय की व्यावसायिक सूचना और निर्देशन सेवा से भी मूल्यवान सहायता प्राप्त की जा सकती है। व्यावसायिक जानकारी का दूसरा स्रोत है "व्यावसायिक सूचीपत्र" (The Occupational Index), जो पर्सोनल सर्विसेज इंको०, पीपैक एन० जे० द्वारा तिमाही प्रकाशित होता है, जिसमें व्यावसायिक अपेक्षाओं और इस क्षेत्र में नवीनतम साहित्य के सर्वेक्षण के सम्बन्ध में विविध प्रकार की जानकारी दी गई है।

विशिष्ट व्यवसायों के विषय में लिखी पुस्तकें और पुस्तिकाएँ सरलता से उपलब्ध हो जाती हैं। साइंस रिसर्च एसोसियेट्स, शिकागो, इलीनोइस चुनी हुई निर्देशन सामग्री की विशद सूची देती है जो स्कूल वर्ष से प्रारम्भ होकर प्रतिमास प्रकाशित होती है। इस कम्पनी द्वारा प्रकाशित पुस्तिकाओं में हैं: जीवन समन्वय पुस्तिकाएँ जिनमें से बहुत सी पुस्तिकाएँ व्यावसायिक तालमेल के सम्बन्ध में हैं, निर्देशन मानोग्राफ की अमेरिकन जाब सीरीज़ विशिष्ट कार्यों और उनसे सम्बन्धित विषयों के बारे में है।

इस कम्पनी ने एलाइस फ्रैंकिल की अनुपम पुस्तक हैंडबुक ऑफ जॉब फैक्टर्स भी प्रकाशित की है। हाई स्कूल और कालेज के विद्यार्थियों को यह पुस्तक मनोरंजक और उपयोगी प्रतीत होती है। इसमें निहित जानकारी तीन श्रेणियों में विभाजित है:

१. व्यायसायिक, अर्द्ध-व्यावसायिक और प्रबंध-विपयक।
२. लिपिक-सम्बन्धी, विक्रय, कृषि, मत्स्य, वन और कुशलतापूर्ण व्यवसाय।
३. सेवा, (घरेलू, व्यक्तिगत, संरक्षणात्मक और निर्माण सेवा) अर्द्ध-कुशल और अकुशल व्यवसाय।

यह जानकारी चार्ट के रूप में प्रस्तुत की गई है। प्रत्येक विशिष्ट प्रकार के व्यवसाय के लिए समस्त या अधिकांश तथ्य इसमें होते हैं:

१. व्यवसाय का शीर्षक
२. प्रारम्भिक दैनिक वेतन
३. औसत दैनिक-वेतन
४. औसत घंटे प्रति सप्ताह
५. स्वास्थ्य की स्थितियाँ
६. कार्य की प्रकृति
७. क्षेत्र के कार्यकर्त्ता
८. नौकरी की प्रवृत्ति
९. नौकरियों के लिए प्रतियोगिता
१०. क्षेत्र में प्रवेश करने की रीतियाँ
११. उन्नति के अवसर
१२. ऋतु सम्बन्धी अन्तर
१३. अपेक्षित शिक्षा
१४. विशेष व्यक्तिगत अपेक्षाएँ
१५. नौकरियों के कार्य-स्थल।

स्रोत सामग्रियों का प्रयोग करते समय परामर्शदाताओं को एक
रखनी चाहिए कि वे उनकी नवीनता का निश्चय कर लें। व्यावसा
अपेक्षाएँ इतनी शीघ्रता से परिवर्तित होती हैं कि उन स्थितियों के मह
कर चलना कठिन हो जाता है। यही कारण है कि प्रति मास
पुस्तिकाएँ पुस्तकों की अपेक्षा अधिक सामयिक हो सकती हैं

इसी प्रकार की आलोचना उन चलचित्रों और फिल्मों की पट्टियों के विषय में की जा सकती है जिनसे यह आशा की जाती है कि वे नौकरी की गतिविधियों को प्रस्तुत करेंगी। किन्तु इन क्षेत्रों में श्रेष्ठ सामग्री निरन्तर तैयार की जा रही है और वे उपयुक्त अभिकरणों से खरीद या किराये पर प्राप्त की जा सकती हैं। राष्ट्रीय व्यावसायिक निर्देशन संघ, (वाशिंगटन डी० सी०), अमेरिकन शिक्षा परिषद् (वाशिंगटन डी० सी०) दृश्य शिक्षा सोसाइटी (शिकागो) तथा श्रव्य साधनों में रुचि रखने वाले अन्य संगठनों ने इस क्षेत्र में कुछ अच्छा कार्य किया है। अमेरिकन फिल्म सेंटर, न्यूयार्क सिटी, श्रव्य-दृश्य सामग्रियों के सम्बन्ध में सूचनाएँ प्रदान करता है।

व्यावसायिक सूचना के माध्यम के रूप में रेडियो और टेलीविजन की बड़ी संभावनाएँ हैं। जब उनके कार्यक्रमों का विस्तार होता है और हमारे स्कूल-भवनों में रेडियो और टेलीविजन सेट और अधिक संख्या में लगते हैं तो व्यावसायिक चुनावों से सम्बन्धित निर्देशन के कार्यक्रम में उनका निश्चित स्थान होगा।

निर्देशन और व्यवसाय सम्बन्धी तैयारी

व्यवसाय की अपेक्षाओं के अनुसार व्यावसायिक क्षेत्र में प्रवेश के लिए आवश्यक तैयारी की राशि और प्रकार भिन्न-भिन्न होते हैं। इस वाद-विवाद में हमारा सम्बन्ध उपलब्ध किये जाने वाले ज्ञान, पूर्ण की जाने वाली निपुणताओं और कार्यकर्त्ता की दक्षता प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण के विस्तार और गंभीरता से सामान्य रूप में ही है। परन्तु उन रवैयों से हमारा सम्बन्ध निश्चित रूप से है जिनका विकास व्यक्ति द्वारा अपनी प्रशिक्षण पाठ्य-विधि से पूर्व अथवा उसकी अवधि में होता है।

व्यावसायिक शिक्षा, सामान्य और विशिष्ट प्राथमिक स्कूल का छात्र जब व्याकरण और शब्द-विन्यास की दृष्टि से शुद्ध लिखना सीखता है और गणित की जोड़-बाकी में निपुणता प्राप्त कर लेता है तब वह व्यावसायिक तैयारी में व्यस्त होता है। इस शैक्षिक स्तर पर अध्यापकों का यह निर्देशन-केन्द्रित उत्तरदायित्व होता है कि वे इन साधारण शिक्षाओं को उसके जीवन के लिए उपयोगी बना सकें। इस उत्तरदायित्व में माध्यमिक स्कूल और कालेज के अध्यापक उस समय हाथ बंटाते हैं जब वे अपने विद्यार्थियों को मौलिक अध्ययन के उच्च रूपों में अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए सहायता देते हैं।

अकुशल व्यवसायों को छोड़कर शेष सब में श्रमिक को प्रारम्भिक अध्ययनों च्र की आवश्यकता होती है। यह सम्भव है कि कुछ अपर्याप्त अध्ययन-पद्धतियों १३और कुछ इन अध्ययनों के मूल्य से अप्रभावित होने के कारण उसने यह सूचना हो। उदाहरण के लिए अधिकांश अध्यापक की शिक्षा की संस्थाओं प्रकार की स्रोत यह निश्चय करने के लिए जाँच की जाती है कि वे उस व्यवसाय द्वारा प्रस्तुत किया ग्य हैं या नहीं। इन जाँच करने की विधियों में सामान्यतः आव- pational Titles) स की खोज की जाती है। ये कुलशताएँ हैं, भाषण और पृथक्-पृथक् व्यवसायों से ता और मूल पाठ्य-सामग्री का ज्ञान। यह देखकर आश्चर्य

होता है कि बहुत से नवयुवक-युवतियों की भाषण-शक्ति दूषित होती है जो अपेक्षाकृत सरल शब्दों के हिज्जे नहीं कर सकते, जिनका वाक्य-विन्यास असावधान एवं अपूर्ण होता है और जो गणित की सरल समस्याओं में अक्षम्य त्रुटियाँ करते हैं। इस पर अध्यापकों को गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है; इसका सम्बन्ध निर्देशन परामर्शदाता से भी है जबकि वह नवयुवकों की उनके व्यावसायिक चुनाव और तैयारी में सहायता देने का प्रयत्न करता है।

किसी निर्वाचित व्यवसाय में भाग लेने के लिए किसी व्यक्ति को किस प्रकार का विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए, इसका निश्चय करने के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन की आवश्यकता है। ऐसी हजारों संस्थाएँ हैं जिनसे यह आशा की जाती है कि वे किसी न किसी व्यवसाय में प्रशिक्षण प्रदान करेंगी। निर्देशन परामर्शदाता को उन स्कूलों के पाठ्यक्रम सम्बन्धी पर्याप्तता और शैक्षिक स्थिति को जानने और आलोचनात्मक दृष्टि से उनका मूल्यांकन करने की क्षमता होनी चाहिए जिसमें उसके परामर्शपात्र रुचि रखते हैं। विशाल और आकर्षित रूप से प्रस्तुत किए गए पाठ्य विषय के सूची-पत्र की वास्तविकता को समझने की उसमें योग्यता होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त परामर्शदाता को किसी प्रतिष्ठित और उपयुक्त स्कूल का चुनाव करने में सहायता देने के लिए ही तैयार नहीं होना चाहिए अपितु उस स्कूल की पाठ्यक्रम सम्बन्धी अपेक्षाओं के संदर्भ में उसकी पाठ्य-विधि निर्धारित करने में भी सहायता देनी चाहिए। यदि विद्यार्थी को यह सहायता प्राप्त हो जाती है तो उसे अपने नये स्कूल में यह विश्वास रहता है कि वह उसमें वाँछनीय प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेगा। जो पाठ्य-विधियाँ उसे लेनी हैं उनके विषय में उसे कोई भ्रम नहीं होगा क्योंकि अध्ययन के कार्यक्रम के विषय में उसे स्कूल के परामर्शदाताओं से जानकारी की पृष्ठभूमि प्राप्त हो चुकी है।

निर्देशन और व्यावसायिक रवैये व्यापारी, उद्योगपति तथा अन्य मालिक यह मानते हैं कि नौकरी, प्रोत्साहन और पदवृद्धि किसी पद के प्रत्याशी के व्यक्तित्व अथवा श्रमिक पर उसकी कार्यकुशलता से अधिक निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए व्यापारियों के एक समूह ने कार्यालय के कर्मचारियों की पदवृद्धि और पृथक्करण के कार्यों की जाँच करके पाया कि कार्यालय के कार्य में सफलता साधारणतया कर्मचारी के व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेष गुणों के कारण होती है और वे गुण हैं समय की पाबन्दी, परिश्रम, सफाई, प्रसन्नता, उत्तरदायित्व, विश्वासपात्रता और सहयोग।

इन खोजों का अभिभावकों और अध्यापकों के लिए तथा विशेष रूप से निर्देशन कर्मचारियों के लिए निश्चित महत्त्व है। यदि किसी बच्चे या नवयुवक को अवांछनीय रवैये या व्यक्तित्व सम्बन्धी दोषों पर उसकी अपरिपक्वता के आधार पर क्षमा कर दिया जाता है तो यह गलत निर्देशन है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से परामर्शदाता का कर्त्तव्य है कि वह नवयुवकों को अच्छे व्यवहार के महत्त्व से परिचित कराए और उसका विकास करने में उनकी सहायता करे।

यदि अध्यापक और परामर्शदाता अमेरिका के भावी कार्यकर्त्ताओं को स्कूल में देर से पहुँचने, अव्यवस्थित रहन-सहन, असावधानी या शीघ्रता से किये गए लिखित कार्य को प्रस्तुत करने, पाठों को याद करने, परीक्षा या अन्य प्रकार के कार्यों में धोखा देने, क्रोधावेश को व्यक्त करने अथवा अपने समूह के सदस्यों के प्रतिकूल या उनके साथ असहयोग करने देते हैं तो वे अपने उत्तरदायित्वों से गिरते हैं। पहली बात तो उन्हें यह निश्चित करनी चाहिए कि व्यक्ति के व्यवहार का दोष उन्हीं पर नहीं है। उन्हें किसी नवयुवक से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह उन दायित्वों को सम्भाल लेगा या उन कार्यों को करेगा जो उसके सर्वश्रेष्ठ प्रयत्नों से भी सम्भव नहीं हैं। जब वे इन बातों पर एक वार सन्तुष्ट हो जाएँ तो उनका कर्त्तव्य है कि वे उस नवयुवक को शनैः-शनैः उस प्रकार का व्यक्तित्व प्राप्त करने में सहायता दें जिसके द्वारा वे अपने व्यावसायिक कार्यों में सफलता तथा उन्नति प्राप्त कर सकें।

प्रशिक्षण संस्थाओं में व्यक्तिगत निर्देशन विशेष विषयों की शिक्षा देने वाले स्कूलों में विद्यार्थियों का व्यक्तिगत निर्देशन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है। प्रत्येक प्रकार के व्यावसायिक कार्यों में कर्मचारी को सफलता प्राप्त करने के लिए उसमें व्यक्तित्व सम्बन्धी समुचित गुणों का होना उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि विशिष्ट निपुणताओं और जानकारियों का होना। अतएव निर्देशन कर्मचारियों को व्यक्तित्व के अपेक्षित गुणों से पूर्णतया परिचित होना चाहिए और उन्हें प्राप्त करने में उन्हें अपने छात्रों की सहायता करनी चाहिए।

लैबोरेटरी इंस्टीट्यूट ऑफ मर्चेंडाइजिंग, न्यूयार्क सिटी के कर्मचारियों ने उनके क्षेत्र में पद के लिए प्रवेश करने के इच्छुक व्यक्ति की व्यक्तित्व सम्बन्धी वाँछित योग्यताओं का विश्लेषण किया है। उसमें सम्मिलित लक्षणों में समय की पाबन्दी, श्रमशीलता, ईमानदारी, सहकारिता और इसी प्रकार के अन्य सामान्य लक्षण सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त इन नवयुवक-युवतियों को सराहनीय रहन-सहन और समुचित वस्त्र सज्जा, सन्तुलन, प्रतिष्ठा, व्यक्तित्व और कार्य की विविधताओं के अनुकूल स्वयं को बनाने की क्षमता, उत्पादन की विशेषता, कारीगरी से सम्बन्धित बातों पर क्रेताओं तथा अन्य व्यक्तियों से मिलने और बुद्धिमत्तापूर्ण बात करने की योग्यता तथा सत्ता की रेखाओं की समुचित अभिरुचि के विकास की दिशा में निर्देशन की आवश्यकता है।

इस स्कूल के संरक्षण कार्यक्रम में नियमित व्यापारिक पाठ्य-विधियों के अतिरिक्त प्रयुक्त मनोविज्ञान, भाषण, परिधान और रहन-सहन तथा ताजी घटनाओं और अर्थशास्त्र की पाठ्य-विधियाँ सम्मिलित हैं। इस क्षेत्र के नेता विद्यार्थियों के सम्मुख भाषण देते हैं और विद्यार्थियों को थोक तथा परचून दुकानों पर ले जाया जाता है। ऐसे सामाजिक समारोहों का आयोजन किया जाता है जिनमें विद्यार्थी यह सीखते हैं कि क्षेत्र में कार्य करते समय किस प्रकार की स्थितियों में कैसा व्यवहार करना चाहिए।

स्कूल में दो वर्ष की पाठ्य-विधि होती है। प्रथम वर्ष में विद्यार्थी परचून प्रतिष्ठानों में पूरे समय की निरीक्षित कार्य परियोजनाओं में लगभग चार सप्ताह (धन्यवाद दिवस से क्रिसमस तक) और ग्रीष्म के अवकाश में कार्यरत रहते हैं। द्वितीय वर्ष के छात्रों को भी ऐसे दो अवसर मिलते हैं: एक क्रिसमस से पहले और दूसरा ईस्टर के पहले मास में। विद्यार्थियों के दोनों समूह के ये कार्य उनके स्कूल के अध्ययन के साथ जुड़े रहते हैं। कार्यानुभव की प्रत्येक अवधि के पश्चात् डीन प्रत्येक छात्र के साथ कार्य परियोजना के विषय में वार्ता करता है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक विद्यार्थी का व्यक्तिगत वृत्त रखा जाता है। स्कूल के अध्यापकों और कार्य निरीक्षकों का यह सम्मिलित उत्तरदायित्व है कि वे इन वृत्तफाइलों में निहित तथ्य प्रस्तुत करें। डीन और उसके सहकारी विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों से निरन्तर और घनिष्ठ व्यक्तिगत सम्पर्क रखते हैं। निर्देशन के सावधिक सम्मेलनों में निकाय के समस्त सदस्य भाग लेते हैं। इन बैठकों में व्यक्तिगत छात्रों पर स्वतन्त्रतापूर्वक तथा बुद्धिमानी के साथ विचार किया जाता है। इन विचारणीय विषयों में से कुछ हैं: व्यापार में भाग लेने के लिए व्यक्तिगत योग्यताएँ, व्यक्तिगत शक्तियाँ और दुर्बलताएँ, अध्ययन के कार्यक्रम से साधारण तालमेल और प्रस्तावित उच्चारणात्मक कार्य-विधियाँ।

विशेष विषयों की शिक्षा देने वाले स्कूलों में इस स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम को आदर्श के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। स्कूल के निर्देशक, डीन और इस स्कूल तथा पोषक स्कूलों के मध्य के सम्पर्क अधिकारी निर्देशन कार्य में निश्चित रूप से रुचि रखने वाले कर्मचारियों की सहायता से व्यापार में रुचि रखने वाली नवयुवतियों को अपने निर्वाचित क्षेत्र में प्रवेश के लिए उत्तम सर्वांगीण तैयारी कराने का बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं।

नौकरी दिलाना यह मानकर कि व्यक्ति में जिस व्यवसाय का उसने बुद्धिमत्तापूर्ण चुनाव किया है उसमें भाग लेने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है, नौकरी से तालमेल की बातों में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं:

(१) नौकरी की सम्भावनाएँ
(२) दैनिक वेतन और घण्टे
(३) नौकरी के वातावरण की भौतिक परिस्थितियाँ
(४) निरीक्षक कर्मचारी सम्बन्ध
(५) कर्मचारियों के पारस्परिक सम्बन्ध

नौकरी के प्रारम्भ से त्याग-पत्र देने अथवा अवकाश ग्रहण करने तक, प्रत्येक पद पर कर्मचारी सम्भवतः योग्य व्यक्तियों से अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष निर्देशन प्राप्त करके लाभान्वित होता रहता है।

नौकरी की खोज में निम्नलिखित एक या अनेक बातें सम्मिलित हैं:

(१) अनिश्चित दुकानदारी
(२) समाचार-पत्र पत्रिका के विज्ञापनों को पढ़ना

(३) मित्रों और परिचितों से पूछताछ करना
(४) व्यापारिक, सरकारी या स्कूल के नौकरी अभिकरणों से परामर्श करना।
(५) सिविल सर्विस की या अन्य परीक्षाएँ देना।

स्कूल के संरक्षण कर्मचारियों का, विशेषतया माध्यमिक या उच्चतर स्तर पर एक कर्त्तव्य नौकरी प्राप्त करने की दिशा में संरक्षण देना है। चाहे स्कूल में नौकरी दिलाने वाला कार्यालय हो या न हो, नवयुवक को ऐसी सहायता मिलनी चाहिये जिससे वह नौकरी की खोज कर सके और उसके लिए आवेदन करने की तैयारी कर सके। यदि नौकरी का आधार सिविल सर्विस जैसी औपचारिक परीक्षा न हो तो आवेदन-कर्ता को जानना चाहिए कि निम्नलिखित सामान्य बातों के विषय में क्या करे :

(१) आवेदन-पत्र लिखना
(२) आवेदन-प्रपत्र, प्रश्नावलियाँ अथवा अभिरुचि रिक्तपत्र भरना
(३) अपने और अपने प्रशिक्षण के सम्बन्ध में सही समर्थक विवरण तैयार करना
(४) औपचारिक सिफारिश पत्रों के लिए नाम देना
(५) मालिक के साथ साक्षात्कार
(६) अपनी निपुणता और नौकरी का प्रदर्शन करना

सफल नौकरी प्राप्त करने में ५० रीतियों की निम्नलिखित सूची परामर्श-दाताओं के लिए मनोरंजक होगी क्योंकि वह उनके छात्रों को सहायता देती है।

नौकरी प्राप्त करने में पचास बाधाएँ

न्यूयार्क विश्वविद्यालय के नौकरी दिलाने वाले कार्यालय ने पचास कारण बताये हैं जो मालिकों द्वारा बहुधा आवेदन-पत्र अस्वीकार करने के लिए दिये जाते हैं। यह सूचना एक सौ तिरेपन कम्पनियों की रिपोर्टों पर आधारित है। यदि जून में हुए स्नातक के रूप में आप नौकरी प्राप्त करने के लिए निकले हैं तो इन तथ्यों के संदर्भ में अपने विषय में सूची बनाइये। यदि आपका विचार आगे भी अध्ययन करने का है तो इससे आपको अपने इन नकारात्मक लक्षणों को दूर करने का अवसर मिलेगा जो आगे चलकर आपको नौकरी या पद-वृद्धि प्राप्त करने में बाधक हो सकते हैं। जब आप अस्वीकृति के निम्नलिखित कारणों को पढ़ें तो प्रत्येक के सम्बन्ध में स्वयं से प्रश्न करके अपना मूल्यांकन करते चलें :

(१) अनाकर्षक व्यक्तिगत आकृति
(२) पाखंड, अत्यधिक आगे बढ़ना, अहंकार, सब कुछ जानने की इच्छा करना
(३) स्वयं को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने की असमर्थता—दोषपूर्ण स्वर उच्चारण, व्याकरण

(४) जीवन कार्य की योजना का अभाव—कोई उद्देश्य और लक्ष्य न होना
(५) रुचि और उत्साह का अभाव—निष्क्रिय, उदासीन
(६) विश्वास और संतुलन का अभाव—दब्बूपन, बेचैनी
(७) कार्यों में भाग लेने की असमर्थता
(८) धन पर बहुत अधिक बल देना—केवल अच्छे वेतन में रुचि रखना
(९) पढ़ाई का अनाकर्षक आलेख—अकस्मात् सफलता प्राप्त कर लेना
(१०) नीचे से प्राप्त करने की अनिच्छा—बहुत शीघ्र बहुत अधिक की आशा करना
(११) जो तथ्य आलेख में अपने पक्ष में नहीं हैं उनके लिए बहाने करना, छिपाना अथवा गलत कारण देना
(१२) स्वार्थ का अभाव
(१३) परिपक्वता का अभाव
(१४) शिष्टता का अभाव—अशिष्टता
(१५) भूतपूर्व मालिकों की निन्दा
(१६) सामाजिक ज्ञान का अभाव
(१७) स्कूल के कार्य में स्पष्ट अरुचि
(१८) शक्ति का अभाव
(१९) साक्षात्कार करने वाले की ओर देखने में असमर्थता
(२०) शिथिल उत्साहहीन हाथ मिलाना
(२१) अनिर्णय
(२२) छुट्टियों में आवारागर्दी—झील पर घूमना
(२३) दुःखी वैवाहिक जीवन
(२४) माता-पिता से मतभेद
(२५) आवेदन-पत्र की गलत पूर्ति
(२६) दुकानों पर केवल घूमना
(२७) केवल अल्पकालीन नौकरी की खोज
(२८) विनोद वृत्ति का अभाव
(२९) विशिष्ट क्षेत्र के ज्ञान का अभाव
(३०) स्वयं के स्थान पर माता-पिता का निर्णय
(३१) कम्पनी में रुचि न होना
(३२) परिचित व्यक्ति पर विशेष बल
(३३) जहाँ भेजा जाये वहाँ जाने की अनिच्छा
(३४) बुराई ढूँढ़ने वाला
(३५) दूसरों का अत्यधिक आलोचक
(३६) निम्न नैतिक स्तर

(३७) असहनशीलता, भारी पूर्वाग्रह
(३८) संकुचित स्वार्थ
(३९) बहुत अधिक चलचित्र देखना
(४०) व्यक्तिगत धन का अपव्यय
(४१) सामुदायिक कार्यों में रुचि न होना
(४२) आलोचना को सहन करने की अयोग्यता
(४३) अनुभव के मूल्य को समझने का अभाव
(४४) विचित्र विचार
(४५) बिना उचित कारण के साक्षात्कार में विलम्ब से पहुँचना
(४६) अप्रसिद्ध कम्पनी
(४७) साक्षात्कारकर्ता के महत्त्व को अभिव्यक्त करने की असफलता
(४८) नौकरी के सम्बन्ध में कोई उसे नहीं पूछता
(४९) अधिक दबाव डालने वाला
(५०) प्रश्नों का अनिश्चित उत्तर।

नौकरी पर समन्वय

मालिक का अपने कर्मचारियों, विशेषतः अपने नवयुवक कर्मचारियों के कल्याण का निश्चित उत्तरदायित्व है। उसे चाहिए कि (१) वह उन्हें उनके गुण और अपनी क्षमता के अनुसार उचित वेतन दे, (२) उनके लिए उपयुक्त प्रकाश और उष्णता, समुचित यंत्र, सुरक्षा के साधन, स्वच्छ शौचालय, व्यक्तिगत स्थान, पेय जैसे स्वास्थ्य-प्रद कार्य की परिस्थितियों की व्यवस्था करे, और (३) रचनात्मक निरीक्षण करे।

कर्मचारी की दीक्षा यह ज्ञात हुआ है कि किसी विशिष्ट व्यवस्था के लिए नवीनीकरण उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि व्यवसाय या पेशे के लिए व्यक्ति को मिलने वाला विशेष प्रशिक्षण। किसी कार्य पर कर्मचारी के प्रारम्भिक अनुभवों का प्रभाव उसके समस्त कार्य-काल में उसकी उपयोगिता पर पड़ सकता है। चाहे उसकी नौकरी की गतिविधियों का प्रारम्भ अनुसंधान प्रयोगशाला में हुआ हो या व्यापारिक कार्यालय, कक्षा के कमरे, दुकान, विभागीय स्टोर, अस्पताल, विधि-कार्यालय या किसी अन्य व्यवसाय के क्षेत्र में हुआ हो, यह बात सदैव सत्य है।

नवीनीकरण का निश्चित कार्यक्रम समस्त नये कर्मचारियों के लिए प्रारम्भ किया जाना चाहिए। बड़े संगठन में इसके सम्बन्ध में निश्चित उत्तरदायित्व निरीक्षकों को सौंप देना चाहिए और फिर नवागन्तुक को उपयोगी और कुशल कर्मचारी बनाने के लिए उसे उत्तरदायी समझना चाहिए। नवागन्तुक के साथ नौकरी के प्रारम्भिक सप्ताहों में निरीक्षक जो कुछ करता है उसी से अधिकांश में यह निश्चय होता है कि अपने कार्य, अपने सहयोगियों, अपने निरीक्षक और समस्त संगठन के प्रति कर्मचारी का व्यवहार कैसा रहेगा। बहुत-सी कम्पनियाँ अपने फोरमैनों के लिए प्रशिक्षण का विस्तृत कार्यक्रम चलाती हैं ताकि आगे चलकर ये निरीक्षक नये कर्मचारियों का निर्देशन

करने में सहायक हो सकें। इस कार्यक्रम में नये कर्मचारियों को ऐसे मामलों में दीक्षा देने के लिए विस्तृत सुझाव दिये जाते हैं : जैसे रवैये की मैत्री, महत्त्वपूर्ण नियम और उपनियम, उन्नति के लिए कर्मचारी की सेवा और अवसर, वेतन पद्धति, संयंत्र की सुविधाएँ और सहयोगियों से परिचय।

कर्मचारी के रवैयों का निर्देशन जब बहुत से कर्मचारी एक साथ काम करते हैं तब इसकी संभावना है कि कुछ कर्मचारी अपने कार्य, मालिक, अन्य कर्मचारियों या तात्कालिक निरीक्षक के प्रति असंतोप व्यक्त करें। प्रत्येक कर्मचारी के साथ ईमानदारी और सचाई से काम होना चाहिए। अपने कर्मचारियों के प्रति मालिक के व्यवहार और रवैये में नम्रता, वास्तविकता, उदारता और प्रतिष्ठा होनी चाहिए। मालिक को कार्य कराना है और कर्मचारियों को अपना समय व कुशलता इस प्रकार देनी है कि कार्य संतोषजनक रीति से समाप्त हो सके। उस कार्य में से प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीविका पाने का प्रयत्न कर रहा है। एक कंपनी के ट्रकों पर जो दरवाजे, खिड़की के छज्जे, कागज आदि लटकाने का कार्य करती है, इस नारे पर बल दिया गया है : "हम जिन्दा रहने के लिए लटकाते हैं।"

जो भी व्यक्ति व्यापार में रहा है वह जानता है कि उसकी सफलता अच्छे मानवीय सम्बन्धों पर निर्भर करती है। जब कर्मचारियों को कठिनाइयाँ हों तो उन्हें तत्काल और निश्चित रूप से दूर करना चाहिए। निरीक्षकों (फोरमैनों तथा दूसरे व्यक्तियों) को चाहिए कि वे इन कष्टों को ध्यानपूर्वक बिना पूर्वाग्रह के सुनें, उनकी स्थिति में समस्त तथ्यों को जानें, निष्पक्षता और तत्परता से कार्य करें, समस्त कष्टों की सूचना तात्कालिक अधिकारी को दें और शिकायत में सच्ची रुचि दिखायें।

निरीक्षकों के रवैये जो व्यक्ति सत्तारूढ़ हैं उन्हें किसी भी दशा में पक्षपात नहीं करना चाहिए। न्याय और निष्पक्षता प्रत्येक कर्मचारी के अधिकार हैं। जितना कार्य सफलतापूर्वक हो सके उतना ही दिया जाना चाहिए और पदवृद्धि निश्चित योजना के अनुसार होनी चाहिए। निरीक्षक को मित्र होना चाहिए किन्तु बहुत अधिक अनौपचारिक नहीं। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि निरीक्षक को अपने किसी भी कर्मचारी के विषय में किसी भी रूप में गपशप नहीं करनी चाहिए, ऐसे कार्य से कर्मचारी के मनोबल पर विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है। यह उसका कर्त्तव्य है कि वह कार्य और संगठन में गौरव के रवैयों का निर्माण करे।

तालमेल की मूल बातें यदि नवयुवक अपने घरेलू अनुभवों, अपने स्कूल के जीवन में और अपने अन्य सामाजिक सम्बन्धों में संतोषजनक तालमेल कर लेते हैं तो यह संभव है कि वे नौकरी पर भी संतोषजनक तालमेल कर लें। यदि उनके निर्माणात्मक वर्षों में उनका निर्देशन विश्वासपात्रता, परिश्रम, उत्तरदायित्व और सामाजिक उपयोगिता के विकास की दिशा में हुआ है तो संभव है कि वे अपनी नौकरी पर ऐसा व्यवहार करें जो उनकी सफलता के लिए शक्तिशाली सिद्ध हो।

स्कूल के बाहर के युवकों और वयस्कों का व्यावसायिक निर्देशन

व्यावसायिक तालमेल की दिशा में किये जाने वाले निर्देशन की प्रक्रिया में तीन चरण होते हैं : (१) हाई स्कूल या कालेज में रहते व्यवसाय का बुद्धिमत्तापूर्ण चुनाव; (२) विशेषता प्राप्त प्रशिक्षण संस्था में नौकरी की तैयारी; (३) ऐसे पद पर नियुक्ति जिसके लिए वह व्यक्तिगत रूप से योग्य और भली-भाँति प्रशिक्षित है और जहाँ वह नौकरी का संतोष प्राप्त कर सके तथा आनन्ददायक प्रगति कर सके। किन्तु बहुत से कर्मचारियों का व्यावसायिक अनुभव इस आदर्श के अनुकूल नहीं होता। कुछ कारणों से लोग अपनी नौकरी गँवा बैठते हैं और उन्हें दूसरी की खोज करनी पड़ती है। बेकार व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विविध सामाजिक, राजकीय और व्यावसायिक निर्देशन व्यूरो संगठित किये गये हैं।

उपलब्ध सेवाओं के प्रकार १९३०-३९ तक सार्वजनिक नौकरी की कोई संगठित राष्ट्रव्यापी प्रणाली नहीं थी और न अमेरिकन उद्योग में नौकरियों का क्रमानुकूल वर्गीकरण था। आज व्यावसायिक शीर्षकों के कोष में ३०,००० से अधिक वर्गीकृत नौकरियों की सूची और वर्णन है। उन कर्मचारियों के लिए भी नौकरी दिलाने की राष्ट्रव्यापी पद्धति है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर और एक नौकरी से दूसरी नौकरी पर जाना चाहते हैं और राष्ट्र के बड़े श्रम बाजारों में अवसरों, वेतनों, घंटों और कार्य की स्थिति के विषय में कर्मचारियों को जानकारी देने के लिए एक सूचना सेवा है।

व्यावसायिक निर्देशन संगठनों में १९२० में वोकेशनल सर्विस फॉर जूनियर्स के नाम से प्रारम्भ वोकेशनल एडवाइजरी सर्विस, १९३०-३९ के मन्दी के वर्षों में यूनाइटेड स्टेट्स एम्पलायमेंट सर्विस के साथ कार्य करने वाले नेशनल यूथ एडमिनिस्ट्रेशन, इसी अवधि में सक्रिय वर्क्स प्रोग्रेस एडमिनिस्ट्रेशन, पोस्टवार वैट्रन्स कान्सिलिंग स्टेट्स एम्पलॉयमेंट सर्विस सम्मिलित थीं। अंतिम संगठन सर्विसेज और यूनाइटेड सार्वजनिक नौकरी कार्यालयों की प्रणाली के रूप में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है, हालाँकि अपर्याप्त आर्थिक स्थिति ने इसके और सम्बन्धित राज्य संगठनों में कर्मचारियों की संख्या बहुत कम रहने दी है।

सन् १९४६ में द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् जिन नियंत्रणों का उपयोग यूनाइटेड स्टेट्स एम्पलॉयमेंट सर्विस (यू० एस० ई० एस०) करती थी, वे पृथक्-पृथक् राज्यों को लौटा दिये गये। ये सेवाएँ समस्त राज्यों के लिए १८०० स्थानीय सार्वजनिक नौकरी कार्यालयों और अतिरिक्त ३,००० स्थानों में स्थापित की जा चुकी हैं। संघीय राष्ट्रीय नौकरी सेवा प्रणाली प्रति वर्ष परामर्श देने के लिए लगभग २० लाख साक्षात्कार करती है।

यूनाइटेड स्टेट्स एम्पलॉयमेंट सर्विस द्वारा कर्मचारियों, मालिकों, सामुदायिक समूहों और सर्वसाधारण को नौकरी की प्रक्रिया लागू करने में सहायता प्राप्त होती है। समन्वित कार्यों के छः प्रमुख क्षेत्र हैं जिनके द्वारा यू० एस० ई० एस० अपनी सेवाएँ जनता तक पहुँचाती है। इन क्षेत्रों में ये कार्य सम्मिलित हैं : (१) श्रमिक

बाजार के लिए सूचना का विश्लेषण और संभरण करना, (२) नौकरी की परामर्श सेवाओं की व्यवस्था करना, (३) मालिकों और श्रम संगठनों को औद्योगिक सेवाएँ प्रदान करना, (४) नियुक्ति सेवा का संचालन करना, (५) अवकाश-प्राप्त सैनिकों को नौकरी की विशेष सेवा देना, और (६) कर्मचारियों तथा मालिकों दोनों के लाभार्थ अन्य सरकारी अभिकरणों के साथ मिलकर कार्य करना।

नौकरी की समस्याएँ समुदाय प्रचारित व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं का सम्बन्ध मुख्यतः साधारण कर्मचारियों की नौकरी की समस्याओं से है। बहुत से नवयुवकों को कोई विशेष व्यावसायिक रुचि नहीं होती किन्तु उनमें ऐसा कार्य सफलतापूर्वक करने की पर्याप्त सामान्य योग्यता होती है जिसमें विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। इस समूह में वे लड़के और लड़कियाँ सम्मिलित होते हैं जो या तो हाई स्कूल में सामान्य पाठ्यक्रम पूरा कर लेते हैं या जो पर्याप्त बड़े होने पर स्कूल छोड़ देते हैं। लड़कों का उद्देश्य आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना, विवाह करना और यथासम्भव सफलतापूर्वक अपने परिवार का पालन-पोषण करना होता है। बहुधा वे इस प्रकार का कार्य देखते हैं जिसमें वे अपेक्षाकृत महत्त्वहीन कार्य कर सकें। लड़कियों का उद्देश्य विवाह करना होता है; उनके लिए नौकरी केवल अन्तरिम लाभदायक कार्य है जो स्कूल छोड़ने और "सही मनुष्य" को प्राप्त करने के मध्य में चलता है।

अनुमान है कि समस्त कर्मचारियों में से २५ से ५० प्रतिशत तक इसी श्रेणी में आते हैं। वे ऐसे व्यक्ति हैं जो इस प्रकार के व्यापार, क्लर्की, अर्थकुशल और अकुशल कार्यों में भर्ती होते हैं जिनमें विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती और इसीलिए ये पद विशेष आकर्षक नहीं होते। सामुदायिक नौकरी सेवाओं का सम्बन्ध मुख्यतः ऐसे कर्मचारियों की नियुक्ति से है जो व्यावसायिक रूप से सदैव अस्थिर रहते हैं।

किसी भी एक समुदाय के लिए स्कूल के बाहर के परामर्श इकाइयों की संख्या और प्रकार समुदाय में उपलब्ध अवसरों और नागरिकों की बेकारी की सीमा और कार्यों पर निर्भर करते हैं। सार्वजनिक नौकरी सेवाएँ वयस्क कर्मचारियों से सम्बन्धित अन्य अभिकरणों के साथ सहयोग देते हुए अपनी निर्देशन सेवाएँ (१) विविध व्यवसाय के क्षेत्रों में नौकरी के उपलब्ध अवसरों की खोज करने, (२) बेकार कर्मचारियों अथवा उनको जो पदोन्नति चाहते हैं अपनी सेवाओं के लिए प्रोत्साहित करने, (३) समुचित परीक्षण सामग्रियों का उपयोग करते हुए साक्षात्कार की शृंखलाओं के द्वारा साधारण कर्मचारियों को ऐसी नौकरियों पर रखवाने का प्रयत्न करने जिसके लिये वे अत्यन्त उपयुक्त प्रतीत होते हैं, और (४) मालिकों और कर्मचारियों के लाभ के लिए सम्पर्क सेवा बनाए रखने के लिये जारी रखती हैं।

जबकि सही नौकरी पर सही व्यक्ति को लगाने के लिए निरन्तर बल दिया जा रहा है, यू० एस० ई० एस० और इसी प्रकार के राजकीय तथा सामुदायिक संगठन अपने कार्यों का पर्याप्त विस्तार कर रहे हैं। अनुसंधान विभागों पर नौकरी

के अवसरों के सम्बन्ध में नवीनतम सूचना संकलित और प्रचारित करने का उत्तरदायित्व है। स्कूलों और सामुदायिक नौकरी अभिकरणों के मध्य अधिकाधिक सहयोग बढ़ रहा है। अन्त में ऐसे वयस्कों द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं को अधिकाधिक समझा जा रहा है जो नौकरी देने वाले संगठनों से निर्देशन सेवाएँ चाहते हैं।

नौकरी सम्बन्धी परामर्श कार्य नौकरी सम्बन्धी परामर्श कार्य का उद्देश्य व्यक्ति को व्यवसाय का व्यावहारिक सुझाव देना और उस क्षेत्र में नौकरी की खोज करना है। व्यावसायिक परामर्श कार्य नौकरी चाहने वाले व्यक्ति को किसी उपयुक्त नौकरी पर लगा देने से अधिक विस्तृत कार्य है। नौकरी की अपेक्षाएँ, व्यक्तित्व, प्रशिक्षण और प्रत्याशी का अनुभव तथा अन्य पारिवारिक, सामाजिक और वातावरण से सम्बन्धित बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। अतएव कार्य देने वाला परामर्शदाता बहुत ही अनुभवी व्यक्ति होना चाहिए जिसके पास सभी सूचनाएँ हों और जो व्यक्ति की अच्छी पहचान कर सके। परामर्शदाता का कार्य आदेश जारी करना नहीं अपितु नौकरी के चुनाव के सम्बन्ध में व्यक्ति को अपना निजी चुनाव करने में सहायता देना है।

परामर्शदाता को यह जानना चाहिए कि अन्य परामर्श देने वाले संगठनों, सार्वजनिक और निजी, स्कूलों में या कालेजों में या स्वयं औद्योगिक संस्थानों में कैसे कार्य किया जाता है। उसका सम्बन्ध उस कार्य की शर्तों से भी है जो प्रत्येक स्थिति में और भावी कर्मचारियों की उस प्रकार के कार्य में नियुक्ति से है जिसके कि वे योग्य हैं और जिसमें उनके सफल होने की सम्भावनाएँ हैं। जब कभी आवश्यक होता है वह स्थानांतरण और पदवृद्धि कराने में सहायता देता है।

इन सेवाओं से कर्मचारी लाभान्वित होते हैं और जो मालिक कुशल कर्मचारी रखना चाहते हैं इन अभिकरणों के साथ सहयोग करते हैं। समाज इन्हें वित्तीय सहायता देने को इच्छुक है क्योंकि वह समझने लगा है कि वे महत्त्वपूर्ण सामाजिक सेवा कर रहे हैं। तत्काल नियुक्ति से कर्मचारियों, मालिकों और जनता को लाभ होता है।

अनुभवहीन, व्यावसायिक रूप से गलत तालमेल वाले, शारीरिक दृष्टि से पंगु और वयोवृद्ध कर्मचारी परामर्श की विशेष समस्याएँ उपस्थित करते हैं। सौभाग्य से जो व्यक्ति विशेष कार्य को करने के लिए पर्याप्त रूप से कुशल हैं उनकी नियुक्ति में सहायता देने के लिए बहुत से औद्योगिक संगठन सुस्थापित परामर्श सेवाओं के साथ सहयोग कर रहे हैं। इनमें पुराना कर्मचारी एक गम्भीर समस्या बन रहा है क्योंकि स्त्री-पुरुषों की अधिकाधिक संख्या उस आयु से अधिक जिन्दा रहती है जो कभी नौकरी के योग्य आयु समझी जाती थी।

वादविवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. इस वक्तव्य का मूल्यांकन कीजिए कि "अपने अन्तिम विश्लेषण में समस्त निर्देशन व्यावसायिक निर्देशन है।"
२. आपने अपने व्यवसाय का चुनाव कब, क्यों और कैसे किया ?
३. क्या आप चाहते हैं कि आपने दूसरा व्यवसाय चुना होता, यदि हाँ, तो अपने रवैये के कारण बताइए।
४. कुछ लोगों में बाबूगिरी के काम क्यों लोकप्रिय हैं ?
५. व्यावसायिक चुनाव के सम्बन्ध में बच्चे और अभिभावक के संघर्षों के उदाहरण दीजिए।
६. किसी पेशे का चुनाव करते समय किन बातों की ओर ध्यान देना चाहिए ? अपने उत्तर को महत्त्व की दृष्टि से क्रमबद्ध कीजिए।
७. प्रारम्भिक स्कूल में/हाई स्कूल में/कालेज में/व्यक्ति को किस प्रकार का व्यावसायिक निर्देशन मिलना चाहिए ?
८. इस वक्तव्य की व्याख्या कीजिए : "जिस संस्था में विशेष प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है उसका कार्य कर्मचारी की निपुणता के लिए प्रशिक्षण से आगे चलना चाहिए।"
९. नौकरी के आवेदन-पत्र की बातें बताइए। प्रत्येक कार्य से सम्बन्धित निर्देशन कार्यों की व्याख्या कीजिए।
१०. नये कर्मचारियों की तालमेल की क्या आवश्यकताएँ हैं ?
११. व्यक्ति के कर्मचारी जीवन और उसके अन्य क्षेत्रों में जो आन्तरिक सम्बन्ध है, उस पर विचार कीजिए।
१२. निरीक्षक और कर्मचारियों के वांछनीय सम्बन्धों का वर्णन कीजिए।
१३. किसी कर्मचारी का अपने सहयोगी की ओर क्या रवैया होना चाहिए ?
१४. इस अध्याय में (१) नये कर्मचारियों के लिए निर्देशन कार्य, और (२) कर्मचारियों के कष्टों के सम्बन्ध में जो सुझाव दिए गए हैं, उन पर विचार कीजिए।
१५. सामाजिक या निजी नौकरी अभिकरणों के किसी अनुभव का मूल्यांकन कीजिए।
१६. आपके समाज में स्कूल के बाहर व्यावसायिक निर्देशन के लिए क्या अवसर उपलब्ध हैं ?

२१ पारिवारिक जीवन के प्रति निर्देशन

बहुत से अभिभावक, धार्मिक नेता और स्कूल के लोग बाल अपराधों, नैतिक दुर्बलता और वैवाहिक सम्बन्धों के त्रुटिपूर्ण समन्वय की स्पष्ट रूप से बढ़ने वाली घटनाओं के विषय में बहुत चिन्तित हो रहे हैं। अमेरिकन सामाजिक स्वास्थ्य संघ गुप्त रोगों के विरुद्ध भारी आन्दोलन कर रहा है और घरेलू तथा पारिवारिक जीवन के लिए शिक्षा का कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है। लड़के-लड़कियों और स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध के क्षेत्र में और अधिक निर्देशन के लिए माँग निरन्तर बढ़ रही है। किन्तु इस विषय में मतभेद है कि निर्देशन कब और किस के द्वारा दिया जाये।

इस क्षेत्र में समुचित ज्ञान की प्राप्ति और स्वस्थ रवैयों का विकास सम्भवतः घर में प्रारम्भ होना चाहिये, और इसका अधिकांश कम से कम शैशवकालीन वर्षों द्वारा घर में ही रहना चाहिए। भावनात्मक नियन्त्रण और स्वस्थ रवैयों का विकास अभिभावकों के साथ स्कूलों का उत्तरदायित्व है। नवयुवकों को कुछ शारीरिक तथ्यों और बच्चों की देखभाल से सम्बन्धित मामलों की शिक्षा शरीर विज्ञान, जीव-विज्ञान, स्वास्थ्य शिक्षा और गृह-निर्माण की पाठ्य-विधियों द्वारा दी जा सकती है। हाई स्कूलों और कालेज स्तरों पर सामूहिक या व्यक्तिगत स्थितियों में निर्देशन देकर लड़के और लड़कियों को प्रेम, विवाह और पारिवारिक सम्बन्धों के विषय में शिक्षा प्राप्त करने में सहायता दी जा सकती है। इन क्षेत्रों में निर्देशन उन वयस्कों द्वारा वस्तुगत रूप से और बुद्धिमत्तापूर्वक दिया जाना चाहिये जो अपने रवैये और व्यवहार में भावनात्मक स्थायित्व और नियन्त्रित रहन-सहन का परिचय देते हैं।

सैक्स का महत्त्व

लगभग सभी बच्चे कभी न कभी सैक्स के मामले में जिज्ञासा प्रगट करते हैं और अपने साथियों से इस विषय में वादविवाद करते हैं। दुर्भाग्य से दूसरे नवयुवकों से प्राप्त की गयी जानकारी बहुधा गलत होती है और बच्चे के ऊपर हानिकारक

प्रभाव डाल सकती है। माता-पिता व अभिभावक इस बात का अनुभव कर रहे हैं कि उनके बच्चों को सैक्स के सम्बन्ध में बुद्धिमत्तापूर्ण और सही शिक्षा मिलनी चाहिये; परन्तु बहुत-से माता-पिता अपने बच्चों को सैक्स का सरल ज्ञान सिखाने में असमर्थ या अनिश्चित प्रतीत होते हैं जिससे वे उन सामान्य सैक्स सम्बन्धों में समन्वय कर सकें जो स्त्री-पुरुषों के मध्य होते हैं अथवा उन्हें स्वस्थ वयस्क पारिवारिक जीवन की प्राप्ति के लिए तैयार कर सकें।

स्वभाव का विकास नवयुवकों के प्रति अब हम उन दिनों की अपेक्षा बहुत आगे बढ़ गये हैं जब कि बच्चों से देखे जाने की आशा की जाती थी न कि सुने जाने की। माता और पिता तथा अन्य वयस्क व्यक्ति यह अनुभव करने लगे हैं कि छोटे बच्चे के विचारों, स्वभावों और व्यवहार में वयस्क के विचारों, स्वभावों और व्यवहार के प्रारम्भ का सूत्र निहित है। चाहे बच्चों को सिर्फ सुना जाये या देखा जाये, वह अवश्य सोचता है, वह अच्छे और बुरे व्यवहारों का स्वयं निर्माण करता है और वह निस्संदेह निरन्तर किसी न किसी प्रकार से व्यवहार करता रहता है। बच्चा सोचने के निश्चित स्वभाव और व्यवहार के साथ उत्पन्न नहीं होता। इसके अतिरिक्त बच्चे के विकास के ढाँचे का उसके प्रति माता-पिता के रवैयों और व्यवहार से निकट संपर्क है। ये रवैये उन प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अत्यन्त शक्ति और भारी बल के साथ कार्य करते हैं जिनका विकास बच्चे में सैक्स और सैक्स सम्बन्धित कार्यों के प्रति होता है।

बच्चे के सैक्स-प्रेरित व्यवहार और रवैये का निर्माण उसका इतना ही उत्तरदायित्व है जितना उसके भोजन, कार्य या मनोरंजन के स्वभावों का विकास करना। यदि उसकी सैक्स की माँगों और अभिरुचियों का निर्देशन व्यक्तिगत स्वास्थ्य और आत्म-नियन्त्रण की प्राप्ति तथा सामाजिक उत्थान की दिशा में करना है तो उसके मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

निर्देशन के कार्य प्रत्येक परिपक्व होते व्यक्ति के सामाजिक जीवन में सैक्स एक शक्तिशाली तत्त्व है। इसलिए सैक्स की शिक्षा में केवल सैक्स का जीव विज्ञान सम्बन्धी महत्त्व या शरीर विज्ञान और सैक्स का स्वस्थ ज्ञान ही समाहित नहीं होता। भावनात्मक नियन्त्रण और आत्म-संयम के स्वभावों का विकास, अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल, परिवार में संतोषजनक शैशवकालीन जीवन, उसी और विपरीत सैक्स के सदस्यों के साथ सामाजिक रूप से वाँछनीय सम्बन्ध और प्रेम, विवाह तथा माता-पिता और बच्चों के पारस्परिक सम्बन्धों के प्रति ये सब सैक्स की शिक्षा के कार्यक्रम में समुचित रूप से निहित हैं क्योंकि यह कार्यक्रम उन अभिभावकों और अन्य व्यक्तियों द्वारा चलाया जाता है जो सच्चे हृदय से सैक्स के मामले में स्वस्थ रवैयों और व्यवहार में रुचि रखते हैं।

निम्नलिखित कारणों से अभिभावक उसी वास्तविकता और स्पष्टता से सैक्स के निर्देशन की समस्या का समाधान करने में असमर्थ या अनिच्छुक हो सकते हैं जिसका उपयोग वे शिशु प्रशिक्षण के अन्य क्षेत्रों में करते हैं: (१) ऐसी शिक्षा देने में अभिभावकीय भय, (२) स्वयं अभिभावकों का सैक्स सम्बन्धी गलत

समन्वय, अथवा (३) बच्चे के विकास और वृद्धि के विभिन्न चरणों पर सैक्स की शिक्षा कब, क्यों, कैसे और क्या दी जाये, इसके सम्बन्ध में माता-पिता के ज्ञान का अभाव। वाद-विवाद का उद्देश्य उन अभिभावकों और अन्य निर्देशन कर्मचारियों की सहायता करना है जिनका सम्बन्ध सैक्सों के मध्य स्थित सम्बन्धों के मामलों में नवयुवकों में वाँछनीय रवैयों का विकास करने से है।

छोटे बच्चों का सैक्स निर्देशन

इस आयु में बच्चों को स्वस्थ शारीरिक और भावनात्मक स्वभावों का विकास करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। परिवार के अन्य सदस्यों, शिशुओं और छोटे जानवरों के प्रति स्नेह तथा उनका ध्यान रखने की प्रवृत्तियाँ स्वभावगत बन जानी चाहिएँ।

सैक्स के सरल मामलों—जिनमें जन्म भी सम्मिलित है—के विषय में बच्चा निःसंकोच जिज्ञासा कर सके, ऐसा उसका स्वभाव बना देना चाहिए। जब तक बच्चा छः वर्ष का हो तब तक बच्चे को बाह्य इन्द्रियों सहित शरीर के सब अंगों के शुद्ध नाम बता देने चाहिएँ और उसे शारीरिक प्रक्रियाओं का सरल ज्ञान हो जाना चाहिए।

छोटा बच्चा घर में छोटे बच्चे की अधिकांश देखभाल का उत्तरदायित्व माँ पर होता है, यद्यपि बहुत से पिता बच्चे को भोजन कराने, स्नान कराने और सुलाने में सहायता देते हैं। जब माता-पिता दोनों मिल कर बच्चे की देखभाल करते हैं तो उसे यह समझने में सहायता मिलती है कि वह दोनों ही का बच्चा है।

छोटे बच्चे साधारणतया अपने प्रश्न अपनी माता से पूछते हैं, इसका मुख्य कारण यह है कि उनका अधिकांश समय उसके साथ व्यतीत होता है। यदि बच्चे को अपने माता-पिता दोनों पर विश्वास होता है तो वह सैक्स सम्बन्धी प्रश्न उनमें से किसी के भी सम्मुख अथवा दोनों के सम्मुख पूछ सकता है। माता-पिता को उन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए और अपने उत्तरों में एक-दूसरे के पूरक का कार्य करना चाहिए। चाहे प्रश्न माँ से किया गया हो या बाप से, प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देना चाहिए जिससे दूसरा अभिभावक उस स्थिति में स्वयं को बहिष्कृत न समझे।

कभी-कभी बच्चे सैक्स के विषय में इसलिए प्रश्न पूछते हैं कि उन्होंने इनके सम्बन्ध में घर के बाहर कुछ बातें सुनी हैं, और वे यह जानना चाहते हैं कि जो कुछ उन्होंने सुना है, क्या उनके माता-पिता उससे सहमत हैं। बच्चा क्या सोचता है, यह जानने के लिए कभी-कभी इस प्रकार के प्रश्नों से प्रारम्भ करके उत्तर देना उपयोगी होता है : "तुम्हारा क्या मत है ?" या "तुम्हारे विचार में यह कैसे होता है ?" ऐसा करने से अभिभावकों को अपना उत्तर देने के लिए प्रारम्भिक सूत्र मिल जाता है।

जब कुछ माता-पिता अपनी बात प्रारम्भ कर देते हैं तो वे रुकने का नाम ही नहीं लेते। प्रश्नों का उत्तर सही और संक्षेप में देना चाहिए। ज्योंही बच्चा सन्तुष्ट होता प्रतीत हो, अभिभावक को अपने उत्तर का विस्तार तभी रोक देना

चाहिए, और बच्चे साधारणतया शीघ्र ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। यदि उत्तर बहुत विस्तार के साथ दिए जाएँ तो बच्चे या तो उसमें रस नहीं लेते या भ्रम में पड़ जाते हैं। यदि कोई उत्तर बच्चे को पूर्णतया सन्तोष नहीं देता तो वह और किसी से पूछेगा। अच्छी बात तो यह है कि बच्चे पर वयस्कों के विचार थोपने की अपेक्षा उनकी विचारधारा का अनुसरण किया जाए।

किसी वयस्क और बच्चे को केवल उस उत्तेजना या रोमाँच के लिए "सैक्स" सम्बन्धी बातें नहीं करनी चाहिएँ जो ऐसी बातों से प्राप्त होता है। बच्चे की रुचि के कारण का मूल्यांकन करना चाहिए और उसी के अनुसार उत्तर दिया जाना चाहिये। सैक्स के प्रति रवैया यदि अधिक नहीं तो उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कि स्वयं सूचना ।

प्राथमिक स्कूल का बच्चा प्राथमिक स्कूल के बच्चे को परिवार के छोटे बच्चे की देखभाल में सहायता देना सीखना चाहिए। घरेलू कार्यों में उसे परिवार के समस्त सदस्यों के साथ सहयोग करना चाहिए और उसे लड़कों और लड़कियों के साथ स्वस्थ कार्यों और खेलों में भाग लेना चाहिए। उसे अपने माता-पिता से निःसंकोच होकर सैक्स के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए और सैक्स सम्बन्धी अवाँछनीय कार्यों से बचने में उसे सहायता देनी चाहिए।

इस अवधि में शरीर के अवयवों को पहचानने के लिए प्रयुक्त होने वाली सही शब्दावली से बच्चे को पूर्णतया परिचित हो जाना चाहिए। दसवें जन्म-दिवस तक पहुँचते-पहुँचते प्रजनन का अर्थ और उसकी प्रक्रिया का उसे सही किन्तु सरल ज्ञान हो जाना चाहिए।

आठ वर्ष की आयु से पूर्व लड़के और लड़कियाँ सैक्स की परवाह किए बिना दूसरे बच्चों के साथ मिलना-जुलना चाहते हैं, आठ वर्ष की आयु के लगभग लड़के लड़कों के साथ और लड़कियाँ लड़कियों के साथ खेलना पसन्द करती हैं। दस या ग्यारह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते सैक्सों का विरोध स्पष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिए छोटी बच्ची की वह लड़का उपेक्षा नहीं कर सकता या उसे छेड़े बिना नहीं रह सकता जिसके साथ वह कुछ मास पूर्व खेला करता था। जो अभिभावक, अध्यापक और निर्देशन कार्यकर्त्ता विकास की इन प्रवृत्तियों को समझते हैं, इन नवयुवकों के रवैयों में होने वाले परिवर्तनों से उत्पन्न स्थितियों को भली-भाँति सुलझा लेते हैं।

घर में बढ़ते हुए लड़कों और लड़कियों के लिए पारिवारिक रवैये अत्यन्त महत्त्व रखते हैं। अतएव माता-पिता को एक दूसरे के प्रति मैत्री और सहयोगपूर्ण रवैया प्रदर्शित करना चाहिए और अपने बच्चों के लालन-पालन के सम्बन्ध में उनमें पूर्ण मतैक्य होना चाहिए। परिवार के समस्त सदस्यों में पारिवारिक प्रेम और आस्था की भावना को प्रोत्साहित करना चाहिए।

एक दूसरे के प्रति सम्मान और सहयोग प्रदर्शित करने के लिए अभिभावकों को अपने बच्चों का निर्देशन करना चाहिए। अपने शरीर के विकास और लड़के-

लड़कियों के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में बच्चा जो प्रश्न करे उसका उत्तर माता-पिता को यथावत् इच्छा और योग्यता के साथ देते रहना चाहिए। बच्चों को पिल्ले रखने और यदि सम्भव हो तो उन्हें पालने की अनुमति दे देनी चाहिए।

स्कूल में पाठ्यक्रम में जीव-विज्ञान और शरीर-विज्ञान के सम्बन्ध में ऐसी सरल सामग्री सम्मिलित करनी चाहिए जिससे बच्चे मूलभूत जीवन प्रक्रियाओं से परिचित हो सकें। कक्षा की और कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ इस प्रकार निर्धारित की जानी चाहिएँ कि बालक-बालिकाएँ सामाजिक विचार वाले बुद्धिमान अध्यापकों की देखरेख में मिलकर कार्य करना और खेलना सीख सकें। इस प्रकार बच्चों में स्वस्थ सम्मान और मित्रता की भावना विकसित हो सकती है। नवयौवन की आयु से पूर्व जिन खेलों में बच्चे भाग लेते हैं, उनमें सैक्स की दृष्टि से हानिकारक बातें बहुत कम होती हैं। बहुधा माता-पिता और अध्यापक इन बच्चों के खेलों का कारण सैक्स-प्रेरित व्यवहार को मानते हैं जिसका अनुभव उन व्यक्तियों को होता है जो यौवन में कदम रख चुके होते हैं। उदाहरण के लिए जो चुम्बन का खेल दस-ग्यारह वर्ष के बच्चे खेलते हैं, उसमें उनके लिए वे सैक्स सम्बन्धी और भावनात्मक अर्थ नहीं होते जो उनके लिए हो सकते हैं जिन्होंने सैक्स की दृष्टि से अधिक परिपक्वता प्राप्त कर ली है। बच्चों की प्रकृति होती है कि वे प्रत्येक बात की खोज स्वयं करें। किन्तु ये कार्य उस समय अस्वास्थ्यकर और विपत्तिजनक बन जाते हैं जबकि समूह के एक या दो सदस्य समय से पूर्व परिपक्व हो चुके होते हैं अथवा उन्होंने सैक्स के प्रति अवाँछनीय रवैया अपना लिया होता है; इसका कम परिपक्व बच्चों पर अत्यन्त हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

किशोर बच्चे को बचपन में व्यक्ति के रूप में स्वयं के प्रति अधिक रुचि होती है। सामान्य किशोर बहुधा सैक्सों के पारस्परिक सम्बन्धों पर भी विचार करता है। बारह और चौदह वर्ष की आयु के मध्य लड़कियाँ सैक्स की दृष्टि से लड़कों की अपेक्षा अधिक परिपक्व होती हैं, वे लड़कों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के प्रयत्नों में रुचि लेने लगती हैं। किन्तु इस काल में लड़के अब भी तटस्थ प्रतीत होते हैं।

इन वर्षों में शारीरिक देखभाल के स्वास्थ्यप्रद स्वभावों के विषय में विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए। बच्चों को स्वस्थ और अपेक्षाकृत श्रम-साध्य कार्यों तथा खेलों में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। जब तक बच्चा बारह वर्ष का हो, तब तक उसे इस योग्य हो जाना चाहिए कि वह घर के कुछ उत्तरदायित्वों को सम्भाल सके। उसको अपने प्रति माता-पिता की जो रुचि है उसमें और उसकी समस्याओं को—जिनमें सैक्स की समस्या भी सम्मिलित है—सुलझाने की अपनी योग्यता में पूर्ण विश्वास होना चाहिए।

लैंगिक विकास की स्थिति में, यदि उन्हें शारीरिक परिवर्तनों के रूप और स्थिति से अवगत नहीं कराया गया तो लड़के-लड़कियों को भावनात्मक धक्का लग सकता है। यह अभिभावकों का प्राथमिक दायित्व है कि उन्हें इस सम्बन्ध में आव-

श्यक जानकारी दें और शरीर-विज्ञान तथा सैक्स के मनोविज्ञान के प्रति स्वस्थ रवैये का विकास करने में उनकी सहायता करें। अध्यापक या स्कूल के परामर्श-दाता इस कठिन समय में अनेक मनोरंजक गतिविधियों की व्यवस्था करके और माँगे जाने पर आवश्यक परामर्श देकर नवयुवकों की सहायता कर सकते हैं।

यदि बालिकाओं को यह समझने में सहायता दी जाये कि नारित्व के विकास में रजोदर्शन एक सामान्य बात है और भावी प्रजनन कार्य में उसकी आवश्यकता है तो वे अपने स्त्रीत्व को भली-भाँति समझ सकती हैं और उसका आनन्द ले सकती हैं। यद्यपि ऐसी स्थिति है कि माताएँ रजोदर्शन के सम्वन्ध में अग्रिम सूचना दे देती हैं, तो भी बहुत-सी लड़कियाँ उसके विषय में त्रुटिपूर्ण धारणा लेकर इस स्थिति पर पहुँचती हैं।

लड़कों को भी रजोदर्शन के विषय में जानकारी होनी चाहिए ताकि स्त्रियों के लिए इसका जो महत्त्व है और मातृत्व से इसका जो सम्बन्ध है उसे वे समझ सकें। यदि उन्हें त्रुटिपूर्ण सूचना प्राप्त होगी तो वे उसके जीवन सम्बन्धी कर्त्तव्य के विषय में हानिकारक रवैया ग्रहण कर लेंगे। जीवन की इन स्वस्थ प्रक्रियाओं के प्रति स्वस्थ रवैयों को प्रोत्साहन देने का उत्तरदायित्व घर का है या स्कूल का, इसका अभी तक पूर्ण निर्णय नहीं हो पाया है। यह स्पष्ट है कि विकसमान लड़कों और लड़कियों को (१) शारीरिक परिवर्तनों के विषय में सही जानकारी प्राप्त हो, और (२) विरोधी सैक्स के सदस्यों के प्रति स्वस्थ रवैया प्राप्त करने के लिए निर्देशन दिया जाय, इसकी आवश्यकता है।

नवयौवनकाल में सैक्स निर्देशन

चाहे माता-पिता अपने बच्चे को गर्भधारण और प्रसव के विषय में सूचना दें या न दें, वह साधारणतया जीव-विज्ञान और स्वास्थ्य शिक्षा के द्वारा मानवीय जीवन-चक्र और सम्बन्धित मामलों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इस समय तक सम्भवतः वह अन्य सैक्स के प्रति नया और भिन्न रवैया भी अनुभव करने लगता है। लड़के-लड़कियों के सम्बन्धों को लेकर उठने वाली समस्याओं को भी वह अनुभव करने लगता है। वह अभिसार, प्रेमाचार (courtship) और विवाह तथा परिवार-पालन की योजनाओं में सक्रिय रुचि लेना प्रारम्भ कर देता है।

तालमेल की नवयुवकों की समस्या अनुभव के इस क्षेत्र में कुछ नवयुवक तालमेल की अपनी समस्याओं को स्वयं ही हल कर लेना चाहते हैं। दूसरे नवयुवक वयस्कों से सहायता चाहते हैं। जब तक बच्चों ने अपने शैशवकाल में अपने माता-पिता से घनिष्ठ और स्पष्ट सम्पर्क स्थापित न कर लिया हो तब तक वे अपनी समस्याएँ उनके पास नहीं ले जाते; घर के, बाहर के लोगों से वे अपने प्रश्नों का उत्तर चाहते हैं। भ्रमित अथवा परेशान नवयुवक बहुधा सहानुभूतिपूर्ण अध्यापकों और परामर्शदाताओं को अपने विश्वास में लेते हैं। अतएव स्कूल निर्देशन कार्यक्रम

में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि नवयुवक सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से मनो-वाँछित सहायता प्राप्त कर सकें।

हाई स्कूल के कनिष्ठ या वरिष्ठ वर्ग में और कालेज में प्राथमिक मनोविज्ञान अथवा विवाह और पारिवारिक जीवन से तालमेल के विषय में इकाई पाठ्य-विधियाँ प्रस्तुत की जानी चाहिएँ। सैक्सों के पारस्परिक सम्बन्ध, विवाह और पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्नों पर कक्षा में जो वाद-विवाद होता है, उसके फल-स्वरूप बहुत से नवयुवकों को उस पाठ्य-विधि के अध्यापक अथवा परामर्शदाता के पास अपने व्यक्तिगत प्रश्नों और समस्याओं को लाने की प्रेरणा मिलती है।

सैक्स सम्बन्धी विभिन्न व्यवहार के लक्षण विरोधी सैक्स के सदस्य के प्रति नवयुवकों के रवैयों का विकास साधारणतया शैशवकाल से ही होने लगता है। किन्तु बहुधा नवयुवक के सैक्स सम्बन्धी व्यवहार की जड़ सैक्स की उसकी शक्ति-शाली चाह, उसकी संस्कृति में सैक्स का स्थान और सैक्स के सम्बन्ध में उसकी तथ्य-पूर्ण जानकारी में निहित होती है। ऐसी दशा में सैक्स निर्देशन व्यक्तिगत नहीं सामूहिक मामला बन जाता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि नवयुवकों का सैक्स सम्बन्धी व्यवहार सामूहिक संहिता के आधार पर कार्य करता है। हाल ही नवयुवकों को वयस्कों के निरीक्षण से जो भारी मुक्ति प्राप्त हुई है, उसने नवयुवकों को व्यवहार के अपने ही मापदण्ड बनाने को बाध्य किया है जिन पर वे निश्चित सामाजिक स्थितियों में सुदृढ़ रहते हैं। यद्यपि इससे उन पर भारी उत्तरदायित्व आ जाता है; यहाँ उन्हें इस आदर्श के मूल्यांकन के लिए भी अवसर मिलता है कि शील एक स्वीकृत मापदण्ड है। इन संघर्षमय स्थितियों में सही निर्णय करने के लिए सावधानीपूर्वक दिया गया निर्देशन भी अभिभावकों, अध्यापकों या परामर्शदाताओं को चुनौती है।

विवाह और पारिवारिक जीवन के लिए निर्देशन

सही जानकारी और उच्च आदर्श के रवैयों का विकास लोगों को उन त्रुटियों से बचने में सहायता देता है जो अज्ञान और भावनात्मक नियंत्रण के अभाव के फल-स्वरूप होती हैं। दुर्भाग्य से कुछ व्यक्तियों का विश्वास है कि उनकी स्थितियाँ दूसरों की स्थितियों से भिन्न हैं और उनके व्यवहार का निर्णय उन मापदंडों के आधार पर नहीं होना चाहिए जो समाज ने सबके निर्देशन के लिए निर्धारित किये हैं। किसी लड़की के लिए यह विश्वास कर लेना सरल है कि उसकी शारीरिक गठन और आकर्षण उसके सबसे बड़े "जादू" हैं और मनुष्य उनके सम्मुख आत्म-समर्पण किये बिना नहीं रह सकते। लड़के और पुरुष यह सरलता से सोच सकते हैं कि उनकी सैक्स की शक्तिशाली चाह उनके पुंस्त्व की निशानी है। जो विवाहित पुरुष अपनी पत्नी के प्रति सच्चा नहीं है, उसके लिए अपनी पत्नी की बुराइयों और अभावों का बखान करके अपने व्यवहार का समर्थन करने में कोई कठिनाई नहीं होती। वह कहता है कि किसी भी पुरुष से यह आशा नहीं की जा सकती है कि वह इन दोषों को सहन करेगा।

निर्देशन का प्रभाव यदि हम आंशिक रूप से भी किनसे द्वारा किये गये अनुसंधान के परिणामों को स्वीकार कर लें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि केवल शिक्षा समस्त व्यक्तियों को वैवाहिक परिधि के बाहर वासनापूर्ण जीवन बिताने से नहीं रोक सकती। विवाह से पूर्व और विवाहित काल में सदाचारपूर्ण जीवन बिताने में निर्देशन तभी मूल्यवान हो सकता है जब कि नवयुवकों को आध्यात्मिक मूल्यों को समझने, अपने तथा विरोधी लिंगों के सदस्यों के प्रति स्वस्थ रवैयों का विकास करने, वैवाहिक जीवन के आनन्द के उपभोग की वास्तविक इच्छा रखने और ऐसे जीवन साथी का चुनाव करने की भी शिक्षा दी जाय जो स्वयं भी सच्चे प्रेम और उच्च आदर्शवाद से प्रेरित हो, ताकि किसी दूसरे व्यक्ति को वह प्रेम और निष्ठा समर्पित करने का लोभ न हो (क्योंकि ऐसी कामना नहीं होगी) जो वास्तव में उसके जीवन साथी की सम्पत्ति है। सुसमन्वित वैवाहिक और पारिवारिक जीवन की शिक्षा का श्रीगणेश माता-पिता द्वारा पालने में ही हो जाना चाहिए जो स्वयं अपने आप में प्रेमी भी हैं और अभिभावक भी और उन्हें अपने इस रूप को आजीवन निभाना चाहिए।

क्या करना उचित है, इतना ही जानना पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति में (और केवल उसी में) अपने मापदंडों का निर्माण करने और उनके अनुकूल जीवन व्यतीत करने की क्षमता होती है। समन्वित जीवन के भावी लक्ष्यों की पूर्ति के लिए तात्कालिक संतोष का उत्सर्ग कर देना चाहिए। यदि इन उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो हम आशा कर सकते हैं कि नवयुवकों के सैक्स-निर्देशन का कार्य प्रसन्न स्वस्थ व्यक्तियों का निर्माण करेगा।

समस्या के समाधान के यत्न कुछ राज्यों में, विशेषतया ओरेगन और मिशीगन में, घर और पारिवारिक जीवन की शिक्षा कानून द्वारा अनिवार्य है। अन्य राज्यों में ऐसी शिक्षा और निर्देशन वैकल्पिक है। अन्य राज्यों और समुदायों में शिक्षक और निर्देशन नेता इस बात के प्रति सावधान हो रहे हैं कि नवयुवकों को सुसमन्वित घरेलू जीवन की प्राप्ति के लिए तैयार किया जाय।

बहुत से नवयुवक और वयस्क व्यक्ति यह अनुरोध करते रहे हैं और कर रहे हैं कि स्वस्थ वैवाहिक तालमेल के लिए निर्देशन दिया जाय। आज मान्यताप्राप्त चार-वर्षीय कालेजों और विश्वविद्यालयों में से लगभग आधे ऐसे हैं जो विवाह और परिवार से सम्बन्धित शिक्षा देते हैं। इन क्षेत्रों में हाई स्कूल कालेजों से पीछे हैं। किन्तु अमेरिकन सोशल हाइजिन एसोसिएशन की सहायता और प्रेरणा से इन सेवाओं का नीचे की ओर हाई स्कूलों तक विस्तार करने की योजनाएँ बनाई जा रही हैं। इसका प्रयोग देश के चुने हुए भागों में किया जा रहा है। प्रथम कार्यक्रम उस प्रदेश में अपनाया गया है जिसमें मिनेसोटा, दक्षिणी और उत्तरी डकोटा तथा इयोवा सम्मिलित हैं। अन्य कार्यक्रम न्यू इंगलैंड, मध्य एटलांटिक राज्यों और मध्य पश्चिम में अपनाया जा रहा है। जो लोग इस विषय पर व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए पुस्तकें, पुस्तिकाएँ, भाषणमाला और संक्षिप्त पाठ्य-विधियाँ उपलब्ध हैं।

इस विषय में पाठ्य-विधियों का अध्ययन करना, पुस्तकों का पढ़ना और भाषणों का सुनना ही एकमात्र या सर्वश्रेष्ठ विधि नहीं है। पाठ्य-विधि प्रस्तुत करने वाले व्यक्तियों, पाठ्य-विधि की सामग्री और लेखकों तथा वक्ताओं के दृष्टिकोण भी अपना महत्त्व रखते हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तो विवाहेच्छुकों को दिये जाने वाले निर्देशन की मात्रा और उसकी प्रभविष्णुता है। हाई स्कूल के बहुत से अध्यापक और निर्देशन परामर्शदाता माता-पिता के सदृश या तो इस क्षेत्र में परामर्श कार्य करते घबड़ाते हैं अथवा प्रभावशाली परामर्श कार्य के लिए आवश्यक व्यक्तिगत योग्यताएँ या जानकारी नहीं रखते। लैंगिक शिक्षा में स्कूल के कार्यों की प्रस्तावित सारिणी चित्र संख्या २४ में प्रदर्शित की गई है।

विवाहित वयस्क का निर्देशन

वैवाहिक तालमेल के सम्बन्ध में कितनी अधिक और कितनी गंभीर समस्याएँ हैं, इसका प्रमाण उन विवाहित स्त्री-पुरुषों, युवकों और वृद्ध व्यक्तियों से मिलता है जो अपने पारिवारिक संघर्षों को सुलझाने के लिए न्यायालयों और निर्देशन केन्द्रों के द्वार खटखटाते हैं; विवाह-विच्छेदों की बढ़ती हुई भारी संख्या भी इसका एक प्रमाण है। विवाह के पश्चात् भी निर्देशन की उतनी ही आवश्यकता प्रतीत होती है जितनी कि विवाह से पूर्व। संभवतः विवाह से पूर्व दी जाने वाली शिक्षा और निर्देशन में ज्यों-ज्यों सुधार होगा, त्यों-त्यों विवाह के पश्चात् अधिक अच्छे तालमेल की आशा की जा सकेगी। आजकल सामाजिक अभिकरण, शिक्षक और रुचि रखने वाले अन्य व्यक्ति गलत वैवाहिक तालमेल के कारणों का विश्लेषण करने और इन्हें रोकने अथवा उन स्थितियों का उपचार करने में निरन्तर अपने समय और शक्ति का उपयोग कर रहे हैं जिनमें भावनाओं को अस्त-व्यस्त करने वाले तत्त्व निहित हैं।

तालमेल के तत्त्व तालमेल के तत्त्व वे ही हैं जो समस्त मानवीय सम्बन्धों के तालमेल में होते हैं, इसकी विशेषता केवल यह है कि विवाहित जीवन के समस्त घनिष्ठ सम्बन्ध व्यक्ति के विचार और कार्यशैली को सक्रिय कर देते हैं। यदि घर के बाहर की स्थिति असह्य प्रतीत हो तो व्यक्ति उससे पलायन कर सकता है। किन्तु यदि मनुष्य विवाह को जीवन भर का सम्बन्ध समझता है, तो साथी के व्यवहार से दुःख, असंतोष अथवा संघर्ष हो सकता है, जिससे छुटकारा प्रतीत नहीं होता, चाहे पृथक्ता अथवा विच्छेद से विवाह का बंधन ही क्यों न टूट जाय।

विवाह-विच्छेद की भारी संख्या (चार में से एक विवाह में तलाक हो जाता है) के बावजूद अधिकांश अमेरिकन अब भी एक या दोनों साथियों की दुर्बलताओं के कारण उत्पन्न इस असह्य प्रतीत होने वाली स्थिति से बाहर निकलने के लिए यह मार्ग अपनाते हिचकते हैं।

वैवाहिक सम्बन्धों के परामर्शदाता बताते हैं कि पारिवारिक सदस्यों के जीवन में प्रमुख संकट उत्पन्न होने से बहुधा पारिवारिक सम्बन्ध छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। किसी प्रिय सदस्य की मृत्यु, आर्थिक भय, माता-पिता या बच्चे की लम्बी और निरन्तर

चित्र २४. कूलों में लैंगिक शिक्षा कार्यक्रम का दिग्दर्शन कराने वाला स्तम्भात्मक चित्र*
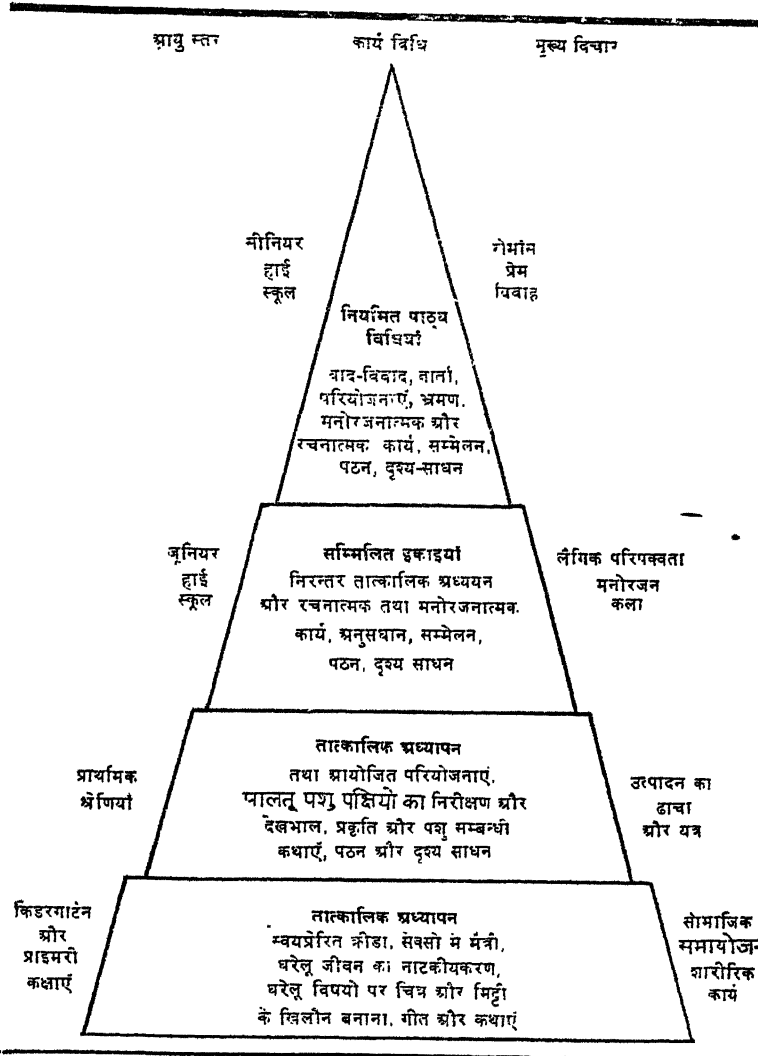
चलने वाली रुग्णावस्था, सशस्त्र सेना में भर्ती होने के कारण किसी पारिवारिक सदस्य का पृथक् हो जाना—ये कुछ ऐसी बातें हैं जिनसे घर के दुःखी जीवन में वृद्धि होती है।

* फ्रांसिस बी० स्ट्रेन, Sex Guidance in Family Life Education, स्वत्वाधिकार, १९४२. मैकमिलन कम्पनी द्वारा। अनुमति से उद्धृत।

बहुत से परिवार ऐसे हैं जिनमें पारस्परिक सम्बन्धों पर संकटपूर्ण घटनाओं का प्रभाव नहीं पड़ता, इसका कारण अभिभावकों का व्यक्तित्व, बल और उनकी समन्वयात्मक शक्तियाँ हैं। संभव है कि एक व्यक्ति बलपूर्वक संकट का सामना कर सके, परन्तु दैनिक जीवन की छोटी-छोटी चिढ़ाने वाली बातों के सामने पराजित हो जाय। इन अनुभवों में झिड़कना, लड़ाई झगड़ा, ईर्ष्या, भावनात्मक आवेश, मौन बलिदान की मुद्रा बनाये नखना, पारिवारिक उत्तरदायित्वों में भाग लेने की अनिच्छा, अपव्यय अथवा स्वार्थप्रियता, सामाजिक कार्यों में बहुत अधिक या बहुत कम रुचि, और विवाह से पूर्व निर्मित बहुत सी अनेक ऐसी बातें जो भावना को असंतुलित कर देती हैं, सम्मिलित की जा सकती हैं। ऊपर गिनाई गई बातों के अतिरिक्त और संभवतः उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण प्रभाव लैंगिक असमर्थता का पड़ता है। हम उदासीन पत्नी और लैंगिक रूप से अनियंत्रित पति के विषय में बहुत कुछ सुनते हैं। विवाह के भौतिक रूप में तालमेल न हो सकने का मुख्य कारण वह रवैया है जिसका विकास वृद्धि के युग में हुआ है। यह वह क्षेत्र है जिसके लिए माता-पिता अपनी संतान को बचपन से ही तैयारी करने में सहायता दे सकते हैं। स्कूल भी नवयुवकों को सैक्स के सौन्दर्य और आश्चर्य की शिक्षा दे सकते हैं। सन् १९४३ से मिनेसोटा का विश्वविद्यालय स्टूडेंट कौंसलिंग ब्यूरो चला रहा है और सन् १९४४ में उसने विवाह की पाठ्य-विधियों को विवाह के क्षेत्र में दिये जाने वाले निर्देशन से मिलाने की योजना प्रारम्भ की। यह प्रयोग सफल रहा है और इससे दूसरी संस्थाओं को भी ऐसे कार्यक्रम बनाने की प्रेरणा मिली है।

वैवाहिक समन्वय का विश्लेषणात्मक अध्ययन अंतिम पचास वर्षों में लैंगिक व्यवहार और तालमेल का अध्ययन करने के अनेक प्रयत्न किये गये हैं। प्रश्नावली-प्रणाली के माध्यम से अनुसंधान किया गया है, उससे सैक्स सम्बन्धी रवैये और व्यवहार के लगभग ८०० इतिहास उपलब्ध हुए हैं। कुछ अनुसंधानकर्त्ताओं, मुख्यतः डिकन्सन और लैंडीस, ने साक्षात्कार की प्रविधि को अपनाया था।

संभवतः अत्यन्त गहन अनुसंधानात्मक अध्ययन एलफ्रेड सी० किनसे और उनके साथियों ने किया है। उसके पहले ग्रन्थ Sexual Behavior in the Human Male में मनुष्यों के सैक्स सम्बन्धी जीवन के नौ-वर्षीय तथ्यों का संग्रह किया गया है। उसके साथ का अध्ययन स्त्रियों के सैक्स सम्बन्धी व्यवहारों और रवैयों का दिग्दर्शन कराता है।

किनसे की रिपोर्ट में स्त्री-पुरुषों के एकाकी और विवाहित जीवन सहित विकास के विविध चरणों के महत्त्वपूर्ण तथ्य दिये हैं। इन रहस्योद्घाटनों के कारण जनता बहुत अधिक चौकन्नी हो गई। यद्यपि आधुनिक जीवन में लैंगिक व्यवहार लैंगिक तालमेल के गम्भीर रूप प्रस्तुत करता है और मानवीय कार्य के इस क्षेत्र में परामर्श कार्य की आवश्यकता का संकेत करता है, छोटी आयु के विवाह और बड़े परिवारों की ओर जो आधुनिक प्रवृत्तियाँ हैं वे लैंगिक संकीर्णता के स्तरों का कुछ सामना कर सकते हैं।

वैवाहिक परामर्श कार्य दुर्भाग्य से अनुसंधान और विवाह से पूर्व विकसित तैयारी द्वारा प्राप्त अधिक ज्ञान के फलस्वरूप हम वैवाहिक तालमेल की उपलब्धि के लिए गम्भीरता से प्रतीक्षा नहीं कर सकते। वैवाहिक कष्ट की वर्तमान समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रशिक्षित परामर्शदाताओं और संगठनों को तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे वैवाहिक और पारिवारिक जीवन में सुधार हो सके।

प्रभावशाली समूह भारी संख्या में रचनात्मक कार्यों में व्यस्त हैं जिनका उद्देश्य नवयुवकों के लिए अधिक संतोषजनक वैवाहिक सम्बन्धों, अच्छे शारीरिक और भावनात्मक विकास की प्राप्ति और गुप्त रोगों का उन्मूलन है। इनमें से कुछ संगठन ये हैं:

अमेरिकन एसोसिएशन मैरिज कौंसलर्स
अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ फेमिली रिलेशंस
अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन
अमेरिकन सोशल हाइजिन एसोसिएशन
एसोसिएशन फार फैमिली लिविंग
चाइल्ड स्टडी एसोसिएशन ऑफ अमेरिका
चिल्ड्रन्स ब्यूरो, यूनाइटेड स्टेट्स आफिस ऑफ हैल्थ एजुकेशन एण्ड वेल्फेयर
फैमिली लाइफ ब्यूरो, नेशनल कैथोलिक वेलफेयर कान्फ्रेंस
फैमिली सर्विस एसोसिएशन ऑफ अमेरिका
नेशनल एसोसिएशन फ़ार मैंटल हैल्थ
नेशनल कौंसिल फ़ार फैमिली रिलेशंस
नेशनल पेरेंट टीचर एसोसिएशन
पब्लिक अफेयर कमेटी
रब्बीनिकल असेम्बली ऑफ अमेरिका
यूनाइटेड स्टेट्स पब्लिक हैल्थ सर्विस
ह्वाइट हाउस कान्फ्रेंस ऑन चिल्ड्रन एण्ड यूथ

अमेरिकन सोशल हाइजिन एसोसिएशन विवाह और पारिवारिक जीवन के लिए शिक्षा के आयोजित कार्यक्रम का देश भर में उद्घाटन करने के लिए प्रोत्साहन दे रहा है और गुप्त रोगों के विरुद्ध आन्दोलन कर रहा है। अमेरिकन इंस्टीट्यूट आफ फैमिली रिलेशंस का सार्वजनिक सेवा विभाग परिवार के पुनः समन्वय के लिए सहायता प्रदान कर रहा है। उदाहरण के लिए लॉस एंजिल्स ऑफिस में परामर्शदाता हजारों व्यक्तियों को प्रति वर्ष व्यक्तिगत रूप से अथवा डाक द्वारा पुनः शिक्षा देकर उनकी सहायता कर रहे हैं। पारिवारिक परामर्श इकाइयाँ और पारिवारिक सम्बन्ध न्यायालय निरन्तर समुदायों में स्थापित किये जा रहे हैं। प्रत्यक्ष रूप से प्रगति हो रही है। विवाह-विच्छेद की गति और शिशुओं की मृत्यु में कमी हो रही है। उदा-

हरणत: गर्मी के रोग से बच्चों की होने वाली मृत्यु की संख्या १९४६ में जीवित प्रसवों में २ प्रति हजार थी जो १९५८ में घटकर एक प्रति हजार रह गई।

पहले से ही जिनका तालमेल त्रुटिपूर्ण था, उन पर उपचारात्मक उपायों का प्रयोग प्रशंसनीय है। किन्तु इस क्षेत्र के हमारे उत्तरदायित्वों में एक उत्तरदायित्व विवाह और पारिवारिक सम्बन्धों में गलत तालमेल को रोकने के लिए सामूहिक और व्यक्तिगत स्थितियों में निर्देशन के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा को सम्मिलित कर लेना चाहिए।

शिक्षा का मूल्य सैक्स की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ऐसे सैक्स के प्रति रवैयों, स्वभावों और आदर्शों की स्थापना करना है जो व्यक्ति को संतोष देती है और सामाजिक रूप से उत्तरदायी तरीके से कार्य करने के लिए उसे प्रोत्साहन देती है। घर और चर्च तथा स्कूल जैसे सामुदायिक अभिकरणों को चाहिए कि वे व्यक्ति के सैक्स सम्बन्धी जीवन से सम्बन्धित मामलों में पर्याप्त शिक्षा और निर्देशन के उत्तरदायित्व में हाथ बँटावें। चूँकि बच्चे की उसकी अत्यन्त निर्माणकारी आयु में पालने का उत्तरदायित्व घर पर है, अतएव वह एक ऐसी सुन्दर स्थिति में है जबकि दैनिक आधार पर बच्चे को शिक्षा दी जा सकती है। ज्यों-ज्यों बच्चे के वातावरण का विस्तार होता है और वह अपने भौतिक तथा शारीरिक विकास से सम्बद्ध अनेक समस्याओं का सामना करता है, त्यों-त्यों उसे विविध व्यक्तियों और सामाजिक अभिकरणों की रचनात्मक सहायता की आवश्यकता होती है जो व्यक्ति के लैंगिक जीवन की समस्याओं का समाधान कर सकें।

शैशव और नवयौवन के कच्चे दिनों में बच्चे का झुकाव सैक्स-केन्द्रित एकपक्षीय सामूहिक भावना की ओर होता है। लोकप्रिय गीत, पत्रिका की कहानियों, चलचित्रों के कथानकों और रेडियो तथा टेलीविजन के मनोरंजन कार्यक्रमों में सैक्स की चमक-दमक और प्रेम के भौतिक रूप का अतिरंजित चित्रण होता है। समाचारपत्र और संवाद-लेखक, फिल्म कलाकारों और विख्यात व्यक्तियों के विवाह और विवाह-विच्छेद की कहानियों के विस्तृत शब्द-चित्र प्रस्तुत करते हैं। अपरिपक्व और चमक दमक की खोज में रहने वाले बच्चों को इस प्रकार की प्रेम कहानियाँ उन समाचारों अथवा कहानियों की अपेक्षा अधिक आकर्षित करती हैं जिनमें उन व्यक्तियों का सफल सुन्दर वैवाहिक जीवन चित्रित होता है जिन्होंने अभिभावक या सामुदायिक नेता के रूप में सहकारी जीवन की गतिविधियों के उच्च आदर्शों को बल देने के लिए महत्त्वपूर्ण योग दिया है।

नकारात्मक शक्तियों का सामना अभिभावकों द्वारा उपस्थित आदर्श उदाहरण, धार्मिक नेताओं के निर्देशन, शारीरिक अवयवों के जीव-विज्ञान सम्बन्धी कार्यों के विषय में सुयोग्य चिकित्सकों के परामर्श और स्कूल के सावधानी से निर्मित उन कार्यक्रमों के द्वारा हो सकता है जो नवयुवक के लिए इन बातों के मूल्य पर विशेष बल दे सकें : (१) आत्म-संयम का विकास करने, (२) अपने और विरोधी सैक्स के सदस्यों के शारीरिक कार्यों का सम्मान करना सीखने, (३) स्त्री-पुरुष दोनों से स्वस्थ मित्रता

बनाने, और (४) ऐसे जीवन साथी की खोज करने जिसके प्रति वह वासना की दृष्टि से ही आकर्षित नहीं है अपितु जिसके साथ वह जीवन भर के रचनात्मक स्वार्थों और कार्यों में भाग ले सके। निःसंदेह नवयुवक प्रेम के शिकार होंगे। प्रेम के लिए चुना गया पात्र, एक दूसरे के प्रति प्रदर्शित रवैया और जीवन का वह अन्तिम लक्ष्य जिसे वे प्राप्त करना चाहते हैं, विवाह और पारिवारिक जीवन के लिए माता-पिता, स्कूल और समुदाय द्वारा आयोजित शिक्षा के कार्यक्रमों के आधार होते हैं।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न और विषय

१. सैक्स से सम्बन्धित अपने निजी शैशवकालीन अनुभवों की समीक्षा कीजिए। यदि आप इच्छुक हों तो कक्षा के सम्मुख उनका वर्णन कीजिए।
२. ऐसे माता-पिता के उदाहरण दीजिए जो अपने बच्चों के सम्मुख "जीवन के तथ्यों" का वर्णन करने में संकोच करते हैं।
३. अनुभव के इस क्षेत्र में जानकारी की अपेक्षा रवैया अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है ?
४. इस अध्याय में वर्णित बच्चों के घरेलू व्यवहारों पर टिप्पणी कीजिए। इनमें से आप किसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझते हैं ? क्यों ?
५. आपके अनुभव के अनुसार प्राथमिक स्कूल के बच्चों द्वारा सैक्स के सम्बन्ध में कौन-से प्रश्न बहुधा पूछे जाते हैं ?
६. अध्यापक के रूप में आप उन कामोद्दीपक चित्रों के विषय में क्या करेंगे जो लोगों द्वारा कक्षा में प्रसारित होते हैं ?
७. नवयुवक लड़के-लड़कियों की वे समस्याएँ सूचीबद्ध कीजिए जो हाई स्कूल के विद्यार्थी के जीवन में उत्पन्न हो सकती हैं। उनका सामना करने के लिए विद्यार्थी को क्या सहायता दी जा सकती है ?
८. अपने ही सैक्स के प्रति होने वाली प्रवृत्तियों में अध्यापकों के बर्ताव पर विचार कीजिए।
९. विवाह और पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित पाठ्य-विधियों का आप क्या मूल्य समझते हैं ?
१०. स्कूलों में लैंगिक शिक्षा के स्ट्रेन रचित स्तम्भात्मक ढांचे (पृष्ठ ४७९) का मूल्यांकन कीजिए।
११. स्कूल के लोग वैवाहिक और पारिवारिक सम्बन्धों की शिक्षा देने में क्यों संकोच करते हैं ?
१२. वैवाहिक और पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध में किस प्रकार के व्यक्तियों को परामर्श देना चाहिए ?
१३. अपने पाँच परिचित विवाहित दम्पतियों का चुनाव कीजिए और उनकी तालमेल की महत्ता का मूल्यांकन कीजिए। उनके पारस्परिक रवैयों के प्रति आप निश्चित क्यों नहीं हो सकते ?
१४. वैवाहिक तालमेल के क्षेत्र में निर्देशन सेवाओं के लिए आपके गृह-समुदाय में क्या व्यवस्थाएं की गई हैं ?
१५. विवाह और वैवाहिक सम्बन्धों के प्रति नवयुवकों में वाँछनीय रवैयों का विकास करने के लिए धार्मिक संगठन, चलचित्र और रेडियो तथा टेलीविजन किस प्रकार सहायता कर सकते हैं ? स्पष्ट उदाहरण दीजिए।

२२ निर्देशन : मूल्यांकन और भविष्यवाणी

हमने पाठकों को निर्देशन की कल्पना को समझने और व्यक्तियों को जन्म से ही जीवन के विविध क्षेत्रों में रचनात्मक और सन्तोषजनक तालमेल प्राप्त करने में सहायता देने के लिए क्या किया जा रहा है अथवा क्या किया जाना चाहिए उसके मूल्यांकन से परिचित कराने का प्रयत्न किया है। अब वह समय आ गया है जब कि निर्देशन पर एक अनौपचारिक अथवा सेवा के संगठित कार्यक्रम के रूप में विचार किया जाए जो उन सबको लाभ पहुँचाएगी जो इसमें भाग लेते हैं और उन सम्भावित भावी प्रवृत्तियों को जिनकी जड़ें वर्तमान कार्यों में निहित हैं। जबकि हम मूल्यांकन और भविष्यवाणी करते हैं, सम्भवतः पाठक शिक्षा में और हम में से प्रत्येक के जीवन में निर्देशन के स्थान के विषय में व्यक्तिगत निर्देशन का निर्माण कर सकता है।

निर्देशन कार्यक्रमों का मूल्यांकन

किसी भी अपेक्षाकृत नये आन्दोलन को निम्नलिखित स्थितियों में से निकलना पड़ता है: (१) आवश्यकता की अभिस्वीकृति, (२) उद्देश्यों का निर्माण, (३) प्रयोग, (४) अस्थायी रूप से स्वीकृत कार्य-विधियों की स्थापना, (५) मूल्यांकन और पुनर्गठन। यदि आन्दोलन को स्थायी महत्त्व प्राप्त करना है तो यह आवश्यक है कि जब नई आवश्यकताओं का विकास हो और नयी तथा अधिक अच्छी प्रविधियों का ज्ञान हो तभी पुनर्मूल्यांकन और पुनर्गठन किया जाए।

विगत अध्यायों में हमने निर्देशन सेवाओं का विकास व्यवसाय-केन्द्रित सहायता से प्रारम्भ करके मानव जीवन के प्रत्येक रूप तक चित्रित किया है। वर्तमान शताब्दी के आधे ५० वर्षों में इस क्षेत्र में बहुत से प्रयोग हुए हैं। वर्तमान कार्यक्रम कितने प्रभावशाली हैं? निर्देशन के दर्शन और व्यवहार में किन परिवर्तनों की आवश्यकता है? इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए स्कूल और समुदाय के

नेता, विशेषतया निर्देशन कर्मचारी ~~वर्तमान निर्देशन विधियों का अल्पकालीन और~~ दीर्घकालीन मूल्यांकन करते रहे हैं।

खोज के क्षेत्र निर्देशन के जो अध्ययन समाप्त हो चुके हैं अथवा जो अभी तक चल रहे हैं उनका सम्बन्ध खोज के तीन सामान्य क्षेत्रों से है। निर्देशन उद्देश्यों के वर्तमान वक्तव्यों की समीक्षा करने, निर्देशन आवश्यकताओं की खोज के प्रकाश में उनका मूल्यांकन करने, उनमें परिवर्तन या विस्तार करने और पुनर्निर्माण करने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं। पुराने अध्ययन उन कार्यों पर जिनकी वे पूर्ति करते हैं और वर्तमान कार्यक्रमों पर उनकी कुशलता का निश्चय करने के लिए उनके संगठन और कर्मचारियों पर बल देते हैं। अनुसंधानकर्त्ता वर्तमान प्रथाओं और प्रविधियों की सफलता का भी मूल्यांकन करना चाहते हैं ताकि वे जान सकें कि वे किस सीमा तक अपने निश्चित उद्देश्यों को पूरा कर सकते हैं। इन सामान्य अनु-संधानों के अतिरिक्त शैक्षिक और व्यावसायिक परामर्श कार्य, असाधारण व्यक्तियों का निर्देशन और वयस्कों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं जैसे विशेष क्षेत्रों में निर्देशन सेवाओं की सफलता का निश्चय करने के लिए अध्ययन किए जा रहे हैं। सम्भवतः नवीनतम परियोजना प्राथमिक स्कूल के स्तर पर निर्देशन कार्यक्रमों का मूल्यांकन है।

साधारणतः अध्ययन के दो में से एक रूप को अपनाया जाता है। अनु-संधानकर्त्ता या तो (१) उन व्यक्तियों से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखने के फलस्वरूप प्राप्त तथ्यों का उपयोग करते हैं जिन्होंने निर्देशन कार्यक्रम में ऐसी सेवाओं से इन व्यक्तियों को प्राप्त होने वाले लाभ की खोज करने के लिए भाग लिया है अथवा (२) निर्देशन कार्यक्रम वाँछनीय समझे जाने वाले लक्ष्यों का स्तर स्थापित करके या सूची बनाकर अपने कर्त्तव्यों की पूर्त्ति करते हैं।

निरन्तर चलते रहने वाला अध्ययन स्कूल और कालेज स्नातकों और स्कूल छोड़ देने वाले क्षेत्रों से सम्पर्क बनाकर सम्बन्धित निर्देशन कार्यक्रम के मूल्य की खोज करने में अधिकाधिक रुचि ले रहे हैं। सामान्यतः प्रयुक्त होने वाली विधियों में भूतपूर्व छात्रों के पास डाक द्वारा प्रश्नावली भेजना अथवा सामूहिक बैठकों में वाद-विवाद के लिए उन्हें सम्मिलित करना आवश्यक है। कुछ हाई स्कूलों और कालेजों के निर्देशन या कर्मचारी विभागों ने पोषक स्कूलों के पास पृथक्-पृथक् विद्यार्थियों के सम्बन्ध में समय-समय पर सूचनाएँ भेजने की प्रथा बना ली है। कुछ माध्यमिक स्कूल और कालेज भूतपूर्व छात्रों के मालिकों से सम्पर्क स्थापित करते हैं। सम्पर्क बनाए रख कर किए जाने वाले अध्ययनों से प्राप्त तथ्य, यदि ऐसे तथ्य वैध हों, निर्देशन सेवाओं के सुधार के रूप में मूल्यवान हो सकते हैं।

सम्पर्क बनाये रखने वाली प्रश्नावली और सूचनाएँ सम्पर्क बनाये रखने से प्राप्त मूल्यांकन इसलिए उपयोगी हैं कि वे इस परियोजना में लगे हुए समस्त व्यक्तियों के सहकारितापूर्ण प्रयत्नों का परिचय देते हैं। प्रश्नावली और सूचना पद्धतियों की उपयोगिता के विरुद्ध अनेक बातें हैं। प्रश्नावली की कुछ हानियाँ इस प्रकार हैं: (१) कुछ

भूतपूर्व विद्यार्थी बिना पता दिये अपना निवास-स्थान बदल देते हैं, (२) सम्भव है कि पूछे गये प्रश्नों का उत्तर सही न हो, (३) प्रश्नावली प्राप्त करने वाले व्यक्ति उसे भरकर न लौटायें, (४) प्रश्नावलियों को तैयार करके उन्हें डाक में डालने और प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण और व्याख्या करने में बहुत समय, शक्ति व धन व्यय हो जाता है।

भावी उत्तरदाताओं के पास भेजी जाने वाली प्रश्नावलियों के लगभग एक-तिहाई उत्तर सामान्यतः आशा के अनुकूल होते हैं। उदाहरण के लिए एलखर्ट (इंड०) हाई स्कूल ने सन् १९५५ में १९५० की स्नातक कक्षा के तीन सौ सात सदस्यों को डाक द्वारा प्रपत्र भेजे। प्रपत्र में इन विषयों पर प्रश्न थे : (१) वर्तमान नौकरी, (२) कालेज, (३) नौकरी का बार-बार परिवर्तन करना, (४) नौकरी के सम्बन्ध में विचार, (५) नौकरी के सम्बन्ध में स्कूल का प्रशिक्षण, (६) आगे अध्ययन, (७) अध्ययन का प्रकार, (८) संगठनों की सदस्यता, और (९) टिप्पणियाँ तथा सुझाव। जिन लोगों के पास ये प्रपत्र पहुँचे यदि उन सबने ठीक-ठीक उत्तर दिये होते तो यह स्कूल के निकाय के मूल्यांकन का प्रशंसनीय आधार होता। विशेषतया हाई स्कूल के वर्षों में छात्रों को जो निर्देशन प्राप्त हुआ था उसके मूल्य के सम्बन्ध में प्राप्त होने वाली टिप्पणियाँ या सुझाव महत्त्वपूर्ण होते हैं। दुर्भाग्य से १९ फार्म डाकखाने द्वारा (बिना दिये हुए) वापस कर दिये गये और १८१ प्रपत्र पहुँचे तो सही किन्तु लौटाये नहीं गयें, शेष १०७ (३५ प्रतिशत) भरे हुए प्रपत्र वापस आये। इन प्रपत्रों पर अधिकांश टिप्पणियाँ एलखर्ट हाई स्कूल द्वारा अपने स्नातकों को नौकरियों, कालेज और स्कूल जीवन के लिए तैयार करने की पद्धति के पक्ष में थे, किन्तु जिन ५९ प्रतिशत व्यक्तियों ने उत्तर नहीं दिये उनके रवैये के विषय में क्या कहा जा सकता है।

इसी हाई स्कूल ने १९५५ में ३८८ स्नातकों के साथ भी एक-वर्षीय सम्पर्क बनाने का कार्य किया। २४५ व्यक्तियों के उत्तर प्राप्त हुए अर्थात् ६३·४ प्रतिशत। पाँच वर्ष के अंतर के पश्चात् प्राप्त होने वाले उत्तरों की तुलना में एक वर्ष के पश्चात् प्राप्त होने वाले उत्तरों के भारी प्रतिशत का कारण समझा जा सकता है। पाँच वर्ष की अवधि के पश्चात् तुलना में नवीन स्नातकों के स्कूल से सम्बन्ध अधिक घनिष्ठ हैं क्योंकि पाँच वर्ष में नये स्वार्थों का विकास हो जाता है। यद्यपि दोनों प्रकार की प्रश्नावलियों में बहुत सराहनीय टिप्पणियाँ थीं किन्तु सम्भवतया पाँच वर्ष की अवधि के पश्चात् प्रस्तुत किये गए उत्तरों की वैधता अधिक होगी क्योंकि वे अधिक वस्तुगत थीं।

हाई स्कूलों या वर्तमान मालिकों से प्राप्त भूतपूर्व विद्यार्थियों की प्रगति की सूचनाओं की मूल्यांकन के उपकरणों के रूप में अपनी उपयोगिता की दृष्टि से भिन्न-भिन्न महत्ता होती है। कुछ माध्यमिक स्कूल और कालेज केवल महत्त्वपूर्ण छात्रों के विषय में ही पोषक स्कूलों को सूचना देते हैं; कुछ माध्यमिक स्कूल और कालेज अपनी सूचनाओं में विद्यार्थियों की केवल उसी सफलता का उल्लेख करते हैं जो वे प्रथम वर्ष के अंत में प्राप्त करते हैं। पोषक स्कूल को उसके समस्त भूतपूर्व छात्रों की प्रगति के विषय में किसी भी शैक्षिक संस्था द्वारा सूचित किया जाना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है किन्तु थोड़े छात्र वाले कालेजों को छोड़कर शेष समस्त संस्थाओं के लिए भारी कार्य भी है।

सम्पर्क बनाये रखने के लिए सभाएँ और सम्मेलन वर्तमान शैक्षिक और निर्देशन कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए कुछ स्कूल अपने स्नातकों से सामूहिक विवादों की विधि को अत्यन्त प्रभावशाली पद्धति मानते हैं। यदि स्नातक स्कूल समुदाय में रहें और स्कूल के निकाय तथा छात्र संगठन में अच्छे सम्बन्ध स्थापित हो चुके हों तो यह कार्यविधि बहुत अच्छी है। एक आस्थावान सक्रिय छात्र संगठन भी उपयोगी हो सकता है। अच्छी सामूहिक स्थितियों में कार्यक्रम के विकास के दो उदाहरण दिये जाते हैं। दोनों का सम्बन्ध परामर्शदाता के प्रशिक्षण कार्यक्रम और शिक्षण के मूल्यांकन से है। एक संस्था में निर्देशन प्रशिक्षण कार्यक्रम के निर्देशक और निकाय के कुछ सदस्य उन स्नातकों के समूह से जो स्वयं स्नातकीय स्कूलों में निर्देशन कर्मचारी हैं, एक प्रकार के समीक्षात्मक अधिवेशन में भेंट करते हैं। अनौपचारिक बैठक में जिसमें चाय या कॉफी भी चलती जाती है समूह के सदस्य समान समस्याओं पर विचार करते हैं। स्नातक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति जबकि वे नौकरी के पद पर अपनी शक्तियों और दुर्बलताओं का परिचय देते हैं, अपने रवैयों का प्रदर्शन करते हैं। उन्हें अपने प्रशिक्षण की कमियों के विषय में सुझाव देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि इस संस्था के कार्यक्रम में परिवर्तन, परिवर्धन और सुधार हो रहे हैं।

दूसरा उदाहरण एक कालेज संघ का है जिसमें निर्देशन के स्नातक और विद्यार्थी सम्मिलित हैं। यह संगठन (१) समय-समय पर सदस्यों की बैठक करता है जिसमें साधारणतया कुशल नेता के आधीन निर्देशन और परामर्श कार्य के विविध रूपों पर विचार किया जाता है, (२) सम्बन्धित स्कूल स्तर पर परामर्शदाताओं की छोटी सामूहिक बैठकें समान समस्याओं के विचारार्थ या लाइसेंस देने वाली परीक्षाओं की तैयारी के रूप में आयोजित करता है, (३) पुस्तकों, पुस्तिकाओं या अन्य सम्बन्धित सामग्रियों का विनिमय करता है, (४) व्यक्तिगत रूप से ऐसे उपयुक्त अध्यापकों को जिनसे सदस्य व्यक्तिशः सम्बन्धित हैं स्वयं को परामर्शदाता बनने के लिए प्रोत्साहन देता है, (५) सम्वादपत्रों के सावधिक वितरण द्वारा सदस्यों को उस क्षेत्र के नये विकासों और उनके साथियों के विशेष निर्देशन कार्यों से परिचित रखता है, और (६) कालेज के परामर्शदाता के प्रशिक्षण कार्यक्रम में वाँछनीय परिवर्तनों की सिफारिश करता है।

स्कूल कर्मचारियों द्वारा आत्म-मूल्यांकन स्कूल के प्रशासक, अध्यापक और निर्देशन कर्मचारी वाँछनीय स्तर या श्रेणी निर्धारित करके और फिर व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से इस सीमा की खोज करके जहाँ तक वे स्थापित उद्देश्यों की पूर्ति करते प्रतीत होते हैं उसकी निर्देशन सेवाओं की प्रभविष्णुता का मूल्यांकन कर सकते हैं। स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम के परिणामों के अध्ययन की इस विधि में निम्नलिखित क्षेत्रों का मूल्यांकन सम्मिलित है :

(१) विद्यार्थी की शैक्षिक आवश्यकताओं के संदर्भ में पाठ्यक्रम के विषय
(२) नवीनीकरण के कार्यक्रमों की निपुणता

(३) सामूहिक स्थितियों में पाठ्य-विधियों अथवा निर्देशन के अन्य रूपों की संख्या और प्रकार
(४) व्यक्तिगत परामर्श कार्य के लिए व्यवस्था की पर्याप्तता
(५) छात्र के मूल्यांकन के कार्यक्रम की पर्याप्तता
(६) वह सीमा जहाँ तक विद्यार्थियों को अधिकतम कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है
(७) विद्यार्थियों के असफल होने और बीच में पढ़ाई छोड़ देने के कारण
(८) उच्च शिक्षा अथवा व्यवसाय के चुनाव के अवसरों की छात्र को जानकारी
(९) निर्देशन कर्मचारियों की अपने सम्बन्धित निर्देशन कार्यों में और कल मिलाकर स्कूल के कर्मचारियों की कुशलता
(१०) स्थान, उपकरण, परीक्षाओं, वृत्त आदि निर्देशन सामग्रियों की पर्याप्तता
(११) स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम के साथ सामुदायिक सहयोग की मात्रा और प्रकार
(१२) उच्चतर विद्यालयों अथवा नौकरी पर स्नातकों की सफलता
(१३) स्कूल में मिलने वाली निर्देशन सेवाओं के प्रति स्नातकों का रवैया
(१४) स्कूल के निर्देशन कार्यक्रम के प्रति अभिभावकों का रवैया और सहयोग

निर्देशन कार्यक्रम की सफलता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध उन लोगों के रवैये से है जो उसकी सेवाओं को सक्रिय बनाने के लिए उत्तरदायी हैं। ये लोग यदि अपने कार्य के लिए भली-भाँति तैयार हो जाएँ, अपने उत्तरदायित्वों को समझ लें और आवश्यक सेवाओं को हृदय से करें तो इस कार्य में सफलता की आशा की जा सकती है। कर्मचारियों का मत है कि यदि निम्न प्रकार के प्रश्नों का विचारपूर्वक ईमानदारी से उत्तर दिया जाये तो वे आत्म-मूल्यांकन के लिए सहायक हो सकते हैं।

निर्देशन के प्रति रवैये

अपने स्कूल के उत्तरदायित्वों और आपके स्कूल द्वारा प्रस्तुत की गयी निर्देशन सेवाओं से अपने सम्बन्ध के प्रकाश में प्रश्नों के प्रथम समूह के और उस समूह के जो आपके स्कूल के कार्य में विशेष रूप से आप पर लागू होते हैं उत्तर दीजिये। अपने निजी रवैये की अपने स्कूल के परिचित व्यक्तियों के रवैये से तुलना कीजिए। अपने उत्तर की समुचित स्तम्भ—हाँ या नहीं—से जाँच कीजिए यदि दोनों में से कोई भी आपके सामान्य व्यवहार का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि यह संदेह हो कि उत्तर हाँ में हो या न में हो तो ? के स्तम्भ से मिलाइये।

स्कूल कर्मचारियों के रूप में	हाँ	?	नहीं
(१) पूर्ण व्यक्ति की शिक्षा से जो अभिप्राय है, मैं समझता हूँ	—	—	—

	हाँ	?	नहीं
(२) मैं शैक्षिक साहित्य की नवीनतम जानकारी रखता हूँ	—	—	—
(३) मैंने निर्देशन के क्षेत्र में पाठ्य-विधियाँ दी हैं	—	—	—
(४) मैं निर्देशन सम्मेलनों में सम्मिलित होता हूँ	—	—	—
(५) मैं स्कूल में और स्कूल के बाहर व्यवहार पर तर्कसंगत नियंत्रण रखता हूँ	—	—	—
(६) मैं लोगों को पसंद करता हूँ	—	—	—
(७) मैं निर्देशन को निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया मानता हूँ	—	—	—
(८) मैं विश्वास करता हूँ कि व्यक्ति को अपना निर्णय स्वयं करने और अपने निजी जीवन की योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए	—	—	—
(९) मेरा विश्वास है कि सहानुभूतिपूर्ण निर्देशन द्वारा रवैयों और व्यवहार में सुधार किया जा सकता है	—	—	—
(१०) मैं अपने निजी रवैयों और व्यवहार द्वारा दूसरे लोगों को अपने निर्णय में विश्वास करने के लिए प्रेरित करता हूँ	—	—	—

प्रशासक के रूप में

(१) बजट और भवन की मर्यादाओं में मैंने स्कूल के लिए निर्देशन सुविधाओं की व्यवस्था की है	—	—	—
(२) सहकारी प्रतिष्ठान के रूप में मैंने निकाय की और छात्रों की आवश्यकताओं के अनुकूल स्कूल के निर्देशित कार्यक्रम का विकास किया है	—	—	—
(३) निर्देशन का उत्तरदायित्व मैं अपने निकाय के सदस्यों पर व्यक्तिगत योग्यता और अभि-रुचि के आधार पर डालता हूँ	—	—	—
(४) मैं नये कर्मचारियों का चुनाव सावधानी से करता हूँ	—	—	—
(५) मैं निकाय के सदस्यों और छात्रों में निर्देशन-केन्द्रित रवैये को प्रोत्साहन देता हूँ	—	—	—

	हाँ	?	नहीं
(६) मैं अपने निकाय के कर्मचारियों के लिये नौकरी करते हुए निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त करने की व्यवस्था करता हूँ	—	—	—
(७) मैं निर्देशन नीतियों का निर्देशन नहीं करता	—	—	—
(८) मैं छात्रों की व्यक्तिगत समस्या के विषय में निर्देशन कर्मचारियों और अध्यापकों से बात करता हूँ	—	—	—
(९) मैं अभिभावकों के सहयोग को प्रोत्साहन देता हूँ	—	—	—
(१०) मैं सामुदायिक अभिकरणों और स्कूल के मध्य सहयोग को प्रोत्साहन देता हूँ	—	—	—

अध्यापक के रूप में

	हाँ	?	नहीं
(१) मैं अध्ययन की सामग्री को अपने छात्रों की वर्तमान और भावी आवश्यकताओं पर लागू करने का प्रयत्न करता हूँ	—	—	—
(२) मैं विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयत्न करता हूँ	—	—	—
(३) विद्यार्थियों के व्यक्तिगत वृत्तों में उनके सम्बन्ध में जो तथ्य होते हैं उनसे स्वयं को परिचित रखता हूँ	—	—	—
(४) मन्द विद्यार्थियों के साथ धैर्य रखता हूँ और अध्यापन सामग्री को उनकी योग्यता के स्तर के अनुकूल बनाता हूँ	—	—	—
(५) मैं श्रेष्ठ छात्रों को ज्ञान-भण्डार की वृद्धि करने वाली अध्ययन परियोजनाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करने का प्रयत्न करता हूँ	—	—	—
(६) मैं अपने छात्रों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बल देता हूँ	—	—	—
(७) मैं समस्त विद्यार्थियों को "समस्या" नहीं समझता किन्तु समस्यापूर्ण स्थितियों के प्रति सावधान रहता हूँ	—	—	—
(८) मैं स्कूल के निर्देशन कर्मचारियों और साथी अध्यापकों के साथ सहयोगपूर्वक कार्य करता हूँ।	—	—	—
(९) मैं निर्देशन के उत्तरदायित्व सम्भालने को तैयार हूँ	—	—	—

	हाँ	?	नहीं
(१०) मैं अभिभावकों और सामुदायिक समूहों को सहयोग देने के लिए समय और शक्ति लगाने को प्रस्तुत हूँ	—	—	—

निर्देशन कर्मचारी के रूप में

	हाँ	?	नहीं
(१) मैं अपने निश्चित उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए स्वयं को सदा तैयार रखता हूँ	—	—	—
(२) व्यक्तिशः मूल्यांकन सामग्रियों का प्रयोग और उपयोग सही और बुद्धिमानी से करता हूँ	—	—	—
(३) मैं सही वृत्त रखता हूँ और उन्हें ठीक-ठीक प्रकार से फाइल करता हूँ	—	—	—
(४) मैं अपने परामर्शपात्रों को समझने का प्रयत्न करता हूँ	—	—	—
(५) मैं अपने परामर्शपात्रों के प्रति मैत्रीपूर्ण, वस्तुगत और सहकारितापूर्ण रवैया रखता हूँ	—	—	—
(६) मैं अपने परामर्शपात्रों को कार्य की योजनाएँ	—	—	—
बनाकर नहीं देता	—	—	—
(७) मैं स्कूल के और निर्देशन कर्मचारियों के साथ सहयोग करता हूँ	—	—	—
(८) मैं अपने साथियों की गतिविधियों की नकल नहीं करता	—	—	—
(९) मैं निर्देशन परियोजनाओं में अभिभावकों और अन्य सामुदायिक व्यक्तियों या समूहों के साथ मिलकर कार्य करता हूँ	—	—	—
(१०) जहाँ तक सम्भव और वाँछनीय है मैं अपने परामर्शपात्रों को उनके स्कूल छोड़ने के बाद भी अपनी सेवाएँ देता रहता हूँ	—	—	—

निर्देशन कर्मचारी अपने कार्यों का मूल्यांकन करने के लिये सामूहिक सत्रों में भाग लेते हैं। राष्ट्रीय, राजकीय और स्थानीय परामर्शदाताओं की संस्थाएँ निर्देशन कार्यक्रमों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्रेरणाएँ देती हैं। सम्पूर्ण स्कूल समुदाय और व्यक्तिगत स्कूलों के निर्देशन कर्मचारी भी अपने कार्यक्रमों की क्षमताओं, दुर्बलताओं और उपलब्ध सेवाओं का विकास या सुधार करने के लिए सम्मेलन करते हैं।

एस्कैम्बिया काउंटी (फ्लोरिडा) स्कूल निर्देशन संघ छात्र और कर्मचारियों के सम्मेलन करते हैं। ऐसे सम्मेलन में एस्कैम्बिया काउंटी के समस्या से पीड़ित बच्चों

और युवकों की सेवाओं के सुधार के कार्य पर विचार किया गया था। विविध सामूहिक वाद-विवादों का सम्बन्ध, (१) जाँच करने, (२) व्यक्तिगत मूल्यांकन और (३) विशेष सेवाओं से होता है। प्रत्येक समूह के अधिवेशन के लिए रूपरेखा को दृष्टि में रख कर बनाये गये उपयुक्त प्रश्नों के आधार पर सम्मेलन में भाग लेने वाले व्यक्ति उनका विश्लेषण और उनकी सिफारिश करते हैं।

सामूहिक मूल्यांकन का दूसरा उदाहरण आलोचनात्मक अध्ययन है जो छः माध्यमिक स्कूलों में चलता है और जो निर्देशन के निर्देशकों के कर्त्तव्यों के विश्लेषण के रूप में है। निर्देशन सेवाओं के लिए बहुत से अल्पकालीन और दीर्घकालीन मूल्यांकन प्रस्तुत किये जा सकते हैं। कार्य का विस्तृत अध्ययन ('वाशिंगटन काउंटी के स्कूलों में एक साथ मिलकर कार्य करना' नामक परियोजना की शृंखला में से एक) का संचालन प्युपिल पर्सोनेल गाइडेंस सर्विसेज यूनाइटेड स्टेट्स आफिस ऑफ़ ऐजुकेशन के एक सदस्य के सुझाव पर किया गया था और स्कूलों (हैगर्संटाऊन, मेरीलैंड) के सुपरिंटेंडेंट और निर्देशन के निरीक्षक के निर्देशन में छात्रों एवं अध्यापकों, परामर्शदाताओं और आचार्यों द्वारा किया गया।

बाल्टीमोर के स्कूलों में अनुसन्धान और मूल्यांकन को निर्देशन और नौकरी दिलाने के कार्यक्रम का महत्त्वपूर्ण पक्ष समझा जाता है। अनुसंधान परियोजना का विवरण कहता है कि :

१. वे निर्देशन और नौकरी के श्रेष्ठ कार्यक्रम के निर्माण में सहायता देते हैं जिसका उद्देश्य छात्र की अधिक अच्छी सेवा करना है।
२. इनका उपयोग स्कूलों को पाठ्यक्रम के परिवर्तन द्वारा व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार बनाना है।

अनुसंधान कार्य तीन प्रकार का है :

१. स्कूलों में छात्रों के ऐसे विशेष समूहों का अध्ययन
    (क) जिनकी आवश्यकताओं की पूर्ति स्कूल की वर्त्तमान पाठ्य-सामग्री द्वारा नहीं होती
    (ख) परीक्षाधीन विद्यार्थी
    (ग) असफल होने वाले छात्र
    (घ) प्रतिभावान विद्यार्थी
    (ङ) वे विद्यार्थी जो स्कूल की अन्य इकाइयों को स्थानान्तरित या उत्तीर्ण कर दिये जाते हैं।
२. समुदाय में शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों का अध्ययन
    (क) विशिष्ट व्यवसायों और क्षेत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त करना। "आपका भविष्य काल" शीर्षक पुस्तकमाला में २६ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। देखिये पृ० १८, निर्देशन सलाहकार समिति
    (ख) विशेष उद्योगों में अवसरों का निश्चय करना

(ग) जो संस्थाएँ सामान्य शिक्षा देती हैं या विशेष प्रकार का प्रशिक्षण देती हैं उनके विषय में तथ्य एकत्रित करना ।

३. स्कूल के उत्पादनों—स्नातकों और स्कूल छोड़ने वालों के परिणाम का अध्ययन

(क) उस सीमा का मूल्यांकन करना जहाँ तक स्कूल में प्राप्त प्रशिक्षण स्नातकों को उच्चतर अध्ययन की संस्थाओं अथवा विशेष व्यावसायिक प्रशिक्षण देने वाले स्कूलों के योग्य बनाता है ।

(ख) स्कूल में जो प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है वह बच्चों को समाज में कहाँ तक योग्य बनाता है, इसका मूल्यांकन करना ।

(ग) प्राप्त नौकरी के प्रशिक्षण के विविध प्रकारों और स्तरों के सम्बन्धों का और उन्नति के वेतनों और अवसरों का विश्लेषण करना ।

(घ) उस प्रकार के प्रशिक्षणों के सम्बन्ध में तथ्य एकत्रित करना जो स्कूल नहीं दे रहे हैं किन्तु छात्रों की अभिरुचियों, रुझानों और योग्यताओं के लिए जिनके विकास और उपयोग की आवश्यकता है और इस प्रकार उन्हें समाज में स्थित व्यावसायिक अवसरों से तत्काल तालमेल करने में सहायता देना ।*

बाल्टीमोर स्कूल प्रणाली के निर्देशन कर्मचारियों को निर्देशन कार्यों के मूल्यांकन की कुछ प्रचलित पद्धतियों के मूल के सम्बन्ध में संदेह है, विशेषतः जबकि "निर्देशन का ऐसा कार्यक्रम जो प्राथमिक स्कूलों में प्रारम्भ होता है जूनियर और सीनियर स्कूलों में चलता है और समाज में वयस्कों तथा स्कूल में न पढ़ने वाले नवयुवकों की सेवा करता है," सफलता से चलाने का प्रयत्न किया जाता है ।

विद्यार्थियों पर कुछ निर्देशन सेवाओं के विविध परिणामों और प्रभावों को देखकर उसकी प्रभविष्णुता का निश्चय करने की पद्धति का श्रेय, कम से कम कुछ अंशों में निर्देशन के कार्यक्रम पर है । यह मूल्यांकन करने का असन्तोषजनक तरीका प्रतीत होता है । यद्यपि इन परिणामों पर निर्देशन कार्यक्रम के उद्देश्यों और व्यवहारों को ध्यान में रखकर विचार किया जाता है फिर भी निर्देशन के अतिरिक्त ऐसे बहुत से अज्ञात तत्त्व हैं जो इस पद्धति को एक विश्वसनीय मूल्यांकन प्रविधि बनाने के लिए इन परिणामों पर प्रभाव डालते हैं ।

नियन्त्रण समूह का उपयोग करने वाला प्रयोगात्मक अनुसन्धान ही कुछ निर्देशन सेवाओं की प्रभविष्णुता का मूल्यांकन करने और निर्देशन कार्यों में सुधार तथा विकास करने की सच्ची प्रणाली प्रतीत होती है । ऐसा प्रतीत होगा कि इन कार्यों में सुधार करने के लिए अनुसन्धान करने का दायित्व कालेजों और विश्वविद्यालयों का होना चाहिए जहाँ परामर्शदाताओं को प्रशिक्षण दिया जाता है, किसी कार्य की प्रभविष्णुता के मूल्यांकन के अनुसंधान का उत्तरदायित्व उस स्कूल या शैक्षिक प्रणाली पर होना चाहिए जो इस कार्यक्रम की व्यवस्था करती है । इस

* The Program of Guidance & Placement, बाल्टीमोर पब्लिक स्कूलों के सौजन्य से ।

विश्वास के आधार पर हमने अनुसंधान ब्यूरो से अनुरोध किया है कि वह प्राथमिक स्कूलों में निर्देशन के पूरे समय के कार्यक्रम की प्रभविष्णता के मूल्यांकन के लिए प्रयोगात्मक स्थिति का निर्माण करने में हमारी सहायता करे।*

विविध मूल्यांकन प्रविधियों के सम्बन्ध में बाल्टीमोर के निर्देशन कर्मचारियों का जो कुछ-कुछ सन्देहपूर्ण रवैया है उसके प्रति लेखकों की सहानुभूति है। प्रस्तुत की गई सेवाओं, निर्देशन कर्मचारियों की प्रशिक्षण पृष्ठभूमि के आकार, परामर्श स्थल और निर्देशन उपकरण की पर्याप्तता, प्रयोग किये गए परीक्षण उपकरण, परामर्श के लिए किये गए साक्षात्कारों की संख्या और उन छात्रों के आलेख जो अध्ययन की उच्च संस्थाओं में भरती किये गए हैं अथवा नौकरी पर लगाए गए हैं, इन सबके सम्बन्ध में दिए जाने वाले आकर्षक तथ्यों के अध्ययन के फलस्वरूप अवैध अथवा भ्रामक परिणाम निकल सकते हैं। ये तत्त्व महत्त्वपूर्ण हैं, इस पर सन्देह नहीं किया जा सकता किन्तु जिन लोगों ने इनकी उपलब्धि से लाभ उठाया है, उनके जीवन में इनका कितना महत्त्व है, इसका निर्णय करना कठिन है। हमारे जटिल समाज में निहित बहुत से प्रेरक तत्त्वों में से कोई भी एक तत्त्व व्यक्ति के रवैयों और कार्यों पर स्थायी किन्तु शक्तिशाली प्रभाव डाल सकता है। स्कूल के संगठित निर्देशन इन तथ्यों में से केवल एक का प्रतिनिधित्व करते हैं। चाहे इस बात को स्वयं व्यक्ति द्वारा न समझा जाए कि नवयुवक के समस्त अनुभवों में उसके स्वभावजन्य व्यवहार के विकास में स्कूल के निर्देशन का अत्यन्त प्रभाव पड़ा है, उसके परामर्शदाता भी निश्चित रूप से इस बात को नहीं मानते। इसका यह अर्थ नहीं है कि स्कूल की निर्देशन सेवाओं का कोई मूल्य नहीं है, किन्तु वह इस बात पर बल देता है कि निर्देशन कार्यक्रम के मूल्यांकन के लिए किये गए अध्ययन के परिणामों की वैधता स्वीकार करते समय सावधानी की आवश्यकता है।

निर्देशन में सम्भावित प्रवृत्तियाँ

प्रथम अध्याय में हमने उस खतरे की ओर संकेत किया है जो तालमेल की समस्त बुराइयों के लिए 'निर्देशन' को रामबाण के रूप में प्रयोग करने में निहित है। इस क्षेत्र के गम्भीर विचारक और कार्यकर्त्ता उस समय अव्यवस्थित हो उठते हैं जब व्यावसायिक या साधारण व्यक्ति, बच्चे या बड़े आदमी का रवैया या व्यवहार असाधारण प्रतीत होता है। उसके लिए वे सहसा कह उठते हैं, "उसे निर्देशन की आवश्यकता है।" इतना ही परेशान करने वाला उन लोगों का मत है जिनमें माता-पिता, शिक्षक और साधारण नेता सम्मिलित हैं और जो यह कहते हैं कि आजकल के निर्देशन कार्य छिछले और सम्भवतः हानिकारक हैं। इसलिए हम इन विरोधी भावनाओं के साथ निर्देशन कार्यक्रमों और कार्यों के सम्भावित भविष्य की भविष्यवाणी करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

* The Program of Guidance & Placement, बाल्टीमोर पब्लिक स्कूलों के सौजन्य से।

भविष्यवाणी के कुछ चालू आधार निर्देशन सेवाओं को आगे बढ़ाने की दिशा में किये जाने वाले प्रयत्नों का एक अत्यन्त आशाजनक संकेत अनुभवी निर्देशन कार्यकर्त्ताओं और परामर्शदाताओं द्वारा इंगित रवैया है, जिसे वे पूरा करने का यत्न कर रहे हैं। उसमें यद्यपि उनका विश्वास है तो भी वे सन्तुष्ट या प्रसन्न नहीं हैं। वे अपने परामर्श की कमियों को समझते हैं और उन्हें स्वीकार करने को तैयार हैं; वे अपनी निजी कार्य-विधियों में सुधार करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वे किसी भी ऐसी योजना या परियोजना में भाग ले रहे हैं जिसका उद्देश्य निर्देशन के मौलिक लक्ष्यों को क्रियान्वित करना है।

जो अधिकांश स्त्री-पुरुष आजकल निर्देशन आन्दोलन के नेता हैं उनकी कठिनाई यह है कि उन्होंने कालेज के छात्र के रूप में वैसा कोई निर्देशन प्राप्त नहीं किया जैसा कि आज आवश्यक समझा जा रहा है। इसलिए उन्हें कोई ऐसी पृष्ठ-भूमि प्राप्त नहीं है जिसके प्रकाश में वे अपने वर्तमान प्रयत्नों के महत्त्वों का मूल्यांकन कर सकें, वे केवल उनके प्रति अध्यापकों के रवैये के केवल उस प्रभाव को स्मरण कर सकते हैं जो उनके जीवन पर पड़ा है अथवा उनके प्रति अध्यापकों द्वारा की गई टिप्पणी को स्मरण कर सकते हैं।

सौभाग्य से सफल परामर्शदाताओं में अच्छी विनोदवृत्ति होती है जिसके द्वारा वे अपनी कमियों अथवा परामर्शपात्रों के रवैये को समझ सकते हैं। वोकेशनल गाइडेंस क्वार्टरली के ताजा अंक में, ओल्ड कौंसलोसोफर ने निम्नलिखित "बुद्धि की बातें" लिखी हैं।*

किसी बच्चे से यह आशा करना कि वह अपने पिता का अनुकरण करेगा उसे अन्य बच्चों से कम-से-कम २५ वर्ष पीछे पहुँचाना है।

अपने अनुभवों और वर्तमान स्थिति के विषय में बच्चे की अपनी निजी कल्पना (चाहे वह कितनी ही गलत हो) उसके व्यवहार का निश्चय परामर्शदाता के मूल्यांकन (चाहे वह कितना ही सही हो) की अपेक्षा अधिक उचित रूप में करती है।

परामर्शदाता को वास्तविक लघुता को दूर करने के लिए अपना काम उतनी ही योग्यता से करना चाहिए जितनी योग्यता से वह लघुता की भावना दूर करेगा। शैक्षिक अथवा व्यावसायिक दरवाजों को बन्द कर देना नये और उपयुक्त दरवाजों को खोलने की अपेक्षा बहुत सरल है।

परामर्श कार्य में बिना औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त किये भी कुछ अध्यापक समस्यापीड़ित नवयुवकों की बात सहानुभूतिपूर्वक सुनते हैं; यही मुख्य बात है जो प्रशिक्षित परामर्शदाता करते हैं।

असफलता के पश्चात् परामर्श देने की अपेक्षा संकट से पूर्व परामर्श देना समस्त सम्बन्धित सम्मानित व्यक्तियों के लिए उपयोगी है।

कभी-कभी परामर्शदाता जो करते हैं उससे भावी असफलता का आघात हल्का हो जाता है।

* अनुमति से उद्धृत।

जिन (अपने निजी) मापदण्डों से अधिकांश वयस्क व्यक्ति विद्यार्थी के व्यवहार का निर्णय करते हैं वे समय से कम-से कम २५ वर्ष (एक पीढ़ी) पीछे हैं।

हमारे यहाँ नवयुवकों के लिए उदाहरण कम आलोचक ज्यादा हैं।

जो परामर्शदाता छात्रों के साक्षात्कार में बहुत अधिक सुनते हैं उनसे दस गुने व्यक्ति हैं जो बहुत अधिक बात करते हैं।

परामर्श की प्रविधियाँ परामर्शदाता की अपनी निजी कमियों को नहीं छिपा सकतीं।

समस्याओं के लिए सही उत्तर लेकर आना कहानी का एक भाग है। जीवन में समस्याओं और समस्याओं का होना दोनों से तालमेल आवश्यक है। नवयुवक सामूहिक रूप में व्यवहार की अपनी नवयुवकोचित संहिता पर कम से कम उसी प्रकार स्थिर रहते हैं जिस प्रकार कि वयस्क सामूहिक रूप में व्यवहार की अपनी संहिता पर।

अभिभावक, अध्यापक और परामर्शदाता तभी वास्तव में सफल होते हैं जबकि उनकी आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

दूसरी अच्छी प्रवृत्ति उन अधिकाधिक अभिभावकों का रवैया है जो स्कूल के लोगों के साथ काम करने में लग जाते हैं। करदाता और सरकारी कर्मचारी भी विस्तृत निर्देशन सेवाओं के दायित्व को समझने लगे हैं।

१९५८ के राष्ट्रीय प्रतिरक्षा शिक्षा अधिनियम की एक प्रमुख धारा निर्देशन, परामर्श कार्य और परीक्षण के सम्बन्ध में है। जब यह बिल पास हुआ था उस समय राष्ट्र के हाई स्कूलों के ८८ लाख छात्रों के लिए ११,००० पूर्ण परामर्शदाता थे—साधारणतया स्वीकृत एक के अनुपात में तीन सौ के मापदंड की तुलना में एक के अनुपात में आठ सौ। अमेरिका के अधिकांश हाई स्कूलों में परामर्शदाता अथवा निर्देशन अधिकारी नहीं थे।

बिल के इस भाग का उद्देश्य अमेरिकन माध्यमिक स्कूलों में ऐसे परामर्शदाताओं और निर्देशन अधिकारियों की संख्या में वृद्धि करना है ताकि विद्यार्थी को अध्ययन की ऐसी पाठ्य-विधियों के विषय में परामर्श मिल सके जो उसकी योग्यताओं, रुझानों और कुशलताओं के अनुकूल हों और ताकि अधिक योग्य छात्रों को कालेज के लिए तैयारी करने को प्रोत्साहित किया जा सके।

प्रत्येक आगामी चार वर्षों के लिए कांग्रेस ने डेढ़ करोड़ डालर के संघीय व्यय की अनुमति दी जो धनराशि विविध राज्यों के शैक्षिक अभिकरणों को दे दी जाती है। इस धनराशि का निश्चय राष्ट्र के स्कूल की आयु के छात्रों (आयु ५ से १७ वर्ष) के अनुपात से किया जाता है। किन्तु इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले किसी भी राज्य को किसी एक वर्ष में २०,००० डालर से कम नहीं मिलेंगे। और अब तक वास्तव में ५४,००,००० डालर बाँटे जा चुके हैं।

आगामी तीस जून को समाप्त होने वाले आर्थिक वर्ष के पश्चात् राज्य संघीय अनुदान के बराबर धनराशि देंगे। पहले वर्ष के लिए राज्य को कोई धन देने की आवश्यकता नहीं है।

सरकार द्वारा चालित कार्यक्रम में भाग लेने के लिए राज्य के शिक्षा विभागों को परीक्षाओं, निर्देशन और परामर्श कार्य की स्वीकार्य योजना लेकर आना चाहिए, परीक्षण से सम्बन्धित धाराओं में कानून कहता है कि कार्यक्रम सार्वजनिक माध्यमिक स्कूलों के लिए होना चाहिए "और यदि कानून अधिकार देता हो तो माध्यमिक स्कूलों के लिए", किन्तु निर्देशन और परामर्श कार्य से सम्बन्धित धारा में कानून केवल माध्यमिक स्कूलों की चर्चा करता है।

बिल के दूसरे भाग में अल्पकालीन नियमित सत्र की संस्था की स्थापना का आदेश दिया गया है ताकि माध्यमिक स्कूलों में विद्यार्थियों के परामर्श और निर्देशन में लगे कर्मचारियों की योग्यताओं अथवा परामर्श या निर्देशन के लिए तैयारी करने वाले माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के प्रशिक्षण में सुधार किया जा सके। यह बिल चालू वर्ष में ६२$\frac{1}{2}$ लाख डालर खर्च करने की और उसके पश्चात् के तीन वर्षों में प्रत्येक में ७२$\frac{1}{2}$ लाख डालर व्यय करने की अनुमति देता है। इन संस्थाओं की स्थापना शिक्षा आयुक्त और उच्चतर शिक्षा की संस्थाओं के मध्य अनुबंध करके होगी। कोई भी व्यक्ति जो सार्वजनिक माध्यमिक स्कूल में परामर्श और निर्देशन का कार्य करता है या उसके लिए तैयारी करता है और ऐसी किसी संस्था में अध्ययन करता है तो उसे अध्ययन की अवधि में ७५ डालर प्रति सप्ताह छात्रवृत्ति मिलेगी और उसके प्रत्येक आश्रित को १५ डालर प्रति सप्ताह दिये जाएँगे।*

निर्देशन की मौलिक आवश्यकताएँ राष्ट्रीय, राजकीय और स्थानीय सामाजिक स्तरों पर इसके लिए जो बजट में अधिकाधिक व्यवस्था की जा रही है वह इस देशव्यापी बात का द्योतक है कि बुद्धिमानी और वस्तुगत रूप से समझा गया निर्देशन शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है जिसका उद्देश्य अधिक से अधिक जटिल होने वाली हमारी विश्व सभ्यता में उत्तरदायी नागरिकता का निर्माण करना है। निर्णय चाहने वाली दैनिक स्थितियों का सामना करने और बड़े-बड़े संकटों से अपने जीवन का तालमेल करने के लिए लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता की आवश्यकता है। यह विश्वास बढ़ता जा रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति को उन निर्देशन सेवाओं को उपलब्ध करने के अवसर मिलने चाहिए जो उसके आत्म-निश्चय, नियोजन और पूर्ति की क्षमता को बढ़ा सकें।

बहुत-सी बातों ने मिलकर इस बात को मान्यता दी है कि बुद्धिमत्तापूर्ण और प्रभावशाली निर्देशन प्रारम्भिक शैशवकाल से वृद्धावस्था तक चलते रहना चाहिए। इन बातों में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जा सकता है :

१. मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के परिणामों से ज्ञात होता है कि किसी भी व्यक्ति के जीवन के प्रारम्भिक वर्ष अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं और युवावस्था में उपस्थित होने वाली बहुत-सी समस्याओं की जड़ें उसी व्यवहार में

* Education U. S. A. एन० ई० ए० की राष्ट्रीय स्कूल सार्वजनिक सम्पर्क संस्था, सितम्बर ४, १९५८, पृष्ठ ५। अनुमति से उद्धृत।

निहित होती हैं जिसका निर्माण इन वर्षों में हो चुका होता है। अतएव बच्चे और बच्चे के अभिभावकों दोनों को निर्देशन की आवश्यकता है।

२. प्रथम विश्वयुद्ध ने बहुत से सैनिकों में उत्पन्न तालमेल की अनेक समस्याओं से हमें परिचित कराया है। ये समस्याएँ सैनिक जीवन में ही नहीं रहीं अपितु नागरिक जीवन में लौट आने पर भी चलती रहीं। द्वितीय विश्वयुद्ध की अवधि में और उसके पश्चात् उन सब व्यक्तियों के लिए निर्देशन सेवाओं के सावधानी से निर्मित कार्यक्रम प्रस्तुत करने के निश्चित प्रयत्न किये गये जो युद्ध के प्रबंध से सम्बन्धित थे। ये सेवाएँ हमारी नागरिक जनता के लिए संशोधित रूप में अब भी चालू हैं।

३. आर्थिक अवमूल्यन अथवा मुद्रास्फीति के युगों में अनुभवी परामर्शदाताओं की सहायता के बिना जीवन की असाधारण स्थितियों का मुकाबला करना व्यक्तियों के लिए कठिन हो सकता है।

४. जो विवाह केवल रोमांटिक प्रेम पर आधारित होते हैं और जिनके पीछे शारीरिक आकर्षण, सम्मान, सराहना और माता-पिता की स्वीकृति नहीं होती वे वैवाहिक तालमेल की ऐसी समस्याएँ उपस्थित कर सकते हैं जिनका समाधान, उपयुक्त सहायता उपलब्ध न होने पर विवाह-विच्छेद के न्यायालयों में ही हो सकता है।

५. सामुदायिक कार्य के समस्त चरणों में भाग लेने के लिए बच्चे को दिए जाने वाले आधुनिक प्रोत्साहन ने माता-पिता के लिए बच्चों का पालन-पोषण करना बहुत कठिन बना दिया है, उस समय यह स्थिति नहीं थी जबकि बच्चे की बढ़ती हुई जीवन रुचियों का केन्द्र घर को समझा जाता था।

६. धर्म के प्रति परिवर्तनशील रवैयों और धार्मिक संगठनों से गठबन्धनों ने समस्त आयु के कुछ व्यक्तियों को उस शक्ति से वंचित कर दिया है जो आध्यात्मिक मूल्यों के मूल में नहीं थी। इससे वे अपनी जीवन-नौका को खेने में निस्सहाय रह जाते हैं।

७. जीवन के वृद्धिशील क्षेत्र में जिसका हम अनुभव कर रहे हैं वृद्धावस्था से और सक्रिय व्यवसायों से अवकाश लेने से, परिवार के कनिष्ठ सदस्यों के सम्बन्धों से और सामाजिक तथा मनोरंजनात्मक अवसरों से सम्बन्धित तालमेल की समस्याएँ निहित है।

८. बीसवीं शताब्दी के द्वितीय अर्द्धांश में संसार और जीवन की परिवर्तन-शील कल्पनाओं में तीव्र गति से विकास हो रहा है। युवा अथवा वृद्ध कोई भी अपने रवैयों और व्यवहार पर पड़ने वाले 'शीत युद्ध', संसार के पारस्परिक सम्बन्ध अथवा संघर्ष, अणुशक्ति के प्रयोग और अंतरिक्ष यात्रा के प्रयत्नों के प्रभाव से नहीं बच सकता। उपग्रहों से संभावित संचार के सम्बन्ध में प्रकाशित बहुत-सी अर्द्ध-वैज्ञानिक और लोकहित की पुस्तकों तथा

पत्रिकाओं का प्रभाव उन्हें पढ़ने वाले युवक और प्रौढ़ व्यक्तियों पर बहुत अधिक बढ़ रहा है। कल्पना उद्वेलित हो जाती है; पृथ्वी की भावी स्थिति के विषय में आशंकाएँ उत्पन्न होती हैं। कुछ नवयुवक और वयस्क निराशाओं से बचने के लिए वैज्ञानिक कल्पनाओं का उपयोग कर रहे हैं, बच्चे 'अन्तरिक्ष यात्री' के रूप में तैयारी कर रहे हैं। वर्तमान विश्व की परिस्थितियों में भाग वाले व्यक्तियों और संभावित भावी परिवर्तनों पर इसका प्रभाव अब भी विचारणीय है।

निर्देशन का भविष्य निर्देशन को जीवन के विविध कार्यों और सम्बन्धों के प्रति अधिकाधिक ठोस और व्यावहारिक विधि के रूप में ग्रहण किया जाने लगा है।

व्यावसायिक निर्देशन ज्यों-ज्यों समय निकलता जाएगा स्कूल के अन्दर और स्कूल के बाहर के व्यावसायिक निर्देशन के कर्मचारी श्रमिकों और कार्यों को एक दूसरे की तुलना में लाने की अपनी सुविधाओं और प्रविधियों में सुधार करेंगे। वर्तमान प्रतिष्ठा के मूल्य पर ध्यान दिये बिना समाज के मूल्य और रचनात्मक व्यावसायिक कार्यों के महत्त्व के अधिकाधिक ज्ञान के साथ समस्त व्यावसायिक क्षेत्रों में अधिक उपयुक्त वेतन-क्रम और अधिक स्वास्थ्यप्रद कार्य की स्थितियों का विकास होना चाहिए। अतएव नवयुवक अपने माता-पिता की स्वीकृति से उन व्यवसायों में प्रवेश करने के लिए निर्देशन ग्रहण करने को प्रस्तुत हो जायेंगे जिनके लिए वे व्यक्तिगत रूप से उपयुक्त हैं।

निर्देशन सेवाओं का विस्तार सम्भवतः भविष्य में व्यक्ति के लिए प्रारम्भिक शैशवकाल से वयस्क अवस्था तक चलने वाले निर्देशन के मूल्य को अधिक मान्यता प्राप्त होगी। व्यक्तित्व के विश्लेषण और मूल्यांकन में अधिक सुन्दर और वैध प्रविधियों का विकास होगा। इसी प्रकार सामाजिक स्थितियों, आवश्यकताओं और माँगों का अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण एवं सही ज्ञान होना चाहिए। अतएव उन व्यक्तियों के निर्देशन में हमें अधिक प्रभावपूर्ण होना चाहिए जिनकी क्षमताओं और रुचियों से हम भलीभाँति परिचित हैं ताकि सांसारिक मामलों में उनके प्रति अधिक अच्छा सवन्वय हो सके और जिनके प्रति उनको समन्वय करना है उनकी लगभग निश्चित जानकारी हो। इस विषय में अधिक स्वस्थ और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध वाले व्यक्ति और समाज को एक स्थान पर लाने के लिए पाठ्यक्रम का पुनर्गठन किया जाएगा। वाँछनीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए स्कूल के लोगों का सामान्यतः और निर्देशन कर्मचारियों का मुख्यतः उत्तरदायित्व होगा कि वे अभिभावकों और समुदाय के साथ अधिक व्यक्तिगत और रचनात्मक कार्यकारी सम्बन्ध की स्थापना करें।

माता-पिता और स्कूल व्यक्तिगत रूप से अथवा अभिभावक-अध्यापक संघों के रूप में माता-पिता उन स्कूलों से परिचित हो जाएँगे जहाँ उनके बच्चे पढ़ते हैं और प्रशासकों, अध्यापकों तथा परामर्शदाताओं के घनिष्ठ सहयोग से मिलकर कार्य करेंगे। इस क्षेत्र में इसका सूत्रपात हो चुका है। कुछ प्राथमिक स्कूलों में बच्चों के अभिभावक किसी विशेष समूह में श्रेणी समूह बना लेते हैं। वे अपने बच्चों की प्रगति को ध्यान

से देखते हैं, कक्षा के अध्यापकों से और निकाय के उन सदस्यों से जो उनके बच्चों में रुचि लेते हैं भलीभाँति परिचित हो जाते हैं, कक्षा के अधिवेशनों में, कक्षा में उनका स्वागत होता है और वे कक्षाओं की परियोजनाओं के निर्माण में व्यावहारिक सहयोग देते हैं। दुर्भाग्य से कुछ दुर्लभ अवसरों को छोड़कर प्रारम्भिक स्तर के ऊपर के स्कूल में अभिभावकों और स्कूल कर्मचारियों के बीच यह घनिष्ठ सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है।

स्कूल और समुदाय स्कूल और समुदाय में और अधिक सहयोग होगा जब नवयुवकों को सम्मानित और प्रभावशाली सदस्यों के रूप में स्थान लेने के लिए प्रेरित किया जाएगा। उस समय स्कूल अधिक समुदाय-केन्द्रित हो जाएँगे। स्कूल के निर्देशन कर्मचारियों और सामुदायिक निर्देशन अभिकरणों में व्यक्तिगत और सामान्य कल्याण के विषय में उनके पारस्परिक उत्तरदायित्वों पर और अधिक समझौता हो जाएगा ताकि प्रयत्नों की न्यूनतम पुनरावृत्ति हो। समुदाय स्कूल में आ जाएगा और स्कूल समुदाय में समा जाएगा। नवयुवकों को उन स्कूलों और सामुदायिक परियोजनाओं में भाग लेने के द्वारा साधन स्रोत, सहकारिता और आत्म-निर्भरता के विकास के अधिक अवसर दिये जाएँगे जो रचनात्मक परिणामों को प्राप्त करने के लिए वास्तविक और उपयोगी हैं।

निर्देशन विधियाँ विकासकालीन वर्षों में जीवन की बहुत अधिक और परिवर्तनशील शर्तों और स्थितियों की बहुत अधिक विविधताओं के प्रतिकूल प्रभाव संभवतः बच्चे और नवयुवक पर पड़ते रहेंगे। इसलिए संभवतः यह भविष्यवाणी की जा सकती है कि निर्देशन कर्मचारियों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य भ्रमित व गलत दीक्षा प्राप्त और सम्भवतः भयभीत नवयुवकों या वयस्कों को, उनके कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों की अधिक यथार्थ विधि और उच्च आदर्शों के प्रति दृढ़ निष्ठा का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता देना होगा। निर्देशन के मोटे रूप से वर्णित इस कार्य में साधारण सफलता प्राप्त करने के हेतु भूतकाल के परामर्शदाता की अपेक्षा भविष्य के परामर्शदाता को भावनात्मक स्थायित्व, वर्तमान स्थिति के विषय में विस्तृत और गहन जानकारी तथा ज्ञान, भावी विकासों में आशापूर्ण किन्तु वस्तुगत रुचि, विस्तृत दृष्टि और उन नवीन तथा विविध समस्याओं के विषय में, विशेपतया जो नवयुवकों के सम्बन्ध में आती हैं, तीक्ष्ण सूक्ष्मदर्शिता रखने की आवश्यकता होगी।

हमें (१) निर्देशन सेवाओं के गठन और संचालन (२) एक स्कूल स्तर से दूसरे स्कूल स्तर तक निर्देशन के एकीकरण, (३) किसी शैक्षिक संस्था की अपेक्षाओं में दीक्षा, (४) स्कूल के छात्रों के सम्बन्ध में आवश्यक तत्व प्राप्त करने की विधियों के नियमीकरण और उन्हें समुचित जानकारी देने, और (५) प्रशासन को निर्देशन कर्मचारियों, अध्यापकों और स्कूल के बाहर के अभिकरणों से सम्बन्धित विविध विचार-धाराओं के एकीकरण की अब इतनी आवश्यकता है जितनी कि पहले कभी नहीं थी। हमें इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि निर्देशन के इन छिछले परिणामों से ही सरलता से संतुष्ट न हो जाएँ। हमें निर्देशन को लचीले, झुकने वाले बाँस जैसा अथवा शैक्षिक तमाशा नहीं बनाना चाहिए। विस्तृत संगठन, उलझे हुए आलेख, जटिल

प्रविधियाँ, महँगे उपकरण और शैक्षिक दृष्टि से प्रशिक्षित परामर्शदाताओं का समुदाय जो निर्देशन में डाक्टरेट प्राप्त करने की शेखी मारतेहैं, अनिवार्यतः सहयोग की भावना का परिचय नहीं देते। जब तक हमारे देश में और उसके बाहर प्रत्येक व्यक्ति अपने उस रवैये और व्यवहार का प्रदर्शन नहीं करता जो वह दूसरों के द्वारा अपने प्रति कराना चाहता है तब तक निर्देशन परामर्शदाता को चाहे वह कितना ही सच्चा हो, विनाशकारी शक्तियों का सामना करना पड़ेगा जिन पर विजय प्राप्त करने की साधारणतः वह आशा नहीं कर सकता।

जब हम निर्देशन करते हैं तव क्या हम आत्म-नियन्त्रण और अपने स्वयं के व्यवहार तथा दूसरों के कल्याण के लिए व्यक्तिगत ज्ञान का विकास कर रहे हैं? क्या हम जाने या अनजाने स्वार्थ और अपने निजी अधिकारों, अभिलाषाओं और संतोषों पर बहुत अधिक ध्यान दे रहे हैं? ये वे प्रश्न हैं जिनका उत्तर उस प्रत्येक व्यक्ति को को साफ-साफ देना चाहिए जो स्वस्थ और संतोषजनक व्यवहार प्राप्त कर रहा है अथवा दूसरों को प्राप्त करने में सहायता देने की आशा करता है।

यह सम्भव है कि हममें से प्रत्येक को जीवन में कभी न कभी सहायता की आवश्यकता है किन्तु स्वयं के अतिरिक्त और कोई व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से संतोष-जनक व सामाजिक दृष्टि से वाँछनीय तालमेल नहीं कर सकता। हमें समझ लेना चाहिए कि समाज व्यक्तियों से बना है जिनमें से प्रत्येक व्यक्ति वर्तमान स्थितियों का शिकार हो सकता है और उन स्थितियों का कारण हो सकता है। हमें व्यक्ति-गत और सामूहिक रूप से, कर्म और वचन से, ईमानदारी, सचाई, परिश्रम और व्यक्तिगत नैतिकता के आदर्शों का अनुसरण करना चाहिये, अन्यथा निर्देशन सेवाएँ, चाहे वे योग्य, सुशिक्षित और ईमानदार परामर्शदाताओं द्वारा की जाएँ, जटिल और भ्रमित संसार में अच्छा व्यक्तिगत तालमेल करने में सहायता देने के प्रयत्न में केवल धरातल को खुरचने के अतिरिक्त और कुछ न कर सकेंगी।

परिशिष्ट

प्रमाण-पत्र की अपेक्षाएँ

कैलिफोर्निया*

धारा ३४ : सामान्य विद्यार्थी कर्मचारी सेवा प्रमाण-पत्र

३८० परिभाषा ऐजुकेशन कोड सैक्शन १२१४६, अध्याय १५५२, १६५३ के लिखित कानून में प्रयुक्त 'छात्र परामर्श कार्य' से तात्पर्य उन कार्यों से है जो अध्यापक द्वारा सामान्यत: किये जाने वाले परामर्शपूर्ण कर्त्तव्यों व कार्यो के अतिरिक्त निर्देशन कार्यक्रम में निहित होते हैं । इस क्षेत्र में पदासीन व्यक्ति का मुख्य उत्तरदायित्व इन विषयों में विशेष सेवा प्रदान करना है : (क) छात्र निर्देशन, (ख) निर्देशन की समस्याओं पर अध्यापकों और स्कूल के अन्य कर्मचारियों के लिये सलाहकार के रूप में, (ग) बच्चे के संदर्भ में अभिभावकों से स्कूल की व्याख्या करने वाले परामर्शदाता के रूप में; स्कूल, समुदाय तथा सामुदायिक अभिकरणों में सम्पर्ककर्त्ता के रूप में ।

३८१, आवेदन-पत्र सामान्य छात्र कर्मचारी सेवा प्रमाण-पत्र के किये आवेदन पत्र में वह विधि अपनायी जाएगी जो आवेदन-पत्र (धारा २०१) के लिए निर्धारित है और जिसमें निम्नलिखित अपेक्षाओं सहित कार्यक्रम पूरा कर लिया होगा ।

(क) राज्य-शिक्षा परिषद् द्वारा प्रमाण-पत्र देने के लिए स्वीकृत संस्था द्वारा दी गई स्नातक की उपाधि ।

(ख) दो वर्ष तक सफल अध्यापन का अनुभव अथवा एक वर्ष का सफल अध्यापन अनुभव और स्कूल की आयु के छात्रों के साथ कार्य, कर्मचारियों के साथ एक वर्ष का निरीक्षित अनुभव अथवा स्कूल के सामाजिक कार्य, स्कूल में मानसिक प्रक्रियाओं की अवधि अथवा स्कूल मनोविज्ञान में निरीक्षित क्षेत्र का दो वर्ष का अनुभव जिसमें कम से कम एक वर्ष का अनुभव सार्वजनिक स्कूल में होना चाहिए ।

* आर० ई० ब्रूस्टर, Guidance Workers Certification Requirements, बुलेटिन १९५७, संख्या २२, स्वास्थ्य शिक्षा और कल्याण का यू० एस० विभाग, पष्ठ ३-५ ।

(ग) ३० छमाही घंटों के उच्च विभाग के स्नातकोत्तर कार्य, अथवा स्नातक स्तर के कार्य का एक वर्ष अथवा स्नातकोत्तर कार्य का एक वर्ष जिसे प्रमाण-पत्र देने के लिए राज्य शिक्षा परिषद् द्वारा स्वीकृत संस्था ने प्रमाणित किया हो कि वह कार्य स्नातकोत्तर वर्ष की संस्था सम्बन्धी अपेक्षाओं की पूर्ति करता है। स्नातकीय अध्ययन का यह कार्यक्रम छात्र कर्मचारियों के व्यवहारों और विधियों में निपुणता का विकास करने के लिए होगा। इस कार्यक्रम में पाठ्य-विधि का कार्य और क्षेत्र का अनुभव होगा जिसके अनुसार उन्हें छात्र कर्मचारी सेवाओं की संगठित गतिविधियों में भाग लेना होगा। उसमें निम्नलिखित सामान्य और विशिष्ट क्षेत्र सम्मिलित होंगे :

१. सामान्य क्षेत्र में निम्नलिखित में से प्रत्येक का समावेश होगा :
   - (क) परामर्श विधियाँ और प्रविधियाँ, जिनमें साक्षात्कार भी सम्मिलित है
   - (ख) मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा
   - (ग) विचाराधीन मामले का अध्ययन और उस मामले में होने वाले सम्मेलन की प्रविधियाँ
   - (घ) अपवादस्वरूप बच्चों का मनोविज्ञान और उनकी शिक्षा
   - (ङ) परिवार, छात्र, अध्यापक की क्षमताएँ और छात्रों के पारस्परिक सम्बन्ध
   - (च) अभिभावकों के समूह के साथ कार्य करने, घरों में जाने, अभिभावक सम्मेलन और घर तथा स्कूल की समस्याओं के अनुभव सहित पारिवारिक परामर्श कार्य की पद्धतियाँ और सामग्रियाँ
   - (छ) अभिकरणों और संगठनों सहित सामुदायिक स्रोतों का उपयोग जो व्यक्तियों और/या समूहों को सेवाएँ प्रदान करते हैं
   - (ज) शिशु और शिशु कल्याण से सम्बन्धित कानून
   - (झ) छात्र कर्मचारी सेवा कार्यक्रमों का संगठन, प्रशासन और मूल्यांकन

२. विशिष्ट क्षेत्रों में निम्नलिखित में से कम से कम एक अवश्य सम्मिलित होगा :
   - (क) छात्र परामर्श कार्य, निम्नलिखित सहित :
     - (१) शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत निर्देशन
     - (२) निरीक्षित क्षेत्र अनुभव सहित परामर्श कार्य की प्रविधियों में उच्च प्रशिक्षण
   - (ख) विचाराधीन मामले का अध्ययन और उस मामले से सम्बन्धित सम्मेलन की प्रविधियाँ
   - (ग) अपवादस्वरूप बच्चों का मनोविज्ञान और उनकी शिक्षा

चित्र २५. पाठ्यक्रम की अपेक्षाएँ

STATE GUIDANCE REQUIREMENTS

R=required courses O=optional courses * = no specific requirements

State	Principles & Practices	Study of Individual	Occupational Information	Counseling Techniques	Organization & Administration of Guidance	Supervision of Experience in Guidance	Tests and Measurements	Other Courses
Alabama *								
Alaska	O	R	R	R	R			Vocational Sociology
Arizona	R	R	R	R	R		R	
Arkansas	R	R	R	R	R	O	O	O
California	O	R	R	R	R	R	R	Mental Hygiene Social Case Work Labor Problems
Colorado *								
Connecticut	R	R	R	R	R			Vocational Education
Delaware	R	R	R	R	R		R	Mental Hygiene R Labor Problems R
Florida	R	R	R	R	R	O		O
Georgia	R	R	R	R		O		O
Hawaii	R	R	R	R	R	R	O	Sociology Mental Hygiene
Idaho *								
Illinois	R	R	R	R	R	O	R	Mental Hygiene
Indiana	6 courses - all optional							
Iowa	30 hours - all optional							
Kansas		R	R	R	R	R		
Kentucky	R	R	R	R	R		R	O
Louisiana	R	R	R	R	R			
Maine	R	R	R	R	R	R	O	O
Maryland	R	R	R	R			R	Mental Hygiene R Vocational Education
Massachusetts	R	R	R	R	R		R	Personnel Administration
Michigan *								
Minnesota	R	R	R	R		R	R	O

Mississippi	R	R	R	R	R	R	R	Vocational Education R Sociology
Missouri	R	R	R	R	R	R	R	Mental Hygiene R
Montana*								
Nebraska	R	O	R	R	R		R	Group Guidance R
Nevada	R	R	R	R	R			
New Hampshire	R	R	R	R	R			Mental Hygiene R
New Jersey	R	R	R	R	R		R	
New Mexico	R	R	R	R	R	R	R	O
New York	R	R	R	R	R	O	R	O
North Carolina	R	R	R	R		R		O
North Dakota	R	R	R	R	R			Group Guidance
Ohio	R	R	R	R	R		O	Statistics R, Sociology R Mental Hygiene R
Oklahoma	R	R		R			R	Mental Hygiene R Statistics R, Curriculum R
Oregon*								
Pennsylvania	R		R	R			R	Social Case Work R
Rhode Island*								
South Carolina	R	R	R	R	O	O	R	O
South Dakota*								
Tennessee*								
Texas	R	R	R	R	R	R	R	Group Guidance R Statistics R
Utah	R	R	R	R	R	R	R	Social Case Work R
Vermont (Director)	R	R	R	R	R	O	O	Social Case Work R
Virginia	R	R	R	R	R		R	
Washington*								
West Virginia	R	R	R	R	O	R	R	O
Wisconsin	R	R	R	R			R	Mental Hygiene R Vocational Education R
Wyoming	R	R	R	R				

कार्य निम्नलिखित सहित स्कूल मनोविज्ञान में होना चाहिए :
(क) व्यक्तिगत निदानात्मक कार्य-विधियाँ
(ख) मामले के अध्ययन की उच्च प्रविधियाँ
(ग) उपचारात्मक शिक्षण प्रविधियाँ
(घ) निरीक्षित प्रयोगशाला और स्कूल की आयु के छात्रों के साथ क्षेत्रीय अनुभव सहित व्यक्तिगत और सामूहिक उपचार

(घ) इस धारा के अनुसार जारी किये गये सामान्य छात्र कर्मचारी सेवा प्रमाण-पत्र द्वारा अधिकृत सेवा का उल्लेख होगा ।

३८३ सत्र सामान्य छात्र कर्मचारी सेवा प्रमाण-पत्र दो वर्ष के लिए जारी किया जा सकता है और धारा २०२ की व्यवस्थाओं के आधीन ५ वर्ष की अवधि के लिए उसका पुनः नवीनीकरण किया जा सकता है ।

ओहियो*

स्कूल परामर्शदाता

(१) सेवा का क्षेत्र छात्र कर्मचारी सेवा के इस क्षेत्र में स्कूल के कर्मचारियों द्वारा जो कार्य किये जाते हैं उनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

(क) विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम सम्बन्धी, पाठ्यक्रम से बाहर के व्यक्तिगत सामाजिक तालमेल, व्यावसायिक तालमेल, नियुक्ति और सम्बन्धित समस्याओं में सहायता करना

(ख) छात्रों का अध्ययन करने, सामूहिक निर्देशन कार्यों की योजना बनाने, सामुदायिक स्रोतों का उपयोग करने और सेवारत अध्यापकों के शिक्षा कार्यों में अध्यापकों के साथ मिलकर कार्य करना

(ग) योजना का निर्माण करना, नवीनीकरण कार्यक्रमों का विकास और संचालन करना, शिक्षण के लिए समूह बनाना, सार्वजनिक सम्बन्धों, अनुसन्धान और पाठ्यक्रम के अध्ययन में प्रशासकीय कर्मचारियों के साथ कार्य करना

(घ) छात्र कर्मचारियों के विस्तृत सेवा में योग देने वाले सामुदायिक स्रोतों और गतिविधियों के साथ स्कूल का समन्वय करने में साधारण समूहों और व्यक्तियों के साथ कार्य करना ।

(२) अस्थायी प्रमाण-पत्र उपरोक्त कार्यों को करने के लिए एक अस्थायी प्रमाण-पत्र ऐसी संस्था की सिफारिश पर, जो स्कूल के परामर्शदाताओं को तैयार करने के लिए स्वीकृत हो, जारी किया जाएगा; उस संस्था को यह प्रमाणित करना होगा कि आवेदनकर्त्ता ने निम्नलिखित अपेक्षाओं की पूर्त्ति की है :

(क) ओहियो में अध्यापन के लिए वैध, अस्थायी अथवा उच्चतर श्रेणी प्रमाण-पत्र का रखना

* उपरोक्त पृष्ठ २८ ।

(ख) निम्नलिखित की साक्षी :

१. अध्यापन का एक वर्ष का सफल अनुभव

२. गैर-अध्यापकीय पद पर कुल मिलाकर एक वर्ष तक संग्रहशील लाभप्रद नौकरी

३. एक अतिरिक्त वर्ष का अनुभव (१) या (२) में अथवा संयुक्त रूप से दोनों में अनुभव

(ग) निम्नलिखित क्षेत्रों में से प्रत्येक में पाठ्यविधि के कार्य सहित स्नातकोत्तर उपाधि :

१. निर्देशन : सिद्धान्त और व्यवहार, प्रशासन, सामूहिक कार्य विधियाँ

२. मानवीय वृद्धि और विकास : शैक्षिक मनोविज्ञान, व्यक्तिगत भेदों का मनोविज्ञान, शिशु मनोविज्ञान, नवयुवक मनोविज्ञान, अपवादस्वरूप बच्चों का मनोविज्ञान, असाधारण व्यक्तियों का मनोविज्ञान, मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा

३. व्यक्तिगत विश्लेषण : निदानात्मक कार्य-विधियाँ, परीक्षण, आंकड़े

४. परामर्श कार्य : प्रविधियाँ

५. सामाजिक विज्ञान : शैक्षिक व्यवसायिक सूचना, स्कूल और समुदाय के साधन स्रोत, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र ।

उपरोक्त क्षेत्रों की शिक्षा के लिए निर्धारित विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में निरीक्षित व्यावहारिक अनुभव के लिए व्यवस्था की जाएगी ।

(जिस आवेदनकर्त्ता की स्नातक की पूर्व की तैयारी में उपरोक्त क्षेत्रों का कार्य सम्मिलित था उसे श्रेय (credit) के १२ छमाही घण्टों से अधिक लगाने की आवश्यकता नहीं है) ।

(३) व्यावसायिक प्रमाण-पत्र स्कूल के परामर्शदाताओं के लिए व्यावसायिक प्रमाण-पत्र स्कूल के परामर्शदाताओं के अस्थायी प्रमाण-पत्र के अधीन तीन वर्ष तक सफलतापूर्वक कार्य करने की साक्षी पर जारी किया जाएगा, इन तीन वर्षों में कम से कम डेढ़ वर्ष तक उसने वे कार्य किये होने चाहिएँ जिनका वर्णन ऊपर (१) के आधीन किया गया है ।

(४) स्थायी प्रमाण-पत्र स्कूल परामर्शदाताओं के व्यावसायिक प्रमाण-पत्र के आधीन ४० मास के सफल अनुभव की साक्षी पर जारी किया जाएगा ।

टैक्सास*

स्कूल परामर्शदाता

(क) उच्चतर शिक्षा की स्वीकृत संस्था से कम से कम स्नातक की उपाधि रखता हो

(ख) स्थायी हाई स्कूल प्रमाण-पत्र, स्थायी प्राथमिक प्रमाण-पत्र, छः-वर्षीय

*उपरोक्त पृष्ठ ३३-३४ ।

प्राथमिक, चार-वर्षीय हाई स्कूल अथवा छः-वर्षीय हाई स्कूल प्रमाण-पत्र रखता हो

(ग) परामर्श और निर्देशन कार्यों पर कम से कम दो-तिहाई समय लगाता हो

(घ) निम्नलिखित धाराओं में से एक की योग्यता को पूरा करता हो :

धारा (१) तैयारी पर आधारित योग्यताएँ। वे समस्त व्यक्ति जो परामर्शदाता के रूप में लगे हुए हैं और जो नीचे धारा (२) में बताये गये अनुभव का दावा नहीं कर सकते उन्हें ऊपर (क), (ख) और (ग) में वर्णित योग्यताओं के अतिरिक्त निम्नलिखित योग्यताओं को पूरा करना होगा :

१. परामर्शदाताओं की तैयारी के लिए राज्य के शिक्षा आयुक्त द्वारा स्पष्ट रूप से स्वीकृत स्नातकोत्तर उपाधि के कार्यक्रम को पूरा किया हो, अथवा

२. उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की हो जिसमें प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में दिये जाने वाले परामर्श कार्य और निर्देशन से सम्बन्धित स्वीकृति पाठ्य-विधियों में उच्चतर पाठ्य-विधि के श्रेयों (जूनियर स्तर या उच्च) में कम से कम १८ घंटे सम्मिलित हों। यह वाँछनीय है कि उच्चतर अध्ययन के केवल १८ घण्टे निर्देशन सेवाओं के सिद्धान्तों और दर्शन में; व्यक्ति को समझने, व्यावसायिक और शैक्षिक जानकारी के संग्रह, मूल्यांकन और उपयोग करने; परामर्श-कार्य की प्रविधियों और परामर्श कार्य के निरीक्षित व्यवहार की पाठ्य-विधि में विभक्त करने का अनुभव हो।

३. तैयारी की इन योग्यताओं के आधार पर स्वीकृत व्यक्ति परामर्शदाता के रूप में अस्थायी स्वीकृति के प्रमाण-पत्र के रूप में प्राप्य होंगे। नियुक्ति-कर्त्ता अधीक्षक द्वारा परामर्शदाता के रूप में नियुक्ति का प्रमाण-पत्र देने पर अस्थायी स्वीकृति प्रमाण-पत्र से बदला जा सकता है।

धारा (२) पूर्व सेवाओं पर आधारित योग्यताएँ :

१. जो व्यक्ति १९४८ से ५५ तक (दोनों वर्ष सहित) पूरे समय के परामर्श-दाता के रूप में निरन्तर नौकर थे वे पूर्व सेवा के आधार पर स्थायी स्वीकृति प्रमाण-पत्र के लिए ग्राह्य हैं।

धारा (३) स्कूल परामर्शदाता के लिए योग्यताएँ (नये आवेदनकर्त्ता) :

कालेज श्रेयों का लेख टैक्सास में वरिष्ठ कालेज को प्रस्तुत किया जाना चाहिए जो परामर्श-कार्य के क्षेत्र में अध्यापकों को तैयार करने के लिए स्वीकृत हैं। व्यावसायिक प्रमाण-पत्र जारी करने के पूर्व कम से कम तीन वर्ष का शिक्षण का अनुभव अपेक्षित है। स्कूल के परामर्शदाता के स्वीकृत कार्य में निम्नलिखित तत्त्व प्रस्तुत हैं :

१. निर्देशन कार्यक्रम (कम से कम तीन छमाही घंटे) :

इस क्षेत्र में निर्देशन कार्यक्रम के सिद्धान्तों, दर्शन, संगठन और सेवाओं के ज्ञान की व्यवस्था है।

२. जिन छात्रों के लिए सेवा प्रदान की गयी (न्यूनतम छः छमाही घंटे) :
यह क्षेत्र उस गहन अध्ययन के लिए है जो बच्चों और युवकों के शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को तथा स्कूल के कार्यक्रम के प्रभाव को समझने में सहायता देता है।

३. साधन स्रोत के क्षेत्र (कम से कम इक्कीस छमाही घंटे) :
कालेज या विश्वविद्यालय को सम्बन्धित साधन स्रोतों पर ध्यान देकर अध्यापकों की शिक्षा के संतुलित कार्यक्रम को प्राप्त करने में भावी परामर्शदाताओं की सहायता करनी चाहिए। किसी क्षेत्र पर कितना बल दिया जाये यह छात्र की विगत तैयारी और कुल अनुभव पर निर्भर करना चाहिए।
यह उच्चतर स्तरीय अनिवार्यता छमाही घंटे की पाठ्य-विधियों के अनुकरण से प्रदर्शित नहीं होती। ये नियोजित कार्यक्रम हैं जो पृथक्-पृथक् छात्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाये जाते हैं। इनका उद्देश्य व्यावसायिक कुशलता का निश्चय करना है।
व्यावसायिक कार्यक्रम पूरा करने पर भावी परामर्शदाता ने उन निर्देशन प्रविधियों में कुशलता प्राप्त कर ली होगी जिससे वे नाप और मूल्यांकन के उन उपकरणों का प्रयोग कर सकें जो व्यक्तियों और समूहों को समझने, समझाने और परामर्श देने के लिए आवश्यक हैं। बच्चों के निर्देशन के उपयुक्त व्यावसायिक और शैक्षिक जानकारी और सामग्रियों के उपयोग में उसे कुशल होना चाहिए। इसके अतिरिक्त अध्ययन और निरीक्षित व्यवहार के द्वारा उसे बच्चों, युवकों और वयस्कों के समूह के साथ कार्य करने और व्यक्तियों के साथ परामर्श करने की योग्यता का भी विकास करना चाहिए।

न्यूयार्क

प्रशासकीय और निरीक्षण सेवाओं के प्रमाण-पत्र

नीतियाँ, नियम और उपनियम

निर्देशन सेवा के लिए प्रमाण-पत्र

परिभाषा "निर्देशन सेवा" से तात्पर्य इसमें आगे वर्णित कर्त्तव्यों से है जो सार्वजनिक स्कूल प्रणाली के व्यावसायिक कर्मचारियों द्वारा की जाती है। इस कर्मचारी की उपाधि "निर्देशक", "निर्देशन समन्वयकर्त्ता", "परामर्शदाता", "डीन", "सलाहकार", "अध्यापक सलाहकार", "अध्यापक परामर्शदाता" हो सकती है।

अपेक्षित प्रमाण-पत्र जो अध्यापक या कर्मचारी आगे वर्णित कार्यों में कक्षा में कम से कम ५ से अधिक घंटे लगाता है, उसके पास निर्देशन सेवाओं के लिए वैध प्रमाण-

पत्र होगा। अध्यापक अथवा अन्य कर्मचारी से सम्बन्धित स्कूल में सुयोग्य परामर्शदाता के प्रत्यक्ष निरीक्षण में निर्देशन सेवा का कार्य लिया जा सकता है बशर्ते कि ऐसे अध्यापक या कर्मचारी के निर्देशन कर्त्तव्य सप्ताह में कक्षा के १० घंटे से अधिक न हों।

कर्त्तव्य स्कूलों के अधीक्षक के निर्देशन के आधीन पाठ्यक्रम के बाहर की, पाठ्यक्रम की और व्यक्तिगत समस्याओं, स्कूल की नीतियों और सम्बन्धित समस्याओं पर विद्यार्थियों से बातचीत करना ; विद्यार्थियों की शैक्षिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी, सामाजिक और व्यावसायिक समस्याओं पर अभिभावकों, अध्यापकों, विशेषज्ञों और सामुदायिक अभिकरणों से बातचीत करना; स्कूल के नवीनीकरण, पाठ्यक्रमों और अध्ययन की पाठय-विधियों, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक जानकारी और सम्बन्धित विषयों की शिक्षा देना, उच्चतर शिक्षा, विशेष प्रशिक्षण और व्यावसायिक अवसरों पर ताजी व विश्वसनीय जानकारी रखना; नौकरी की समस्या वाले छात्रों की सहायता करना; छात्रों के संग्रहशील वृत्तों को तैयार करना, संभाल कर रखना अथवा उनकी सार-संवार का निरीक्षण करना, शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन सेवाओं के अतिरिक्त समस्त मामलों पर अधीक्षक, आचार्यों तथा अन्य कर्मचारियों को सलाह देना और आवश्यकतानुसार कार्य करना।

फरवरी १९५८ तक संशोधित शिक्षा आयोग के नियम

११८ निर्देशन सेवाओं के लिए वैध प्रमाण पत्र

(१) अस्थायी प्रमाण-पत्र

(क). तैयारी प्रत्याशी ने स्नातक उपाधि (अथवा समकक्ष स्वीकृत तैयारी) का चार-वर्षीय पाठ्यक्रम समाप्त कर लिया हो और इसके अतिरिक्त स्वीकृत स्नातक पाठ्य-विधियों में ३० छमाही घंटों तक कार्य किया हो। पूर्व स्नातक और स्नातक तैयारी के कुल कार्यक्रम में निर्देशन की तैयारी के लिए स्वीकृत पाठ्य विधियों में १६ छमाही घंटे निम्नलिखित होंगे।

टिप्पणी : सोलह छमाही घंटे के कार्यक्रम में निम्नलिखित क्रम रहेगा :

क्षेत्र	छमाही घंटे
(१) व्यक्ति का ज्ञान (व्यवहार की शक्तियाँ, व्यक्ति की आवश्यकताएँ और विशेषताएँ)	२ से ४
(२) निर्देशन के सिद्धान्त और व्यवहार	२ से ४
(३) परामर्श कार्य की प्रविधियाँ	२ से ४
(४) परामर्शदाताओं के उपयोग के लिए नाप और मूल्यांकन (आंकड़ों सहित)	२ से ६
(५) शैक्षिक और व्यावसायिक जानकारी का सर्वेक्षण, संगठन और उपयोग	२ से ४

(१) पर्याय यात्रा के स्वीकृत और उपयुक्त अनुभव के ५ वर्ष, एक वर्ष का औद्योगिक अध्यापक-प्रशिक्षण का कार्यक्रम और औद्योगिक अध्यापक-प्रशिक्षण के एक वर्ष के कार्यक्रम के अनन्तर स्वीकृत और उपयुक्त अध्ययन के ३० छमाही घंटों की पूर्ति के पश्चात् जो उपरोक्त अनुच्छेद में वर्णित तैयारी के सिलसिले में हो किन्तु निर्देशन की तैयारी के रूप में स्वीकृत पाठ्य-विधि के रूप में नहीं।

(ख) अनुभव प्रत्याशी को किसी स्वीकृत स्कूल में और अध्यापन के अतिरिक्त एक वर्ष का अन्य अनुभव होना चाहिए। अध्यापन से पृथक् एक वर्ष का अनुभव अध्यापन का एक अतिरिक्त वर्ष हो सकता है जो उस क्षेत्रीय स्वीकृत कार्य से सम्बन्धित हो जिसमें व्यावसायिक और प्रशिक्षण अवसरों तथा सामुदायिक स्रोतों का निरीक्षण, अध्ययन और उन पर विचार होता हो।

(ग) अध्यापक का प्रमाण पत्र जो प्रत्याशी न्यूयार्क राज्य के सार्वजनिक स्कूल में अध्यापन के लिए प्रमाण-पत्र के लिए ग्राह्यता का विवरण रखता हो।

(घ) समय की वैधता अस्थायी प्रमाण-पत्र जारी होने के दिन से ५ वर्ष तक वैध रहेगा।

(ङ) स्थायी प्रमाण-पत्र के लिए ग्राह्यता अस्थायी प्रमाण पत्र रखने वाला इसके आगे वर्णित स्थायी प्रमाण-पत्र के लिए ग्राह्य होगा बशर्ते कि उपरोक्त अस्थायी प्रमाण-पत्र की समाप्ति की तिथि से पूर्व इस उपविभाग के अनुच्छेद (क) में अपेक्षित शर्तों के अतिरिक्त निर्देशन की तैयारी के रूप में स्वीकृत पाठ्य विधियों में १४ छमाही घंटे पूरे कर लिए हों।*

(२) स्थायी प्रमाण-पत्र

(क) तैयारी प्रत्याशी ने स्नातक उपाधि (अथवा समकक्ष स्वीकृत तैयारी) का ४-वर्षीय स्वीकृत पाठ्यक्रम पूरा कर लिया हो और इसके अतिरिक्त स्वीकृत पाठ्य-विधियों के छमाही घंटे पूरे कर लिये हों। पूर्वस्नातक और स्नातक की कुल तैयारी के पाठ्यक्रम में निर्देशन के लिए तैयारी के रूप में स्वीकृत पाठ्य-विधि में ३० छमाही घंटे सम्मिलित होंगे।

टिप्पणी १४ छमाही घंटों के कार्यक्रम को अवगत कराने के लिए निम्नलिखित सूची का प्रयोग होगा :*

क्षेत्र	छमाही घंटे
(१) निम्नलिखित में से एक या दोनों :	
(क) सार्वजनिक स्कूलों में निर्देशन में निरीक्षित क्षेत्रीय कार्य और व्यवहार में, अथवा	४ से ६
(ख) निम्नलिखित पाठ्य-विधियाँ : परामर्श कार्य के व्यवहार में उच्च पाठ्य-विधि......	२ से ४

* देखिए इन नियमों का उपविभाग (२)

* देखिए ऊपर उपविभाग (१) (घ)

परामर्शदाताओं के लिए माप और मूल्यांकन में उच्च पाठ्य-विधि	२ से ४
(२) निर्देशन कार्यक्रम का संगठन और संचालन	२ से ४
(३) शैक्षिक और व्यावसायिक जानकारी में उच्च पाठ्य-विधि	२ से ४

जिन प्रत्याशियों ने स्थायी प्रमाण-पत्र के लिए इन में से प्रत्येक क्षेत्रों में न्यूनतम अपेक्षाएँ पूरी कर ली हैं वे १४ छमाही घंटे की आवश्यकता की पूर्ति के लिए निम्नलिखित वैकल्पिक पाठ्य-विधियों की सूची में से एक या अधिक पाठ्य-विधि ले सकते हैं :

वकल्पिक पाठ्य-विधि	छमाही घंटे
सामूहिक शक्तियाँ	२ से ४
परिवार	२ से ४
सामाजिक विचाराधीन समस्याएँ........................	२ से ४
श्रमिक समस्याएँ..	२ से ४
नियुक्ति	२ से ४
व्यक्तित्व का विकास और माप	२ से ४

(१) पर्याय स्वीकृत और समुचित यात्रा अनुभव के पाँच वर्ष, एक वर्ग का औद्योगिक अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम और एक वर्ष के औद्योगिक अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम के पश्चात् तीस छमाही घंटों की पूर्ण स्वीकृत पाठ्य-विधियाँ इस भाग के उपविभाग (क) में तैयारी के लिए अपेक्षित इस कार्यक्रम के सिलसिले में प्रस्तुत की जा सकती हैं किन्तु वे निर्देशन की तैयारी के लिए स्वीकृत निश्चित पाठ्य-विधियों के रूप में नहीं होनी चाहिए।

(ख) अनुभव प्रत्याशी ने किसी स्वीकृत विद्यालय में अध्यापन अनुभव के दो वर्ष और अध्यापन के अतिरिक्त अन्य अनुभव के वर्ष पूरे किये होने चाहियें। अध्यापन के अतिरिक्त एक वर्ष का अनुभव अध्यापन का एक अतिरिक्त वर्ष हो सकता है जो स्वीकृत क्षेत्र की पाठ्यविधि से संयुक्त हो जिसमें व्यावसायिक और प्रशिक्षण अवसरों तथा सामुदायिक स्रोतों का निरीक्षण, अध्ययन और विचार सम्मिलित हो।

(ग) अध्यापक का प्रमाण-पत्र प्रत्याशी के पास प्रमाण-पत्र या प्रमाणपत्र के लिये ग्राह्य विवरण-पत्र होना चाहिये जो न्यूयार्क राज्य के सार्वजनिक स्कूलों में पढ़ाने के लिये वैध हो।

(घ) सेवारत अध्ययन और प्रशिक्षण की अपेक्षा स्थायी प्रमाण-पत्र रखने वाले को प्रमाण-पत्र जारी होने की तारीख से निरंतर १० वर्ष की प्रत्येक अवधि में छः छमाही घंटे में स्वीकृत पाठ्य-विधियाँ अथवा समकक्ष गतिविधियाँ, जैसे व्यावसायिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम के विकास के लिये अध्ययन समूह की सदस्यता, यात्रा, लेखन, उच्चतर अथवा व्यावसायिक शिक्षा की अभिस्वीकृत संस्था द्वारा प्रस्तुत स्वीकृत पाठ्य-विधियों का शिक्षण, अध्यापन के अतिरिक्त अन्य व्यावसायिक अनुभव,

स्कूल के बाहर की गतिविधियों में नेतृत्व, व्यावसायिक संस्थाओं में नेतृत्व और समुचित सामुदायिक कार्यों में नेतृत्व जैसी स्वीकृत और समुचित व्यावसायिक गति-विधियाँ पूरी करनी होंगी।

टिप्पणी सेवारत अध्ययन और प्रशिक्षण की अपेक्षा की पूर्ति के लिय परामर्शदाता द्वारा प्रस्तुत पाठ्यक्रम, अध्ययन और कार्य राज्य शिक्षा विभाग के सम्मुख पूर्व स्वीकृति के लिये रखे जायेंगे।

(ङ) समय की वैधता स्थायी प्रमाण-पत्र निरंतर वैध रहेगा केवल उस स्थिति को छोड़ कर जबकि प्रमाणपत्र रखने वाला पाँच वर्ष की अवधि में न्यूयार्क राज्य के सार्वजनिक स्कूलों में अध्यापन, निरीक्षण या प्रशासकीय स्थितियों में नियमित रूप से नौकर नहीं रहा है और इस उपविभाग के अनुच्छेद (च) में वर्णित निर्धारित सेवारत अध्ययन और प्रशिक्षण की अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं की है। ऐसी स्थिति में ऐसे व्यक्ति के प्रमाण-पत्र की वैधता समाप्त हो जायेगी।

अनुभव की अपेक्षाओं से सम्बंधित व्याख्यात्मक वक्तव्य

निर्देशन सेवा के लिये प्रमाण-पत्र देने के हेतु अपेक्षा के अनुभवों की व्याख्या नीचे दिये हुए विवरणों के अनुसार राज्य शिक्षा विभाग करेगा :

१. अध्यापन के वर्ष से तात्पर्य उस वर्ष से है जो स्कूल दिवस के ५० प्रतिशत तक पढ़ाने में व्यतीत हुआ है।
२. अध्यापन अनुभव से तात्पर्य व्यावसायिक कर्मचारी होने से है और यह कक्षा में वास्तविक सेवा करने तक सीमित नहीं है।
३. स्वीकृत स्कूल से अर्थ किसी भी स्वीकृत, सार्वजनिक, मिश्रित या निजी स्कूल से है।
४. अध्यापन के अतिरिक्त अन्य अनुभवों से तात्पर्य प्रतिदिन के मूल्यांकित अध्यापन के अतिरिक्त हाईस्कूल का समस्त विगत अनुभव है।
५. क्षेत्रीय कार्य की पाठ्य-विधि से पूर्व, जिसमें निरीक्षण, व्यायसायिक और प्रशिक्षण अवसरों और सामुदायिक साधन स्रोतों का अध्ययन और विचार सम्मिलित है, शैक्षिक और व्यावसायिक जानकारी की आधारभूत पाठ्य-विधि होनी चाहिये। जब यह स्वीकृति परामर्शदाता प्रशिक्षण केन्द्र पर ली जाती है तो यह मानना चाहिये कि यह अध्ययन, शैक्षिक और व्याव-सायिक जानकारी में उच्च पाठ्यविधि की अपेक्षाओं और अनुभव की आवश्यकताओं को आंशिक रूप से पूरा करती है।

निर्देशन का संगठन और अध्यापक की प्रश्नावली

कक्षा का अध्यापक और निर्देशन कार्यक्रम*

आपका अध्यापन क्षेत्र............

कृपया निम्नलिखित में से प्रत्येक के सम्मुख सही संख्या लिखिये :

३ बहुत अधिक　　२ अधिक　　१ कुछ कुछ　　० नहीं

(१.) क्या मैं अपनी कक्षा के प्रत्येक छात्र से परिचित हूँ ?

(　) (क) क्या मैं उसके बौद्धिक मूल्य (शैक्षिक योग्यता) को जानता हूँ ?

(　) (ख) क्या स्तरीकृत पठन परीक्षाओं के अनुकूल उसकी पठन-योग्यता को जानता हूँ ?

(　) (ग) क्या मैं उसके विगत शैक्षिक कार्यों के महत्त्वपूर्ण विवरणों से परिचित हूँ ?

(　) (घ) क्या मैं उसके अभिभावकों और उसकी घर की स्थिति से परिचित हूँ ?

(　) (ङ) क्या मैं उसके द्वारा दी गयी अन्य परीक्षा के परिणामों से परिचित हूँ ?

(　) (च) क्या मैं उसकी निरन्तर चलने वाली शिक्षा की निजी योजनाओं से परिचित हूँ ?

(　) (छ) क्या मैं उसकी व्यावसायिक योजनाओं से परिचित हूँ ?

* सी० ई० एरिक्सन और जी० ई० स्मिथ रचित Organisation & Administration of Guidance Services से, पृष्ठ ३५-३६, १९४७, मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी के सौजन्य से और देखिए ई० सी० रॉबर, जी० ई० स्मिथ और सी० ई० एरिक्सन रचित Organisation & Administration of Guidance Services, १९५५ (चित्र २६-२९, उद्धरण के अंश नहीं हैं)

( ) (ज) क्या मैं छात्र के शैक्षिक लक्ष्यों (उसके निजी उद्देश्यों) से परिचित हूँ?

( ) (झ) क्या मैं उसकी रुचियों और अरुचियों से परिचित हूँ?

( ) (ञ) क्या मैं उसके स्वास्थ्य की स्थिति से परिचित हूँ?

( ) (ट) क्या मैं उसकी योग्यताओं और दुर्बलताओं से परिचित हूँ?

( ) (ठ) क्या मैं उसकी समस्याओं और निराशाओं से परिचित हूँ?

( ) (ड) क्या मैं उसके सामाजिक सम्बन्धों—उसकी मित्रताओं—से, उसके सामूहिक सम्पर्कों से परिचित हूँ?

( ) (ढ) क्या मैं इस बात से परिचित हूँ कि वह अवकाश का समय कैसे व्यतीत करता है?

( ) (ण) क्या मैं उसके अध्ययन के स्वभाव और अध्ययन की स्थिति को जानता हूँ?

चित्र २६. लॉस एंजिलस नगर स्कूल मंडल : प्राथमिक शिक्षा का विभाग

( ) (त) क्या मैं उसके विगत असाधारण अनुभवों से परिचित हूँ ?

( ) (थ) क्या मैं जानता हूँ कि अन्य अध्यापक उसके विषय में क्या सोचते हैं ?

( ) (द) प्रत्येक अन्य छात्र से परिचित होने में क्या मैंने उसकी सहायता की है ?

२. मैं अपने विद्यार्थियों के विषय में जो कुछ जानता हूँ क्या उसके प्रकाश में मैं अपने विषय और अध्यापन को निरन्तर पुनर्गठित कर रहा हूँ ?

( ) (क) क्या मैं विषय सामग्री का चुनाव अपने छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों और योग्यताओं को ध्यान में रखकर कर रहा हूँ ?

( ) (ख) क्या मैं विद्यार्थियों को पाठ्य-विषय और प्रयुक्त सामग्री के चुनाव में भाग लेने की अनुमति दे रहा हूँ ?

चित्र २७. लॉस एंजिलस नगर स्कूल मंडल : माध्यमिक शिक्षा का विभाग
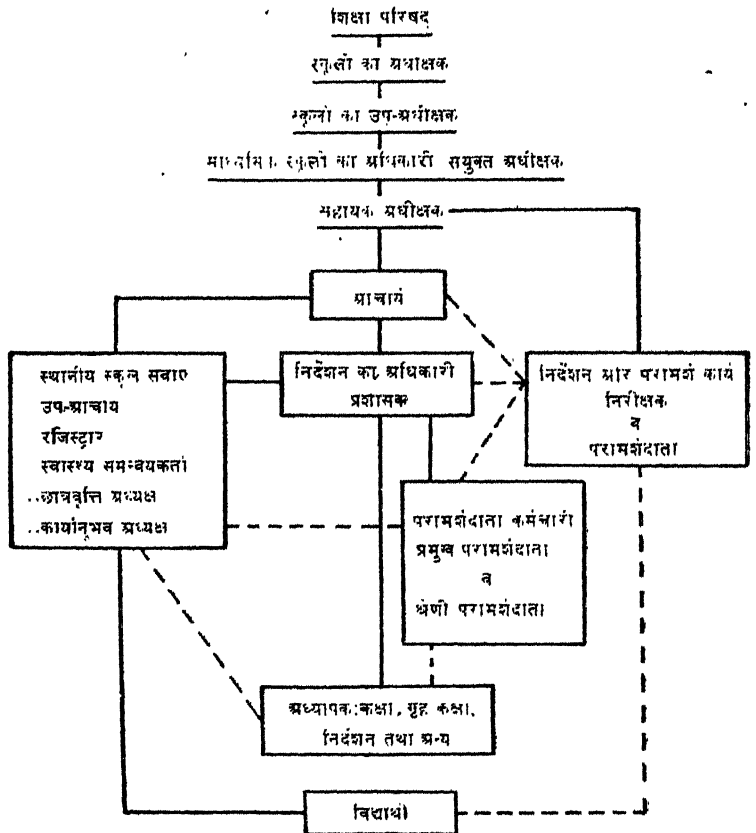
( ) (ग) क्या मैं जीवन सम्बन्धी समस्याओं और छात्रों के अनुभवों के लिए बहुत-से उपायों की खोज करने का प्रयत्न कर रहा हूँ ?

( ) (घ) क्या घर और समुदाय की स्थितियों के सम्बन्ध में उपलब्ध जानकारी के फलस्वरूप मैं अपने विषय का पुनर्गठन कर रहा हूँ ?

( ) (ङ) क्या मैं बहुत अधिक चुनाव और लचक की अनुमति दे रहा हूँ ताकि प्रत्येक छात्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्यों में भाग ले सके ?

( ) (च) क्या मैं अपने क्षेत्र के लिए आवश्यक "कैसे अध्ययन करें" प्रविधि का विकास करने में छात्रों की सहायता कर रहा हूँ ?

( ) (छ) क्या मैं अपनी कक्षा के विषय के एक अंग के रूप में समुदाय के शैक्षिक साधन स्रोतों का उपयोग कर रहा हूँ ?

चित्र २८. लॉस एंजिलस नगर स्कूल मंडल : विस्तार और उच्चतर शिक्षा का विभाग
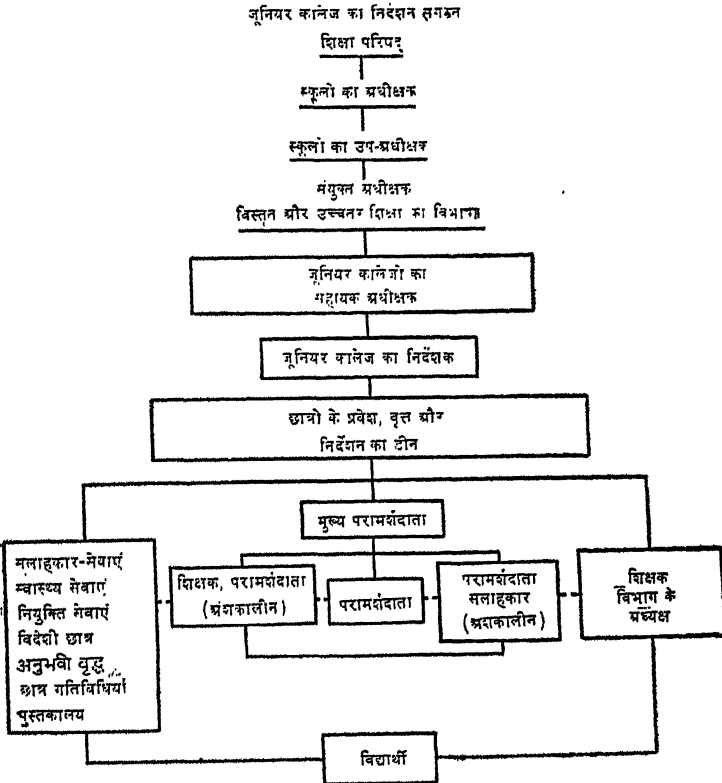
( ) (ज) क्या मैं अपना कार्य स्पष्टता से कर रहा हूँ ?

( ) (झ) क्या मैं छात्रों को अपने विषय का उद्देश्य और मूल्य भलीभाँति समझने में सहायता देता हूँ ?

( ) (ञ) क्या मैं अच्छे कार्य और गम्भीर प्रयत्न के लिए छात्रों की सहायता करता हूँ ?

( ) (ट) क्या मैं कार्य जगत् के सम्बन्ध में अपने विद्यार्थियों को अधिक से अधिक जानकारी दे रहा हूँ ?

( ) (ठ) क्या मैं कार्य की कुशलता (अध्यापन के अतिरिक्त) का अध्ययन कर रहा हूँ ताकि मैं कार्यशील जगत् के सम्बन्ध में अधिक सूचना रख सकूं ?

३. क्या मैं अपने विषय का उपयोग प्रत्येक छात्र के लिए विशेष सेवाएं प्रदान करने के लिए कर रहा हूँ ?

( ) (क) क्या मैं अपने विषय में यथासंभव अधिक से अधिक व्यावसायिक जानकारी का समावेश कर रहा हूँ ?

( ) (ख) क्या मैं अपने विषय के अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त होने वाली व्यावसायिक सम्भावनाओं का सुझाव दे रहा हूँ ?

( ) (ग) क्या मैं अपने विषय का प्रयोग अच्छे स्वास्थ्य के स्वभाव की शिक्षा देने के लिए कर रहा हूँ ?

( ) (घ) क्या मैं अपने विषय द्वारा प्रत्येक छात्र को अपनी श्रेष्ठ रुचि और योग्यताओं का विकास करने के लिए प्रोत्साहन दे रहा हूँ ?

( ) (ङ) क्या मैं अपने विषय द्वारा यथासंभव अधिक से अधिक समस्याएँ सुलझाने का प्रयत्न करता हूँ।

( ) (च) क्या मैं अधिक उत्पादक सामाजिक सम्बंधों और व्यक्तिगत मित्रताओं का विकास करने में प्रत्येक छात्र की सहायता कर रहा हूँ।

( ) (छ) क्या मैं अपने छात्रों को स्कूल के बाहर उनके सम्मुख आने वाली समस्याओं (रहन-सहन, शिष्टाचार, संतुलन, आवेदन-पत्र लिखने की योग्यता आदि) में विद्यार्थियों की सहायता करने के लिये अपने विषय का उपयोग कर रहा हूँ ?

( ) (ज) क्या मैं छात्रों को उन पाठ्य-विधियों का चुनाव करने में सहायता दे रहा हूँ जो उन्हें मेरे विषय में लेनी चाहिएँ ?

( ) (झ) क्या मैं पाठ्यक्रम से बाहर की गतिविधियों का चुनाव करने में छात्रों की सहायता करता हूँ ?

) (ञ) क्या मैं अपने विषय का प्रयोग विद्यार्थियों को अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय करने का अवसर देने के लिये करता हूँ ?

( ) (ट) क्या मैं छात्र का और विकास करने के लिये पाठ्यक्रम से बाहर की गतिविधियों का उपयोग कर रहा हूँ ?

४. क्या मैं कठिनाइयों को बढ़ने से रोकने का प्रयत्न कर रहा हूँ ?

( ) (क) क्या मैं दुःखी विद्यार्थियों को खोजने का यत्न कर रहा हूँ ?

( ) (ख) क्या मैं ऐसे छात्रों की खोज करने का यत्न कर रहा हूँ जिनकी उपस्थिति के वृत्त से उनकी कठिनाइयों का और अध्ययन करने का संकेत मिलता है ?

चित्र २९. लॉस एंजिलस नगर स्कूल मंडल : विस्तार और उच्चतर शिक्षा का विभाग
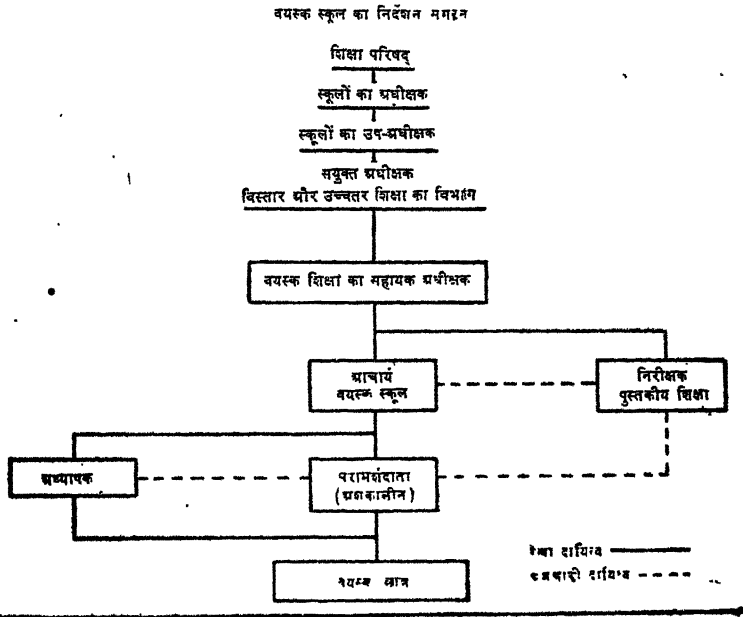
( ) (ग) जो छात्र अपना कार्य सदैव विलम्ब से करते हैं क्या मैं उनके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा हूँ ?

( ) (घ) क्या मैं ऐसे विद्यार्थियों को खोज निकालने का प्रयत्न कर रहा हूँ जिन्हें कक्षा में रुचि नहीं है ?

( ) (ङ) जिन विद्यार्थियों की शारीरिक स्थिति उनके स्कूल के कार्यों में बाधक हो सकती है क्या मैं उनको खोजने का प्रयत्न कर रहा हूँ ?

( ) (च) क्या मैं ऐसे छात्रों का पता लगा रहा हूँ जिन्हें अपने विषयों में बहुत कम या बिलकुल सफलता नहीं मिलती।

( ) (छ) क्या मैं ऐसे छात्रों का पता लगा रहा हूँ जिनकी घरेलू स्थिति उनकी स्कूल की सफलता में बाधक है ?

( ) (ज) क्या मैं ऐसे विद्यार्थियों का पता लगा रहा हूँ जिनके स्नातक होने से पूर्व ही स्कूल छोड़ देने की आशंका है ?

( ) (झ) क्या मैं उन विद्यार्थियों का पता लगा रहा हूँ जिन्हें प्रोत्साहन और विकास की आवश्यकता है ?

( ) (ञ) क्या मैं कुछ ऐसे कार्य ढूँढ़ रहा हूँ जिन्हें कम क्षमतावान छात्र सफलता पूर्वक कर सकें ?

( ) (ट) क्या मैं ऐसे छात्रों की खोज कर रहा हूँ जिनकी समस्याएँ व्यक्तिगत दोषों (शारीरिक कमी, निकृष्ट वस्त्र, विदेशी भाषा आदि) के कारण उत्पन्न होती हों ?

( ) (ठ) क्या मैं ऐसे अधिक योग्य छात्रों की खोज कर रहा हूँ जो अपनी योग्यताओं के अनुसार कार्य नहीं कर रहे है ?

( ) (ड) क्या मैं कठिनाई में पड़े विद्यार्थी में व्यक्तिगत रुचि लेता हूँ ?

( ) (ढ) जिन छात्रों के विषय में मैं भली भाँति परिचित हूँ क्या मैं उन्हें समझने में अन्य अध्यापकों की सहायता करता हूँ ?

( ) (ण) क्या पढ़ने की निकृष्ट योग्यता रखने वाले छात्रों की खोज करने और उन्हें सहायता देने का मैं प्रयत्न कर रहा हूँ ?

५. क्या मैं उपलब्ध निर्देशन के सफल स्रोतों का उपयोग करता हूँ ?

( ) (क) क्या मैं स्कूल वृत्तों का बहुधा उपयोग करता हूँ ?

( ) (ख) जिन छात्रों की मैं सहायता करने का प्रयत्न कर रहा हूँ, क्या उनके विषय में मैं अन्य अध्यापकों से बातें करता हूँ ?

( ) (ग) क्या मैं अपने गृह-कक्ष समूह के सदस्य अभिभावकों से परिचित होने का प्रयत्न करता हूँ ?

( ) (घ) क्या छात्रों के व्यवहार के लिये मैं अधिक अच्छी व्याख्या पाने का प्रयत्न करता हूँ ?

( ) (ङ) क्या मैंने हाल ही निर्देशन और शिशु ज्ञान पर उपलब्ध सामग्री का अध्ययन किया है ?

( ) (च) क्या अपने स्कूल में निर्देशन की अच्छी बातों का विकास करने के लिये मैंने अन्य अध्यापकों और अपने आचार्य को उत्साहित किया है ?

( ) (छ) क्या मैं अपने विद्यार्थियों के मामलों का अध्ययन करता हूँ ?

( ) (ज) क्या मैं परामर्शदाता से सहायता माँगने में निःसंकोच स्थिति का अनुभव करता हूँ ?